

पुस्तक प्राप्ति स्थान —

- १ मंत्री भी दिगम्बर जैन ष० क्षेत्र भी महावीरजी
महावीर मठ, सवाई माधोसिंह हार्डवे, जयपुर (राजस्थान)
- २ मैनेजर दिगम्बर जैन ष० क्षेत्र भी महावीरजी
जी महावीरजी (राजस्थान)



प्रथम संस्करण

४ प्रति

महावीर जयन्ति

वि सं० २०१९

अप्रैल १९६०

सूच्य

१४)



मुद्रक —

मैनेरसास न्यायपीठ

जी बीर घेस, जयपुर ।

*** विषय-सूची ***

१ प्रकाशकोय	पत्र नख्या १-२
२ भूमिका	३-४
३ प्रस्तावना	५-२३
४ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय	२४-४८
५ " " विवरण	४९-४९
६ विषय	पत्र संख्या
१ सिद्धान्त एव चर्चा	१-४७
२ धर्म एवं आचार शास्त्र	४८-६८
३ अध्यात्म एव योगशास्त्र	६९-१२८
४ न्याय एव दर्शन	१२९-१४१
५ पुराण साहित्य	१४२-१५६
६ काव्य एव चरित्र	१५७-२१२
७ कथा साहित्य	२१३-२५६
८ व्याकरण साहित्य	२५७-२७०
९ कोश	७१-२७८
१० ज्योतिष एव निमित्तज्ञान	२७९-२८५
११ आयुर्वेद	२८६-३०७
१२ चन्द्र एव अलंकार	३०८-३१५
१३ संगीत एवं नाटक	३१६-३१८
१४ लोक विज्ञान	३१९-३२३
१५ सुभाषित एव नीति शास्त्र	३२४
१६ मंत्र शास्त्र	३२५
१७ काम शास्त्र	३२६
१८ शिल्प शास्त्र	३२७

		पत्र संख्या
१६ लक्ष्य पत्र समीक्षा	—	३४४-३४६
२० पञ्च रासा एवं वेत्ति साहित्य	—	३६०-३६७
२१ ग्रन्थित शास्त्र	—	३६८-३६९
२२ इतिहास	—	३७०-३७८
२३ स्तोत्र साहित्य	—	३७९-४४२
२४ पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य	—	४४३-४४६
२५ गुह्य संग्रह	—	४४७-४४८
२६ अष्टांग साहित्य	—	४४९-५०
७ प्रबलुक्रमविषय	—	५१-५४
८ प्रथम एवं प्रथम	—	५५-६२
९ शास्त्रों की नामावलि	—	६३-६४
१० ग्राम एवं नगरों की नामावलि	—	६५-६६
११ सुप्रसिद्ध पत्र	—	६७-६८



★ प्रकाशकीय ★

प्रथम सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता होती है। प्रथम सूची का यह भाग अब तक प्रकाशित प्रथम सूचियों में सबसे बड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सहित अब तक जयपुर के १७ तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १८ भंडारों के अनुमानत २० हजार ग्रंथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

ग्रंथों के सकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर के बड़े बड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द जी, मयामुखजी जैसे महान् विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पथ-प्रदर्शन किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिखी हुई पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य निधियों में से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में पं० टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोमन्त्रसार जीवकाण्ड की मूल पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं जिसका एक चित्र हमने इस भाग में दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोदीका, सुशालचन्द आदि अन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतियाँ हैं।

इस प्रथम सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचेगा इसका सही अनुमान तो विद्वान् ही कर सकेंगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की सैकड़ों प्राचीन एवं अज्ञात रचनाएँ प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनदत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसको सभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था सीधे ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रद्युम्न चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की अपूर्व रचना स्वीकार किया है।

उक्त सूची प्रकाशन के अतिरिक्त क्षेत्र के साहित्य शोध संस्थान की ओर से अब तक प्रथम सूची के तीन भाग, प्रशान्ति समग्र, सर्वार्थसिद्धिसार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jainism a key to true happiness तथा प्रद्युम्नचरित आठ ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, कस्बे एवं गावों में स्थित ७० से भी अधिक भंडारों की प्रथम सूचियाँ बनायी जा

जुड़ी हैं जो हमारे सत्त्वान में हैं, तथा जिनसे विज्ञान एवं साहित्य शोध में तन हुए विद्यार्थी लाभ उठाते रहते हैं। मध्य सुषियों के साथ २ करीब ४ से भी अधिक सत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन ग्रंथों की प्रशस्ति एवं परिचय लिखे जा चुके हैं जिन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुए हिन्दी पर भी इन मंडारों में प्रचुर संख्या में निर्रते हैं। ऐसे करीब २० पत्रों का हमने सम्ग्रह कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह लाखों पूर्ण साहित्य प्रकाशन का जिस कदम से जैन में साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की गयी होगी वह कदम बीरे बीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्राकृत संस्कृत अपभ्रंश हिन्दी एवं उर्दूवाणी भाषाओं पर जोर करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर जोर करके वा प्रकाश करें। इस भी कदम साहित्य बलवर्धन करने में सहायक सिद्ध होगा।

प्रथम सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र मंडारों की सूची दी गई है मैं इन मंडारों के सभी व्यक्तियों का तथा विशेषतः भी नागूरवाली बबू अमरचंदजी शिवान व मंतरावाली मधुसूतीजी भीलजमलजी गोधा समीरमजी काबड़ा कपूरचंदजी रत्नचंद्र एवं प्रा. सुत्तानसिंहजी जैन का आभारी हूँ जिन्होंने हमारे शास्त्र संस्थान के विद्वानों को शास्त्र मंडारों की सूची बनाने तथा समय समय पर वहाँ के मंडारों को दत्तन में पूरा सहयोग दिया है। अत्यंत है भविष्य में भी इनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में सहयोग निर्रत रहेगा।

इन की का वासुदेव शास्त्री अमरवास हिन्दू विरर्षावलास वापसी के रूप से आभारी हैं जिन्होंने अत्यंत हात हुए भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके मध्य सूची की भूमिका निभान की कृपा की है। भविष्य में इनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्रतन निर्रता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस प्रथम के विद्वान् सम्पादक की का अमरचंदजी अमरसीवास एवं इनका सहयोगी भी वं अमरचंदजी मधुसूतीजी एवं भी सुतानचंदजी जैन का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने विभिन्न शास्त्र मंडारों का दत्तकर संग्रह एवं परिचय से इस भाग को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुभाष विद्वान् भी वं जैन सुत्तानसिंहजी मधुसूतीजी का भी हृदय से आभारी हूँ कि जिनका हमका साहित्य शोध संस्थान के कार्य में वच प्रदान व सहयोग निर्रत रहेगा है।

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी सस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभरे हुए रूप में टाक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हठात् अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने सकल्प वल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों में जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं उनकी छान बीन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर बठा लिया। शास्त्र भंडारों की जाच पड़ताल करके उनमें संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबंध भी कर दिया। इस प्रकार का संपादन सयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जगत में इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिसमें महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोधकर्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रस्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का समग्र किया जाता था। शोधकर्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की व्योरेवार परीक्षा करेंगे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रंथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ में भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद्र चरित्र आदि वर्णक ग्रंथों में इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचियां मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

अनुष्ठानमक अभ्यसन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में १८ देशों की संख्या रख हो गई थी। छात होता है आज्ञाकार में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुण्य संख्या २० (मय संख्या ४४ २) में मग्यों की वसापत अ संवत्सार ब्योरी की बसुलनीय है। जैसे संवत् १६१२ अरुणर घातसाह आगरो बसायो : संवत् १०१४ औरगसाह पावसाह औरगसाह बसायो संवत् १२४२ विमल मंकी खर हुआ विमल बसाई।

विकास की उन पिछड़ी शक्तियों में हिन्दी साहित्य के किये विविध साहित्य रूप व यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये इनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ संमल, कथा रासो रास पूजा, मंगल जप्तामल मरवाचरी मंत्र, अष्टक, छार समुच्चय कर्बन सुमापित, चौपट्ट, शुभवासिध निग्रणी, अठ्ठी व्याख्या बभाषा बिनती पत्री आरती गोक चरचा विचार, बात गीत श्रीका चरित्र, बंद, जप्य मायन विजो, कप वापक, प्रशस्ति, जमात्र औवासिया औमासिया वाउमासा, बढोई, बेकि, हिंदाकथा बूझी, सम्मलन बाणकनी, मक्ति, बगना पकनीमी बचीसी पचासा बाबनी खलसई, स्वमाविक, खलबाम नामावली, गुकनावली, स्वय संवो बोन, मोहका आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसीक अरु आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ, यह शोध के जिये शोधक विषय है। इसकी कसू व सामग्री इन संघटनों में सुरक्षित है।

राजस्थान में कुछ राजस मंदार लगभग दो सौ हैं और उनमें संक्षिप्त म को की संख्या लगभग दो लाख के आँकी जाती है। हर्ष की बात है कि शाप संस्थान के कार्य कर्ता इस मारी शक्ति के प्रवि-
कारक हैं। पर लमावत यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना और बहुमन की अपेक्षा रखता है। जिस प्रकार अपन देश में पूर्ण अरु मंदारक इस्तीयूट, संसार की सरस्वती महल छाइन री मद्रास विश्वविद्यालय की ओरिबन्ड मैट्रिकल्यूस छाइन री वा कलकरी की बंगाल परिवाहिक सोस्यटी अरु मंत्र मंदार हस्तलिखित मंत्रों को मद्रास में छान अरु अर कर रहे हैं और उनके कार्य के मद्रास का मुक्त फंड से समी स्वीकृत करते हैं, आरम्भ है कि वही प्रकार मह बीर अतिराय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की और भी जनता और रखन शानों अरु व्यन शीघ्र आरुप हाण और यह संस्था जिय सहायता की पाव है, वह उसे सुखम की आकषी। संस्था ने अब तक अपने माबलों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु आ कार्य शेष है वह कही अधिक बड़ा है और इसमें संदेह नहीं कि अवरण करन बाग्य है। ११ वीं शती से १६ वीं शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही इसकी संक्षिप्त निधि अरु कुनर जैसा समूह कोप ही हमारे सामने आ गया है। आज से करब १३ वर्ष पूर्व तक इन संघटनों के अस्तित्व अरु पता बहुत कम लोगों को था और उनके संबंध में ज्ञान बीन अरु कार्य ठा कुछ हुआ ही नहीं था। इस लक्ष्यो बलते हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य अरु व्यापक लागत किया जाना चाहिये।

प्रस्तावना

राजस्थान प्रतापियों से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहाँ अधिक राजनीतिक उथल-पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहाँ शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहाँ राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समानादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी नदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, गीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों में पूर्ण प्रभुत्व रहा। शताब्दियों तक वहाँ के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनवृत्ता एवं सेवा के कारण नदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुनृता एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहाँ के शासकों ने एवं समाज के सभी वर्गों ने इस ओर बहुत ही रुचि दिखायी इसलिये संकटों की समस्या में नये नये प्रथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ तैयार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का जितना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भंडारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताडपत्र एवं कागज दोनों पर लिखी हुई मग़्गमें प्राचीन प्रतियाँ इन्हीं भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिभास साहित्य इन्हीं भंडारों में संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि से नागौर एवं जयपुर के भंडार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, बूंदी, गरपुर एवं ऋषभदेव के भंडार भंडारों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भंडारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहाँ से ग्रन्थों को बटोर कर इनमें अपने मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भंडारों को ४ श्रेणियों में बाँट सकते हैं।

१ पाँच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भंडार

२ पाँच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

३. एक हजार से कम एवं पंचसौ से अधिक म न वाले शास्त्र मंडार

४ पाँचसौ प्रश्नों से कम वाले स्तर मंडार

इन शास्त्र संसारों में केवल धार्मिक साहित्य ही बचकर बची होता किन्तु धर्म, पुरुष ज्योतिष, आयुर्वेद, ग्रन्थ आदि विषयों पर भी प्रबल मिश्रता है। अत्येक मानव की रुचि के विषय, कथा कहानी एवं माटक भी इनमें अत्यधिक संख्या में बचकर बचते हैं। कहीं नही सामाजिक राजनीतिक एवं व्यवसायिक पर भी संशोधन का संग्रह मिलता है। कुछ संसारों में अनेक विद्वानों द्वारा लिखे हुये अत्यधिक संशोधन भी संग्रहीत किये हुये मिलते हैं। ये शास्त्र संसार लोक कर्म के शास्त्र विचारधर्मों के विषये शोध संस्वान हैं लेकिन संसारों में साहित्य की इतनी समृद्ध सम्पत्ति होती हुये भी कुछ वर्षों पूर्व तक ये विद्वानों के पूर्व के बाहर रहे। अब कुछ समय बढ़ता है और संसारों के व्यवस्थापक मंत्रों के विज्ञान में अपनी आग-बानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में लोक में हीम विद्वानों के लिखे हुये है। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्वान के ६ प्रमुख संसारों को न तो किसी भी विद्वान ने देखा और न किसी अनेक विद्वान ने इन संसारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अब गत १ १२ वर्षों से अनेक विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सर्व प्रथम इनके राजस्वान के अनेक के अनेक संसारों को देखा है और ये संसारों को अनेक की योजना बनाई का बुझी है।

ये प्रेम संसार प्राणीय पुत्र में पुस्तकप्रसंगों का काम भी करते थे। इनमें बैठ कर स्वाध्याय प्रेमी श्रावणों का अध्ययन किया करते थे। इस समय इन प्रयोगों की सुविधा भी उपज्ज्वल हुआ करती थी तथा वे प्रेम लक्ष्मी के पुत्रों के बीच में रखकर सतः प्रपन्न सिद्धि के पीछे से बांधे जाते थे। फिर उन्हें अपने के देहनों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार प्रयोगों के वैज्ञानिकी रीति से रखे जाने के कारण इन संसारों में ११ की राधास्त्री तक के जितने पुत्र दत्त पाये जाते हैं।

बैसा कि पहिल बहा का बुद्ध है कि वे संघ अंदर लागू करव एवं सर्वो तक में पाये जाते हैं। इसलिये राजस्थान में उनकी आस्थाधिक संस्था फिती है इसका पता लगाना कठिन है। फिर भी कई अनुमानत छोटे बड़े २ अंदर होंगे जिनमें ११, २ काल से आधिक इतराक्षित मधो का संस्था है।

जबपुर प्रारम्भ से ही जैन संस्कृति एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। वर्षों १५ से भी अधिक जिन मंदिर एवं चैत्यस्थल हैं। इस जगह की स्थापना संवत् १५५४ में मराठा राजा सवाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा इसी समय ज्योतिर के राजा जयपुर का राजधानी बनाया गया था। मराठा राजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र बनाया तथा एक राजकीय पोलीतान की स्थापना की जिससे भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैकड़ों महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत किये गये हैं। वहाँ के मराठा राजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान् थे। इन्होंने जिसमें ही ग्रंथ लिखे थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ संगीतस्यार जयपुर के बड़े मन्दिर के शालग्राम मंदार में संग्रहीत है।

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) गुमानीराम (१८, १९ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वीं शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छावड़ा (१९ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१९ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१९ वीं शताब्दी) नन्दलाल छावड़ा (१९ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द विलाला (१९ वीं शताब्दी) सदासुख कासलीवाल (१९ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्दूका (१९ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१९ वीं शताब्दी) जैतराम (१९ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१९ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१९ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रंथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर में ग्रंथ भण्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रंथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रंथों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भण्डारों में रखी गई।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भण्डारों के ग्रंथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भण्डार यहां के प्रमुख शास्त्र भण्डार हैं और इनमें दस हजार से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा ब भण्डार प्रमुख हैं। ग्रंथ सूची में आये हुये इन भण्डारों का सक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भण्डार)

यह भण्डार दि० जैन पाटोदी के मंदिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ में आदिनाथ चैत्यालय^१ भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ-साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भण्डार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भण्डार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भण्डारों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भण्डारक भी यहीं आकर रहने लगे। भण्डारक चेमेन्द्रकीर्ति सुरेन्द्रकीर्ति, सुखेन्द्रकीर्ति एवं नरेन्द्रकीर्ति का क्रमशः सन् १८१५,

१८२८, १८३३, तथा १८७६ में यहीं पञ्चमिषक हुआ था। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

भारत में यहाँ का शास्त्र मंदिर मन्दिरों की रैल रैल में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहाँ शास्त्रों की लिखन लिखवान की भी अच्छी व्यवस्था थी इसलिये शास्त्रों के अनुराध पर यहाँ ग्रंथों की प्रतिक्रिया भी होती रहती थी। मन्दिरों का जब प्रभाव शीघ्र होने लगा तथा जब ये साहित्य की ओर धैर्य दिलावान करने ला यहाँ के मंदिर की व्यवस्था शास्त्रों से संभाव थी। इतिहास शास्त्र मंदिर में संग्रहीत ग्रंथों को देखने के परभाव पर कहा जाता है कि शास्त्रों ने शास्त्र मंदिर के ग्रंथों की सरता वृद्धि में विशेष धर्मिकाय यहाँ दिलाई और उन्होंने मंदिर को इसी अवस्था में सुरक्षित रखा।

इतिहासिक ग्रंथों की संख्या

मंदिर में शास्त्रों की कुल संख्या २२५० तथा गुटों की संख्या ३०८ है। संक्षिप्त एक एक गुटके में बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिए गुटों में १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस मंदिर में चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। अक्षरमय, स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र की एक एक पाठ्यपद्धति को छोड़ कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी मंदिर में कपड़े पर लिखे हुये कुछ जम्बूद्वीप एवं अर्द्धद्वीप के चित्र एवं चन्द्र, मंत्र आदि का चरित्रकीय संग्रह है।

मंदिर में महाकवि पुण्यदत्त कुल बख्तर खरिब (पयोधर खरिब) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत् १४०७ में बनारस पुर्ण में लिखी गई थी। इनके अतिरिक्त यहाँ १५ वीं १६ वीं, १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन ग्रंथों में गोमटसर जीवरक्ष, तत्त्वसूत्र (सं. १४२८) इत्यदिग्रंथ इति (अक्षरमय-सं. १६३५), उपसंहारार बोध (सं. १४४५), वर्म संग्रह व्याख्यासार (संवत् १४४७) भावसार (शुद्धमूलाचार्य संवत् १४६९), सम्यग् (१४६४), विद्यानिष्ठ वृत्त अक्षरकी (१७६१) वराहपुराण टिप्पण प्रमाणम् (सं. १४७५) शान्तिनाथ पुराण (अक्षरमय सं. १४८९) मेरिग्रह खरिब (अक्षरमय सं. १६३६) भावसार खरिब (सं. १४८९) भाग खरिब (वज्र माय सं. १४८५) भावसार भावसार (सं. १६१९) आदि ऐक्यो ग्रंथों की कठिनीय प्रतियाँ हैं। ये प्रतियाँ सम्पादन कार्य में बहुत कामगार सिद्ध हो सकती हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

शास्त्र मंदिर में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, खरिब, अक्षर, तथा अक्षरमय, आनुवंशिक के ग्रंथों का अक्षर संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी



पंडितकरनमोनश्रलेपमतिनोहिवशनेनौहंयप्रश्रम
 परसभाभाकेमोहोवीवेवतहिलोकयापहसेसेनोही
 सवगिरधकीबनिनश्रवे'दोहूनीवेधरतनी
 श्रवसिमेवकरनीसुभभाजयीहोमोहूनीवेधरतनी
 चतुरसुपबोतसोहिलोलजिउरधारीसेवेतनीसुभ
 रजातिहमअकुतकारीसागवाउहेवास'असकेसा
 निपलेसोसिपुसिधिसीलोकाधरे'असकेसा
 तिनकेसाग्रहकारिकहोफुनि'दोलजिकेमनमेंवसी
 सीससुततेभासकीनी'इहेकेबाहे'नोरसीगा'केके
 सदेहसीजुवेसुश्रमाउ'अससा'तिधरो'नगर

वारपदासुकलनुसुभभासो'तीनैपहरसुहग्रंथ
 सुभपूरणहवाश्रानिनधर्मप्रभासकेलभचप्रम
 नूको'ने'दो'रे'धो'जगतमाही'नी'सग'बंद'दि'बो'क'ता'ति
 दो'न'भ'नि'के'ह'ये'में'न'वर'स'वर'ण'ने'ते'भ'रा'त'क्ष'श'ति'जो'नी
 न'भ'र'सा'मि'च'रि'त्र'म'ण'सु'भ'न'व'त'क'ला'ए'म'सु'भ'न'

है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों तुमखे इन्होंने गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद्यों का भी इन गुटकों में एक स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्रायः सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद्य लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये हम दृष्टि में भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पद्यों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कबीर, सूरदास, मल्लाराम, आदि कवियों के पद्यों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ ग्रंथों का सक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में अतकथा कोष (सकलकीर्ति एवं देवेन्द्रकीर्ति) आशाधर कृत भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद्र का मुनिमुव्रत हृदय, आशाधर के शिष्य विनयचंद्र की भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत खेमिणाह चरित, नरसेन की जिनरात्रिप्रधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण मथा, विमल सेन की सुगवदशमीकथा अज्ञात रचनाएँ हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रत्न कविकृत जिनदत्त चौपई (स १३५४) मुनिसकलकीर्ति की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का ममोदशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित, कृपाराम का ज्योतिष सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, ब्रूचराज का सुनकीर्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) विहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्मिणीभगत, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाएँ हैं जिनके सम्बन्ध में हम पहिले अन्वकार में थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हुये हैं।

२. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार दि० जैन श्रद्धा तेरहपथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र भंडार हैं जिनमें एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उसका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में

दे दिया गया है। इस्लाम शासक मंदार इसी मन्दिर में बाबा दुसीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इस क्रिये इस मंदार का कभी के नाम से पुछा जाता है। दुसीचन्दजी बकपुर क मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महापुरुष के पुत्र जिस के फरान नामक स्थान के रहने वाले थे। वे बकपुर इस्लामिक शासकों के साथ व्यवहार करते हुये धाय और उन्होंने शासकों की सुरक्षा की दृष्टि से बकपुर को स्थित स्थाव जानकर यही पर शासक संभालन स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शासक मंदार में २५ इस्लामिक ग्रंथ हैं जो सभी दुसीचन्दजी द्वारा स्थान स्थान की व्यवस्था करने क परवाना संग्रहित किये गए हैं। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं बाबाजी द्वारा मिले हुए हैं तथा कुछ बाबाओं द्वारा छोड़े प्रदान किए हुए हैं। वे एक बौद्ध साधु के समान जीवन वापन करते थे। ग्रंथों की सुरक्षा ब्रह्मन् आदि ही उनके जीवन का एक भाग व्यंग्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन बौद्ध ग्रंथ ग्रंथ में किया है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस मंदार में संग्रहित हैं।

एक शासक मंदार पूर्णतः व्यवस्थित है तथा सभी ग्रंथ भण्डार बस्तियों में रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई दो बार बस्तियों में रखा हुआ है। शासकों की ऐसी सुरक्षा बकपुर के किसी मंदार में नहीं मिलेगी। शासक मंदार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथ हैं। हिन्दी के ग्रंथ अधिकांशतः संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीकाएँ हैं। बीच दो भाषा सभी विषयों पर ग्रंथों में भी प्रतिबंध मिलती है लेकिन मुख्यतः प्राण्य, कथा चरित ग्रंथ एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित ग्रंथों ही का ग्रंथ अधिक संग्रह है।

मंदार में आप्तमीमांसाहृदयि (या विद्यानन्द) की सुन्दर प्रति है। क्रियाकलाप टीका की संस्कृत १२३४ की जिली हुई प्रति इस मंदार की सबसे प्राचीन प्रति है जो बौद्धग्रन्थ में सुस्तान तथा सुरीन के ग्रन्थ में लिखी गई थी। तत्प्राप्तमूल की स्वयंमयी प्रति वर्तनीय है। इसी तरह बौद्ध गोम्मतसार, ज्योत्स्नसार आदि कितने ही ग्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतियाँ हैं। ऐसी अच्छी प्रतियाँ कदाचित् ही हमारे मंदारों में बचने को मिलती हैं। ज्योत्स्नसार की खचित प्रति है तथा इसी वारिक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि वह देखते ही बनती है। पद्माकाश चौधरी क द्वारा लिखी हुई बाबुराम कुल बाबरग्रंथ पूजा की प्रति भी (सं १८५५) वर्तनीय ग्रंथों में से है।

१६ की शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पद्माकाशजी संबंधी का अधिकांश साहित्य ग्रंथ संग्रहित है। इसी तरह मंदार के संस्थापक दुसीचन्द की भी ग्रंथ सभी रचनाएँ मिलती हैं। ज्योत्स्न-नीच एवं महापुरुष ग्रंथों में बालू कवि का प्राज्ञहृदयकोप, विजयचन्द की द्विस्तंभान काव्य टीका बाबिचन्द्र सूरि का पञ्चमूल काव्य, ज्ञानार्थ पर मध्यिकास की संस्कृत टीका गोम्मत सार पर सञ्जयमूलक एवं बर्गचन्द की संस्कृत टीकाएँ हैं। हिन्दी रचनाओं में देवीसिंह बाबरा कुल

उपदेशरत्नमाला भाषा (म० १७६६) हरिकिशन का भद्रबाहु चरित (मं० १७८७) छत्तपति जैसवाल की मन-
मोहन पचविंशति भाषा (स० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदों का भी अच्छा
संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचन्द, दौलतराम, भागचन्द, मंगलचन्द, एव जयचन्द छावडा
के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोधनेर (स भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोधनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चावपोल बाजार
में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया या इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन
एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा प० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई
थी। पंडितजी जोधनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि
ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति सवन् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले प० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य
प० बल्लारलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान् ज्योतिष, अयुर्वेद, मन्त्रशास्त्र, पूजा
साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहाँ इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है।
भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों
की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक
प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियाँ हैं। सबसे
प्राचीन प्रति पद्मनन्दपचविंशति की है जिसकी सवन् १५७८ में प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय
ग्रंथों में प० आशाधर की आराधनासार टीका एव नागौर के भट्टारक चैमेन्द्रकीर्ति कृत गजपथामडलपूजन
उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचन्द के लिये की
थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवश काव्य की भंडार
में स० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शातिकुशल का अजनाराम एव पृथ्वीराज का रूक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ
हैं। यहाँ विहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पद्य वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह
का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

४. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर धौली के कुआरे के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मन्दिर'
के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ छोटा

समयप्रसीन विद्वानों में संनक्षत्रराम, गुमानरीराम, जयचन्द टासड़ा टासूराम । मन्दाबाल विष्णु का स्वरूपचन्द्र विलाहा के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों का सहयोग से वे ग्रंथों का इन्हीं समय पर सहे होंगे । प्रथिमसोतचतुर्वशीश्रवणायन सं १८७७, गान्धस्तार सं १८८६, पंचतन्त्र सं १८८८, चन्द्र चूडामणि सं १८९१ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवा कर इन्होंने भंडार में विराजमान की थी ।

भंडार में अधिकांश संवत् १६ बी २ बी शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ बी एवं १७ बी शताब्दी के भी हैं । इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं ।

पूष्यचन्द्राचार्य	अपसर्गहरस्तोत्र	र का सं० १२२३	संस्कृत
पं० अन्नदेव	लक्ष्मिविधानकथा	सं १६ ७	"
अमरकीर्ति	पद्ममोपदेष्टरत्नमाला	श १६५२	अपभ्रंश
पूष्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं १६५३	संस्कृत
मुपेन्द्र	शोषर चरित्र	सं १६६	अपभ्रंश
ब्रह्मनेमिदूत	नेमिनाथ पुराण	सं १६४६	संस्कृत
शोभराज	श्रवणसार भाषा	स १७३	हिन्दी

अष्टाष्ट कृतियों में तत्काल कविद्वय समकालिण्याह चरित्र (अपभ्रंश) तथा हरचंद्र रचयित कृत सुकृष्ण चरित्र भाषा (र का १६१८) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

८. वि जैन मन्दिर गोधों का जमपुर (ज मंडार)

गोधों का मन्दिर भी चालों का रास्ता, बागोटियों का चौक औरी बाजार में स्थित है । इस मन्दिर का निर्माण १८ बी शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण का परंपरा ही यहां रास्ते का संभव किया जाना प्रारम्भ हो गया था । बहुत से ग्रंथ यहां संग्रहाणेर का मन्दिरों में से भी काय गये थे । वर्तमान में यहां एक सुप्रसिद्ध शास्त्र भंडार है जिसमें ६१६ हस्तलिखित ग्रंथ एवं १२ मुद्रक हैं । भंडार में पुराण चरित्र कथा एवं शास्त्र साहित्य का अच्छा संग्रह है । अधिकांश ग्रंथ १७ बी शताब्दी से लेकर १६ बी शताब्दी तक के लिखे हुए हैं । शास्त्र भंडार में श्रवणसारभाषा की संवत् १२८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है । यहां हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है । हिन्दी की विभिन्न रचनायें महात्मा पूर्ण हैं जो अन्य भंडारों में संभव ही में नहीं मिलती हैं ।

विष्णुमण्डितपपाक	ठमरुत कवि	हिन्दी	१६ बी शताब्दी
सीमन्धर स्तवन	"	"	"
ग्रीत एवं आदिनाथ स्तवन	पराह कवि	"	"

नेमीश्वर चौमामा	सुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	,	"	" "
नेमीश्वर राम	सुनि रत्नगीति	"	" "
नेमीश्वर हिंडोला	"	"	" "
द्वयसंग्रह भाषा	हेमराज	,	२० का० १७१६
चतुर्दशीकथा	टालूगाम	"	१७६५

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें बृच-राज, दीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द्र, सुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय हैं। सन् १६०६ में रचित हृदयनरवि की होलिका चौपड़ भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। सन् १८३० में रचित हृदय नगवाल कृत पञ्चरत्न्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

सरसूत ग्रंथों में हमारा नाम विरचित पञ्चपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उनका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संग्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण स० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित स० १६५०, विदग्धमुखमंडन स० १६८३, मारस्वत दीपिका स० १६५७, नाममाला (वनजय) स० १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगति) स० १६५३, मनससार नाटक (वनारसीदान) स० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा स० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के उद्देश्य समय पश्चात् ही यहां शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यिक व्यक्ति थे इसलिए उन्होंने थोड़े समय में ही अपने यहां शास्त्रों का अच्छा संग्रह कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८वीं शताब्दी एवं उनके बाद की शताब्दियों के लिखे हुए हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभाष्य पत्रिका स० १५६४, प० नेत्री-चन्द्र कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, है। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार स० १६१४, आशाधर कृत सागरधर्मामृत स० १६२८, जेष्ठविमिश्रकृत तर्कभाषा स० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौड़ा रास्ते में स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पांड्या जयपुर (क + डार)

विजयराम पांड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुए यह जयपुर बसने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

सा शास्त्र मंडार है जिसमें केवल १ न हस्तलिखित प्र य है। इनमें ७५ हिन्दी के तथा शेष संस्कृत भाषा के प्र य हैं। समग्र सामान्य है तथा प्रतिदिन स्थाव्याय के उपयोग में आने वाले प्र य हैं। शास्त्र मंडार करीब १४० वर्ष पुराना है। अष्टरामजी साह यहाँ कस्बे की सम्जन हो गये हैं जिन्होंने किये ही प्र य लिखवाकर शास्त्र मंडार में विराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुये ग्रंथों में यं जयचम्पू अथवा कृत ज्ञानार्थक भाषा (सं १८२२) सुशालचम्पू कृत त्रिकोणमार भाषा (सं १८८४) बौद्धरामजी कस्बेकीवाल कृत आदि पुराण भाषा सं १८८३ एवं बीतर ठोकिवा कृत होकिध चरित (सं १८८३) के नाम कस्बेकीवाल हैं। मंडार व्यवस्थित है।

५ शास्त्र मंडार दि जैन नया मन्दिर बैराठियों का जयपुर (य मंडार)

'य' मंडार जोहरी बाजार मांटीछिड़ मोमियों के रास्ते में स्थित नये मन्दिर में संभरीत है। यह मन्दिर बैराठियों के मन्दिर के साम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र मंडार में १५ हस्तलिखित प्र य हैं जिनमें बीरतन्त्रि कृत चम्पूप्रम चरित की प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १५२४ भाद्रपद शुदी ७ के दिन लिखा गया था। शास्त्र मंडार की छवि से मंडार थोड़ा ही है किन्तु इसमें किये ही प्र य बल्लेकवीर है। प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों में गुणमहाकाव्य कृत चत्वार पुराण (सं १६६९) ब्रह्मजिनदास कृत हरिवंश पुराण (सं १६४९) दीपचम्पू कृत ज्ञानवपथ एवं कोटसेन कृत ब्राह्मणकथा की प्रतियां सम्प्रेक्षनीय हैं। श्री राजहोषीभाष्य की पण्डितिक शतक की सीढ़ी संवत् १५७६ के ही अग्रजन्म प्राप्त की किसी है। ब्रह्मजिनदास कृत अष्टावीस भूकगुणास एवं ज्ञान कथा (हिन्दी) तथा अष्ट अक्षित का संघटितकरास कस्बे की प्रतियों में हैं। मंडार में अपिमंडल स्तोत्र, अष्टिमंडल पूजा निर्वाणकाण्ड, अष्टाष्टिका चक्रमण्ड की लखाँकरी प्रतियां हैं। इन प्रतियों के बाहर मुहर बेल बूते से बूझ है तथा कथा पूर्ण हैं। श्री बेल एक बार एक त्रय पर आगई वह फिर आगे किसी वन पर लगी आई है। शास्त्र मंडार सामान्य व्यवस्थित है।

६ शास्त्र मंडार दि जैन मन्दिर संपीजी जयपुर (क मंडार)

संपीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विराजित मन्दिर है। यह चौकरी मोदीलाना में महावीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण रीतम मू बायामजी संपी द्वारा कराया गया था। यं मंडार का अक्षरिणी के शासन काल में जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चबूती में साने एवं चाप का बाय हा रखा है। यह चबूती ही मुहर का कथा पूजा है। चाप का ऐसा चपड़ा चार्य बहुत ही कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र मंडार में ३७३ हस्तलिखित प्र यों का संग्रह है। सभी प्र य अंग्रेज पर लिखे हुये हैं। अष्टाष्टिका प्र य १८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी के लिखे हुये हैं। सबसे लम्बी प्र य लखीचरकाव्य है जो संवत् १६६५ में लिखा गया था। इसका कथा चबूती है कि समाज में चाप की प्र यों की प्रति

लिपियाँ करवा कर भडारों में विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह आचार्य कुन्दकुन्द कृत पचा-स्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो सन् १४८७ की लिखी हुई है।

ग्रंथ भडार में प्राचीन प्रतियों में भर्षकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, धर्मकीर्ति की कौमुदीकथा संवत् १६६३, पद्मनन्दि श्रावकाचार संवत् १६१३, भ शुभचन्द्र कृत पाण्डवपुराण स १६१३, बनारसी विलास स० १७१५, मुनि श्रीचन्द्र कृत पुराणसार स० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भडार में संवत् १५३० की किरातार्जुनीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीक्षा की भाषा सन् १७१८ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद स० १७१६ की ही लिखी हुई भडार में एक प्रति संग्रहीत है। इसी भडार में महेश कवि कृत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णचालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भडार में ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें हर्षकवि कृत चन्द्रसक्त्या स० १७०८, हरिदास की हानोपदेश वत्तीसी (हिन्दी) मुनिभद्र कृत शातिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

७. शास्त्र भडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रप्रभ दि० जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय में दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह बड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पथ आम्नाप के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहाँ संस्कृत ग्रंथों का विशेषतः पूजा एवं सिद्धान्त ग्रंथों का अधिक संग्रह है। ग्रंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

संस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निम्न प्रकार हैं।

धर्म एवं सिद्धान्त १४७, अध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १५२, स्तोत्र ८१ अन्य विषय ३२०।

इन ग्रंथों के संग्रह करने में स्वयं अमरचदजी दीवान ने बहुत रुचि ली थी क्योंकि उनके

समयकालीन विद्वानों में से जबहादुर गुमासीराम, जयचन्द कावड़ा कावड़ा। मन्दासराज निम्बूका स्वरूपचन्द्र विशाला के नाम कलकत्तानीय हैं और समस्त इन्हीं विद्वानों के सहयोग से वे ग्रंथों का श्रवण सम्पन्न कर सके होंगे। प्रक्रिययासावधतुल्यशीतोष्णोष्णसर्ग १८७७, गोमटसारा सं १८८६, पंचतन्त्र सं १८८७, अत्र बृहन्मणि सं० १८८९ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवा कर इन्होंने मंदार में बिराजमान की थी।

मंदार में आधिकार्य संग्रह १३ बी २ की शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ बी एवं १७ बी शताब्दी के भी हैं। इनमें निम्न ग्रंथों के नाम कलकत्तानीय हैं।

पूर्वचन्द्राचार्य	अपसर्गहस्तोत्र	वे का सं १३४६	संस्कृत
पं० आभवेष्ट	छात्र्यविज्ञानप्रथा	सं १६०७	"
अमरवीरि	पञ्चमोपदेशरत्नमाला	स १६२२	अपभ्रंश
पूज्यपाद	सर्वांगसिद्धि	सं १६३३	संस्कृत
सुमन्त	परोधर चरित्र	सं १६६६	अपभ्रंश
अग्नेमिदध	नेमिनाभ पुण्य	सं १६४६	संस्कृत
चोबराज	मयचन्दसार भाषा	सं १७६६	हिन्दी

आद्याद ध्रुवियों में सेजपाक कविद्वय अमरविजय्याह चरित्र (अपभ्रंश) तथा इतरार्थ रत्नमाला एवं सुखमय चरित्र भाषा (१ का १३१८) के नाम विशेषतः कलकत्तानीय हैं।

८ दि जैन मन्दिर गोर्खों का जयपुर (ज मंदार)

गोर्खों का मन्दिर भी राजाओं का राजा न्यायोरियों का चौक चौहरी बाजार में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण १८ बी शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के पश्चात् ही यहां श्रावण का संग्रह किया जाता प्रारम्भ हो गया था। बहुत से ग्रंथ यहां संग्रहने के धर्मियों में से भी छाये गये थे। वर्तमान में यहां एक सुखमयित श्रावण मंदार है जिसमें ६६ इस्खिमित ग्रंथ एवं १२ गुटके हैं। मंदार में पुण्य चरित्र कथा एवं लोत्र संहिता का अपभ्रंश संग्रह है। आधिकार्य ग्रंथ १७ बी शताब्दी से लेकर १३ बी शताब्दी तक के कितने ग्रंथ हैं। श्रावण मंदार में अथवाकोश की संस्कृत १८८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है। यहां हिन्दी रचनार्यों का भी अपभ्रंश संग्रह है। हिन्दी की निम्न रचनार्यों में महत्त्वपूर्ण हैं जो अथवा मंदारों में सहेज ही में नहीं मिलती हैं।

विष्णुमयिजयपाक	ठण्डुर कवि	हिन्दी	१६ बी शताब्दी
सीमन्तर स्तवन	"	"	" "
गीत एवं आदिनाथ स्तवन	पद्म कवि	"	" "

नेमीश्वर चौमामा	मुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	,	"	" "
नेमीश्वर रास	मुनि रतनगीति	"	" "
नेमीश्वर हिंदोल ना	"	"	" "
द्रव्यसंग्रह भाषा	हेमराज	,	२० का० १७१६
चतुर्वर्णीकथा	डालू राम	"	१७६५

उक्त रचनाओं के प्रतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें वृच-राज, दीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द, मुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय हैं। सन् १६२६ में रचित छ गुरुचि की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। सन् १८३० में रचित हरचंद गगवाल कृत पंचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

सरकृत ग्रंथों में उमास्वामि विरचित पंचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उसका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संग्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण स० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित स० १६५८, विदग्धमुखमंडन स० १६८३, सारस्वत दीपिका स० १६५७, नाममाला (धनजय) स० १६४३, धर्म परीक्षा (अमितनाथ) स० १६५३, समयसार नाटक (वनारसीवास) स० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा स० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय परचात ही यहा शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यिक व्यक्ति थे इसलिये उन्होंने थोड़े समय में ही अपने यहा शास्त्रों का अच्छा सकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एवं उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभाकर पत्रिका स० १५६४, ५० देवी-चन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, है। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार स० १६१४, आशाधर कृत सागारधामस्त स० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाषा स० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौड़ा रास्ते में स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर (भ भंडार)

विजयराम पाड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर दमने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

पाशों का हरीश या पापनश्रुती में स्थित है। यहाँ का शास्त्र मंदार भी कोई अच्छी दशा में नहीं है। पशुन से प्रबन्धीय हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहाँ २७५ प्रबन्ध एवं ५५ गुटके हैं। शास्त्र भंडार का देखते हुये यहाँ गुटकों का अच्छा संग्रह है। इनमें विरचमूर्ण की नेमीरार की बहरी दुस्तरन की नेमिनाथ पूजा श्याम कवि की तीन चौवीसी चौपाई (८ का १७५६) खोजी-रात सांगली की जगन्नाथशिव भाष्य के नाम ब्रह्मेतनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त गणपत्र हरिद्व, मनराम इषीति दुसुबन्ध आदि कवियों के पद्य भी संभलीय हैं साथ लोष्ट हठ त्रयवेति एवं खड्गम का राजनीतिशास्त्र भाष्य भी हिन्दी की ब्रह्मेतनीय रचनायें हैं।

११ शास्त्र मंदार दि जैन मन्दिर पार्वनाथ अरपुर (अ मंदार)

दि जैन मन्दिर पार्वनाथ अरपुर का प्रसिद्ध कम मन्दिर है। यह जनासकी का शाखा की पामनश्रुती में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८५ में सानी गोत्र वाला किसी भावक ने कराया था इसलिये यह सोचियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहाँ एक शास्त्र मंदार है जिसमें ३४ प्रबन्ध एवं १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा के मंत्रों की है। मास्किव सूरि हन वज्राय अरुण भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं १४५५ की मिली हुई है। यद्यपि मंदार में मंत्रों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अभाव एवं महत्वपूर्ण मंत्रों तथा प्राचीन प्रतियों का यहाँ अच्छा संग्रह है।

उन अज्ञान मंत्रों में अपभ्रंश भाषा का विषय यह हठ अजितनाथ पुराण कवि रामोद्व हठ बेमिप्राह चरिप शुष्मन्ति हठ बीरनन्ति के चम्पूप्रमकाशकी पवित्र (संस्कृत) महापंडित जगन्नाथ श्रुत नेमिनद्वर लोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मन्ति हठ ब्रह्म मान काव्य, शुभचम्पू हठ वल्लभार्ज (संस्कृत) चम्पूमुनि हठ दुर्गाधार (संस्कृत) हम्पूजीत हठ मुक्तिमुक्त पुराण (हि.) आदि के नाम ब्रह्मेतनीय हैं।

यहाँ मंत्रों की प्राचीन प्रतियाँ भी पर्याप्त संख्या में संग्रहीत हैं। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूची की क्र. सं.	प्रबन्ध नाम	प्रवर्तार नाम	क्र. सं.	भाषा
१४३८	पटपाहुह	या कुम्भकुम्भ	१४१६	प्रा०
२३५	ब्रह्म मानकाव्य	पद्मन्ति	१४१८	संस्कृत
१८६३	स्वाहाहर्षजरी	मास्किपण सूरि	१४१९	"
१८६९	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	१४८०	अपभ्रंश
२६८	बेमिप्राहचरिप	शमीवर	१४८९	"
२६२६	मनोहरचरित्र दिव्यण	प्रयाचम्पू	१४८८	संस्कृत
११४	सागरपर्यायण	आराधर	१४६५	

सूची की क्र सं	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार नाम	ले काल	भाषा
२५४१	कथाकोश	हरिपेणाचार्य	१५६७	संस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१५६४	"
२२५	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	१६३३	"
२०८६	चित्रचूडामणि	वादीमसिंह	१६०५	"
२११३	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	१६०३	"
२११५	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	"

इस भंडार में ऋषडे पर सन् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध ऋषडे पर लिखे हुये ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन है। यहा यशोधर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

१२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १६४८ में जे. ए. शोध सस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची में १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छावनों के मन्दिर के तथा बाबू हानचंदजी खिन्दूका द्वारा भेंट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची में आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन ग्रंथों में पुष्पदन्त कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३६६ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित श्रवसीय कविता (हिन्दी), ब्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्धन कृत पान्धव-चरित (संस्कृत), लाखो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमजरी, उदयभानु कृत भोजरासो, अग्रदास के कविता, तिपरदास कृत रुक्मिणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत स्नेहलीला, श्याममिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाह्निका रासो तथा वसीदास कृत रोहिणीविधिवथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंडार में प्राचीन ग्रंथों का अच्छा सकलन है।

ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

प्रथम सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिये प्रथमों का विषयानुसार वर्गीकरण करने के लिये २५ विषयों में विभाजित किया गया है। विभिन्न विषयों के ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। साहित्य का संभवतः एक भी ऐसा विषय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक ओर जहाँ इन्होंने दार्शनिक एवं भाग्य साहित्य लिख कर मंडारों को मरा है वहाँ दूसरी ओर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा, कोरा आदि लिख कर अपनी विद्वत्ता की छाप लगाई है। भाषकों एवं सामान्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शस्त्र के सूत्र से सूत्र विषय का विरलेषण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एवं सूक्ष्म चर्चा शास्त्र ही काव्य बनो में मिल सके। पूजा साहित्य लिखने में भी वे किसी से पीछे नहीं रहें। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर भाषकों को इनके जीवन में उत्तारने की प्रेरणा भी दी है। आचार्यों की लेखनीशक्तियों में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का कभी उपमात्वा से वर्णन किया है। प्रथम सूची के इसी भाग में १५ से अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

दार्शनिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने लक्ष निर्या है। दीर्घ-कठों एवं शृङ्गाकर्मों के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके हाथ लिखे हुये बड़े बड़े पुराण एवं काव्य ग्रंथ लिखते हैं। प्रथम सूची में प्रायः सभी महापुरुषों पुराण साहित्य के ग्रंथ आगये हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों की व्याख्या के रूप में बयान करने में वैश्याचार्यों ने अपने पांडित्य का अच्छा प्रदर्शन किया है। इन मंडारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। वे कथाओं रोचक होने के साथ साथ शिक्षार्थ भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन मंडारों में अच्छा साहित्य संग्रहीत है। श्रुतियों में आयुर्वेद के प्रसंगों का अच्छा संग्रह है। ऐक्यों ही प्रकार के सुसजे दिव्य हुए हैं जिन्हें पर लोच होने की वास्तविक आवश्यकता है। इस बार हमने चण्ड, एतौ एवं बलि साहित्य के ग्रंथों का अतिरिक्त वर्णन किया है। जैन आचार्यों ने हिन्दी में छोटे छोटे सक्नों एतौ ग्रंथ लिखे हैं जो इन मंडारों संग्रहीत हैं। अनेकें प्रथम जिनवास के ४ से भी अधिक एतौ ग्रंथ मिलते हैं। जैन मंडारों में १४ की शताब्दी के पूर्व से रासो ग्रंथ मिलाने लगते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रंथ-वन करने की दृष्टि से संग्रहीत किये हुये इन मंडारों में जैन-र विद्वानों के वाक्य व्याकरण, कथा ज्योतिष आयुर्वेद, कोप नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संग्रहण मिलता है। जैन विद्वानों ने अतिवास, माय मारवि आदि मसिह कवियों के काव्यों का संग्रहण ही नहीं किया किन्तु कर्म पर बिल्व डीकरों भी लिखी हैं। प्रथम सूची के इसी भाग में ऐसे लिखने की काव्यों का संक्षेप आया है। मंडारों में ऐतिहासिक रचनाओं की पर्याप्त संख्या में मिलती है। इनमें महारक पद्मशक्ति महारक के कर्म, गीत चोमार्ग बखान बंशोत्पति बखान देहरी के बाहरावरी एवं काव्य एतौ के एतौओं के वर्णन एवं वर्णों की वसतप का बयान मिलता है।

विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों में उत्तरी भारत की प्रायः सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने धृष्ट साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, धीरनन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, सकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकाएँ भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशस्तिलक चम्पू, धीरनन्दि का चन्द्रप्रभाकव्य, वर्द्धमानदेव का वरागचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें हिन्दी भी महाकाव्य के समकक्ष ठिठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांश योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रंथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची में अपभ्रंश में एक प्राकृत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयम्भू, पुण्डित, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारम्भिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों में हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएँ मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सर्व प्रमुख है जो सन् १३४४ (१२६७ ई.) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक मुननकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, छीहल, वृचराज, ठक्कुरसी, पल्ह आदि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैनोत्तर विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहाँ अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेल, विहारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कबीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र ग्रन्थ इस दृष्टि से अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

स्वयं ग्रन्थकारों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों की मूल प्रतियाँ

जैन विद्वान् ग्रंथ रचना के अतिरिक्त स्वयं ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ भी लिखा करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ राष्ट्र की बरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति हैं। ऐसी पाण्डु लिपियों का प्राप्य होना स्वच्छ बात नहीं है। लेकिन जयपुर के इन मंडारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की क्र. सं.	ग्रन्थकार	ग्रन्थ नाम	लिपि संवत्
८४८	कनकदीप्ति के शिष्य सदाशिव	पुरुषार्थ सिद्धयुगाय	१८००
१ ४२	रत्नकरचन्द्राचरणार भाषा	सुप्रसन्न कसलीनाथ	१६२
६७	गोमन्तसार जीवार्थार भाषा	पं. टोडरमल्ल	१८ वीं शताब्दी
२६२५	जयमलभा	पं. भारतमल्ल	१६४९
३६४२	पंचमंगलपाठ	सुरप्रकाशचन्द्र काका	१८४४
३४३३	श्रीकण्ठ	बोकराब गोदीका	१७५
३३८२	सिद्धार्थ कंडन	बलराम साह	१८३५
३७२८	गुडका	देवचंद	—
३६४७	परमार्थ मन्त्रार्थ एवं उत्तरसार	बाबूराम	—
६ ४४	जीवाजीस ठाण	मन्त्रायमल्ल	१६१३

गुणों का महत्व

स्वतंत्र मंडारों में हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त गुणों की संख्या में वृद्धि है। साहित्यिक रचनाओं के संरक्षण की दृष्टि से वे गुणों बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संरक्षण किन्ने हुए कमी कमी देसे पाठ मिलते हैं जो अत्यन्त नहीं मिलते। ग्रंथ सूची में आने हुये बारह मंडारों में ८२ गुणों हैं। इनमें सबसे अधिक गुणों का मंडार में है। अविच्छेद गुणों में पूजा स्तोत्र एवं कथाओं की मिश्रणी हैं। इन्हीं ग्रंथों में मंडार में गुण गुणों देसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं अत्यन्त पाठों का संरक्ष होता है। ऐसे गुणों का अ, ब, ग एवं ट मंडार में अत्यन्त संरक्षण है। १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनका जीवार्थ जीवार्थ का मंडार के एक गुणों में हैं। प्राप्य हुई है। इसी तरह अथर्वनाम की किताबी ही कथाओं अथर्वनाम, गुणार्थ, जीवार्थ ठाण्ठरसी पत्र, अत्यन्त आदि प्राचीन ग्रंथों की रचनाओं में इसी गुणों में मिली हैं। हिन्दी पत्रों के संरक्षण का तो वे एकमात्र स्रोत हैं। अविच्छेद हिन्दी विद्वानों का एक साहित्य इनमें संरक्षित किन्ना हुआ होता है। एक एक गुणों में कमी कमी ता ३ ४८ पर संरक्ष किन्ने हुये मिलते हैं। इन गुणों में ही ऐतिहासिक सामग्री अत्यन्त होती है। पण्डितार्थ अन्त, गीत वंशार्थ बाबराही के विवरण अन्तों की वसुधाय आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्तव्य है कि वे अपने यहां के गुटकों को बहुत ही समझोल कर रखें जिसमें वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके बिना घेष्टनों में बचे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आज्ञा दे दी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गावों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूंढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली सन्तति तो इन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही इन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ इन संग्रहालय में संग्रहीत कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी घस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहां रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतः प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, कोटा, बूंदी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, हंगरपुर, प्रतापगढ़, वासवाड़ा आदि स्थानों पर इनके बड़े बड़े संग्रहालय खोल दिये जावें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावें तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बड़ा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में वेष्टन नहीं है तो कहीं बिना वेष्टनों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय इत्यादि वह संसाधन व अपपुर के दैनिकीय स्थानों में से गिना जावेगा। प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी आएंगे और वेन साहित्य के विविध विषयों पर काम कर सकेंगे। इस संसाधन में छात्रों की पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रयोजन एक संस्था का अधीन हो। अर्थात् है अपपुर का वेन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और छात्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के सिने कोई निश्चित योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वोत्तम सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया है। प्राचीन एवं अद्यतन ग्रंथों की ग्रंथ प्रस्तुति एवं लेखक प्रस्तुति सभी हैं जिससे विद्वानों को उनके कर्ता एवं क्षेत्र का ज्ञान के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। ग्रंथों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से ग्रंथों के पूरे पाठ एवं शेष ग्रंथों के अन्तर्लक्ष्य पाठ दिए हैं। ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमिका ग्रंथ एवं ग्रंथकार, नाम नगर एवं उनके शासकों का ज्ञान के चार परिशिष्ट दिए हैं। ग्रंथानुक्रमिका को देखकर सूची में जाये हुये किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र साधन किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम एवं उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रमिका में ४९ ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट ग्रंथों में सभी ग्रंथ सूच्य ग्रंथ हैं तथा शेष ग्रंथों की प्रतियाँ हैं। इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही प्रकार के इस सूची में कितने ग्रंथ जाये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। नाम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन ग्रंथों में किस किस नाम एवं नगरों में रहे हुये एवं कितने हुये ग्रंथ संग्रहीत हैं का ज्ञान जा सकता है। इसके अतिरिक्त वे नगर कितने प्राचीन वे एवं अन्य साहित्यिक गतिविधियाँ किस प्रकार चलती थी इसका भी हमें ज्ञान मिल सकता है। शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा महाराजा एवं वादराजों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ १ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संक्षेप में इस प्रकार के अनेक बहुत सामाजिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। अन्ततः में ग्रंथ ग्रंथों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त ग्रंथ में ४९ अद्यतन ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। अन्ततः में ही एक अद्यतन एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में ग्रंथ सूचियों से। सभी तरह की अधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक काम कर सकें। ग्रंथों के नाम ग्रंथकर्ता का नाम, उनके राजस्थान, नाम आदि के राज-राज उनके आदि ग्रंथ भाग पूर्वोक्त ठीक १ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियाँ रहना सामान्य है। इसलिये विद्वानों से इत्यादि अपुर दृष्टि अपमान का अनुरोध है तथा यदि कोई ग्रंथी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इस कमियों को दूर किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की रोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये अनुकरणीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। ग्रंथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी वज, समीरमलजी छाचड़ा, पूनमचंदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचंदजी दीवाण, भंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोघा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रावका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें ग्रंथ भंडार की सुविधा बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर भंडार के ग्रंथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय प० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञाजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य दिया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगनचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका ग्रंथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक प० परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हृदय से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देगकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा० वासुदेवशरणजी सा अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा० का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर
दिनांक १०-११-६१

कस्तूरचंद कासलीवाल
अनूपचंद न्यायतीर्थ

प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतमर्मरस काव्य

नाटक बर्मे पर यह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं। महारक गुणचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे कौटिल्य के पुत्र सायबरास के पठनार्थ लिखा था। एवं म बन्धर ने अपनी प्रशंसा निम्न प्रकार लिखी है—

पट्टे मीडु वड्ड बाबायें तत्तुई श्रीसहस्रकीर्ति बत्तुई श्रीत्रिभुवनकीर्तिरैव तत्तुई श्रीगुण
रत्नकीर्ति तत्तुई श्री शृणुचन्द्रदेवमहामुनिचित्तमहात्म्य ब कर्मकार्य कौटिल्य सुत पंडित श्री सायबरास
पठनार्थ ॥ काव्य की एक प्रति म संभार में है। प्रति पण्डित है तथा उसमें प्रथम २ वृत्त भरी हैं।

२ आप्यारिक् माया

इस रचना का दूसरा नाम पट्ट पद काव्य है। यह महारक सहस्रकीर्ति की रचना है जो संभवतः महारक सहस्रकीर्ति की परम्परा में हुय थे। रचना अप्रभ ॥ माया में निबद्ध है तथा कल्पकीर्ति की है। इसमें संसार की लहरला का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें २८ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

विराजा आर्यति पुखो विरजा सेवति अप्पणो समि विरजा ससहावरणा परम्प परम्पुहा विरजा।
ते विरजा जगि अत्ति जिधिनि परवम्पु ख हर्षहि, ते विरजा ससहाव करहि पद विक्कम्पि पिद्धि ॥
विरजा सेवहि छामि विष्णु पिब हैव वसंतक, विरजा आर्यहि अप्पु शुद्ध वैष्णव गुणवतव।
अप्पु पचत्तु कुल्लह लहिनि सरपथ कुल्ल लपत्तु विषय, विष्णु पम् परंपर पिप्पुहि बुद्ध गाह मरिज ज्ञानव कियव ॥

इसकी एक प्रति म संभार में सुरक्षित है। यह प्रति आप्यार्य मेदिचन्द्र के पढ़ने के लिये लिखी गई थी।

३ आराधनसिद्ध प्रबन्ध

आराधनसिद्ध प्रबन्ध में मुनि प्रमाचन्द्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रमाचन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रमाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मसिद्धि जिसने द्वारा विरचित 'बद्ध नाम पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रमाचन्द्र ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपना परिचय दिया है। एक परिचय देखिये—

श्रीगुरुनमो वरभारतीय गच्छे ब्रह्मात्मधारणोति रम्ये।

श्रीकृष्णधरवसुनीन्द्रदेवो ज्ञातं प्रमाचन्द्रमहाकवीन्द्र ॥

देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्मर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण ।
अनुप्रहार्यं रचितं सुवाक्यै आराधनासारकथाप्रबन्ध ॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्च निगद्यते च ।
मार्गेण किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोके ॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है । यह अभी तक अप्रकाशित है ।

४ कवि वल्लभ

क भंडार मे हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं । एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है । हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था । ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे । विहारी सतसई पर टीका इन्होंने सवत् १८३४ मे समाप्त की थी । इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की । इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है । पूरे काव्य मे २८४ पद्य हैं । संवत् १८५२ मे लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है ।

५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह छावडा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान थे । ये जिनदास के पुत्र थे । सवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दो-बद्ध रचना की थी । मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है । कवि नरवर निवासी थे जहां कूर्म वंश के राजा छत्रसिंह का राज्य था ।

उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है । पूरे ग्रंथ मे १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों मे निबद्ध है । कवि ने ग्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

बातसल गोती सूचरो, सचई सकल बखान ।

गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान ॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की वानी, जगत माहि प्रगटै सुखदानी ।

या विधि चिंता मनि सुभाषी, भाषा छंद माहि अभिलाषी ॥

श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खडेलवाल सावरा साखा ।

देवीस्थंघ नाम सब भाषै, कवित माहि चिंता मनि राखै ॥

भी सिद्धांत जगद्गुरुस्य एतदुक्तं संक्षिप्तं कर्तुं ।
 एकं ध्यानं कथं कथं भूयः सुमनसोमित्र विचिन्तय ॥
 विमं सुखं के मन्त्रस्य सेवी तम विद्याम विद्यात है ।
 इति पदं परमात्म सुखानी विवृतं कथि जगद्गुरु है ॥

दोहा

सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ।
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ॥१५॥
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ।
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ॥१५॥
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ।
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ॥१५॥
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ।
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ॥१५॥

श्रीगोष्ठा

सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ।
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ॥
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ।
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ॥१५॥
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ।
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ॥१५॥
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ।
 सुखविद्यामं नरकरपदी, जगत्पथं जगत्पथ ॥१५॥

६ गोष्ठासार टीका

गोष्ठासार की यह संस्कृत टीका आ० सदाशिवदास द्वारा लिखित है । टीका के प्रारम्भ में विविध भाषाओं में टीका के विषय में लिखा है वह निम्न प्रकार है—

‘अथ गोष्ठासारं यं यं गोष्ठां यं यं टीकां यं यं भाषां यं है यद्यपि यद्युक्तं सदाशिवदास
 में संस्कृत टीका कदाई ही लिखित है ।

टीका का नाम गोष्ठासार है जिसका टीकाकार ने गोष्ठासार में ही लिखित किया है—

मुनि सिद्धं प्रणम्याह नेमिचन्द्रजिनेश्वरं ।

टीका गुम्फटसारस्य कुर्वे मन्दप्रबोधिका ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्फटसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रबोधिका ही है । 'मुख्तार साहब ने उसको गाथा नं० ३८३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आठ सकल भूषण दिया है । इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये । टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है ।

विक्रमादित्यभूषणं विख्यातो च मनोहर ।

दशपंचशते धर्मे पद्मि संयुतसप्ततौ ॥१५७६॥

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशांसन-मुद्गाधतरनिवासि प्रवादिमदीयसिधुरसिंहायमानसिंहनदि मुनीन्द्राभिर्नन्दित गंगवशलतामराज सर्वज्ञानेर्गुणनामधेय-श्रीमद्रामल्लवेव महावल्लभ-महामात्य पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुणरत्नभूषण सम्यक्त्वरत्ननिर्लयादिविविधगुणनाम समासादितकीर्तिकातश्रीमच्छासुभराय मध्यपुण्डरीकं द्रव्यानुयोगप्रशन्नानुरूपं महाकर्मप्राप्तसिद्धान्त जीवस्थानाख्यप्रथमखड्यार्थसमग्रं गोम्फटसारनामधेय-पंचसंग्रहशास्त्रे प्रारम्भ समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि श्रीमन्नेमिचन्द्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोमटसारप्रथमावयवभूत जीवकाण्ड विरचयस्तत्रादौमलगालनपुण्यावाप्ति शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थ विशिष्टेष्टदेवतानमस्काररूपधर मंगलपूर्वक प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिष्ठासूचकं गाथा सूचकं कथयति ।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवर्धमानातान् वृषमादि जिनेश्वरान् ।

धर्ममार्गोपदेशत्वात् - सर्वकल्याणदायिकान् ॥ १ ॥

श्रीचन्द्रादिप्रभात च नत्वा स्याद्वाददेशकं ।

श्रीमद्गुम्फटसारस्य कुर्वे शस्तां प्रशस्तिकां ॥ २ ॥

श्रीमते शक्रराजस्य शांके वर्त्तति सुन्दरे ।

चतुर्दशशते चैक-चत्वारिंशत्-समन्विते ॥ ३ ॥

विक्रमादित्यभूषणं विख्याते च मनोहरे ।

दशपंचशते धर्मे पद्मि संयुतसप्ततौ ॥ ४ ॥

चार्तिके चारिते पक्षे त्रयोदश्यां शुभ दिने ।
 शुक्ले च हस्तनक्षत्रे योगो च प्रीति मयमनि ॥ ३ ॥
 श्रीयशस्वीमूलसंज्ञे च संघास्राये सप्तम्यये ।
 कलशप्रदरे कलाप्यमे तत्पक्षे सारस्वतामिषे ॥ ४ ॥
 श्रीमस्तु वस्तु वाचन सूर्यरश्मयके यवत् ।
 पञ्चादिर्निधि विरथाक्यो महारक्षयिचक्षुः ॥ ५ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ।
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ ६ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ ७ ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ ८ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ ९ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ १० ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ ११ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ १२ ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ १३ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ १४ ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ १५ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ १६ ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ १७ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ १८ ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ १९ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ २० ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ २१ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ २२ ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ २३ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ २४ ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ २५ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ २६ ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ २७ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ २८ ॥
 पञ्चाचारतो मितं प्रयागप्रो विंशतिभिः ॥ २९ ॥
 तत्पञ्चाशोऽसमाप्तं च पञ्चादरच शुभादि ॥ ३० ॥

धर्मादिचद्राय स्वकर्मदानये ।

हितोक्तये श्री मुनिने नियुक्तये ॥१६॥

७ चन्दनमलयागिरि कथा

चन्दनमलयागिरि की क्या हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है । यह रचना मुनि भद्रसेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर द्रतार, वंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है । कुछ पद्य पाठकों के 'अवलोकनार्थ' नीचे दिये जा रहे हैं—

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप भणकार । पणघट पांणी भरण कौं, लार बहुत पणिहार ॥

× × × × ×

चदनं विनु मलयागरी, दिन दिन सूकत जात । ज्यौं पावस जलधार विनु, वनवेली कुमिलात ॥

× × × × ×

अग्नि मामि जरिवौ भलौ, भलौ ज विष कौ पान । शील खडिगौ नहिं भलौ, कहि कहु शील समान ॥

× × × × ×

चदन आवत देखि करि, ऊठि दियो सनमान । उतरौ आपणौ धाम है, हम तुम होई पिछान ॥

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं । पद्य सत्या १८८ है । रचनाकाल एव लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिये । भाषा एव शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है । श्री मोतीलाल^१ मेनारिया ने इसका रचना काल स १६७५ माना है । इसका दूसरा नाम कलिकापचमी^२ कथा भी मिलता है । अभी तक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है । इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमे भट्टारकीय शास्त्र भंडार इ. नरपुर में प्राप्त हुई है ।

८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है । ये भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देवकीर्ति के शिष्य थे । कल्याणकीर्ति ने चारुदत्त चरित्र को सवत् १६६२ में सम्पादित किया था । रचना में

१ राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ सं० १६१

२ राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ पृ० सं० २३६

सेठ पारुरस के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना चौपई एवं बृहत् सप्त में है लेकिन एक निम्न निम्न है। इसका दूसरा नाम पारुरस भी है।

कल्याणकीर्ति १० की शताब्दी के विद्वान् थे। जब तक इनकी पारुरनाथ^१ रासो (सं १६१७) बाबरी^२ बीरावलि पारुरनाथ रचन (सं) मयमह रचन (सं०) तीर्थकर बिमरी^३ (सं० १७२३) भारी रचर^४ बयाबा आदि रचनायें मिल चुकी हैं।

६ चतुर्थी आविग्रहमास

अथ बिमरास १५ की शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही प्रसिद्ध विद्वान् थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। अष्टपुर के इन संसारों में भी इनकी अमी कविनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौपसी आविग्रहमास का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौपसी आविग्रहमास में माता की बोली के रूप में सम्मिश्रित होने वाली ८४ जैन कवियों का प्रयोग किया है। माता की बोली बोलने में एक कवि से दूसरी कवि को कवियों में बड़ी कठिनाई पड़ी थी। इस कठिनाई में सबसे पहिले गोदावरा अम्ब में प्रथम जैन कवि का प्रयोग किया गया है। रचना पवित्राधिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४१ पद्य हैं। अथ बिमरास ने कल्याण के अम्ब में अपना प्रयोग जैन प्रसार किया है।

वे सम्प्रति बंदा बहु गुण गुण, ग्राह सुगो कसे एकमनि।

अथ बिमरास मास विनुच मकर, पई गुणे के बन्ध बनि ॥४३॥

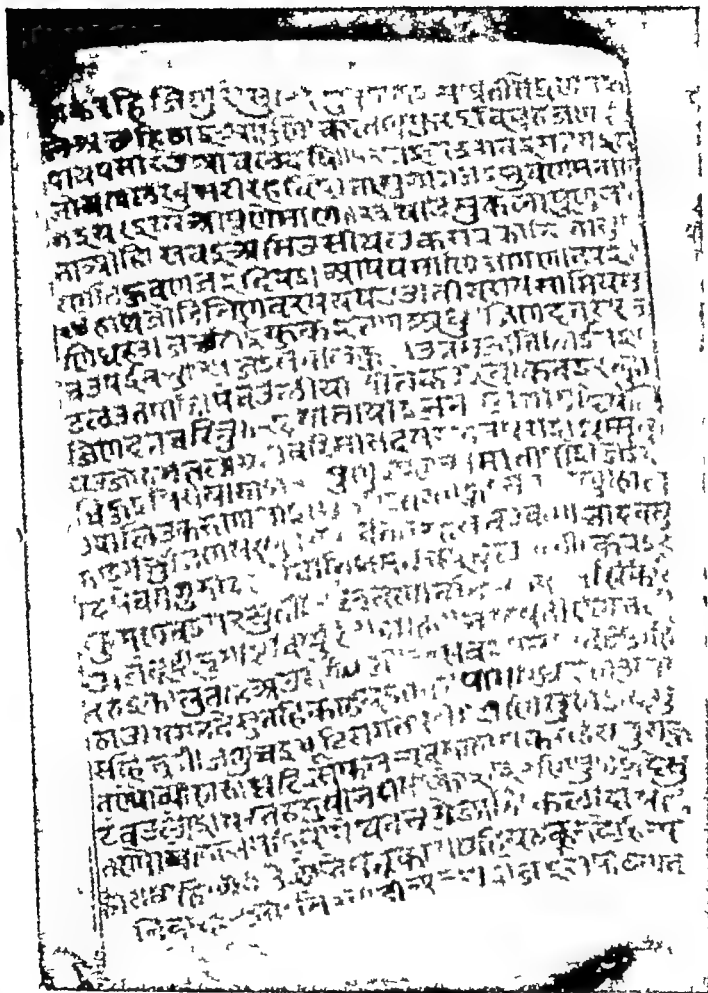
इसी चौपसी कवि कल्याण समाप्त।

इस कल्याण के आगे चौपसी कवि की दूसरी कल्याण है जिसमें २६ पद्य हैं और वह संभवतः किसी अन्य कवि की है।

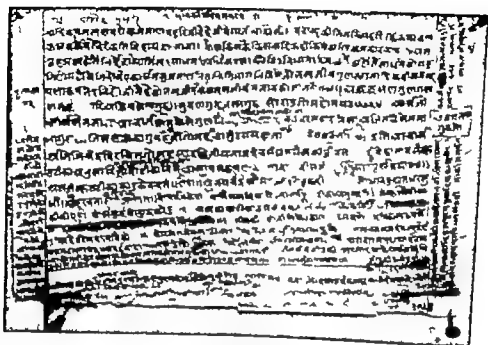
१ बिमरासचौपई

बिमरास चौपई हिन्दी का आधिकारिक काल है जिसमें एक कवि ने संवत् १३४४ (सं १३६०) माघा सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

१	उत्तराखण्ड जैन धर्म संघ के जैन सुधी	मास १	पृष्ठ ७४
२	"	"	पृष्ठ ११
३	"	मास १	पृष्ठ १४१
४	"	"	पृष्ठ १४२



रत्न कवि द्वारा संवत् १३५४ मे रचित हिन्दी की प्रति प्राचीन कृति जिनउच्च चौपई का एक चित्र —
 पान्डुलिपि जयपुर के डि० जैन मन्दिर पाटोदी के शास्त्र भण्डार मे मप्रहीत है ।
 (इसका विस्तृत परिचय प्रस्तावना की प्रष्ठ संख्या ३० पर देखिये)



१८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्य लेखी महा पंडित होबलमहोबी द्वारा रचित एवं लिखित
 गोमहटसार की मूल पास्तुर्जापि का एक चित्र ।
 यह मध्य बङ्गुर के वि. बोन मंथिरपाटोरी के शाल्य भण्डार में संभ्रवीत है ।
 (सूची क सं ६० वे सं ४०३)



संवत् तेरहसे चउवण्णे, भाटव सुदिपंचमगुरु दिण्णे ।

स्वाति नावत्त चटु तुलहती, कवइ रल्लु पणवइ सुरसती ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे । उनकी माता का नाम सिरिया तथा पिता का नाम आते था ।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसइ पाडल उतपाति ।

पचऊलीया आतेकउपूतु, कवइ रल्लु जिणवत्तु चरित्तु ॥

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है । ग्रंथ का आधार पं लाखू द्वारा विरचित जिणयत्तचरित (सं १२७५) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है ।

मइ जोयउ जिनदत्तपुराणु, लाखू विरयउ अइसू पमाण ॥

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था । रचना प्रधानत चौपई छन्द में निबद्ध है किन्तु वस्तुवध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है । इसमें कुल पद्य ५५४ हैं । रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है । वैसे भाषा सरल एवं सरस है । अधिकांश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है । काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है ।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत वसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था । जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था । जिनदत्त व्यापार के लिये सिंगल आदि द्वीपों में गया था । उसे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहा से उसे अनेक अलौकिक विद्यायें एवं राजकुमारिया भी प्राप्त हुई थीं । इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है ।

११ ज्योतिपसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिपसार ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ है । इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी । कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहापुर के रहने वाले थे । पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं—

केदरियों चौथो भवन, सपतमदसमौ जान । पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बखान ॥६॥

तीजो पसटम ग्यारमों, घर दसमों कर लेखि । इनकौ उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ॥७॥

वरप जग्यो जा चंस में, सोह दिन बित बारि । बा दिन जतनी बसी, जु पल बीते समविचारि ॥४७॥
लगन मिले त गिरह जो, जा पर बैठो जाब । ता पर के मुख मुझ को कीजे मिठ बनव ॥४८॥

१२ ज्ञानार्थ टीका

आचार्य शुमभन्त्र विरचित ज्ञानार्थ संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है । त्वाम्नाय करने का प्रथम होने के कारण इसकी भाषा प्रत्येक शास्त्र मंत्र में इस्तकित प्रतीति ब्रह्मण होती है । इसका एक टीका विद्यानम् के शिष्य भुतसागर द्वारा लिखी गई थी । ज्ञानार्थ की एक अन्य संस्कृत टीका कस्तुर के व मंत्र में ब्रह्मण हुई है । टीकाकार है व नक्षत्रास । उन्होंने इस टीका को मुक्त सत्ता अक्षर ब्रह्मणरीन के राजल मंत्री दोहरमण के सुत रिपिहास के कल्याण एवं पठनार्थ लिखी थी । इसका अन्त टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है—

इति शुमभन्त्राचार्यविरचिते ज्ञानार्थब्रह्मसूत्रे योगप्रतीपादिकादे व नक्षत्रासेन साह पाठ कस्तुर साह दोहर कस्तुर साह रिपिहासेन त्वम्वप्यर्थे पठित जिनशासोधमन अरापितन ब्रह्मण्यन्य मन्त्रय द्विवीव ।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रवृत्ति लिखी है—

शास्त्रम् साहि ब्रह्मणरीनपुरा प्राप्य प्रविष्टाद्यः ।
श्रीमान् मुक्तार्थमन्त्रार-भारि-विश्वोपमरोपठ ।
जान्ता ब्रह्म इति प्रसिद्धिप्रमण् सदाग्रमनोमते ।
तन्मन्त्रीस्वर दोहरो गुणवत् सर्वविश्वाराधित ॥१॥
श्रीमान् दोहरसाह पुत्र मिथुना सदान्वितामणि ।
श्रीमान् श्रीमिपिहास वसन्तिपुत्रः प्राप्तेमतिरवमिष ।
तेनाह समवादि मिथुना न्ययपक्षीहाहव ।
भोत वृत्तिमता परं सुविषया ज्ञानार्थवत्स रदुत ॥२॥

उक्त प्रवृत्ति से यह जाना जा सकता है कि ब्रह्मण अक्षर के राजल मंत्री दोहरमण संभवतः जैन थे । इनके पिता का नाम साह पाशा था । स्वयं मंत्री दोहरमण भी कवि थे और इनका एक ग्रन्थ 'धन तेरो मुक्त देखु जिनशा' जैन मंत्रों में मिलने ॥ गुटको में मिलता है ।

नक्षत्रास की संस्कृत टीका का अन्तः पीठार्थ में भी लिखा है लेकिन उन्होंने ज्योतिष्य के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है । व नक्षत्रास का विशेष परिचय अभी जोख का विषय है ।

१३ योगिनाथ करिय—महाकवि रामोदर

महाकवि रामोदर कृत योगिनाथ करिय अपभ्रंश भाषा का एक सुन्दर ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ में पांच संविदा हैं जिनमें मगधन नमिनाथ के जीवन का वर्णन है । महाकवि ने इसे संवत् १२८० में समाप्त किया था और निम्न हुआ (एक मन्त्र का बोधा) में दिया हुआ है—

वारहसियाई सत्तसियाई, विष्कमरायहो कालह । पमारहं पट्ट ससुद्धरण, एरवर देवापालह ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एव महाशुनि कमलभद्र के शिष्य थे । इन्होंने इस ग्रंथ की पद्धति रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी । ग्रंथ की भाषा सुन्दर एव ललित है । इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है । कुल पद्यों की संख्या १४५ है । इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनै शनै हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है ।

इसकी एक प्रति ज भट्टार में उपलब्ध हुई है । प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं । प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है ।

१४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें सन्निहित रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं । प्रारम्भ में ग्रंथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है —

तत्त्वातत्त्वस्वरूपज्ञ सार्व्व सर्व्वशुणाकर । वीर नत्वा प्रवच्येऽह जीवद्रव्यादिलक्षण ॥१॥

जीवाजीवमिद द्रव्य युग्ममाहु जिनेश्वरा । जीवद्रव्य द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पत ॥२॥

रचना की भाषा सरल है । ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है —

श्री कजकीर्त्तिसहैवै शुभेंदुमुनितेरितै । जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं । ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे । इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं । यह रचना ज भट्टार में संग्रहीत है । यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

१५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किया है । अभी क भट्टार में इस ग्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्त्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ़ प्रान्त के मेहरगाव के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम मोतीलाल था । ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे । इन्होंने इस ग्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १९३२ में समाप्त किया था ।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे । इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं । ये रचनायें चौबीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एव नित्यनियमपूजा हैं । तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है ।

मोक्ष की राह बनावत हो । अरु कर्म पहाड़ करै चक्रवर्त,
विरहसुतस्य के व्यापक है ताही, लब्धि कं हेतु मर्मा परिपूर ।
सम्पन्नशून्य चरित ज्ञान करे, बाई सरग मोक्ष के सूर,
एव को कर्म करो सरवान सो सम्पन्नशून्य मजहूर ॥१॥

कवि ने जिन एपों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं—

जिसो पञ्जीगत जानिबो मेहुगाम सुवास । याहीकाल सुपुत्र है कोरेकाळ सुनाम ॥१॥
बैसनाख कुछ खाति है श्रेष्ठी बीसा जान । बरा इच्छाक महान में कहां जन्म मू भान ॥२॥
कसरी नगर सुभाष है सैनी संगवि पाव । लक्ष्मण भाई कसो सिंहासन गुण काव ॥३॥
बंद भंड जानो नही और गणागण सोच । कंचक भक्ति सुपर्य की बसी मुद्राप माष ॥४॥
हा प्रमाण पा सूत्र की बंध प्रसिद्धा सिद्धि । भाई सु भवि जन सोभियो होन जगत प्रसिद्ध ॥५॥
संग्रह की कन्हैव है सिद्ध साध अपसार । दिन मुठि मगवच काय बंद मेठो विचन विचार ॥६॥
बंद बंध श्री सूत्र के कियो सु सुधि अनुसार । मूर्खमंडल है कियो की जिन हिरदै पारि ॥७॥
अरमास की कान्ही पहाको पक्ष निहार । अठसठि जन सहर हा संभव रीति विचार ॥८॥

इति बंदवदसूत्र संपूर्ण ।

संवत् १६५३ चैत्र कृष्ण १३ सुबे ।

१६ दर्शनसार भाषा

महमद नाम के कई विद्वान हो गये हैं । इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के महमद बिलालाई थे जो मूलतः आगरे के निवासी थे किन्तु बाद में हीरापुर (बिरहौन) आकर रहने लग गये । कुछ विद्वान के आतिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे महमद हुवे जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा दीनी मिली । दर्शनसार भाषा भी इसी का शिष्या हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १६२० में समाप्त किया था । इसका उत्कृष्ट स्वर्ण कवि ने निम्न प्रकार किया है ।

धीस अमिक कमाणिस से शाव जावण प्रथम श्रीवि शक्तिवार ।

कृष्णपक्ष में दर्शनसार भाषा महमद दिनी सुवार ॥१॥

दर्शनसार मूलतः बेबसेन का ग्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ६६ में समाप्त किया था । महमद ने इसी का पद्यानुवाद किया है ।

महमद द्वारा किये हुए अन्य ग्रंथों में महीपालचरितभाषा (संवत् १६१८), योगसार भाषा (संवत् १६१८), परमात्मप्रकाश भाषा (संवत् १६१८), रत्नकरयजमानकचकार भाषा (संवत् १६२०), योग-

कारणभावना भाषा (सवत् १६२१) अष्टाहिकास्थ (सवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाल (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं ।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एव १९ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं । इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एव संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एव पद्य में अनुवाद किया था । इन्हीं विद्वानों में से प० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है । ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान् थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका सवत् १८२३ में समाप्त की थी । गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है । इसका एक उदाहरण देखिये —

साच कहता जीव के उपरिलोक दूखो वा तूषो । साच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदण्ड छोडि देता है वा जू वा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटक देय है ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, साच बोला तो साच कहै ।

१८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध में मुनि धर्मचन्द्र का सत्सिद्ध परिचय दिया गया है । मुनि, भट्टारकों एव विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एव ऐतिहासिक रचना है । रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं ।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । ये सकल कला में प्रवीण एव आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान् थे । भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रभुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे ।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है ।

१९ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है । कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है । इसलिये ये भट्टारक सफलकीर्ति के अनुज एव उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान् ब्र० जिनदान से भिन्न विद्वान् हैं । इन्होंने प्रथम मंगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है ।

भववक्त्रमलयड सिद्धजिण तिहुपनिंद सदपुज्ज । नेमिशसिं गुरुवीर पण्णमीय तियशुद्धभोवमहण ॥१॥

ग्रंथ का नाम धर्मपञ्चविंशतिका भी है । यह प्राकृत भाषा में निबद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं । ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति त्रिभिर्बसैश्चाग्निः कथञ्चनार्थाचार्यमीमेति चन्द्रस्य त्रिंशद्विंशत्यजिनशब्दभिरभित् धर्मैर्पञ्च
विंशतिभ्यः माम् शब्दसंख्याप्लम् ।

२ निशामयि

जहाँ प्रसिद्ध विद्यान् अथ किन्तास की कृति है जो जयपुर के 'क' मन्थार में बन्दस
हुई है । रचन्य छोटी है और उसमें केवल ३३ पद्य हैं । इसमें चौबीस तीर्थों की स्तुति एवं अन्ध शस्त्रा
महापुरुषों का लज्जोत्प्रेक्षक किया गया है । रचन्य स्तुति परक होते हुये भी व्याप्यत्मिक है । रचन्य का अर्थ
अन्ध भाग निम्न प्रकार है—

श्री सच्छब्द जिनेश्वर देव, हूँ तब पाव सक सेव ।
हुये निशामयि कहु सार, जिम जपक तरे संसार ॥ १ ॥
हो जपक सुये जिन्हायि संसार अतिर तू जायि ।
इहाँ पछ लहि कोई बीर, हुये मन दृष्ट करो निज बीर ॥ २ ॥
ग्या आदिस्वर जगीस्यार, ते कुमग्या धर्म निवार ।
ग्या अजित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म ना भंग ॥ ३ ॥
ग्या संभव मच हर स्वामी, ते किन्तव मुक्ति हि पामी ।
ग्या अभिर्नवन आनंद, जिने योछ्यो मच नो बंद ॥ ४ ॥
ग्या सुमति सुमति बाहार, जिने एक मुनी कियो पार ।
ग्या पद्मप्रभ जगिवास ते मुक्ति कछा नियस ॥ ५ ॥
ग्या सुपार्श्व जिन जगीस्यार, बसु पाव य रहिया भार ।
ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिन त्रिभुवन कियो आनन्द ॥ ६ ॥

× × × ॥

ए निशामयि कहि सार, ते सफल मुक्त भंगार ।
जे जपक सुये ए चंग ते सौख्य पाव अवंग ॥ १३ ॥
श्री सच्छब्दकीर्ति गुरु व्याक, मुनि मुबनकीर्ति मुखमंड ।
अथ किन्तास अयोधर, ए निशामयि अवतार ॥ १४ ॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र बारिपत्र जगन्नाथ कृत है । यह मन्थारक नरगुहकीर्ति के शिष्य थे तथा हाहाउरसिंह
(जयपुर) के रहने वाले थे । अथ तब इसकी रचिताम्बर पणज्य (कश्मि मुक्ति निपुण्य), मुनि निपाक,
चतुर्भुजि संधान स्थाप्य हीरा एवं शिव स्थापन नाम के चार मंत्र जगन्नाथ कृत थे । नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

उनकी पाचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रांतमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है —

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्तिरतुल चित्तोत्सव च कृतात् ।
पूर्वानेकभवार्जितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतात् ॥
उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतृनहो ।
शाश्वत् छीजगदीशनिर्मलहृदि प्राय सदा वर्ततात् ॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति न भण्डार में संग्रहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भण्डारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भण्डार में संग्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचरिए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूचलि के लिये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति न भण्डार में संग्रहीत है। इस प्रति में ८ से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ सधियों का विवरण है। आठवीं सधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्त रइय कइ तेजपाल साणद अणुसणियसुहद घूचलि सिवदास पुत्तेण सगगगवाल डीजा सुपसाएण लब्भए णएण अरविंद दिक्खा अट्ठमसधी परिसमत्तो ॥

तेजपाल ने ग्रंथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनकी दो रचनाएँ सभवनाथ चरित एवं वराग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

२४ पार्वनाथ चौपई

पार्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान थे तथा बयहटका ग्राम के रहने वाले थे। उस समय मुगल शासक औरंगजेब का शासन था। पारबनाब चौपई में १६८८ पद्य हैं जो सभी चौपई में हैं। रचना सरस भाषा में निबद्ध है।

२५ सिंगस छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माधन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है। रचना का प्रथम नाम माधन छंद विज्ञान भी है। माधन कवि का पिता जिनमल नाम गोपाल का स्वयं भी कवि थे। रचय्य में होहा बीबोहा छप्प सौरा मङ्गमाहन हरिमाक्षिष संतघारी, माक्षिणी विज्ञान कर्णका समाक्षिष मुजंगजयव मङ्गुमाक्षिणी सारगिषा हरंगिषा अमराक्षि माक्षिणी आदि किने ही श्रमों के लक्षण दिये हुए हैं।

माधन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समाप्त किया था। इसकी एक अपूर्व प्रति 'अ' संस्कार का संग्रह में है। इसका प्राणि भाग सूची के ३१ पृष्ठ पर दिया हुआ है।

२६ पुष्पाक्षरकला कोश

देवचन्द १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं। अरतक इनकी २ से भी अधिक रचनायें प्राम्य हो चुकी हैं। जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं—

पञ्चपरमेष्ठी पूजा कर्मदहन पूजा तीनखोह पूजा (सं १८९८) सुष्टि हरिम्बि (सं १८९८) सोह्रहृदय पूजा अमरनाथ बयान (सं १८९०) पञ्चकर्मनाथ पूजा पञ्चमेक पूजा हरिप्रदाय सु गय टीका अमरनाथ वाग्वक्त्री आदि। इनके पद भी मिलते हैं जो अमरनाथ एवं छे ओरप्रोव हैं।

देवचन्द के पितामह का नाम दीपचन्द एवं पिता का नाम रामकृष्ण था। दीपचन्द स्वयं भी अच्छे विद्वान् थे। कवि लखेन्द्रनाथ बिन थे। वे मूलतः जयपुर निवासी थे जिनके लिए साहिपुरमें जाकर रहने लगे थे। पुरयलखकलाकोश इसकी एक और रचना है जो अभी जयपुर के 'क' संस्कार में प्राम्य हुई है। कवि ने इस रचना में जो अपरनापरिचय दिये हैं वह निम्न प्रकार हैं—

दीपचन्द साधर्म्य मध, से जिनमर्मे विरै रात धर।
तिन से पुरस तपु संगपाक, कर्म जोग्य गरी धर्म सुत्राच ॥ ३२ ॥
दीपचन्द तन तैं तन मरौ वाको नाम इसी हरि बीबो।
रामकृष्ण तैं जो तन वाक, हठीचंरा नाम बयब ॥ ३३ ॥
सा विरि कर्म करै तैं आय, साहिपुर विरि बीनी जाय।
तहां भी बहुत आज दिन शान, जोबो मोह करै तैं आयि ॥

×

×

×

साहिपुरा सुभथान मे, २ लो सहारो पाय ।
 धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय ॥
 नृप उमेद ता पुर विपै, करै राज चलवान ।
 तिन अपने भुजवलथकी, अरि शिर कीहनी आनि ॥
 ताके राज सुराज मै ईतिभीति नहीं जान ।
 अवलू पुर मे सुपथकी तिण्ठे हरप जु आनि ॥
 करी क्या इस ग्रथ की, छद वध पुर मांहि ।
 ग्रंथ करन कछु वीचि मे, आकुल उपजी नाहि ॥ ५३ ॥
 साहि नगर साह्य भयो, पायो सुभ अवकास ।
 पूरण ग्रथ सुख तै कीयो, पुण्याश्रव पुण्यावास ॥ ५४ ॥

चौपई एव दोहा छन्दों मे लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रथ है । इसमे ७६ कथाओं का समग्र है ।
 कवि ने इसे सवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त मे निम्न प्रकार उल्लेख है —

सवत् अष्टादश सत जानि, उपरि वीस दोय फिरि आनि ।
 फागुण सुदि ग्यारसि निसमाहि, कियो समाप्त उर हुल साहि ॥ ५५ ॥

प्रारम्भ मे कवि ने लिखा है कि पुण्याश्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निबद्ध था लेकिन जब उसे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की । जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे मे धनराम ने उसकी वचनिका की । टेकचंद ने समवत इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोबद्ध रचना की होगी । कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है —

साधसी धनराम जु भए, ससंस्कृत परवीन जु थए ।
 तौ यह ग्रथ आगरै थान, कीयो वचनिका सरल वखान ॥
 जिन धुनि तो विन अक्षर होय, गणधर समझै और न कोय ।
 तो प्राकृत मै करै वखान, तव सब ही सुनि है गुणखानि ॥ ३ ॥
 तव फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत वानी श्रुति ठई ।
 फेरि अल्प बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्ति आदि न जोय ॥
 तिन यह महा सुगम करि लीए, संस्कृत अति सगल जु कीए ॥

२७ गारहभावना

प० रईधू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं । इनकी प्राय सभी रचनायें अपभ्रंश

माया में ही मिश्रती है जिनकी सकल २ से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान के और सम्प्रदेश-गणित के रहने वाले थे। बारह भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य हैं। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अग्रगण्यता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है—

अन कदापि ज्ञान की अज्ञान सुनन की मांहि । आपसी पै पाइए, जब देखे बट मांहि ॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार हैं—

संसार रूप कोई बस्तु मांही, मेहमाच अज्ञान । ज्ञान छवि धरि देखिप सब ही छिद्र समान ॥

× × × × × ×

बर्त करौ बरम करि, किरिच बरम ब होय । बरम जु बाक्य बस्तु है, जो पहचाने कोय ॥

× × × × × ×

करन करान नान बहि, यहि बाने बलानत और । न्यून विधि बिन रूपी मोहा तनी हु और ॥

रचना में रङ्ग का नाम कहीं नहीं दिया है केवल म व समाप्ति पर “हवि श्री रङ्ग छत्र बार मायन संपूर्ण” लिखा हुआ है जिससे इसको रङ्ग छत्र सिखा गया है।

२८ मुनकीरि गीत

मुनकीरि मङ्गरक सङ्कलीरि के शिष्य थे और उनकी कृत्तु के परचात् ये ही मङ्गरक की गद्दी पर बैठे। राजस्थान के राजत मङ्गरी में मङ्गरकों के सम्बन्ध में लिखने ही गीत मिले हैं इनमें बृचराज एवं म हुमचन्द द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बृचराज ने मङ्गरक मुनकीरि की तपस्या एवं उनकी ब्रह्मसूत्रा के सम्बन्ध में गुणानुशास्त्र किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे मुचय कीरि के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बृचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान थे इनके द्वारा रची हुई अवतक पांच और रचनाएं मिल चुकी हैं। पूरा गीत अविच्छन्न रूप से सूची के पृष्ठ ६९६-६९७ पर दिया हुआ है।

२९ मृपासक्तुर्गिरिस्तोत्रटीका

मृपा सं अष्टाधर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रभाव विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थ ही म व मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी मृपासक्तुर्गिरिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अग्रगण्य श्री लेकिन अब इसकी २ प्रतिफल बबपुर के द मंदार में सम्बन्ध हो चुकी है। आशावर ने इसकी टीका अपने शिष्य शिष्य विमलचन्द्र के शिष्य १ विस्तृत परिचय के लिए देखिये या कललीचन्द्र द्वारा लिखित बृचराज एवं बरमक सङ्कलीरि—जैन सन्दीप दीपक—११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है—

उपशम इव मूर्ति पूतकीर्ति स तस्माद्। अजनि विनयचन्द्र सच्चकोरैकचन्द्र ॥

जगदमृतसगर्भा शास्त्रसन्दर्भगर्भा। शुचिचरित सहिष्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाच ॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भण्डार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपाल-स्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

३० मनमोदनपचशती

कवि छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृपण-जगावन चरित्र' पहिले ही प्रकाश में आ चुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे समक्ष में हैं। ये अवागढ के निवासी थे। ५० वनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन सचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पाच आने से अधिक अपने पास नहीं रखते थे तथा एक घन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपचशति' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पचशती को कवि ने मघत् १६१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

वीर भये असरीर गई पट सत पन वरसहि। प्रघटो विक्रम दैत तनौ सबत सर सरसहि ॥

उनिसइसत पोढराहि पोप प्रतिपदा उजारी। पूर्वापाढ नछत्र अर्क दिन सब सुखकारी ॥

घर वृद्धि जोग मिछत इहप्र थ समापित करिलियो। अनुपम असेप आनद घन भोगत निवसत थिर थयो ॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सर्वथा, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पचशती में सभी स्फुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पच परमगुर जेह। तिन पद पकज कौ सदा प्रनमौ धरि मन नेह ॥

नहि अधिकार प्रवध नहि फुटकर कवित्त समस्त। जुदा जुदा रस घरनऊ स्वादो चतुर प्रशस्त ॥

भिन्न की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करे चारि वात कौं। उछेद तन धन धर्म मत्र अनेक प्रकार के ॥

दोष देखि दावै पीठ पीछे होय जस गावै। कारज करत रहै सदा उपकार के ॥

साधारण रीति नहीं स्थापन की गयी जाये। जब तक जलन प्रशस्त पथर के ॥
 दिख को बहार मिलावे जो पै है फर। मति को सुन्दर गुन्नीसरे स धार के ॥११॥
 अंतरंग बाह्य मधुर जैसी किसमिस। जनवरचन को कुबेरनामि धर है ॥
 गुन के बघाय कू जैसे जल स्रवर कू। दुख तम बूरिसे कू बिन दुपहर है ॥
 बरख के सारिसे कू हक बहू विबन्ध है। मंत्र के सिक्काबने कू मानों सुगर है ॥
 ऐसे सार मित्र छो न कीजिय सुपार्ई कभी। जन मन तन सब धारि हैस धर है ॥१२॥
 इस तरह मनमोहन पंचरात्री हिन्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीघ्र ही प्रकाशन योग्य है।

११ मित्रविकास

मित्रविकास एक संघर्ष ग्रंथ है जिसमें कवि बासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का संग्रह है। बासी के पिता का नाम बहादुरसिंह था। कवि ने अपने पिता एक अपने मित्र माणमल के आश्रय से मित्र विकास की रचना की थी। वे माणमल संभवतः के ही विद्याप हैं जिन्होंने शरत्कला शीतलदा शालक्या आदि कवयों लिखी हैं। कवि ने इसे संवत् १७८२ में समाप्त किया था जिसका अंशक ग्रंथ के आश्रय में निम्न प्रकार हुआ है—

कम रिपु छो तो चारों गति मैं कहीह फिरपौ, ताही के प्रसाद सेती बासी नय पयौ है।
 माणमल मित्र बा बहादुरसिंह पिता मेरो, दिनकीसखाच सेती प्रब पे बनयौ है ॥
 क मैं मूक बूढ़ को हो सुधि छो सुधार लीओ सो पै क्या दृष्टि कीन्वो माधव बनयौ है।
 दिगन्तिव सतबान हरि को चतुर्थ ठान, पशुपुत्र सुधि बीच गान मित्रगुण गावौ है ॥

कवि ने प्रब के आश्रय में वर्तनीय विषय का निम्न प्रकार वर्णित किया है—

मित्र विकास माणमुन्दरैन, बरसु बरसु स्थमाधिक पेन।
 प्रगट हैलिये लोक संस्कार, संघ प्रसाद अनेक प्रकार ॥
 गुण अगुण मन को प्रापति होय, संग कुर्वन तबो पछ सोय।
 पुनराव बरसु भी मिरखव टीक, हम कू करनी है तहकीक ॥

मित्र विकास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर हैं तथा पाठकों के मन को सुभाषने वाली हैं। ग्रंथ प्रकाशन योग्य है।

बासी कवि के पद भी मिलते हैं।

१२ रामासा—रघुनाथ

एक रागनिष्ठों पर लिखत रागसाखा रघुनाथ मित्र की एक सुन्दर कृति है। इसका दूसरा नाम

कासम रसिक विलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखा के संरक्षण में जाकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कामिमखा उस समय वहाँ का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखान सुजान कृपा कवि पर करी।
रागनि की माला करिवे को चित घरी ॥

दोहा

सेख गान के वंश में उपज्यौ कासमखान।
निस दीपग ज्यौ चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौ मान ॥
कवि घरनै छवि खान की, सौ बरनी नहीं जाय।
कासमखान सुजान की अग रही छवि छाया ॥

रागमाला में भैरोंराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी विलावलरागिनी, कामोद, नट, केशरो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागिनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्मुख मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

सवत् सौरहसे वरप, उपर वीते दोह।
फागुन बुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोढ़ ॥

सोरठा

पोथी रची लाहौर, श्याम आगरे नगर के।
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरमुख मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रंथ श्याममिश्र कृत संपूर्ण।

३३ रुक्मणिकृष्णजी को रासो

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दर्य का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणी के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलवल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

सखबख के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान पूजा के बहाने रुक्मिणी का मन्दिर की ओर जाना, रुक्मिणी का सौम्य बर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी का रथ में बैठाना कृष्ण शिशुपास युद्ध बर्णन, रुक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी का प्रस्थान आदि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कजरा, छोटक, नारायण जाति छंद आदि का प्रयोग किया गया है। रासो की भाषा राजस्थानी है।

नारायण जातिछंद

आखंड भरीय सोहरी त्रिमयणरूप मोहरी ।
कयं कहांत मेवरी सुख बरस पुषी ॥
भज भजे भजक भक्त, नवल हंस समरी ।
रदन हीर कवच काम, खीर की ज्योपरी ॥
भक्तमनै न बंद सर सीस पूज सादर ।
वासिग बेनि कैं नम सिरह भविष मोहर ॥
सोचन ये रसहार, जडित कंठ मैं कैं ।
अर्चय मोति जडित जोरि, आकि कड़ाहुँ ॥

३४ सन्नचन्द्रिका

यह ज्योतिष का ग्रन्थ है जिसकी भाषा स्वामीजीराम शौगरणी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंवरपास तथा गुरु का नाम पं. जयन्ती था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी भाषा संवत् १८७४ में समाप्त की थी। सन्नचन्द्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अष्टाध्याय ग्रन्थ है। भाषा टीका में ४२९ पद्य हैं। इसकी एक प्रति म्ह मंदार में सुरक्षित है।

इसके ब्रह्मे हुने हिन्दी पद एवं कवित भी मिलते हैं—

३५ सार्वभिवचन चौपई

कवि विद्यान चौपई एक कथालोक कृति है इसमें कविविद्यान ऋत से सम्बन्धित कथा दी गई है। यह ऋत चैत्र एवं मार्ग मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाया है। इस ऋत के करने से जपो की प्राप्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि भीष्म जिनका नाम प्रथमवार सुगु का राजा है। कवि सोंगमेर (जयपुर) के रहने वाले थे। वे कच्छीबखाल जैन थे तथा गोवा इनका गौत्र था। सोंगमेर में इस समय त्याग्याय एवं पूजा का बहुत प्रचार था। इन्होंने इस संवत् १६१० (सन् १२६) में समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है —

सवत् सोलहसै सतरौ, फागुण मास जवै ऊतरौ।
 उजल पाखि तेरसि तिथि जाण, ता दिन कथा गदी परवाणि ॥६६॥
 वरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति।
 यह कथा भीम कवि कही, जिनपुराण माहि जैसी लही ॥६७॥
 सागानेरी वसै सुभ गाव, मान नृपति तस चहु खड नाम।
 जहि कै राजि सुखी सव लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥६८॥
 जैनधर्म की महिमा वणी, सतिक पूजा होई तिहघणी।
 श्रावक लोक वसै सुजाण, साम संवारा सुणै पुराण ॥६९॥
 आठ विधि पूजा जिगेश्वर करै, रागदोष नहीं मन में धरै।
 दान चारि सुपात्रा देय, मनिय जन्म कौ लाहौ लेय ॥७०॥
 कडा बध चौपई जाणि, पूरा हूवा दोइसै प्रमाण।
 जिनवाणी का श्रन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥७१॥
 इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण।

३६ वर्द्धमानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिव्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३५६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रबन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विपहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विपहरन विधि सतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरण के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य थे) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में लिखकर इसे संवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है—

अथ विपहरन लिख्यते—

शोध—भी मनेस भरतवी सुगरी गुर चरन्तु धितसाध ।
पेभवाक हुन्वहन को सुमति सुमुधि बताव ॥

बीरई

भी जिनर्षद सुपाच बर्मानि, दुष्यौ सोमाग्य त एव हरप मुनिमान ।
इव झोक बीती कीव बध आनि संवोप वीच काह विरहमनि ॥२॥

३८ प्रतक्याकोश

इसमें प्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३० से भी अधिक है। कथाकार पं रामोदर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही बर्मेचन्द्र सूरि के शिष्य हैं। ऐसा माना जाता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्ण नाम रामोदर का इसलिये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थी जन्में रामोदर अथ सिद्ध दिव्य है तथा साधु बनने के परवाना जो कथायें लिखी जन्में देवेन्द्रकीर्ति मिल दिवा गया। रामोदर का जन्मेत प्रथम एक एकप्रकाश भाषण, चतुर्वेद, एवं पञ्चमहाविद्या कथाओं की समाप्ति पर आया है।

कथा कोश संस्कृत भाषा में है तथा भाषा भाष एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें जन्मस्तव की हैं। इसकी एक अपूर्व प्रति का बंगाल में सुरक्षित है। इसकी दूसरी अपूर्व प्रति मंत्र संख्या २२४३ पर है। इसमें ४४ कथाओं एक पाठ है।

३९ प्रतक्याकोश

महाराज सत्त्वकीर्ति १५ की शास्त्री के प्रबंध विद्वान् थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत मंत्र लिखे हैं जिनमें आशिष्याय बन्धुमार चरित्र, पुण्यस्थार प्रमद, अयोधर चरित्र, कद भाव पुराण आदि के नाम बहसकनीय हैं। अपने कबिराज प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई महाराज परम्परा को प्रथम दिव्य जिसमें ३० जिनकास मुनिकीर्ति आचम्यपण, शुभचन्द्र जैसे कथाकोश के विद्वान् हुए।

प्रतकथा कोश अभी उनकी रचनाओं में से एक रचना है। इसमें अविचार कथायें सभी के द्वारा विरचित हैं। कुछ कथायें आज पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं। कथायें संस्कृत भाषा में हैं। मंत्र सत्त्वकीर्ति में सुगन्धचरम की कथा के अन्त में अपना नासोत्सव विन्य मन्त्र दिया है—

अस्मदगुण समुद्राय स्वर्ग मोक्षाय हेतु ।

अद्वैत शिवमार्ग, सत्त्वकन् पंचपूजा ॥

विस्तृत परिचय देखने का— अज्ञानीवास द्वारा लिखित पुस्तक एवं कथा सार्वजनिक—वीर जनेश कोश

त्रिमुघनपतिभन्वैस्तीर्थनाथादिमुल्यान् ।
जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद् गुणाढ्यै ॥

प्रति में ३ पत्र (१४३ से १४५) वाद में लिखे गये हैं । प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है । कथा कोश में कुल कथाओं की संख्या ५० है ।

४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी में ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं । इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है । इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कीर्ति के आश्रित थे । ब्रह्म गुलाल स्याग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे । एक बार इन्होंने मुनि का स्याग भरा और ये मुनि भी वन गये । इनके द्वारा विरचित अब तक ८ रचनाएँ उपलब्ध हो चुकी हैं । जिसमें त्रेपन क्रिया (संवत् १६६५) गुलाल पच्चीसी, जलगालन क्रिया, विवेक चौपई, कृष्ण जगावन चरित्र (१६७१), रसविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं ।

‘समोसरण’ एक स्तोत्र के रूप में रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६५ में समाप्त किया था । इसमें भगवान् महावीर के समोसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है । इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे ।

सोरहसै अढसठिसमै, माघ दसै सित पत्त ।

गुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिद्ध ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का सञ्चित वर्णन दिया हुआ है । दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है । सोनागिर पहिले ठतिया स्टेट में था अब वह मध्यप्रदेश में है । कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था । रचना में क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी सञ्चित वर्णन दिया हुआ है । रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है

मेला है जहा कौ कातिक सुद पूतौ को,

हाट हू बजार नाना भाति जुरि आए हैं ।

भावधर वदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,

पाप मूल निकटन कौ दूर हू सै धाए है ॥

गोटै जैड नारे पुनि दान दैह नाना विधि,

सुर्ग पथ जाइवे कौ पूजन पद पाए है ।

कीजिय सहाय पाइ आप हैं भागीरव,
गुरुन के प्रताप सोन गिरी के गुण गाव हैं ॥

दोहा

जेठ सुदी चौबिस मकी आ दिव रपी बनाइ ।
सबत् अष्टावस हकिस्त संवत् सेठ गिम्माइ ॥
पहै सुनै आ माव घर, ओरे वैह सुनाइ ।
मनबंदिह कळ को बिबे सो पूरन पद को पाइ ॥

४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेरा कवि ने महिमासाह का बादशाह अला-
उद्दीन के साथ अलाउ महिमासाह का मागधर राजपूतमीर के महाराजा हम्मीर की रास में आता,
बादशाह अलाउद्दीन का हम्मीर की महिमासाह को छोड़ने के लिए बार २ समस्तान्त एवं अन्य में अला
उद्दीन एवं हम्मीर का संबंध पुनः का बना किया गया है । कवि की बर्णन राजी सुन्दर एवं सज्ज है ।

उसो कब और कहाँ लिखा गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है । इसने केवल
अपना नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है ।

मिसें रावपति साही नीर क्यौ नीर सम्पदी ।
क्यौं पारिख को परसि बजर कंचन होय बाई ॥
अलाउद्दीन हमीर से हुआ न हील्यौ होवसे ।
कवि महेस बन कचरै बै सम्यंसहै वसु पुरवसै ॥

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची

क्रमांक क्रं, सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथसार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१	४३८१ अनंतप्रतोद्यापनपूजा	भा० गृणचंद्र	स०	म	१६३०
२	४३६२ अनंतचतुर्दशीपूजा	जातिदास	स०	र	×
३	२८६५ अभिधान रत्नाकर	धर्मचंद्रगणि	स०	म	×
४	४३६१ अभिपेक विधि	सद्यसीसेन	स०	ज	×
५	५६६ अमृतधर्मरमकाव्य	गृणचंद्र	स०	ज	१६ वीं शताब्दी
६	४४०१ अष्टाहिकापूजाकथा	मुरेन्द्रकीर्ति	स०	म	१८५१
७	२४३५ आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचंद्र	सं०	ट	×
८	६१६ आराधनासारवृत्ति	प० प्राणाधर	म०	ख	१३ वीं शताब्दी
९	४४३५ ऋषिमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	स०	ख	×
१०	४४८० कजिकाप्रतोद्यापनपूजा	सलितकीर्ति	स०	म	×
११	२५४३ कयाकोश	देवेन्द्रकीर्ति	स०	म	×
१२	५४५६ कथासमूह	नलितकीर्ति	स०	म	×
१३	४४४६ कर्मचूरप्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	स०	छ	×
१४	३८२८ कल्याणमदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	स०	म	×
१५	३८२७ कल्याणमदिरस्तोत्रटीका	प० प्राणाधर	स०	म	१३ वीं " "
१६	४४६७ कलिकुण्डपाश्वर्चनायपूजा	प्रभाचंद्र	स०	म	१५ वीं " "
१७	२७५८ कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	चारित्रसिंह	स०	म	१६ वीं " "
१८	४४७३ कुण्डलगिरिपूजा	भ० विद्वत्भूषण	सं०	म	×
१९	२०२३ कुमारसंभवटीका	कनकसागर	स०	म	×
२०	४४८४ गजपथामण्डलपूजनविधान	भ० क्षेमेन्द्रकीर्ति	स०	ख	×
२१	२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	स०	ड	×
२२	३८३६ गीतवीतराग	प्रभिनव चारुकीर्ति	स०	म	×
२३	११७ गोस्मटसारकर्मकाण्डटीका	कनकनन्दि	स०	क	×
२४	११८ गोस्मटसारकर्मकाण्डटीका	ज्ञानभूषण	स०	क	×
२५	६१ गोस्मटसारटीका	सकलभूषण	स०	क	×
२६	५४३६ चदनपण्ठीप्रतकथा	छत्रसेन	स०	म	×
२७	२०४८ चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	गुणनन्दि	स०	ज	×

क्रमिक सं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथमंडार	रचना काळ
१८.	४२१२ चारित्र्यद्विधिविधान	मुनिसिंह	ई	ब	×
१९.	४२१४ द्वाभर्षचरित्रादिप्रतयोपापन	म. मुण्डरपीति	ई	ब	×
२	४२२१ द्वाभर्षचरित्रादिप्रतयोपापन	वत्सकीति	ई	क	×
२१	२११ तत्त्वदर्शन	पुनर्वंद	छ	अ	×
२२	२४४१ वेदव्याख्यानोपापन	वैद्यकीति	ई	ब	×
२३	४७३ द्वाभर्षचरित्रादिप्रतयोपापन	विष्णुचरणमुनि	ई	क	×
२४	४७४ द्वाभर्षचरित्रादिप्रतयोपापन	नरसिंहचरण	ई	घ	×
२५.	४७२ द्वाभर्षचरित्रादिप्रतयोपापन	मुनिसिंहचरण	ई	क	×
२६.	४७२१ द्वाभर्षचरित्रादिप्रतयोपापन	वैद्यकीति	घ	ब	१७७२
२७.	४७२४ द्वाभर्षचरित्रादिप्रतयोपापन	वत्सकीति	ई	ब	×
२८.	४७२३ " " "	वत्सकीति	घ	ब	×
२९	७७९ धर्ममरतोपार	विष्णुचरणमुनि	ई	अ	×
४	२१२२ न्यायसूत्राचारचरित्रादिप्रतयोपापन	प्रभाकर	घ	क	×
४१	४८१ मित्राक्षरि	×	ई	क	×
४२.	४८१६ वैश्वनाथपूजा	मुण्डरपीति	ई	घ	×
४३	४८२३ पंचकण्ठपूजा	"	ई	क	×
४४	१६७१ परमात्मनोपार	वत्सकीति	घ	घ	×
४५.	१४२ प्रत्यक्ष	वाचस्पति	ई	घ	×
४६.	१६१ पुण्यसूत्र	वीरचरणमुनि	ई	घ	१७७
४७	२४४ माधवाचारिणी	म. वत्सकीति	ई	घ	×
४८	४३३ मूल्याचरित्रादिप्रतयोपापन	वाचस्पति	ई	ब	१९ वीं शताब्दी
४९.	४३३ मूल्याचरित्रादिप्रतयोपापन	विष्णुचरण	ई	घ	१३ वी
५	५३७ मीमांसा मीमांसिकादिप्रतयोपापन	विष्णुचरण	ई	क	१७२९
५१	५३१ मुनिमुद्रादि	प्रभाकर	ई	घि	घ
५२.	६७६ मूल्याचरित्रादिप्रतयोपापन	वत्सकीति	प्र	ई	ब
५३	११११ कठोपारचरित्रादिप्रतयोपापन	प्रभाकर	ई	ब	×
५४	२११ रत्नचरित्रादि	वाचस्पति	ई	घ	×
५५.	१६१३ कृष्णचरित्रादिप्रतयोपापन	कृष्णचरण	ई	घ	१९४४
५६.	१६१६ कृष्ण मानचरित्रादि	मुनिसिंहचरण	ई	अ	१३ वी

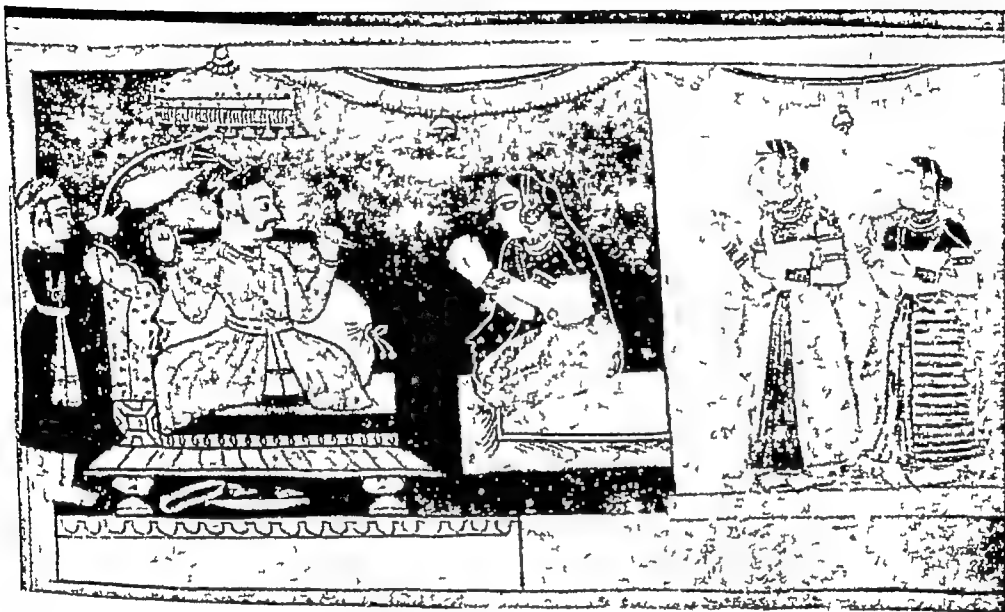
क्रमांक प्रं सू. क्र	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
४७.	३२६५ वाग्भट्टालकारटीका	वादिराज	स०	प्र	१७२६
४८	५४४७ वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनदि	स०	प्र	×
४९.	५२२५ शारदुत्सवदीपिका	सिंहनदि	स०	प्र	×
६०	५८२६ शातिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	स०	ख	×
६१	४१०७ शातिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सं०	प्र	×
६२	४१६६ पणवतिचैत्रपालपूजा	विश्वसेन	स०	प्र	×
६३.	५४६ पटुधधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	सं०	च	×
६४	१८२३ सप्तनयावबोध	मुनिनेरसिंह	सं०	प्र	×
६५	५४६७ सरस्वतीस्तुति	भाशाधर	स०	प्र	१३ वीं "
६६	४६४६ सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचंद्र	स०	ड	×
६७	२७३१ सिंहासनद्वित्रिशिका	क्षेमकरमुनि	स०	ख	×
६८	३८१८ कल्याणक	समन्तभद्र	प्रा०	ड	×
६९	३६३१ धर्मचन्द्रप्रबन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	प्र	×
७०	१००५ यत्याचार	प्रा० वसुनदि	प्रा०	प्र	×
७१	१८३६ अजितनाथपुराण	विजयसिंह	प्रप०	अ	१५०५
७२	६४५४ कल्याणकविधि	विनयचंद	प्रप०	प्र	×
७३	५४४ चूनढी	"	"	प्र	×
७४	२६८८ जिनपूजापुर दरविधानकथा	प्रमरकीर्ति	प्रप०	प्र	×
७५	५४३६ जितरात्रिविधानकथा	नरमेन	प्रप०	प्र	१७ वीं
७६	२०६७ शोमिणाहचरित	लक्ष्मणदेव	प्रप०	प्र	×
७७	३०६८ शोमिणाहचरिय	दामोदर	प्रप०	प्र	१२८७
७८.	५६०२ त्रिशतजिनचरुवीसी	महणासिंह	प्रप०	प्र	×
७९	५४३६ दशरूपकथा	गुणभद्र	प्रप०	प्र	×
८०	२६८८ दुधारसविधानकथा	विनयचंद	प्रप०	प्र	×
८१	४६८६ नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	प्रप०	अ	×
८२	३६८८ निर्मरपचमीविधानकथा	विनयचंद	प्रप०	प्र	×
८३	३१७६ पासचरिय	ते प्रपाल	प्रप०	ट	×
८४	५४३६ रोहिणीविधान	गुणभद्र	प्रप०	प्र	×
८५.	२६८३ रोहिणीचरित	देवनदि	प्रप०	प्र	१५ वीं

क्रमांक प्र सू क्र	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
११५	५६३२ चतुर्दशीकथा	झलूराम	हि०	प० छ	१७६५
११६	५४१७ चतुर्विंशतिछप्पय	गुणकीर्ति	हि०	प० अ	१७७७
११७	४५२६ चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	नेमिचंदपाटनी	हि०	प० क	१८८०
११८	४५३५ चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	मुगनचंद	हि०	प० अ	१८२६
११९	२५६२ चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह	हि०	प० ज	१८४१
१२०	२५६४ चन्दनमलयागिरीकथा	चत्तर	हि०	प० अ	१७०१
१२१	२५६३ चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	हि०	प० अ	×
१२२	१८७६ चन्द्रप्रभपुराण	होरालाल	हि०	प० क	१९१३
१२३	१५७ चर्चासागर	चम्पालाल	हि०	ग० अ	×
१२४	१५४ चर्चासार	प० शिवजीलाल	हि०	ग० क	×
१२५	२०५८ चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्ति	हि०	प० अ	१६६२
१२६	५६१५ चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि०	प० छ	१६ वी शताब्दी
१२७	५६१५ चेतनगीत	मुनिसिंहनदि	हि०	प० छ	१७ वी शताब्दी
१२८	५४०१ जिनचौबीसीभवान्तरास	विमलेन्द्रकीर्ति	हि०	प० अ	×
१२९	५५०२ जिनदत्तचौपई	रत्नकवि	हि०	प० अ	१३५४
१३०	५८१४ ज्योतिपसार	कृपाराम	हि०	प० अ	१७६२
१३१	६०६१ ज्ञानवावनी	मतिशेखर	हि०	प० ट	१५७४
१३२	५८२६ ट ढाणगीत	बूचराज	हि०	प० छ	१६ वी शताब्दी
१३३	३६६ तत्त्वार्थसूत्रटीका	कनककीर्ति	हि०	ग० छ	१८ वी ”
१३४	३६८ तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडेजयवन्त	हि०	ग० छ	१८ वी ”
१३५	३७४ तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि०	ग० अ	१७ वी ”
१३६	३७८ तत्त्वार्थसूत्रभाषा	शिवरचंद	हि०	प० क	१९ वी ”
१३७	४६२७ तीनचौबीसीपूजा	नेमीचंदपाटणी	हि०	प० क	१८६४
१३८	६००६ तीसचौबीसीचौपई	क्ष्याम	हि०	प० क	१७४६
१३९	५८८१ तेईसबोलविवरण	×	हि०	प० छ	१६ वी शताब्दी
१४०	१७३६ दर्शनसारभाषा	नथमल	हि०	प० क	१८२०
१४१	१७४० दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	हि०	ग० क	१८२३
१४२	४२४५ देवकीकीढाल	ब्रूणकराणकासलीवाल	हि०	प० अ	×
१४३	४६८ द्रव्यसमूहभाषा	बाबा दुसीचंद	हि०	ग० क	१८६६

क्रमांक प्र. सू. क्र.	प्रश्न का भाग	प्रश्नकार	माया प्रश्नकर्तार	रचना का क्र.		
१	२४१७ सम्भवद्विषयग्राह्यपरिच	सैवपाल	घा	ब	×	
२७.	१४२४ सम्भवद्विषयग्राह्यपरिच	सहस्रपाल	घा	घ	×	
	२९ सुवर्णपरिचिन्तामणि	विष्णुपरीति	अप	घ	×	
३	१४३३ सुवर्णपरिचिन्तामणि	"	घा	घ	×	
४	१९३९ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	ब	×
५	४९४७ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	ब	×
६	९२ ७ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	घ	×
७	१ १ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	ब	×
८	४९ १ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	ब	१२ बी
९	४९२३ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	घ	११ १
१०	१७९ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	ब	×
११	१४१३ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	घ	×
१२	१३३२ अर्थव्यवस्था	×	हि	प	घ	१११७
१३	१७९ अर्थव्यवस्था	सुवर्णपरिचि	हि	प	ब	१ ४९
१	१३३२ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	ब	११ बी
१ १	१४७७ अर्थव्यवस्था	विष्णुपरीति	हि	प	ब	×
१ २	१ ९४ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	घ	१३ बी अर्थव्यवस्था
१ ३	१४ अर्थव्यवस्था	विष्णुपरीति	हि	प	ब	×
१ ४	४४२७ अर्थव्यवस्था	मा- सुवर्णपरि	हि	प	ब	×
१ ५	१९४ अर्थव्यवस्था	×	हि	प	घ	१७१७
१ ६	१ १२ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	घ	१ बी अर्थव्यवस्था
१ ७	१ १२ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	घ	१७ बी अर्थव्यवस्था
१ ८	१३३७ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	घ	१७ बी अर्थव्यवस्था
१ ९	१६ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	घ	×
११	१ ९४ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	ब	१९ बी अर्थव्यवस्था
१११	१४७७ अर्थव्यवस्था	सुवर्णपरिचि	हि	प	घ	१९१७
११२	१३३७ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	घ	१४३
११३	१३३२ अर्थव्यवस्था	अर्थव्यवस्था	हि	प	ब	१९ बी अर्थव्यवस्था
११४	१ ९४ अर्थव्यवस्था	सुवर्णपरिचि	हि	प	घ	१९ बी अर्थव्यवस्था

क्रमांक प्र सू क्र	ग्रंथ का नाम	प्रथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१७१.	२२४४ मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रगविनयगणि	हि० प०	अ	१७१४
१७४.	३४८६ मनमोदनपंचगती	छपपति	हि० प०	क	१६१६
१७५	६०४६ मनोहरमंजरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ट	×
१७६	३८६४ महावीरछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वी " "
१७७	२६३८ मानतु गमानर्पतिचौपई	मोहनविजय	हि० प०	छ	×
१७८	३१८५ मानचिनोद	मानमिह	हि० प०	स	×
१७९	३४६१ मित्रविलास	घासी	हि० प०	क	१७८६
१८०.	१६४८ मुनिमुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	ज	१८८५
१८१	२३१३ यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	—	१५८१
१८२	२३१५ यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	क	१६३२
१८३	५११३ रत्नावलिब्रतविधान	ब्र० बृष्णदास	हि० प०	अ	१६ वी " "
१८४.	५५०१ रविब्रतकथा	जयकोति	हि० प०	अ	१७ वी " "
१८५.	६०३८ रागमाला	श्याममिश्र	हि० प०	ट	१६०२
१८६	३४६४ राजनीतिशास्त्र	जसुराम	हि० प०	अ	×
१८७	५३६८ राजसभारजन	गंगादास	हि० प०	अ	×
१८८	६०४५ रुक्मणिकुण्जकीकोराम	तिपरदास	हि० प०	ट	×
१८९	२६८६ रैवतकथा	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वी " "
१९०	६०२७ रोहिणीविधिकथा	बसीदास	हि० प०	ट	१६६५
१९१	५६६६ लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीरामसोगाणी	हि० प०	ज	×
१९२	६०८६ लट्ठिविधानचौपई	श्रीपमकवि	हि० प०	ट	१६१७
१९३	५६५१ लहुरीनेमीश्वरकी	विश्वभूषण	हि० प०	ट	×
१९४	६१०५ बसंतपूजा	अजयराज	हि० प०	ट	१८ वी " "
१९५	५५१६ बाजिदजी के अखिल	बाजिद	हि० प०	अ	×
१९६	२३५६ विक्रमचरित्र	अभयसोम	हि० प०	ज	१७२४
१९७	३८६४ विजयकीर्तिछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वी " "
१९८	३२१३ विपहरनविधि	सतोषकवि	हि० प०	छ	१७४१
१९९	२६७५ वैदरभीविवाह	पेमराज	हि० प०	अ	×
२००	३७०४ पदलेश्यावेलि	साहलोहट	हि० प०	अ	१७३०
२०१	५४०२ शहरमारोठ की पत्री		हि० ग०	अ	×

भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।
 राजा यशोधर दु स्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की वलि न
 चढ़ा कर स्वयं की वलि देने को तैयार होता है ।
 रानी हाहाकार करती है ।

[दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये]

ॐ श्री महावीराय नमः ॐ

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१ अर्धदीपिका—जिनभद्रगण। पत्र स० ५७ में ६८ तक। आकार १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय जन सिद्धान्त। रचना काल ×। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन संख्या २। प्राप्ति स्थान छ भण्डार।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टक्का टीका सहित है।

२ अथप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल। पत्र स० ३०३। आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच। भा० राजस्थानी (हजारी गद्य) विषय—सिद्धान्त। २० काल स० १६१४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३। प्राप्ति स्थान क भण्डार।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह विषय व्याख्या है।

३ प्रति स० २। पत्र स० ११०। ले० काल ×। वे० स० ४८। प्राप्ति स्थान क भण्डार।

४ प्रति स० ३। पत्र स० ४२७। ले० काल स० १६३५ आसोज जुदी ६। वे० स० १८१६। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर एवं आकर्षक है।

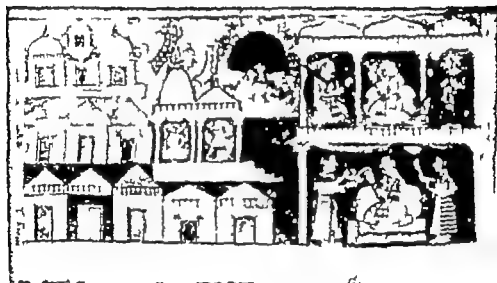
५ अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन। पत्र स० ४६। आ० ६×६ इंच। भा० हिन्दी (गद्य)। विषय—आठ कर्मों का वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। प्राप्ति स्थान ख भण्डार।

विशेष—ज्ञानावरणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है। साथ ही गुरुस्थानों का भी अच्छा विवेचन किया गया है। अन्त में प्रती एवं प्रतिमाओं को भी वर्णन दिया हुआ है।

६ अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन। पत्र स० ७। आ० ८×५ इंच। भा० हिन्दी। विषय—आठ कर्मों का वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २५८। प्राप्ति स्थान ख भण्डार।

७ अर्हत्प्रवचन। पत्र स० २। आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १८८२। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

चित्र सं २



शिव मन्दिर एवं राजमहल का एक दृश्य
(सं. मू. सं. ११४, पृष्ठ ११४)

ॐ श्री महावीराय नमः ॐ

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अर्धदीपिका—जिनभद्रगणि । पत्र स० ५७ में ६८ तब । आकार १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय जन सिद्धान्त । रचना काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । केप्टन सम्पा २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

२. अथप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ३०३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×८ इ च । आ० राजस्थानी (ठू डारी गद्य) विषय-सिद्धान्त । २० काल स० १६१४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

विशेष—उमान्वामी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह विषय व्याख्या है ।

३. प्रति स० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल × । वे० स० ४८ । प्राप्ति स्थान झ भण्डार ।

४. प्रति स० ३ । पत्र स० ४२७ । ले० काल स० १६३५ आसोज बुदी ६ । वे० स० १८१६ । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

विशेष—प्रति मुन्दर एवं आकर्षक है ।

५. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र स० ४६ । आ० ६×६ इ च । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष—ज्ञानाउपगमादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुणस्थानों का भी अच्छा विवेचन किया गया है । अतः में वस्तु एवं प्रतिमात्रा को भी वर्णन दिया हुआ है ।

६. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र स० ७ । आ० ८×५ इ च । भा० हिन्दी । विषय—आठ कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५८ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

७. अर्हप्रवचन । पत्र स० २ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इ च । भा० मध्यत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८२ । प्राप्ति स्थान झ भण्डार ।

विशेष—गुप्त नाम है। गुप्त संख्या २ है। पात्र चम्पक है।

८. अहमदनगरकाचार्वा—वत्स सं ११। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।
विशेष—गुप्त सं १। या १०४३। प्रति स्थापन करवाए।

विशेष—गुप्त का गुप्त नाम गुप्तसं गुप्त सं है।

९. आचार्यगुरु—वत्स सं १३। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।
विशेष—गुप्त सं १३। या १०४३। प्रति स्थापन करवाए।

विशेष—गुप्त सं गरी है। गुप्त सं १३। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।

१०. आचार्यगुरु—वत्स सं २। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।
विशेष—गुप्त सं २। या १०४३। प्रति स्थापन करवाए।

११. आचार्यगुरु—वत्स सं १३। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।
विशेष—गुप्त सं १३। या १०४३। प्रति स्थापन करवाए।

१२. प्रति सं १। वत्स सं १३। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।

१३. प्रति सं २। वत्स सं १३। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।

१४. आचार्यगुरु—वत्स सं १। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।
विशेष—गुप्त सं १। या १०४३। प्रति स्थापन करवाए।

१५. आचार्यगुरु—वत्स सं १३। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।
विशेष—गुप्त सं १३। या १०४३। प्रति स्थापन करवाए।

विशेष—गुप्त सं गरी है।

१६. प्रति सं २। वत्स सं १३। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।

१७. आचार्यगुरु—वत्स सं १३। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।
विशेष—गुप्त सं १३। या १०४३। प्रति स्थापन करवाए।

विशेष—गुप्त का गुप्त नाम गुप्तसं गुप्त सं है।

१८. आचार्यगुरु—वत्स सं १३। या १०४३ इय। या संख्या १ कल ×।
विशेष—गुप्त सं १३। या १०४३। प्रति स्थापन करवाए।

विशेष—गुप्त सं गरी है।

१६ उत्तराध्ययनभाषाटीका । पत्र स० ३ । आ० १०×८ इ च । भा० हिन्दी ।
विषय-पागम । १० काल × । ले० काल × । अर्धपूर्ण । वे० स० २२४८ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयान दया कर, भ्राता पूरुष बाज ।
चउवीने जिगुवर नमु, चउवींग गणधार ॥ १ ॥
धरम ग्यान दाता मुमुग, महनिस ध्यान धरेम ।
वाणी कर दसी सरम, विघन हार विचनेम ॥ २ ॥
उत्तराध्ययन चउदम, मित दण् प्रधिनार ।
अतप सकल गुण द्रष्ट घणा, बह बाल मति अनुमार ॥ ३ ॥
चतुर चाह कर माभला, ते अधिकार अनुप ।
निघ विवरा परिहरी, मुग ज्या भानम मूढ ॥ ४ ॥

पागे मानेत नगरी का वर्णन है । कई डाल दी हुई है ।

२० उद्यसत्ताविधप्रकृति धर्षान । पत्र स० ४ । आ० ११×४ इ च । भा० संस्कृत ।
विषय-सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । अर्धपूर्ण । वे० स० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१ कर्मग्रन्थमत्तरी । पत्र स० २८ । आ० ६×४ इ च । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त ।
१० काल × । ले० काल स० १७८६ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० स० १२२ । प्राप्तिस्थान व भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

२२ कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० १२ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इ च । भा० प्राकृत । विषय-
सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल स० १६८१ मगमिर मुदी १० । पूर्ण । वे० स० २६७ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—पाँडे डालू के पठनार्थ नागपुर में प्रतिलिपि की गई थी । संस्कृत में सक्षिप्त टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६८१ वरये मिति मागसिर वदि १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णकृता पाडे डालू
पठनार्थ लिखित मुग्जन मुनि सा० धर्मदामेन प्रदत्ता ।

२३ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ८५ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२४ प्रति स० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० १४० । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२४. प्रति स ४। पत्र नं १२। नि. काल नं १७१५। मूर्ति नं १६११। अ. मन्त्र।

विशेष—ब्रह्मरूप अवतारीति के विषय कृष्णायन के प्रतिनिधि बरवार्त्त थी।

२५. प्रति स ४। पत्र नं १४। नि. काल नं १७१५। मूर्ति नं १६११। अ. मन्त्र।

मन्त्र।

विशेष—इसकी प्रतिनिधि विद्यालय के विषय धर्मराम मन्त्रायन के लक्षण के विषय थी थी। प्रति के दोनो ओर तथा ऊपर बीच संस्कृत में लिखित टीका है।

२६. प्रति स ६। पत्र नं ७७। नि. काल नं १९७१। मूर्ति नं २। नि. नं २६। अ. मन्त्र।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका लक्षित है। मन्त्रपुरा में भी पार्वतमात्र श्रीमन्त्र के प्रतिनिधि हुई तथा नं १९७७ में मुनि मन्त्रावली के प्रति का संक्षेप विद्या।

२७. प्रति स ७। पत्र नं १६। नि. काल नं १७१५। मूर्ति नं १६। नि. नं १६६। अ. मन्त्र।

२८. प्रति स ८। पत्र नं १३। नि. काल नं १७१५। मूर्ति नं १६। नि. नं १६६। अ. मन्त्र।

मन्त्र।

२. प्रति स ६। पत्र नं ११। नि. काल नं १६। नि. नं १६६। अ. मन्त्र।

विशेष—संस्कृत में लिखित विशेष है।

३१. प्रति स १। पत्र नं ११। नि. काल नं १६। नि. नं १६६। अ. मन्त्र।

विशेष—१६६ मन्त्र है।

३२. प्रति स ११। पत्र नं २१। नि. काल नं १७१५। मूर्ति नं १६। नि. नं १६६। अ. मन्त्र।

मन्त्र।

विशेष—कालिका में नं ७७ मन्त्रायन के नं ७७ मन्त्रायन के विषय श्रीमन्त्रायन के मन्त्रावली प्रतिनिधि थी थी।

३३. प्रति स १२। पत्र नं १७। नि. काल नं १६। नि. नं १६६। अ. मन्त्र।

३४. प्रति स १३। पत्र नं १। नि. काल नं १७१५। मूर्ति नं १६। नि. नं १६६। अ. मन्त्र।

मन्त्र।

३५. प्रति स १४। पत्र नं १४। नि. काल नं १७१५। नि. नं २६६। अ. मन्त्र।

विशेष—कृष्णायन में राम मूर्तिका के लक्षण के प्रतिनिधि हुई थी।

३६. प्रति म० १५ । पत्र म० १६ । ले० काल X । वे० म० ८०५ । अ भण्डार ।

३७ प्रति स० १६ । पत्र स० ३ से १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० म० २८० । अ भण्डार ।

३८ प्रति म० १७ । पत्र म० १७ । ले० काल X । वे० म० ४०५ । अ भण्डार ।

३९ प्रति स० १८ । पत्र म० १४ । ले० काल X । वे० म० १६० । अ भण्डार ।

४० प्रति स० १९ । पत्र म० ५ से १७ । ले० काल म० १७८० । अपूर्ण । वे० म० २००० । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती नगरी में पार्वनाथ चैत्यालय में श्रीमान् बुधमिह के विजय राज्य में आचार्य उदयभूषण ने प्रदिप्य ५० तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण ने सशोधन करके प्रतिलिपि की । प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४१ प्रति म० २० । पत्र म० १३ से ४३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० म० १६८६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । गुजराती टीका सहित है ।

४२ कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीर्त्ति । पत्र स० २ से २२ । आ० १२X४^३ इंच । भा० मम्बुत । विषय—मिहान्त । २० काल X । ले० काल म० १८२२ । वे० स० १२५२ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषण के सहाय्य से लिखी थी ।

४३ कर्मप्रकृति । पत्र म० १० । आ० ८^३X४^३ इंच । भा० हिन्दी । २० काल X । पूर्ण । वे० म० ३६४ । अ भण्डार ।

४४ कर्मप्रकृतिविद्यान—बनारसीदास । पत्र म० १६ । आ० ८^३X४^३ इंच । भा० हिन्दी पद्य । विषय—मिहान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० म० ३७ । अ भण्डार ।

४५ कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्त्ति । पत्र स० १४ । आ० १२X५ इंच । भा० मम्बुत । विषय—मिहान्त । २० काल X । ले० काल म० १७६८ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० म० १५६ । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलनर्ता आ० नेमिचन्द्र हैं ।

४६ प्रति म० २ । पत्र म० १७ । ले० काल X । वे० म० १२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७ कर्मस्नानसूत्र—देवेन्द्रसूरी । पत्र स० १२ । आ० ११X८ इंच । भा० प्राकृत । विषय—मिहान्त । २० काल X । ले० काल X । वे० म० १०५ । अ भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१ कल्पसूत्र—भद्रबाहु । पत्र स० ६ । आ० ११×४^१ इ च । भा० प्राकृत । विषय—प्रागम ।
२० का × । ले० का स० १२६० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १८४६ । ट भण्डार ।

२२ प्रति स० २ । पत्र स० ८ मे २७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८६४ । ट भण्डार ।

विशेष—सम्कृत टीका सहित है । गाथाओं के ऊपर अर्थ दिया हुआ है ।

२३ कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरोपध्याय । पत्र स० २५ । आ० १५×४ इ च । भाषा—सम्कृत ।
विषय—प्रागम । २० काल × । ले० काल स० १७२५ कातिक । पूर्ण । वे० स० २८ । ख भण्डार ।

विशेष—लूणकर्णसर ग्राम में ग्रंथ की रचना हुई थी । टीका का नाम कल्लता है । सारक ग्राम में प०
भाग्य विशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२४ कल्पसूत्रवृत्ति । पत्र स० १२६ । आ० ११×४^१ इ च । भा० प्राकृत । विषय—
प्रागम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८१८ । ट भण्डार ।

२५ कल्पसूत्र । पत्र स० १० से ४४ । आ० १०^१×४^१ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—
प्रागम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २००२ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण भी दिया हुआ है ।

२६ क्षणामारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र स० ६७ । आ० १२×७^१ इ च । भा०
संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल शक स० ११२५ वि० स० १२६० । ले० काल स० १८१६ वैशाख सुदी ११ ।
पूर्ण । वे० स० ११७ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ के मूलकर्ता नेमिचन्द्राचार्य हैं ।

२७ प्रति स० २ । पत्र स० १४४ । ले० काल स० १२५५ । वे० स० १२० । क भण्डार ।

२८ प्रति स० ३ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १८४७ आषाढ सुदी २ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

२९ क्षणसार—टीका । पत्र स० ६१ । आ० १२^१×४^१ इ च । भा० संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११८ । क भण्डार ।

६० क्षणसारभाषा—प० टोडरमल । पत्र स० २७३ । आ० १३×८ इ च । भा० हिन्दी ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० स० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—क्षणसार के मूलकर्ता आचार्य नेमिचन्द्र हैं । जैन सिद्धान्त का यह अपूर्व ग्रन्थ है । महां प०
टोडरमलजी की गोमट्टमार (जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड) लम्बिसार और क्षणसार की टीका का नाम सम्पन्नज्ञान
चन्द्रिका है । इन तीनों की भाषा टीका एक ग्रन्थ में भी मिलता है । प्रति उत्तम है ।

६१ गुणः शान्तवर्षा नवमं ४२। या १२×३ ह्य। जा प्राग। निर
निहा। १२ वत्स × १५ वत्स × १५ वत्स। १५ नं २३। ४५ वत्स।

६२ प्रश्न ३। सै बल \times । सै नं १४। अ म्भार।

६३ गुरुभानुमयापेक्षसूत्र—रत्नगोचर। वषट् २। पा १७४ द'व। वा नौद्वय।
विषद-विज्ञात। र बाज × १ के फल × १ पुर्न। के नं १३३। अ मन्तर

६४ प्रति स० २। वस नं २१। के वस नं १०१२ घालाज बुरी १४। के न १०२। क वस नं १०२।

विमर्श—भेदबुद्धि होकर जड़ित ।

३५ शुद्धरसनाचर्चा— १। यम नं ३। वा २×४६ दवा। वा ३-वी। विर-
नित्य। २। वा २। मे काल २। वी नं १२९। पार्थिव। अन्तर्यामी।

६६ प्रतिम ॥ वचनं २ मे २८। ३० मे १९७८। ६७७८। ६७७८। ६७७८।

६० प्रति ३३ ३/४, वजन २२ से ३३, लम्बा १० से १२, चौड़ा २१ से २३, १३५ ट गन्ना।

६२ प्रसिद्धि ४। कथं ७। निवा २०११। वि २०११। अ मन्तर।

६६. प्रति सं ७१ वष सं १३। प का १ के सं १६६ का बण्डा।

प्रति सं ३। जय सं २६। न नान । वे सं ३४६। म् नान ।

०१ मुद्रास्वतन्त्रता-समस्या १९५० का १५५ दृष्टि। विषय-विशाल।
पृष्ठ ५ पृष्ठ ५५। १९५०।

७७ गुणधर्मचर्चा नव बीबीस छाया चर्चा --- १२५ पृ. १ । वा १ २१ ३५ । वा
मंभूत । विन्द-विज्ञान । वा X । न वा । धनुष १५ न ११ । ६ अष्टा ।

ॐ शुक्लवासिष्ठाय नमः । वा ११८८५ । वा संज्ञा । दिवस-मिथुन
वा ११८८५ । वा संज्ञा । दिवस-मिथुन ।

॥ शुक्राचार्यः ॥ यथा न ३। या ११५३ इव । या मन्त्रः । विष्णु-मन्त्रः ।
२ भाग । नि वल्ल भर्तृः । ये नं १६३। वा बभूव ।

४३ शुक्लध्वजवर्णितः —————। वयसं ८ वा २५५ हव आ शिरीः । वयस-विज्ञान
वयस ५। मे वयस १०५५। मे व २१। व वयसः ।

१ गुणधनमहापौरायणी । त्वत् १ । का १ । एव । या कृत्वा ।
विश्व-विभुता वाय । मे नाम X । यन्त्रे । हे नं ७० । य मन्त्रः ।

३७ गुणस्थानवर्णन

। पत्र सं० २० आ० १०×५ इच । भा० सस्युत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । मे० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८ । अ भण्डार ।

विशेष—१४ गुणस्थाना का वर्णन है ।

७८ गुणस्थानवर्णन

। पत्र सं० १५ म ३१ । आ० १० १५ इच । भा० सिद्धा ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल × । मे० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

७६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । वे० काल सं० १७६२ । वे० सं० ८६६ । अ भण्डार ।

८० गोममटमार (जीवकाण्ड — आ० नैमचन्द्र । पत्र सं० १३ । आ० १३×१ इच । भा०—

प्रवृत्त । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । मे० काल सं० १५५५ आषाढ सुदी ६ । पूषा । वे० सं० ११८ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५५७ गौ आषाढ शुक्ल त्रयोदश्या श्रीमूलसमे नद्याम्नाय बलात्कारणै मरस्वतागन्ध
था कुबकु दाशार्पान्वय भट्टारग आ पञ्चनन्द देवास्तत्पट्टे भट्टारग आ मुमचद्रदवास्तत्पट्टे भट्टारग आ जिनचद्रदवास्त-
तिप्य मुनि श्री मठलाचार्य ग्लवीति देवास्तत्तिप्य मुनि हेमचद्र नामा तदाभ्याये सहलयालवसे सा० देव्हा भार्या
दन्ती तत्पुत्र सा० भाजा तद्भार्या अणभास्तत्पुत्रा सा० भावछो द्वितीय अमर्या तृतीय जाल्हा एतै मातृप्रसिद नैमयित्वा
तस्म जानपात्राय मुनि श्री हेमचद्राय भक्त्या प्रदत्त ।

८१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । सं० काल × । वे० सं० ११६८ । अ भण्डार ।

८२ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४६ । सं० काल सं० १७०६ । वे० सं० १११ । अ भण्डार ।

८३ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ म ४८ । सं० काल सं० १६२४ । ज्येष्ठ सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

विशेष—हरिश्चन्द्र के पुत्र मुनपयी ने प्रतिलिपि की थी ।

८४ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । सं० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

८५ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । सं० काल × । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

८६ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३७५ । सं० काल सं० १७३८ आषाढ सुदी ५ । वे० सं० १८ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका महिल है । श्री वीरदास ने अमचरावाद में प्रतिनिधि की थी ।

८७ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७८ । सं० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी ७ । वे० सं० १३८ । क भण्डार ।

८८ प्रति स ६। पच तं ४०। के बल तं १ १२ चैव गुरी ३। के तं ४२। च बभार।

८९ प्रति स १। पच तं १०२-२४१। मे बल \times । गुरुर्ल। के तं । च बभार।

९० प्रति स ११। पच तं १। मे बल \times । गुरुर्ल। के तं ४२। च बभार।

९१ गोमयसारणीक—सकलभूषण। पच तं १४३४। या १११ \times ७ दब। या संवत्।
विषय-विद्वान्। र कल तं १३७१ फलिक गुरी ११। मे बल तं १२४३। गुरुर्ल। के तं १४। च
बभार।

विशेष—बाला तुलीकन ने कलालाल चौधरी के प्रतिनिधि कार्य। प्रति वेदगो म मंत्री है।

९२ प्रति स २। पच तं १११। मे कल \times । के तं १३७। च बभार।

९३ गोमयसारणीक—सकलभूषण पच तं ११। या १ \times १२ दब। या संवत्। विषय-
विद्वान्। र कल \times । मे कल \times । गुरुर्ल। के तं १३२। च बभार।

विशेष—पच १११ पर बाबाजी सर्वपल्ल हठ टीका की आवृत्ति का भाग है। लालपुरा नगर (बम्बई)
में लालपुरा के बाबाजीलाल ने बाला याचि बाबाजीलाल चौधरी याचि बाबाजीलाल के लालपुरा सर्वपल्ल को लाल प्रति निम्न
प्रकाशित की।

९४ गोमयसारणीक—सकलभूषण। पच तं ३१। या १ \times ४१ दब। या संवत्।
र कल \times । मे बल \times । गुरुर्ल। के तं ३४१। च बभार।

विशेष—बाला याचि बाबाजीलाल सर्वपल्ल की टीका है। प्रति बाबाजीलाल द्वारा संशोधित है।
५ विवर की बोली है देवा निवा है।

९५ गोमयसारणीक—सकलभूषण। पच तं ३ के १११ या १ \times ४१ दब। या संवत्।
विषय-विद्वान्। र बल । मे बल \times । गुरुर्ल। के तं १११। च बभार।

९६ प्रति स १। पच तं ११४। मे बल \times । के तं ६। च बभार।

९७ गोमयसार (वीरभारत) भाषा—वै टीकरवत्। पच तं १११ के १२४। या
१ \times १३ दब। या विषय-विद्वान्। र कल \times । मे बल \times । गुरुर्ल। के तं ४३। च बभार।

विशेष—वै टीकरवत् की वृत्त के लाल का विषय बाला है। लाल २ कल दब।
टीका का बल लालकलालविषय है। सर्वपल्ल-वीर।

९८ प्रति स १। पच तं १७ मे कल \times । गुरुर्ल। के तं ३२। च बभार।

१६ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । न० काल स० १६८८ भाद्रपद शुदी १५ । वै० स० १४१ । क
भण्डार ।

१७ प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । स० काल ८ । अपूर्ण । वै० स० १२८१ । अ भण्डार ।

१०१ प्रति स० ४ । पत्र न० १७६ । न० काल स० १८८७ माघ शुदी १५ । वै० स० १८ ।
ग भण्डार ।

विशेष—नाइगाम साह तथा मन्नासाव नागर्षावाव न प्रतिलिपि नगर्षा भी

१०२ प्रति स० ५ । पत्र स० ३२८ । न० काल १ । अपूर्ण । वै० स० १८६ । अ भण्डार ।

विशेष—२७८ ग मागे ५६ पत्रो पर गुणस्थान आदि पर संशय रहना है ।

१०३ प्रति स० ६ । पत्र स० ५३ । न० काल ५ । वै० स० १५० । अ भण्डार ।

विशेष—यत्र यत्र रहना ही है ।

१०४ गोम्मटसार-भाषा—प० टोडरमल । पत्र स० २१३ । मा० १५५१० डच । भा० हिन्दी ।
विषय—मिदान्त । २० काल स० १८१८ माघ शुदी ५ । न० काल स० १६८० भाद्रपद शुदी ५ । पूर्ण । वै० स० १५१ ।
अ भण्डार ।

विशेष—नन्दिगार तथा क्षणसार की टीका है । गणेशलाल सुंदरलाल पांड्या ने प्रश्न की प्रतिलिपि
करवायी ।

१०५ प्रति स० ७ । पत्र स० १११० । स० काल स० १८५७ सावण शुदी ५ । वै० स० १३८ ।
अ भण्डार ।

१०६ प्रति स० ८ । पत्र स० ६७७ मे ७६५ । न० काल ५ । अपूर्ण । वै० स० १२६ । अ भण्डार ।

१०७ प्रति स० ९ । पत्र स० ८१८ । स० काल स० १८८७ वैशाख शुदी ३ । अपूर्ण । वै० स०
२१८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़े साकार एवं सुन्दर मिथार्ड की है तथा दर्शनीय है । कुछ पत्रो पर बीच में कलापूर्ण
शोभाकार किये हैं । बीच के कुछ पत्र नही है ।

१०८ गोम्मटसारपीठिको-भाषा—प० टोडरमल । पत्र स० ६२ । मा० १५७७ डच । भा० हिन्दी ।
विषय—मिदान्त । २० काल ५ । न० काल ५ । अपूर्ण । वै० स० २३२ । अ भण्डार ।

१२१ प्रति स० ३ । पत्र स० ५१ । ले० बाल \times । वे० स० २५ । अ भण्डार ।

१२२. प्रति स० ४ । पत्र स० २१ । ले० बाल स० १७५ । वे० स० ४६० । अ भण्डार ।

१२३ गोम्मतसार (कर्मकाण्ड) भाषा—५० टोडरमल । पत्र स० ६६४ । ग्रा० १३/८ इ च । भा० हिन्दी गद्य (हूँदारी) । विषय—सिद्धांत । २० बाल १६ बी शतादी । ले० मान स० १६६६ ज्य० सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १३० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

१२४. प्रति स० २ । पत्र स० २६० । ले० बाल \times । वे० स० १६८ । अ भण्डार ।

विशेष—महष्टि महित है ।

१२५ गोम्मतसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज । पत्र स० ५२ । ग्रा० २५५ इ च । भा० हिन्दी । विषय—मिद्धान्त । २० बाल स० २०१७ । ले० बाल स० १७८८ पीप सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १०५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रदत्त साह आनन्दरामजी मण्डलवाज ने पूछ्या तिम ऊपर हेमराज ने गोम्मतसार को देख के अयोधम माफिका पत्रो मे जबाब लिखने रूप चर्चा की बामना निम्नी है ।

१२६ प्रति स० २ । पत्र स० ८५ । ले० बाल स० १७१७ आसोज बुदी ११ । वे० स० १२६ ।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर मे कल्याण गृहाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति जीर्ण है । हेमराज ८८ बी शतादी के प्रथमसद के हिन्दी गद्य के अध्ये विद्वान हुये हैं । इन्होंने १० मे अधिक प्राकृत व मय्युक्त रचनाओ का हिन्दी गद्य में रूपांतर किया है ।

१२७ गोम्मतसार (कर्मकाण्ड) टीका । पत्र स० १६ । ग्रा० ११३ \times १ इ च । भा० मय्युक्त । विषय—मिद्धान्त । २० बाल \times । ले० बाल \times । अपूर्ण । वे० स० ८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१२८ प्रति स० २ । पत्र स० ६८ । ले० बाल स० \times । वे० स० ६६ । अ भण्डार ।

१२९ प्रति स० ३ । पत्र स० ४८ । ले० बाल \times । वे० स० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है —

इति प्राय श्रीगुप्तसारमूलावृत्तीकाच्च नि वाद्यक्रमेण एकीकृत्य लिखिता । श्री नमिचन्द्रसेद्धाती विरचितकर्मप्रकृतिप्रथस्य टीका समाप्ता ।

१३ गीतमनुष्य—गीतय स्वामी। वषत् २। या १४४, हज। आ ग्राह्य। विम
विमल। १५ वल ४। से वल ४। पूर्ण। वे त १७११। द कथा।

विशेष—अति कुमराली होना अवश्य है २ वर्ष है ।

१३१ गौतमसूत्रम्—। वष मं १। वा १ X ४ दृष। वा वाहृ। विषय-विज्ञान।
२ वल-X। न वल-X। पूर्ण। वै मं १२४२। वा मण्डार।

विषय—नैसर्गिक टीका चर्चित है ।

१३० चतुर्विंशत्युक्तं—। यत् स १। या १ × ४ हय। ता वायुः। विषय-विज्ञानः।
५ वान ×। मे दान ×। पुनः। मे स २३१। न्य वायुः।

१३३ चतुर्विंशत्युत्तर-विंशत्युत्तर सुमि। वन नं २६। या १ वृ०४ दृग्य। जग-मंडल।
विषय-जग-मंडल। वन नं २६। या १ वृ०४ दृग्य। जग-मंडल।

१२४ चतुर्थांशवर्षावधि-... । यम सं ३। या ११×५ इव। या संस्त।
विषम-यावतः १२ वत्स × १० वत्स × १। यार्गं ३। सं ११४। क मयार।

विशेष—कन्येय संवत् १०८३ अश्लेषा दिना हुआ है ।

१३४ बर्बादालक—यानिकवा। वन में १३। या १३५× द. व। अला-हिन्दी (वक)। विष-
मिश्रण १२ वन १ की छत्ती। नि वन में १३११ अलाकुरी ३। पूर्व ३ न १३५। क अला।

विद्येन—हिन्दी यह टीका भी है ।

१३६ प्रतिमा ७। वरानं १२। नि रत्नानं १५० कालागु गुटी १२। ४ म १२।

८ वापार

१३६. प्रति स ८। वर ३। १। न वर १३६। धर्म। न वर १३६।

विशेष—इसका बीजा नष्टित ।

१३८ प्रति सं ४। वष सं २२। सं पद सं ११११ संविद गुरी २। ३ सं ११।
४ १११।

१३६ अग्नि त्रयः पयसो ह । मे यत्नः ८०३ । अ यत्नः ।

४४ प्रतिमं ६।११ नं २४।३५ पाठनं १९१८ ज्योतिष मूली । के नं १०१।

मिद्वान् एवं चर्चा]

विशेष—नीच वागता पर लिपि हुई है। हिन्दी गण से टीका भी दी हुई है।

१५१ प्रति स० ७। पत्र स० २०। ले० काल स० १६६८। वे० स० २८३। अ भण्डार।

विशेष—निम्न रक्तासे घोर है।

१ घटा बावनी - घानतगण - हिन्दी

२ गुण विनती - भूधरदास - "

३ बाहर भाषा - नरन - "

४ समाधि मरण - "

१५२ प्रति स० ८। पत्र स० ४६। ले० काल \times । अपूर्ण। वे० स० १/६३। अ भण्डार।

विशेष—गुट्टाकार है।

१५३ चर्चावर्णन—। पत्र स० ८१ ग ११४। पा० १०३ ६ दृश्य। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
२० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण। वे० स० १७०। अ भण्डार।

१५४ चर्चासमग्रह । पत्र स० ३६। पा० १०२ \times ६ दृश्य। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
२० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण। वे० स० १७६। अ भण्डार।

१५५ चर्चासमग्रह । पत्र स० ३। पा० १२ \times ५ $\frac{१}{२}$ दृश्य। भाषा संस्कृत—हिन्दी। विषय सिद्धान्त।
२० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स० २०५१। अ भण्डार।

१५६ प्रति स० २। पत्र स० १३। ले० काल \times । वे० स० ८६। अ भण्डार।

विशेष—विभिन्न भाषायाँ की सम्मिलित चर्चाओं का वर्णन है।

१५७ चर्चासमाधान—भूधरदास। पत्र स० १३०। पा० १० \times ५ दृश्य। भाषा हिन्दी। विषय—
सिद्धान्त। २० काल स० १८०६ माघ सुदी ५। ले० काल स० १८६७। पूर्ण। वे० स० ३८६। अ भण्डार।

१५८ प्रति स० २। पत्र स० ११०। ले० काल स० १६०८ आषाढ सुदी ६। वे० स० ४६३। अ
भण्डार।

१५९ प्रति स० ३। पत्र स० ११७। ले० काल स० १८२२। वे० स० २६। अ भण्डार।

१६० प्रति स० ४। पत्र स० ६६। ले० काल स० १६४१ वैशाख सुदी ५। वे० स० ५०। अ भण्डार।

१६१ प्रति स० ५। पत्र स० ८०। ले० काल स० १६६४ चैत सुदी १५। वे० स० १७४। अ भण्डार।

१६२ प्रति स० ६। पत्र स० ३८ मे १६६। ले० काल \times । अपूर्ण। वे० स० ५३। अ भण्डार।

१३ गीतगोवन्द—गीतगोवन्द स्वामी । वन लं २ । या १ × ४ दण्ड । या शङ्ख । विषय-विद्वान् । २ वल × १ मे वल × १ पूर्ण । के लं १७१६ । अन्तर ।

विशेष—वर्ग वन लं टीका वर्णित है ।

१३१ गीतगोवन्द—गीतगोवन्द स्वामी । वन लं १ । या १ × ४ दण्ड । या शङ्ख । विषय-विद्वान् । २ वल × १ मे वल × १ पूर्ण । के लं १२४२ । अन्तर ।

विशेष—वर्ग वन लं टीका वर्णित है ।

१३२ गीतगोवन्द—गीतगोवन्द स्वामी । वन लं १ । या १ × ४ दण्ड । या शङ्ख । विषय-विद्वान् । २ वल × १ मे वल × १ पूर्ण । के लं २४२ । अन्तर ।

१३३ गीतगोवन्द—गीतगोवन्द स्वामी । वन लं २६ । या १ × ४ दण्ड । या शङ्ख । विषय-विद्वान् । २ वल × १ मे वल लं १६ १ वी वल ११ । पूर्ण । के लं १२ । अन्तर ।

१३४ गीतगोवन्द—गीतगोवन्द स्वामी । वन लं ३ । या १ × ४ दण्ड । या शङ्ख । विषय-विद्वान् । २ वल × १ मे वल × १ पूर्ण । के लं ११४ । अन्तर ।

विशेष—वर्ग वन लं या पर वन लं टीका वर्णित है ।

१३५ गीतगोवन्द—गीतगोवन्द स्वामी । वन लं १३ । या १ × ४ दण्ड । या शङ्ख । विषय-विद्वान् । २ वल १ वी वल लं १३१३ वल लं १३१३ । पूर्ण । के लं १४६ । अन्तर ।

विशेष—वर्ग वन लं टीका वर्णित है ।

१३६ गीतगोवन्द । वन लं १६ । मे वल लं १६३० वल लं १६३० । पूर्ण । के लं १२ । अन्तर ।

१३७ गीतगोवन्द । वन लं ३ । मे वल × १ के लं ४६ । पूर्ण । अन्तर ।

विशेष—वर्ग वन लं टीका वर्णित है ।

१३८ गीतगोवन्द । वन लं २९ । मे वल लं १३११ वल लं १३११ । पूर्ण । के लं ११ । अन्तर ।

१३९ गीतगोवन्द । वन लं १ । मे वल × १ के लं १७२ । अन्तर ।

१४ गीतगोवन्द । वन लं ६ । मे वल लं १३१३ वल लं १३१३ । पूर्ण । के लं १७३ । अन्तर ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या वाई शीलश्री ने प्रतिलिपि कराई।

१६७ प्रति स ५। पत्र म० २२। ले० काल स० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वे० स० ५२। ख भण्डार।

विशेष-थेण्टी मानमिहजी ने ज्ञानावरणीय कर्म क्षयार्थ प० प्रेम में प्रतिलिपि करवायी।

१६८ प्रति स० ६। पत्र म० १ मे ४३। ले० काल X। अपूर्णा। वे० म० ५३। ख भण्डार।

विशेष-संस्कृत टट्टा टीका सहित है। १४३वीं गाथा में ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६९ प्रति स० ७। पत्र म० ५६। ले० काल X। वे० म० ५४। ख भण्डार।

विशेष-प्रति संस्कृत टट्टा टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थभार टिप्पण' है। भानन्दराम के पठनार्थ टिप्पण लिखा गया।

१७० प्रति स० ८। पत्र म० २५। ले० का० स० १६४६ चैत बुदी २। वे० म० १२६। ख भण्डार।

१७१ प्रति स० ९। पत्र म० ७। ले० काल X। वे० म० १३५। छ भण्डार।

१७२ प्रति स० १०। पत्र म० ३२। ले० काल X। वे० म० १३५। छ भण्डार।

१७३ प्रति स० ११। पत्र म० ५३। ले० काल X। वे० म० १४५। छ भण्डार।

विशेष-२ प्रतियों का मिश्रण है।

१७४ प्रति स० १२। पत्र स० ७। ले० काल X। वे० स० २६१। ज भण्डार।

१७५ प्रति स० १३। पत्र म० २ मे २५। ले० काल म० १६६५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्णा। वे० म० १८१५। ट भण्डार।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्ति —संवत् १६६५ वर्षे कार्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यानये चौबीस ठाणें ग्रन्थ संपूर्ण भवति।

१७६ प्रति स० १४। पत्र म० ३३। ले० काल स० १८१४ चैत बुदि ६। वे० म० १८१६। ट भण्डार।

प्रशस्ति-संवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चद्रमिने १८४४ चैत्र कृष्ण नवम्या सोमवासरे हनुवती देवे भराह्वयपुरे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति नेर्द विद्द छात्र सर्व सुखद्वयाध्यापनार्थ लिपिकृत स्वशयेना चन्द्र तारक स्थीयतामिद पुस्तक।

१७७ प्रति स० १५। पत्र स० ६६। ले० का० म० १८८० माघ बुदी १५। वे० म० १८१७। ट भण्डार।

विशेष-नैणवा नगर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८ प्रति स० १६। पत्र स० १२। ले० काल X। वे० म० १८८६। ट भण्डार।

१३३ प्रति स ७। पत्र नं ७४। मे नाल नं १७ ३ पीप नुरी १३। वे न १६७। क मन्धार।

विशेष—कमलर क्षिप्राती बहुश्या बंधनल मे नवाई जगपुर मे प्रतिनिधि की थी।

१३४ चर्चासार—यं शिखरीशाल। पत्र नं १३३। या १ ३/४२ दल। माता क्षिपी। विषय—
मिदाल। र नाल ×। मे नाल ×। पूर्ण। वे नं १४७। क मन्धार।

१३५ चर्चासार—। पत्र नं १३२। या २/४२ दल। माता—क्षिपी। विषय—मिदाल। र
नाल ×। मयूरी। वे नं १४। क मन्धार।

१३६ चर्चासार—। पत्र नं १३। या १३/२५ दल। माता क्षिपी। विषय—मिदाल। र
नाल ×। मयूरी। वे नं ७४६। क मन्धार।

१३७ चर्चासार—बंदाशाल। पत्र नं १४। या १३/२५ दल। माता—क्षिपी मय। विषय—
मिदाल। र नाल नं १३१। मे नाल नं १३११। पूर्ण। वे नं ४३६। क मन्धार।

विशेष—माल्य मे १४ वय विषय नुरी के कमल मे रने हैं।

१३८ प्रति स २। पत्र नं ४१। मे नाल नं १३१। वे नं १४। क मन्धार।

१३९ चौदहगुणकामचर्चा—कमलकाल। पत्र नं ४१। या ११/२५ दल। मा क्षिपी मय।
(रास्मली) विषय—मिदाल। र नाल ×। मे नाल ×। पूर्ण। वे नं ३३९। क मन्धार।

१४ प्रति स २। पत्र नं १-४१। मे नाल ×। वे नं १। क मन्धार।

१४१ चौदहगुणकामचर्चा—। पत्र नं १। या १३/२५ दल। माता—मयूर। विषय—मिदाल।
र नाल ×। मे नाल ×। पूर्ण। वे नं ३३६। क मन्धार।

१४२ प्रति स २। पत्र नं १३। मे नाल ×। वे नं १ २२। क मन्धार।

१४३ बीबीशठकामचर्चा—मेमिगमभावावे। पत्र नं १। या १ ३/४२ दल। माता—मयूर।
विषय—मिदाल। र नाल ×। मे नाल नं १ २ बीबाश नुरी १। पूर्ण। वे नं १३७। क मन्धार।

१४४ प्रति स २। पत्र नं १। मे नाल ×। मयूरी। वे नं १३३। क मन्धार।

१४५ प्रति स ३। पत्र नं ७। मे नाल नं १ १७ पीप नुरी १९। वे नं १६। क मन्धार।

विशेष—यं ईश्वरदाय के शिष्य कमलर के पठनार्थ मयूरदाय नाम के कमल की प्रतिबिम्बि थी।

१४६ प्रति स ४। पत्र नं ३१। मे नाल नं १६/२६ कश्चित् नुरी २। वे नं २१। क मन्धार।

१६० प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० बाल × । अपूर्णा । वे० स० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति स० ४ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ३६२ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति स० ५ । पत्र स० ६० । ले० बाल × । वे० स० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१६३ प्रति स० ६ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० १६१ । क भण्डार ।

१६४ प्रति स० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १६२ । क भण्डार ।

१६५ प्रति स० ८ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १६७६ । वे० स० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—वेनीराम की पुस्तक में प्रतिलिपि की गई ।

१६६ त्रिजालीसठाणाचर्चा । पत्र स० १० । आ० ६१/४ इंच । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल—× । ले० काल स० १८२२ आषाढ बुदी १ । पूर्णा । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

१६७ जम्बूद्वीपकृत । पत्र स० ३० । आ० १२३/८ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १८२८ चैत सुदी ८ । पूर्णा । वे० स० ११५ । अ भण्डार ।

१६८ जीवस्वरूप वर्णन । पत्र स० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा प्राकृत । २० काल × ।

ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १२१ । ब भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ में ६ पत्रों में तत्त्व वर्णन भी है । गोम्मटसार में ने लिया गया है ।

१६९ जीवाचारविचार । पत्र स० ५ । आ० ६×४ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ८३ । अ भण्डार ।

२०० प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १८१८ मगसिर बुदी १० । वे० स० २०५ ।

क भण्डार ।

२०१ जीवसमासटिप्पण । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २३५ । ब भण्डार ।

२०२ जीवसमासभाषा । पत्र स० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १८१८ । वे० स० १६७१ । ट भण्डार ।

२०३ जीवाजीवविचार । पत्र स० ६० । आ० १२×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । वे० स० २००८ । ट भण्डार ।

विषय ५ वष तक बचपि है हमने साधे मित्रा की बात तथा कुछत्र स्वीक है । बीबीस तीसवृत्त के बिना
बादि का वर्णन है ।

१८६. बहुरिष्टमि स्थानक-जमिबन्धुवाच्य । वष सं ४३ । या ११५४ इह । या शत्रु ।
विषय-मित्रात । १ वत्स \times । से वत्स \times । पूर्ण । वे सं १३२ । अ मन्थार ।

विशेष-मन्थुल टीका भी है ।

१८७. बहुरिष्टमि मुखस्थान पीठिका — । वष सं ४ । या १०७४ इह । या शत्रु ।
विषय-मित्रात । १ वत्स \times । से वत्स \times । पूर्ण । वे सं ११५२ । अ मन्थार ।

१८८. बीबीस ठाखा बर्षा — । वष सं ५ से २४ । या १२५२५ इह । या शत्रु । विषय-
मित्रात । १ वत्स \times । से वत्स \times । पूर्ण । वे सं १२५२५ । अ मन्थार ।

१८९ प्रति स ७ । वष सं ३२ व ३१ । या ११२५२ इह । या शत्रु । से वत्स सं १२१
वैत नुदी १ । वे सं १२११ । अ मन्थार ।

विशेष-ई रामचरण का प्रमाणवत्त्व सिद्धि ।

१९० प्रति स ३ । वष सं १३ । से वत्स \times । वे सं ११ । अ मन्थार ।

१९१ बीबीस ठाखा बर्षा वृत्ति — । वष सं १२१ । या ११५२५ इह । या शत्रु ।
विषय-मित्रात । वत्स \times । से वत्स \times । पूर्ण । वे सं १२ । अ मन्थार ।

१९२ प्रति स २ । वष सं १२ । से वत्स सं १५१ वैत नुदी १ । पूर्ण । वे सं ७० ।
अ मन्थार ।

१९३ प्रति स ३ । वष सं ३१ । से वत्स \times । वे सं १२५ । अ मन्थार ।

१९४ प्रति स ४ । वष सं ३ । से वत्स सं ११ वार्त्ति वृत्ति १ । बीबीस-बीबीस । वे सं
१२५ । अ मन्थार ।

विशेष-ई ईश्वरवत्त्व के विषय तथा बीबीस ठाखा के वृत्तिवत्त्व के पठनार्थ विषय मित्रात व हाप
प्रतिनिधि बरवासी गई । प्रति संवत् टीका बहिन है ।

१९५ बीबीस ठाखा बर्षा — । वष सं ११ । या १२५२५ इह । या शत्रु । विषय-मित्रात ।
१ वत्स । से वत्स \times । पूर्ण । वे सं ४१ । अ मन्थार ।

विशेष-मन्थुल के रूप का मन्थ 'बीबीस ठाखा' इत्यादि भी लिखा है ।

१९६ प्रति सं । वष सं २ । से वत्स सं १२५ । वे सं १५० । अ मन्थार ।

१६० प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति स० ४ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० २०३२ । अ भण्डार ।

१६१ प्रति स० ५ । पत्र स० ४० । ले० काल × । वे० स० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१६३ प्रति स० ६ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० १६१ । क भण्डार ।

१६४ प्रति स० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२ । क भण्डार ।

१६५ प्रति स० ८ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १६७६ । वे० स० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—बेनीराम की पुस्तक में प्रतिलिपि की गई ।

१६६ द्विध्यालीसठाणाचर्चा । पत्र स० १० । आ० ६१×४१ इंच । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धांत । २० काल—× । ले० काल स० १८२० आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० स० २६८ । ख भण्डार ।

१६७ जम्बूद्वीपकत । पत्र स० ३२ । आ० १२१×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १८२८ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १८५ । अ भण्डार ।

१६८ जीवस्वरूप वर्णन । पत्र स० १४ । आ० ६×४ इंच । भाषा प्राकृत । २० काल × ।

२० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पत्रों में तत्त्व वर्णन भी है । गोमटसर में में लिया गया है ।

१६९ जीवाचारविचार । पत्र स० ५ । आ० ६×४ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३ । अ भण्डार ।

२०० प्रति स० ७ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १८१८ मगसिर बुदी १० । वे० स० २०५ ।

क भण्डार ।

२०१ जीवसमासटिप्पण । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३५ । अ भण्डार ।

२०२ जीवसमासभाषा । पत्र स० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १८१८ । वे० स० १६७१ । ट भण्डार ।

२०३ जीवाजीवविचार । पत्र स० ६० । आ० १२×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । वे० स० २००४ । ट भण्डार ।

२४. जन मनुष्यार मारीयह नामक पत्र का मासुपर—बापा कुशीबन्ध । वय न २२ ।
मा १९७५ दश । माता हिन्दी । विषय—बच्चा जमाना । १ वय न १९४६ । मे वयन × । पूर्ण
के ल २५ । क मन्तर ।

२०२. प्रमि स ३ । वय न २२ । मे वयन × । के ल २२५ । क मन्तर ।

२६ ठाकुरासुभ—। वय न ४ । मा १९७५ दश । माता जमाना । विषय—माता ।
१ वयन × । मे वयन × । पूर्ण । के ल १९२ । क मन्तर ।

३ तन्वहीसुभ—य फलाकाज मन्दी । वय न २ । मा १९७५ दश । माता हिन्दी ।
विषय—विद्यालय । १ वय × । मे वयन न १९४५ । पूर्ण । के ल २१ । क मन्तर ।

विषय—यह कथ तन्वहीराजबालिक की हिन्दी बच टीका है । यह १ अध्यायों में विभाज है । इन प्रमि
के ४ अध्याय तक है ।

२०५. प्रमि स ७ । वय न ३५६ । मे वयन न १९४२ । के ल २०२ । क मन्तर ।

विषय—इस अध्याय में १ व अध्याय तक की हिन्दी टीका है । तथा अध्याय सुगुर्ल है ।

६. प्रमि स ६ । वयन ४२ । १ वयन न १९४४ । मे वयन × । के ल २४ । क मन्तर
विषय—राजबालिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है ।

२१ प्रमि स ४ । वयन ४२ । मे वयन १९४६ । मे वयन × । पूर्ण । के ल २४१ । क मन्तर ।

विषय—टीका तथा टीका अध्याय है । टीका अध्याय के २ व अध्याय की है । ४७ अध्याय पर्वों के
सुनीयन है ।

२११ प्रमि स २ । वय न १७ मे ४ । मे वयन × । के ल १४२ । क मन्तर ।

विषय—२ १ ७ २ १ में अध्याय की माता टीका है ।

२१२ तन्वहीसुभ—। वय ल ११ । मा १९७५ दश । माता हिन्दी बच । विषय—विद्यालय ।
१ वयन × । मे वयन × । पूर्ण । के ल २१४ । क मन्तर ।

२१३ तन्वहीसुभ—। वयन ४२ । मा १९७५ दश । माता जमाना । विषय—विद्यालय
१ वयन × । मे वयन × । पूर्ण । के ल ७६ । क मन्तर ।

विषय—माता के विषय के वक्तव्य हिन्दी नहीं की ।

२१४ तन्वहीसुभ—। वय न १ । मा १९७५ दश । माता जमाना । विषय—विद्यालय ।
१ वयन × । मे वयन ल १९१ नील सुदी ४ । पूर्ण । के ल २१२ ।

विषय—विद्यालय में अतिरिक्त कथानी की ।

२१५ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २६६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७ तत्त्वमारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ४४ । आ० १०३ × ५ इञ्च । भाषा हिन्दी ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल स० १६३१ वैशाख बुदी ७ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २६७ । क भण्डार ।

विशेष—देवमेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० २६८ । क भण्डार ।

२१९ तत्त्वार्थदर्पण । पत्र स० ३६ । आ० १३३ × १३ इञ्च । भाषा मसूदा । विषय—सिद्धान्त ।

१ काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १२६ । च भण्डार ।

विशेष—वेदत्रय प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२० तत्त्वार्थवाध—पत्र स० १८ । आ० १०३ × १३ इञ्च । भाषा मसूदा । विषय—सिद्धान्त । १०

काल × । ले० काल × । वे० स० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ में श्री देवमेन धृत आलारपद्धति दी हुई है ।

२२१ तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र स० १४४ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

सिद्धान्त । १० काल स० १८७६ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२ तत्त्वार्थबोध । पत्र स० ३६ । आ० १०३ × ५ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ५६६ । च भण्डार ।

२२३ तत्त्वार्थदर्पण । पत्र स० १० । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भाषा का भेंट किया हुआ है ।

२२४ तत्त्वार्थबोधिनीटीका—। पत्र स० ४२ । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल स० १६५२ प्रथम वैशाख सुवि ३ । पूर्णा । वे० स० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ गोमतीलालजी आमा का है । क्लोव स० २२५ ।

२२५ तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १०६ । आ० १०३ × ५ इञ्च । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल स० १६७३ आसोज बुदी ५ । वे० स० ७२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । अ० हर्देव के लिए ग्रन्थ बनाया था । संगही कंवर ने

जाम्नी गंगाराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६ प्रति स० २ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १६३३ आषाढ बुदी १० । वे० स० १३७ ।

घ भण्डार ।

२४ अम महाभारत आर्षावृद्ध सामक पत्र का अनुसूचक—भावा हुलीचन्द्र । पत्र नं ११ ।
या १२५७६ दण्ड । भावा हिन्दी । विषय—वर्णा समाचार । १ काल नं १२४६ । नै काल \times । पूर्ण
नै नं २ । क मन्थार ।

२५ प्रति स २ । पत्र नं २६ । नै काल \times । नै नं २१७ । क मन्थार ।

२६ ठासोमसुत्र— । पत्र नं ४ । या १ $\frac{1}{2}$ \times ४ दण्ड । भावा अनुसूचक । विषय—वार्ता ।
१ काल \times । नै काल । पूर्ण । नै नं १२२ । क मन्थार ।

२७ तत्त्वकौस्तुभ—य पलात्ताक मन्थी । पत्र नं ७२७ । या १२५७६ दण्ड । भावा हिन्दी ।
विषय—निद्रावृत्त । १ काल \times । नै काल नं १२४६ । पूर्ण । नै नं २१ । क मन्थार ।

विशेष—य काल लखनऊ राजपत्रिका की हिन्दी मन्थ दीया है । यह १ मन्थालो नै विषय है । इस प्रति
नै ४ मन्थाल तक है ।

२८ प्रति स ७ । पत्र नं ४४६ । नै काल नं १२४६ । नै नं २७२ । क मन्थार ।

विशेष—य मन्थाल नै २ नै मन्थाल तक की हिन्दी दीया है । भावा मन्थाल अनुसूचक है ।

२९ प्रति स ३ । पत्र नं ४२ । १ काल नं १२४६ । नै काल \times । नै नं २४ । क मन्थार
विशेष—य मन्थाल के मन्थालावृत्त की हिन्दी दीया है ।

३० प्रति स ४ । पत्र नं ४२ नै ७७६ । नै काल \times । पूर्ण । नै नं २४१ । क मन्थार ।
विशेष—टीलरा तथा मोटा मन्थाल है । टीलरे मन्थाल के २ पत्र लखन बीर है । ४७ काल वनी नै
मुनीचन्द्र है ।

३१ प्रति स ३ । पत्र नं १ क नै ४७ । नै काल \times । नै नं २४१ । क मन्थार ।

विशेष—२ १, ७ २ १ नै मन्थाल की भावा दीया है ।

३२ तत्त्वकौस्तुभ— । पत्र नं ३१ । या ११५ \times १ $\frac{1}{2}$ भावा हिन्दी मन्थ । विषय—निद्रावृत्त ।
१ काल \times । नै काल \times । पूर्ण । नै नं २१४ । क मन्थार ।

३३ तत्त्वकौस्तुभ— । पत्र नं ४ । या १ $\frac{1}{2}$ \times ४ दण्ड । भावा अनुसूचक । विषय—निद्रावृत्त
१ काल \times । नै काल \times । पूर्ण । नै नं १ । क मन्थार ।

विशेष—भावा नै विषय के वटमार्ग मिथी गई थी ।

३४ तत्त्वकौस्तुभ— । पत्र नं ५ । या ११ \times ३ दण्ड । भावा अनुसूचक । विषय—निद्रावृत्त ।
१ काल \times । नै काल नं १७१२ बीर मुनी ४ । पूर्ण । नै नं २१२ ।

विशेष—य निद्रावृत्त नै प्रतिनिधि वरवानी थी ।

२१५ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २६६ । क भण्डार ।

विशेष-हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७ तत्त्वभाषाभाषा-पन्नालाल चौधरी । पत्र १० ४४ । आ० १०५/५ इच्छ । भाषा हिन्दी ।

विषय-सिद्धान्त । १० काल स० १६३१ वैशाख बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । १० स० २६७ । छ भण्डार ।

विशेष-दशम कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० २६८ । क भण्डार ।

२१९ तत्त्वार्थदर्पण । पत्र स० ३६ । आ० १३५/५ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १२६ । च भण्डार ।

विशेष-यवन प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२० तत्त्वार्थबोध—पत्र स० १८ । आ० १०५/५ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । १०

काल × । ले० काल × । वे० स० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष-पत्र २ व श्री दशम कृत आलापकालिनी की हुई है ।

२२१ तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र स० १४५ । आ० ११/५ इच्छ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-

सिद्धान्त । १० काल स० १८७६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२ तत्त्वार्थबोध । पत्र स० ३६ । आ० १०५/५ इच्छ । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ५६६ । च भण्डार ।

२२३ तत्त्वार्थदर्पण । पत्र स० १० । आ० १३/५ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष-प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भाषा का भेट किया हुआ है ।

२२४ तत्त्वार्थबोधिनीटीका—। पत्र स० ४२ । आ० १३/५ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल स० १६१० प्रथम वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष-यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भासा का है । श्लोक स० २२५ ।

२२५ तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १०६ । आ० १०५/५ इच्छ । भाषा संस्कृत ।

विषय-सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल स० १६७३ आमोज बुदी १ । वे० स० ७२ । अ भण्डार ।

विशेष-प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । श्री हरदेव के लिए ग्रन्थ बनाया था । मगही कँवर ने चोभी गगाराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६ प्रति स० २ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १६२३ आपाद बुदी १० । वे० स० १३७ । अ भण्डार ।

२४ जन सदाचार मार्गदर्शक मासिक पत्र का प्रमुत्तर—बाबा बुद्धीबन्ध । पृष्ठ नं २२ ।
 भा १२×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा तथा उपाल । १ काल नं १२४१ । नै काल × । पूर्ण ।
 वै तं २ । क नम्बर ।

२०३. प्रति स २ । पृष्ठ नं २२ । नै काल × । वै तं २१७ । क नम्बर ।

२६ ठाण्णिसुख— । पृष्ठ नं ४ । भा १ $\frac{१}{२}$ × $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—वाचन ।
 १ काल × । नै काल । प्रमुत्तर । वै तं १२२ । क नम्बर ।

७७. तत्त्वकौस्तुभ—य पत्राभास सची । पृष्ठ नं ७२७ । भा १२×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा हिन्दी ।
 विषय—विज्ञान । १ काल × । नै काल नं १२४४ । पूर्ण । वै तं २१ । क नम्बर ।

विज्ञान—य काल उत्तारार्थराजशासिक की हिन्दी पत्र टीका है । यह १ प्रख्यातों में विभक्त है । इन प्रति
 में ४ प्रख्यात एक है ।

२०४ प्रति स १ । पृष्ठ नं २४६ । नै काल नं १२४७ । वै तं २७९ । क नम्बर ।

विज्ञान—२४ प्रख्यात में १ के प्रख्यात एक की हिन्दी टीका है । तथा प्रख्यात प्रमुत्तर है ।

२. प्रति स ३ । पृष्ठ नं ४२ । १ काल नं १२४४ । नै काल × । वै तं २४ । क नम्बर ।
 विज्ञान—राजशासिक के प्रख्यात भाषा की हिन्दी टीका है ।

२१ प्रति स ४ । पृष्ठ नं ४२ नै काल × । प्रमुत्तर । वै तं २४१ । क नम्बर ।
 विज्ञान—टीका तथा टीका प्रख्यात है । टीका प्रख्यात के २ पृष्ठ प्रकाश कीर है । ४७ प्रकाश प्रकाश में
 मुनीय है ।

२११ प्रति स ५ । पृष्ठ नं १७ नै ८ । नै काल × । वै तं २४२ । क नम्बर ।

विज्ञान—२ ६ २ १ में प्रख्यात की भाषा टीका है ।

२१२. तत्त्वकौस्तुभ— । पृष्ठ नं ११ । भा ११ × $\frac{१}{२}$ भाषा हिन्दी पत्र । विषय—विज्ञान ।
 १ काल × । नै काल × । पूर्ण । वै तं २१४ । क नम्बर ।

२१३. तत्त्वकौस्तुभ— । पृष्ठ नं ४ । भा १ × $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—विज्ञान ।
 १ काल × । नै काल × । पूर्ण । वै तं ७६ । क नम्बर ।

विज्ञान—भाषा के विज्ञान के प्रकाश में लिखी गई थी ।

२१४. तत्त्वकौस्तुभ— । पृष्ठ नं १ । भा ११ × $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—विज्ञान ।
 १ काल × । नै काल नं १७११ टीका बुद्धी । पूर्ण । वै तं २१२ ।

विज्ञान—विज्ञान के विज्ञान में प्रकाश में प्रकाश

२१४ प्रति स० २ । पद्य स० १३ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० २६६ । क भण्डार ।

विषय—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पद्य नहीं है ।

२१६ प्रति स० ३ । पद्य स० ४ । ले० काल × । वे० स० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७ नन्वसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पद्य स० ४४ । आ० १०५ × ५ इच्छ । भाषा हिन्दी ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल स० १६३१ वैशाख बुदी ७ । वे० काल × । पूर्णा । वे० स० २६७ । क भण्डार ।

विषय—देवमेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८ प्रति स० २ । पद्य स० ३६ । ले० काल × । वे० स० २६८ । क भण्डार ।

२१९. तत्त्वार्थदर्पण । पद्य स० ३६ । आ० १३५ × १८ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० वाद / । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १२६ । च भण्डार ।

विषय—वचन प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२० तत्त्वार्थबोध—पद्य स० १८ । आ० १०५ × १८ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १०

वात × । ले० काल / । वे० स० १४७ । ज भण्डार ।

विषय—पद्य ६ म श्री देवमेन कृत आलापवृत्ति की हुई है ।

२२१ तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पद्य स० १४४ । आ० ११ × ५ इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

सिद्धान्त । १० काल स० १८७६ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२ तत्त्वार्थबोध । पद्य स० ३६ । आ० १०५ × ५ इच्छ । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ५६६ । च भण्डार ।

२२३ तत्त्वार्थदर्पण । पद्य स० १० । आ० १३ × ५ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३५ । ग भण्डार ।

विषय—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । अन्य गोमतीलालजी भोपा का नेट किया हुआ है ।

२२४ तत्त्वार्थबोधिनीटीका—। पद्य स० ४२ । आ० १३ × ५ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

१० काल × । ले० काल स० १६५२ प्रथम वैशाख सुदि ३ । पूर्णा । वे० स० ३६ । ग भण्डार ।

विषय—यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भोपा का है । श्लोक स० २०५ ।

२२५ तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पद्य स० १०८ । आ० १०५ × ५ इच्छ । भाषा संस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल स० १६७३ आश्विन बुदी १ । वे० स० ७२ । च भण्डार ।

विषय—प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । श्री हरदेव के लिए ग्रन्थ बनाया था । मगही खंवर ने

जोगी गगाराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६ प्रति स० २ । पद्य स० ११७ । ले० काल स० १६३३ आषाढ बुदी १० । वे० स० १३७ ।

घ भण्डार ।

२३६ प्रति स० २ । पत्र स० ४४ । ले० काल × । वे० स० २३६ । क भण्डार ।

२४० प्रति स० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० २४२ । ऋ भण्डार ।

२४१ प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल × । वे० स० ६५ । ख भण्डार ।

२४२ प्रति स० ५ । पत्र स० ८२ । ले० काल × । वे० स० ६६ । छ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक दीवान ज्ञानचन्द की है ।

२४३ प्रति स० ६ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० १३२ । झ भण्डार ।

२४४ तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० ६१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० स० २८४ । अ भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति ने 'तत्त्वार्थसारदीपक' में जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन किया है ।

रचना १० अध्यायों में विभक्त है । यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नहीं है जैसा कि इसके नाम में प्रकट होता है ।

२४५ प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २८० । क भण्डार ।

२४६ प्रति स० ३ । पत्र स० ८६ । ले० काल स० १८६४ आसोन मुदी २ । वे० स० २४१ । क

भण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिनिधि की ।

२४७ तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० २८६ । आ० १२½×५ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । १० काल स० १६३७ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६६ ।

विशेष—जिन २ ग्रन्थों की पन्नालाल ने भाषा लिखी है सब की सूची दी हुई है ।

२४८ प्रति स० २ । पत्र स० २८७ । ले० काल × । वे० स० २४३ । क भण्डार ।

२४९ तत्त्वार्थ सूत्र—उमास्वाति । पत्र स० २६ । आ० ७×३½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल स० १४५८ आसोन मुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २१६६ (क) अ भण्डार ।

विशेष—लाल पत्र हैं जिन पर श्वेत (रत्न) अक्षर हैं । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है । तत्त्वार्थ सूत्र
ममाति पर भक्तार स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है ।

प्रशस्ति—स० १४५८ आसोन मुदी ६ ।

२५० प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६६६ । वे० स० २२०० अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । पत्रों के किनारों पर सुन्दर वेलें हैं । प्रति दर्शनीय एवं प्रदर्शनी में रखने
योग्य है । नवान प्रति है । स० १६६६ में जौहरीलालजी नदलालजी धी वालों ने अतोद्यापन में प्रति लिखा कर चढ़ाई ।

२५१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल × । वे० स० २२०२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताहपत्रीय एवं प्रदर्शनी योग्य है ।

२५२. प्रति स ४। पत्र सं ११। नि यत्न \times । नि सं १ ३३। अ मन्त्रार।

२५३. प्रति स ५। पत्र सं १। नि यत्न सं १ ५५। नि सं २४६। अ मन्त्रार।

२५४. प्रति स ६। पत्र सं १। नि यत्न सं १ ६६। नि सं ३३। अ मन्त्रार।

२५५. प्रति स ७। पत्र सं १। नि यत्न \times । अमूर्त। नि सं ३४। अ मन्त्रार।

२५६. प्रति स ८। पत्र सं १३। नि यत्न सं १ ३। नि सं ३६९। अ मन्त्रार।

विशेष—हिन्दी में सर्व विद्या हुआ है।

२५७. प्रति सं ९। पत्र सं ११। नि यत्न \times । नि सं १ ७२। अ मन्त्रार।

२५८. प्रति सं १। पत्र सं ३२। नि यत्न \times । नि सं १ ३। अ मन्त्रार।

विशेष—हिन्दी उच्चा टीका कहित है। पं. धर्मोदय ने मन्त्रार में प्रतिनिधि की।

२५९. प्रति स ११। पत्र सं १४। नि यत्न \times । नि सं २३। अ मन्त्रार।

२६०. प्रति स १२। पत्र सं २५। नि यत्न \times । अमूर्त। नि सं ७७२। अ मन्त्रार।

विशेष—पत्र १७ के ९ तक गड़ी है।

२६१. प्रति स १३। पत्र सं ३६। नि यत्न \times । अमूर्त। नि सं १। अ मन्त्रार।

२६२. प्रति स १४। पत्र सं ३६। नि यत्न सं १ ६२। नि सं ४७। अ मन्त्रार।

विशेष—संस्कृत टीका लक्षित।

२६३. प्रति सं १५। पत्र सं ३। नि यत्न \times । नि सं ४५। अ मन्त्रार।

२६४. प्रति स १६। पत्र सं २२। नि यत्न सं १ ९। नि सं १६९। अ मन्त्रार।

विशेष—संस्कृत हिन्दी सर्व विद्या हुआ है।

२६५. प्रति स १७। पत्र सं २४। नि यत्न \times । नि सं २। अ मन्त्रार।

२६६. प्रति स १८। पत्र सं ११। नि २२। नि यत्न \times । अमूर्त। नि सं १३३४। अ मन्त्रार।

२६७. प्रति सं १९। पत्र सं १६। नि यत्न सं १ ६। नि सं १९४४। अ मन्त्रार।

२६८. प्रति सं २०। पत्र सं २४। नि यत्न \times । नि सं १९७२। अ मन्त्रार।

२६९. प्रति स २१। पत्र सं १। नि यत्न \times । नि सं १३३१। अ मन्त्रार।

२७०. प्रति स २२। पत्र सं ३। नि यत्न \times । नि सं २१४३। अ मन्त्रार।

२७१. प्रति स २३। पत्र सं १२। नि यत्न \times । नि सं २१३६। अ मन्त्रार।

७७. प्रति स २४। पत्र सं ३। नि यत्न सं १६४६। अमूर्त। नि सं २ ६।

अ मन्त्रार

विशेष—मन्त्रार टिप्पण लक्षित है। मन्त्रार विद्यामन्त्रा में प्रतिनिधि की।

२७३ प्रति स० २४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६ । वे० स० २००७ । अ भण्डार ।

२७४ प्रति स० २६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७५ प्रति स० २७ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० स० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे है । शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदाम शैलतगम ने जैसिहपुरा मे इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

२७६. प्रति स० २८ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६३६ भाद्रपद सुदी ४ । वे० स० २५८ । क भण्डार ।

२७७ प्रति स० २९ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० २५९ । क भण्डार ।

२७८ प्रति स० ३० । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १६४५ वैशाख सुदी ७ । वे० स० २५० । क भण्डार ।

२७९. प्रति स० ३१ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० २५७ । क भण्डार ।

२८० प्रति स० ३२ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महवा निवासी प० नानगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१ प्रति स० ३३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२ प्रति स० ३४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३९ । ग भण्डार ।

२८३ प्रति स० ३५ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८६१ माघ बुदी ४ । वे० स० ४० । ग भण्डार ।

२८४ प्रति स० ३६ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ३३ । घ भण्डार ।

२८५ प्रति स० ३७ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । वे० स० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पण टीका सहित है ।

२८६ प्रति स० ३८ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३५ । घ भण्डार ।

२८७ प्रति स० ३९ । पत्र स० ५८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २४६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८८ प्रति स० ४० । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० २४७ । छ भण्डार ।

२८९ प्रति स० ४१ । पत्र स० ८ मे २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २४८ । छ भण्डार ।

२९०. प्रति स० ४२ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० २४९ । छ भण्डार ।

२९१ प्रति स० ४३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० २५० । छ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी है ।

२३८ प्रति स ४४। पच सं २५। ले गल सं १५५१। के सं २३१। क मण्डार।

२३९ प्रति स ४५। पच सं २६। ले गल ×। के सं २३२। क मण्डार।

विशेष—गुणो के ऊपर हिन्दी में वर्ष दिया हुआ है।

२४० प्रति स ४६। पच सं २७। ले गल ×। के सं २३३। क मण्डार।

२४१ प्रति स ४७। पच सं २८। ले गल ×। के सं २३४। क मण्डार।

२४२ प्रति स ४८। पच सं २९। ले गल सं २३९१ पर्यन्त गुणी ४। के सं २३५। क मण्डार।

२४३ प्रति स ४९। पच सं ३०। ले गल ×। के सं २३६। क मण्डार।

२४४ प्रति स ५०। पच सं ३१। ले गल ×। के सं २३७। क मण्डार।

२४५ प्रति स ५१। पच सं ३२। ले गल ×। गुणी। के सं २३८। क मण्डार।

२४६ प्रति स ५२। पच सं ३३। ले गल ×। गुणी। के सं २३९। क मण्डार।

२४७ प्रति स ५३। पच सं ३४। ले गल ×। गुणी। के सं २४०। क मण्डार।

२४८ प्रति स ५४। पच सं ३५। ले गल ×। के सं २४१। क मण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी वर्ष लक्षित है।

२४९ प्रति स ५५। पच सं ३६। ले गल ×। गुणी। के सं २४२। क मण्डार।

२५० प्रति स ५६। पच सं ३७। ले गल ×। गुणी। के सं २४३। क मण्डार।

२५१ प्रति स ५७। पच सं ३८। ले गल ×। के सं २४४। क मण्डार।

विशेष—केवल प्रथम सम्मान ही है। हिन्दी वर्ष लक्षित है।

२५२ प्रति स ५८। पच सं ३९। ले गल ×। के सं २४५। क मण्डार।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी वर्ष भी दिया हुआ है।

२५३ प्रति स ५९। पच सं ४०। ले गल ×। गुणी। के सं २४६। क मण्डार।

२५४ प्रति स ६०। पच सं ४१। ले गल सं २ ५ गुणित गुणी १२। गुणी। के सं २४७। क मण्डार।

विशेष—गुरलीकर लघुगण जोवनकर गणो के प्रतिनिधि भी।

२५५ प्रति स ६१। पच सं ४२। ले गल सं २४२९ गुणी १२। के सं २४८। क मण्डार।

२५६ प्रति स ६२। पच सं ४३। ले गल सं २ ७ गुणित गुणी १२। के सं २४९। क मण्डार।

२५७ प्रति स ६३। पच सं ४४। ले गल सं २४३८। के सं २५०। क मण्डार।

विशेष—आहुताला केही के प्रतिनिधि परवानी।

२५८ प्रति स ६४। पच सं ४५। ले गल ×। के सं २५१। क मण्डार।

२५९ प्रति स ६५। पच सं ४६। ले गल ×। गुणी। के सं २५२। क मण्डार।

२६० प्रति स ६६। पच सं ४७। ले गल ×। के सं २५३। क मण्डार।

२६१ प्रति स ६७। पच सं ४८। ले गल ×। गुणी। के सं २५४। क मण्डार।

विशेष—टक्का टीका सहित । १ ला पत्र नहीं है ।

३१६ प्रति स० ६८ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६६३ । वे० स० १३८ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

३१७ प्रति स० ६६ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६६३ । वे० स० १७० । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

३१८ प्रति स० ७० । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रा में तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम अधिवाक्य हैं । इसमें आगे भक्तप्रसाद नाम है ।

३१९ प्रति स० ७१ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार ।

३२० प्रति स० ७२ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० ३८ । ज भण्डार ।

३२१ प्रति स० ७३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६२२ फागुन सुदी १५ । वे० स० ८८ । ज भण्डार ।

३२२ प्रति स० ७४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० १८२ । झ भण्डार ।

३२३ प्रति स० ७५ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० ३०४ । झ भण्डार ।

३२४ प्रति स० ७६ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० २७१ । झ भण्डार ।

विशेष—पद्यालोक के पठनार्थ लिखा गया था ।

३३५ प्रति स० ७७ । पत्र स० २० । ले० काल स० १६२६ चैत सुदी १४ । वे० स० २७३ । झ भण्डार ।

विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३३६ प्रति स० ७८ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ४४८ । झ भण्डार ।

३३७ प्रति स० ७९ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । वे० स० ३८ ।

विशेष—प्रति टक्का टीका सहित है ।

३३८ प्रति स० ८० । पत्र स० २७ । ले० काल × । वे० स० १६१५ ट भण्डार ।

३३९ प्रति स० ८१ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० १६१६ । ट भण्डार ।

३४० प्रति स० ८२ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० १६३१ । ट भण्डार ।

विशेष—हीरालाल विदायकथा ने गोस्वलय पाठ्या से प्रतिलिपि करवायी । पुस्तक लिखमोचन्द्र नावदा समाधी की है ।

३४१ प्रति स० ८३ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १६२१ । वे० स० १६८२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टक्का टीका सहित है । ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर आगमन के समय सवाई रामसिंह जी के शासनकाल में जीवणलाल काला ने जयपुर में हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

३४२ प्रति स० ८४ । पत्र स० ३ से १८ । वे० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६६ ।

विशेष—चतुर्थ अष्टाव मे ॥ इसके आगे बलिबुधबुधा, चरमबालबुधा, क्षेत्रबालबुधा, क्षेत्रबालाष्टीय तथा विद्यामसिबुधा ॥

३४२ तत्प्राप्तसूत्र हीका बुधसागर। पत्र तं १२२। या १२०२ दृष्ट। बालसागर। विषय-निर्वाण। र. बाल-०। के बाल-तं १०११ बालबुधबुधा। के तं १२। पूर्ण। क. बालार।

विशेष—भी बुधसागर बुधि १६ की कलाभी के संस्कृत के अन्वये विद्या है। इनमें १६ के भी प्रोक्त है या भी एका भी जिसमें टीकाएँ तथा जोड़ी २ कलाएँ भी हैं। भी बुधसागर के बुध या मान विद्याएँ या जो बालारक मन्त्रों के सक्रिय एवं ईश्वरकीर्ति के विषय है।

३४४ प्रति सं २। पत्र तं १२२। के बाल-तं १०१६ पावन बुधि १४। पूर्ण। के तं २२२। क. बालार।

विशेष—३२२ के आगे के पत्र नहीं हैं।

३४२ प्रति सं ३। पत्र तं १२२। के बाल-०। के तं १२२। क. बालार।

३४६ प्रति सं ४। पत्र तं १२२। के बाल-०। के तं १२। क. बालार।

३४८ तत्प्राप्तसूत्र बुधि—सिद्धसेन गच्छि। पत्र तं १२४। या १२०२ दृष्ट। बाल-गुण। विषय-निर्वाण। र. बाल-०। के बाल-०। बुधुर्त्त। के तं १२२। क. बालार।

विशेष—टीका अष्टाव तक ही है। आगे पत्र नहीं हैं। तत्प्राप्त सूत्र की विस्तृत टीका है।

३४८ तत्प्राप्तसूत्र बुधि—। पत्र तं १२४। या १२०२ दृष्ट। बाल-कंसुत। विषय-निर्वाण। र. बाल-०। के बाल-तं १२२१ बालबुधबुधा। के तं १२। क. बालार।

विशेष—बालबुधा के भी कलाभीति में आगे कलाएँ बुध के वा से प्रतिनिधि करवायीं।

अवधि—चतुर् १२२१ वर्षे कालुस वागे दृष्टा वके पंचमी तिथी एविपारे की बालबुधा वरी। न भी २ की भी की पंचमीति विषय आगे व कलाभीति निवाचित आत्माके पञ्जीया तू बुध के वा से विधि।

३४९ प्रति सं ५। पत्र तं १२४। के बाल-तं १२२६ कालुस बुधि १२। टीका अष्टाव तक पूर्ण। के तं १२४। क. बालार।

विशेष—बाला वस्तु आगे में प्रतिनिधि की भी। टीका विस्तृत है।

३४९ प्रति सं ६। पत्र तं १२४। के बाल-०। के तं १२२। क. बालार।

विशेष—टीका विस्तृत है।

३४९ प्रति सं ७। पत्र तं १२४। के बाल-तं १०१६। के तं १२४। क. बालार।

३४९ प्रति सं ८। पत्र तं १२४। के बाल-०। के तं १२२। क. बालार।

३४९ प्रति सं ९। पत्र तं १२४। के बाल-०। के तं १०१६। क. बालार।

३४४ तत्प्राप्तसूत्र आत्मा-व सप्तसूत्र कासकीवाक। पत्र तं १२२। या १२०२ दृष्ट। बाल-द्विती पत्र। विषय-निर्वाण। र. बाल-तं १२२ कालुस बुधि १। के बाल-०। पूर्ण। के तं २२२। क. बालार।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य में मुन्दर टीका है ।

३५५ प्रति स० ७ । पत्र स० १५१ । ले० काल स० १६४३ श्रावण सुदी १५ । वै० स० २४६ ।

क भण्डार ।

३५६ प्रति स० ३ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १६४० मगसिर बुदी १३ । वै० स० २४७ ।

क भण्डार ।

३५७ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६१५ श्रावण सुदी ६ । वै० स० ६६ । अपूर्ण ।

ख भण्डार ।

३५८ प्रति स० ५ । पत्र स० १०० । ले० काल \times । अपूर्ण । वै० स० ४२ ।

विशेष—पृष्ठ ६० तक प्रथम अध्याय की टीका है ।

३५९ प्रति स० ६ । पत्र स० २८३ । ले० काल स० १६३५ माह सुदी ८ । वै० स० ३३ । छ भण्डार

३६० प्रति स० ७ । पत्र स० ६३ । ले० काल स० १६६६ । वै० स० २७० । छ भण्डार ।

३६१ प्रति स० ८ । पत्र स० १०२ । ले० काल \times । वै० स० २७१ । छ भण्डार ।

३६२ प्रति स० ९ । पत्र स० १२८ । ले० काल स० १६४० चैत्र बुदी ८ । वै० स० २७२ । छ भण्डार ।

विशेष—म्होरीलालजी खिन्दूका न प्रतिलिपि करवाई ।

३६३ प्रति स० १० । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १६३६ । वै० स० ५७३ । च भण्डार ।

विशेष—भागीलाल श्यामाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया ।

३६४ प्रति स० ११ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १६५५ । वै० स० १८५ । छ भण्डार ।

विशेष—भानन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३६५ प्रति स० १२ । पत्र स० ७१ । ले० काल १६१५ आषाढ सुदी ६ वै० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक चढ़ाई ।

३६६ तत्त्वार्थ सूत्र टीका—प० जयचन्द छावड़ा । पत्र स० ११८ । आ० १३ \times ७ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । २० काल स० १८५६ । ले० काल \times । पूर्ण । वै० सं० २५१ । क भण्डार ।

३६७ प्रति स० ७ । पत्र स० १६७ । ले० काल स० १८४६ । वै० स० ५७२ । च भण्डार ।

३६८ तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पांडे जयवत । पत्र स० ६६ । आ० १३ \times ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल \times । ले० काल स० १८४६ । वै० स० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है —

केइक जीव अघोर तप करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि ।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालाबोधि टीका पांडे जयवत कृत संपूर्ण समाप्ता । श्री सवाई के कहने में वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की ।

३६६. तत्पार्श्वसूत्र टीका—आ० कनककीर्ति । पत्र सं १४२ । या १२४×१३ इंच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । १ कल \times । ने कल \times । मयूर । वे सं २१२ । छ मन्थार ।

विशेष—उत्पार्श्वसूत्र की भुजसमरूपी टीका के अलावा १२ हिन्दी टीका लिखी गयी है । १४२ से जाने पत्र गयी है ।

३६७. प्रति सं ७ । पत्र सं १२ । ने कल \times । वे सं १३ । छ मन्थार ।

३६८. प्रति सं ३ । पत्र सं १२१ । ने कल सं १७३ । वे सं २७१ । छ मन्थार ।
विशेष—मल्लचोट विद्यापीठ ईश्वरलाल शर्मा ने प्रतिनिधि की की ।

३६९. प्रति सं ४ । पत्र सं १२२ । ने कल \times । वे सं ४४६ । छ मन्थार ।

३७०. प्रति सं २ । पत्र सं १३ । ने कल सं १७११ । वे सं १२१ । छ मन्थार ।

विशेष—बैराव शर्मा ने मल्ला ने ईश्वरदा ने विद्यनारायण बोधी से प्रतिनिधि करवायी ।

३७४. तत्पार्श्वसूत्र टीका—य राकमय्या । पत्र सं ३ से ४४ । या १२४×२ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । १ कल \times । ने कल \times । मयूर । वे सं २१२ । छ मन्थार ।

३७५. तत्पार्श्वसूत्र भाषा—बाटीलाल जीसवाल । पत्र सं २१ । या १३×१३ इंच । भाषा हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । १ कल सं १२३२ मल्लोच मुदी । ने कल सं १२३२ मल्लोच मुदी १ । मयूर । वे सं २४४ । छ मन्थार ।

विशेष—बनुरामदास ने प्रतिनिधि की । बाटीलाल के पिता या भाव बाटीलाल या बन्धु मल्लोच बिना दे मयूर काल के पत्रे जाने के । टीका हिन्दी पद्य में है की सम्पन्न लगत है ।

३७६. प्रति सं २ । पत्र सं २ । ने कल \times । वे सं २६७ । छ मन्थार ।

३७७. प्रति सं ३ । पत्र सं १७ । ने कल \times । वे सं १६ । छ मन्थार ।

३७८. तत्पार्श्वसूत्र भाषा—सिद्धरचन्द्र । पत्र सं २७ । या १३×२७ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—सिद्धान्त । १ कल सं १९ । ने कल सं १२३३ । मयूर । वे सं २४४ । छ मन्थार ।

३७९. तत्पार्श्वसूत्र भाषा— । पत्र सं २४ । या १२×२७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।
१ कल \times । ने कल \times । मयूर । वे सं ४१२ ।

३८०. प्रति सं १ । पत्र सं २६४६ । ने कल सं १३ । वे सं २३३३ मुदी १३ । मयूर । वे सं ६७ । छ मन्थार ।

३८१. प्रति सं ३ । पत्र सं १६ । ने कल \times । वे सं ६ । छ मन्थार ।

विशेष—सिद्धीय पन्नाल तक है ।

३८२. प्रति सं ४ । पत्र सं १९ । ने कल सं १२४६ मयूर मुदी १४ । वे सं १२ । छ मन्थार ।

३८३. प्रति सं २ । पत्र सं १२ । ने कल \times । वे सं ४१ । छ मन्थार ।

३८४. प्रति सं ६ । पत्र सं ४२ से १३ । ने कल सं \times । मयूर । वे सं १६४ । छ मन्थार ।

३८५ प्रति स० ७ । पत्र स० ८७ । २० काल- \times । ले० काल स० १६१७ । वे० स० ५७१ ।

च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित ।

३८६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५३ । ले० काल \times । वे० स० ५७४ । च भण्डार ।

विशेष—प० सदामुखजी की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है ।

३८७ प्रति स० ६ । पत्र स० ३२ । ले० काल \times । वे० स० ५७५ । च भण्डार ।

३८८ प्रति स० १० । पत्र स० २३ । ले० काल \times । वे० स० १८५ । छ भण्डार ।

३८९ तत्त्वार्थसूत्र भाषा । पत्र स० ३३ । ग्रा० १० \times ६ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

सिद्धान्त । २० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० स० ८८६ ।

विशेष—१५वा तथा ३३ में ग्रागे पत्र नहीं है ।

३९० तत्त्वार्थसूत्र भाषा । पत्र स० ६० से १०८ । ग्रा० ११ \times ४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा— \times ।

हिन्दी । २० काल \times । ले० काल स० १७१६ । अपूर्ण । वे० स० २०८१ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७१६ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह श्रीरगसाहि राज्य प्रवर्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्र

मुनानाम्के अन्य जन बोधाय विदुषा जयवता कुन साह जगन पठनार्थ बालाबोध वचनिका कृता । किमर्थ सूत्राणा ।

भूतसूत्र अतीव गभीरतर प्रवर्तत तस्य अर्थ केनापि न अवबुध्यते । इद वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित् भव्य इमा

पठति ज्ञानो=ज्ञोत भविव्यति । लिखापित साह यिहारीदास खानानची सावडावासी ग्रामेर का कर्मक्षय निमित्त लिखाई

साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जंसिहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद ।

३९१ प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १८६० । वे० स० ७० । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टिप्पण रूप में अर्थ दिया है ।

३९२ प्रति स० ३ । पत्र स० ४२ । २० काल \times । ले० काल स० १९०२ मासोज बुदी १० । वे० स०

१६८ । झ भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है । हीरालाल वासनीवाल फागी बाले ने विजयरामजी पाड्या के मन्दिर के वास्ते प्रतिलिपि की थी ।

३९३ त्रिभगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ६६ । ग्रा० ६ $\frac{३}{४}$ \times ४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल \times । ले० काल स० १८५० सावन सुदी ११ पूर्ण । वे० स० ७४ । ख भण्डार ।

विशेष—सालचन्द्र टोम्पा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

३९४. प्रति स० २ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १९१६ । अपूर्ण । वे० स० १४६ । च भण्डार ।

विशेष—जोहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की ।

३९५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८७६ कार्तिक सुदी ४ । वे० स० २४ । ब भण्डार ।

विशेष—भ० क्षेमकीर्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

३६६ त्रिमयीसार टीका—विशेषज्ञम् । पत्र नं ४५ । या १२०४३ दृष्ट । ज्ञान-संज्ञा । विषय-मिथ्या । २ कल \times । ने कल नं १ २४ । पूर्ण । के तं २ । क मन्त्र ।

विशेष—४ महात्मने स्वपञ्चार्थ प्रतिनिधि श्री श्री ।

३६७ प्रति स २ । पत्र नं १११ । ने कल \times । के तं २५१ । क मन्त्र ।

३६८ प्रति स ३ । पत्र नं १६ से १२ । ने कल \times । घूर्ण । के तं २६६ । क मन्त्र ।

३६९ वराहप्रश्निकसूत्र— । पत्र नं १ । या १ ४४४ दृष्ट । ज्ञान-संज्ञा । विषय-सत्य । २ कल \times । ने कल \times । घूर्ण । के तं २२४१ । क मन्त्र ।

४०० वराहप्रश्निकसूत्र टीका— । पत्र नं १ से ४२ । या १ ३४४ दृष्ट । ज्ञान-संज्ञा । विषय-सत्य । २ कल \times । ने कल \times । घूर्ण । के तं १ ३ । क मन्त्र ।

४१ ब्रह्मसंज्ञा—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र नं १ । या ११०४३ दृष्ट । ज्ञान-संज्ञा । २ कल \times । ने कल नं १६३२ नाम सुदी १ । घूर्ण । के तं १ ३ । क मन्त्र ।

वराह—संज्ञा १६३२ वर्षिक नाम नाम कुलपणे १ विधी ।

४०२ प्रति स १ । पत्र नं १२ । ने कल \times । के तं २२२ । क मन्त्र ।

४०३ प्रति स ३ । पत्र नं ४ । ने कल नं १५४१ नाम सुदी १९ । के तं १६१ । क मन्त्र ।

४४ प्रति स ४ । पत्र नं १ से २ । ने कल \times । घूर्ण । के तं १ २२ । क मन्त्र ।

विशेष—सत्या टीका कथित ।

४०५ प्रति स २ । पत्र नं १ । ने कल \times । के तं २२२ । क मन्त्र ।

४६ प्रति स ३ । पत्र नं ११ । ने कल नं १ २ । के तं ३१२ । क मन्त्र ।

विशेष—श्रुती चर्चा कथित ।

४०७ प्रति स ७ । पत्र नं १ । ने कल नं १ १६ नाम सुदी ३ । के तं ३१३ । क मन्त्र ।

४८ प्रति स ८ । पत्र नं २ । ने कल नं १ १३ नाम सुदी १ । के तं ३१४ । क मन्त्र ।

४०९ प्रति स ३ । पत्र नं २ । ने कल नं १५४५ नाम सुदी १ । के तं ३१५ । क मन्त्र ।

विशेष—संज्ञा संज्ञा टीका कथित ।

४१ प्रति स १ । पत्र नं १३ । ने कल नं १ १० नाम सुदी १२ । के तं ३१६ । क मन्त्र ।

४११ प्रति स ११ । पत्र नं १ । ने कल \times । के तं ३१७ । क मन्त्र ।

४१२ प्रति स १२ । पत्र नं ७ । ने कल \times । के तं ३१८ । क मन्त्र ।

विशेष—जानाओ के श्री संज्ञा ने ज्ञाना श्री सुदी १ ।

४१३ प्रति स १३ । पत्र नं ११ । ने कल नं १०७६ नाम सुदी । के तं ३ । क मन्त्र ।

विशेष—संज्ञा ने परीक्षाओ कल विधि हुये हैं । टीका ने परीक्षाओ संज्ञा ने नं ३ बरही के विषय ज्ञाना के परीक्षा प्रतिनिधि हैं ।

११७ प्रति सं० १७। पत्र सं० १७। १० पत्र सं० १८। १० सं० १८। १० सं० १८। १० सं० १८।

५१४ प्रति सं० १४। वन सं० १३। २० वर्ष / १०० सं० ४८। १० वर्ष।

निर्देश—सं. ५५५ अ. "आ" ५५५, अ. ५५५ निर्देशित है ।

४१६, प्रति म० १६ । पत्र १०० २ म० ८ । धे. वार १ । सत्र १ । पं० म० ८० । १७ अक्षर ।

५१३ प्रति सं० १३ । पत्र सं० १ । रा. का. । १३. सं० ४३ । रा. का. ।

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

५१८ प्रति सं० १८ । पृष्ठ ५०० । १० वीं शताब्दी । १००० । १००० । १००० ।

विनिर्माण—अथवा न निर्माणः इति विनिर्णयः ।

२१६ प्रति म० ६६ । दत्त म० ७ । ले० भा० । १० म० २१३ । अ० त० ।

५२ प्रति म० २८ । ११ म० ६ । म० ११ । १० म० १६ । १० म० १६ । १० म० १६ ।

५०७. प्रति म० २३ । १३ म० ६४ । ५०० बाब ३४ । ६० म० ६१६ । ४ म० ५०० ।

निर्देश—नमस्ते : यहाँ हि भी दर्शन मिलता है ।

१०० प्रति स० ०० । पत्र स० ७ । १० बाब २ । ११ स० १६७ । १२ स० १६७ ।

निर्माण—मार्ग ११ म पदाद्वयाया नमः दि. १ ।

॥१॥ प्रति म० २३ । पत्र म० ११ । ले० का० ७ । प० म० १६८ । प० म० १६८ ।

४२४ प्रति म० २४ । प० म० १४ । म० दान म० १८६६ हि० पासाय म० २ । वे० म० १२२ ।

६ नमः ।

विशेष—हिन्दी में साधारणतः टीका महित है। पं० गुरुभुज ने लापुरर ग्राम में प्रतिनिधि की थी।

५५. प्रति सं २५। पत्र सं ८। सं. वा. सं. १७२२ भास्वा बुधो ६। १०७० ११२। छ. भण्डा।

विनाय—निन्दो दम्भा दीक्षा महिमा है । रूपभक्त्या सात्त्विकम् न प्रतिविविषी मी ।

५०६ प्रति म० ७६ । सा म० १३। ३० गात्र / । पौ० म० १०६ । ज मण्णा ।

विशेष—यथा टीका मिलित है ।

४७७ प्रति म० २७ । पत्र म० ८ । ले० पान ४ । ये० म० १२७ । अ. गण्डार ।

४२८ प्रति सं० ७८ । वग सं० १२ । मे० पात्र X । मे० सं० २०६ । च नष्टार ।

प्रिणोप—हिंदी कार्य श्री दिया हुआ है ।

५२६ प्रति स० २६ । पत्र स० १० । मे० बाल ५ । ये० मं० २६४ । ज्ञ भण्णार ।

४३० प्रति स० ३० । पत्र सं० ७ । ने० काल X । ये० स० २७५ । अ नष्टार ।

४३१ प्रति स० ३१ । पत्र ग० २१ । पे० मान X । पे० म० ३७८ । ज्ञा. मण्डार ।

विशेष—हिंदी अर्थ सहित है ।

४३२. प्रति सं० ३२। पत्र सं० १०। ले० गान सं० १७८५ पीप गुरो ३। वे० सं० ४६४। ज्य भण्डार।

४४१ प्रति स० २ । पत्र स० ८० । ले० काल X । वे० स० १२८ । अ भण्डार ।

४४२ प्रति स० ३ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८१० कार्तिक बुदी १३ । वे० स० ३२३ । अ भण्डार ।

४४३ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८०० । वे० स० ४४ । छ भण्डार ।

४४४. प्रति स० ५ । पत्र स० १८६ । ले० काल स० १७८४ अषाढ बुदी ११ । वे० स० १११ । छ भण्डार ।

४४५ द्रव्यसंग्रहटीका । पत्र स० ५८ । प्रा० १० X ८ १/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । २० काल X । ले० काल स० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० स० ५१० । अ भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि मा० नेमिचन्द्र ने मासवर्षा की धारा नगरी में भोजदेव के शासनकाल में श्रीपाल मलेश्वर के आश्रम नाम नगर में मोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-संग्रह की रचना की थी ।

४४६ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० स० ८५८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम बृहद् द्रव्य संग्रह टीका है ।

४४७ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७७८ पीप बुदी ११ । वे० स० २६५ । अ भण्डार ।

४४८ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६७० भाद्रवा बुदी ५ । वे० स० ८५ । अ भण्डार ।

विशेष—नागपुर निवासी खडेलवाल जातीय मैठी गोत्र वाले सा जेदा की भार्या जेदनदे ने पत्य प्रताप्या-पन में प्रतिलिपि कराकर चढाया ।

४४९ प्रति स० ६६ । ले० काल स० १६०० चैत्र बुदी १३ । वे० स० ४५ । अ भण्डार ।

४५० द्रव्यसंग्रह भाषा । पत्र स० ११ । प्रा० १० १/२ X ८ १/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल स० १७७१ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में निम्न प्रकार अर्थ दिया हुआ है ।

गाथा—द्वय-संग्रहमिणा मुणिणाहा दोस-सचयबुदा सुदपुष्णा ।

सोधयतु तानुमुत्तघरेण रोमिर्बंद मुणिणा भणिय ज ॥

अर्थ—भो मुनि नाथ । भो पठित जैसे ही तुम्हें दोष सचय मुनि दोषनि के जो सचय कहिये समूह तिनमें रहित हो । मया नेमिचन्द्र मुनिना भणित । यत् द्रव्य संग्रह इस प्रत्यक्षी सूत्रों में जो ही नेमिचन्द्र मुनि तिन जो कह्यो मनु द्रव्य संग्रह शास्त्र । ताहि सोधयतु । सो धो हूं कि कि सो ह । तनु मुत्त घरेण तनु कहिये धोरो सो सूत्र कहिये । सिद्धांत तानी जो धारव ह्यो । अल्प शास्त्र करि सयुक्त हो जो नेमिचन्द्र मुनि तेन कह्यो जो द्रव्य संग्रह शास्त्र ताकी भो पठित सोधा ।

इति श्री नेमिचन्द्राचार्य विरचितं द्रव्य संग्रह बालबोध संपूर्ण ।

संवत् १७७१ शके १६३६ प्र० श्रावण मासे कृष्णपक्षे तृयादश्या १३ बुधवासर लिप्यन्त विद्याधरेण स्वात्माये ।

४५१ प्रति स० ७ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० स० २६३ । अ भण्डार ।

४६६ प्रति स० ५ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० १६४ । कृ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया गया है ।

४६७ प्रति स० ६ । पत्र स० ३७ । ले० काल × । वे० स० २४० । कृ भण्डार ।

४६८ द्रव्यसमग्र भाषा—बाबा तुलीचन्द । पत्र स० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—

एक द्रव्या का वर्णन । २० काल स० १६६६ आसोज सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२० । कृ भण्डार ।

विशेष—जयचन्द छावठा की हिन्दी टीका के अनुसार बाबा तुलीचन्द ने इसकी दिल्ली में भाषा निम्नी की ।

४६९ द्रव्यस्वरूप वर्णन । पत्र स० ६ में १६ तक । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रह

द्रव्या का लक्षण वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १६०५ माघन बुदी १२ । अपूर्ण । वे० स० २१३७ । ट भण्डार ।

४७० यवतल । पत्र स० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—जैनागम । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५० । कृ भण्डार ।

४७१ प्रति स० २ । पत्र स० १ में १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५१ । कृ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति स० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ३५२ । कृ भण्डार ।

४७३ नन्दीसूत्र । पत्र स० ८ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । २०

काल × । ले० काल स० १५६० । वे० स० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—स० १५६० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि ५० नयममुद्रगणि नामा देन ? तन्मु शिष्ये वी गुणलाम गणिभि लिलेखि ।

४७४ नवतत्त्वगाथा । पत्र स० ३ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—६ तत्त्वों

का वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १८१३ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—प० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५ प्रति स० ७ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८२३ । पूर्ण । वे० स० १०५० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ से ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७७ नवतत्त्व प्रकरण—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र स० १४ । आ० ६½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

६ तत्त्वों का वर्णन । २० काल स० १७४७ । ले० काल स० १८०६ । वे० स० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है । राघवचन्द शतावत ने शक्तिसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की ।

४८. अथ तत्त्ववर्णनम्—। पञ्च तै १। वा ८५४५३ ह्यह। मया हिन्वी। निवम-जीव
मनीव धारि ह तत्त्वो वा वर्णनम्। ८ काल ×। से काल ×। पूर्व। वै तै ११। य मयार।

विशेष—जीव अजीव पुरुष वायु तथा आग्नि तत्त्व का ही वर्णन है।

४५६. नवतारन वननिष्ठ—पञ्जाबका जौधरी। पत्र लं २१। या १२×९ इंच। प्रमा हिमी।
विपय—१ तारको का वर्णन। २ पत्र लं ११५४ आयाम मुमी ११। से कल ×। मुसी। ३ लं ११४। व
मन्दार।

४८० लवङ्गविचार—। वन में १ से २४। या ३५४ दण्ड। माया जिली। विषम-
लवो का वर्णन। र कज्ज ×। ने कज्ज ×। धनुर्मा। वी से २२५। य वध्याद।

१८१ निवस्युति—अवसिद्धः। एष स १ से ११। या १ $\times ४\frac{1}{2}$ इति। अथा लम्बुतः। विम-
विज्ञाने १ कल $\times 1$ से कल $\times 3$ ध्युर्न। यै स २११। इ लम्बुतः।

विशेष—सम्यक् पुनरिच्छा—

इसमिन्नकार्यार्थीयवर्गितनपठितं विद्यमानं ब्रह्म-स्वमित्यर्थं अक्षरमवतन्वयुर्न । तदुक्तं ३२ अ० ।
 ब्रह्मण्य २१ प्रवर्तते । केदारगुह्यं श्री लोकोपनिषत् पठितं पलाकरं विहितं श्री श्री श्री १ श्री श्री श्री लोकात्म-
 निवृत्तसिद्धि उपायः ३० विद्यमानः ३० कलात्मकः पदपञ्चकः श्री पदपञ्चकः ३० ।

४८० दिक्पसार-व्या० कुन्धकुन्ध । पत्र ३ । धा ३ × २३ इज्ज । मत्ता-मत्तव । विन-
विहत्त । ८ कल × ११ नल × १ पूर्ण । ३ व २३ । व मत्तार ।

निर्देश—प्रति संस्कार देना चाहिए ।

५८३ दिक्कसार टीका—पद्यप्रथममकारिणेन । पद्ये तं २५२ । वा १२३ × ७ इति । वाया-
संरक्षण । विषय-सिद्धान्त । २ कला × । मे पद्ये तं १५३ । अथ बुद्धिः । पूर्वा । ३ तं १५३ । कथयता ।

४५५ प्रति स २। वन सं २७। नै गण सं १ ६३। वि सं ३७१। अजनाट।

४५२ निर्यातकीसूच—। पत्र सं. १३ से १६। प्रा. १ X४ दम। धना-प्रभुत। निर्यात-
पात्र। ए. नाल X। से. नाल X। जपूरी। से. सं. १५६। न. लम्हार।

४८३ पाञ्चपरश्वर्तन—। यम र्त्त ३। मा ११४८३ दक्षः। मत्ता—कृत्वा। विषय—विज्ञानम्।
५ नामः। से नाम ४३। यम र्त्त ३। यम मत्ताः।

टिप्पण—जीरो के ॥११॥ कोष कादि पञ्चादित्युक्तं वा वर्तते ॥

५८६. प्रति स २ । नमो ७ । न कल × । वे १ ४१३ । क मयदि ।

५५८. पाञ्चमयज्ञ—आ नैमिषसु । तत् २५ मे ५५८ । आ १२५२३ ह्य । आर्वा-आर्वा
संयुत । विप-विपुल । ए. बाल X । मे बाल X । धर्म । मे ४ । ह मयार ।

४८६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल म० १८१२ नात्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३८ । न भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर मे ग्लस्चिगण ने प्रतिलिपि की थी । वही कही हिन्दी ग्रंथ भी दिया हुआ है ।

४८७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । न भण्डार ।

४८१ पञ्चसंग्रहवृत्ति—अभयचन्द्र । पत्र सं० १२० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—मन्दृत । विषय—सिद्धांत । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २४-२५वां पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

४८२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ मे २५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६ अ भण्डार ।

विशेष—केवल जीष काण्ड है ।

४८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५२ मे ६१५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

विशेष—वर्मकाण्ड नवमां अधिकार तक । वृत्ति—रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट मे साधु तांगा के सह-योग से की थी ।

४८४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८६ से ७६३ तक । ले० काल म० १७२३ फागुन सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७८१ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती मे पार्श्वनाथ मन्दिर में श्रीगंगाह (श्रीरंगजेव) के शासनकाल मे हाडा वशोत्पन्न राव भी भावसिंह के राज्यकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८५ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३० । ले० काल म० १८६८ माघ बुदी २ । वे० सं० १२७ । क भण्डार ।

४८६ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६२८ । ले० काल सं० १६५० वैशाख सुदी ३ । वे० सं० १३१ । क भण्डार ।

४८७ प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से २०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । क भण्डार ।

विशेष—धीच के कुछ पत्र भी नहीं है ।

४८८ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ से २१४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५ । च भण्डार ।

४८६ पंचसंग्रह टीका—अमितगति । पत्र सं० ११४ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १०७३ (शक) । ले० काल म० १८०७ । पूर्ण । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ सस्कृत गद्य और पद्य मे लिखा हुआ है । ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है ।

श्रीमाधुराणामनघद्युतीना संघोऽभवद्वृत विमूषितानाम् ।

हारो मौणानामिवतापहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मि शुभ्र ॥ १ ॥

नावबलेनपणीवसुनीकः सुदृढतपोऽपि तत्र बनीयः ।
 पूर्यति सम्भवतीह श्रद्धायाः बीजमिति विष्णुपतामजनीकः ॥ २ ॥
 किम्यस्तस्य महत्त्वपनीमिदमितिभोषाविविनामपणी ।
 ऐतच्छ्रुत्वाभगवतोपकर्म्मसमितिप्रख्यातमावाहृतः ॥
 नीरजमेव विनेस्वरस्य बलमुत्कृष्णोन्मादीपयो ।
 बुधास्त्वेवमरंतिवारुहुरि बीजोत्तमोऽनुत्तमा ॥ ३ ॥
 यत्र चिद्वस्तु विरोदिवद्वा द्वाहुरिपुण्यतैरुदरान् ।
 ब्रह्मंति बोधा ह्युपचारिवन्तं विराहस्य कर्म पवित्रं ॥ ४ ॥
 शम्भुवरं केवमनर्चनीयं नावन्तिरं शिष्टादिमुत्कर्णयन् ।
 ताम्रद्वयविद्वयवद्यन्तं स्वीकृतुं कर्म्मविशेषवारि ॥
 मिलित्वाविशेषाणां कर्म्मणो यन्निधिपः ।
 मनुजिनापुरे वास्तयित्वा धाम्नीं बनीरन् ॥ ५ ॥
 इत्यवित्तमिद्विद्या मीकृतारं ताम्रवन्द्यैः ।

४ ० प्रति ३० ७ । वम लं २३३ । मे वम लं १७६६ वम कुटी १ । मे लं १७ । अ मया
 ४ १ प्रति ३० ३ । वम लं १ । मे वम लं १७६४ । मे लं २३३ । अ मया
 विमेष—बीजं प्रति ३ ।

४ २ पञ्चमपद्धतीका—वम लं २३३ । वा १२४२६ दम् । मया—मस्तुत । विमेष—मिद्विद्या ।
 ४ वम लं १ । मे वम लं १७६६ । मे लं २३३ । अ मया ।

४ ३ पञ्चमपद्धतीका—कुम्भकृत्याचार्य । वम लं २३३ । वा १२४२६ दम् । मया मस्तुत । विमेष—
 मिद्विद्या । ४ वम लं १ । मे वम लं १७६६ । मे लं १७ । अ मया ।

४ ४ प्रति ३० २ । वम लं ४३ । मे वम लं १७६६ । मे लं ४४ । अ मया ।

४ ५ प्रति ३० ३ । वम लं ३४ । मे वम लं १७६६ । मे लं ४५ । अ मया ।

४ ६ प्रति ३० ४ । वम लं २३ । मे वम लं १७६६ । मे लं ४६ । अ मया ।

४ ७ प्रति ३० ५ । वम लं २२ । मे वम लं १७६६ । मे लं ४७ । अ मया ।

विमेष—मिद्विद्या सम्पत्तयः । मया मया पर बीजा जी बी ३ ।

४ ८ प्रति ३० ६ । वम लं २१ । मे वम लं १७६६ । मे लं ४८ । अ मया ।

४ ९ प्रति ३० ७ । वम लं २० । मे वम लं १७६६ । मे लं ४९ । अ मया ।
 विमेष—मिद्विद्या सम्पत्तयः । मया मया पर बीजा जी बी ३ ।

५१० प्रति स० ८ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० १६६ । ङ भण्डार ।

५११ पञ्चास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र स० १२४ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ × ७ इञ्च । भाषा संस्कृत
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल स० १६३८ श्रावण सुदी १४ । पूर्णा । वे० स० ४०५ । क भण्डार ।

५१२ प्रति स० २ । पत्र स० १०५ । ले० काल स० १४८७ वैशाख सुदी १० । वे० स० ४०२ ।
ङ भण्डार ।

५१३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । वे० स० २०२ । च भण्डार ।

५१४ प्रति स० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १६५६ । वे० स० २०३ । च भण्डार ।

५१५ प्रति स० ५ । पत्र स० ७५ । ले० काल स० १५४१ कार्तिक सुदी १४ । वे० स० १ । च भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा फहरी भार्या धमला तयो पुत्रघातु तस्य भार्या धनमिन्त्रि
नाम्या पुत्र मा होलु भार्या सुनखत तस्य दामाद मा हमराज तस्य भ्राता देवपति एवं पुस्तक पञ्चास्तिकायात्रिधं लिखाया
कुलभूषणस्य कर्मक्षमार्थं दत्त ।

५१६ पञ्चास्तिकाय भाषा—प० हीरानन्द । पत्र स० ६३ । आ० ११ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष—जहानाबाद मे बादशाह जहांगीर के समय मे प्रतिलिपि हुई ।

५१७ पञ्चास्तिकाय भाषा—पाडे हेमराज । पत्र स० १७५ । आ० १३ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ४०६ । क भण्डार ।

५१८ प्रति स० २ । पत्र स० १३५ । ले० काल स० १६४७ । वे० स० ४०८ । क भण्डार ।

५१९ प्रति स० ३ । पत्र स० १४६ । ले० काल × । वे० स० ८०३ । ङ भण्डार ।

५२० प्रति स० ४ । पत्र स० १५० । ले० काल स० १६५४ । वे० स० ८२० । च भण्डार ।

५२१ प्रति स० ५ । पत्र स० १४४ । ले० काल स० १६३६ आषाढ सुदी ४ । वे० स० ६२१ । च भण्डार ।

५२२ प्रति स० ६ । पत्र स० १३६ । २० काल × । वे० स० ६२२ च भण्डार ।

५२३ पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र स० ६११ । आ० ११ × १३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १८६२ । ले० काल × । वे० स० ७१ । क भण्डार ।

५२४ पुण्यतत्त्वचर्चा— । पत्र स० ६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल स० १८८१ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २०४१ । ट भण्डार ।

५२५ वध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र स० ६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १८८१ । ले० काल × । वे० स० १६०५ । पूर्णा । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ ।

विमल जिनेश्वरप्रणमु पाय, मुनिमुनित कू भीस नवाय ।

मतमुग सारद हिरदे धर्म, वध उदय सत्ता उषस ॥ १ ॥

अभिमत—बच बरी सत्ता बसाली कल धिर्बनीसार ती बालि ।

दुल प्रमुद दुवा एगु नास, धरुप बुद्धि में बच बसाल ॥ १२ ॥

कहिउ राग दुम्ह दुब बरी मगर पविर मही लही ।

मुम बरपु बरी के मही, आत्मक मुम मंगलम बसुहि ॥ १३ ॥

बल पम ने बसि मयो वीराचम के सिप म बयो ।

मगर लविर मही मयो आभिमत मुम बरपु विमो ॥ १४ ॥

पासम ती विपल मयो लल ब मर पकती मयो ।

प्रीतम विपल मणि पारिजात लपर कपल बही बसाल ॥ १५ ॥

संभन् मरपुली का कहा मगर मंगलती ऊपर लहा ।

बड मरपुल मय कम हीम मुम बच बुधि मरु होम ॥ १६ ॥

॥ इति श्री उरी बच सत्ता लमला ॥

इससे आग चौबीस ठाखा की चौपाई है—

प्रारम्भ—बच बरी कुर मय कल बरी मय बच मय ।

दुलमलमि बरि कल की रचना मरु बसाल ॥

अभिमत—दू विमि मय दुलमलम की रचना मरपुली पार ।

दुल दुल की हीम ती मुभिमत मरु दुवार

कहि मंगलिर दुपुल की लला मगर बसाल ।

उमलीने मय मय के लल लल मीलम ॥

॥ इति शम्भुली ॥

१०६ आरुहीसुख—बच ब २ । या ११०२३ दल । भावा—मरपुल । विपल—आभिमत । र बल X ।

न बल । पूर्ण । के ती २३ क । का कपल ।

१ आरुहिमंगी—मेलिचमरुपाई । बच ती २१ । या १०२३ दल । भावा—मरपुल । विपल

मिलम । के बल X । पूर्ण । के ती २३ क । का कपल ।

विमि—मय बच दुवार मिला बसा है ।

२ म इति स २ । बच ती २४ । के बल ती १०२३ मय मुरी क । के ती २१ । का कपल ।

विमि—मय बच मय की प्रतिमि विमि मरु म की ती

३ म आरुहीसुख भावा—बच ती २ । या २ ३ । भावा—मरपुल । विपल—मिलम ।

र बल । के बल X । पूर्ण । के ती २३ । का कपल ।

४ म मरपुलीसुख—बच ती २ । या २ ३ दल । भावा—मरपुल । विपल—मिलम ।

र बल । के बल X । पूर्ण । के ती २३ ।

विशेष—आचार्य शिवकोटि की आराधना पर अमितिगति का टिप्पण है ।

५३१ मार्गणा ष गुणस्थान वर्णन—। पत्र स० ३-५५ । आ० १८५ इअ । भाषा प्राकृत । विषय—

सिद्धांत । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७४२ । ट भण्डार ।

५३२ मार्गणा समास—। पत्र म० ३ मे १८ । आ० ११३×" इअ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० २१४६ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३३ रायपसेणी सूत्र—। पत्र स० १५३ । आ० १०×८^१ इअ । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । २०

काल × । ले० काल स० १७६७ आसोज मुदी १० । वे० म० २०३२ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है । समसागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य सक्लसागर

न संपठनार्थ टीका की । गाराओ के ऊपर टाया दी हुई है ।

५३४ लब्धिसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र म० ५७ । आ० १२×५ इअ । भाषा-प्राकृत । विषय—

सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३२१ । च भण्डार ।

विशेष—५७ मे आगे पत्र नहीं है । संस्कृत टीका सहित है ।

५३५ प्रति म० २ । पत्र म० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३२२ । च भण्डार ।

५३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १८४६ । वे० स० १६०० । ट भण्डार ।

५३७ लब्धिसार टीका—। पत्र म० १७७ । आ० १३×८ इअ । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।

२० काल × । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । वे० म० ६३८ । क भण्डार ।

५३८ लब्धिसार भाषा—प० टोडरमल । पत्र म० १८० । आ० १३×८ इअ । भाषा-हिन्दी ।

विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० स० ६३६ । क भण्डार ।

५३९ प्रति स० २ । पत्र स० १६३ । ले० काल × । वे० स० ७५ । ग भण्डार ।

५४० लब्धिसार क्षपणासार भाषा—प० टोडरमल । पत्र म० १०० । आ० १५×६^१ इअ । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६ । ग भण्डार ।

५४१ लब्धिसार क्षपणासार मट्टि—प० टोडरमल । पत्र स० ४६ । आ० १८×७ इअ । भाषा—
हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । २० काल स० १८८८ चैत बुदी ७ । वे० म० ७७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

५४२ विपाकसूत्र—। प० म० ३ मे ३५ । आ० १२×४^१ इअ । भाषा प्राकृत । विषय-आगम । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० २१३१ । ट भण्डार ।

५४३ विशेषसत्तात्रिभंगी—आ० नेमिचन्द्र । पत्र म० ६ । आ० ११×४^१ इअ । भाषा-प्राकृत ।
विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २४३ । अ भण्डार ।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की गृह्य टीका है। पञ्चालान जीधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। अन्य तीन श्रुति म बहा हुआ है। हिन्दी अर्थ महित है।

५५१ प्रति स० २ । पत्र म० १० । ले० काल २ । वे० म० ७८ । अ मण्डार ।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

५५२ प्रति स० ३ । पत्र म० ८० । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० म० १६५ । अ मण्डार ।

५५३ समग्रणीसूत्र । पत्र म० ३ ने २८ । प्रा० १०×४ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—भागम ।

१० काल २ । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० म० २०२ । अ मण्डार ।

विशेष—यत्र स० ६, ११, १६ ने २०, २३ ने २५ नहीं है। प्रति त्रिचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय है। ६, २१ और २८ ने पत्र की छोड़कर सभी पदों पर चित्र हैं।

५५४ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल २ । वे० म० २३३ । अ मण्डार । ३११ गायत्रि हैं।

५५५ समग्रणी वालावधोध—शिवनिधानगणि । पत्र म० ७ ने ५३ । प्रा० १०½×४½ । भाषा—प्राकृत—हिन्दी । विषय—भागम । १० काल २ । ले० काल २ । वे० म० १००१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६ सत्ताद्वार । पत्र म० ३ से ७ तक । प्रा० ८½×४½ इञ्च । भाषा सम्युत । विषय—सिद्धान्त । १० काल २ । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० म० ३६१ । अ मण्डार ।

५५७ सत्तात्रिसंगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र म० २ ने ४० । प्रा० १२×६ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल २ । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० म० १८४२ । अ मण्डार ।

५५८ सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्र म० ११८ । प्रा० १३×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १० काल २ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० म० ११२ । अ मण्डार ।

५५९ प्रति स० २ । पत्र स० ३६८ । ले० काल स० १६४४ । वे० स० ७६८ । अ मण्डार ।

५६० प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल २ । अपूर्ण । वे० स० ८०७ । अ मण्डार ।

५६१ प्रति स० ४ । पत्र म० १२२ । ले० काल २ । वे० स० ३७७ । अ मण्डार ।

५६२ प्रति स० ५ । पत्र स० ७२ । ले० काल २ । वे० म० ३७८ । अ मण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३ प्रति स० ६ । पत्र म० १-१३३, २००-२६३ । ले० काल म० १६२५ माघ सुदी ५ । वे० स० ३७६ । अ मण्डार ।

निम्नकाल और दिये गये हैं—

म० १६६३ माघ शुक्ला ७-६ वालादेरा मे श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी । म० १७१७ कार्तिक सुदी १३ अक्षय्या ने भेंट में दिया था ।

४५४ प्रसिद्धि ७ । पत्र नं १८१ । न. बाल X । वी. ती ३ । न. लम्बा ८ ।

२६५. प्रति स० ८। पत्र सं १६। ले. काल X। ले. सं ४। कु. मन्थार।

२६६ अवि स ६। वस १३४। नि वस १ वरयेन वरी २। ये १। वस १।

२१७ प्रति स १ । पत्र सं ५७४ । ले. भाग सं १७४ विषय सूची २ । पृ. सं २१६ । म

अध्याय १

२६८. उपनिषदसिद्धि याया—अथवा ज्ञानदा । पत्र सं १८१ । या १९४५, १३ । याया सिद्धि
विषय—विज्ञान । २ भाग सं १ ११ वेंत मुद्रा ३ । ३ भाग सं १२३२ वाणिज्य मुद्रा ६ । मुद्रा १३ सं ४२२
५ म्यार ।

२६६. प्रति स २ । वष हं ३१ । वी मय्य × । वी रं । क मय्यार ।

२७३ प्रविर्त्ति ३। पञ्चमं ४९७। वि. कण्ड १२१७। वि. ७९। अ. अकार।

३०१ प्रति से ४। पक्ष से २७०। मे पक्ष से १। १ पक्ष से २। १ से ११। ३

अनुसार

१५२. सिद्धान्तशेखर—यं १२५५ ई. स. में ११ वा १२ के बीच। प्रतापराज व। विष्णु-
सिंहवत् १२ वात् × ११ वात् में ११२५ पूर्वा में ५२१ क मण्डार।

विशेष—यह प्रति सं १३२३ वाली प्रति के समीचीन नहीं है।

१७१ प्रवि.सं. २। पृष्ठ ६६। नि. क्रम ३। १४। वे. तं । च. ब. ग. र.

निवेदन—यह प्रति जो सं १३६३ वाली प्रति के ही बिछी गई है।

२७४ सिद्धान्तसार भाग—पृष्ठ ७२। पा १४०। दृष्ट। बाबा हिन्दी। विस्व-विद्या।

६ बल <। न बल ×। प्रसूति। १ वं ७२९। अ जगदा ।

२५४. सिद्धान्तशेखरसंग्रह—। पृष्ठ ४४ । भा. ४४४६ दशः । कृता लिपी । विषय विज्ञान ।

काल । ते काल \times । कपूर्णा । ते सं १४४४ । अथ लघाद ।

विशेष—वैयर्थ्य काङ्क्षित है । वो प्रतियोगी का सम्बन्धित है ।

५०६. सिद्धांशसार वृषिक—सकलवर्षिणि । पृष्ठ ४ १२१ । आ० १५२३ इति । आशा बंधुप ।

विषय-निर्णय । र माला × । से माला × । पूर्वी । से पं १९१ ।

७००. प्रति स २। १४ व १८४। के कल व १ ११ वीरपुरी ३३। के स १६। स बरा

विशेष—यं बोधायन के शिष्य यं विश्वामित्र के शिष्यार्थं प्रतिपादितं नैव भवति ।

२५८ प्रतिसं ३। पत्र सं १२३। के नम्र सं १०१२। के सं १३२। का मध्याह्न।

७ १. प्रति स ४। १५५। के नाच त १ ५२। के स ५। क मयार।

विषय—कृतवत्सल वदना न श्रुतानि का वा ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

4-33

विशेष—शाहजहानाबाद नगर में लाया मीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

५८१ प्रति स० ६ । पत्र स० १७३ । ले० काल स० १८२७ वैशाख बुदी १२ । वे० स० २६२ । च भण्डार ।

विशेष—कही कही कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं ।

५८२ प्रति स० ७ । पत्र स० ७८—१२४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २५२ । छ भण्डार ।

५८३ सिद्धान्तसारशीपक । पत्र स० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा मस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२८ । छ भण्डार ।

विशेष—केवल ज्योतिषोक्त वर्णन वाला १४वां अधिकार है ।

५८४ प्रति स० २ । पत्र स० १८४ । ले० काल × । वे० स० २०५ । ख भण्डार ।

५८५ सिद्धान्तसार भाषा—नथमल बिलाला । पत्र स० ८७ । आ० १३½×५ इञ्च । भाषा हिंदी ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल स० १८८५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२४ । च भण्डार ।

५८६ प्रति स० २ । पत्र स० २५० । ले० काल × । वे० स० ८५० । छ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल 'ह' भण्डार की प्रति में है ।

५८७ सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० नरेन्द्रदेव । पत्र स० १४ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा मस्कृत ।

विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११६५ । छ भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है ।

५८८ प्रति स० २ । पत्र स० १०० । ले० काल स० १८६६ । वे० स० १६८ । छ भण्डार ।

५८९ प्रति स० ३ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८३० मगसिर बुदी ४ । वे० स० १५० । च भण्डार ।

विशेष—प० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

५९० सूत्रकृतांग । पत्र स० १६ में ५६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—आगम ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं हैं । प्रति मस्कृत टीका सहित है । बहुत से पत्र दीमका ने खा लिये हैं ।

बाँच में मूल गायपे हैं तथा ऊपर नीचे टीका है । इति श्री सूत्रकृतांगदीपिका पौडपमाध्याय ।

विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

४६। अष्टादशसूक्तगुणसंज्ञम् —। पञ्चमं १। आ १ ३५५ दक्षः। अत्रा-भंगुल। विर-
मुनिः २५ दक्षः। अत्र ५० पुनः। वैदिकं २३। अत्र अत्रा।

५७ अन्तर्गतमार्ग—य आरम्भपरिचय नं ३७। या १९४२ ई। प्रकाशित।
प्रकाशक—विश्वकर्मा बालन । र. प्रकाशक १९४२ ई। वि. प्रकाशक १९४० माघ सुदी १। पूर्ण। के. मं. २९१। अ.
प्रकाशक ।

विशेष—इति स्थापक ऋषि उद्धृतः । कानी नगर मे श्रीगुरुदेव गुरुपुष्पनिहारी के प्रानमनान मे गङ्गाजी गङ्गाजी मे प्रतिस्ति करवाये की । सं १ २२ में गुरुपुष्प के दिवस मे रीच मे कन्या संकीर्ण किया । १२ मे १६१ तक बहिन पत्र है ।

४६३ प्रति सं २। यत्र भं १२१। से यत्न \times । से सं १। रा यत्नार।

४८४ प्रति भां २। पत्र नं १ । के वल नं १९२३ वर्तित्त गुरी २। के सं १८।
ग म्प्राए ।

५६५ प्रति म ४। पय सं ३०। ले कय ४। वि सं ४६। वय ५५५५।

विशेष—अति प्राचीन है। ये माषक के राज्य की इतिहास की थी। राज्य का दूसरा नाम 'सम्राज्य' था।

१६६ अनुसूचक—वीथियन्त कसकीबाबा । पत्र ४४ । साधार १२५३ इ.स.। नाम—
हिन्दी (उपस्थानी) मंत्र विषय—वर्ग २ नाम २ । वीथियुवी २ । वि नाम १ । १४ । अनुसूचक २ ।
१ । य. अक्षर ।

३६७ प्रति हां ७। पत्र नं ९ है ७४। है मल X। मयूर। है तं २१। हू दम्भार।

४६८ आनुषाङ्गम् — पृथक् २१। या २१५ × ६ दण्ड। जया-विष्टी (नट)। विपक्ष-वर्ग।
 बाल ×। ये कालः पूर्णः। ये तं २१। क मयाः।

अमृतवर्मरसकाव्य—गुणधाम्नीष । वष र्त्तं ३ मे १६ । या १ ५५५ मया-उत्सृष्ट । निधम-
पाचार वरष । २ काल ५ । मे काल र्त्तं १९ ५ पीछ मुटी १ । धनुर्त्तं । मे र्त्तं १५४ । वष वषार ।

विशेष—प्रायः के दो वन गहरी हैं। अष्टिम पुष्पिका—होती थी कुसुमाक्षेत्रविशेषवृत्तवर्मरत्नम्
 अक्षरार्थे अक्षरवर्तिकाक्षरार्थे अक्षरवर्तिकाक्षरार्थे अक्षरवर्तिकाक्षरार्थे—

पदों की सुवर्णतायमें तात्त्विकी नी मनुष्यनीति तात्त्विकी विदुषवकीतिरेवमनुष्यताक तात्त्विकी नी पदार्थिरेव
मनुष्यताक तात्त्विकी नी मनुष्यनीतिरेव तात्त्विकी नी मनुष्यनीतिरेव तात्त्विकी नी मनुष्यनीतिरेव तात्त्विकी नी मनुष्यनीतिरेव

विधिवत् कर्तव्यता । चातुर्वर्ण्य धर्म । साधारण धर्म । धर्मशास्त्रानुसार धर्म उपदेशना ।
नष्टन के समय माय मात कृष्णार्थी कृष्णार्थी धर्म । नष्टन के समय माय मात कृष्णार्थी कृष्णार्थी धर्म ।
नष्टन के समय माय मात कृष्णार्थी कृष्णार्थी धर्म । नष्टन के समय माय मात कृष्णार्थी कृष्णार्थी धर्म ।

६०० आनन्दधाम—आनन्दराय । पत्र म ३३ । पृष्ठ १०१ २६५ पृष्ठ । भाषा—हिन्दी (पत्र)

विषय—धर्म । २० पत्र म १३०३ । १० पत्र म १२०० । पूर्ण । १० पत्र १२० । क भण्डार ।

विषय—आनन्द धर्मशास्त्र । पत्र—“आनन्द धर्मशास्त्र”

पत्र प्रकाशित के अनुसार आनन्द धर्मशास्त्र ने उक्त धर्म की मूल प्रणियाँ सादर की । पत्र प्रकाशित के अनुसार
पत्र प्रकाशित के अनुसार आनन्द धर्मशास्त्र ने उक्त धर्म की मूल प्रणियाँ सादर की । पत्र प्रकाशित के अनुसार
पत्र प्रकाशित के अनुसार आनन्द धर्मशास्त्र ने उक्त धर्म की मूल प्रणियाँ सादर की । पत्र प्रकाशित के अनुसार

६०१ प्रति म २० । पत्र म ११ । पत्र म १२५४ । पत्र म १०० । क भण्डार ।

६०२ आचारमार—दीर्घनाथ । पत्र म १६ । पृष्ठ १०१ २६५ पृष्ठ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार
शास्त्र । २० पत्र म १००३ । १० पत्र म १२०० । पूर्ण । १० पत्र १२० । क भण्डार ।

६०३ प्रति म २० । पत्र म १०१ । पत्र म १२५४ । पत्र म १०० । क भण्डार ।

६०४ प्रति म ३० । पत्र म १०६ । पत्र म १२५४ । पत्र म १०० । क भण्डार ।

६०५ प्रति म ४० । पत्र म ३०१ ३०२ । पत्र म १२५४ । पत्र म १०० । क भण्डार ।

६०६ आचारमार भाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र म २०२ । पृष्ठ १०१ २६५ पृष्ठ । भाषा—हिन्दी ।

विषय—आचारशास्त्र । २० पत्र म १२०३ । १० पत्र म १२०० । पूर्ण । १० पत्र १२० । क भण्डार ।

६०७ प्रति म २० । पत्र म २६२ । पत्र म १२५४ । पत्र म १०० । क भण्डार ।

६०८ आचारशास्त्र—देवसेन । पत्र म २०० । पृष्ठ १०१ २६५ पृष्ठ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०
पत्र म १००३ । १० पत्र म १२०० । पूर्ण । १० पत्र १२० । क भण्डार ।

६०९ प्रति म २० । पत्र म ६४ । पत्र म १२५४ । पत्र म १०० । क भण्डार ।

विषय—आनन्द धर्मशास्त्र । पत्र—“आनन्द धर्मशास्त्र”

६१० प्रति म ३० । पत्र म १० । पत्र म १२५४ । पत्र म १०० । क भण्डार ।

६११ प्रति म ४० । पत्र म ३० । पत्र म १२५४ । पत्र म १०० । क भण्डार ।

६१२ प्रति म ४० । पत्र म ६४ । पत्र म १२५४ । पत्र म १०० । क भण्डार ।

६१३ आचारशास्त्र भाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र म १६ । पृष्ठ १०१ २६५ पृष्ठ । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० पत्र म १२०३ । १० पत्र म १२०० । पूर्ण । १० पत्र १२० । क भण्डार ।

विशेष—मेखन प्रसिद्ध का अंतिम पत्र गृहीत है।

६१४ प्रति स २। पत्र तं ४। मे खल \times । के तं ६५। अन्तर।

६१५ प्रति स ३। पत्र तं २९। मे खल \times । के तं ६६। अन्तर।

६१६ प्रति स ४। पत्र तं २४। मे खल \times । के तं ७२। अन्तर।

विशेष—आचार्य जी हैं।

६१७ आचार्यनामाधार आचार्य—। पत्र तं १९। या ११ \times २ इच्छ। आचार्य-विश्व। विप-वर्ग
२ खल। मे खल \times । पूर्ण। के तं २०२१। अन्तर।

६१८ आचार्यनामाधार अन्तरिक्ष—आचार्य सुखीचन्द्र। पत्र तं २९। या ११ \times ० इच्छ। आचार्य-
विश्व। विप-वर्ग। २ खल २००० अन्तरिक्ष। मे खल \times । पूर्ण। के तं १२३। अन्तर।

६१९ आचार्यनामाधार अन्तरिक्ष—यं आचार्य। पत्र तं २। या १ \times ४६ इच्छ। आचार्य-वर्ग
विप-वर्ग। २ खल १६०० अन्तरिक्ष। मे खल \times । पूर्ण। के तं १। अन्तर।

विशेष—गुप्त अन्तरिक्ष के लिए अन्तरिक्ष की भी। अन्तरिक्ष का नाम आचार्यनामाधार वर्ग है।

६२० आचार्य के विद्यापीठ दोष वर्णन—आचार्य अन्तरिक्ष। पत्र तं २। या ११ \times ७ इच्छ। आचार्य-
विश्व। विप-वर्ग। २ खल तं ७७२। मे खल \times । पूर्ण। के तं २४। अन्तर।

६२१ अन्तरिक्षनामाधार—अन्तरिक्ष। पत्र तं २। या १ \times ७०। आचार्य-वर्ग। विप-
वर्ग। २ खल \times । मे खल तं १२२ वर्णन गुरी ७। पूर्ण। के तं ७२५। अन्तर।

६२२ प्रति स ३। पत्र तं १४। मे खल \times । के तं २४। अन्तर।

विशेष—अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष है।

६२३ अन्तरिक्षनामाधार—अन्तरिक्ष। पत्र तं १२२। या ११ \times ४ इच्छ। आचार्य-वर्ग।
विप-वर्ग। २ खल तं ११० वर्णन गुरी १। मे खल तं ७७२ आचार्य गुरी १४। पूर्ण। के तं ११।
अन्तर।

विशेष—अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष के भी अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष के अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष की।

६२४ प्रति स ३। पत्र तं १२२। मे खल \times । के तं २७। अन्तर।

६२५ प्रति स ३। पत्र तं १२२। मे खल तं १७२ वर्णन गुरी ४। के तं २। अन्तर।

६२६ प्रति स ४। पत्र तं १२२। मे खल तं १६ वर्णन गुरी २२। पूर्ण। के तं १।
अन्तर।

विशेष—पत्र तं २। मे २२ अन्तरिक्ष। गुरी है। अन्तरिक्ष के अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष है—अन्तरिक्ष की अन्तरिक्ष
अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष की भी अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष है।

६२७ प्रति स० ५ । पत्र स० २५ से १२३ । ले० काल X । वै० सं० ११७७ । अ भण्डार ।

६२८ प्रति सं० ६ । पत्र स० १३८ । ले० काल X । वै० सं० ७७ । क भण्डार ।

६२९ प्रति स० ७ । पत्र स० १२८ । ले० काल X । वै० सं० ८२ । ड भण्डार ।

६३० प्रति स० ८ । पत्र सं० ३६ मे ६१ । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० ८३ । ड भण्डार ।

६३१ प्रति स० ९ । पत्र स० ६४ मे १४५ । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० १०६ । छ भण्डार ।

६३२ प्रति स० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० १४६ । छ भण्डार ।

६३३ प्रति स० ११ । पत्र स० १६७ । ले० काल स० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वै० सं० ३१ । व्य भण्डार ।

६३४ प्रति स० १२ । पत्र स० १८१ । ले० काल X । वै० सं० २७० । व्य भण्डार ।

६३५ प्रति स० १३ । पत्र स० १६५ । ले० काल सं० १७१८ फागुण सुदी १२ । वै० सं० ४५२ ।

अ भण्डार ।

६३६ उपदेशसिद्धांतरत्नमाला—भट्टारी नेमिचन्द्र । पत्र स० १६ । प्रा० १२X७३ इच्छ । भाषा—

हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल X । ले० काल स० १६४३ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

६३७ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वै० सं० ७६ । क भण्डार ।

६३८ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल सं० १८३४ । वै० सं० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६३९ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा—भागवत । पत्र स० २८ । प्रा० १२X८ इच्छ । भाषा—

हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १६१२ आषाढ बुदी २ । ले० काल X । पूर्ण । वै० सं० ७५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को स० १६६७ में कानूनाम पोल्यावा ने खरीदा था । यह ग्रन्थ पदकर्मोपदेशमाला का

हिन्दी अनुवाद है ।

६४० प्रति स० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १६२६ ज्येष्ठ सुदी १३ । वै० सं० ८० । ङ भण्डार ।

६४१ प्रति स० ३ । पत्र स० ८६ । ले० काल X । वै० सं० ८१ । क भण्डार ।

६४२ प्रति स० ४ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १६४३ सावण बुदी ३ । वै० सं० ८२ । क भण्डार ।

६४३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल X । वै० सं० ८३ । क भण्डार ।

६४४ प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वै० सं० ८४ । क भण्डार ।

६४५ प्रति स० ७ । पत्र स० ४५ । ले० काल X । वै० सं० ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।

६४६ प्रति स० ८ । पत्र स० ५८ । ले० काल X । वै० सं० ८४ । ड भण्डार ।

६४७ प्रति स० ९ । पत्र स० ५६ । ले० काल X । वै० सं० ८५ । ड भण्डार ।

६४८ उपदेशरत्नमालाभाषा—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र सं० २० । प्रा० १०३X७ इच्छ । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । २० काल स० १६६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वै० सं० ८५ । ङ भण्डार ।

६४३. उदयश रत्ननाम्ना माया—देवीसिंह हृदयका । पत्र नं २ । या ११४ ५२ इत्थ । माया-
हिन्दो पत्र । २ पत्र नं १०२९ मारदा मुदी १ । नै पत्र \times । पूर्ण । वै नं ५६ । क मन्थार ।

विशेष—मारदा मर ने हन्म रचना की गई थी ।

६४४. प्रसि स २ । पत्र नं १६ । नै पत्र \times । वै नं ५५ । क मन्थार ।

६४५. प्रसि स ३ । पत्र नं १६ । नै पत्र \times । वै नं ५६ । क मन्थार ।

६४६. उपसर्गार्थ विवरण—बुराचार्य । पत्र नं १ । या १ ४ \times ५६ इत्थ । माया-मन्थार । विवर-
बम २ पत्र \times । पूर्ण । वै न १९ । क मन्थार ।

६४७. उपसर्गकाचार बोद्धा—आचार्य लक्ष्मीचन्द्र । पत्र नं ३ । या ११ \times ३ इत्थ । माया-
मन्थार । विवर-आचार्य वर्म वर्म । २ पत्र १ नै पत्र नं १३३३ पत्रिका मुदी १३ । पूर्ण । वै नं २३ ।
क मन्थार ।

विशेष—इ व का नाम आचाराचार की है । व लक्ष्मण के पदार्थ प्रतिनिधि की गई थी । विवर
मन्थार किन्म प्रकार है —

स्वस्ति मन्त्र १३३३ वम कालिका मुदी १३ लोके श्री मुनने मरगनीयन्त्र बरान्धारको व विवरली
पट्टे व शक्तिमुक्त लक्ष्मण वंशिन लक्ष्मण पदार्थ बुद्धा आचाराचार वमर्ष मन्थार । वम न २३० । दीजे श्री
लोका २३४ है ।

६४८. प्रसि स ३ । पत्र नं १४ । नै पत्र \times । वै नं ९४५ । क मन्थार ।

६४९. प्रसि स ३ । पत्र नं ११ । नै पत्र \times । वै नं १०१ । क मन्थार ।

६५०. प्रसि स ४ । पत्र नं १२ । नै पत्र \times । वै नं २३४ । क मन्थार ।

६५१. प्रसि स २ । पत्र नं ३ नै पत्र \times । वै नं १३३ । क मन्थार ।

६५२. उपासकाचार— । पत्र नं १३ । या १३ १ इत्थ । माया-मन्थार । विवर-आचार्य
वर्म वर्म । २ पत्र १ नै पत्र १ पूर्ण (१३ परिच्छेद हर) वै नं ४९ । क मन्थार ।

६५३. उपासकाचार्यवम— । पत्र नं ११४-१४१ । या ११ २ इत्थ । माया-मन्थार ।
विवर-आचार्य वर्म । २ पत्र १ नै पत्र १ पूर्ण । वै न ३९ । क मन्थार ।

६५४. उदयशरत्न—स्वर्णचन्द्र विद्याका । पत्र नम्बरा २ । या १ ३ । माया-हिन्दो । विवर-
वर्म पत्र नं १३ मेषु मुदी १ । नै पत्र नं १६ ९ दीयाव मुदी ३ । पूर्ण । वै नं २ । क मन्थार ।

विशेष—दीयाव की दीया के मर्षा उदय के रूप हन्म की रचना का गई ।

६५५. उदयशरत्न—उपसर्ग । पत्र नं २६ । या १७ \times ३ । माया-हिन्दो । विवर-वर्म । २
पत्र नं १६३ । नै पत्र १ पूर्ण । वै नं ४११ । क मन्थार ।

६६२ प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल × । वे० स० १२७ । छ भण्डार ।

६६३ प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० स० १७६ । छ भण्डार ।

६६४ केवलज्ञान का ठौरा " । पत्र स० १ । आ० १२३×५३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६७ । ख भण्डार ।

६६५ क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र स० १२२ । आ० ११३×५३ । भाषा—संस्कृत । विषय—
श्रावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३ । अ भण्डार ।

६६६ प्रति स० २ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १६५६ चैत्र सुदी १ । वे० स० ११५ । क भण्डार ।

६६७ प्रति स० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १७६५ भाद्रपद सुदी ४ । वे० स० ७५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सवाई जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में लिखी गई थी ।

६६८ प्रति स० ३ । पत्र स० २०७ । ले० काल स० १५७७ वैशाख सुदी ८ । वे० स० १८८७ । ट

भण्डार ।

विशेष—'प्रगति सग्रह' में ६७ पृष्ठ पर प्रगति छप चुकी है ।

६६९ क्रियाकलाप । पत्र स० ७ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म
वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २७७ । छ भण्डार ।

६७० क्रियाकलाप टीका । पत्र स० ६१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १५३६ भाद्रपद सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रगति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज माहोगदुर्ग श्री सुलतानगयामुद्दीनराज्ये चन्देरोदेगेमहाशेरखानम्याप्रियमाने नेसरे ग्रामे
शान्तव्य कायस्य पदमसी तत्पुत्र श्री राधो लिखित ।

६७१ प्रति स० २ । पत्र स० ८ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०७ । छ भण्डार ।

६७२ क्रियाकलापवृत्ति । पत्र स० ६६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावक
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १३६६ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १८७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रगति निम्न प्रकार है—

एष क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ॥ छ ॥ छ ॥ सा० पूना पुत्रेण दाजूकेन लिखित श्लोकानामष्टादश-
गतानि ॥ पूरी प्रगति 'प्रगति सग्रह' में पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है ।

६७३ क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह । पत्र स० ८१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—श्रावक धर्म वर्णन । २० काल स० १७८४ भाद्रपद सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०० । अ भण्डार ।

६७४ प्रति स० २ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १८३३ मगसिर सुदी ६ । वे० स० ४२६ । अ
भण्डार ।

प्रारम्भ—सावज्जोगविरुद्ध उक्तिरूप गुणवत् प्राप्तिर्ती ।

रवति भस्सय निदण्णावरण तिगिच्छ गुण धारणा चव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयण निलइहय ।

सावज्जे अज्जोगाणा वज्जणा सेवणत्तणउ ॥२॥

दसण्यारविसोही चउवीसा इच्छाएण विज्जइय ।

अन्वपत्त अगुणा वित्तण इवेण जिणवरिदाण ॥३॥

अन्तिम—मदणभावावद्धा तिव्वणु भावाउ कुणई ताचिव ।

अमुहाउ निरणु वधउ कुणई निव्वाउ मदाउ ॥ ६० ॥

ता एव कायज्ज बुहेहि निच्चपि सक्किलेसमि ।

होई तिव्वकाल सम्म अमक्किने समि मुगइफन ॥ ६१ ॥

चउरगो जिणधम्मो नकउ चउरगमरण मवि नकम ।

चउरगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

इ अजीव पमीयमहारि कीरमइ तमेव अम्लमण ।

भाए सुति सभम वक्क कारण निव्वुइ सुहाण ॥ ६३ ॥

इति चउसरण प्रकरण सपूर्ण । लिखित गणिवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थ ।

६६२ चारभावन । पत्र स० ६ । मा० १० $\frac{१}{२}$ × ९ $\frac{१}{२}$ । आपा—संस्कृत । विसय—धर्म । २० काल ×

स० काल × । पूर्ण । वै० स० १७६ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३ चारित्रसार—श्रीमच्चामु डराय । पत्र स० ६६ । मा० ९ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । आपा—संस्कृत । विषय—

महार धर्म । २० काल × । ले० काल स० १५४५ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वै० स० २४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसयममम्पन्न श्रीमज्जिनयेनभट्टारक श्रीषादपयप्रासादामारित चतुरनुयोगपारावार

पारगधर्मविजयश्रीमच्चामुण्डमहाराजविरचिते भावनासारमग्रहे चरित्रसारे प्रनागारधर्मसमाप्त ॥ अथ सख्या १८५० ॥

स० १५८५ वर्षे वैशाख बुदी ५ भौमवासरे श्री मूलमघे नक्षत्राभाये बलात्कागणे सरम्बतीगच्छे श्रीकु द-

कु दाचार्यान्वये भट्टारकमीपयनदिदेवा तत्तट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्तट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवा तत् शिष्य

भाचार्य श्री मुनिरत्नकीर्ति तदाम्नायाये अण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दोवरी तयो पुत्रा साह

शवर भार्या तक्ष्मी साह अर्जुन भार्या दामातयो पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कर्म्मा तयो पुत्र साह दामा साह

यात्रा भार्या होनी तयो पुत्री रणमल क्षेमराजसा डाकुर भार्या खेत तयो- पुत्र हरराज । सा जालप साह तेजा भार्या

त्पजमिरि पुत्रपौत्रादि प्रभृतीना एतेषा मध्ये सा अर्जुन इद चारित्रसार शास्त्र लिखाप्य सत्पात्राय आर्यसांगाय प्रदत्त

लिखित ज्योतिगुणा ।

६१४ प्रति सं ८ । वचन १४१ । मे वचन १६३३ वालिय मुदी ४ । वे सं १११ । क
मन्सार ।

विमैर—वा कुनीचर मे विनवावा ।

६१५ प्रति सं ३ । वचन ७० । मे वचन १२२ वंगनिर मुदी २ । वे सं १०३ । क
मन्सार ।

६१६ प्रति सं ४ । वचन ३२ । मे वचन ५ । वे सं ३९ । क मन्सार ।

विमैर—वहा वही वही अगो के वही वी विने हुने ॥

६१७ प्रति सं ५ । वचन ६६ । मे वचन १७५६ वरगिर मुदी ५ । वे सं ११२ । क
मन्सार ।

विमैर—हीरागुटी मे वरगिरि हुई ।

६१८ वारिक्रमाय मन्सा—मन्सावावा । वचन १७ । वा १२७६ । मन्सा—हिमी (वच) । विमैर—वर्म ।
वचन १७१ । मे वचन ५ । वचन १७३ । वे सं १०३ । क मन्सार ।

६१९ प्रति सं ३ । वचन १६ । मे वचन १७७० वालिय मुदी ६ । वे सं १०५ ।
क मन्सार ।

७०० प्रति सं ३ । वचन १३ । मे वचन १६६ कारिक मुदी १३ । वे सं १०६ ।
क मन्सार ।

७०१ वारिक्रमाय— । वचन २२ । वे ७६ । वा ११५२ । मन्सा—वर्गक । विमैर—वाचारमन्
२ वचन ५ । मे वचन १६४३ म्मेक मुदी १ । वचन १७४४ । वे सं २१६४ । क मन्सार ।

विमैर—अवधि विमैर मन्सार है—

मे १६४३ वर्षे वाके १३७ अवर्तवर्ग म्मेकमान वृषणको वमन्सा विपी नामवाले वरगिरि की मन्
सारमन्सावर्तवर्ग विपी विमैर नामी वचन बोनी वीरा विमैर मन्सार ।

७०२ बीबीस वरगिरि मन्सा—बीबीसवर्ग । वचन ६ । वा १५५२६ । मन्सा—हिमी । विमैर—
वर्म । वचन १५५३ मन्सा । मे वचन १५५३ । वचन १५५३ । वे सं १२७० । क मन्सार ।

विमैर—मन्सार मे वचन मे मे विमैरवर्ग के वरगिरि प्रतिमिति वी वी ।

७०३ प्रति सं ३ । वचन ६ । मे वचन ५ । वे सं १११ । क मन्सार ।

७०४ प्रति सं ३ । वचन ११ । मे वचन १६३७ वरगिर मुदी ५ । वे सं १२४ । क मन्सार ।

७०५ प्रति सं ४ । वचन ६ । मे वचन ५ । वे सं १११ । क मन्सार ।

७०६ प्रति सं ५ । वचन ६ । मे वचन ५ । वे सं १११ । क मन्सार ।

७०७ प्रति सं ६ । वचन ५ । मे वचन ५ । वे सं ११२ । क मन्सार ।

७०८ प्रति सं ७ । वचन ६ । मे वचन ५ । वे सं ११३ । क मन्सार ।

विषय-प्राप्तक र्थमि वर्णन । २० काल म० १६३६ । ने० काल x । प्रपूर्णा । ने० म० २०८ । क मण्डार ।

७२३ प्रति स० २। पत्र सं २। ने काल सं १८९९ सालानु सुदी १। वी सं १२। क
अष्टार।

७४ धानानम्बकाचार—साधनी आई राजमल्ल। पत्र सं २३१। या १३४ दक्ष।
भत्या-हिन्दी। विपद-आचार संहिता। २। ने काल सं १९०१। वी सं २३१। क अष्टार।

७०५ प्रति स० २। पत्र सं १३९। ने काल सं १९०१। वी सं २३१। क अष्टार।

७६ प्रति सं २। पत्र सं २। ने काल सं १९०१। वी सं २३१। क अष्टार।

७२७ प्रति स० ३। पत्र सं २३९। ने काल सं १९०२ सालानु सुदी १४। वी सं २३१।
क अष्टार।

७२८ प्रति सं ४। पत्र सं १२। ने काल सं १९०४। वी सं २३७। क अष्टार।

७२९ प्रति स० ५। पत्र सं १। ने काल सं १९०५। वी सं २३९। क अष्टार।

७३१ आनखितामणि—मन्मोहरदास। पत्र सं १। या १८५। वी सं २३९। क अष्टार।
भत्या-हिन्दी। विपद-
भत्या-२। ने काल सं १९०५। वी सं २३९। क अष्टार।

विशेष—१८ एक पत्र नहीं है।

७३२ प्रति सं १। पत्र सं ११। ने काल सं १९०५ सालानु सुदी १। वी सं २३९। क अष्टार।

७३३ प्रति सं ३। पत्र सं ३। ने काल सं १९०५। वी सं २३९। क अष्टार।

विशेष—१२ एक है।

७३४ चक्रवर्तीमणि—भट्टारक आनखितामणि। पत्र सं २७। या १९५। वी सं २३९। क अष्टार।
भत्या-हिन्दी। विपद-भत्या-२। ने काल सं १९०५। वी सं २३९। क अष्टार।

७३५ प्रति स० २। पत्र सं २५। ने काल सं १९०५ सालानु सुदी ५। वी सं २३९। क अष्टार।

७३६ प्रति सं ३। पत्र सं ३५। ने काल सं १९०५ सालानु सुदी ११। वी सं २३९। क अष्टार।

७३७ प्रति सं ४। पत्र सं ४७। ने काल सं १९०५। वी सं २३९। क अष्टार।

७३८ प्रति सं ५। पत्र सं ५०। ने काल सं १९०५। वी सं २३९। क अष्टार।

विशेष—प्रति हिन्दी धर्म छवि है।

७३९ प्रति सं ६। पत्र सं २५। ने काल सं १९०५ सालानु सुदी १२। वी सं २३९। क
अष्टार।

७४० अष्टार—म सोमसुत। पत्र सं १७। या १९५। वी सं २३९। क अष्टार।
भत्या-हिन्दी। विपद-भत्या-२। ने काल सं १९०५। वी सं २३९। क अष्टार।

विशेष—भत्या के २५ पत्र सुदी मिति के हैं।

७४१ प्रति स० २। पत्र सं १। ने काल सं १९०५ सालानु सुदी १३। वी सं २३९। क
अष्टार।

विशेष—प्रति भक्तानन्द और उनके पिता ब्रह्मदास ने प्रतिमिति की थी।

७४१ प्रति स० ३ । पत्र स० १४३ । ले० काल × । वे० स० २८२ । व्य भण्डार ।

७४२ त्रिवर्णाचार । पत्र स० १८ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७८ । ख भण्डार ।

७४३ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० २८५ । अपूर्ण । ड भण्डार ।

७४४ त्रेपनक्रिया । पत्र स० ३ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आवक की क्रियाओं का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८८ । च भण्डार ।

७४५ त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम । पत्र स० ८२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार । २० काल स० १७६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५८५ । छ भण्डार ।

७४६ दण्डकपाठ । पत्र स० २३ । आ० ८×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य (आचार) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६० । अ भण्डार ।

७४७ दर्शनप्रतिमास्वरूप । पत्र स० १६ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—आवक की ग्यारह प्रतिमाओं में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८ दशभक्ति । पत्र स० ५६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × ।
२० काल स० १६७३ आसोज बुदी ३ । वे० स० १०६ । व्य भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियों का वर्णन है । भट्टारक पञ्चनदि के आम्नाय वाले खण्डेलवाय ज्ञातीय सा० गुरु वर में उत्पन्न होने वाले साह भीखा ने चन्द्रकीर्ति के लिए मीजमावाद में प्रतिलिपि कराई ।

७४९ दशलक्षणधर्मवर्णन—प० सदाशिव कासलीवाल । पत्र स० ४१ । आ० १२×५ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० २६५ । ड भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्ड आचकाचार की गद्य टीका में है ।

७५० प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० २६६ । ड भण्डार ।

७५१ प्रति स० ३ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० २६७ । ड भण्डार ।

७५२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

७५३ प्रति स० ५ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १६६३ कार्तिक सुदी ६ । वे० स० १८६ ।
अ भण्डार ।

विशेष—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७५४ प्रति स० ६ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १६८१ । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ७ पत्र बाद में लिखे गये हैं ।

७७७ प्रति स ७। पच तं १४। के नाल \times । के तं १२। क मण्डार।

७७८ प्रति स ८। पच तं १। के नाल \times । के तं १२। क मण्डार।

७७९ प्रति स १। पच तं ४२। के नाल \times । के तं १७०२। क मण्डार।

७८० यशस्वत्युपनिषद्—पच तं २। या १२४ \times ७३३ इह। नाला-हिन्दी। विषय-वर्ण।
नाल \times । के नाल \times । के तं १७०२। क मण्डार।

७८१ प्रति स ३। पच तं १। के नाल \times । के तं १६१७। क मण्डार।

विशेष—यशस्वत्युपनिषद् के प्रतिनिधि की की।

७८२ नालपंचाशत्—पच तं १। या ११ \times ४२ इह। नाला-हिन्दी। विषय-वर्ण।

२ नाल \times । के नाल \times । के तं ३२२। क मण्डार।

विशेष—यशस्वत्युपनिषद् के प्रतिनिधि की की।

भी पचतं कि निराधित कि निराधित पचतं नाला-हिन्दी। विषय-वर्ण।

७८३ नालपंचाशत्—पच तं ७। या १ \times ४३ इह। नाला-हिन्दी। विषय-वर्ण। २ नाल \times ।

३ नाल न १ २९। के तं ३३। क मण्डार।

विशेष—यशस्वत्युपनिषद् के प्रतिनिधि की की। विषय-वर्ण।

७८४ नालपंचाशत्—पच तं १। या ११ \times ४२ इह। नाला-हिन्दी। विषय-वर्ण। २ नाल \times । के नाल \times । के तं ३२२। क मण्डार।

७८५ नालपंचाशत्—पच तं १। या १ \times ४३ इह। नाला-हिन्दी। विषय-वर्ण। २ नाल \times । के नाल \times । के तं ३२२। क मण्डार।

विशेष—यशस्वत्युपनिषद् के प्रतिनिधि की की।

७८६ नालपंचाशत्—पच तं १। या ११ \times ४२ इह। नाला-हिन्दी। विषय-वर्ण।

२ नाल \times । के नाल \times । के तं ३२२। क मण्डार।

विशेष—यशस्वत्युपनिषद् के प्रतिनिधि की की।

७८७ नालपंचाशत्—पच तं १२। या १२ \times ४३ इह। नाला-हिन्दी। विषय-वर्ण।

२ नाल \times । के नाल \times । के तं ३२२। क मण्डार।

विशेष—यशस्वत्युपनिषद् के प्रतिनिधि की की।

७८८ प्रति स २। पच तं ३। के नाल \times । के तं ३२२। क मण्डार।

७८९ नालपंचाशत्—पच तं २। या ११ \times ४३ इह। नाला-हिन्दी। विषय-वर्ण।

२ नाल \times । के नाल \times । के तं ३२२। क मण्डार।

विशेष—यशस्वत्युपनिषद् के प्रतिनिधि की की।

७६८ धर्मचाहना । पत्र स० ८ । आ० ८३×७ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।
न० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२८ । छ मण्डार ।

७६९ धर्मपंचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास । पत्र स० ३ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल स० १८२७ पोप बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ११० । छ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदाम विरचित धर्मपंचविंशतिका
नामशास्त्र समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७० धर्मप्रदीपभाषा—पन्नालाल सधी । पत्र स० २४ । आ० १२×७१/२ । भाषा—हिन्दी । २० काल
म० १६३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । छ मण्डार ।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१ प्रति स० ७ । पत्र स० ६४ । ले० काल म० १६६२ आसोज मुदी १४ । वे० म० ३३७ । छ
मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । प० फनेहलान ने हिन्दी गद्य में ग्रन्थ लिखा है ।

७७२ धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्ति । पत्र म० ५० । आ० १०३×८१ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल म० १८१६ फागुन मुदी ५ । छ मण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नों का उत्तर है । ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रश्नों के उत्तर
हैं— १ दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २ श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३ रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४ तत्त्व
पञ्चा वर्णन । ५ कर्म विपाक पृच्छा । ६ सज्जन वित्त वल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण — तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरुन् ।

अनन्तमहिमास्त्वान् वदे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चोखचन्द के शिष्य राधमल ने जयपुर में शातिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

७७३ धर्मप्रश्नोत्तर । पत्र म० २७ । आ० ८१×४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × ।
वे० काल म० १६३० । पूर्ण । वे० म० ४०० । छ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४ धर्मप्रश्नोत्तरी । पत्र म० ४ में ३४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल स० १६३३ । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । छ मण्डार ।

विशेष—प० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५ धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम । पत्र म० १७७ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—श्रावकों के आचार का वर्णन है । २० काल म० १८८८ । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वे० म०
३३८ । छ मण्डार ।

ध्या । द्वितीय पुत्र पचाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदास तस्य भार्या विहितानेकधर्मकार्यां गृणसिरि इति प्रसिद्धि तत्पुत्रौ चिरंजीविनौ ससार चदराय चदाभिधानौ । अथ साधु केसाकर्य ज्येष्ठा जायाशीलादिगुणरत्नग्वानि साब्दी कमलश्री द्वितीयपुत्रनेकव्रतनियमानुष्ठानकारिका परमश्राविकासाध्वी सूवरीनाभा तत्तनूज सम्यक्त्वालकृतद्वादशव्रतपालक । सधपति हृगराह । तत्कलत्र नानाशीलविनयादिगुणपात्र साधु लाडी नाम धेय । तयो सुतो देवपूजादिपट्क्रिया कमलिनीविकास-नैवमार्त्तण्डापमो जिनदास तन्महिलाधर्मकर्मठ कर्म श्रीरत्तिनाम । एतेषां मय्येसधपति इत्हास्य भार्या जही नाम्ना निजपुत्र प्रातिदासनेमिदासयो न्योपाजितवित्तेन इद श्री धर्मसग्रह पुस्तकपत्रक पठितश्रीमोहाम्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्थं लिखापित मध्यानां पठनाय । निजज्ञानावरणकर्मक्षयार्थं आचन्द्रार्कादिनदत्तात् ।

७८४ प्रति स० २ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वै० स० ३४५ । क भण्डार ।

७८५ प्रति स० ३ । पत्र स० ७० । ले० काल स० १७८६ । वै० स० ३४२ । ड भण्डार ।

७८६ प्रति स० ४ । पत्र स० ६३ । ले० काल स० १८८६ चैत सुदी १२ । वै० स० १७२ । च भण्डार ।

७८७, प्रति स० ५ । पत्र स० ४८ से ५५ । ले० काल स० १६४२ वैशाख सुदी ३ । वै० स० १७३ । च भण्डार ।

७८८ प्रति स० ६ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १८५६ माघ सुदी ३ । वै० स० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—भवतराम के शिष्य सपतिराम हरिवंशदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८९ धर्मसग्रहश्रावकाचार । पत्र स० ६६ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
भावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । वै० स० २०३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा ली है ।

७९०, धर्मसग्रहश्रावकाचार । पत्र स० २ से २७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
भावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ३४१ । ड भण्डार ।

७९१ धर्मशास्त्रप्रदीप । पत्र स० २३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १४६६ । अ भण्डार ।

७९२ धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका । पत्र स० ३६ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्मादेश । २० काल स० १७२४ आषाढ सुदी ३३ । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वै० स० ३३४ । क भण्डार

विशेष—नागबद्ध, धनुषबद्ध तथा चक्रबद्ध कविताओं के विषय हैं । प्रति स० २ के आचार में रचना सवत् है
७९३ प्रति स० २ । ले० काल स० १७२७ कार्तिक सुदी ५ । वै० स० ३४४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सागानेर में हुई थी ।

७९४ धर्मसार—प० शिरोमणिदास । पत्र स० ३१ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । २० काल स० १७३२ वैशाख सुदी ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १०४० । अ भण्डार ।

७९५ प्रति स० २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८८५ फागुण बुदी ५ । वै० स० ४६ । ग
भण्डार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साह ने सवाई माधोपुर में सोनपाल भोंसा में प्रतिलिपि करवाई ।

७६६ परमभूतसूक्तसमूह—आशाधर । पृष्ठ १३ । या ११४२ हज । अला—हलत । निप-
माणाप्यर्थं । र । अल नं १२८१ । नि । अल नं १७७७ पाठोप बृत्ति २ । पूर्व । नि । २८३ ।

विशेष—संस्कृत १८७० वर्षे प्राचीन मुद्रा २ गुणवत्तरी एवं द्वितीय भागवतार्थ स्वरूपः वृद्ध-वपुषः प्रकट-
मित्रानि वरप्रदप्रदानि ॥१८७३॥ ॥ ॥

ध्रुवमङ्गलमस्मैपी रत्न मुद्रिणं विमलान्ता ॥

इति धर्मेण जीवन्निदिन सम्भरसी ॥ बुद्ध्या पाया ॥

संवर इति विधीयन्त्यस्योपमम् कर्माद्यम् ।

एव तुर्भ विरल वज्जीपण्णायवसि ॥ १ ॥

विहलं जी जी पद्म मुहं न पतं न शेषिष्यो विजया ।

अङ्गुष्ठमिदं सप्त पत्तो ह्यङ्गिर्य बोधार्थ ॥ २ ॥

इति विष्णु नाथा ॥ श्री ॥

रत्ना का नाम 'वर्मावुत्त' है। यह भी बायो में विद्यमान है। एक अन्तःस्रावित तथा दूसरा अन्तःस्रावित।

७७. बर्मोपदेशमिदृशप्रकार—सिद्धिदि । पत्र सं ११ । या १२४२ इति । यथा-
मोक्ष । विषय-प्रकार काल । १ काल ४ । २ काल सं १७५१ वाचसुदी १३ । पूर्ण । वे सं ४४ । य
प्रकार ।

७८. अमोघवैराग्यप्रकाश—अमोघवैर्यः पत्र १३। पा १ × २२ इञ्। नावा-नैसर्ग।
विषय-आचार आत्म। र पत्र १। ले काल १३०२ पात्र मुद्रा १३। पूर्ण। वी १३। व ४५। व ४५।

विशेष—रोटा में प्रतिष्ठिति की गई थी।

७६६. बर्मोपदेशवाणवाचार—कल नेमिहत्त । पत्र २१ । पा १ × ४३ इत्त । वाचान्तरप ।
विष्णु-वाचार कल १२ पत्र × ११ कल × १० पत्र । ११ स २४३ । क मन्वार । अन्तिम पत्र गयी है ।

८ अति सुं २। पत्रं ११। नै कल व १ १२ लोह नु १। व १ । अ मारा ।
विशेष—अलीकल नै स्वस्वार्थं अतिमिति वी वी ।

८०१ प्रति स ३। पच १। ले कम \times । वे त २३। व्य न्याय।

उ०२. धर्मोपदेशाभाषकाचार—। १७ व १८। या २३×४३ इंच। माला-मालव। विप-
प्रायशः बाह्य। ८ माल×। १० काष्ठ×। धर्मोपदेश १७ व १८।

विशेष—इति वाच्यम् ।

८३ धर्मोपदेशसंग्रह—सेवागम संग्रह । पृष्ठ ११ । पृष्ठ १२५ । पृष्ठ । पृष्ठ-द्विती ।

विषय-सूची : र. कला लं १३ । वि. गणित X । वि. लं १४५।

विलेप—कृष्ण रसका ली १ २ से हुई मिश्रु कुछ मीठ ग १ ११ से मुर्शि हुआ ।

५५ प्रति स २ । वमर् १९ । वि वल \times । वि र् ३३ । व जगार ।

८८५ प्रति सं ३। पृष्ठ सं १७६। मे. बल्ल X। वे. सं १६३। ड. नम्बर १।

८०६ तरकटु स्वरर्णन—भूधरदाम । पत्र स० २ । मा० १०×१३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—नरत के दुगा का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६४ । अ मण्डार ।

विनिय—दूधर वृत्त पार्ष्वपूरण में है ।

८०७ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० २६६ । अ मण्डार ।

८०८ तरकटु स्वरर्णन । पत्र स० ८ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नरक का वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ६०० । अ मण्डार ।

विनिय—सदानुल कामनोगल ने प्रतिनिधि की ।

८०९ नरकारश्रावकाचार । पत्र स० १४ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावका का आचार वर्णन । २० काल × । ले० काल स० १६१२ बैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ६५ । अ मण्डार ।

विनिय—श्री पार्ष्वनाथ चैतान्य में मंडेलवान गौत्र पानी बार्दी तोन्ह ने श्री प्रायिसा विनय श्री को भेंट किया । प्रमदित निम्न प्रकार है—

मय १६१० वर्षे बैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्ष्वनाथ चैतान्ये श्री मूनसधे सरम्बनी गन्धे बनाका-गणेशे श्रीकु दुगु दाकार्यान्वये मण्डारक श्री पयनदि देवा तत्तट्टे म० श्री शुभचन्द्रदेवा तत्तट्टे म० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्तट्टे गिप्य मण्डसाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्तट्टे गिप्यमण्डनाचार्य श्री नितितर्कीतिदेवा तदाम्नाये मंडेलवानान्वये मांनों गोत्रे काटि तोल्ल इद शास्त्र नववारे श्रावकाचार जानावरणी कर्मक्षय निमित्त मजिना विनेमिरीए दन ।

८१० नष्टोद्विष्ट । पत्र स० ३ । मा० ८×१ इञ्च । भाषा—सम्बृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११३३ । अ मण्डार ।

८११ निजामणि—ब्र० जिनदाम । पत्र स० २ । मा० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६८ । क मण्डार ।

८१२ नित्यकृत्यवर्णन । पत्र स० १२ । मा० १२×१३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४८ । इ मण्डार ।

८१३ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३५६ । इ मण्डार ।

८१४ निर्माल्यदोषपरर्णन—शा० तुलीचन्द । पत्र स० ६ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$ भाषा—हिन्दी । विषय—भावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८१ । क मण्डार ।

८१५ निर्वाणप्रकरण । पत्र स० ६२ । मा० ६ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल स० १८६६ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३१ । ज मण्डार ।

विनिय—गुटका साइल में है । यह जेनेतर ग्रन्थ है तथा इसमें २६ सर्ग हैं ।

८१६ निर्वाणमोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र स० ११ । मा० ११ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । २० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० स० ६७ । ख मण्डार ।

शान्तीय बागइदने सागवाट शुभस्थाने श्री पादिनाथ चैत्यालये हृषट शान्तीय गांधी श्री श्रीपट भार्या धर्मदिस्तगो मुत्त गांधी राभा भार्या रामादे मुत्त हू गर भार्या दादिमदे तान्मा स्वज्ञानावर्णो कर्म क्षमार्थ लियाप्य दयं पवकिगतिवा दत्ता ।

८२७ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८८ । ले० काल म० १६३८ सापाड़ मुदी ६ । वे० म० १४ । अ भण्डार

विशेष—बैराठ नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

८२८ प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ । ले० काल X । प्रपूर्णा । वे० सं० ४१८ । अ भण्डार ।

८२९ प्रति सं० ११ । पत्र सं० ११ मे १४६ । ले० काल X । प्रपूर्णा । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

८३० प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७६ । ले० काल X । प्रपूर्णा । वे० सं० ४२० । अ भण्डार ।

८३१ प्रति सं० १३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल X । प्रपूर्णा । वे० सं० ४२१ । अ भण्डार ।

८३२ प्रति सं० १४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल म १६८२ पौष मुदी १० । वे० सं० २६० । अ भण्डार

विशेष—यही कहीं कठिन दादा के मर्त्य भी दिये हैं ।

८३३ प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६८ । ले० काल म० १७३२ सावण मुदी ६ । वे० सं० ४६ । अ भण्डार ।

विशेष—पटित मनाहरदास ने प्रतिलिपि कराई ।

८३४ प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३७ । ले० काल म० १७३४ मासिक मुदी ११ । वे० सं० १०८ । अ भण्डार ।

८३५ प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल X । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सामान्य सस्वृत टीका सहित है ।

८३६ प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल म० १५८५ बैशाख मुदी १ । वे० सं० २१२० । अ भण्डार ।

विशेष—१५८५ वर्ष बैशाख मुदी १५ सोमवार श्री बाटालासे माथारणिके (माथुरात्वे) पृष्णरगणे भट्टारक श्री हमचन्द्रदेव । तत् ।

८३७ पद्मनदिपचरिशतिटीका । पत्र सं० २०० । मा० १३X५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल X । ले० काल सं० १६५० भाद्रवा मुदी ३ । प्रपूर्णा । वे० सं० ८२३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नहीं है ।

८३८ पद्मनदिपक्षीसीभाषा—जगतराय । पत्र सं० १८० । मा० ११३X५ इअ । भाषा—हिन्दी । २० काल सं० १७२२ फागुण मुदी १० । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना श्री गङ्गजेव के शासनकाल मे प्रागरे मे हुई थी ।

८३९ प्रति सं० २० । पत्र सं० १७१ । २० काल सं० १७५८ । वे० सं० २६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

८४० पञ्चविंशतीतीयापा—यथाज्ञात विभूषण । वन नं ४४१ । मा १४०४ । दम । यथा-
विहीन । विषय-सर्व । ८ वन नं ११११ नैपथिद्वयी ३ । मे वन ४ । पर्वत । मे वं ४४१ । कवय्या-

विशेष—इन सब की वसतिरा निजना कालचक्रों के पुनर्वापसीकालों के प्रारम्भ की थी। निज
मूर्ति तक निजने के पश्चात् कालचक्र की मूर्ति हुई। पुनः कालचक्र ने सब मूर्ति विना। कालचक्र अनि न
प्रकार न विना था।

८४१ प्रवि स २ । यत् नं ४१७ । नै यत् नं ४१७ । ५ यत् नं ४१७ ।

८४२ प्रतिज्ञा ३। यत्नं १२०। मे यत्नं १२४४ बीजपुरी १। मे ४ ४१०। क
मन्त्रः।

८२३. पञ्चनेत्रपञ्चसीमायाः—। वनं ३७। या ११५०३ इति। माता-पिता। पिता-
वन। १ वन \times १ नै वन \times । वनं १। वे १ ४१५। क. अन्तर।

८५४ पञ्चमविभागप्रकार—पञ्चमवि। पत्र सं ४ से २२। या ११३×१३ इंच। कला-उत्पत्ति।
विषय—प्रकार प्रत्येक १८ पत्र × १ से पत्र सं ११२३। पत्र सं ४ से २२। कलाप्रकार

का० ३३. प्रति सं० २। पत्र सं० १। दि० २२। वि० कल० ४। कल० १। वि० २२। वि० २२। वि० २२।

८४६ परीक्षावर्तमान—। प्रश्न १। भा १ X२ इका। वाता-हृदी। विषय-मर्मः।
 भाग X। म. भाग X। प्रश्न १। भा १ X२ इका। वाता-हृदी। विषय-मर्मः।

विशेष—सोम राशि का संज्ञक भी है ।

८५६. पुष्पीसेख—। वष सं २। भा १ ×४ इह। नावा-साहय। निरव-वर्ष। रं वज्र ×।
म वज्र ×। व सं १५०। पूर्ण। अ वधवार।

५८८ शुक्रार्धसिद्धिपुत्राय—अमृतमन्त्रायार्थे। वन नं १२। धा १३ × २३ इत्त। गन्ना-मैत्रव
विद्य-वर्ग। ९ गन्ना × ३ गन्ना नं १३०० मंत्रादिपुत्री ३। ३ नं १३। अन्नाद।

विशेष—आचार्य नवकलीश के विषय आचार्यन के कानपुर के प्रतिनिधि भी थे ।

५५६. प्रति सत्र २। वषर् २। नि काल ४॥१॥ वि ल ३२। अ वषात्।

प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। दि० कलह ११ ११। वी० सं० १०००। अ० मन्त्रालय।

६२१ प्रसिद्ध ४। पत्र नं २ । दि. ११/४/५६ । वि. सं ४७१ । क. म. म. १ ।

विशेष—सभीमें के ऊपर नीचे संलग्न टीका दी है ।

२२. प्रति स २। पत्र लं । नि काल X । नि लं ४०२ । क मण्डार ।

एक. प्रति सं. ५। पत्र सं. १४। के. पाठ X। के. सं. १५। क. पाठ।

निर्देश—अग्नि आश्रयेण है । अन्तः भव दुष्टरा नाश विष भक्षण एतत्तु भी विद्या हुया है ।

८४४ प्रति स० ७ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८१७ भादवा बुदी १३ । वे० स० ६८ । छ
भण्डार ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका महित है तथा जयपुर में लिखी गई थी ।

८४५ प्रति स० ८ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३३१ । ज भण्डार ।

८४६ पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—प० टोडरमल । पत्र स० ६७ । आ० ११३×५ इच्छ । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १८२७ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ४०५ । अ भण्डार ।

८४७ प्रति स० ७ । पत्र स० १०५ । ले० काल स० १६५२ । वे० स० ४७३ । ड भण्डार ।

८४८ प्रति स० ३ । पत्र स० १४८ । ले० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २ । वे० स० ११८ । झ
भण्डार ।

८४९ पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—भूधरदास । पत्र स० ११६ । आ० ११३×८ इच्छ । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल स० १६५२ । पूर्ण । वे० स० ८७३ । क

८६० पुरुषार्थसिद्धयुपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र स० १३६ । आ० १३×७ इच्छ । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १८७१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७२ । क भण्डार ।

८६१ पुरुषार्थानुशासन—श्री गोविन्द भट्ट । पत्र स० ३८ से ६७ । आ० १०×६ इच्छ । भाषा—
मस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल स० १८५३ भादवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ८५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रणति विस्तृत दी हुई है । ग्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६२ प्रति स० २ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । वे० स० १७६ । अ भण्डार ।

८६३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७१ । ले० काल × । वे० स० ४७० । क भण्डार ।

८६४ प्रतिक्रमण । पत्र स० १३ । आ० १२×५ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों
की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३१ । च भण्डार ।

८६५ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३२ । च भण्डार ।

८६६ प्रतिक्रमण पाठ । पत्र स० २६ । आ० ६×६ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय किये हुये
दोषों की आलोचना २० काल × । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वे० स० ३२ । ज भण्डार ।

८६७ प्रतिक्रमणसूत्र । पत्र स० ६ । आ० ६×६ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों
की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६८ । अ भण्डार ।

८६८ प्रतिक्रमण । पत्र स० २ से १८ । आ० ११×५ इच्छ । भाषा—मस्कृत । विषय—किये हुये
दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६६ । ट भण्डार ।

८६९ प्रतिक्रमणसूत्र—(धृति सहित) । पत्र स० २२ । आ० १२×४ इच्छ । भाषा—प्राकृत
मस्कृत । विषय किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६० । घ भण्डार ।

८८१ प्रति स० ३ । पत्र स० २३१ मे ४६० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० ६८६ । च भण्डार ।

८८२ प्रश्नोत्तरश्रावकाचार । पत्र स० ३३ । ग्रा० ११३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गय । विषय—

आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८३२ । पूर्णा । वै० स० ११६ । गय भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजगीरि ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३ प्रति स० २ । पत्र स० १३० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० ६४७ । च भण्डार ।

८८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३०० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० ५१८ । ड भण्डार ।

८८५ प्रति स० ४ । पत्र स० ३०० । ले० काल × । अपूर्णा । वै० स० ५१६ । ड भण्डार ।

८८६ प्रश्नोत्तरोपामकाचार—भ० मन्त्रकीर्ति । पत्र स० १३१ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल स० १६६४ फागुण सुदी १० । पूर्णा । वै० स० १८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थग्रन्थ मध्या २६०० ।

प्रशस्ति—संवत् १६६१ वर्षे फागुण सुदी १० सोमे विराट्ने पनवाडनगरे श्री चन्द्रप्रमचैत्यालये श्री काष्ठासधे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राममेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मीमेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीममेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयमेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयमेनदेवा भ० श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रत्नभूषणदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्तिस्तन्दिप्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखित ।

८८७ प्रति स० २ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १६६६ पौष सुदी १ । वै० स० १७४ । अ भण्डार ।

८८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १८८१ मगसिर सुदी ११ । वै० स० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में जैतराम साह के पुत्र श्योजीलाल की भार्या ने प्रतिलिपि कराई । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में अवावती (आमेर) बागार में स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे जती ननसागर के सिद्ध मन्त्रालाल के यहां सवाईराम गोधा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के घडों में (१२वें दिन पर) रमाजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में स० १८६३ में भेंट की ।

८८९ प्रति स० ४ । पत्र स० १२८ । ले० काल स० १६०० । वै० स० २१७ । अ भण्डार ।

८९० प्रति स० ५ । पत्र स० २१६ । ले० काल स० १६७६ आसोज सुदी ५ । वै० स० २११ । अ भण्डार ।

विशेष—नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—संवत् १६७६ वर्षे आसोज वदि शनिवासरे रोहणी नक्षत्रे भोजावादनगरे राज्यश्रीराजाभावसिंह राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलमधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्तिस्तत्पट्टे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकातिस्तदाम्नाये गोधा गोत्रे जात्रक जनसदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरण-निरत-चित्त साह श्री धनराज

६०१ प्रति स० १६ । पत्र म० १४५ । ले० काल X । वे० स० १०६ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र वाद में लिखा हुआ है ।

६०२ प्रति स० १७ । पत्र स० ७३ । ले० काल म० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० स० १०८ । छ मण्डार ।

६०३ प्रति स० १८ । पत्र म० १०४ । ले० काल स० १७७४ फागुण बुदी ८ । वे० स० १०९ ।

विशेष—पाचोलास में चातुर्मास योग के समय प० सोमाविमल ने प्रतिलिपि की थी । स० १८२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल में घासीराम छाबड़ा ने मागानेर में गोधों के मन्दिर में चढ़ाई ।

६०४ प्रति स० १९ । पत्र स० १९० । ले० काल स० १८२६ माघिर बुदी १४ । वे० स० ७८ ।

छ मण्डार ।

६०५ प्रति स० २० । पत्र म० १३२ । ले० काल X । वे० म० २२३ । छ मण्डार ।

६०६ प्रति स० २१ । पत्र म० १३१ । ले० काल स० १७५९ मगसिर बुदी ८ । वे० स० ३०२ ।

विशेष—महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७ प्रति स० २२ । पत्र म० १६४ । ले० काल स० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० म० ३७५ ।

छ मण्डार ।

६०८ प्रति स० २३ । पत्र म० १७१ । ले० काल म० १६८८ पौष सुदी ५ । वे० स० ३४३ ।

छ मण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये पहाड्या साह श्री कान्हा इद पुस्तक लिखापित ।

६०९ प्रति स० २४ । पत्र स० १३१ । ले० काल X । वे० स० १८७३ । छ मण्डार ।

६१० प्रश्नोत्तरोद्धार । पत्र नव्या ५० । भा०—१०^३×५^३ इन्व । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—X । ले० काल—स० १९०५ नावन बुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० १९९ । छ मण्डार ।

विशेष—बूख नगर में म्योजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६११ प्रशस्तिकाशिका—वालकृष्ण । पत्र सख्या १९ । भा० ६^३×४^३ इन्व । भाषा—संस्कृत ।

विषय—धर्म । २० काल—X । ले० काल—स० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वे० म० २७८ । छ मण्डार ।

विशेष—वस्तराम के शिष्य शम्भु ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—नत्वा गणपति देव सर्व विघ्न विनाशन ।

गुरु च करुणानाथं ग्रहानदामिधानक ॥१॥

प्रशस्तिकाशिका दिव्या वालकृष्णेन रच्यते ।

सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ॥ २ ॥

चतुर्णामपि वर्णानां क्रमतः कार्यवारिका ।

नित्ये सर्वविघ्नाधि प्रबोधाय प्रशस्तिका ॥ ३ ॥

देवनागरी) विषय—किये हुए दोषों की आलोचना २० काल—X । ले० काल—X । अपूर्ण । वे० स० १६६८ । ट भण्डार ।

६२७ प्रायश्चित्त समुच्चय टीका—नदिगुरु । पत्र स० ८ । आ० १२X६ । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल—स० १६३४ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ११८ । ख भण्डार ।

६२८ प्रोपध दोष वर्णन । पत्र स० १ । आ० १०X५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—X । ले० काल—X । वे० स० १४७ । पूर्ण । छ भण्डार ।

६२९ वार्हस अभक्ष्य वर्णन—वाचा दुलीचन्द्र । पत्र स० ३२ । आ० १०३X६३ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—श्रावको के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल—स० १६४१ वैशाख सुदी ५ । ले० काल—X । पूर्ण । वे० स० ५३२ । क भण्डार ।

६३० वार्हस अभक्ष्य वर्णन X । पत्र स० ६ । आ० १०X७ । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावको के न खाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल X । ले० काल । पूर्ण । वे० स० ५३३ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति मशोधित है ।

६३१ वार्हस परीपह वर्णन—भूपरदास । पत्र स० ६ । आ० ६X४ इच्छ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—मुनियों द्वारा सहन किये जाने योग्य परीपहों का वर्णन । २० काल १८ वीं शताब्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६६७ । अ भण्डार ।

६३२ वार्हस परीपह X । पत्र स० ६ । आ० ६X४ । भाषा—हिन्दी । विषय—मुनियों के सहने योग्य परीपहों का वर्णन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६६७ । ड भण्डार ।

६३३ वालाविवेध (एमाकार पाठ का अर्थ) X । पत्र स० २ । आ० १०X४३ । भाषा—प्राकृत, हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि माणिक्यचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६३४ बुद्धि विलास—बखतराम साह । पत्र स० ७५ । आ० ७X६ । भाषा—हिन्दी । विषय—आधार शास्त्र । २० काल स० १८२७ मगसिर सुदी २ । ले० काल स० १८३२ । पूर्ण । वे० स० १८८१ । ट भण्डार ।

६३५ प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६३ । वे० स० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

६३६ ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन X । पत्र स० ४ । आ० ८X५ । भाषा—हिन्दी । विषय—वर्म । २० काल X । ले० काल X । वे० पूर्ण । वे० स० २३१ । झ भण्डार ।

६३७ बोधसार X । पत्र स० ३७ । आ० १२X५३ । भाषा—हिन्दी विषय—धर्म । २० काल X । १ काल स० १६२८ । काती सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १२५ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ बोधसूत्र की ग्राम्याय की मान्यतानुसार है ।

मस्या लेखन माहणु विद्यापीठियमोपि च ।

प्रतिष्ठा लम्बने धर्ममनामायेन बीमता ॥ ४ ॥

६१२ प्रायश्चित्त विधि—। पत्र सं ४ । या १३५३ इति । भाषा—महान । विषय—भाषा ।
१ बाल-५ । ले बाल-५ । पूर्ण । के सं १६१६ । अ मन्थार ।

६१३ प्रायश्चित्त विधि—। पत्र सं ३ । या १३५३ इति । भाषा—महान । विषय—विषय ।
भाषा की प्रतीति । १ बाल-५ । ले बाल-५ । पूर्ण । के सं ३३२ । अ मन्थार ।

६१४ प्रायश्चित्त विधि—महान्तर विधि । पत्र सं १ । या १३५३ इति । भाषा—महान ।
विषय—विषय । भाषा की प्रतीति । १ बाल-५ । ले बाल-५ । पूर्ण । के सं ३३२ । अ मन्थार ।

६१५ प्रति सं २ । पत्र सं २६ । ले बाल-५ । के सं ३३२ । अ मन्थार ।

विषय—१ पत्र सं भाषा लम्बने की के प्रतीति बाली का संज्ञा है ।

६१६ प्रति सं ३ । पत्र सं ३ । ले बाल-५ । १३५३ बीमता १ । के सं ११ । अ मन्थार ।

विषय—धर्म प्रतीति में बीमता के अतिरिक्त बाली प्रतीति की थी ।

६१७ प्रति सं ४ । ले बाल-५ । के सं ३३३ । अ मन्थार ।

६१८ प्रति सं ५ । ले बाल-५ । १३५३ । के सं २५४ । अ मन्थार ।

विषय—भाषा में महान्तर में प्रतीति (भाषा की) या प्रतीति की ।

६१९ प्रति सं ६ । ले बाल-५ । १३५३ । के सं १ । अ मन्थार ।

विषय—बाल लम्बने में बीमता के अतिरिक्त बीमता के प्रतीति की थी ।

६२० प्रायश्चित्त विधि—। पत्र सं ३६ । या १३५३ इति । भाषा—महान । विषय—विषय ।
भाषा की प्रतीति । १ बाल-५ । ले बाल-५ । १ । पूर्ण । के सं १२ । अ मन्थार ।

विषय—१२ का भाषा २६ का पत्र नहीं है ।

६२१ प्रायश्चित्त विधि—। पत्र सं ६ । या १३५३ इति । भाषा—महान । विषय—विषय ।
भाषा की प्रतीति । १ बाल-५ । ले बाल-५ । पूर्ण । के सं १३ । अ मन्थार ।

६२२ प्रायश्चित्त विधि—महान्तर विधि । पत्र सं १ । या १३५३ इति । भाषा—महान । विषय—
विषय । भाषा की प्रतीति । १ बाल-५ । ले बाल-५ । पूर्ण । के सं १३ । अ मन्थार ।

६२३ प्रति सं २ । पत्र सं २ । ले बाल-५ । के सं २५३ । अ मन्थार ।

विषय—प्रतीति भाषा का भाषा प्रतीति है ।

६२४ प्रति सं ३ । ले बाल-५ । १३५३ । के सं ३३ । अ मन्थार ।

६२५ प्रायश्चित्त शास्त्र—महान्तर । पत्र सं १५ । या १३५३ इति । भाषा—महान ।
विषय—विषय । भाषा की प्रतीति । १ बाल-५ । ले बाल-५ । पूर्ण । के सं १३३ । अ मन्थार ।

६२६ प्रायश्चित्त शास्त्र—। पत्र सं ६ । या १३५३ इति । भाषा—महान्तर (भाषा)

६५१ भावद्रीपक—जोधराज गोदीका । पत्र स० १ मे २७७ । आ० १०×५३ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६५६ । च भण्डार ।

६५२ प्रति स० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल—स० १८५७ पौष सुदी १५ । अपूर्ण । वे० स० ६५६ । च भण्डार ।

६५३ प्रति स० ३ । पत्र स० १७३ । २० काल × । ले० काल—स० १९०४ कार्तिक सुदी १० । वे० स० २५४ । ज भण्डार ।

६५४. भावनासारसंग्रह—चामुण्डराय । पत्र स० ४१ । आ० ११×४३ इञ्च । भापा—नम्बूत । विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—स० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी मष्टमी भोमवामरे लिखित बाई धानी कर्मक्षयनिमित्त ।

६५५ प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १५३१ फागुण बुदी ३३ । वे० स० २११६ । ट भण्डार ।

६५६ प्रति स० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल—× । अपूर्ण । वे० स० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—७४ मे आगे के पत्र नहीं ह ।

६५७ भावसंग्रह—देवसेन । पत्र स० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भापा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—स० १६०७ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रथ कर्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे । प्रशस्ति निम्नप्रकार है —

संवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विद्यालानक्षत्रे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढ महादुर्गे महाराज श्री रामचन्द्रराजप्रवर्तमाने श्री मूलसधे वलान्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्ये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा ।

६५८ प्रति स० २ । पत्र स० ४५ । ले० काल—स० १६०४ भाद्रपद सुदी १५ । वे० स० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है —

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भौमदिने शतभिषा नाम नक्षत्रे घृतनाम्नियोगे सुरियारण मनेमसाहिराज्यप्रवर्तमाने सिकंदरावादशुमस्थाने श्रीमत्पाण्डासधे मायुरान्ये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्ति देवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लकीर्ति तस्य शिक्षणी वा० मोमा योग्य भावसंग्रहाख्य शास्त्र प्रदत्त ।

६५९ प्रति स० ३ । पत्र स० २८ । ले० काल—× । वे० स० ३२७ । अ भण्डार ।

६६० प्रति स० ४ । पत्र स० ४६ । ले० काल—स० १८६४ पौष सुदी १ । वे० स० ५५८ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६३८. मगधहरीता (कृष्णामुन सभा)---X। वनं ५३ ते ५६। या ६३X १३। यग-
हिन्दी। विषय-वैदिक गणित। १ वा ५। ते वा ५। यगर्ण ६३ नं १३२६। ६ वा ५।

६३२ मण्डली आराधना—शिवाचार्य। वन तं ३२१। वा ११ × १२ इति। अथा—अथ।
विषय—अनि वर्ग मण्डल। २ वान ×। ते वान ×। पूर्ण वै तं २४२। क अथा।

६४ प्रविष्टि सं. २। वर्ष नं. ११९। ले. बाल ५८। ने. तं. ३३। क. मण्डार।

विषय—यस २६ एक संसुत के माताओं के ऊपर परामर्शाधी यथा दिने हुए है ।

६४१ प्रति स. ३। पत्र नं. १३। नि. पत्र \times । वि. नं. २२६ का अपाठ।

विशेष—आरम्भ एवं पश्चिम बंगाल में लिखकर भेजने के हैं ।

६४२. श्रवण सं ४।२५६।ने काल X।ने सं २५ च अण्णार।

विशेष—नोस्ट्रम के पत्रोंवाली याद दिने हुये ह ।

६५३ प्रति स ३। पत्र नं ३१ के बल \times । धर्म्यं वि नं २३। अ भ्याद।

निर्देश—हम १ संसद में दोरा भी भी है ।

६४४ मंगलती आराधना टीका—अष्टाश्विनीसूरि जीर्णविग्रह । पत्र ४१४ । आ ११४
 १३३ । आरा—तत्पठ । विग्रह—पुनि पर्व वर्जित । र. नाम ४ । ले. नाम ४ । १३३ नाम पुनः ४ पूर्ण । १३
 २५ । अ. अकार ।

१४४ अदि सं २। पत्र सं ११२। मे मल सं १२८७ ईशान कुरो १। मे सं १११।
 ५५ मल सं १।

१४६ भगवती आराधना माध्य—५ सहास्रनामकास्त्रीवाक्य। पृष्ठ १७। वा १२ × २२
१४७। जन्म-दिष्टी। विपक-वर्ग। १ वाक्य ११। १० वाक्य × १० पृष्ठ। १० नं १४८। १० वाक्य।

६५०. प्रवि.स. २। पत्र.नं. ११। ले.कम.सं. १०२३ माह.पु.११। व.सं. २१। ४
अध्या.।

१५८. प्रवि. सं. ३। वन. सं. ७२२। नि. काल. सं. ११११. लेख. मुद्रा. सं. १११। प.
पन्ना. १।

६५६. अति स ४। पत्र स २७ से २९६। स ७७७ स १६२ देवाय मुरी १। धर्म।
के स २९६। अ मन्त्र।

विशेष—यह ग्रन्थ हीरात्मजजी बचका गा है। विंती १६४२ भाग सुनी १ को आचार्य जी के गयेक्षण
 ग्रन्थ के अद्यात्म में पढ़ाई।

६४ प्रवि स २ १ पत्र सं २५ १ ले कल × । कर्णाली वि वि सं ५ २ ३ अ मन्तर ।

६२६ प्रवि.स.क.। पत्र.सं. ११६/१। पत्र.सं. X। प्रमुख.। दि.सं. १९९०। ६ नवम्बर।

६७४ प्रति स० २ । पत्र स० १७० । ले० काल- \times । वे० स० ६७ । ग भण्डार ।

६७५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६१ । ले० काल-स० १८२८ । वे० स० ६६४ । च भण्डार ।

६७६ प्रति स० ४ । पत्र स० ३७ मे १०५ । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० स० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्राग्भ के ३७ पत्र नहीं हैं । पत्र फटे हुये हैं ।

६७७ मिथ्यात्वघटन । पत्र स० १७ । प्रा० ११५५ रत्न । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।

१० काल- \times । ले० काल- \times । अपूर्ण । वे० स० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ मे प्रागे पत्र नहीं है ।

६७८ प्रति स० २ । पत्र स० ११० । ले० काल- \times । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । ङ भण्डार ।

६७९ मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र स० ३६८ । प्रा० १२५५ इन्द्र । भाषा—
प्राकृत संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । १० काल- \times । ले० काल-स० १८२६ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण ।
वे० स० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिनिधि की थी ।

६८० प्रति स० २ । पत्र स० ३७३ । ले० काल- \times । वे० स० ५८० । क भण्डार ।

६८१ प्रति स० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल- \times । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—५१ मे प्रागे पत्र नहीं है ।

६८२ मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र स० १२६ । प्रा० १२३६ इन्द्र । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आचारशास्त्र । १० काल- \times । ले० काल-स० १८२८ । पूर्ण । वे० स० १६२ ।

विशेष—प्रतिनिधि जयपुर मे हुई थी ।

६८३ प्रति स० २ । पत्र स० ८५ । ले० काल- \times । वे० स० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ८१ । ले० काल- \times । वे० स० २७७ । च भण्डार ।

६८५ प्रति स० ४ । पत्र स० १५५ । ले० काल- \times । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

६८६ प्रति स० ५ । पत्र स० ६३ । ले० काल-स० १८३० पोष बुदी २ । वे० स० ६३ ।
ज भण्डार ।

विशेष—प० चोखचंद के दिव्य प० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७ प्रति स० ६ । पत्र स० १८० । ले० काल-स० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० स० १०१ ।

ब भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वसुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि की था ।

६८८ प्रति स० ७ । पत्र स० १३७ । ले० काल-स० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० स० ४५५ ।

ब भण्डार ।

६८९ मूलाचारभाषा—ऋषभदास । पत्र स० ३० मे ६३ । प्रा० १०५८ इन्द्र । भाषा—हिन्दी ।
विषय—आचार शास्त्र । १० काल-स० १८८८ । ले० काल-स० १८६१ । पूर्ण । वे० स० ६६१ । च भण्डार ।

६७४ प्रति म० २ । पत्र स० १७० । ले० काल- \times । वे० म० ६७ । ग भण्डार ।

६७५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६१ । ले० काल-स० १८२८ । वे० म० ६६४ । च भण्डार ।

६७६ प्रति स० ४ । पत्र स० ३७ मे १०५ । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० स० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नहीं हैं । पत्र फटे हुये हैं ।

६७७ मित्यात्वच्यटन । पत्र म० १७ । ग्रा० ११ \times ५ दृष्ट । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।

१० काल- \times । ले० काल- \times । अपूर्ण । वे० म० १८६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ मे ग्रा० पत्र नहीं है ।

६७८ प्रति म० २ । पत्र म० ११० । ले० काल- \times । अपूर्ण । वे० स० ५६८ । ड भण्डार ।

६७९ मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र म० ३६८ । ग्रा० १२ \times ५ $\frac{३}{४}$ दृष्ट । भाषा—
प्राकृत सम्भृत । विषय—प्राचार शास्त्र । १० काल- \times । ले० काल-म० १८२६ मगतिर बुदी ११ । पूर्ण ।
व० म० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८० प्रति म० २ । पत्र स० ३७३ । ले० काल- \times । वे० म० ५८० । क भण्डार ।

६८१ प्रति म० ३ । पत्र स० १७१ । ले० काल- \times । अपूर्ण । वे० म० ५६८ । ख भण्डार ।

विशेष—५१ मे ग्रा० पत्र नहीं है ।

६८२ मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र स० १२६ । ग्रा० १२ $\frac{३}{४}$ \times ६ दृष्ट । भाषा-संस्कृत ।
विषय-प्राचारशास्त्र । १० काल- \times । ले० काल-म० १८२८ । पूर्ण । वे० स० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर मे हुई थी ।

६८३ प्रति स० २ । पत्र स० ८५ । ले० काल- \times । वे० स० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ८१ । ले० काल- \times । वे० म० २७७ । च भण्डार ।

६८५ प्रति स० ४ । पत्र स० १५५ । ले० काल- \times । वे० म० ६८ । छ भण्डार ।

६८६ प्रति स० ५ । पत्र म० ६३ । ले० काल-स० १८३० पीप सुदी २ । वे० स० ६३ ।

अ भण्डार ।

विशेष—५० चोखद के शिष्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७ प्रति स० ६ । पत्र स० १८० । ले० काल-म० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० स० १०१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वमुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८८ प्रति स० ७ । पत्र स० १३७ । ले० काल-स० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० स० ४५५ ।

अ भण्डार ।

६८९ मूलाचारभाषा—ऋषभदास । पत्र म० ३० मे ६३ । ग्रा० १० \times ८ दृष्ट । भाषा-हिन्दी ।

विषय-प्राचार शास्त्र । १० काल-स० १८८८ । ले० काल-स० १८६१ । पूर्ण । वे० स० ६६१ । च भण्डार ।

मुनि धर्म वर्गन । २० काल-× । ने० काल-× । पूर्ण । वे० स० १२० । अ भण्डार ।

१००६ रत्नकरण्डश्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र । पत्र स० ७ । भा० १०३×११ इत्य ।

नापा-मस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ने० काल-× । वे० स० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । य का नाम उपानकाध्याय तथा उपानकाचार भी है ।

१००७ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ने० काल-× । वे० स० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कही कही सस्कृत में टिप्पणिया दी हुई है । १६३ श्लोक हैं ।

१००८ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ने० काल-× । वे० स० ६१२ । अ भण्डार ।

१००९ प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ने० काल-स० १६३८ माह सुदी १० । वे० स०

१५६ । अ भण्डार ।

विशेष—कही २ सस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१०१० प्रति स० ५ । पत्र स० ७७ । ने० काल-× । वे० स० ६३० । अ भण्डार ।

१०११ प्रति स० ६ । पत्र स० १४ । ने० काल-× । अपूर्ण । वे० स० ६३१ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२ प्रति स० ७ । पत्र स० ८८ । ने० काल-× । अपूर्ण । वे० स० ६३३ । अ भण्डार ।

१०१३ प्रति स० ८ । पत्र स० ३८-५६ । ने० काल-× । अपूर्ण । वे० स० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४ प्रति स० ९ । पत्र स० १२ । ने० काल-× । वे० स० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५ प्रति स० १० । पत्र स० ४० । ने० काल-× । वे० स० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में पद्मनाभ सघी कृत टीका भी है । टीका स० १६३१ में की गयी थी ।

१०१६ प्रति स० ११ । पत्र स० २६ । ने० काल-× । वे० स० ६३७ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१७ प्रति स० १२ । पत्र स० ८२ । ने० काल-स० १६५० । वे० स० ६३८ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८ प्रति स० १३ । पत्र स० १७ । ने० काल-× । वे० स० ६३९ । अ भण्डार ।

१०१९ प्रति स० १४ । पत्र स० ३८ । ने० काल-× । अपूर्ण । वे० स० २६१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है । सस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२० प्रति स० १५ । पत्र स० २० । ने० काल-× । अपूर्ण । वे० स० २६२ । अ भण्डार ।

१०२१ प्रति स० १६ । पत्र स० ११ । ने० काल-× । वे० स० २६३ । अ भण्डार ।

१०२२ प्रति स० १७ । पत्र स० ९ । ने० काल-× । वे० स० २६४ । अ भण्डार ।

- १०२३ प्रति स० १८। पत्र नं ११। ले बाल- \times । के र्त् २६२। अ मन्थार।
 १ ०४ प्रति स १३। पत्र नं ११। ले बाल- \times । के र्त् ७४। अ मन्थार।
 १ २ प्रति स २। पत्र नं १३। ले बाल \times । के र्त् ७४२। अ मन्थार।
 १ ०६ प्रति स ०१। पत्र नं १३। ले बाल- \times । के र्त् ७४३। अ मन्थार।
 १ २६ प्रति स १०। पत्र नं १। ले बाल- \times । के र्त् ११। अ मन्थार।
 १ ८ प्रति र्त् ३३। पत्र र्त् १। ले बाल- \times । के र्त् १४४। अ मन्थार।
 १ ६ प्रति स २५। पत्र नं १६। ले बाल- \times । अमूर्त्। के र्त् ६२। अ मन्थार।
 १ २ प्रति स० ३५। पत्र र्त् १२। ले बाल- \times । अमूर्त्। के र्त् १२। अ मन्थार।

अ मन्थार।

१ ३१ रत्नकरवडवावकाचार टीका—अभाषण्। पत्र नं ४१। या १ ३ \times २३ रत्न। बाला-
 मन्थार। विषय—आचार शास्त्र। २ बाल- \times । ले बाल- \times । के र्त् ११ आचार मुनी। पूर्ण। के र्त् १११।
 अ मन्थार।

- १ ३० प्रति र्त् २। पत्र नं २१। ले बाल- \times । के र्त् ११३। अ मन्थार।
 १ ३ प्रति र्त् ३। पत्र र्त् ३१-३३। ले बाल \times । अमूर्त्। के र्त् १। अ मन्थार।
 १ ३४ प्रति स ४। पत्र र्त् ३६-३९। ले बाल- \times । अमूर्त्। के र्त् ३९६। अ मन्थार।
 विषय—इतना नाम ज्ञानशास्त्र टीका की है।

- १ ३३ प्रति स ५। पत्र नं १६। ले बाल- \times । के र्त् ११६। अ मन्थार।
 १ ३६ प्रति र्त् ६। पत्र नं ४०। ले बाल- \times । के र्त् १००६ अमूर्त्। के र्त् १०६।

अ मन्थार।

विषय—अष्टादश मुद्राकीर्ति की धारणा है। अतिमूल्य आनीय बीजा बीजोत्पत्ति तत्त्व अक्षरमयी व
 संघटन मात्र अक्षरमयी की भाषा लीखी है व व की अतिविधि वरानर आचार्य वरलीक के किम्ब ह्यलीक के बिने
 बर्मभव विपिन जेट की।

- १ ३७ रत्नकरवडवावकाचार—र्त् सदाशुभ कासलीपाठ। पत्र र्त् १ ४२।
 या १ १ रत्न। बाला- \times । विषय—आचार शास्त्र। २ बाल र्त् १६२ र्त् व मुनी १४।
 ३ बाल र्त् १६४१। पूर्ण। के र्त् १६६। अ मन्थार।

विषय—व व २ बीजली है। १ से ४३३ तथा ४३६ से १ ४२ तक है। प्रति मुद्रा है।

- १ ३८ प्रति र्त् १। पत्र नं २१६। ले बाल- \times । अमूर्त्। के र्त् १२। अ मन्थार।
 १ ३९ प्रति स ३। पत्र नं २१ से १०२। ले बाल- \times । अमूर्त्। के र्त् १४९। अ मन्थार।
 १ ४ प्रति स ४। पत्र नं ४२६। ले बाल-आलीक मुद्रा र्त् १२२१। के र्त् १९९।

अ मन्थार।

- १ ४० प्रति स ५। पत्र र्त् ११। ले बाल- \times । अमूर्त्। के र्त् ६००। अ मन्थार।
 विषय—बीजोत्पत्ति बालक बाले के बिना और अक्षरमुद्रा की केशराली विचारणा—अक्षर व बिना हुआ है।

१८७० प्रति स० ६ । पत्र स० ३४६ । ले० काल-५ । वे० स० १८२ । छ भण्डार ।

विशेष—“इस प्रकार मूलग्रंथ के प्रमाद तै सदामुखदास डेडाका का अग्ने ह्मन तै लिखि ग्रंथ समाप्त किया ।”

अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३ प्रति स० ७ । पत्र स० २२१ । ले० काल-स० १६६३ कार्तिक बुदी ५५ । वे० स० १६८ ।

छ भण्डार ।

१०४४ प्रति स० ८ । पत्र स० ५३६ । ले० काल-स० १६५० वैशाख सुदी ६ । वे० स० ।

झ भण्डार ।

विशेष—इस ग्रंथ की प्रतिलिपि स्वयं मदामुखजी के हाथ में लिखे हुये स० १६१६ के ग्रंथ से सामोद में प्रतिलिपि की गई है । महामुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१०४५ रत्नकरगुहश्रावकाचार भाषा—नथमल । पत्र स० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-स० १६२० माघ सुदी ६ । ले० काल-५ । वे० स० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१०४६ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल-५ । वे० स० ६२३ । क भण्डार ।

१०४७ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल-५ । वे० स० ६२१ । क भण्डार ।

१०४८ रत्नकरगुहश्रावकाचार—सधी पन्नालाल । पत्र स० ४४ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-स० १६३१ पीप बुदी ७ । ले० काल-स० १६५३ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ६१४ । क भण्डार ।

१०४९ प्रति स० २ । पत्र स० ४० । ले० काल-५ । वे० स० ६१४ । क भण्डार ।

१०५० प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल-५ । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

१०५१ प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल-५ । वे० स० १८६ । छ भण्डार ।

१०५२ रत्नकरगुहश्रावकाचार भाषा । पत्र स० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-स० १६५७ । ले० काल-५ । पूर्ण । वे० स० ६१७ । क भण्डार ।

१०५३ प्रति स० २ । पत्र स० ७० । ले० काल-स० १६५३ । वे० स० ६१६ । क भण्डार ।

१०५४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल-५ । वे० स० ६१३ । क भण्डार ।

१०५५ प्रति स० ४ । पत्र स० २८ मे १५६ । ले० काल-५ । अपूर्ण । वे० स० ६८० । छ भण्डार ।

१०५६ रत्नमाला—आचार्य शिवकोटि । पत्र स० ८ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-५ । ले० काल-५ । पूर्ण । वे० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ —

सर्वज्ञ सर्ववाणीश वीर मारमदायह ।

प्रणमामि महामोहशातये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥



नारं यन्मर्षनारैव बंधं यद्द्विद्विष्यति ।

अनेकात्म्यं हि तद्वर्तु वचनं तथा ॥२॥

अन्तिय—ओ मिथं पठति धीमान् एतन्मन्त्राविद्यापरा ।

सामुद्रिकरहस्यो भूतं सिध्दोदित्यनाम्बुबाल् ॥

इति श्री गणेशाय नमः स्वायं विष्णु विपरीत्याचार्य विरचिता एतन्माला समाप्ता ।

१०२० प्रति स० २। पक्ष ३। ने कल-~~X~~। समुदा। वि. नं. २११३। द. नमस्त।

१०१८. एष्यसार—कृष्णसाधार्य । गण सं १ । सा १ १/२ × ३. ३३ । भाषा—मैथिल ।

विषय-प्राचार बाह्य । १. काल-~~X~~ । २. काल-५ दशक । पूर्ण । ३. २५६ । ४. सप्ताह ।

१०५६. प्रति सं २। पत्र सं १। नि कल-४। नि सं ११। ट बगल।

१०६ राष्ट्रि मोक्षन स्वाग बर्षान—। ५४ तं १९। आ १९×४ ५३। प्रता-हिनो।

निषद-भाष्यार साहच १.९ काव- \times मे दाल- \times । दुर्ग । मे ए ४५ । अ नन्तार ।

१ ६१ राजा-भगवान्-पुनः । पृष्ठ १ । आ १२×१५ इति । मन्त्र-संस्कृत । विषय-वर्ग ।

६ बाल- \times । ७ बाल- \times । पूर्ण । ८ ११६९ । अथ भण्डार ।

१६२ शिक्षाविभाग प्रकरणा—। पृष्ठ १६। वा १९४७ इ.स.। भावा-मंडल। रिपन-

माषाद कर्मभ । ए वलि- \times । ते वलि- \times । पूर्ण । ते वलि २७ । व वध्याद ।

१६३ ककुत्थायाविक पाठ ॥ वसु १। या १३५७ हब। जामा-मंसुव। विन्द-वर्ग।

८ दश- \times । नि दश- $\frac{1}{2}$ १ २४। पूर्ण। नि धं ९ २१। ज्ञ यत्नार ।

निर्देश—प्रकाशित—

१ १४ अथवा सुदी १३ को सुनी मघे विगतल बीजाली सिक्किम श्री देवकीकृति माधाराय दीपेय के मद्र सबं हन्ते ।

१५४ प्रतिष्ठान २) गणना १) में कल- \times) में ३) १२४६। यह संख्या।

१६३. मयि सं ३। वष सं १। के काल- \times । के सं १९२। का मन्त्राट।

१६६ अणुसंश्लेषिक—। पत्र सं. १। भा. ११ × २३ इंच। प्रायः-मन्दिर-शिल्पी। विषय-
कर्त्तुः। र. कल-×। मि. कल-×। पूर्ण। वे. सं. १४। क. मन्थार।

१ फ.०. काशीकीलिता—राजमण्ड। पत्र की ७। का ११५२ दण्ड। बाबा-अंशुल। विषय-अनार
 धाम। २ काश-११५३। वि. अण्ड-५५। पूर्ण। वि. अं. पत्र।

१६८ प्रति सं २। पत्र सं ७६। दि. कल-धं ११० ईशान्य पुटी-परीक्षा
दि. सं १११। कल-धं।

१६६ अतिरिक्त ३।५० ली २६।०० किलो-ग्र १५० मीटरि सुवी ३।०० ली १६६।

॥ ॐ नमो भगवते ॥

विशेष—महात्मा शम्भूनाथ ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७० धरनाभि चक्रवर्ति की भाषना—भूतदाम । पत्र सं० २ । मा० १०८७ इच्छ । भाषा-

हिन्दी पद्य । विषय-धर्म । १० काल-५ । मे० काल-५ पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पार्थपुराण में है ।

१०७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । मे० काल-५ । १८८८ पीप मुदी २ । वे० सं० ६७२ ।

अ भण्डार ।

१०७२. धनस्पतिमत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि । पत्र सं० ५ । मा० १०८४ इच्छ । भाषा-प्राकृत ।

विषय-धर्म । १० काल-५ । मे० काल-५ । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । अ भण्डार ।

१०७३ धमुनंदिश्रावकाचार—आ० धमुनदि । पत्र सं० ५६ । मा० १०९५ इच्छ । भाषा-

प्राकृत । विषय-प्राकृत धर्म । १० काल-५ । मे० काल-५ । १८६२ पीप मुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम नाम उगमनाथ्यवा भी है । जयपुर में श्री विरागदाम बातनीवान ने प्रतिलिपि करायी ।

मंसून में भाषान्तर दिया हुआ है ।

१०७४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५ ने २३ । मे० काल-५ । १६११ पीप मुदी ६ । अपूर्ण ।

वे० सं० ८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—मारगपुर नगर में पाण्ड दास ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । मे० काल-५ । १८७७ भादवा बुदी ११ । वे० सं० ६५२ ।

अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूनाथ ने मयार्य जयपुरमें प्रतिलिपि की थी । भाषाओं के नीचे गरुड टीका भी दी है ।

१०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । मे० काल-५ । वे० सं० ८७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा पीप फिर लिखे गये हैं ।

१०७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । मे० काल-५ । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।

१०७८ प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२ । मे० काल-५ । १५६८ भादवा बुदी १२ । वे० सं० २६६ ।

अ भण्डार ।

विशेष—प्रगति—सद्य १५६८ वर्षे भादवा बुदी १२ शुक्र दिने पुष्यनक्षत्रे ममृतमिद्विनाम उपयोगे श्रीपद्मसुतने मूलसुते सरस्वतीगन्धे बलात्कारगणे श्री शुन्दकुदाशार्पण्ये भट्टारक श्री प्रभाकरदेवा तस्य शिष्य मडलाचार्य धर्मकीर्ति द्वितीय मडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र एतेषां मध्ये मडलाचार्य श्री धर्मकीर्ति तत् शिष्य मुनि धीरनदिने एव दास्य लिखावित । प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ में पार्श्वनाथ (सोनियो) के मदिर में चढाया ।

१०७९ धमुनदिश्रावकाचार भाषा—पञ्चालाल । पत्र सं० २१८ । मा० १२३५ इच्छ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-प्राकृत शास्त्र । १० काल-५ । १६३० कार्तिक बुदी ७ । मे० काल-५ । १६३८ माह बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६५० । अ भण्डार ।

१८ प्रति सं० ५। के बाल सं १२३। के सं १२१। के मण्डार।

१. ८१ वास्तुसिद्धान्तः । पृष्ठ २३ से २७ । भा. ४५११ दृष्ट । जगन्-विष्ट । विषय-वर्ग ।
२. वास्तु × । के. वास्तु > । प्रपुल्ल । वे. के. १२७ । दृष्ट भव्यार ।

१. ८० विद्यमानबोधक..... वन त २७। या १३१५ वर्ष ६४। माता-पुत्रतः विधवा-वर्ग।
२. बाल ×। मे कल ×। धर्म। मे तं १७९। ऊ चण्डारः।

विशेष—हिन्दी वर्ण सहित है । ४ अक्षरों तक है ।

१०८३ अष्टि तु २। पत्र तु १३२। ते कल X। पत्र तु १४। दशपत्र।

विसेय—अति हिमो गर्ज बहिरु है : वय वय से नहीं है। धीर विरमे ही वीर के वय नहीं है। दो प्रश्नों का विचार है।

१८५५ विहज्जनबोधक भाषा—संघी पत्रावली । पृष्ठ १ । या १४×७५ रज । प्रता-
संस्तर हिन्दी । विपद-वर्ग : ५ पत्रा सं १८५५ भाषा नुवी ५ । से कल × ३ प्रपूर्ण : ५ सं १८५५
अ बरदार ।

१ पृष्ठ प्रति सं २। पत्र सं ३४३। ले. गण सं १६४२ पात्रोद कुटी ४। व. सं १७७।
 २ पृष्ठ प्रति सं ३। पत्र सं ३४३। ले. गण सं १६४२ पात्रोद कुटी ४। व. सं १७७।

विशेष—आहुतल राज के पुत्र मन्मथल ने अपनी बहनजी के अतीवाम के वनचर में हथ बनिया
दीवान घरमन्मथजी के के बड़ाया । अब राज के अतीवाम के वनचर में विवाह है ।

१. ८६ विहजन्तोवकीयम्-----। पक्ष सं ५४। वा ११२५७ इति। जला-स्थि। विषय-वर्ष।
२. जल \times । मे जल \times । पूर्ण। मे सं ११। क. कषार।

विशेष—अमृतकण के साथसे उत्पन्न तप है ।

१. २८. विवेकविज्ञान—। वचनं १ । वा १ ॥ ४३ दण्ड । अना-दिनी । विद्व-साधार
यत्तु । २. अना तं १००० अक्षरं इति । नै वचनं १ । अना इति १ । वै तं २ । अक्षरम् ।

१ मन्त्र बृहस्पतिर्ब्रह्मसूक्तः । नमो भ २९ । आ १ × ४ १/२ दशः । गायत्री-गुरुतः । विषय-वर्मः । २
नमः २ । मे नमः × । पुष्पः । मे भ ३३५ । ह यथायथः ।

१७८५ प्रति स २। ले वल ४। १० २१२२। ४ मलार।

१६. प्रति स ३। नि जाल \times । नि वं २२ ६। ह भणार ।

१ ११ इन्द्रप्रस्थिकस्य—यस्य र्थ ११। जा० ११×४६ इन्द्र। जाता—निरुद्ध। जात। निरुद्ध-
यस्य र जात ×। निरुद्ध ×। पुनः। निरुद्ध ११। यथा जात।

१६. प्रविर्तन ३१ जून १९६१ में बाल ५६ के ल १९६१ का मजदूर।

धर्म एवं आचार शास्त्र]

१०६३. पृष्ठप्रतिकल्पण । पत्र सं० ३१ । पृ० १०३/४६ डब । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २०

काल । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । अ भण्डार ।

१०६४. प्रती के नाम । पत्र सं० ११ । पृ० ६३/४ डब । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २

काल । २० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । अ भण्डार ।

१०६५. प्रतनामावली । पत्र सं० १२ । पृ० ८३/४ डब । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २

काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

१०६६. प्रतसंख्या । पत्र सं० ५ । पृ० ११/५ डब । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल >

सं० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१५१ प्रतनामा ८१ मटल लिपिभाषा के नाम दिये हुये हैं ।

१०६७. प्रतसार । पत्र सं० १ । पृ० १०/४ डब । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल ।

वे० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—वेचन २० पृष्ठ हैं ।

१०६८. प्रतीपवापनश्रावकाचार । पत्र सं० ११३ । पृ० १३/५ डब । भाषा—संस्कृत । विषय—

आचार शास्त्र । २० काल × । सं० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

१०६९. प्रतीपवापनश्रावण । पत्र सं० ५७ । पृ० १०/५ डब । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार

शास्त्र । २० काल × । सं० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—५७ में भाग के पत्र नहीं हैं ।

११००. प्रतीपवापनश्रावण । पत्र सं० ४ । पृ० १२/४ डब । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार

शास्त्र । २० काल × । सं० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७८ । अ भण्डार ।

११०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । सं० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७९ । अ भण्डार ।

११०२. पट्टश्रावणश्रावण (लघुसामायिक)—महाचन्द्र । पत्र सं० ३ । विषय—आचार शास्त्र । २०

काल × । सं० काल सं० १६६० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

११०३. पट्टश्रावणश्रावणविधान—पद्मलाल । पत्र सं० १४ । पृ० १४/७ डब । भाषा—हिन्दी ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६३२ । सं० काल सं० १६३४ । प्रमाण बुकी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

११०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । सं० काल सं० १६३२ । वे० सं० ७४५ । अ भण्डार ।

११०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । सं० काल × । वे० सं० ४७६ । अ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जन बाधन के तृतीय व पञ्चम उल्लास का हिन्दी अनुवाद है ।

११ ६. पदार्थोपदेशरत्नमाळा (सुखमोदक) — महाकवि अमरकीर्ति । वचनं ११३१ ।
पा १३ × ४३ इक्ष । भाषा-मराठी । विषय-आचार सार । १८ काल लं १२४० । मं काल लं १६१२ वचन
मुद्रा ११ । मं ३२६ । अ मण्डार ।

विमेल—नामपुर मकरें कवित्वमालम्बन पाठनीनीचवले श्रीमतीहरचवले के कवरी प्रतिनिधि बरवाली की ।

११०७. पदार्थोपदेशरत्नमाळामावा — पांडे काळकण्ठ । वचनं १२९ । पा १२ × ९ इक्ष ।
भाषा-हिन्दी । विषय-आचार सार । १८ काल लं ११ । वचन मुद्रा ६ । मं काल लं १५४६ पांडे १०६
भाषा मुद्रा १ । पूर्ण । मं ४२६ । अ मण्डार ।

विमेल—छायापी देवचण्ड के महात्मा बुद्ध के मण्डार में प्रतिनिधि बरवाली ।

११ ८. प्रति स २ । वचनं १२५ । मं काल लं १६६ । वचन मुद्रा ६ । मं ६० । अ मण्डार ।

विमेल—मुपुष्प के सदाशुभ दिलीवाली की है ।

११ ९. पदार्थोपदेशरत्नमाळा — मकरम्ब पद्यावलि पुरवाह । वचनं । पा १३ × ४६ इक्ष ।
भाषा-हिन्दी । विषय-वर्ग । १८ काल लं १७९ । मं काल × । पूर्ण । मं ७१६ । अ मण्डार ।

१११. पदार्थोपदेशरत्नमाळा — वचनं २३१११ । पा १२ × २६ इक्ष । भाषा-मराठी । विषय-
वर्ग । १८ काल × । मं काल × । पूर्ण । मं १९९ । अ मण्डार ।

११११. पदार्थोपदेशरत्नमाळा — वचनं ४६ । पा ११ × २ इक्ष ।
भाषा-मराठी । विषय-वर्ग । १८ काल × । मं काल × । पूर्ण । मं २४४ । अ मण्डार ।

१११२. पदार्थोपदेशरत्नमाळा — वचनं १२४० । पा १२ × ७ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-
वर्ग । १८ काल × । मं काल × । मं १६ । अ मण्डार ।

विमेल—नामपुर मकरें कवित्वमालम्बन भाषा में है ।

१११३. पदार्थोपदेशरत्नमाळा — वचनं २ । पा ११ × ७ इक्ष । भाषा-
हिन्दी । विषय-वर्ग । १८ काल लं १६१२ वचन मुद्रा ४ । मं काल × । पूर्ण । मं ७१६ । अ मण्डार ।

१११४. प्रति स २ । वचनं १४ । मं काल ७ । मं ७४६ । अ मण्डार ।

१११५. प्रति स ३ । वचनं १४ । मं काल × । मं ७४६ । अ मण्डार ।

१११६. प्रति स ४ । वचनं १ । मं काल × । पूर्ण । मं ७६ । अ मण्डार ।

१११७. पदार्थोपदेशरत्नमाळा — वचनं ६४ । पा १३ × २६ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-
वर्ग । १८ काल × । मं काल लं १६६२ वचन मुद्रा १४ । पूर्ण । मं ७२६ । अ मण्डार ।

विमेल—नामपुर मकरें कवित्वमालम्बन के प्रतिनिधि की की ।

१११८. प्रति स ३ । वचनं १६ । मं काल ७ । मं ७४४ । अ मण्डार ।

१११६ प्रति स० ३ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ७७५ । ङ मण्डार ।

१११७ प्रति स० ४ । पत्र स० ३० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ६६ ।

विशेष—३० मे आगे पत्र नहीं है ।

११२१ षोडशकारणभावना । पत्र स० १७ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ × ७ $\frac{१}{४}$ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—

धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७२१ (क) । क मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सवेत भी दिये हैं ।

११२२ शीलनवधाडू । पत्र स० १ । आ० १० × ४ $\frac{१}{२}$ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना—

काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १२२६ । अ मण्डार ।

११२३ श्राद्धपट्टिकमणसूत्र । पत्र स० ६ । आ० १० × ४ $\frac{१}{२}$ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १०१ । च मण्डार ।

विशेष—प० जसवन्त के पोत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजराती टब्बा टीका सहित है ।

११२४ श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ५० । आ० ११ $\frac{१}{२}$ × ७ इच्छ । भाषा—

हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल स० १६३० माघ बुदी २ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ६६८ । क मण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी ।

११२५ प्रति स० २ । पत्र स० ७५ । ले० काल × । वे० स० ६६७ । क मण्डार ।

११२६ श्रावकधर्मवर्णन । पत्र स० १० । आ० १० $\frac{१}{२}$ × ५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक-

धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३४६ । च मण्डार ।

११२७ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३४७ । च मण्डार ।

११२८ श्रावकप्रतिक्रमण । पत्र स० २५ । आ० १० $\frac{१}{२}$ × ५ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १८२३ भासोज बुदी ११ । वे० स० १११ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । हुक्मीजीवरण ने अहिपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११२९ श्रावकप्रतिक्रमण । पत्र स० १५ । आ० १२ × ६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १८६ । ख मण्डार ।

११३० श्रावकप्रायश्चित्त—धीरसेन । पत्र स० ७ । आ० १२ × ६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १६३४ । पूर्णा । वे० स० १६० ।

विशेष—प० पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११६ पट्टमोपदेशरत्नमाला (लङ्कामोचन)—महाकवि चमरकीर्ति । पत्र नं ३ के ७ ।
पा १८५६ इति । माला—मात्र ४ । विषय—व्यापार काल । र काल १९४७ । के काल १९२९ र्वम
मुनि १९ । के नं ३२६ । अ मन्थार ।

विशेष—मालपुर मन्थरे लङ्कामोचनम पट्टमोपदेशमाले श्रीमतीहरपदे के कवि की प्रतिनिधि करवायी थी ।

११७०. पट्टमोपदेशरत्नमाला—पण्डित लालकृष्ण । पत्र संख्या १९९ । पा १९४६ इति ।
माला—हिन्दी । विषय—व्यापार काल । र काल ११ । पात्र मुनि ३ । के काल १९४६ के १७ र
माला मुनि ३ । पूर्ण । के नं ४९६ । अ मन्थार ।

विशेष—मालपुरी के मन्थरे के लङ्कामोचन के कवि की प्रतिनिधि करवायी ।

११८८ प्रति स २ । पत्र नं १९८ । के काल १९२६ पात्र मुनि ३ । के नं २७ । अ मन्थार ।

विशेष—मुलक एवं लालकृष्ण मालावाली की है ।

११९८. पट्टमोपदेशरत्नमाला—मन्थरे पण्डित पुरवाण । पत्र नं ८ । पा १९४६ इति ।
माला—हिन्दी । विषय—वर्ग । र काल १७६ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

११९९ पट्टमोपदेशरत्नमाला—मन्थरे पण्डित पुरवाण । पत्र नं ९२ के २६ । पा १९४६ इति । माला—वर्ग ।
वर्ग । र काल १७६ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

११९९ पट्टमोपदेशरत्नमाला—मन्थरे पण्डित पुरवाण । पत्र नं ९२ के २६ । पा १९४६ इति । माला—वर्ग ।
माला—वर्ग । र काल १७६ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

११९९ पट्टमोपदेशरत्नमाला—मन्थरे पण्डित पुरवाण । पत्र नं ९२ के २६ । पा १९४६ इति । माला—वर्ग ।
विषय—वर्ग । र काल १७६ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

विशेष—मन्थरे पण्डित पुरवाण माला के है ।

११९९ पट्टमोपदेशरत्नमाला—मन्थरे पण्डित पुरवाण । पत्र नं ९२ के २६ । पा १९४६ इति । माला—वर्ग ।
हिन्दी । विषय—वर्ग । र काल १७६ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

११९९ प्रति स ३ । पत्र नं २४ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

११९९ प्रति स ३ । पत्र नं २४ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

११९९ प्रति स ४ । पत्र नं १ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

११९९ पट्टमोपदेशरत्नमाला—मन्थरे पण्डित पुरवाण । पत्र नं २४ । पा १९४६ इति । माला—हिन्दी । विषय—
वर्ग । र काल १७६ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

विशेष—मन्थरे पण्डित पुरवाण माला के है ।

११९९ प्रति स ७ । पत्र नं २१ । के काल १९४६ । पूर्ण । के नं ७१६ । अ मन्थार ।

११४१. प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८८४ प्रापाद मुदी २ । वे० स० ८३ । च भण्डार
११४२. प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८०४ । भादवा मुदी ६ । वे० स० १०० ।

छ भण्डार ।

११४३. प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल ७ । वे० स० २१५१ । ट भण्डार ।

११४४. प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल ४ । वे० स० २१५८ । ट भण्डार ।

११४५. श्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र स० ६६ । ग्रा० ८३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० २०८८ । अ भण्डार ।

११४६. प्रति स० ८ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १८५५ । वे० स० ६६३ । क भण्डार ।

११४७. श्रावकाचारभाषा—प० भागचन्द्र । पत्र स० १८६ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—आचार शास्त्र । २० काल स० १६२२ प्रापाद मुदी ८ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २८ ।

विशेष—प्रमितिगति श्रावकाचार का भाषा टीका है । अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है ।

११४८. श्रावकाचार । पत्र सम्प्रा १ से २१ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार
शास्त्र । २० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसमें भाग के पत्र नहीं हैं ।

११४९. श्रावकाचार । पत्र स० ७ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचारशास्त्र ।
२० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—६० गायत्रि हैं ।

११५०. श्रावकाचारभाषा । पत्र स० ५२ से १३१ । ग्रा० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० २०६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

११५१. प्रति स० ७ । पत्र स० ३ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० ६६६ । क भण्डार ।

११५२. प्रति स० ३ । पत्र स० १११ से १७४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० ७०६ । छ भण्डार ।

११५३. प्रति स० ४ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १६६४ भादवा मुदी १ । पूर्ण । वे० स० ७८० ।

ड भण्डार ।

विशेष—गुणभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है । सबत् १५२६ चैत मुदी ५ रविवार को यह
ग्रन्थ जिहानावाद जैमिहपुरा में लिखा गया था । उस प्रति में यह प्रतिलिपि की गयी थी ।

११५४. प्रति स० ५ । पत्र स० १०८ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० ६८२ । च भण्डार ।

११४१ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८८४ आषाढ सुदी २ । वे० स० ४३ । च भण्डार

११४२ प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८०४ । भाद्रपद सुदी ६ । वे० स० १०२ ।

छ भण्डार ।

११४३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० २१५१ । ट भण्डार ।

११४४ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० २१५८ । ट भण्डार ।

११४५ श्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र स० ६६ । आ० ८३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८८ । अ भण्डार ।

११४६ प्रति स० २ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १८५५ । वे० स० ६६३ । क भण्डार ।

११४७ श्रावकाचारभाषा—प० भागचन्द्र । पत्र स० १८६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—आचार शास्त्र । २० काल स० १६२२ आषाढ सुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८ ।

विशेष—अस्मिन्तिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है । अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है ।

११४८ श्रावकाचार । पत्र संख्या १ मे २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इससे आगे के पत्र नहीं हैं ।

११४९ श्रावकाचार । पत्र स० ७ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचारशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—६० गायत्रि हैं ।

११५० श्रावकाचारभाषा । पत्र स० ५२ मे १३१ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

११५१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६६६ । क भण्डार ।

११५२ प्रति स० ३ । पत्र स० १११ से १७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७०६ । ड भण्डार ।

११५३ प्रति स० ४ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १६६४ भाद्रपद सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ७५० ।
ड भण्डार ।

विशेष—गुणभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है । सन् १९२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह
ग्रन्थ जिहानाबाद जैमिहपुरा में लिखा गया था । उस प्रति में यह प्रतिलिपि की गयी थी ।

११५४ प्रति स० ५ । पत्र स० १०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८२ । च भण्डार ।

११६६ सम्मोदशिखर विलास—देवाग्रह । पत्र स० ४ । ग्रा० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—वर्म । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१ । ज भण्डार ।

११७० ससारस्वरूप वर्णन । पत्र स० ७ । ग्रा० ११×४३ इञ्च । भाषा—मसृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२६ । ज भण्डार ।

११७१ सागारधर्मसूत्र—प० आशाधर । पत्र स० १६३ । ग्रा० १२३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—श्रावको के आचार धर्म या वर्णन । २० काल स० १२६६ । २० काल स० १७६८ भादवा बुदी ७ । पूर्ण ।

वे० स० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्त्रीपत्र मसृत टीका सहित है । टीका का नाम भक्तिकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा गवार्ड जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२ प्रति स० २ । पत्र स० २०६ । ले० काल स० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० स० ७७७ ।

क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ़ वाल ने गवार्ड जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११७३ प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० ७७४ । क भण्डार ।

११७४ प्रति स० ४ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० ११७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति मसृत टीका सहित है ।

११७५ प्रति स० ५ । पत्र स० ७७ । ले० काल × । वे० स० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—८ से ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६ प्रति स० ६ । पत्र स० १५६ । ले० काल स० १८६१ भादवा बुदी ७ । वे० स० ७८ । छ

भण्डार ।

विशेष—प्रति स्त्रीपत्र टीका सहित है । सागानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रति-
लिपि की थी ।

११७७ प्रति स० ७ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १८२८ फागुण सुदी १० । वे० स० १४६ । ज
भण्डार ।

विशेष—प्रति टिप्पणी टीका सहित है । रचयिता एवं लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

११७८ प्रति स० ८ । पत्र स० १८० । ले० काल × । वे० स० १ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं शुद्ध है ।

११७९ प्रति स० ९ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १५६७ फागुण सुदी २ । वे० स० १८ । ज
भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे पाडे डीठा तेन इद धर्मावृत्तनामोपाध्ययन आचार्य
नेमिचन्द्राय नमः । भ० प्रभाकर देवस्तु शिष्य स० धर्मचन्द्रान्वये ।

११६१ प्रति म० २ । पत्र म० ४८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १६३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

११६२ प्रति स० ३ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० म० ७७६ । क भण्डार ।

११६३ सामायिकपाठ । पत्र म० १० । आ० ११३×७१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल स० १६५६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ७७६ । अ भण्डार ।

११६४ प्रति म० २ । पत्र म० ६८ । ले० काल स० १८६१ । वे० स० ७७७ । अ भण्डार ।

विशेष—उदयचन्द न प्रतिलिपि की थी ।

११६५ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०१७ । अ भण्डार ।

११६६ प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० १०११ । अ भण्डार ।

११६७ प्रति म० ५ । पत्र म० ६ । ले० काल × । वे० म० ७७८ । क भण्डार ।

११६८ प्रति म० ६ । पत्र म० ५४ । ले० काल स० १८२० कार्तिक बुदी २ । वे० म० ६५ । अ

भण्डार ।

विशेष—अन्वय विजयकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

११६९ सामायिक पाठ । पत्र स० २५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल स० १७३३ । पूर्ण । वे० स० ८१४ । क भण्डार ।

१२०० प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल म० १७६८ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० स० ८१५ । क भण्डार ।

१२०१ प्रति म० ३ । पत्र स० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—पत्रों का चूहो ने खालिया है ।

१२०२ प्रति म० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६१ । च भण्डार ।

१२०३ प्रति स० ५ । पत्र स० २ मे १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८१३ । क भण्डार ।

१२०४ सामायिकपाठ (लघु) । पत्र स० १ । आ० १०^३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ३८८ । च भण्डार ।

१२०५ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ३८६ । च भण्डार ।

१२०६ प्रति म० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ७१३ । क । च भण्डार ।

१२०७ सामायिकपाठ भाषा—बुध महाचन्द । पत्र स० ६ । आ० ११×५^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ७०८ । च भण्डार ।

विशेष—जोहरीलाल कुल भालोचना पाठ भी है ।

१२०८ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल म० १६५४ सावन बुदी ३ । वे० स० १६४१ । ट

भण्डार ।

१२०६) सामाजिकपाठभाषा—अथर्वण्ड भाषा । पत्र नं १ । या ११×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वर्ग । र. काल × । ले काल तं १११७ । पूर्ण । के तं ७ । अ मन्थार ।

१२१ प्रति स २ । पत्र नं ४५ । ले काल नं ११३६ । के तं ७८१ । अ मन्थार ।

१२११ प्रति स ३ । पत्र नं ४६ । ले काल × । के तं ७९ । अ मन्थार ।

१२१२ प्रति स ४ । पत्र नं ४६ । ले काल × । के तं ७९ । अ मन्थार ।

१२१३ प्रति स १ । पत्र नं २१ । ले काल नं ११७१ । के तं ५७३ । अ मन्थार ।

विषय—श्री केसरलाल बोधा ने कन्नुर के प्रतिनिधि की थी ।

१२१४ प्रति स ६ । पत्र नं ११ । ले काल नं १८७४ कन्नुर मुद्रा १ । के तं ११ । अ मन्थार ।

१२१५ प्रति स ७ । पत्र नं ४२ । ले काल नं ११११ कन्नुर मुद्रा १ । के तं २६ । अ मन्थार ।

१२१६ सामाजिकपाठभाषा—य की शिक्षाकचक्र । पत्र नं १४ । या ११×३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वर्ग । र. काल तं ११२ । ले काल × । पूर्ण । के तं ७१ । अ मन्थार ।

१२१७ प्रति स २ । पत्र नं ७२ । ले काल नं ११११ कन्नुर मुद्रा ११ । के तं ७११ । अ मन्थार ।

१२१८ सामाजिकपाठ भाषा — । पत्र नं ४२ । या ११×३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वर्ग । र. काल × । ले काल तं १७६ कन्नुर मुद्रा २ । पूर्ण । के तं ११८ । अ मन्थार ।

विषय—कन्नुर ने महात्मा अरविन्दजी के जालनकाल में लड़ी नीजुलकर धारण करने के प्रतिनिधि की थी ।

१२१९ प्रति स २ । पत्र नं ३ । ले काल तं १७४ कन्नुर मुद्रा ३ । के तं ७०१ । अ मन्थार ।

विषय—महात्मा जालनकाल कन्नुर जाने के प्रतिनिधि की थी । लखन प्रथम प्रथम कन्नुर का धर्म दिया हुआ है ।

१२२ सामाजिकपाठ भाषा — । पत्र नं १ के ३ । या ११×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वर्ग । र. काल × । ले काल × । पूर्ण । के तं ११ । अ मन्थार ।

१२२१ प्रति स २ । पत्र नं १ । ले काल × । के तं १६ । अ मन्थार ।

१२२२ प्रति स ३ । पत्र नं ११ । ले काल × । पूर्ण । के तं ४८१ । अ मन्थार ।

१२२३ सामाजिकपाठभाषा — । पत्र नं १७ । या २×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी (बुधारी) विषय—वर्ग । र. काल × । ले काल तं १७६१ कन्नुर मुद्रा १ । के तं ११ । अ मन्थार ।

१००४ मासमनुष्य—कुलभट्ट । पत्र म० १४ । सा ११ ८३ १२ । भाग—मनुज । विषय—धर्म ।
१० मास । १० वात म० १६०७ पीप बुदी ८ । प० म० ८४६ । अ भण्डार ।

विशेष—यथावार्त्त धर्म ३ नै । पत्र यज्ञभाऊ बोला १ पत्र की प्रतिनिधि नरयाणी भी ।

१००५ मासमनुष्य—मुनि रामसिंह । पत्र म० ८ । सा १० १० ८८ ८३ । भाग—मनुज ।
विषय—मासवार पात्र । १० वात । १० वात । प० म० १०१ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्रति प्राधान १ ।

१००६ मिहो का स्वरूप । पत्र म० ८८ । सा ८ ३ ८३ । भाग—हिन्दी । विषय—धर्म ।
१० वात । १० वात । पूर्ण । प० म० ८४८ । अ भण्डार ।

१००७ सुष्टि तरंगिणीभाषा—टंकचन्द्र । पत्र म० ४०७ । सा १४ ४६ ८३ । भाग—हिन्दी ।
विषय—धर्म । १० वात म० १८१८ मासग बुदी ११ । प० वात म० १८६१ भाग म० । पूर्ण । १० म० ७१ ।
अ भण्डार ।

विशेष—प्रा तम पत्र पटा हुआ है ।

१००८ प्रति म० ८ । पत्र म० ८० । सा १० ८ ६६८ । अ भण्डार ।

१००९ प्रति म० ३ । पत्र म० ६११ । प० वात म० १६८८ । प० म० ८९१ । अ भण्डार ।

१०१० प्रति म० ४ । पत्र म० ३२१ । प० वात म० १८६३ । प० म० ६२ । अ भण्डार ।

विशेष—गामाल मात न प्रतिनिधि की भी ।

१०११ प्रति म० ४ । पत्र म० १०४ म १०३ । प० वात । अ पूर्ण । प० म० १०३ । अ भण्डार ।

१०१२ प्रति म० ६ । पत्र म० १८६ । प० वात । १० म० १२८ । अ भण्डार ।

१०१३ प्रति म० ७ । पत्र म० १८४ । प० वात म० १८६८ मासग बुदी ६ । प० म० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतिमा ११ मिश्रण है ।

१०१४ प्रति म० ८ । पत्र म० १०० । प० वात म० १६६० वातिय बुदी १ । प० म० ८६६ । अ भण्डार ।

१०१५ प्रति म० ६ । पत्र म० १०० । प० वात । अ पूर्ण । प० म० ७०० । अ भण्डार ।

१०१६ प्रति म० १० । पत्र म० ८२० । प० वात म० १६४६ जैन बुदी ८ । प० म० ११ । अ भण्डार ।

१०१७ प्रति म० ११ । पत्र म० १३४ । प० वात म० १८३६ पाण्डु बुदी ८ । प० म० ८६ । अ भण्डार ।

१०१८ सुष्टितरंगिणीभाषा । पत्र म० ११३ ७७ । सा १० १० ७७ ८३ । भाग—हिन्दी ।

विषय—धर्म । १० काल ४ । प० वात ८ । अ पूर्ण । प० म० ८६७ । अ भण्डार ।

१२३६. मोनगिरपचीसी—भागीरथ । पत्र सं ५ । या २६×४६ इंच । भाषा—हिन्दी । विपक्ष—धर्म । ८ पत्र सं १ ११ ब्लैक मुदी १४ । मे काल × । के नं १४७ । छ मण्डार ।

१२४०. सोलहकारस्यमाधनाधर्मान—यं सदासुख । पत्र सं ४६ । या १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विपक्ष—धर्म । ८ पत्र सं १ । मे काल × । पूर्ण । के नं १२६ । छ मण्डार ।

१२४१. प्रति सं १ । पत्र सं २६ । मे काल × । के नं १ । छ मण्डार ।

१२४२. प्रति सं ३ । पत्र सं ३७ । मे काल सं १२३० सदास मुदी ११ । के नं १ । छ मण्डार ।

विशेष—सदास बकुर में मनेसलाल पांडव ने कापी के अधिक में प्रतिनिधि की थी ।

१२४३. प्रति सं ४ । पत्र सं ३१ मे ६१ । मे काल सं १२३० काट मुदी ० । बहूनं । के नं ११ । छ मण्डार ।

विशेष—इसमें के ३ पत्र नहीं हैं । कुचराल पांडव ने बहून के प्रतिनिधि की थी ।

१२४४. सोलहकारस्यमाधना एवं दृष्टकण्ठ धर्म बर्धन—यं सदासुख । पत्र सं ११४ । भाषा १ ३ ६ इंच । भाषा—हिन्दी । विपक्ष—धर्म । ८ पत्र सं १ । मे काल सं १२४१ सदास मुदी १३ । पूर्ण । के नं १४ । छ मण्डार ।

१२४५. स्वाध्यायनिर्देश — । पत्र सं ६ । या १२×६ इंच । भाषा—महाराष्ट्र । विपक्ष—धर्म । ८ पत्र सं १ । मे काल × । पूर्ण । के नं १ । छ मण्डार ।

विशेष—विठ्ठलजीधर के प्रथम बांक का बहुत काल है । हिन्दी दीपिका में है ।

१२४६. स्वाध्यायपाठ — । पत्र सं ९ । या ६×६ इंच । भाषा—महाराष्ट्र संस्कृत । विपक्ष—धर्म । ८ पत्र सं १ । मे काल × । पूर्ण । के नं ५३ । छ मण्डार ।

१२४७. स्वाध्यायपाठभाषा — । पत्र सं ७ । या १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विपक्ष—धर्म । ८ पत्र सं १ । मे काल × । पूर्ण । के नं ५२२ । छ मण्डार ।

१२४८. मित्रागतधर्मोपदेशभाषा — । पत्र सं १६ । या ११ ३ इंच । भाषा—महाराष्ट्र । विपक्ष—धर्म । ८ पत्र सं १ । मे काल × । पूर्ण । के नं २२१ । छ मण्डार ।

१२४९. दृष्टकण्ठसर्पिणीपाठभाषा—भाषा—महाराष्ट्र । पत्र सं ६ । भाषा—हिन्दी । विपक्ष—धर्म । ८ पत्र सं १ । मे काल सं १२३० । पूर्ण । के नं ५३२ । छ मण्डार ।

विशेष—भाषा दुर्भाष्य है प्रतिनिधि की थी ।

विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१०७० अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव । पत्र स० १० । आ० ११×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

ग्रन्थात्म । १० पत्र × । ल० बाल × । पूर्ण । वे० ग० २० । क भण्डार ।

१०७१ प्रति स० ० । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३७ भाववा मुदी ६ । वे० स० ८ । क भण्डार ।

विषय—ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत में टीका लिखी हुई है ।

१०७२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३८ भाषा मुदी १० । वे० स० ८२ । ज

भण्डार ।

विषय—पति संस्कृत टीका सहित है । विविध फलालान में प्रतिनिधि की थी ।

१०७३ अध्यात्मपत्र—जयचन्द द्वायडा । पत्र स० ७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

पत्रान १६वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १० । क भण्डार ।

१०७४ अध्यात्मवत्तीनी—यनारमीदास । पत्र स० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० पत्रान १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६६ । अ भण्डार ।

१०७५ अध्यात्म बारहसङ्गी—कवि मूरत । पत्र स० १७ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६ । अ भण्डार ।

१०७६ अष्टपादुङ्ग—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० १० में ७७ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०२३ । अ भण्डार ।

विषय—प्रति जीर्ण है । १ ग ६ तथा २४-२७वा पत्र नहीं है ।

१०७७ प्रति स० ० । पत्र स० ८८ । ले० काल स० १६६९ । वे० स० ७ । क भण्डार ।

१२२८ अष्टपादुङ्गभाषा—जयचन्द द्वायडा । पत्र स० ८३० । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल स० १८६७ भाववा मुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३ । क भण्डार ।

विषय—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुन्द ह ।

१२४६ प्रति स० ० । पत्र स० १७ में २८६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८ । क भण्डार ।

१२६० प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल > । वे० स० १५ । क भण्डार ।

१२६१ प्रति स० ४ । पत्र स० १८७ । ले० काल × । वे० स० १६ । क भण्डार ।

१२६२ प्रति स० ५ । पत्र स० ३३८ । ले० काल स० १६७६ । वे० स० १ । क भण्डार ।

१२६३ प्रति स० ६ । पत्र स० ४४१ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० २ । क भण्डार ।

१०६४ प्रति स ७। पन १६२। मे वल \times । के न ३। अ नकार।

१०६५ प्रति स ८। पन १६३। न काल न १६३६ आलोच मुदी १५। के न ३। अ नकार।

विशेष—८१ पन प्राप्ति प्रति ६। मे १२३ पन फिर निमाये के ६ तथा १२४ न १६३ एक के पन निमी वल प्रति के ६।

१०६६ प्रति स ९। पन २०१। न काल न १६३९ वास्तव मुदी १५। के न ३६। अ नकार।

१०६७ प्रति स १। पन १६७। मे वल \times । के न ३। अ नकार।

१०६८ प्रति स २१। पन १७२। मे वल न १ वास्तव मुदी १। के न ३२। अ नकार।

१०६९ आत्मप्रधान—बनारसीवास। पन न १। वा ६४४ इव। वाता—हिन्दी (१७)। विषय—प्राप्तविषय। र काल \times । मे वल \times । के न १२७९। अ नकार।

१०७० आत्मप्रधान—कुमारकवि पन न १३। वा १२४४ इव। तथा—मंजुषा। विषय—प्राप्तविषय। र काल \times । मे वल \times । पूर्ण। के न २३। अ नकार।

१०७१ प्रति स ७। पन १४। मे वल \times । के न ३ (क) अ नकार।

१०७२ आत्मप्रधान—प्राप्तविषय—पन न २७। वा १४४६ इव। वाता—प्राप्तविषय। विषय—प्राप्तविषय। र काल \times । मे काल \times । पूर्ण। के न १२४। अ नकार।

१०७३ प्रति स १। पन ३१। मे वल \times । पूर्ण। के न ३९। अ नकार।

१०७४ आत्मप्रधान—प्राप्तविषय—पन न २९। वा १४४६ इव। वाता—मंजुषा। विषय—प्राप्तविषय। र काल \times । मे काल \times । पूर्ण। के न १२७। अ नकार।

१०७५ आत्मप्रधान—प्राप्तविषय—पन न २९। वा १४४६ इव। वाता—हिन्दी (१७)। विषय—प्राप्तविषय। र काल \times । मे काल न १४ वास्तव मुदी। के न १। अ नकार।

विशेष—कुमारकवि के वाराणसी मन्त्रीपद के कर्मप्रधान के प्राप्तविषय में प्रतिनिधि की थी।

१०७६ आत्मप्रधान—प्राप्तविषय—पन न ४२। वा १४४६ इव। वाता—मंजुषा। विषय—प्राप्तविषय। र काल \times । मे काल \times । के न २२७९। पूर्ण। जीर्ण। अ नकार।

विशेष—प्राप्ति—

वीरविद्यावर्धनके । श्रीगुरुनने नंदप्रधाने कालप्रधानने सरस्वतीप्राप्ते श्रीगुरुगुणाचार्यनिक म्दुआरवीरजनिदेवा तान्दु न श्रीगुरुगुणाचार्य तान्दु न श्रीविजयप्रदेवा तान्दु न प्रजापतिदेवा तन् श्रीगुरुगुणाचार्य श्रीविजयप्रदेवा तान्दु न निमित्तं त्र्यंभि (वी) श्री गीता गुरुगुणाचार्य निमित्तं ।

१२७७ प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १५६४ आषाढ सुदी ८ । वै० स० २६६ । अ

भण्डार ।

१२७८ प्रति स० ३ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८६० माघ सुदी ४ । वै० स० ३१५ । अ

भण्डार ।

१२७९ प्रति स० ४ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वै० स० १२६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं प्राचीन है ।

१२८० प्रति स० ५ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २७० । अ भण्डार ।

१२८१ प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वै० स० ७६२ । अ भण्डार ।

१२८२ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वै० स० ७६३ । अ भण्डार ।

१२८३ प्रति स० ८ । पत्र स० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २०८६ । अ भण्डार ।

१२८४ प्रति स० ९ । पत्र स० १०७ । ले० काल स० १६८० । वै० स० ४७ । क भण्डार ।

१२८५ प्रति स० १० । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८८८ । वै० स० ४६ । क भण्डार ।

१२८६ प्रति स० ११ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वै० स० १५ । क भण्डार ।

१२८७ प्रति स० १२ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १८७२ चैत सुदी ८ । वै० स० ५३ । क

भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । पहिले मस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है ।

१२८८ प्रति स० १३ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १७३० भाद्रपद सुदी १२ । वै० स० ५८ । क

भण्डार ।

विशेष—पद्मलाल बाकलावान ने प्रतिलिपि की थी ।

१२८९ प्रति स० १४ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६७० फागुन सुदी २ । वै० स० २६ ।

क भण्डार ।

विशेष—रहितगपुर निवासी चौधरी मोहल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२९० प्रति स० १५ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६६५ मगसिर सुदी ५ । वै० स० २२० । क

भण्डार ।

विशेष—मठनाचार्य धर्मचन्द्र ने शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२९१ आत्मानुशासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र स० ५७ । भा० ११×५ उच्छ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १८८२ फागुन सुदी १० । पूर्ण । वै० स० २७ । क भण्डार ।

१२९२ प्रति स० २ । पत्र स० १०३ । ले० काल स० १८०१ । वै० स० ४८ । क भण्डार ।

१२९३ प्रति स० ३ । पत्र स० ८८ । ले० काल स० १८८१ मगसिर सुदी १४ । वै० स० ६३ । क

भण्डार ।

विभय—कृपावती वधर मे प्रतिविधि हुई ।

१०३४ प्रति स ४ । वधर्त्त ४३ । मे वल्लर्त्त १ ३२ वैयल्ल मुदी ३ । वै र्त्त २ । अ

मन्थार ।

विभय—सर्वार्थ वधर मे प्रतिविधि हुई ।

१०३५ प्रति स ५ । वधर्त्त ११ । मे वल्लर्त्त ११११ पापाह मुदी १ । वै र्त्त ३१ ।

विभय—नक्षत्र विह्वल घनजल सर्व वीचीम मे वल्लर्त्त प्रतिविधि वरवादी ।

१०३६ आहमागुयासमयापा—वै वीचरमल्ल । वधर्त्त ७ । वा १४४७ इल्ल । वल्लर्त्त—विनी

(वध) विपद—वधरमल्ल । १ वल्लर्त्त ५ । मे वल्लर्त्त १ ६ । मुदी । वै र्त्त ३७१ । अ मन्थार ।

१०३७ प्रति स ७ । वधर्त्त १ ८ । मे वल्लर्त्त १६ । वै र्त्त ३६६ । अ मन्थार ।

विभय—प्रति वधर है

१०३८ प्रति स ८ । वधर्त्त १४४ । मे वल्लर्त्त ५ । वै र्त्त ३६ । अ मन्थार ।

१०३९ प्रति स ९ । वधर्त्त १२६ । मे वल्लर्त्त १२६६ । वै र्त्त ४४४ । अ मन्थार ।

११ प्रति स ४ । वधर्त्त २३३ । मे वल्लर्त्त १२३ । वै र्त्त २ । अ मन्थार ।

विभय—मन्थारमल्ल वध वल्लर्त्त टीका की है ।

१२ १ प्रति स ६ । वधर्त्त ३३ । मे वल्लर्त्त १२४ । वै र्त्त २६ । अ मन्थार ।

१३ प्रति स ७ । वधर्त्त २१ । मे वल्लर्त्त १ २२ वल्लर्त्त मुदी ३ । वै र्त्त २ । अ

मन्थार ।

१४ ३ प्रति स ८ । वधर्त्त ७ । मे वल्लर्त्त ५ । मुदी । वै र्त्त २२ । अ मन्थार ।

१४ ४ प्रति स ९ । वधर्त्त २६ । मे वल्लर्त्त ५ । मुदी । वै र्त्त २६ । अ मन्थार ।

१४ ५ प्रति स १ । वधर्त्त १ । मे वल्लर्त्त ५ । मुदी । वै र्त्त ३७ । अ मन्थार ।

१४ ६ प्रति स ११ । वधर्त्त १२३ । मे वल्लर्त्त १२३३ वल्लर्त्त मुदी ३ । वै र्त्त २ । अ

मन्थार ।

विभय—प्रति वधरमल्ल है ।

१४ ७ प्रति स १२ । वधर्त्त २७ । मे वल्लर्त्त ५ । मुदी । वै र्त्त २६ । अ मन्थार ।

१४ ८ प्रति स १३ । वधर्त्त ३३ । मे वल्लर्त्त ५ । मुदी । वै र्त्त २ । अ मन्थार ।

१४ ९ प्रति स १४ । वधर्त्त १६ । मे वल्लर्त्त ५ । मुदी । वै र्त्त २३ । अ मन्थार ।

१४ १० प्रति स १५ । वधर्त्त २६ । मे वल्लर्त्त ५ । मुदी । वै र्त्त २३ । अ मन्थार ।

१ ४ ११ । अ मन्थार ।

१४ ११ प्रति स १६ । वधर्त्त ३३ । मे वल्लर्त्त ५ । मुदी । वै र्त्त २३ । अ मन्थार ।

१४ १२ प्रति स १७ । वधर्त्त २३ । मे वल्लर्त्त २३३३ वल्लर्त्त मुदी ३ । वै र्त्त २३ । अ

मन्थार ।

विशेष—रायचन्द साहवाढ ने म्वाठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१३१३ प्रति स० १८ । पत्र स० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११२४ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं है ।

१३१४ आध्यात्मिकनाथा—भ० लक्ष्मीचन्द । पत्र स० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—अपत्र श ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२४ । घ भण्डार ।

१३१५ कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । पत्र स० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वे० स० २६१ । अ भण्डार ।

१३१६ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६२८ । अ भण्डार ।

विशेष—मस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । १८६ गाययें हैं ।

१३१७ प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल × । वे० स० ६१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२८३ गाययें हैं ।

१३१८ प्रति स० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल × । वे० स० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—मस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१३१९ प्रति स० ५ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १८८८ । वे० स० ८४५ । क भण्डार ।

विशेष—मस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं ।

१३२० प्रति स० ६ । पत्र स० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३१ । ख भण्डार ।

१३२१ प्रति स० ७ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११६ । ख भण्डार ।

१३२२ प्रति स० ८ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १६४३ सावण मुदी ६ । वे० स० ११६ । ख भण्डार ।

भण्डार ।

१३२३ प्रति स० ९ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १८८९ । अपूर्ण । वे० स० ११७ । ख भण्डार ।

भण्डार ।

१३२४ प्रति स० १० । पत्र स० ५० । ले० काल स० १८२५ सावण मुदी १० । वे० स० ११६ । ख भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी है । मुनि रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१३२५ प्रति स० ११ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १६३६ । वे० स० ४३७ । ख भण्डार ।

१३२६ प्रति स० १२ । पत्र स० २३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३८ । ख भण्डार ।

१३२७ प्रति स० १३ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८६६ सावण मुदी ६ । वे० स० ६३६ । ख भण्डार ।

भण्डार ।

१३२८ प्रति स० १४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६२० सावण मुदी ८ । वे० स० ६४० । ख भण्डार ।

भण्डार ।

१३४५ प्रति स० २ । पत्र स० २८१ । ले० काल × । वे० स० २४६ । ख भण्डार ।

१३४६ प्रति स० ३ । पत्र स० १७६ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७ प्रति सं० ४ । पत्र स० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२० । ङ भण्डार ।

१३४८ प्रति स० ५ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १८८४ । वे० स० १२१ । च भण्डार ।

१३४९ कुशलाणुवधिअज्जुयण । पत्र स० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १६८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इति कुशलाणुवधिअज्जुयण समप्त । इति श्री चतुशरण त्वाय्य ।

इसके प्रतिरिक्त राजसुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतिया भी हैं ।

१३५०. चक्रवर्त्तिकीबारहभावना । पत्र स० ४ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च भण्डार ।

१३५१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ५४१ । च भण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान । पत्र स० २ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५१ । ऋ भण्डार ।

१३५३ चिद्विलास—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र स० ४३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी
(गद्य) विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १७७६ । पूर्ण । वे० स० २१ । घ भण्डार ।

१३५४ जोगीरासो—जिनदास । पत्र स० २ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६१ । च भण्डार ।

१३५५ ज्ञानदर्पण—साह दीपचन्द्र । पत्र स० ४० । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० स० २२६ । क भण्डार ।

१३५६ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८६४ सावरण सुदी ११ । वे० स० ३० । घ
भण्डार ।

विशेष—महत्मा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में विराजमान की
गई ।

१३५७. ज्ञानबावनी—बनारसीदास । पत्र स० १० । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३१ । ङ भण्डार ।

१३५८ ज्ञानमार—मुनि पदार्थिह । पत्र स० १२ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल स० १०८६ सावरण सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८ । ङ भण्डार ।

विशेष—एकवाक्यता वाली वाक्या निम्न प्रकार हैं—

तिरि विपक्षमस्तथापि दक्षमन्त्राणीं कृन्ति बहुवाक्ये

वाक्यरहित सप्तमीयं सर्वकृतपटीमन्त्रं मेवं ।।

१३३६. आवासीय—आवासीयवाक्य । पम सं १२ । वा १२ × २ दम । वाक्य—वैतथ्य ।

विषय—वैतथ्य । २ वाक्य × १ । मे वाक्य सं १२७२ वीच सुवी १४ । पूर्ण । के सं १७४ । क मन्त्रार ।

विशेष—वैतथ्य मन्त्र में वीच अनुवाक्य के मन्त्र की प्रतिनिधि करवायी गी ।

१३३७. अति सं २ । पम सं १२ । मे वाक्य सं १२६६ वाक्य सुवी १३ । के सं ४२ । क

मन्त्रार ।

१३३८. अति सं ३ । पम सं २७ । मे वाक्य सं १२४९ वीच सुवी १ । के सं २२ । क

मन्त्रार ।

१३३९. अति सं ४ । पम सं २९ । मे वाक्य × । सुपूर्व । के सं २०१ । क मन्त्रार ।

१३४०. अति सं ५ । पम सं १ । मे वाक्य × । के सं २२२ । क मन्त्रार ।

१३४१. अति सं ६ । पम सं २२४ । मे वाक्य सं १२३ वाक्य सुवी ३ । के सं २३४ । क

मन्त्रार ।

विशेष—अतिवाक्य वाक्यमन्त्र की टीका नहीं है ।

१३४२. अति सं ७ । पम सं १ । मे २ । मे वाक्य × । सुपूर्व । के सं १२ । क मन्त्रार ।

विशेष—आत्म के २ पम नहीं है ।

१३४३. अति सं ८ । पम सं १३१ । मे वाक्य × । के सं १२ । क मन्त्रार ।

विशेष—अति आशीर्वा है ।

१३४४. अति सं ९ । पम सं १७६ के २१ । मे वाक्य × । सुपूर्व । के सं २२३ । क मन्त्रार ।

१३४५. अति सं १० । पम सं २६७ । मे वाक्य × । के सं २२४ । सुपूर्व । क मन्त्रार ।

विशेष—अतिवाक्य मन्त्र नहीं है । शिष्टी टीका लक्षित है ।

१३४६. अति सं ११ । पम सं ११६ । मे वाक्य × । के सं २२५ । क मन्त्रार ।

१३४७. अति सं १२ । पम सं ४४ । मे वाक्य × । सुपूर्व । के सं २२६ । क मन्त्रार ।

१३४८. अति सं १३ । पम सं १३ । मे वाक्य × । सुपूर्व । के सं २२७ । क मन्त्रार ।

विशेष—आत्मवाक्य मन्त्रार तक है ।

१३४९. अति सं १४ । पम सं १४२ । मे वाक्य सं १२ । के सं २२८ । क मन्त्रार ।

१३५०. अति सं १५ । पम सं १४ । मे वाक्य सं १२४७ वाक्य सुवी १ । के सं १२४ ।

क मन्त्रार ।

विशेष—अन्तीकमन्त्र वीच के प्रतिनिधि की गी ।

१३७४ प्रति स० १६ । पत्र स० १३५ । ले० काल × । वे० स० ६५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

१३७५ प्रति स० १७ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० स० २८२ । छ

भण्डार ।

विशेष—बारह भावना मात्र है ।

१३७६ प्रति स० १८ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १५८१ फागुण सुदी १ । वे० स० २५ । ज

भण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे फागुण सुदी १ बुधवार दिने । अथ श्रीमूलसवे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्द-
कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे
सकलविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनि जनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभावन्देवा । आर्वर गण स्थानत् ।
कूरमवर्गे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालास्त्वये समस्तगोष्ठि पचायत शास्त्र ज्ञानार्णव लिखापित त्रैपनक्रिया-
वर्तनितवाद् धनादयोग्य घटापित कर्मक्षयनिमित्त ।

१३७७ प्रति स० १६ । पत्र स० ११५ । ले० काल × । वे० स० ६० । झ भण्डार ।

१३७८ प्रति स० २० । पत्र स० १०४ । ले० काल × । वे० स० १०० । ब भण्डार ।

१३७९ प्रति स० २१ । पत्र स० ३ से ७३ । ले० काल स० १५०१ माघ बुदी ३ । अपूर्णा । वे० स०

१५३ । ब भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्ति के लिए प्रतिलिपि की थी ।

१३८० प्रति स० २० । पत्र स० १३८ । ले० काल स० १७८८ । वे० स० ३७० । ब भण्डार ।

१३८१ प्रति स० २३ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६४१ । वे० स० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१३८२ प्रति स० २४ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६०१ । अपूर्णा । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत गद्य टीका सहित है ।

१३८३ ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१६ । अ भण्डार ।

१३८४ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० २२५ । क भण्डार ।

१३८५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८२३ माघ सुदी १० । वे० स० २२६ । क

भण्डार ।

१३८६ प्रति स० ४ । पत्र स० २ से ६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३१ । घ भण्डार ।

विशेष—एकमात्रता वाली बातों में इस प्रकार है—

भिरि विषयमन्त्राये दण्डकपासीं कुर्वन् बहुमन्त्रैः

सप्तमस्तिस्रः शुभनीए अष्टमस्तुष्टीमन्त्रायै वैर्द ॥

१३२३. आचार्य—शुभमन्त्राचार्य १ यत्र सं १२ । या १२ × २३ दण्ड । भाग—संतुष्ट ।

विशेष—यत्र १२ यत्र × १२ यत्र सं १२०६ नीच मुष्टी १८ । पूर्ण । वै सं २४ । क मन्त्र ।

विशेष—दण्ड यत्र में भी चतुर्विध के यत्र की अभिव्यक्ति करवायी थी ।

१३३. अति सं ३ । यत्र सं १३ । मे यत्र सं १३२ चारवा मुष्टी १३ । वै सं ४१ । क

मन्त्र ।

१३४. अति सं ३ । यत्र सं २० । मे यत्र सं १३४२ नीच मुष्टी ८ । वै सं २२ । क

मन्त्र ।

१३५. अति सं ४ । यत्र सं २६ । मे यत्र × । पूर्ण । वै सं २२१ । क मन्त्र ।

१३६. अति सं २ । यत्र सं १ । मे यत्र × । वै सं २२९ । क मन्त्र ।

१३७. अति सं ६ । यत्र सं २२४ । मे यत्र य १ १२ चारवा मुष्टी ३ । वै सं २३४ । क

मन्त्र ।

विशेष—अति सं अतिचार की सीमा नहीं है ।

१३८. अति सं ७ । यत्र सं १ मे २ । मे यत्र × । पूर्ण । वै सं २२ । क मन्त्र ।

विशेष—आचार्य के २ यत्र नहीं है ।

१३९. अति सं ८ । यत्र सं १३१ । मे यत्र × । वै सं २२ । क मन्त्र ।

विशेष—अति आचार्य है ।

१४०. अति सं ९ । यत्र सं १०८ मे २ । मे यत्र × । पूर्ण । वै सं २२१ । क मन्त्र ।

१४१. अति सं १ । यत्र सं २२५ । मे यत्र × । वै सं २२८ । पूर्ण । क मन्त्र ।

विशेष—अति सं यत्र नहीं है । द्विष्टी सीमा नहीं है ।

१४२. अति सं ११ । यत्र सं १९ । मे यत्र × । वै सं २२२ । क मन्त्र ।

१४३. अति सं १३ । यत्र सं ४४ । मे यत्र × । पूर्ण । वै सं २२२ । क मन्त्र ।

१४४. अति सं १३ । यत्र सं १३ । मे यत्र × । पूर्ण । वै सं २२९ । क मन्त्र ।

विशेष—अष्टमस्तुष्टी अतिचार लक्ष है ।

१४५. अति सं १४ । यत्र सं १४१ । मे यत्र सं १ ८ । वै सं २२० । क मन्त्र ।

१४६. अति सं १५ । यत्र सं १४ । मे यत्र सं १४८ अष्टमस्तुष्टी १ वै सं १९८ ।

क मन्त्र ।

विशेष—आचार्य के १५ मे अभिव्यक्ति की थी ।

१४०१ त्रयोविंशतिका । पत्र म० १३ । मा० १०३×६३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १४० । अ भण्डार ।

१४०२ दर्शनपाहुडभाषा । पत्र स० २६ । मा० १०३×८३ इच्छ । भाषा—हिंदी (गद्य) । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मष्टपाहुड का एक भाग है ।

१४०३ द्वादशभावना दृष्टान्त । पत्र स० १ । मा० १०×६३ इच्छ । भाषा—गुजराती । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल म० १७०७ वैशाख बुदी १ । वे० स० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—जातोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१४०४ द्वादशभावनाटीका । पत्र स० ६ । मा० ११×८ इच्छ । भाषा—हिंदी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—कुन्दकुन्दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी हैं ।

१४०५ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र न० २० । मा० १०३×४ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति । पत्र स० ४ । मा० १०३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ८४ । अ भण्डार ।

१४०७ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र म० १ । मा० १०×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ८४ । अ भण्डार ।

१४०८ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० म० १६१ । क भण्डार ।

१४०९ द्वादशानुप्रेक्षा—कविदत्त । पत्र स० ८३ । मा० १२३×५ इच्छ । भाषा—हिंदी (पद्य) ।
विषय—अध्यात्म । २० काल स० १६०७ भाद्रपद बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६ । क भण्डार ।

१४१० द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू । पत्र म० ८ । मा० ६३×४३ इच्छ । भाषा—हिंदी । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १६०४ । ट भण्डार ।

१४११ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र स० १३ । मा० १०×५ इच्छ । भाषा—हिंदी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२८ । क भण्डार ।

१४१२ प्रति स० २ । पत्र म० ७ । ले० काल × । वे० स० ६३ । क भण्डार ।

१४१३ पञ्चतत्त्वधारणा । पत्र स० ७ । मा० ६३×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२३२ । अ भण्डार ।

१४०१ त्रयोविंशतिका । पत्र स० १३ । आ० १०३×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४० । च भण्डार ।

१४०२ दर्शनपाहुडभाषा । पत्र स० २६ । आ० १०३×८३ इच्छ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८३ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थपाहुड का एक भाग है ।

१४०३ द्वादशभावना दृष्टान्त । पत्र स० १ । आ० १०×८३ इच्छ । भाषा—गुजराती । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल स० १७०७ वैशाख बुदी १ । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—जालोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१४०४ द्वादशभावनाटीका । पत्र स० ६ । आ० ११×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६५५ । ट भण्डार ।

विशेष—कुन्दकु-दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी हैं ।

१४०५ द्वादशानुप्रेक्षा " । पत्र स० २० । आ० १०३×४ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८५ । ट भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति । पत्र स० ४ । आ० १०३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४ । अ भण्डार ।

१४०७ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र स० १ । आ० १०×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

१४०८ प्रति स० ७ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १६१ । म भण्डार ।

१४०९ द्वादशानुप्रेक्षा—कविल्लत । पत्र स० ८३ । आ० १२३×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल स० १६०७ भाद्रमा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६ । क भण्डार ।

१४१० द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू । पत्र स० ८ । आ० ६३×४३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—

ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६०४ । ट भण्डार ।

१४११ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र स० १३ । आ० १०×५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्रन्थात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२८ । छ भण्डार ।

१४१२ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ६३ । म भण्डार ।

१४१३ पञ्चतत्त्वधारणा । पत्र स० ७ । आ० ६३×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२३२ । अ भण्डार ।

१४१४ पञ्चद्वितीया—वचनं ४। वा १२४६ द्वा। भावा-द्विती। विषय-व्यञ्जक।
२ वाच १। ने वाच १। मूर्त्ति। ने ४३१। क मन्त्रार।

विशेष—सुवचनं सुव एरीवाचसीन भावा नी है।

१४१५ परमात्मपुत्राद्य—दीपकम्। वचनं १४। वा १२४६ द्वा। भावा-द्विती (वच)।
विषय-व्यञ्जक। २ वाच १। ने वाचनं १२४६ वाचनं मुदी ११। मूर्त्ति। क मन्त्रार।

विशेष—सुवचनं सुव ने प्रतिविधि नी नी।

१४१६ प्रति सं ०। वचनं २ ने २२। ने वाचनं १२४६ वाचनं मुदी २। मूर्त्ति। ने ४
१२४। क मन्त्रार।

१४१७ परमात्मपुत्राद्य—दीपकम्। वचनं १४ ने १४६। वा १२४६ द्वा। भावा-
व्यञ्जक। विषय-व्यञ्जक। २ वाच १२४६ वाचनी। ने वाचनं १२४६ वाचनी मुदी २। मूर्त्ति। ने ४
२४। क मन्त्रार।

विशेष—सुवचनं सुव ने प्रतिविधि नी नी।

१४१८ प्रति सं २। वचनं १०। ने वाचनं १२४६। ने ४३१। क मन्त्रार।

विशेष—संस्कृत ने दीपक नी है।

१४१९ प्रति सं ३। वचनं १०। ने वाचनं १२४६ वाचनी मुदी ११। ने ४३१। क
मन्त्रार। संस्कृत दीपक लक्ष्य है।

विशेष—वचनं ४। लोका। लक्ष्य २ मुदी ने सुवचनं लक्ष्य विधि है।

१४२० प्रति सं ४। वचनं १२। ने वाचनं १२४६। ने ४३१। क मन्त्रार।

१४२१ प्रति सं ५। वचनं १२। ने वाचनं १२४६। ने ४३१। क मन्त्रार।

१४२२ प्रति सं ६। वचनं १२। ने वाचनं १२४६। ने ४३१। क मन्त्रार।

विशेष—संस्कृत ने परमात्मा नी लक्ष्य विधि है।

१४२३ प्रति सं ७। वचनं १२। ने वाचनं १२४६। ने ४३१। क मन्त्रार।

१४२४ प्रति सं ८। वचनं १२। ने वाचनं १२४६ वाचनी मुदी १। ने ४३१। क
मन्त्रार।

विशेष—सुवचनं सुव ने प्रतिविधि नी नी।
संस्कृत ने परमात्मा नी लक्ष्य नी विधि है।

१४२५ परमात्मपुत्राद्य—दीपकम्। वचनं १४ ने १४६। वा १२४६ द्वा।
भावा-द्विती। विषय-व्यञ्जक। २ वाच १। ने वाचनं १२४६। ने ४३१। क मन्त्रार।

१४२६ प्रति सं ९। वचनं १४६। ने वाचनं १२४६। ने ४३१। क मन्त्रार।

१४२७ प्रति स० ३ । पत्र न० १४१ । ले० काल स० १७६७ पीप सुदी ५ । वे० स० ४५४ । अ
भण्डार ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८ परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र स० १६४ । प्रा० ११×७ इअ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६ । अ भण्डार ।

१४२९ प्रति स० २ । पत्र स० ८ मे १४९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र है ।

१४३० परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स० १६३ । प्रा० ११×७ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १६४८ द्वि० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ४७७ । क भण्डार ।

१४३१ परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स० ६७ । प्रा० ११×५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १८६० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० २०७ । च भण्डार ।

१४३२ प्रति स० २ । पत्र स० २६ से १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८ । च भण्डार ।

१४३३ परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स० १७० । प्रा० ११×५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १६६६ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रगल्भ कटो हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४ परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । पत्र स० ४४४ । प्रा० ११×६ । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० स० ४६६ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५ प्रति स० २ । पत्र स० २३० म २४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३६ । छ भण्डार ।

१४३६ प्रति स० ३ । पत्र स० २७७ । ले० काल स० १६५० । वे० स० ४३७ । छ भण्डार ।

१४३७ प्रति स० ४ । पत्र स० ६० म १६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६३८ । च भण्डार ।

१४३८ प्रति स० ५ । पत्र स० ३२८ । ले० काल × । वे० स० १६२ । छ भण्डार ।

१४३९ परमात्मप्रकाशबालाशेषोपनिषद् टीका—खानचन्द । पत्र स० २६१ । प्रा० १२×५ इअ ।

भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल स० १६३६ । पूर्ण । वे० स० ४४८ । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका मुन्तान में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने
किया है ।

१४४० परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र स० २१ । प्रा० ११×७ इअ । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल स० १६१६ चैत्र बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४० । क भण्डार ।

१४४० प्रति स० २ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १६४८ । वे० स० ४४१ । क भण्डार ।

१४४० प्रति स० २ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० स० ४४२ । क भण्डार ।

१४५६ प्रति स० ६ । पत्र स० २३६ । ले० काल स० १६३८ । वे० स० ५०६ । क भण्डार ।

१४६० प्रति स० ७ । पत्र स० ८७ । ले० काल ५ । वे० स० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४६१ प्रति स० ८ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १७८७ फागुण बुदी ११ । वे० स० ५११ । ड

भण्डार ।

१४६२ प्रति स० ९ । पत्र स० १६२ । ले० काल स० १६८० भाद्रपद शुदी २ । वे० स० ६१ । ज

भण्डार ।

विशेष—पं० फनेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६३ प्रवचनमारटीका । पत्र स० ४१ । घा० ११५६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।

१० काल ५ । ले० काल ५ । अपूर्ण । वे० स० ५१० । ड भण्डार ।

विशेष—प्रातः म मूल नष्टन म छाया तम हिन्दी म अर्थ दिया हुआ है ।

१४६४ प्रवचनमारटीका । पत्र स० १२१ । घा० १२५५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल ५ । ले० काल स० १८५७ भाषा बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५०६ । क भण्डार ।

१४६५ प्रवचनमारप्राभृतपुक्ति । पत्र स० ५१ म १३१ । घा० १२५५ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल ५ । ले० काल स० १७६५ । अपूर्ण । वे० स० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नहीं हैं । महाराजा जयसिंह के नामनवाल मे नेवटा मे महात्मा हरिद्विष्य न प्रतिलिपि की थी ।

१४६६ प्रवचनमारभाषा—पांडे हेमराज । पत्र स० ८३ मे ३०५ । घा० १२५५ इच्छ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल स० १७०६ भाषा बुदी १ । स० काल स० १७२५ । अपूर्ण । वे० स० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—नागानर म मोसवाल गुजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६७ प्रति स० १० । पत्र स० २६७ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० ५१३ । क भण्डार ।

१४६८ प्रति स० ११ । पत्र स० १७३ । ले० काल ५ । वे० स० ५१२ । क भण्डार ।

१४६९ प्रति स० १२ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १६२७ फागुण बुदी ११ । वे० स० ६३ । घ भण्डार ।

विशेष—पं० परमानन्द ने दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी ।

१४७० प्रति स० १३ । पत्र स० १७६ । ले० काल स० १७४३ पौष बुदी २ । वे० स० ५१३ । क भण्डार ।

१४७१ प्रति स० १४ । पत्र स० २४१ । ले० काल स० १८६३ । वे० स० ६४१ । घ भण्डार ।

१४८० प्रति स ७। पत् १८४। मे काल तं १८३ अति क गुटी ९। के तं १२१। अ
मकार ।

विशेष—मन्त्राय विनाली मन्त्ररत्न के पुन मन्त्रमा मलेय मे प्रतिनिधि की की ।

१४८१ मन्त्ररत्नसारभाषा—आमराज गाड़ीका। पत् १। पा ११८२ दक्ष। माता-हिन्दी
(पत्)। विपद-मन्त्ररत्न। २ काल तं १८२९। मे काल तं १८३० माता क गुटी १२। पुष्प। के तं १४४।
अ मकार ।

१४८४ मन्त्ररत्नसारभाषा—कुम्हारनरदास। पत् १। पा १२३८२ दक्ष। माता-हिन्दी।
विपद-मन्त्ररत्न। २ काल ×। मे काल तं १२३३ अति क गुटी ९। पुष्प। के तं १२३३ क मकार ।

विशेष—अम्ब के अम्ब मे कुम्हारनरदास का परिवार विना है।

१४८५ मन्त्ररत्नसारभाषा—। पत् १। पा १२३९३ दक्ष। माता-हिन्दी। विपद-मन्त्ररत्न।
२ काल ×। मे काल ×। पुष्प। के तं १२३२ क मकार ।

१४८६ प्रति स २। पत् १। मे काल ×। पुष्प। के तं १४९। अ मकार ।

विशेष—मन्त्ररत्न एव नहीं है।

१४८७ मन्त्ररत्नसारभाषा—। पत् १। पा १२४०४ दक्ष। माता-हिन्दी (पत्)। विपद
मन्त्ररत्न। २ काल ×। मे काल ×। पुष्प। के तं १२३२ क मकार ।

१४८८ मन्त्ररत्नसारभाषा—। पत् १। पा १२४१५ दक्ष। माता-हिन्दी
(पत्)। विपद-मन्त्ररत्न। २ काल ×। मे काल तं १२४१५ पुष्प। के तं १४९। अ मकार ।

१४८९ मन्त्ररत्नसारभाषा—। पत् १। पा १२४२६ दक्ष। माता-हिन्दी (पत्)। विपद-
मन्त्ररत्न। २ काल ×। मे काल तं १२४२६ पुष्प। के तं १४९। अ मकार ।

१४९० मातायोगसारभाषा—। पत् १। पा १२४३७ दक्ष। माता-हिन्दी। विपद-मन्त्ररत्न।
२ काल ×। मे काल ×। पुष्प। के तं १४९। अ मकार ।

१४९१ मातायोगसारभाषा—। पत् १। पा १२४४८ दक्ष। माता-हिन्दी। विपद-मन्त्ररत्न।
२ काल ×। मे काल ×। पुष्प। के तं १४९। अ मकार ।

विशेष—मन्त्ररत्न मे रत्न हूट माता योग साधना हीमा मिता है।

मातायोग—मन्त्ररत्न विपद कदा मन्त्ररत्न नरदास ।

मन्त्ररत्न को देखिये मन्त्ररत्न कदा विपद ।

अन्तिम—मन्त्ररत्न मन्त्ररत्न कदा की मन्त्ररत्न मन्त्ररत्न की मन्त्ररत्न ।

मन्त्ररत्न की मन्त्ररत्न कदा देखिये मन्त्ररत्न

मन्त्ररत्न की मन्त्ररत्न कदा मन्त्ररत्न मन्त्ररत्न ।

१४८२ वारहभावना । पत्र स० १५ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।
२० काल × । ले० काल × । म० पूर्ण । वे० स० ५२६ । ङ मण्डार ।

१४८३ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ६८ । ऋ मण्डार ।

१४८४ वारहभावना—भूधरदास । पत्र स० १ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।
२० काल × । ले० काल × । वे० स० १२४७ । व्य मण्डार ।

विशेष—पार्वपुराण से उद्धृत है ।

१४८५ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० २५२ । त्व मण्डार ।

विशेष—इसका नाम चक्रवर्त्ति की वारह भावना है ।

१४८६ वारहभावना—नवलकवि । पत्र स० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३० । ङ मण्डार ।

१४८७ बोधप्राभृत—आचार्य कुदकुद । पत्र स० ७ । आ० ११×४^३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३५ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४८८ भववैराग्यशतक । पत्र स० १५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल स० १८२४ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४५५ । व्य मण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१४८९ भावनाद्वात्रिशिका । पत्र स० २६ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५७ । क मण्डार ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह और है । यतिभावनाष्टक, पञ्चनन्दिपञ्चविंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र ।
प्रति स्वर्णाक्षरों में है ।

१४९० भावनाद्वात्रिशिकाटीका । पत्र स० ४६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६८ । ङ मण्डार ।

१४९१ भावपाहुद—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० ६ । आ० १४×५^३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३० । ज मण्डार ।

विशेष—प्राकृत गायाम्रो पर संस्कृत श्लोक भी हैं ।

१४९२ मृत्युमहोत्सव । पत्र स० १ । आ० ११^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४१ । अ मण्डार ।

१४९३ मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख । पत्र स० २२ । आ० ६^३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
अध्यात्म । २० काल स० १६१८ भाषा सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८० । घ मण्डार ।

१४९४ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ६०४ । ङ मण्डार ।

१४३३ प्रति स ३। पत्र नं १। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

१४३४ प्रति स ४। पत्र नं ११। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

१४३५ प्रति स ५। पत्र नं १। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

१४३६ आराधनाप्रकरण—आ इन्द्रियसूक्ति। पत्र नं १। या १ \times ५४ इति। मन्थार—संस्कृत।

विषय—विषय १८ काल \times । मे काल \times । पूर्ण। के तं १५४। क मन्थार।

१४३७ योगसूक्ति—पत्र नं १। या १ \times ५४ इति। मन्थार—संस्कृत। विषय—विषय १८

काल \times । मे काल \times । पूर्ण। के तं १५४। क मन्थार।

१४ योगसूक्ति—हेमचन्द्रसूक्ति। पत्र नं १२। या १ \times ५४ इति। मन्थार—संस्कृत। विषय—विषय १८ काल \times । मे काल \times । पूर्ण। के तं १५४। क मन्थार।

१४ योगसूक्ति—पत्र नं १४। या १ \times ५४ इति। मन्थार—संस्कृत। विषय—विषय १८ काल \times । मे काल \times । पूर्ण। के तं १५४। क मन्थार।

विषय—हिन्दी के वर्ण विद्या है।

१४ योगसूक्ति—योगीन्द्रसूक्ति। पत्र नं १२। या १ \times ५४ इति। मन्थार—संस्कृत। विषय—विषय १८ काल \times । मे काल \times । पूर्ण। के तं १५४। क मन्थार।

विषय—मुक्तान्त काव्या के प्रतिविम्ब की की।

१४ योगसूक्ति २। पत्र नं १०। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

विषय—संस्कृत काव्या विद्या है।

१४ योगसूक्ति ३। पत्र नं १३। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

विषय—हिन्दी वर्ण की विद्या है।

१४ योगसूक्ति ४। पत्र नं १४। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

१४ योगसूक्ति ५। पत्र नं १५। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

१४ योगसूक्ति ६। पत्र नं १६। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

१४ योगसूक्ति ७। पत्र नं १७। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

१४ योगसूक्ति ८। पत्र नं १८। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

१४ योगसूक्ति ९। पत्र नं १९। मे काल \times । के तं १५४। क मन्थार।

१४ योगसूक्ति १०। पत्र नं २०। या १ \times ५४ इति। मन्थार—संस्कृत। विषय—विषय १८

काल \times । मे काल \times । पूर्ण। के तं १५४। क मन्थार।

विषय—संस्कृत के काव्या विद्या हिन्दी की की।

१४ योगसूक्ति ११। पत्र नं २१। या १ \times ५४ इति। मन्थार—संस्कृत। विषय—विषय १८

काल \times । मे काल \times । पूर्ण। के तं १५४। क मन्थार।

१५१० प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६१० । क भण्डार ।

१५१३ प्रति स० ३ । पत्र स० २८ । ले० काल × । वे० स० ६१७ । ङ भण्डार ।

१५१४ योगसारभाषा—प० बुधजन । पत्र स० १० । भा० ११×७३ इक्ष । भाषा—हिन्दी (पत्र) ।

विषय—ग्रन्थात्म । २० काल स० १८६५ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६ योगसारभाषा । पत्र स० ६ । भा० २१×६३ इक्ष । भाषा—हिन्दी (पत्र) । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६१८ । ङ भण्डार ।

१५१७ योगसारसंग्रह । पत्र स० १८ । भा० १०×४३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल स० १७४० वार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८ रूपस्थध्यानवर्णन । पत्र स० २ । भा० १०^३×५^३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५६ । ङ भण्डार ।

‘धर्मनायस्तुवे धर्ममय सद्दर्शसिद्धये ।

धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्तक ॥

१५१९ लिङ्गपाहुड—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र स० ११ । भा० १२×५^३ इक्ष । भाषा—प्राकृत । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वे० स० १०३ । छ भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुरावली भी है ।

१५२० प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६ । झ भण्डार ।

१५२१ वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र स० ७ । भा० १२×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८८५ सावण सुदी ६ । वे० स० ३३७ । च भण्डार ।

विशेष—बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३ प्रति स० ३ । पत्र स० २१ । ले० काल × । वे० स० १४३ । व्य भण्डार ।

१५२४ पटपाहुड (प्राश्रुत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र स० २ से २४ । भा० १०×४३ इक्ष । भाषा—प्राकृत । विषय—ग्रन्थात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७ । अ भण्डार ।

१५२५ प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १८५४ मगसिर सुदी १५ । वे० स० १८८ । अ भण्डार ।

१५२६ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८१७ माघ सुदी ६ । वे० स० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) में प० रूपचन्द्रजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२० प्रति स ४। पच सं ४२। के काल सं ११० वातिक बुदी ७। के सं १२२। अ
नम्बार।

विशेष—इसल्ल वचो में बी घर्ष विद्या है।

१५२८ प्रति सं ५। पच सं ५१। के काल \times । के सं ९। अ नम्बार।

१५२९ प्रति स ६। पच सं ५२। के काल \times । के सं १२७। अ नम्बार।

१५३० प्रति स ७। पच सं ५३। के काल \times । वापुर्त्त। के सं ७३७। अ नम्बार।

१५३१ प्रति सं ८। पच सं ५४। के काल \times । वापुर्त्त। के सं ७३८। अ नम्बार।

१५३२ प्रति सं ९। पच सं ५५। के काल \times । वापुर्त्त। के सं ७३९। अ नम्बार।

१५३३ प्रति स १। पच सं ५६। के काल \times । के सं ७४०। अ नम्बार।

१५३४ प्रति स २। पच सं ५७। के काल \times । के सं ७४१। अ नम्बार।

विशेष—अति संस्तुट टीका लक्षित है।

१५३५ प्रति सं ३। पच सं ५८। के काल सं १२१९ वातिक बुदी १२। के सं ६। अ
नम्बार।

१५३६ प्रति स ४। पच सं ५९। के काल \times । के सं १२४६। अ नम्बार।

१५३७ प्रति स ५। पच सं ६०। के काल सं १०१२। के सं १२४७। अ नम्बार।

विशेष—नमनपुर में पाल्नागव वीरलाल में व पुष्कर के वठमार्ग मनीन्द्रबाल के प्रतिमिति की थी।

१५३८ प्रति स ६। पच सं ६१। के काल \times । वापुर्त्त। के सं ९२। अ नम्बार।

विशेष—मिन्न आकृत है—वर्षन सुभ करिष। करिष आकृत की ४२ वाचा से माले गही है। प्रति
शरीर एवं संस्तुट टीका लक्षित है।

१५३९ फलपाण्डुटीका—। पच सं ६२। वा १२०९ अत्र। जाला—इसल्ल। विश्व—अथवा।

१ फल \times । के काल \times । वापुर्त्त। के सं २६। अ नम्बार।

१५४० प्रति स ७। पच सं ६३। के काल \times । के सं ७१३। अ नम्बार।

१५४१ प्रति सं ८। पच सं ६४। के काल सं १२१९ वातिक बुदी १२। के सं १२९। अ
नम्बार।

विशेष—व लघुवचन के वठमार्ग आनन्द में प्रतिमिति हुई।

१५४२ प्रति स ९। पच सं ६५। के काल सं १२२९ वातिक बुदी १२। के सं २२। अ
नम्बार।

अध्यात्म एवं योगशास्त्र]

१५४३ पटपाहुडटीका—श्रुतसागर । पत्र स० २६५ । मा० १०३×५ इञ्च । भाषा—पञ्चत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१२ । क मण्डार ।

१५४४ प्रति स० २ । पत्र स० २६६ । ले० काल स० १८६३ माह बुदी ६ । वे० स० ७४१ । ड मण्डार ।

१५४५ प्रति स० ३ । पत्र स० १५२ । ले० काल स० १७६५ माह बुदी १० । वे० स० ६२ । छ मण्डार ।

विशेष—नरसिंह भगवत ने प्रतिलिपि की थी ।

१५४६ प्रति स० ४ । पत्र स० १११ । ले० काल स० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५ । वे० स० ६ । ब मण्डार ।

विशेष—श्रीलालचन्द्र के पठनार्थ ग्रामेर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१५४७ प्रति स० ५ । पत्र स० १७१ । ले० काल स० १७६७ श्रावण सुदी ७ । वे० स० ६८ । ब मण्डार ।

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने ५० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी थी ।

१५४८ सवोधअक्षरवाधनी—द्यानतराय । पत्र स० ५ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६० । च मण्डार ।

१५४९ सवोधपचासिका—गौतमस्वामी । पत्र स० ४ । मा० ८×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १८४० वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३६४ । च मण्डार ।

विशेष—बाणपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५० समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स० २३ । मा० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वृत्त स० २६३ सव भवति । वे० स० १८१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—सवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुद्धपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री भूलसधे नदिषधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तन्निष्कप्यमडलाचार्यधीधर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य धीनेमिचन्द्रदेवास्तेरिमानि नाटकसमयसारवृत्तानि लिखापितानि स्वपठनार्थ ।

१५५१ प्रति स० २ । पत्र स० ४० । ले० काल × । वे० स० १८६ । अ मण्डार ।

१५५२ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० २७३ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है । दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

१५५३ प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६४२ । वे० स० ७३४ । क मण्डार ।

१५६६ प्रति स० ३ । पत्र म० १६ । ले० काल × । वे० स० १६२ । अ भण्डार ।

१५६७ प्रति स० ४ । पत्र म० ४१ । ले० काल × । वे० स० २१५ । अ भण्डार ।

१५६८ प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १६४३ । वे० स० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—सरल सम्स्कृत में टीका दी है तथा नीचे श्लोको की टीका है ।

१५६९ प्रति स० ६ । पत्र स० १२४ । ले० काल × । वे० म० ७३७ । क भण्डार ।

१५७० प्रति स० ७ । पत्र स० ६४ । ले० काल न० १८६७ भाद्रपदा सुदी ११ । वे० स० ७३८ । क

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१ प्रति स० ८ । पत्र स० २३ । ले० काल × । वे० स० ७३९ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२ प्रति स० ९ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । वे० स० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—कलशों पर भी संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१५७३ प्रति स० १० । पत्र स० २४ । ले० काल × । वे० स० ११० । अ भण्डार ।

१५७४ प्रति स० ११ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ में संस्कृत टीका नहीं है केवल श्लोक ही हैं ।

१५७५ प्रति स० १२ । पत्र स० २ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७२ । च भण्डार ।

१५७६ प्रति स० १३ । पत्र स० २६ । ले० काल म० १७१६ वार्तिक सुदी २ । वे० म० ६१ । छ

भण्डार ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७ प्रति स० १४ । पत्र स० ५३ । ले० काल × । वे० स० ८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१५७८ प्रति स० १५ । पत्र स० ३८ । ले० काल म० १६१४ पौष बुदी ८ । वे० स० २०५ । ज

भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१५७९ प्रति स० १६ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० १६१४ । ट भण्डार ।

१५८० प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १८२२ । वे० स० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—श्री० नेतमोदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१ समयसारटीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र स० १३५ । भा० १०३×४३ इअ

भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १८३३ भाद्र बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २ । अ

भण्डार ।

१२८० प्रति स ० ५ । पच सं ११६ । ने नाल सं १७ ३ । वे सं १ ४ । अ न्यार ।

विशेष—अक्षरि—संघ १७ ३ नालिर हृष्यापय्या विषी मुद्रवारे विनिमित्तम् ।

१२८३ प्रति सं ३ । पच सं १ १ । ने नाल \times । वे सं ३ । अ न्यार ।

१२८४ प्रति स ४ । पच सं १ ३ ४२ । ने नाल \times । वे सं ३ ३ । अ न्यार ।

१२८५ प्रति स ५ । पच सं ११६ । ने नाल सं १७ ३ । वे सं ३ ३ । अ न्यार ।

विशेष—अक्षरि—सं १७ ३ नालिर हृष्यापय्या विषी लिखितम् ।

१२८६ प्रति स ६ । पच सं ११६ । ने नाल सं १२३ । वे सं ७४ । अ न्यार ।

१२८७ प्रति सं ७ । पच सं १३ । ने नाल सं १२३७ । वे सं ७४१ । अ न्यार ।

१२८८ प्रति स ८ । पच सं १ २ । ने नाल सं १७ ३ । वे सं ७४१ । अ न्यार ।

विशेष—अक्षरि—सं १३ ने विरोध दाम में प्रतिविमि की थी ।

१२८९ प्रति स ९ । पच सं १३ । ने नाल \times । वे सं ७४१ । अ न्यार ।

१२९० प्रति सं १ । पच सं ११३ । ने नाल \times । वे सं ४२ । अ न्यार ।

विशेष—अक्षरि—सं १३ ।

१२९१ प्रति सं ११ । पच सं १७२ । ने नाल सं ११४४ । वे सं १ २ । अ न्यार ।

विशेष—अक्षरि—अक्षरि के अक्षरान्त में नालपुरा में निम्न सूत्रि वीरान्तर सुनि वेदा में प्रतिविमि की थी । नीचे दिखललिखित पंक्ति में धीर लिखी हैं—

‘वादि केवु केवु तन पुन वादि पारपु पोनी केवु ।

नाली सं ११७३ तन पुन वीरान्तरान्तर न्यार ।

नीचे में कुछ नम लिखवाले हुये हैं ।

१२९२ प्रति स १२ । पच सं १२ । ने नाल सं १२१ । वे सं ७४ । अ न्यार ।

विशेष—अक्षरि—अक्षरि के अक्षरान्त में प्रतिविमि की थी । १२९२ में १७ तन नीचे नम है ।

१२९३ प्रति स १३ । पच सं १२ । ने नाल सं १७३ । वे सं १२१ । अ न्यार ।

१२९४ समवसारि—१ पच सं ४ । वे \times २ दाम । नाला—नाल । विश्व—अक्षर ।

२ नाल \times । ने नाल \times । अक्षर । वे सं १ ७ । अ न्यार ।

१२९५ समवसारि—१ पच सं १ । वे \times २ दाम । नाला—अक्षर । विश्व—अक्षर ।

२ नाल \times । ने नाल \times । अक्षर । वे सं ७४१ । अ न्यार ।

१५६६ ममयमारनाटक—जनारसीदास । पत्र स० ६७ । भा० ६६४ इअ । भाषा—हिन्दी ।
विषय—अध्यात्म । २० पान स० १६६३ आर्माज मुदी १३ । ले० पान स० १८३८ । पूर्ण । वे० स० ४०६ । अ
भण्डार ।

१७६७ प्रति स० २ । पत्र स० ७२ । ले० पान स० १८६७ फागुण मुदी ६ । वे० स० ४०६ । अ
भण्डार ।

विशेष—भागरे में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५६८ प्रति स० ३ । पत्र स० १४ । ले० पान स० १८६८ । वे० स० १०६६ । अ भण्डार ।

१७६९ प्रति स० ४ । पत्र स० ८२ । ले० पान स० १८६९ । वे० स० ६८४ । अ भण्डार ।

१६०० प्रति स० ५ । पत्र स० ८ मे ११५ । ले० पान स० १७८६ फागुण मुदी ४ । वे० स० ११२८

अ भण्डार ।

१६०१ प्रति स० ६ । पत्र स० १८४ । ले० पान स० १६३० ज्येष्ठ मुदी १५ । वे० स० ७४६ । क
भण्डार ।

विशेष—पद्यों के बीच में सदागुप्त वासुकीवाल वृत्त हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है । टीका रचना स०
१६१४ वात्तिक मुदी ७ है ।

१६०२ प्रति स० ७ । पत्र स० १११ । ले० पान स० १६५६ । वे० स० ७४७ । क भण्डार ।

१६०३ प्रति स० ८ । पत्र स० ४ से ५६ । ले० पान स० १६०३ । वे० स० २०८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं ।

१६०४ प्रति स० ९ । पत्र स० ८७ । ले० पान स० १६८७ माघ मुदी ८ । वे० स० ८४ । ग भण्डार ।

१६०५ प्रति स० १० । पत्र स० ३६६ । ले० पान स० १६२० वैशाख मुदी १ । वे० स० ८५ । ग
भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—प्रति छुटके के रूप में है । लिपि बहुत सुन्दर है । प्रश्न मोटे हैं तथा एक पत्र में ५ लाइन और
प्रति लाइन में १८ प्रश्न हैं । पद्यों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रों में है । यह ग्रन्थ तनसुख
सानी का है ।

१६०६ प्रति स० ११ । पत्र स० २८ से १११ । ले० पान स० १७१४ । अपूर्ण । वे० स० ७६७ । छ
भण्डार ।

विशेष—रामगोपाल बायम्ह ने प्रतिलिपि की थी ।

१६०७ प्रति स० १२ । पत्र स० १२२ । ले० पान स० १६५१ चैत्र मुदी २ । वे० स० ७६८ । छ
भण्डार ।

विशेष—महोरीवाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१६०८ प्रति स० १३ । पत्र स० १०१ । ले० पान स० १६४३ मगसिर मुदी १३ । वे० स० ७६९ । छ
भण्डार ।

विशेष—नवमीपारण्यक ब्रह्मण्य ने यमनवर में प्रतिविधि की थी ।

१६६. प्रति सं १४ । पत्र सं १९ । ने नाल सं १६७७ प्रथम नालक बुटी १३ । ने सं

७७० । छ मन्थार ।

विशेष—हिन्दी नक्ष में भी दीया है ।

१६१ प्रति सं १३ । पत्र सं १ । ने नाल × । धनुर्य । ने सं ७७१ । छ मन्थार ।

१६११ प्रति सं १६ । पत्र सं २ से २२ । ने नाल × । धनुर्य । ने सं ११७ । छ मन्थार ।

१६१२ प्रति सं १७ । पत्र सं १७ । ने नाल सं १७१३ सावाङ्ग बुटी १३ । ने सं ७७२ ।

छ मन्थार ।

१६१३. प्रति सं १८ । पत्र सं ३ । ने नाल सं ११४ नवतिर बुटी ३ । ने सं ११२ । छ

मन्थार ।

विशेष—प्रांते नालपत्र में सवाङ्गम बोधा में प्रतिविधि पठई ।

१६१४ प्रति सं १९ । पत्र सं ६ । ने नाल × । धनुर्य । ने सं ११३ । छ मन्थार ।

१६१५ प्रति सं २० । पत्र सं ४१ से १३२ । ने नाल × । धनुर्य । ने सं ११३ (क) । छ

मन्थार ।

१६१६ प्रति सं २१ । पत्र सं १३ । ने नाल × । ने सं ११३ (ख) । छ मन्थार ।

१६१७ प्रति सं २२ । पत्र सं २६ । ने नाल × । ने सं ११३ (ग) । छ मन्थार ।

१६१८. प्रति सं २३ । पत्र सं ४ से ३ । ने नाल सं १७४ नवतिर बुटी १ । धनुर्य । ने

सं ११३ (घ) । छ मन्थार ।

१६१९ प्रति सं २४ । पत्र सं १३ । ने नाल सं १७५ नालक बुटी २ । ने सं ३ । छ

मन्थार ।

विशेष—विष्णु विवाही किंती नालम ने प्रतिविधि की थी ।

१६२ प्रति सं २५ । पत्र सं ४ से १ । ने नाल × । धनुर्य । ने सं ११२१ । छ मन्थार ।

१६२१ प्रति सं २६ । पत्र सं ११ । ने नाल × । धनुर्य । ने सं १७०५ । छ मन्थार ।

१६२२ प्रति सं २७ । पत्र सं २३७ । ने नाल सं १७४६ । ने सं ११९ । छ मन्थार ।

विशेष—अति रात्रिपञ्चम नक्ष दीया कहिह है ।

१६२३ प्रति सं २८ । पत्र सं ३ । ने नाल × । ने सं ११३ । छ मन्थार ।

१६२४ समसप्तारमाहा—अथपञ्च सावाङ्ग । पत्र सं २१३ । या १२ × दक्ष । नाल—हिन्दी

(बब) । विष्णु—मन्थार । नाल सं ११४ नालक बुटी ३ । ने नाल सं ११४६ । धनुर्य । ने सं ७४५ ।

छ मन्थार ।

१६२५. प्रति सं २ । पत्र सं ४१३ । ने नाल × । ने सं ७४६ । छ मन्थार ।

१६२६ प्रति सं ३ । पत्र सं २१६ । ने नाल × । ने सं ७३ । छ मन्थार ।

१६०७ प्रति स० ४ । पत्र न० ३२४ । ले० बाल स० १८८३ । वे० सं० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—नदामुखजी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिनिधि की थी ।

१६२८ प्रति स० ५ । पत्र स० ३१७ । ले० काल स० १८७७ आषाढ़ सुदी १५ । वे० न० १११ । घ

ण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लगनऊ में नवाब गजुदीह बहादुर के राज्य में प्रतिनिधि की ।

१६२९ प्रति स० ६ । पत्र न० ३७५ । ले० बाल स० १९५२ । वे० सं० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३० प्रति स० ७ । पत्र स० १०१ ने ३१२ । ले० काल × । वे० न० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१ प्रति स० ८ । पत्र स० ३०५ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२ समयसारफलशाटीका । पत्र न० २०० से ३३२ । मा० ११२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पञ्चात्म । १० बाल × । ले० बाल स० १७१५ ज्येष्ठ सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—रथ मोक्ष सर्व विमुक्त जान और त्यागद्वार कूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नहीं हैं । पहिले बलदा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी में अर्थ है । समयसार टीका श्लोक स० ५६६५ है ।

१६३३ समयसारफलशाभाषा । पत्र न० ६२ । मा० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

विषय—पञ्चात्म । १० बाल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० न० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४ समयसारवचनिका । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० न० ६९८ । च भण्डार ।

१६३५ प्रति स० २ । पत्र स० ३५ । ले० बाल × । वे० सं० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७ समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र सं० ५१ । मा० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग

शास्त्र । १० बाल × । ले० बाल × । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८ प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० बाल × । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९ प्रति स० ३ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १९३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ ।

क भण्डार ।

१६४० समाधितन्त्र । पत्र स० १६ । मा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र ।

१० बाल × । ले० बाल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१ समाधितन्त्रभाषा । पत्र स० १३८ से १९२ । मा० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योगशास्त्र । १० काल × । ले० बाल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

१६४२ समाधितन्त्रभाषा—माणिक्यचन्द्र । पत्र सं० २६ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी
विषय—योगशास्त्र । १० बाल × । ले० बाल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३ प्रति सं० २ । जय सं ७१ । वि जय सं ११४३ । वि सं ७३१ । क. अष्टाद.

१६४४ प्रति सं ३। पत्र सं १। नि. कला X। दि. सं ७३७। क. मण्डार।

विशेष—हिन्दी एवं व्याकरणसिद्धान्तों द्वारा सूत्र दिया गया है।

१५५२ प्रति स ४। नम बं २। से नल \times । ५। बं ७५। क मय्या।

१९४६ समाहितम्भाषा-जायराम शशी । पृष्ठ ४१२ । भा १२, ४७ इति । गता-निर्ग

विषय-सूची । १. पृष्ठ सं ११२३ से पृष्ठ ११२ । २. पृष्ठ सं ११३ । पृष्ठ सं ७६१ । ३. पृष्ठ सं ७६२ ।

१६५०. प्रति स २। पत्र २१। ले ५५५। ले ७६२। क ययार।

१९४८. प्रविष्ट ३। वर्ष १५। नि. राज. सं. १२३१ वि. मंडल १। वि. सं. ७

४. मध्यार :

१९४६. प्रसिद्धि ४। पत्र से १७२। ने राज X। से १९७। न भयान।

१३४ समाधितन्त्रमाया—वर्षतन्त्रार्थी । वन भं १५७ । भा १२१×२ हज । भावा-मुनरा

मिति हिन्दी : विषय-दीर्घ : १. काल \times । २. काल \times । पूर्ण : ३. ४. १२५ (य. मण्डार)

निवेदन—वीथ के कुछ पत्र बुझाए गिने गये हैं। चाररपुर निवासी व जयराम के प्रतिनिधि श्री श्री।

१६३१ प्रति स २ । वष सं १४८ । के जल सं १७४१ वार्षिक मुरी २ । के सं ११४ ।

अप्युक्तः ।

१६५ प्रति स ३। पत्र स ३९। नं रत्न X। मूल्य ॥ व ७१। क बम्बार ।

१५३३ प्रति स ४। वष २१। न वल \times । व स ७२२। क धरार।

१६२४ अखि छ २१५५ न १७४१ न काल छ १७११ व छ १३ । व नभार ।

विषय—उभालपुर में प. ब्राह्मणराय के प्रतिभाशक्ति की जी।

[illegible]

१९२५ अवि.सं. ७। पत्र.सं. १२४। न. नं.सं. १७४४ पवि. मु.सं. ११। न. उ. सं. ३४। अ.

4-515-1

अथि श्रुतम् श्राव्यम् ।

१३४७. प्रति सं

1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 26

। ये नाम \times । पूर्ण । ये च ११२२ ।

१९३६. समाधिपरब्रह्माणा—वाञ्छितर

मल $\times 1$ में मल $\times 1$ पूर्ण। वे ही ४४२। अथ मल ४४२।

१३६ प्रति सं ५। यत् सं ४। ते यत् सं ४। ते सं ४।

१६६६ अविम ६। पत्र १। ले दान \times । वे ३ ७ ३। पत्र नम्बर।

१६६० समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १०१ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १६३३ । पूर्ण । वे० स० ७६६ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है । टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी ।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचंद । पत्र स० ७ । भा० ७ $\frac{3}{4}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

१६६४ समाधिमरणभाषा । पत्र स० १३ । भा० १३ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७८४ । छ भण्डार ।

१६६५ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० १७३७ । ट भण्डार ।

१६६६ समाधिमरणस्वरूपभाषा । पत्र स० २५ । भा० १० $\frac{3}{4}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १८७८ मगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४३१ । अ भण्डार ।

१६६७ प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८८३ मगसिर बुदी ११ । वे० स० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर में चढ़ाया ।

१६६८ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८२७ । वे० स० ६९९ । च भण्डार ।

१६६९. प्रति स० ४ । पत्र स० १९ । ले० काल स० १९३४ भादवा सुदी १ । वे० स० ७०० । च भण्डार ।

१६७० प्रति स० ५ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १८८४ भादवा बुदी ८ । वे० स० २३९ । छ भण्डार ।

१६७१ प्रति स० ६ । पत्र स० २० । ले० काल स० १८५३ पौष बुदी ९ । वे० स० १७५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरवश खुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७२ समाधिशतक—पूज्यपाद । पत्र स० १९ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६४ । अ भण्डार ।

१६७३ प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६७४ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १९२४ वैशाख बुदी ६ । वे० स० ७७ । ज भण्डार ।

विशेष—सगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१६७५ समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र स० ५० । भा० १२ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल स० १९३५ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ७६३ । क भण्डार ।

१६७६ प्रति स० २ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० ७६५ । क भण्डार ।

१६७७ प्रति स १। पत्र सं २४। ने काल सं ११३। कण्ठपुत्री १३। ने सं ११। अ
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। बयपुर ॥ प्रतिनिधि हुई थी।

१६७८ प्रति स ४। पत्र सं ७। ने काल ×। ने सं १७४। अ मय्यार।

१६७९ प्रति स ५। पत्र सं २४। ने काल ×। ने सं ७७३। अ मय्यार।

१६८० समाधिशास्त्रटीका—। पत्र सं १३। या १९×२५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
साम्प्रत्य। र काल ×। ने काल ×। पूर्ण। ने सं ११२। अ मय्यार।

१६८१ संशोधनशास्त्रिका—गीतमत्स्यामी। पत्र सं १६। या २२×४ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—साम्प्रत्य। र काल ×। ने काल ×। पूर्ण। ने सं ७७६। अ मय्यार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१६८२ संशोधनशास्त्रिका—रङ्गू। पत्र सं ३। या १९×६ इंच। भाषा—संस्कृत। र काल ×।
ने काल सं १७१६ पीठ पुत्री ३। पूर्ण। ने सं १२६। अ मय्यार।

विशेष—यं विद्यापीठसमी ने इसकी प्रतिनिधि करवायी थी। प्रकृति—

संयत् १७१६ वर्षे दिती पीठ पति ७ मुन रिते महापद्माविपय भी बंदिहरी विषयसम्बन्धे राज भी
इत्येव उपरुप राज भी केशव उपरुप अम नवन पुन राज पादनमयी। प्रीत्य पुन राज भी बकिर्षी कृतीय पुन
राज देवकी। प्रति कावडा राज भी पममनवी का पुन पतिव राज भी विद्यापीठसमी निवासी।

बीडडा—पुन कावक भी कड़े, कुछ दमवीय विषय।

को पराधि देखिने पति विद्यापीठय ॥

तिर्कट महात्मा नु वरवी पतिव परमवीवी का केवा बरपर कथे वाली पीठे मीश्वरान् मुकाम सिद्धी मन्ने।

१६८३ समीक्षाशक—साक्षरराज। पत्र सं १४। या १९×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
साम्प्रत्य। र काल ×। ने काल ×। पूर्ण। ने सं ७७६। अ मय्यार।

विशेष—अमर २ पत्री में बरवा राज भी है। प्रति बीवी पीठ के कवी हुई है।

१६८४ संशोधनशास्त्रिका—। पत्र सं २ से ७। या १९×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
साम्प्रत्य। र काल ×। ने काल ×। पूर्ण। ने सं ११२। अ मय्यार।

१६८५ स्वरूप—। पत्र सं १६। या १९×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—बीड। र
काल ×। ने काल सं ११३ संशिर पुत्री १२। पूर्ण। ने सं १४१। अ मय्यार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है। वैष्णवीति के विषय उपरान में टीका लिखी थी।

१६८६ स्वाध्यायशास्त्र—भाष्यराम। पत्र सं ११। या १९×२ इंच। भाषा—हिन्दी (पत्र)।
विषय—साम्प्रत्य। र काल सं ११३६ पीठ पुत्री ११। ने काल ×। पूर्ण। ने सं १७७। अ मय्यार।

१६८७ हठयोगश्रीविका—। पत्र सं ११। या १९×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—बीड।
र काल ×। ने काल ×। पूर्ण। ने सं १४४। अ मय्यार।

विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८ अध्यात्मकमलमार्त्तिण्ड—कवि राजमल्ल । पत्र स० २ से १२ । भा० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७५ । अ मण्डार ।

१६८९ अष्टशती—अकलकदेव । पत्र स० १७ । भा० १२×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १७६४ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० २२२ । अ मण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । प० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६९० प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १८७५ फागुन सुवी ३ । वे० स० १५६१ ज
मण्डार ।

१६९१ अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र स० १६७ । भा० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—जैनदर्शन । २० काल × । ले० काल स० १७६१ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २४४ । अ मण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । लिपि सुन्दर है । अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है । प० चोखचन्द ने
अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई । प्रशस्ति—

श्री भूरावल सध भवनमणि , श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगणगच्छपुस्तकत्रिधा, श्री देवसघाग्रणी सवत्सरे
चद्र रघु मुनीदुमिते (१७६१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पञ्चम्या तिथौ चोखचंद्रेण विदुषा शुभ पुस्तकमष्टसहस्र्यासप्तप्रमा-
णेन स्वकीयपठनार्थमायत्तीकृत ।

पुस्तकमष्टसहस्र्या वै चोखचंद्रेण धीमता ।

प्रहीत शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६९२ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४० । क मण्डार ।

१६९३ आप्तपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्र स० २५७ । भा० १२×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
जैन न्याय । २० काल × । ले० काल स० १६३६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५८ । क मण्डार ।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी । भोगने से पत्र चिपक गये हैं ।

१६९४ प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० ५६ । क मण्डार ।

विशेष—कारिका मात्र है ।

१६९५ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३३ । अपूर्ण । च मण्डार ।

१६६६ आत्मीमांसा—समस्तमहाभाष्ये । पत्र सं ४ । या १२५×३ इक्ष । वाता-संस्तुत ।

विषय—यैव म्याम । ८ क.अ. × । ने नाल सं १२१२ यात्रा कुटी ७ । पूर्ण । ने सं १ । क म्याम ।

विषय—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'वेदात्मकतया सतीक मृष्टधृती' विद्या गुप्ता है ।

१६६७. प्रति सं २ । पत्र सं ११ । ने काल × । ने सं ११ । क म्याम ।

विषय—अति अस्वस्थ टीका बहिर ।

१६६८. प्रति सं ३ । पत्र सं ११ । ने काल × । ने सं ११ । क म्याम ।

१६६९. प्रति सं ४ । पत्र सं १ । ने काल × । ने सं १२ । क म्याम ।

१७०० आत्मीमांसाभाष्य—विद्यावन्दि । पत्र सं २१६ । या १६×७ इक्ष । वाता-संस्तुत ।

विषय—वाता ८ काल × । ने नाल सं १७१६ यात्रा कुटी १२ । ने सं १४ ।

विषय—इसो वा नाम मृष्टधृती भाष्य तथा मृष्टधृती की है । यात्रा कुटी नाम के महात्माविद्वान् एवमिह की के आत्मनस्य में मनुष्य के ने ग्रन्थ की प्रतिनिधि करायी थी । अति काशी बड़ी सादर की है ।

१७०१ प्रति सं २ । पत्र सं २२१ । ने काल × । ने सं २२१ । क म्याम ।

विषय—अति बड़ी सादर की तथा मुम्बई सिद्धी हुई है । अति प्रशंसनीय भी है ।

१७०२ प्रति सं ३ । पत्र सं १७२ । या १७×२५ इक्ष । ने नाल सं १७४ यात्रा कुटी १ । पूर्ण । ने सं ७३ । क म्याम ।

१७०३ आत्मीमांसाभाष्य—अनन्तमहाभाष्य । पत्र सं १२ । या १७×३ इक्ष । वाता-संस्तुत ।

विषय—वाता ८ काल सं १११ । ने काल १२ । पूर्ण । ने सं ११२ । क म्याम ।

१७४४ अष्टावपराधि—वेदसेन । पत्र सं १ । या १ ×३ इक्ष । वाता-संस्तुत । विषय—

वर्धन । ८ काल × । ने नाल × । पूर्ण । ने सं १ । क म्याम ।

विषय—१ छंद ४ छंद एक आठवारा ४ वे १ एक सतर्क ग्रन्थ थी है ।

आष्टावसरा—योगि विमल मार्तण्ड विषयनिर्णय आष्टावसेनेन वर्धित ।

१७०५. प्रति सं २ । पत्र सं १ । ने नाल सं ११ अष्टाव कुटी ४ । ने सं १२० । क

म्याम ।

विषय—आष्टाव में आष्टावसरा तथा सतर्क की है । मधुर में मधुसाल नाम ने प्रतिनिधि की थी ।

१७०६ प्रति सं ३ । पत्र सं १६ । ने नाल × । ने सं ७६ । क म्याम ।

१७०७ प्रति सं ४ । पत्र सं ११ । ने नाल × । अष्टाव । ने सं ११ । क म्याम ।

१७०८. प्रति सं ५ । पत्र सं १२ । ने नाल × । ने सं ३ । क म्याम ।

१७०९. प्रति सं ६ । पत्र सं १२ । ने नाल × । ने सं ४ । क म्याम ।

विषय—मधुर के आष्टाव विषय के अष्टाव प्रतिनिधि की बड़ी थी ।

१७१० प्रति स० ७ । पत्र स० ७ से १५ । ले० काल स० १७८६ । अपूर्ण । वे० स० ५१५ । त्र
भण्डार ।

१७११ प्रति स० ८ । पत्र स० १० ले० काल × । वे० स० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२ ईश्वरवाद । पत्र स० ३ । भा० १०×४^३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २०
काल × । पूर्ण । वे० स० २ । ख भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७१३ गर्भपट्टारचक्र—देवनदि । पत्र स० ३ । भा० ११×४^३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२७ । म भण्डार ।

१७१४ ज्ञानदीपक । पत्र स० २४ । भा० १२×५ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१ । ख भण्डार ।

विशेष—स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ हैं ।

१७१५ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० २३ । म भण्डार ।

१७१६ प्रति स० ३ । पत्र स० २७ से ६४ । ले० काल स० १८५६ चैत बुदी ७ । अपूर्ण । वे० स०
१५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुगो चितधार ।

सब विद्या को मूल ये या विन सबल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत सपूर्ण ।

१७१७ ज्ञानदीपकवृत्ति । पत्र स० ८ । भा० ६^३×४ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नमामि पूर्णचिद्रूप नित्योदितमनावृत ।

सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिङ्गितमीश्वर ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरे ।

स्वरस्नेहन सयोग्य ज्वालयेदुत्तराधरे ॥२॥

१७१८ तर्कप्रकरण । पत्र स० ४० । भा० १०×४^३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५८ । ख भण्डार ।

१७१९ तर्कदीपिका । पत्र स० १५ । भा० १४×४^३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २०
काल × । ले० काल स० १८३२ माह सुदा १३ । वे० स० २२८ । ज भण्डार ।

नोट—उक्त ६ प्रतियों के अतिरिक्त तर्कसंग्रह की अष्ट भण्डार में तीन प्रतियाँ (वे० सं० ६१३, १८३६, २०४६) ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७४) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) ज भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १७६६, १८३२) प्रौर हैं ।

१७३२. तर्कसंग्रहटीका । पत्र सं० ८ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

१७३३. तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८० । अ भण्डार ।

१७३५. दर्शनसार—देवसेन । पत्र सं० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन ।

२० काल सं० ६६० माघ सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में हुई थी ।

१७३५ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८७१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ११६ । छ

भण्डार ।

विशेष—प० वस्तराम के शिष्य हरवद ने नेमिनाथ चैत्यालय (गोधो के मन्दिर) जयपुर में प्रतिलिपि

की थी ।

१७३६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टक्का टीका सहित है ।

१७३७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१७३८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८५० भाद्रपद सुदी ८ । वे० सं० ५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१७३६ दर्शनसारभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२० प्र० श्रावण सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

१७४० दर्शनसारभाषा—प० शिवजीलाल । पत्र सं० २८१ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२३ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

१७४१ प्रति सं० २ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० २८६ । ङ भण्डार ।

१७४२ दर्शनसारभाषा । पत्र सं० ७२ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । अ भण्डार ।

१७४३ द्विजवचनचपेटा । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१७४४ प्रति स २। पत्र सं ४। ने बाल \times । के सं १७६। क मन्थार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१७४५ अथवा—वेबसेन। पत्र सं ४२। या १ २५०० इञ्च। जाला माहुर। विषय—सत नये का बर्तन। र बाल \times । के काल सं १८४३ पीन गुरी १२। पूर्ण। के सं ११२। क मन्थार।

विशेष—कम का हवा का गुणवत्ता माला पत्रिती थी है। उक्त प्रति के प्रतिरिक्त क मन्थार में तीन प्रतिवां (के सं ११३ ११४ ११५) का क मन्थार में एक एक प्रति (के सं १७७ १११) प्रौर है।

१७४६ अथवा—वेबसेन। पत्र सं २१। या १२५०० इञ्च। जाला—हिन्दी (नव)। विषय—सत नये का बर्तन। र काल सं १७२६ कागुल गुरी १। ने बाल सं १८१५। पूर्ण। के सं ११७। क मन्थार।

१७४७ प्रति स २। पत्र सं २। ने बाल सं १७९९। के सं १२। क मन्थार।

विशेष—कम वन से तापार्थ गुण टीका के मन्थार नव बर्तन है।

मोट—उक्त प्रतियों के प्रतिरिक्त क क, क म, मन्थारों में एक एक प्रति (के सं १४२, १५७ १२३ १) कमया प्रौर है।

१७४८ अथवा—वेबसेन। पत्र सं १९। या १ २५० इञ्च। जाला—हिन्दी। र बाल \times । ने काल सं १८४५ कागुल गुरी ६। पूर्ण। के सं ११८। क मन्थार।

१७४९ अथवा—वेबसेन। पत्र सं १८। या १ २५० इञ्च। जाला—हिन्दी (नव)। विषय—सत नये का बर्तन। र बाल सं १ १७। ने काल सं १८४५। पूर्ण। के सं ११९। क मन्थार।

विशेष—सत टीका कालपुर की नई नई थी।

१७५० प्रति स २। पत्र सं १४। ने काल \times । के सं १९१। क मन्थार।

१७५१ प्रति स ३। पत्र सं १२४। ने बाल सं १८६ कागुल गुरी ६। के सं १९२। क मन्थार।

विशेष—कालपुर में प्रतिनिधि की नवी थी।

१७५२ अथवा—वेबसेन। पत्र सं १२। या १ २५० इञ्च। जाला—सत नये का बर्तन। र बाल \times । ने काल \times । पूर्ण। के सं १७०। क मन्थार।

विशेष—क १ से २ तक व्याप्त गुणवत्ता २ प्रतिरिक्त तथा के पत्रों में कालपुर का बर्तन नव बर्तन प्रौर है।

१७५३ प्रति स ३। पत्र सं १५। ने बाल सं १ १४ पीन गुरी ७। के सं ११३। क मन्थार।

विशेष—कालपुर में प्रतिनिधि की नवी थी।

१७५४. न्यायमुद्रचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव । पत्र स० ५८८ । मा० १८३/४ इक्ष । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । २० पान × । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वे० म० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टाचार्य वृत्त न्यायमुद्रचन्द्रोदय की टीका है ।

१७५५ न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति । पत्र स० ३ से ८ । मा० १०३/४ इक्ष । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १२०७ । अ भण्डार ।

नोट—उक्त प्रति के प्रतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतिष्ठा (य० स० ३८७, ३६८) च एव च भण्डार में एक २ प्रति (वे० स० ३६७, १८०, च भण्डार में ० प्रतिष्ठा (वे० म० १८०, १८१) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५२) मौजूद है ।

१७५६ न्यायदीपिकाभाषा—मदामुख कासलीवाल । पत्र म० ७१ । मा० १४/७ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—दर्शन । २० काल स० १६३० । ले० काल म० १६३८ ज्ञानानुमुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । अ भण्डार ।

१७५७ न्यायदीपिकाभाषा—मधी पन्नालाल । पत्र म० १६० । मा० १२१/७ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल म० १६३५ । ले० काल म० १६४१ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

१७५८ न्यायमाला—परमहंस परिम्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि । पत्र स० ८६ से १२७ । मा० १०३/४ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १६०० सायण बुदी ५ । अपूर्ण । वे० म० २०६३ । अ भण्डार ।

१७५९. न्यायशास्त्र । पत्र स० २ से ५२ । मा० १०१/४ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १६७६ । अ भण्डार ।

१७६० प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १६८६ । अ भण्डार ।

विशेष—कित्ती न्याय ग्रन्थ में उद्धृत है ।

१७६१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १५ । ज भण्डार ।

१७६२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८६८ । ट भण्डार ।

१७६३ न्यायसार—माधवदेव (लक्ष्मणदेव का पुत्र) पत्र स० २८ से ८७ । मा० १०३/४ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल स० १७४६ । अपूर्ण । वे० स० १३४३ । अ भण्डार ।

१७६४ न्यायसार । पत्र स० २४ । मा० १०/८ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ६१६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रागम परिच्छेद तर्कपूर्ण है ।

१७६५ न्यायसिद्धांतमञ्जरी—जानकीनाथ । पत्र स० १४ से ४६ । मा० ६३/४ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १७७४ । अपूर्ण । वे० स० १४७८ । अ भण्डार ।

१०१६ व्यावर्तिज्ञातमञ्जरी—अष्टाचार्य ब्रह्मसूत्रि । पत्र सं २ । या १३×९ दण्ड । जाल-
बन्धुत । विषय—आय । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं २३ । अ नम्बर ।

विशेष—सटीक प्राचीन प्रति है ।

१०१७ व्यावर्तिज्ञातमञ्जरी—अष्टाचार्य ब्रह्मसूत्रि । पत्र सं ४ । या १ × ४१ दण्ड । जाला—संस्तुत । विषय—आय । र
काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं १२१ । अ नम्बर ।

विशेष—हैम व्याकरण में से व्यास सम्बन्धी सुत्रों पर सङ्ग्रह किया गया है । आचार्य ने प्रतिनिधि भी की ।

१०१८ पट्टीति—विष्णुसूत्र । पत्र सं २ से ९ । या १ ३/४ × १३ दण्ड । जाला—संस्तुत । विषय—
आय । र जाल × । ले जाल × । अपूर्ण । के सं १२१७ । अ नम्बर ।

विशेष—अधिन पुर्वपत्रा— इति साधर्म्यं वैश्वर्मे संवर्हीर्मे विबालि विष्णुसूत्रं पट्टीतिना वाचस्पत्यने
कृतं । प्रति प्राचीन है ।

१०१९ पत्रपटीका—विद्यालक्षि । पत्र सं १२ । या १९ १/२ × ९ दण्ड । जाला—संस्तुत । विषय—आय ।
र काल × । ले काल × । अपूर्ण । के सं ७७६ । अ नम्बर ।

१०२० प्रति सं २ । पत्र सं ३२ । ले काल सं १९०७ जाला—संस्तुत । के सं १९४१ । अ
नम्बर ।

विशेष—लेखन में भी अनेक लोपात्त के विश्ववीचक के प्रतिनिधि भी की ।

१०२१ पत्रपटीका—प्राज्ञ केवरी । पत्र सं १७ । या १९ १/२ × ९ दण्ड । जाला—संस्तुत । विषय—
आय । र काल × । ले काल सं १२३७ जाला—संस्तुत । पूर्ण । के सं ४२७ । अ नम्बर ।

१०२२ प्रति सं २ । पत्र सं २ । ले काल × । के सं ४२ । अ नम्बर ।

विशेष—संस्तुत टीका सहित है ।

१०२३ पटीकासूत्र—साङ्ख्यवार्त्तिका । पत्र सं २ । या १ × ९ दण्ड । जाला—संस्तुत । विषय—
आय । र काल × । ले काल × । पूर्ण । के सं ४३२ । अ नम्बर ।

१०२४ प्रति सं २ । पत्र सं २ । ले काल सं १९९ जाला—संस्तुत । के सं २११ । अ
नम्बर ।

१०२५ प्रति सं ३ । पत्र सं २७ से १२६ । ले जाल × । अपूर्ण । के सं २१४ । अ नम्बर ।
विशेष—संस्तुत टीका सहित है ।

१०२६ प्रति सं ४ । पत्र सं ९ । ले काल × । के सं २१ । अ नम्बर ।

१०२७ प्रति सं ५ । पत्र सं १४ । ले काल सं १२७ । के सं १४२ । अ नम्बर ।

लेखन जाल छप्पे लीन जिति निमित्त भूषित वे जालासूत्रे)

१०२८ प्रति सं ६ । पत्र सं ९ । ले काल × । के सं १७३ । अ नम्बर ।

१७५६ परीक्षाभूषणभाषा—जयचन्द छावडा । पत्र स० ३०६ । भा० १२×७ $\frac{१}{२}$ इच्छ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल स० १८६३ आषाढ सुदी ४ । ले० काल स० १९४० । पूर्ण । वे० स० ४५१ । क भण्डार ।

१७८० प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० ४५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर अक्षरों में है । एवं पत्र पर हाशिया पर सुन्दर वेलें हैं । अन्य पत्रों पर हाशिया में केवल रेखाएँ ही दी हुई हैं । लिपिकार ने ग्रन्थ अक्षरा छोड़ दिया प्रतीत होता है ।

१७८१ प्रति स० ३ । पत्र स० १०४ । ले० काल स० १९३० मगसिर सुदी २ । वे० स० ५६ । घ भण्डार ।

१७८२ प्रति स० ४ । पत्र स० १२० । भा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इच्छ । ले० काल स० १८७८ आश्विन बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ५०५ । क भण्डार ।

१७८३ प्रति स० ५ । पत्र स० २१८ । ले० काल × । वे० स० ६३६ । च भण्डार ।

१७८४ प्रति स० ६ । पत्र स० १९४ । ले० काल स० १९१६ कार्तिक बुदी १४ । वे० स० ६४० । च भण्डार ।

१७८५ पूर्वमीमांसार्थप्रकरण-संग्रह—लोगाक्षिभास्कर । पत्र स० ६ । भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६ । ज भण्डार ।

१७८६ प्रमाणनयतत्त्वालोकालकारटीका—रत्नप्रभसूरि । पत्र स० २८८ । भा० १२×४ $\frac{१}{२}$ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६६ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरायतारिका' है । मूलकर्ता वादिदेव सूरि हैं ।

१७८७ प्रमाणनिर्णय । पत्र स० ६४ । भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६७ । क भण्डार ।

१७८८ प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानदि । पत्र स० ६६ । भा० १२×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १९३४ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४६८ । क भण्डार ।

१७८९ प्रति स० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० १७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता । मितिराषाढमासस्यपक्षेयामलके तिथी तृतीयाया प्रमाणाम्य परीक्षा लिखिता खबु ॥१॥

१७९० प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द । पत्र स० २०२ । भा० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ इच्छ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल स० १९१३ । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वे० स० ४६९ । क भण्डार ।

१७९१ प्रति स० २ । पत्र स० २१६ । ले० काल × । वे० स० ५०० । क भण्डार ।

१७९२ प्रमाणप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसेन । पत्र स० ६७ । भा० १२×४ $\frac{१}{२}$ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वे० स० ५०१ । क भण्डार ।

१७६३ प्रमासमीमासा—विद्यामणि । पत्र नं ४ । भा ११३×७३ दण्ड । बाबा—मंसुत । विपद—व्यास । र बाज × । मे बाज × । घूर्ण । के नं १३ । क मण्डार ।

१७६४ प्रमासमीमासा— । पत्र नं ५९ । भा ११ × दण्ड । बाबा—मंसुत । विपद—व्यास । र बाज × । मे बाज नं १३२७ बाबागुरी १३ । घूर्ण । के नं २९ । क मण्डार ।

१७६५ प्रमासमीमासा—विद्यामणि । पत्र नं ५७६ । भा ११×२ दण्ड । बाबा—मंसुत । विपद—व्यास । र बाज × । मे बाज × । घूर्ण । के नं ३७५ । क मण्डार ।

विपद—१३४ तथा २७२ के बाजे नहीं हैं ।

१७६६ प्रति सं ७ । पत्र नं २९ । मे बाज नं १२४२ ग्रेडगुरी ३ । के नं १९ । क मण्डार ।

१७६७ प्रति सं ३ । पत्र नं २३ । मे बाज × । घूर्ण । के नं २४ । क मण्डार ।

१७६८ प्रति सं ४ । पत्र नं १९ । मे बाज × । के नं १२९७ । क मण्डार ।

विपद—२ वषों तक मंसुत टीका की है । सर्वज्ञ मित्र ने ग्रेडगुरी की के बाज तक है ।

१७६९ प्रति सं ५ । पत्र नं ४ मे १४ । भा १ × ४ दण्ड । मे बाज × । घूर्ण । के नं ११४७ । क मण्डार ।

१८ प्रमेसरममासा—अमरवीर । पत्र नं १२९ । भा १०×२ दण्ड । बाबा—मंसुत । विपद—व्यास । र बाज × । मे बाज नं १३१४ बाबागुरी ७ । के नं ४२९ । क मण्डार ।

विपद—ग्रीष्मकाल की टीका है ।

१८ १ प्रति सं ३ । पत्र नं १२७ । मे बाज नं १३ । के नं २३ । क मण्डार ।

१८ २ प्रति सं ३ । पत्र नं १३ । मे बाज नं १७६७ बाबागुरी १ । के नं ११ । क मण्डार ।

विपद—सकलपुर के सप्तमि के प्रतिमिषि की की ।

१८ ३ बाबाविद्यामणि—शकर भगति । पत्र नं १३ । भा १ × ४ दण्ड । बाबा—मंसुत । विपद—व्यास । र बाज × । मे बाज × । घूर्ण । के नं १३२२ । क मण्डार ।

१८ ४ बाबाविद्यामणि—कृष्ण शर्मा । पत्र नं ११ । भा ११×५ दण्ड । बाबा—मंसुत । विपद—व्यास । र बाज × । मे बाज × । घूर्ण । के नं १९३ । क मण्डार ।

विपद—विद्यामणि की व्याख्या की हुई है ।

१८ ५ बाबाविद्यामणि— । पत्र नं १९ मे २२ । भा १ ३×५ दण्ड । बाबा—मंसुत । विपद—व्यास । र बाज × । मे बाज नं १३२३ बाबागुरी ११ । घूर्ण । के नं २२ । क मण्डार ।

विपद—मंसुत १३२३ वषों बाबागुरी ११ की के बाजे की व्याख्या के वृत्त पर पत्रिका विद्यामणि मंसुत ।

१८०६ युक्त्यनुशामन—आचार्य समन्तभद्र । पत्र स० ६ । भा० १२३×७३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०४ । क मण्डार ।

१८०७ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । ६०५ । क मण्डार ।

१८०८ युक्त्यनुशामनटीका—प्रियानन्दि । पत्र स० १८८ । भा० १२३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल स० १६३४ पोप सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६०१ । क मण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८०९ प्रति स० २ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वे० स० ६०२ । क मण्डार ।

१८१० प्रति स० ३ । पत्र स० १४२ । ले० काल स० १६४७ । वे० स० ६०३ । क मण्डार ।

१८११ वीतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र । पत्र स० ७ । भा० ११३×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १५१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० २५२ । अ मण्डार ।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग मे प्रतिलिपि की गई थी । सवत् १५१२ वर्षे आसोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट
दुर्गेष्टिनस्त ।

१८१२ वीरद्वित्रिंशतिका—हेमचन्द्रसूरि । पत्र स० ३३ । भा० १२×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७७ । अ मण्डार ।

विशेष—३३ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१८१३ पद्मदर्शनपार्त्ता । पत्र स० २८ । भा० ८×६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५१ । ट मण्डार ।

१८१४ पद्मदर्शनविचार । पत्र स० १० । भा० १०३×४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १७२४ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७४२ । ड मण्डार ।

विशेष—सागानेर मे जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । श्लोको का हिन्दी अर्थ भी दिया
हुमा है ।

१८१५ पद्मदर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र स० ७ । भा० १२३×५ इच्छ । विषय—दर्शन । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । क मण्डार ।

१८१६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ६८ । घ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१८१७ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ७४३ । छ मण्डार ।

१८१८ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १५७० भाद्रमास सुदी २ । वे० स० ३६६ । झ
मण्डार ।

१८१९ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १८६४ । ट मण्डार ।

१८२० पद्मदर्शनसमुच्चयवृत्ति—गणरतनसूरि । पत्र स० १८५ । भा० १३×८ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल स० १६४७ द्वि० भाद्रमास सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ७११ । क मण्डार ।

१८२१ पञ्चद्वारानसमुच्चयटीका—[पत्र सं २ । या १२३] ४५ हव । बाया-बंस्तुत । विष-
वर्धन । १८ नाल × । मे काल × । पुर्ण । के सं ७१ । अ नकार ।

१८२२ सविमवेवास्तवात्प्रपक्षिया—[पत्र सं ४६ । या १२] ४६ हव । बाया-नंस्तुत ।
विष-वर्धन । १८ नाल × । मे काल सं १७२७ । के सं १९७ । अ नकार ।

१८२३ सप्तनवावधोय—मुनिनेत्रसिंह । पत्र सं ६ । या १] ४६ हव । बाया-नंस्तुत । विष-
वर्धन (सप्त नवो अ वर्धन है) । १८ नाल × । मे काल सं १७४२ । पुर्ण । के सं १४६ । अ नकार ।

प्रारम्भ—

विषय-मुनि-नक्षत्राः सर्वदाया बुधित्या ।

विषयवद्विदित्त्या मेतरेषां सुख्यात् ॥

उत्तमपुत्रावारास्तेज्यमाला स्या मे ।

विषयः सुखंते कल्प वारम्भपक्षे ॥१॥

नामवैभवं उत्तमपुत्री उत्तमपुत्रावधीकं

मे सुखा वैभवं यवैष्यति बुधितो यता ॥२॥

इसके पञ्चद्वार टीका प्रारम्भ होती है । बीसवीं प्रारम्भे पञ्चमैतरे विषय कीज प्रारम्भे इति वक्ष्यमाण ।

अन्तिम—

उत्तुष्यं मुनि-वर्णकविधानं योर्ध्वं कर्त्तुं निर्मलं ।

उत्तमं वैभवं विषयवद्विदित्त्या मेतरेषां सुख्यात् ॥

व्यक्तान्तमालाविष्टो यथाः मे योर्ध्वं विषयं सुखं यवैष्यति

योर्ध्वं विषयवद्विदित्त्या मेतरेषां सुख्यात् ॥

इति श्री उत्तमपुत्रावधीकं कालः सुनिनेत्रसिंह विदित्त्या सुखं वैभवं ॥

१८२४ सप्तद्वारार्थी—[पत्र सं १६ । या ११] ४६ हव । बाया-बंस्तुत । विष-वर्धन सप्तद्वार
वद्विदित्त्या मेतरेषां सुख्यात् ॥ १८ नाल × । १८ नाल × । पुर्ण । के सं १ । अ नकार ।

१८२५ सप्तद्वारार्थी—विषयवद्विदित्त्या । पत्र सं ४ । या १] ४६ हव । बाया-बंस्तुत । विष-
वर्धन म्याक के प्रमुवार सप्त पञ्चो वा वर्धन । १८ नाल × । मे काल × । पुर्ण । के सं १२६६ । अ नकार ।

विषय—वन्दुर मे विदित्त्या मेतरेषां सुख्यात् ॥

१८२६ सप्तद्वारार्थी—वृद्धकथां सिद्धसंन विषयः । पत्र सं ४५ । या १] ४६ हव । बाया-
बंस्तुत । विष-वर्धन १८ नाल × । मे काल × । पुर्ण । के सं ११ । अ नकार ।

१८२७ सप्तद्वारार्थी—वन्दुरार्थः । पत्र सं १ के ७६ । या-१] ४६ हव । बाया-नंस्तुत । विष-
वर्धन १८ नाल × । मे काल × । पुर्ण । के सं २१ । अ नकार ।

१८२८ सप्तद्वारार्थी—वन्दुरार्थः । पत्र सं २ । या ११] ४६ हव । बाया-
बंस्तुत । विष-वर्धन १८ नाल × । मे काल सं १७६६ । के सं ११७६ । अ नकार ।

विषय—वन्दुर कल्प है ।

१८२६ स्याद्वाटचूल्कि । पत्र स० १५ । आ० ११३×५ द न । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—दर्शन । २० काल > । से० काल स० १६३० फात्तिक बुदी ५ । ये० स० २१६ । अ भण्डार ।

विषय—नागपाठा नगर मे राजा तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था । ममयगार के कुछ पाठो का अद्य है ।

१८३० स्याद्वाटमखुरी —मल्लिषेणसूरि । पत्र स० ४ । आ० १२३×५ द न । भाषा—सम्प्रत । विषय—दर्शन । २० काल > । से० काल > । पूर्ण । ये० स० ८३४ । अ भण्डार ।

१८३१ प्रति स० २ । पत्र स० ५४ से १०६ । से० काल स० १५२१ माघ सुदी ५ । अपूर्ण । ये० स० ३६६ । अ भण्डार ।

१८३२ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । आ० १२×५ द न । से० काल > । पूर्ण । ये० स० ८६१ । अ भण्डार ।

विषय—देवल मारिशामात्र है ।

१८३३ प्रति स० ५ । पत्र स० ३० । से० काल > । अपूर्ण । ये० स० १६० । अ भण्डार ।



विषय- पुराण साहित्य

१८३४ अश्विपुण्य—पंडिताचार्य अरुणमणि । व. १८३१ । पा. १२×१२ इ. । अष्ट-
पद । विरत-पुण्य । र. व. १८३१ । व. १८३२ ज्येष्ठ शुभ । दुर्गा । व. ११ । अ-
ष्टपद ।

[illegible]

१८३६. प्रति सं० १। वष सं २९। के बाल X। पयूसी। के सं २७। कु बन्धार।

विशेष—१५वें पर्व के ६४वें श्लोक तक है ।

१८३६ अक्षिवनामपुराण—विषयसिद्धि । पत्र सं १९८ । भा २, ख इन्द्र । प्रता-पत्रक ।
विषय-पुराण । १८ प्रता सं १३ ३ पालिकपुरी १९ । वि प्रता सं १३ विषयपुरी २ । पुरी । वि सं १९८ ।
व प्रता ।

विशेष—हैं १४ में ब्रह्मगीत लोकी के आत्मन्यास के विषयवस्तु के प्रतिनिधि हैं की ।

१८३६. अनन्तनामपुराण—शुद्धमन्त्रार्च। वष ८ । पा १ १५२ दृष्ट। मन्त्र-संग्रह।
विषय-पुण्य। २ मन्त्र X १। मन्त्र ८ १८५२ आर्या गृही १ । पूर्ण। ३ ८ ७४। अ मन्त्र।

विशेष—अलसपण्डित के लिया गया है ।

१८३८ आगामी अष्टाशतकपुरष्यस्तम् — पृष्ठ ५ वें २९। पा १२ × १ इत् । अ-
पिरी : विष्णु-पञ्च । र बल × । के काल × । मूर्ति : के ४ । स प्रसार ।

विशेष—एकही प्रकार का पक्षी का भी वर्णन है।

१२३६. आशिपुराण—अथसोमापात्रे । वन ४ २२० । या १ ३५२ दण्ड । मन्त्रा-संस्कार ।
विष्णु-वराह । ८ कल × ३ । वलन १ १४ । पुरी । ३ ४ २२ । अथ मन्त्रा ।

निवेद्य—अपराह मे वं कालावपराह मे प्रतिनिधि श्री श्री ।

१८५४. प्रति सं. ३। पृष्ठ सं. ३५। के. पाल सं. १३५४। दे. सं. ११५४। भा. प्रमाण।

१८४१ मदि सं ३। पत्र सं ४। ले क्रम X। पयुर्ल। ले सं ३४१। अ नमरा।

६८५२. मसि स ३। पत्र ४ ५८६। वि. भाग ४ १८६। वि. ४ ४६। क. नमोः।

१८३१ प्रविर्त ५। पञ्च ४१७। नि पाठ X वे पं ३७। क मन्वा ८।

विशेष—धरती ने कल्पशास्त्री की जोड़ी पर क्रोधित हुई थी।

१८४४ प्रति स० ५ । पत्र स० ४७१ । ले० काल स० १६१४ वैशाख सुदी १० । वे० स० ६ । घ
मण्डार ।

विशेष—हाथरस नगर में टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५ प्रति स० ६ । पत्र स० ४६१ । ले० काल स० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० स० २५० । ज
मण्डार ।

विशेष—मेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल गौड़ से अपने पुत्र पौत्रादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी ।
प्रशस्ति काफी बड़ी है । भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर स० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । कही कही कठिन
शब्दों का संस्कृत में अर्थ भी दिया है ।

१८४६ प्रति स० ७ । पत्र स० ४१६ । ले० काल × । जीर्ण । वे० स० १४६ । घ मण्डार ।

१८४७ प्रति स० ८ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १६०४ मगसिर बुदी ६ । वे० स० २५२ । घ
मण्डार ।

१८४८ प्रति स० ९ । पत्र स० ४१० । ले० काल स० १८०४ पीप बुदी ४ । वे० स० ४५१ । घ
मण्डार ।

विशेष—नैणसागर में प्रतिलिपि की थी

१८४९ प्रति स० १० । पत्र स० २०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८८८ । ट मण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ मण्डार में एक प्रति (वे० स० २०४२) क मण्डार में एक प्रति
(वे० स० ५५) छ मण्डार में एक प्रति (वे० स० ६६) च मण्डार में ३ अपूर्ण प्रतियाँ (वे० स० ३०, ३१, ३२)
ज मण्डार में एक प्रति (वे० स० ६८६) और है ।

१८५० आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० २७ । आ० ११३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८०१ । अ मण्डार ।

१८५१ प्रति स० २ । पत्र स० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८७० । अ मण्डार ।

१८५२ आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र स० ५२ में ६२ । आ० १०३×४ इच्छ । भाषा—
संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६ । च मण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३ आदिपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र स० ३२५ । आ० १०३×५ इच्छ । भाषा—अप्रभ श ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १६३० मादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५३ । क मण्डार ।

१८५४ प्रति स० २ । पत्र स० २६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २ । छ मण्डार ।

विशेष—बीच में कई पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । माह व्यहराज ने पञ्चमी व्रतोद्यापनार्थ कर्मक्षय
निमित्त यह प्रयत्न लिखाकर महात्मा खेमचन्द को भेंट किया ।

१८५५ प्रति स० ३ । पत्र स० १०३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५४ । क मण्डार ।

१८६६. प्रति स० ७ । पत्र स० ३६६ । ले० काल स० १७०६ फागुण सुदी १० । वै० स० ३२४ ।

अ भण्डार ।

विशेष—गाढे मोर्दन ने प्रतिलिपि की थी । वही कही मठिन मन्त्रों के मर्म भी दिये हुये हैं ।

१८६७ प्रति स० ८ । पत्र स० ३७२ । ले० काल स० १७१८ भाद्रपद सुदी १२ । वै० स० २७२ ।

अ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ, क और ह भण्डार में एक-एक प्रति (वि० स० ६२४, ६७३, ७७) भी है । सभी प्रतियां प्रपूर्ण हैं ।

१८६८ उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभावचन्द्र । पत्र स० ५७ । मा० १२५३ इश्व । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल स० १०८० । ले० काल स० १४७५ भाद्रपद सुदी ५ । पूर्ण । वै० स० ५४ । अ भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त वृत्त उत्तरपुराण का टिप्पण है । जयक प्रवर्तित—

श्री विक्रमादित्य स्वत्सरे वर्षाणामपीयधिक सहस्रे महापुराणमिषमन्दविवरणनागरमेनमैदातात् परि-
शाय मूलटिप्पणवाचावलोचनं वृत्तमिदं मनुष्यटिप्पणं । मन्त्रपातभीतेन श्रीमद् ब्रह्माकारणश्रीसंपाचार्य सत्त्व-
शिव्येण धीमन्त्रमुनिना निज दीर्घाभिभूतरिपुराज्यविजयिन श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥

इति उत्तरपुराणटिप्पणक प्रभावचन्द्राचार्यविरचितसमाप्त ॥ अथ स्वत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द
संवत् १४७५ वर्षे भाद्रपद सुदी ५ बुधदिने कुम्भागतदेने सुलितात सिक्कंदर पुत्र सुलितानमहाहिमुराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठा-
सधे मायुरान्वये मुष्कागणे भट्टारक श्रीगुणमद्रसूरिदेवा तवाम्नाये जंसवालु चौ० जगन्नी पुत्रु चौ० टोडरमल्लु इदं
उत्तरपुराण टीका लिखायित । शुभ भवतु । मागव्य दधति लेखक पाठकभ्यो ।

१८६९ प्रति स० ९ । पत्र स० ६१ । ले० काल × । वै० स० १४५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्भारानिवासिना परापरमेष्ठिप्रणामोपाजितामलपुष्पनिराकृताखिलमल
कलंकैर्न श्रीमत् प्रभावचन्द्र पठितेन महापुराण टिप्पणक सतस्यधिक सहस्रत्रय प्रमाणं कृतमिति ।

१८७० प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल × । वै० स० १८७६ । अ भण्डार ।

१८७१ उत्तरपुराणभाषा—सुशालचन्द्र । पत्र स० ३१० । मा० ११५८ इश्व । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—पुराण । २० काल स० १७८६ मंगसिर सुदी १० । ले० काल स० १६३८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वै० स०
७४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति में सुशालचन्द्र का ५३ पद्यों में विस्तृत परिचय दिया हुआ है । ब्रह्मावरमाल ने जयपुर
में प्रतिलिपि की थी ।

१८७२ प्रति स० २ । पत्र स० २२० । ले० काल स० १६८३ वैशाख सुदी ३ । वै० स० ७ । अ
भण्डार ।

विशेष—कालूराम साहू ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८७३ प्रति स ३। पत्र सं ४१२। के काल सं ११२ संवत् १११। के सं १। क
अक्षर।

१८७४ प्रति स ४। पत्र सं ३७४। के काल सं १८२८ वात्तिक बुध ११। के सं १। क
अक्षर।

१८७५ प्रति सं ५। पत्र सं ४४। के काल सं ११७। के सं ११७। क अक्षर।

विशेष—क अक्षर में तीन व्युत्पत्ति प्रविष्ट (के सं ३९९, ४२३ ४२४) धीरे हैं।

१८७६ कच्छपुराणभाष्य—सर्वा वक्राक्षाक्ष। पत्र सं ७६१। वा ११४। दक्ष। अक्षर—हिन्दी
अक्षर। विषय—पुराण। र काल सं ११३ वात्तिक बुध ३। के काल सं ११४९ संवत् १११। पूर्ण। के
सं ७२। क अक्षर।

१८७७ प्रति सं ६। पत्र सं ४९२। के काल \times । व्युत्पत्ति। के सं १। क अक्षर।

विशेष—२१४वां पत्र नहीं है। अक्षर ही पत्र मधीन लिखे हुए हैं।

१८७८ प्रति स ७। पत्र सं ४६९। के काल \times । के सं १। क अक्षर।

विशेष—शास्त्र के ११७ पत्र नीचे दिये हैं। अक्षरों में प्रति है। क अक्षर के एक प्रति (के
सं ७२) क अक्षर के दो प्रविष्ट (के सं ३९९, ४२२) तथा क अक्षर में एक प्रति धीरे हैं।

१८७९ अमृतमयपुराण—दीर्घाक्षाक्ष। पत्र सं ३१९ वा ११४। दक्ष। अक्षर—हिन्दी अक्षर। विषय—
पुराण। र काल सं ११३ वात्तिक बुध ११। के काल \times । पूर्ण। के सं १७९। क अक्षर।

१८८० विमलपुराण—अमृतक विमलपुराण। पत्र सं ९२। वा ११४। दक्ष। अक्षर—
संस्कृत। विषय—पुराण। र काल \times । के काल सं १४२ वात्तिक बुध ७। के सं १४। क अक्षर।

विशेष—विमलपुराण के अक्षर अक्षरों के धीरे हैं। ११२ अक्षर हैं। पुराण के विषय
विषय हैं।

१८८१ विमलपुराण—अमृतक विमलपुराण। पत्र सं ९४। वा ११४। दक्ष। अक्षर—संस्कृत।
विषय—पुराण। र काल सं ११३। के काल सं ११३ वात्तिक बुध ११। पूर्ण। के सं २११। क
अक्षर।

विशेष—अमृतपुराण में भी विमलपुराण के अक्षर की रचना की गई थी। अक्षर अक्षर विमल
हैं।

१८८२ विमलपुराण—अमृतक विमलपुराण। पत्र सं १७३। वा ११४। दक्ष। अक्षर—संस्कृत।
विषय—पुराण। र काल \times । के काल \times । व्युत्पत्ति। के सं ११९२। क अक्षर।

विशेष—१७३ के अक्षर पत्र नहीं है।

१८८३ वैश्वामयपुराण—मायामय। पत्र सं १९९। वा ११४। दक्ष। अक्षर—हिन्दी अक्षर।
विषय—पुराण। र काल सं ११३ वात्तिक बुध ३। के काल \times । पूर्ण। के सं १। क अक्षर।

१८८४ नेमिनाथपुराण—ब्र० जिनदास । पत्र स० २६२ । आ० १४×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६ । छ मण्डार ।

१८८५ नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र स० १६० । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । जीर्ण । वे० १४६ । अ मण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि देवातत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा द्वितीय शिष्य मङ्गलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्य मङ्गलाचार्य श्रीमुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य मङ्गलाचार्य श्रीधर्मकीर्तिदेवा द्वितीयशिष्य मङ्गलाचार्य श्रीविशालकीर्तिदेवा तत्शिष्य मङ्गलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तत्पट्टे मङ्गलाचार्य श्रीसहसकीर्तिदेवा तत्पट्टे मङ्गलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द्र तदाम्नाये भगवत्कालान्वये मुणिलगोत्रे साह जीरा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्रा पञ्च । प्रथम पुत्र सा लेता तस्य भार्या छानाही । सा जीरा द्वितीय पुत्र सा जेता तस्य भार्या वाधाही तयो पुत्रा त्रय प्रथम पुत्र सा देइदास तस्य भार्या माताही तयो पुत्रात्रय प्रथमपुत्र चि० सिरवत द्वितीयपुत्र चि० मागा तृतीयपुत्र चि० चतुरा । द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरही तृतायपुत्र सा बीमा तस्य भार्या मानु । सा जीरा तस्य तृतीयपुत्र सा सातु तस्य भार्या नान्यगही तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा गोविदा तस्य भार्या पदर्थही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र चि० मोहनदास । सा जीरातस्य चतुर्थपुत्र सा मल्लू तस्य भार्या नौवाही तयोपुत्रा त्रय प्रथमपुत्र सा उत्मा तस्य भार्या घनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा महीदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा टेमा तस्य भार्या मोरबराही । सा जीरा तस्य पञ्चमपुत्र सा साबू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सावलदास तस्यभार्या पूराही एतेषा मय्ये सा मलूनेनेद शास्त्र हरिवंशपुराणाल्य ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं मङ्गलाचार्य श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्द्रतत्पशिष्या अजिका शांति श्री योग्य घटापित ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त ।

१८८६ प्रति स० २ । पत्र स० १२७ । ले० काल स० १६६३ आसोज सुदी ३ । वे० स० ३८७ । क मण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति बाला पत्र विलकुल फटा हुआ है ।

१८८७ प्रति स० ३ । पत्र स० ११७ । ले० काल स० १६४६ माघ सुदी १ । वे० स० १८६ । च मण्डार ।

विशेष—यह प्रति अम्बावती (आमेर) मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे नेमिनाथ चैत्यालयमे लिखी गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१८८८ प्रति स० ४ । पत्र स० १८८ । ले० काल स० १८३८ पौष सुदी १२ । वे० स० ३१ । छ मण्डार ।

विशेष—इसने अतिरिक्त अ मण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३३८) छ मण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२) तथा अ मण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३१३) भीर हैं ।

१८६८ प्रति स० ५ । पत्र स० २५७ । ले० काल स० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ ।

च भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे गोधो के मन्दिर मे मढूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त ङ भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार में एक प्रति (वे० स०

२०४) तथा छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५६) और हैं ।

१८६९ पद्मपुराण—भ० वर्मकीर्त्ति । पत्र स० २०७ । आ० १३×६ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पुराण । २० काल स० १८३५ कार्तिक सुदी १३ । वे० स० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ़ नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

१९०० पद्मपुराण (उत्तरखण्ड) । पत्र स० १७६ । आ० ६×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्मपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं । अन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१९०१ पद्मपुराणभाषा—प० दौलतराम । पत्र स० ४६६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

२० काल स० १८२३ माघ सुदी ६ । ले० काल स० १९१८ । पूर्ण । वे० स० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल मे प० शिवदीनजी के समय में मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री अमरचन्द ने हीरालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर मे चढ़ाया ।

१९०२ प्रति स० २ । पत्र स० ५४१ । ले० काल स० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१९०३ प्रति स० ३ । पत्र स० ४५१ । ले० काल स० १८६७ । वे० स० ४२७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतिया के अतिरिक्त अ भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० ४१०, २२०३) क और ग भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ४२४, ५३) घ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ५५, ५६) च और ज भण्डार में दो तथा एक प्रति (वे० स० ६२३, ६२४, व २५२) तथा झ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १६, ८८) और हैं ।

१९०४ पद्मपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र स० २०६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल स० १७८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०८७ । अ भण्डार ।

१९०५ प्रति स० २ । पत्र स० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावण बुदी ३३ । वे० स० ७८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी ।

इसी भण्डार में (वे० स० ३४१) पर एक अपूर्ण प्रति और है ।

१६०६ वायव्यपुराण—महाराष्ट्र शुभाश्वत्थ । पत्र सं १७२ । या ११५२ इत्य । वाया—वसंत ।
विषय—गुरु । १ काल सं १९ । मे काल सं १७२१ मासिक बुद्धि १ । पूर्ण । के सं १२ । अ मन्त्र ।
विशेष—अथ श्री कल्याणी चण्डिकापुर मे हूँ श्री । पत्र ११२ तथा ११३ काल सं १७२१ मे शु-
भिते कने हूँ ।

१६०७ अथि सं २ । पत्र सं १ । मे काल सं १७२१ के सं ४६२ । अ मन्त्र ।
विशेष—अथ महाशिवजी की प्रेरणा सं लिखा गया था । महाशिव ने इसका संशोधन किया ।
१६०८ अथि सं ३ । पत्र सं २२ । मे काल सं १६२३ श्री बुद्धि १ । के सं ४५२ । अ
मन्त्र ।

विशेष—एक अथि सं मन्त्र के (के सं २६) धीरे हूँ ।
१६०९ वायव्यपुराण—अ श्रीमूषण । पत्र सं २४२ । या १२५२ इत्य । वाया—वसंत ।
विषय—गुरु । १ काल सं १९२ । मे काल सं १ । मन्त्रिक बुद्धि १ । पूर्ण । के सं २२३ । अ मन्त्र ।
विशेष—महाराष्ट्र मन्त्रिक बुद्धि हूँ । पत्र मन्त्रिक हूँ ।

१६१० वायव्यपुराण—अ श्रीमन्त्रि । पत्र सं ३४ । या १२५२ इत्य । वाया—वसंत ।
विषय—गुरु । १ काल सं १९२ । मे काल सं १ । मन्त्रिक बुद्धि १ । पूर्ण । के सं २२३ । अ मन्त्र ।

१६११ वायव्यपुराण—अ श्रीमन्त्रि । पत्र सं ३४ । या १२५२ इत्य । वाया—वसंत ।
विषय—गुरु । १ काल सं १९२ । मे काल सं १ । मन्त्रिक बुद्धि १ । पूर्ण । के सं २२३ । अ मन्त्र ।
विशेष—अथि सं मन्त्र के (के सं २२३) धीरे हूँ ।

अ मन्त्र के (के सं २२३) धीरे हूँ ।
१६१२ अथि सं २ । पत्र सं १२२ । मे काल सं १२२ । के सं २२३ । अ मन्त्र ।
विशेष—अथि सं मन्त्र के (के सं २२३) धीरे हूँ ।

१६१३ अथि सं ३ । पत्र सं १ । मे काल सं १२२ । के सं २२३ । अ मन्त्र ।
१६१४ अथि सं ४ । पत्र सं १२२ । मे काल सं १२२ । के सं २२३ । अ मन्त्र ।
१६१५ अथि सं ५ । पत्र सं १२२ । मे काल सं १२२ । के सं २२३ । अ मन्त्र ।

१६१६ वायव्यपुराण—अ श्रीमन्त्रि । पत्र सं २२२ । या १२५२ इत्य । वाया—वसंत ।
विषय—गुरु । १ काल सं १९२ । मे काल सं १ । मन्त्रिक बुद्धि १ । पूर्ण । के सं २२३ । अ मन्त्र ।

१६१७ अथि सं २ । पत्र सं १२२ । मे काल सं १२२ । के सं २२३ । अ मन्त्र ।

विशेष—अथि सं मन्त्र के (के सं २२३) धीरे हूँ ।
अ मन्त्र के (के सं २२३) धीरे हूँ ।

१६१८ पुराणमार—श्रीचन्द्रमुनि । पत्र सं० १०० । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १०७७ । ले० काल सं० १६०६ आषाढ़ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २३६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर (ग्रामग्रन्थ) के राजा भारामल के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १४८३ फाल्गुण सुदी १० । वे० सं० ४७१ । अ भण्डार ।

१६२० पुराणसारसंग्रह—भ० नमलकीर्ति । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८५६ मंगिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

१६२१ वालपद्मपुराण—प० पञ्चालाल बाकलीवाल । पत्र सं० २०३ । आ० ८×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ११३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है । कनकते में राममधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२२ भागवत द्वाष्टगम स्कन्ध टीका । पत्र सं० ३१ । आ० १४×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्रों के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है ।

१६२३ भागवतमहापुराण (सप्तमस्कन्ध) । पत्र सं० ६७ । आ० १४३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०८८ । ट भण्डार ।

१६२४ प्रति सं० २ (षष्ठमस्कन्ध) । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

१६२५ प्रति सं० ३ । (पञ्चमस्कन्ध) । पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी १२ । वे० सं० २०६० । ट भण्डार ।

विशेष—चौबे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२६ प्रति सं० ४ (अष्टमस्कन्ध) । पत्र सं० ११ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

१६२७ प्रति सं० ५ (तृतीयस्कन्ध) । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । ट भण्डार ।

विशेष—६७ में आगे पत्र नहीं हैं ।

वे० सं० २०८८ से २०६२ तक ये सभी स्कन्ध श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका सहित हैं ।

१६२८ भागवतपुराण । पत्र सं० १४ से ६३ । आ० १०३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—६०वाँ पत्र नहीं है ।

१६२६ प्रति सं० २। पत्र सं १६। मे काल ×। वे सं २११६। छ मन्थार।

विशेष—द्वितीय स्कंध के तृतीय अध्याय तक की टीका पूर्ण है।

१६३० प्रति सं० ३। पत्र सं ४। वे सं १२। मे काल ×। पयूर्व। वे सं २१०२। छ मन्थार।

विशेष—तृतीय स्कंध है।

१६३१ प्रति सं ४। पत्र सं ५। मे काल ×। पयूर्व। वे सं २१०४। छ मन्थार।

विशेष—अथर्व स्कंध के द्वितीय अध्याय तक है।

१६३२ मङ्गिनाथपुराण—सकलकीर्ति। पत्र सं ४२। या १२×२२ दण्ड। मन्थार—संस्कृत। विप-

परिम १८। काल ×। मे काल १। वे सं २। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं १६) मौद्र है।

१६३३ प्रति सं २। पत्र सं ३०। मे काल सं १०२ पञ्च पुरी १४। वे सं २१। छ

मन्थार।

१६३४ प्रति सं ३। पत्र सं ४०। मे काल सं १६१६ मयद्विर पुरी ५। वे सं २०२।

विशेष—अथर्वस्कंध सुहृदिवा ने प्रतिलिपि करके दीवण्ड अमरकम्पनी के यन्त्र में रखी।

१६३५ प्रति सं ४। पत्र सं ४२। मे काल सं ११ काकल पुरी ३। वे सं १११। छ

मन्थार।

१६३६ प्रति सं ५। पत्र सं ४२। मे काल सं ११ काकल पुरी ३। वे सं १११। छ

मन्थार।

१६३७ प्रति सं ६। पत्र सं ४२। मे काल सं १११ काकल पुरी ३। वे सं १११। छ

मन्थार।

विशेष—अमरक के विपणन बोधा ने प्रतिलिपि करवाई की।

१६३८ प्रति सं ७। पत्र सं ४२। मे काल सं १११। वे सं १११। छ मन्थार।

१६३९ प्रति सं ८। पत्र सं ४२। मे काल सं १११ काकल पुरी ३। वे सं १११। छ

मन्थार।

१६४० प्रति सं ९। पत्र सं ४२। मे काल सं १११ काकल पुरी ३। वे सं १११। छ

मन्थार।

विशेष—विपणन काष्ठ ने इस काल की प्रतिलिपि करवाई की।

१६४१ मङ्गिनाथपुराणमन्थार—सेवाराज पाखी। पत्र सं ४६। या १२×२२ दण्ड। मन्थार—

हिन्दी मन्थार। विप-परिम १८। काल ×। मे काल ×। पयूर्व। वे सं २। छ मन्थार।

१६४२ मन्थारपुराण (संस्कृत)। पत्र सं ४७। या १२×२२ दण्ड। मन्थार—संस्कृत। विप-

पुराण १८। काल ×। मे काल ×। पयूर्व। वे सं २। छ मन्थार।

१६४३. महापुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ७०४ । भा० १४×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ७७ ।

विशेष—ललितकीर्ति कृत टीका सहित है ।

घ भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ७८) भी है ।

१६४४ महापुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र स० ५१४ । भा० ६३×४३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र जीर्ण होगये हैं ।

१६४५. मार्कण्डेयपुराण । पत्र स० ३२ । भा० ६×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण ।

२० काल × । ले० काल स० १८२६ कार्तिक वृदी ३ । पूर्ण । वे० म० २७३ । छ भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार मे इसकी दो प्रतियाँ (वे० स० २३३, २४६,) भी हैं ।

१६४६ मुनिसुव्रतपुराण—ब्रह्मचारी कृष्णदास । पत्र स० १०४ । भा० १२×६ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल स० १६८१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वे० म० ५७८ ।

क भण्डार ।

१६४७ प्रति स० २ । पत्र स० १२७ । ले० काल × । वे० स० ७ । छ भण्डार ।

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

१६४८ मुनिसुव्रतपुराण—इन्द्रजीत । पत्र स० ३२ । भा० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

पुराण । २० काल स० १८४५ पौष वृदी २ । ले० काल स० १८४७ आषाढ वृदी १२ । वे० स० ४७५ । ज भण्डार ।

विशेष—रतनलाल ने बटेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६४९ लिंगपुराण । पत्र स० १३ । भा० ६×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनेतर पुराण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४७ । ज भण्डार ।

१६५० वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति । पत्र स० १५१ । भा० १०^१/_२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल स० १८७७ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६० । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा रामुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१ प्रति स० २ । पत्र स० १३० । ले० काल १८७१ । वे० स० ६४६ । क भण्डार ।

१६५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ८२ । ले० काल स० १८६८ सावन सुदी ३ । वे० स० ३२८ । च

भण्डार ।

१६५३ प्रति स० ४ । पत्र स० ११३ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० ४ । छ भण्डार ।

विशेष—सागानेर मे व० नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५४ प्रति स० ५ । पत्र स० १४३ । ले० काल स० १८४६ । वे० स० ५ । छ भण्डार ।



मंगलाग्रज स्वविराचार्य श्री केशवमेन तत् शिष्योपाध्याय श्री विश्वकीर्ति तत्पुत्र भा० ब्र० श्री दीपजी ग्रहा श्री राजसागर
पुक्ते लिखित स्वज्ञानावरण कर्मकायार्थ । भ० श्री ५ विश्वमेन तत् शिष्य मडलाचार्य श्री ५ जयकीर्ति प० दीपचन्द प०
मयाचद युक्ते आत्म पठनार्थ ।

१६६५ शान्तिनानाथपुराण—महाकवि अशग । पत्र म० १८३ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल शक सवत् ६१० । मे० काल स० १५५३ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ६६ । अ
मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—मवत् १५५३ वर्ष भादवा वदि वारोस रवी मघे ह श्री गधारमन्थे लिखित पुस्तक लेखक
पाठक्यो चिरनीयात् । श्री मूलमधे श्री कृदकुन्दाचार्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पुट्टे
भट्टारक श्री मुमचन्द्रदेवास्तत्पुट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवाधिप्य मडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थ
हुंवड न्यातीम श्रे० हापा भार्या संपूरित श्रुत श्रेष्ठि धना स० धावर स० सोमा श्रेष्ठि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे
नयो पुत्र विद्याधर द्वितीय पुत्र धर्मधर एते सर्वे शान्तिपुराण लग्वाय पात्राय दत्त ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानत ।

घनदानान् मुनी नित्य निर्वाधी भेषजाद्भवेत् ॥१॥

१६६६ प्रति स० २ । पत्र स० १४४ । ल० काल स० १८६१ । वै० म० ६८७ । क मण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ की छ, व्य और ट मण्डार मे एक एक प्रति (वै० स० ७०४, १६, १६३५) और हैं ।

१६६७ शान्तिनानाथपुराण—सुशालचन्द । पत्र स० ५१ । भा० १२३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—पुराण । २० काल × । मे० काल × । पूर्ण । वै० म० १५७ । छ मण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण में से है ।

ट मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वै० स० १८६१) और हैं ।

१६६८ हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ३१४ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल शक स० ७०५ । मे० काल स० १८३० भाषा सुदी १ । पूर्ण । वै० स० २१६ । अ मण्डार ।

विशेष—२ प्रतियो का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर मे प० डू गरमो के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की
गई थी ।

इसी मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वै० स० ८६८) और है ।

१६६९ प्रति स० २ । पत्र स० ३२४ । ल० काल स० १८३६ । वै० म० ८५२ । क मण्डार ।

१६७० प्रति म० ३ । पत्र स० २८७ । मे० काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५ । वै० स० १३२ । व
मण्डार ।

विशेष—गोपाबल नगर मे ब्रह्मगभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

कुन्दकुदाचार्यावये भ० गननवीतिदा भ० भुगवीतिदा भ० भी इतिभूपत्येन विष्यगुनि जयनदि पठनार्थे । हृदय
जातीय ।

१६८० प्रति स० ७ । पत्र स० ८१३ । ले० ताल स० १६३७ माह सुदी १३ । ये० स० ८६१ । अ
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रगति विवृत है ।

उक्त प्रतिमा के अतिरिक्त क, ख तथा अ भण्डारों में एक एक प्रति (ये० स० ८५१, ८०६, ८७)
भार हैं ।

१६८१ हरिवंशपुराण—श्री भूषण । पत्र स० ३८५ । मा० ११५५ इक्ष । भाषा—नम्बूत । विषय—
गुण । २० पान × । ले० ताल ✓ । सपूर्ण । ये० स० ८६१ । अ भण्डार ।

१६८२ हरिवंशपुराण—म० नरन्नीति । पत्र स० २७१ । मा० ११६५ इक्ष । भाषा—नम्बूत ।

विषय—पुराण । २० पान × । ले० ताल स० १८५७ चंद्र सुदी १० । पूर्ण । ये० स० ८५० । अ भण्डार ।

विशेष—नैवक प्रगति फटी हुई है ।

१६८३ हरिवंशपुराण—चरल । पत्र स० ५०२ मे १०३ । मा० १०५४ इक्ष । भाषा—मपन्न न ।

विषय—पुराण । २० पान × । ले० ताल ✓ । सपूर्ण । ये० स० १६६६ । अ भण्डार ।

१६८४ हरिवंशपुराण—यश सीति । पत्र स० १६६ । मा० १०६५ इक्ष । भाषा—मपन्न न ।

विषय—गुण । २० पान × । ले० ताल स० १४७३ । पाष्ठग सुदी ६ । पूर्ण । ये० स० ८६ ।

विशेष—तिजारा ग्राम में प्रतिनिधि श्री गर्दी थी ।

मय मयस्मिन् जन्मिन् गज्ये भवत् १४७३ वर्षे काल्पुणि सुदि ६ रविवागने श्री तिजारा स्थाने । अलाव-
लवा गज्ये श्री गार्ह । सपूर्ण ।

१६८५ हरिवंशपुराण—महाश्वि स्वयम्भू । पत्र स० २० । मा० ६५४ । भाषा—मपन्न न । विषय—
पुराण । २० पान × । ले० ताल × । सपूर्ण । ये० स० ४५० । अ भण्डार ।

१६८६ हरिवंशपुराण—दौलतराम । पत्र स० १०० ले २०० । मा० १०५८ इक्ष । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । २० पान स० १८२६ चंद्र सुदी १५ । ले० काल × । सपूर्ण । ये० स० ८६ । अ
भण्डार ।

१६८७ प्रति स० २ । पत्र स० ४६६ । ले० काल स० १६२६ भादवा सुदी ७ । ये० स० ६०६ (क)
अ भण्डार ।

१६८८ प्रति स० ३ । पत्र स० ८२५ । ले० काल स० १६०८ । ये० स० ७२८ । अ भण्डार ।

१६८९ प्रति स० ४ । पत्र स० ७०६ । ले० काल स० १६०३ भाद्रपद सुदी ७ । ये० स० २३७ । अ
भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ भण्डार में तीन प्रतियां (ये० स० १३४, १५१) हैं, तथा अ
भण्डार में एक एक प्रति (ये० स० ६०६, १४८) भी हैं ।

पत्र सख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा साभलउ । तिणी नरक माहि थी । ते जीवनीकलियउ । पछइ मरी रोइ सर्प थयउ । सयम्भू रमणि द्वीपा माहि । पछइ ते तिहा पाप करिवा लागउ । पछई बली तिहा थकी मरण पाम्या । बीजे नरक गई तिहा तिन सागर प्रायु भोगवी । छेदन भेदन तापन दुख भोगवी । बली तिहा थकी ते निकलियउ । ते जीव पछइ चपा नगरी माहि चांडाल उइ घरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल भवतार पाम्यउ । पछइ ते एक बार बन माहि तिहा उवर वीणीवा लागी ।

अन्तिम पाठ—पत्र सख्या ३८०-८१

श्री नेमनाथ तिन शिभवण तारणहार तिणी सागी विहार क्रम कीयउ । पछइ देस विदेस नगर पाटणाना भवीव लोक प्रबोधीया । बलीयिणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप सपनीयउ दान दीयउ । पछइ गिरनार प्राव्या । तिहा समोसर्वा । पछइ घणा लोक सबोध्या । पछइ सहस वरस भ्राउपउ भोगवीनइ दस धनुष प्रमाण देह जाएवी । ईणी परइ घणा दीन गया । पछइ एक मासउ गरयउ । पछइ जगनाथ जोग धरी नइ । समो सरण त्याग कीयउ । तिवारइ ते घातिया कर्म पय करी चउदमइ गुणठाणइ रह्या । तिहा थका मोप सिद्धि थया । तिहा भ्राठ गुण सहित जाएवा । बली पाव सइ छत्रीस साध साधइ भूकति गया । तिणी सामी भचल ठाम लाषउ । तेहना सुखनीउपमा दीधी न जाई । ईसा सूखनासवी भागी थया । हिवइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ । जे काई विरुद्ध बात लिखाणी होई ते मोष तिरती कीज्यो । बली सामनी साखि । जे काई मइ आपणी बुघ थकी । हरबस कथा माहि भघ कोउ छइ लीखीयउ होइ । ते मिछामि दुकड था ज्यो ।

संवत् १६७१ वर्षे भासोज भासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिथी । लिखित मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये ।
विज शिष्यणी भार्या सहजा पठनार्थ ।



काव्य एव चरित्र

१३३२ अक्षयकुपरिचिन्ना—नाथूराम । पृष्ठ १९ । या १९५५ । प्रकाशित । विम-
मेनावली परमहन्त श्री श्रीराम स्वामी । २ कल \times । वि कल \times । पूर्ण । वि १७९ । या १७९५ ।

१११६ अन्तर्ग्रहणम्—। पक्ष १९। या १२३× १३३। यथा—हिमं वन। निव-
रति। १२ वन×। १३ वन×। पूर्ण। १९। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

१३६० अमरकान्तक—पृष्ठ १। पा १ ३५४ वृक्षः शाला-वृक्षः। विष्णु-वृक्षः।
 शाला ×। विष्णु ×। वृक्षः। विष्णु १२५। वृक्षः।

१३६८. अष्टावसविंशत्यवस्थाम्—। पक्ष १ वा ११ × २३। अन्त-वृत्तः। विस्-
मन्तः। २ वा ११ × ३ वा १३। पूर्ण ११ व १३। अन्तः।

१६६६ श्रवणमासपरिच—म सकलकीर्ति । वष र्त ११६ । या १२५३६ इत्य । ज्ञाना—मंजुष ।
निचय श्रवण तीर्थपुर परिचालन का जीवन परिच । र कल ५ । से कल र्त १६६६ शीत बुटी ५ । पूर्ति । र
र ३५ । अ ज्ञानार ।

विशेष—सत्य का नाम अविप्रायत तथा शुभमनाम कुशल भी है ।

[illegible]

२ प्रति सं । वन सं २२ । के गुण सं २२ । के सं २२ । अ मन्त्र ।

इस व्यंजन के एक अक्षर (के ल १३३) नीचे है ।

३ । प्रति सं ३ । पत्र सं १६ । नि. राज. नं. १३६७ । दि. २९ । क. प्रचार ।

एक प्रति वे. अं. १६६ की धीर है।

२ प प्रति भां ४। वन नं १९५। से वन नं १ एक आमुल गुरी १ + के नं १५। क
पुष्पा।

२. ३ प्रति हं २। पत्र नं १२। नै. पत्र नं १ ३ ज्येष्ठ शुदी १। वी. सं १२। व.
वर्षा।

२००४ प्रति स० ६ । पत्र स० १७१ । मे० गान स० १८५५ प्र० आरुण मुदी ८ । वे० स० ३० ।
छ भण्डार ।

विशेष—निमनराम ने प्रतिनिधि भी भी ।

२००५ प्रति स० ७ । पत्र स० १८१ । मे० गान स० १७७४ । वे० स० २८७ । छ भण्डार ।

इसके प्रतिनिधि छ भण्डार ने एक प्रति (वे० स० १७६) तथा छ भण्डार ने एक प्रति (वे० स० २१८३) धोर है ।

२००६ शत्रुमहार—कालिदास । पत्र स० १३ । मा० १०×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—साव्य ।
२० गान ५ । मे० गान स० १६०४ माताज मुदी १० । वे० स० ४७१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रगति—मार्च १९०४ वर्ष अश्विनि मुदि १० दिन श्री मलधारगन्धे भट्टारक श्री श्री श्री मानदेव
गुरु गुरुगण्डनायकेन लिखिता स्मृतम् ।

२००७ करकण्डुचरित्र—भुनि कनकागर । पत्र स० ६१ । मा० १०×३५ इंच । भाषा—मध्यम ।
विषय—चरित्र । २० गान ५ । मे० गान स० १७६५ कापुग मुदी १० । पूर्ण । वे० स० १०२ । छ भण्डार ।

विशेष—नेमा प्रगति यात्रा समाप्त पत्र नहीं है ।

२००८ करकण्डुचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८५ । मा० १०×३३ इंच । भाषा—मध्यम ।
विषय—चरित्र । २० गान स० १६११ । मे० गान स० १८५६ मगसिर मुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २७७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रगति—मार्च १८५६ वर्ष मगसिर मुदि ६ भोमे सोमनाथ (मंगल) ग्राम नेमनाथ चैत्यालये
श्रीमत्ताडामये भ० श्री विश्वनेन तत्पट्टे भ० श्री विद्याभूषण गुरुगण्डनायके भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तुगण्डनायके
नमसागर स्मृतम् लिखित ।

भाषायावराचार्य श्री श्री चन्द्रकीर्तिज गुरुगण्डनायके श्री हर्षकीर्तिजी की पुरतः ।

२००९ प्रति स० ७ । पत्र स० ४६ । मे० गान ५ । वे० स० २८४ । छ भण्डार ।

२०१० कविप्रिया—केशवदेव । पत्र स० २१ । मा० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य
(शृङ्गार) । २० गान ५ । मे० गान ५ । अपूर्ण । वे० स० ११३ । छ भण्डार ।

२०११ कादम्बरीटीका । पत्र स० १५१ से १८३ । मा० १०×४५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० गान ५ । मे० गान ५ । अपूर्ण । वे० स० १६७७ । छ भण्डार ।

२०१२ काव्यप्रकाशसटीक । पत्र स० ८३ । मा० १०×४५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० गान ५ । मे० गान ५ । अपूर्ण । वे० स० १६७८ । छ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार का नाम नहीं दिया है ।

२०१३ किराताजुनीय—महाकवि भारवि । पत्र स० ४६ । मा० १०×४५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० गान ५ । मे० गान ५ । अपूर्ण । वे० स० ६०२ । छ भण्डार ।

२ १४ प्रति स २। पत्र तं ३१ से ३३। मे माल \times । पूर्ण। के छं १३। क म्पार।
विशेष—अति संस्कृत टीका ललित है।

२ १५ प्रति स ३। पत्र तं ४७। मे माल तं १३३ मालवा मुठी। के छं १३२। क म्पार।

२ १६ प्रति स ४। पत्र तं १६। मे माल तं १४२ मालवा मुठी। के छं १३१। क म्पार।

विशेष—सांकेतिक टीका भी है।

२ १७ प्रति स ५। पत्र तं १७। मे माल तं ११७। के छं १३४। क म्पार।

विशेष—जयपुर नगर के बाबोजिहजी के राज्य में से कुंजीमौरा के प्रतिनिधि करवायी थी।

२ १८ प्रति स ६। पत्र तं ४६। मे माल \times । के छं १६। क म्पार।

२ १९ प्रति स ७। पत्र तं १९। मे माल \times । के छं १४। क म्पार।

विशेष—अति मङ्गलमूलक संस्कृत टीका ललित है।

इनके व्यतिरिक्त का म्पार के एक प्रति (के छं ३३) का म्पार के एक प्रति (के छं १३) का म्पार के एक प्रति (के छं ७) तथा का म्पार के तीन प्रति (के छं १४ २३१ २३२) भी हैं।

२ २ कुमारसमय—शुद्धाभि काशिकास। पत्र तं ४१। मा १०८२६६ द. व। माला—संस्कृत।

विषय—माला। ८ माल \times । मे माल तं १७४५ मालवा मुठी २। पूर्ण। के छं १६६। क म्पार।

विशेष—का विषय माले से म्पार माला हीन है।

२ २१ प्रति स ९। पत्र तं १९१। मे माल तं १७२७। के छं १७४५। माला—संस्कृत।

२ २२ प्रति स १०। पत्र तं १७। मे माल \times । के छं १२३। क म्पार। शुद्धाभि काशिकास।

इनके व्यतिरिक्त का एक-एक म्पार के एक-एक प्रति (के छं ११६ ११७) का म्पार के दो प्रति (के छं ७१ ७२) का म्पार के दो प्रति (के छं १३४ १३५) तथा एक म्पार के तीन प्रति (के छं २ ३२ ३३ ३४) भी हैं।

२ २३ कुमारसमय—काव्यसागर। पत्र तं १२। मा १०८६ द. व। माला—संस्कृत।

विषय—माला। ८ माल \times । मे माल \times । पूर्ण। के छं १३। क म्पार।

विशेष—अति भीरी है।

२४ कुत्र-बुद्धायति—बाबीयसिंह। पत्र तं ४९। मा ११०८६ द. व। माला—संस्कृत।

विषय—माला। ८ माल तं १६४७ मालवा मुठी २। पूर्ण। के छं १३३। क म्पार।

विशेष—इसका माल मोरवार परित थी है।

२ २५ प्रति स २। पत्र तं ४१। मे माल तं १११ मालवा मुठी १। के म ७१। क म्पार।

म्पार।

विशेष—टीका मालवा मुठी में मालवा मुठी के पत्रों में प्रतिनिधि थी थी।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ७४) और है ।

२०२६ प्रति स० ३ । पत्र स० ४३ । ले० काल स० १६०४ माघ सुदी ५ । वे० स० ३३२ । अ
भण्डार ।

२०२७ खण्डप्रशस्तिकाव्य (पत्र स० ३ । आ० ८१×५१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।

२० काल × । ले० काल स० १८७१ प्रथम भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १३१४ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर में अवावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटोदी) में
प्रतिलिपि की थी ।

ग्रन्थ में कुल २१२ श्लोक हैं जिनमें रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है । वैसे प्रारम्भ में
रघुकुल की प्रशंसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने में राम के पराक्रम का वर्णन है ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री खंडप्रशस्ति काव्यानि संपूर्णा ।

२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र स० २३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५ । क भण्डार ।

* विशेष—२१ व २२वां पत्र नहीं है ।

२०२९ गीतगोविन्द—जयदेव । पत्र स० २ । आ० ११३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—कालरायाटन में गौड़ ब्राह्मण पंडा भेरवलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३० प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८४४ । वे० स० १८२६ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसो भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० १७४६) और है ।

२०३१ गौतमस्वामीचरित्र—महर्षिाचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र स० ५३ । आ० ६३×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१ । अ भण्डार ।

२०३२ प्रति स० २ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८३६ कार्तिक सुदी १० । वे० स० १३२ । क
भण्डार ।

२०३३ प्रति स० ३ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८६४ । वे० स० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४ प्रति स० ४ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १९०६ कार्तिक सुदी १२ । वे० स० २१ । म
भण्डार ।

२०३५ प्रति स० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० २५४ । अ भण्डार ।

२०३६ गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र स० १०८ । आ० १३×५ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १९४० मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता आचार्य धर्मचन्द्र हैं । रचना सबत् १५२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नहीं होता ।

२ ३० घटकपरैरकाव्य—घटकपरैर । पत्र सं ४ । या १२×२३ इंच । भाषा—संस्कृत । विरचक—
काल । र काल × । ने काल सं १५१४ । पूर्ण । ने सं २३ । अथ मन्थार ।

विषय—बम्बारा में आदिनाथ भैरवनाथ में अन्य निवास का वा ।

अथ घोर का मन्थार में इतनी एक एक प्रति (ने सं १३४५ ७३) घोर है ।

२ ३८ कालनाचरित्र—अ० शुभकाम्य । पत्र सं ३१ । या १ × २३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । र काल सं १६२३ । ने काल सं १ ३३ भाषा कुटी ११ । पूर्ण । ने सं १ ३ । अ
मन्थार ।

० ३६ प्रति सं २ । पत्र सं ३४ । ने काल सं १ २३ भाषा कुटी ३ । ने सं १७२ । क
मन्थार ।

१ ४ प्रति सं ३ । पत्र सं ३६ । ने काल सं १५६३ हि भाषा । ने सं १६७ । क
मन्थार ।

२ ४१ प्रति सं ४ । पत्र सं ४ । ने काल सं १५६७ भाषा कुटी ७ । ने सं २४ । अ
मन्थार ।

विषय—आपत्ति में पं सचमंदिरा जीवा के मन्थार के स्वयंमार्ग प्रतिनिधि हुई थी ।

२ ४२ प्रति सं ५ । पत्र सं ३७ । ने काल सं १ ६९ भाषा कुटी । ने सं ३ । अ
मन्थार ।

इसी मन्थार में एक प्रति (ने सं ३७) घोर है ।

३ ४३ प्रति सं ६ । पत्र सं १ । ने काल सं १ १९ भाषा कुटी १ । ने सं ३ । अ
मन्थार ।

१ ४४ कालप्रमथरित्र—वीरनदि । पत्र सं १३ । या १२×२३ इंच । भाषा—संस्कृत । विरच-
काल । र काल × । ने काल सं १२ ६ भाषा कुटी ११ । पूर्ण । ने सं ११ । अथ मन्थार ।

विषय—अकालि मयूस है ।

२ ४५ प्रति सं २ । पत्र सं १ ६ । ने काल सं १६४१ भाषा कुटी १ । ने सं १७४ ।
क मन्थार ।

२ ४६ प्रति सं ३ । पत्र सं ५७ । ने काल सं १६४४ भाषा कुटी १ । ने सं १६ । अ
मन्थार ।

विषय—अकालि अकालि मित्र प्रकार है—

भी कलेश्वर पंडी विदुषः सुनि भाषावर्धने प्रतिष्ठं कालावर्धने वासु कालचक्रविमलकालवैक कालि म-
कालकालने विमल मन्थारावर्धने कालकालवैक भाषावर्धने मित्रकालविमल कालकालवर्धने भाषा सं १६४४ भाषा
वर्ध ७ काल विमल कर्मकालविमल ।

२०४७. प्रति स० ४ । पत्र स० ५७ से ७४ । ले० काल स० १७८५ । अर्पण । वे० सं० २१७७ । ट

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८५ वर्षे फागुण सुदी ७ रविवासरै श्रीमूलसधे बलात्कारण्ये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्ति देवा तत्पिण्ये न० सजेयति इदं शास्त्र ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्तं लिखार्थित्वा ठीकुरदारस्यानो साधु लिखितं ।

इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १४६) च भण्डार मे दो प्रतिया (वे० स० १०, ८८) ज भण्डार में तीन प्रतिया (वे० स० १०३, १०४, १०५) च एव ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १६४, २१९०) और हैं ।

२०४८ चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका—टीकाकार गुणानन्द । पत्र स० ८६ । मा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ११ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता आचार्य वीरनदि । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है । १६ सर्गों में है ।

२०४९ चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका । पत्र स० २१ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १५६४ मासोज सुदी १३ । वे० स० ३२५ । ज भण्डार ।

२०५० चन्द्रप्रभचरित्र—यशकीर्ति । पत्र स० १०६ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—प्राठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १६४१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम संवत् १६४१ वर्षे पोह श्रुदि एकादशी बुधवासरै काष्ठसधे मा (अर्पण)

२०५१ चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र स० ६५ । मा० ११×४ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १८०४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १ । अ भण्डार ।

विशेष—बनवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में आचार्यवर श्री मेरुकीर्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के शिष्य नंदराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२ प्रति स० २ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८३० कार्तिक सुदी १० । वे० स० ७३ । क भण्डार ।

२०५३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० स० १६६ । ड भण्डार ।

इस प्रति के अतिरिक्त एव ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४८, २१६६) और हैं ।

२०५४ चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर (शिष्य धर्मचन्द्र) । पत्र स० १४६ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल स० १७२७ भाद्रपद सुदी ६ । ले० काल स० १८८१ सावन सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६ । अ भण्डार ।

विदेर—दक्षिणाद—

ॐ नमः । श्री वरमायने नमः । श्री महात्मने नमः ।

पिबे नैत्रद्वयी निर्यासं हृदयान्न वायुनः ।

सर्व बुद्धार्थमिदमव्ययं विष्णुः शिवः ॥१॥

कृष्णानामस्यो कृष्णवर्णास्युदेनैः ।

हेन स्वदास्यपुरोर्लङ्घं वज्रोक्तः प्रवर्त्तय ॥२॥

दुसरी देण हीरेआपणहीरे करालि ।

हमारे पुस्तक की हमारे कृत्याप्यई ॥३॥

बली ईईईइउ वावो कुत्तियपो बहावनी ।

ह्याविनावा करा जाईल कसेतु या प्रश्नासि हनु धरत

संक्षिप्त भाषा—

बुद्धलेखा-वत् (१७३१) अष्टावर्गः अने वर्गेऽप्येते

समयविषयेकाटि अर्थात् मृत्योरे ।

एवमेव च विदितव्यं किं न्यायसूत्रम्

नामिन्नायकभारतवर्षे कुरि जोगयिवाले । १८३॥

एष्यं चतुः सप्तमद्वयं वीरस्यपुत्राणि वै

કચ્છના સરકારી કોલેજોમાં અભ્યાસ કરતા ૧૫૫૧

[illegible][illegible]

१. ४४ प्रसिद्ध २। पत्र नं० १११ के जाल नं० १ १२ पीपड़री १४। के नं० १४२। ४

२०२३ प्रति वर्ष ३।५५ बं १।१।के मजग बं १।२४ मजग मुदी १।१।के बं २२२।५

विदीन—४) लोकचन्द्रादी दिव्य वं एवमन्व मे एव ही प्रतिष्ठिते ही भी ।

२६२५. चम्पूप्रभासविजयाया—अथचम्पू प्रभासम् । १५ अं १२ । या १२५×१ । अथा-विजयी ।

१।८ राज १६वीं पहाड़ी। के राज १६४९ मई ६वीं १४।१ के १६२। के मजार।

टिप्पणी—विद्यमान सभी वर्गों में धारी होने का यह प्रमाण के लक्षणों की भाषा है।

एडी कम्परा में हीन कपियाँ (३ व १९५, १९५, १९) सीर १ ।

२०५८ चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्ति । पत्र स० १६१ आ० १०५×४५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—मेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । २० काल स० १६६२ । ले० काल स० १७३३ कात्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे०
स० ८७४ । अ मण्डार ।

विशेष—१६ से आगे के पत्र नहीं हैं । अन्तिम पत्र मौजूद है । बहादुरपुर ग्राम में प० अमोचन्द ने प्रति-
लिपि की थी ।

आदिभाग— ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री सारदाई नमः ॥

आदिजिनआदिस्तु प्रति श्री महावीर ।

श्री गौतम गणधर नमु वलि भारति गुणगभीर ॥१॥

श्री मूलसर्धमहिमा धरणी सरस्वतिगच्छ गृ गार ।

श्री सकलकीर्ति गुरु अर्जुनमि नमुधीपचनदि भवतार ॥२॥

तस गुरु भ्राता शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय ।

चारुदत्त श्रेष्ठीतणो प्रबंध रत्न नमी पाय ॥३॥

अन्तिम—

भट्टारक सुखकार ॥

सुखकर सोभाणि अति विचक्षणं वदि वारण केशरी ।

भट्टारक श्री पद्मनदिचरणकंज सेवि हरि ॥१०॥

एसहु दे गच्छ नायक प्रणमि करि

देवकीरति दे मुनि निज गुरु मन्य धरी ।

धरिचित्त चरणे नमि कल्याणकीरति इम भणी ।

चारुदत्तकुमार प्रबंध रचना रक्षिमा आदर धरि ॥११॥

रायदेश मध्य दे मिलोढा बंसि

निज रचनायि दे हरिपुर निहसि

हसि अमर कुमारनितिहा धनपति वित्त बिलसए ।

प्रासाद प्रतिमा, जिन प्रति करि सुकृत संज्ञए ॥१३॥

मुकृत सवि दे व्रत बहु आचरि

दान महोद्वरे जिन पूजा करि

करि उद्द्व गान गद्यव चन्द्र जिन प्रासादए ।

बावन सिसर सोहामरा पञ्ज वनक कलष बिलासए ॥१३॥

मंडप मध्य समवसरण सोह

श्री जिन बिबरे मनोहर मन मोहि ।

नीचैः विनयनं कति उपेत वास्तव्येयविद्यात् ।

सिद्धी विजयमार्ग विद्यालय नुम्बर गिनतात्मक दृष्ट्या १०१४१४

तहाँ श्रीमद्विष्णु रै एखनो बरि

હોળદાંત્રુ પિરે ધાત્રી જગુનરિ ।

जगन्नाथि माधो कृष्ण पंचमी श्रीकृष्ण वरद्वन्द्व वरि ।

कनकादुर्गापति नहि अस्मान् भक्तो जायत नरि ॥१३॥

ବାହା—ସାଧର ବାହା ଚିନ୍ତା ଶୀତଳି ଦିଅନ୍ତୁ ଶାନ୍ତି ମୁଖର ।

ॐ शिवाय नमः ॥ १॥

ਸਾਇਨਸ ਕਲੱਬ ਵਿਖੇ ਸਾਇਨਸ ਦਿਵਸ ਸਮੇਂ ।

इ.श्री. १८८१ ई. ११ मई १८८१ ई. ११ मई १८८१ ई.

इति श्री वासुदेव भक्त सत्सङ्गः ॥

विषय—अथ १ ३१ से अंतिम बाँध के कुम्हारों लिखित वेदपुरपुराण की प्रियामयी वेदमय मन्त्र-
रत्न की १ कर्णबन्धन उत्पत्ति मन्त्र की १ शिवशरीर उत्पत्ति रचित प्रयोग स्वहस्त लिखित ।

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

२०६६. वाङ्मयचरित्र—आराम्यः। पृष्ठ ३। भा. १९४५ दश। माला-हिन्दी। विषय-
चरित्र। १. काल ३। २. ११ बाणव कुटी ३। ३. काल ४। कुटी ३। ४. १७५। अ. माला।

५६ वायुसंचारि—अणुकाण्ड । पृष्ठ ११६ । वा ११६× १६ । गता-हिन्दी गत ।
विष्णु-वर्णि । ४ काल ४ ११६ वायुसंचारी । के काल × । के ४०१ । अन्वयः ।

१७६९ आन्ध्रप्रदेशीय-संज्ञा-विभाग। पृष्ठ ३० के अंक १२४५६ दत्त। चला-चलित।
विषय-वर्णन। ८ अंक × ३ वाक्य १९९९ पूर्ति के लिए १०११ का अंक।

२ इह मसि सं २। पत्र सं ११६। ले फल सं १०३९ अंगुष्ठ पुटी २। वे सं १२२। य

२६३ प्रति सा. ३। १५० अं. १९४। जे. ३८० अं. १९४। कुटी २९। व. ७। १९४। ४

अथवा ।

इस प्रकार में एक प्रति (के सं ५३) जीए है ।

२०६४ प्रति हा ४। एव वं ११९। से० कर्म X १। वी २१। व मन्वार।

निर्देश—कवि काशीवासी है। अथवा २ कथा सम्बन्धित पद्य कवि लिखी हुई हैं।

२. ३६. प्रति स २। वचनं १५५। नी कला ४९। वे० ११२। क मया

निर्देश—कृपया अपना अभिप्राय स्पष्ट करने के लिये लिखें।

२०६६ प्रति स० ६ । पत्र स० १०४ । ले० काल स० १८६४ पोप बुदी १४ । वे० स० २०० । ङ
मण्डार ।

२०६७ प्रति स० ७ । पत्र स० ८७ । ले० काल स० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० स० १०१ । च
मण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२०६८ प्रति स० ८ । पत्र स० १०१ । ले० काल स० १८२५ । वे० स० ३५ । छ मण्डार ।

२०६९ प्रति स० ९ । पत्र स० १२३ । ले० काल × । वे० स० ११२ । च मण्डार ।

२०७० जम्बूस्वामीचरित्र—प० राजमल्ल । पत्र स० १२९ । मा० १२३×५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काल स० १६३२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५ । क मण्डार ।

विशेष—१३ सर्गों में विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१ जम्बूस्वामीचरित्र—प्रियकीर्ति । पत्र स० २० । मा० १३×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—चरित्र । १० काल स० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४० । ज मण्डार ।

२०७२ जम्बूस्वामीचरित्रभाषा—पञ्जालाल चौधरी । पत्र स० १८३ । मा० १४३×५३ इच्छ ।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । १० काल स० १९३४ फागुन बुदी १४ । ले० काल स० १९३६ । वे० स० ४२७ । अ मण्डार ।

२०७३ प्रति स० २ । पत्र स० १६६ । ले० काल × । वे० स० १८६ । क मण्डार ।

२०७४ जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र स० २८ । मा० १२३×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । वे० स० १६९ । छ मण्डार ।

२०७५ जिनचरित्र । पत्र स० ६ से २० । मा० १०×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११०५ । अ मण्डार ।

२०७६ जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र स० ६५ । मा० ११×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—

चरित्र । १० काल × । ले० काल स० १५९५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० स० १४७ । अ मण्डार ।

२०७७ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल स० १८१६ माघ बुदी ५ । वे० स० १८९ । क

मण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८ प्रति स० ३ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८९३ फागुन बुदी १ । वे० स० २०३ । ङ

मण्डार ।

२०७९ प्रति स० ४ । पत्र स० ५१ । ले० काल स० १९०४ आसोज बुदी २ । वे० स० १०३ । च

मण्डार ।

२७८० प्रति स० २१। पत्र तं १४। मे वाल तं १ ७ मंत्रित नुरी ११। मे तं १४। व

मन्त्रार ।

विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

ह्र मन्त्रार में एक मन्त्र प्रति (मे तं ७१) धीर है।

२ ८१ प्रति स० ६। पत्र तं २७। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी १२। मे तं ११। व

मन्त्रार ।

विशेष—चौरीचम मन्त्रा वाले मे कभी में प्रतिमिति की भी।

२ ८२ प्रति स० ७। पत्र तं ३। मे वाल तं १७ १ मंत्रित नुरी १। मे तं २४। व

मन्त्रार ।

विशेष—मन्त्रार में वं चौकचम मे प्रतिमिति की भी।

२ ८३ प्रति स० ८। पत्र तं ७६। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी ११। मे तं ११। व

मन्त्रार । विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

२ ८४ प्रति स० ९। पत्र तं ८। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी ११। मे तं ११। व

मन्त्रार । विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

२ ८५ प्रति स० १०। पत्र तं ९। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी ११। मे तं ११। व

मन्त्रार । विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

२ ८६ प्रति स० ११। पत्र तं १०। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी ११। मे तं ११। व

मन्त्रार । विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

२ ८७ प्रति स० १२। पत्र तं ११। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी ११। मे तं ११। व

मन्त्रार । विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

२ ८८ प्रति स० १३। पत्र तं १२। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी ११। मे तं ११। व

मन्त्रार । विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

२ ८९ प्रति स० १४। पत्र तं १३। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी ११। मे तं ११। व

मन्त्रार । विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

२ ९० प्रति स० १५। पत्र तं १४। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी ११। मे तं ११। व

मन्त्रार । विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

२ ९१ प्रति स० १६। पत्र तं १५। मे वाल तं ११ ४ मंत्रित नुरी ११। मे तं ११। व

मन्त्रार । विशेष—यह प्रति वं चौकचम एव रावचम की भी ऐसा मन्त्र है।

२०६१ प्रति स० २ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १६३७ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ५५६ । च
मण्डार ।

२०६२ प्रति स० ३ । पत्र स० १०१ मे १५१ । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० १७४३ । ट
मण्डार ।

२०६३ जीवधरचरित्र—पन्नलाल चौधरी । पत्र स० १७० । मा० १३X५ इक्ष । भाषा—हिन्दी
गद्य । विषय—चरित्र । २० काल म० १६३५ । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० २०७ । क मण्डार ।

२०६४ प्रति स० २ । पत्र म० १३५ । ले० काल X । वे० म० २१४ । छ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम ३५ पत्र चूहा द्वारा खाये हुये हैं ।

२०६५ प्रति स० ३ । पत्र स० १३२ । ले० काल X । वे० सं० १६२ । छ मण्डार ।

२०६६ जीवधरचरित्र । पत्र स० ४१ । मा० ११ $\frac{३}{४}$ X $\frac{५}{८}$ इक्ष । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
चरित्र । २० काल X । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० २०२६ । अ मण्डार ।

२०६७ रोमिणाहचरित्र—कविरत्न अयुध के पुत्र लक्ष्मणदेव । पत्र सं० ४४ । मा० ११X $\frac{४}{३}$ इक्ष ।
भाषा—मगध श । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल स० १५३६ शके १४०१ । पूर्णा । वे० सं० ६६ । अ
मण्डार ।

२०६८ रोमिणाहचरित्र—दामोदर । पत्र म० ४३ । मा० १२X५ इक्ष । भाषा—मगध श । विषय—
काव्य । २० काल स० १२८७ । ले० काल स० १५८२ भादवा सुदी ११ । वे० सं० १२५ । अ मण्डार ।

विशेष—चंदेरी में आचार्य जिनवन्द के शिष्य के निर्मित लिखा गया ।

२०६९ त्रैलोक्यालंकारपुराणचरित्र । पत्र स० ३६ मे ६१ । मा० १० $\frac{३}{४}$ X $\frac{४}{३}$ इक्ष । भाषा—प्राकृत ।
विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० २०६० । अ मण्डार ।

२०७० दुर्घटकाव्य । पत्र स० ४ । मा० १२X $\frac{५}{३}$ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २०
काल X । ले० काल X । वे० सं० १८५१ । ट मण्डार ।

२०७१ द्वात्रयकाव्य—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ६ । मा० १०X $\frac{४}{३}$ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० १८३२ । ट मण्डार । (दो सर्ग हैं)

२०७२ द्विसंधानकाव्य—धनञ्जय । पत्र म० ६२ । मा० १० $\frac{३}{४}$ X $\frac{५}{३}$ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल X । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० ८५३ । अ मण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र हट गये हैं । ६२ से आगे के पत्र नहीं हैं । इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य
भी है ।

२०७३ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० ३३१ । क मण्डार ।

२०७४ प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १५७७ भादवा बुदी ११ । वे० सं० १५८ । क
मण्डार ।

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री लेख के पुत्र पदारथ न प्रतिलिपि की थी ।

३ ५ द्विषमानकाव्यटीका—विनयचम्पू । पत्र सं २२ । या १२३×२३ दण्ड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । ८ कल × १ । ने कल × १ । पूर्ण । (पंचम सर्पटक) के सं ३३ । क मन्थार ।

३ ६ द्विषमानकाव्यटीका—मेदिनीशू । पत्र सं ३२१ । विषय—काव्य । भाषा—संस्कृत । ८ कल × १ । ने कल सं १६३२ वर्तिका कुटी ४ । पूर्ण । के सं ३२६ । क मन्थार ।

विशेष—इसका नाम पत्र नीमुडी भी है ।

३ ७७. प्रति सं २ । पत्र सं ३३ । ने कल सं १ ७३ मात कुटी । के सं १२७ । क मन्थार ।

३ ८८. प्रति सं ३ । पत्र सं ७ । ने कल सं १३ ६ वर्तिका कुटी २ ; के सं ११३ । क मन्थार ।

विशेष—लेखक ज्ञानिंद कपूर हैं । भोलाचंद (ग्राहिवर) के ज्वालाभा कुपरेत के वाक्यकाव्य के प्रतिनिधि की गई थी ।

३ ९. द्विषमानकाव्यटीका— । पत्र सं ३२४ । या १ ९ × दण्ड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । ८ कल × १ । ने कल × १ । पूर्ण । के सं ३२ । क मन्थार ।

३ १ बन्धुभारचरित्र—भा शुद्धमह । पत्र सं २३ । या १ ×२ दण्ड । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । ८ कल × १ । ने कल × १ । पूर्ण । के सं ३३३ । क मन्थार ।

३ ११ प्रति सं २ । पत्र सं २६ ४२ । ने कल सं १२२७ मातौव कुटी १ । पूर्ण । के सं ३२२ । क मन्थार ।

विशेष—इस पाँच के भिखारी लालदास मातौव के प्रतिनिधि की थी । कल कल हूँ (कपूर) २८ कलौचल का उल्लेख किया है ।

३ १२. प्रति सं ३ । पत्र सं ३६ । ने कल सं १६२२ ति ल्पेड कुटी ११ । के सं ४३ । क मन्थार ।

विशेष—कल ज्ञानिंद की हुई है । भावेर के ज्ञानिंदाल लालदास के प्रतिनिधि हुई । लेखक ज्ञानिंद कपूर हैं ।

३ १३ प्रति सं ४ । पत्र सं ३२ । ने कल सं १६ ४ । के सं १२ । क मन्थार ।

३ १४ प्रति सं ५ । पत्र सं ३३ । ने कल × १ । के सं ३२१ । क मन्थार ।

३ १५. प्रति सं ६ । पत्र सं ४० । ने कल सं १६ ३ कलौव कुटी ३ । के सं ४२ । क मन्थार ।

विशेष—काविका कीधारी ने कल की प्रतिनिधि करके कुनि की कलकौति की पत्र किया था ।

३ १६ बन्धुभारचरित्र—भा कलकौति । पत्र सं १ ७ । या ११×२३ दण्ड । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । ८ कल × १ । ने कल × १ । पूर्ण । के सं ३३ । क मन्थार ।

विशेष—कपूर ज्ञानिंद कल है ।

३०१७ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८५० आषाढ बुदी १३ । वै० स० २५७ । अ

भण्डार ।

विशेष—२६ से ३६ तक के पत्र बाद में लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८ प्रति स० ३ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८३५ माघ सुदी १ । वै० स० ३१४ । अ

भण्डार ।

३०१९ प्रति स० ४ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्ण । वै० स० ११०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वा पत्र नहीं है । प्र० मेयसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२० प्रति स० ५ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८१३ भाद्रपद बुदी ८ । वै० स० ४४ । अ

भण्डार ।

विशेष—देवगिरि (दोसा) में प० बस्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दों के हिन्दी में अर्थ दिये हैं । कुल ७ अधिकार हैं ।

३०२१ प्रति स० ६ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वै० स० १७ । अ भण्डार ।

३०२२ प्रति स० ७ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १६९१ वैशाख सुदी ७ । वै० स० २१८७ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६९१ वर्ष वैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे बुधनाम जोगे गुरुवासरे नद्याम्नायै बलात्कारगणै सरस्वती गच्छे ।

३०२३ धन्यकुमारचरित्र—प्र० नेमिदत्त । पत्र स० २४ । भा० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ३३२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४ प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १६०१ पीप बुदी ३ । वै० स० ३२७ । क भण्डार ।

विशेष—फौजुलाल टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १७९० श्रावण सुदी ५ । वै० स० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६ प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८१६ फागुण बुदी ७ । वै० स० ८७ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७ धन्यकुमारचरित्र—शुशालचंद । पत्र स० ३० । भा० १४×७ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ३७४ । अ भण्डार ।

३ २८. प्रति स २। पच सं १२। ते काल \times । वे सं ४१९। अथर्वार।

३ २९. प्रति स ३। पच सं १२। ते काल \times । वे सं ३१४। अथर्वार।

३ ३०. प्रति स ४। पच सं १२। ते काल \times । वे सं ३१९। अथर्वार।

३ ३१. प्रति स ५। पच सं १४। ते काल सं १२२४ नातिकपुरी २। वे सं २१९। अथर्वार।

अथर्वार।

३ ३२. प्रति स ६। पच सं १५। ते काल सं १२२। वे सं २४। अथर्वार।

३ ३३. प्रति स ७। पच सं १६। ते काल \times । वे सं ४१९। अथर्वार।

विशेष—अथर्वार कालका नीचमन्त्रात् काले ते प्रतिपत्तिं यी यी। अथर्वार कालात् विस्तृत है।

इसके अतिरिक्त अथर्वार में एक प्रति (वे सं २२४) तथा अथर्वार में एक एक प्रति

(वे सं १९ व २२) की है।

३ ३४. अथर्वारकालात्—पच सं १। पा १ \times २ दण्ड। अथर्वार—विश्व-नाम्न।
२ काल \times । ते काल \times । अथर्वार। वे सं ३२२। अथर्वार।

३ ३५. प्रति स १। पच सं १। ते काल \times । अथर्वार। वे सं ३२४। अथर्वार।

३ ३६. अथर्वारकालात्—अथर्वारकालात्। पच सं १२५। पा १ \times २ दण्ड। अथर्वार-
नाम्न। विश्व-नाम्न। २ काल \times । ते काल \times । अथर्वार। वे सं २१। अथर्वार।

३ ३७. प्रति स २। पच सं १०। ते काल सं १२५ नातिकपुरी १। वे सं २२५। अथर्वार।

विशेष—नीचे अथर्वार में अनेक विवेक है।

३ ३८. प्रति स ३। पच सं १२। ते काल \times । वे सं १२। अथर्वार।

विशेष—इसके अतिरिक्त अथर्वार में एक एक प्रति (वे सं १४२ व १४९) की है।

३ ३९. अथर्वारकालात्—अथर्वारकालात्। पच सं ४। पा १२२। पा १२२ \times २ दण्ड। अथर्वार-
नाम्न। विश्व-नाम्न। २ काल \times । ते काल \times । अथर्वार। वे सं २२। अथर्वार।

विशेष—अथर्वार का नाम 'अथर्वार' ही है।

३ ४०. प्रति स ५। पच सं १४। ते काल सं १२२२ नातिकपुरी १। अथर्वार। वे सं २४०। अथर्वार।

विशेष—अथर्वार में एक प्रति (वे सं १४२) की है।

३ ४१. अथर्वारकालात्—अथर्वारकालात्। पच सं १२। पा १२२। पा १२२ \times २ दण्ड। अथर्वार-
नाम्न। २ काल। ते काल सं १४२२ नातिकपुरी १। अथर्वार। वे सं २४२। अथर्वार।

पच सं १५ व १६, १७ तथा १८ में ७२ मही है। दो पच बीच के बीच है अथर्वार पच सं २४२ है।

विशेष—अथर्वार का नाम 'अथर्वार' तथा 'अथर्वार' ही है। अथर्वार पच सं १४१४ के
१५ है। अथर्वार पच सं १४१४ का नाम 'अथर्वार' तथा 'अथर्वार' ही है।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४४५ वर्षे प्रथम फागुन वदि ८ शुक्ले लिखितमिदं श्रीमदणहिलपत्तने ।

३०४२ नलोदयकाव्य—कालिदास । पत्र स० ६ । आ० १२×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वे० स० ११४३ । अ भण्डार ।

३०४३ नवरत्नकाव्य । पत्र स० २ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नों का परिचय दिया हुआ है ।

३०४४ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० ११४६ । अ भण्डार ।

३-४५ नागकुमारचरित्र—मल्लिपेण सूरि । पत्र स० २२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १५६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

संवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारणो सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये साह जिणदास तद्भार्या जमणादे त० साह सागा द्वि० सहसा वृष चु डा सा० सागा भार्या सूरहवदे द्वि० शृ गारदे तृ० सुरताणदे त० सा० आमा, धणपाल आसा भार्या हकारदे, धणपाल भार्या धारादे । द्वि० सुहागदे । सहसा भार्या स्वरूपदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा सहिपाल महिमादे । चु डा भार्या चादणदे तस्यपुत्र सा० दासा तद्भार्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषा मध्ये आसा भार्या महकारदे इदशास्त्र लि०मडलाचार्य श्री धर्मचद्राय ।

३०४६ प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १८२६ पौष सुदी ५ । वे० स० ३६५ । अ भण्डार ।

३०४७ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १८०६ चैत्र बुदी ५ । वे० स० ५० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं । १० मे १६ तथा ३२वा पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं । पन्त में निम्न प्रकार लिखा है । पाडे रामचन्द के भार्ये पघराई पोथी । संवत् १८०६ चैत्र वदी ५ मनिवासरे दिल्ली ।

३०४८ प्रति स० ४ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १५८० । वे० स० ३५३ । अ भण्डार ।

३०४९ प्रति स० ५ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १६४१ माघ बुदी ७ । वे० स० ४६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तक्षवगढ में कल्याणराज के समय में आ० भोपति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०५० प्रति स० ६ पत्र स० २१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८०७ । अ भण्डार ।

२१५६ नेमिनाथ के दशभव । पत्र स० ७ । प्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र ।

२० काल × । ले० काल स० १६१८ । वे० स० ३५४ । क भण्डार ।

२१६० नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम । पत्र स० २२ । प्रा० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष—कालिदास वृत्त भेषदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यावृत्ति है ।

२१६१ प्रति स० ७ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ३७३ । क भण्डार ।

२१६२ नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० २ मे ७८ । प्रा० १२×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल स० १५८१ पोप सुदी १ । अपूर्ण । वे० स० २१३२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

२१६३ नेमिनिर्वाण—महाकवि यागभट्ट । पत्र स० १०० । प्रा० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—नेमिनाथ का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६० । क भण्डार ।

२१६४ प्रति स० ७ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८२३ । वे० स० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार में (वे० स० ३८८) धीर है ।

२१६५ प्रति स० ३ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३८२ । ड भण्डार ।

२१६६ नेमिनिर्वाणपञ्जिका । पत्र स० ६२ । प्रा० ११½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६ । क भण्डार ।

विशेष—६२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ—धत्वा नेमिद्वर चित्ते लब्धवानस चतुष्टय ।

कुर्वेह नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पञ्जिका ॥

२१६७ नेपथ्यचरित्र—हर्षकवि । पत्र स० २ से ३० । प्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६१ । छ भण्डार ।

विशेष—पंचम सर्ग तक है । प्रति सटीक एवं प्राचीन है ।

२१६८ पद्मचरित्रसार । पत्र स० ५ । प्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पद्मपुराण का संक्षिप्त भाग है ।

२१६९ पर्युषणकल्प । पत्र स० १०० । प्रा० ११½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।

२० काल × । ले० काल स० १६६६ । अपूर्ण । वे० स० १०५ । ख भण्डार ।

विशेष—६५ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नहीं हैं । श्रुतसंघ का द्वा अध्याय है ।

प्रशस्ति—स० १६६६ वर्षे मूलताराणमध्ये सुधावक सोनू तत् वधू हग्मी तत् मुता मुलकृणी मेलपु धडाएहे

पत्र तेन एषा प्रति प० श्री राजकीर्तिगणिना विहरेऽपिता स्वपुत्राय ।

२१७० परिशिष्टपूर्व—। पत्र सं २ लेख । छा १ १/२५ द. व.। माला-वी.पु.। मि.
पत्रि.। २ माला × । नि. माला सं २५७३ । माला सं १२२ । छा माला सं १

निर्णय—११ व १२वां पक्ष नहीं है । बीरमपुर नगर में प्रतिनिधि हुई थी ।

२१०१ पञ्चनक्षत्रावयव—वाविषयसूरि । गतं १३ । या १२४२ इव । अना-अना
विषय-गण्य । २ गतं ४ । गतं १२४२ । पूर्वा । गतं ४२४ । क. अना ।

निर्णय—श्री १९४९ में राज के प्रस्ताव से आई इलीमिन के व्यवसायार्थ ललितपुर नगर के इलीमिन में

२१७२. ग्रहिल २। पव १२। नि बल \times । वे तं ४२६। क यथा।

२१७३ पायसवर्णित—आकर्मज। पत्र नं १७। पा १ ३४२३ दश। गता-विष्टेन।
विषय-वरिण। दः कर्म नं १७१। नै कर्म नं १ १७। पुर्व। वी नं १२२३। दशवार।

२१७४ पार्ष्णीनाथपरिच-वादिपञ्चसूत्रिः पृष्ठ ८ २१ : या १२४२ पृष्ठ १ गता-वर्षा।
विचित्र-वर्षर्षिनाथ पञ्च जीवना परिच । २ काला पृष्ठ ८ २१७ : नि काला ८ १२७० पञ्चसूत्रि २ । पूजा । पञ्च
जीर्वा । १० ८ २२३ । अथ पञ्चकार ।

बिन्दु—यह कहे हुये तथा योने हुये हैं । स्वयं का पुत्रपुत्र नाम बर्तन-पुत्रपुत्र भी है ।

अथान्ति विष्णु अष्टाद ॥—

२५ १२७७ वर्षे काल्पुत्र कुटी ३ श्री मुनिसर्ग वसन्तकारकले ब्रह्मवर्षीपन्थे नैधर्माने कटारक श्री पन्थी
जयतु कटारक श्री मुनिसर्गवसन्तकारकले कटारक श्री विजयनकारकवसन्तकारकले कटारक श्री विजयनकारकवसन्तकारकले कटारक श्री
ब्रह्म कर्षित तन्म बार्गी नैधर्माने तटीः पुनः कर्षितवसन्तकारकले ब्रह्म कटारक वसन्तकारकले बार्गी वसन्तकारकले पुनः वसन्तकारकले
बार्गी वसन्तकारकले तटीः पुनः ब्रह्म कटारक वसन्तकारकले बार्गी वसन्तकारकले ।

१५५ प्रथि स २। पत्रां २१। के कल X। मयूर। के १७। अ मयूर।

विशेष—२२ के आगे कम नहीं है ।

१०६ प्रति सं ६। वन सं १३। वि. वन सं १३३३ कायस्थ मुद्रा २। वि. नं २१। ५

NOTES

निष्पेक्ष—केवल अस्तित्व वाच्य वचन नहीं है ।

१००. प्रति सं ४। वच सं ३४। नि काल सं १००१ वीच मुदी २। के न २११। प

अथवा ।

३१८८. प्रति की २। नम की १२। से कम की १९२२ गणना। से की १९। नमदार।

२१-५३ प्रति स० ६। यत्न ९। नि. काल १०५३। वि. अ. १२। अ. अन्वयः।

विशेष—कृष्णमण्डो के आश्रितान्तर प्रोत्साहन से प्रतिक्रिया भी थी।

कान्य एवं चरित्रे]

२१८० पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र स० १२० । भा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल स० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १३ । अ भण्डार ।

२१८१ प्रति स० २ । पत्र स० ११० । ले० काल स० १८२३ कार्तिक वृदी १० । वे० स० ४६६ । क भण्डार ।

२१८२ प्रति स० ३ । पत्र स० १६१ । ले० काल स० १७६१ । वे० स० ७० । घ भण्डार ।

२१८३ प्रति स० ४ । पत्र स० ७५ मे १३६ । ले० काल स० १८०२ फागुण वृदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ४५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

सवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे लिखित श्रीउदयपुरनगरमध्येमुश्रावक-पुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक मा० श्री दौलतरामजी पठनार्थ ।

२१८४ प्रति स० ५ । पत्र स० ५२ से २२६ । ले० काल स० १८५४ मगसिर सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० २१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति दीवान सगही ज्ञानचन्द की थी ।

२१८५ प्रति स० ६ । पत्र स० ८६ । ले० काल स० १७८५ प्र० वैशाख सुदी ८ । वे० स० २१७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति खेमकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादाम मे लिखवायी थी ।

२१८६ प्रति स० ७ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १८५२ श्रावण सुदी ६ । वे० स० १५ । छ भण्डार ।

विशेष—प० श्याजीराम ने अपने शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई ।

२१८७ प्रति स० ८ । पत्र स० १२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२१८८ प्रति स० ९ । पत्र स० ६१ मे १४४ । ले० काल स० १७८७ । अपूर्ण । वे० स० १६४५ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० ४६६, ७०) तथा ङ भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) च तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० २०४, २१८४) भी हैं ।

२१८९ पार्श्वनाथचरित्र—रङ्गधू । पत्र स० ८ से ७६ । भा० १०½×५ इ च । भाषा—अन्य श । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१२७ । ट भण्डार ।

२१९० पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास । पत्र स० ६२ । भा० १०½×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल स० १७८६ भाषाठ सुदी ५ । ले० काल स० १८३३ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । अ भण्डार ।

२१६१ प्रति सं० २। वष ८६। ति काग १६९६। वी ४४०। व मन्त्र।
निवेद्य—दीप प्रविष्टं धीरुः।

२१३२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८२। दि० ११/११/१९६६। वा.स. १९६६।

२१६३. प्रविर्त्त ४। पञ्च ६३। नि. कञ्च ४। ६३। नि. ४२। नि. कञ्च ४।

२१६४ प्रति सं ५। पत्र सं १३८। दिनांक १९३७। वि. सं ४२१। क. नं. १।

२१६४ प्रति स. ६। पत्र सं. १२३। के. नाम सं. १। १ वीं दृष्टि १४। के. सं. ३२१। ३

२१६९ प्रति सं ७। पत्र सं ४६ से ११ । नि. पत्र सं ११२१ वाक्य गयी है। नि. सं १२।

२१६७. प्रविष्टि सं. ८। पत्र सं. १। दि. पत्र सं. १२। दि. ६। १४। स. १९९१।

२१६८. मणि क. ६। पत्र सं. १४। ति. बंगल सं. १८३३ कात्थन मही १४। व. सं. १। म.

विशेष—मन्त्रपुर में प्रतिष्ठित हैं। सं १५२ में कुलकर्ण्य बीमा में प्रतिष्ठित की।

२१६६. प्रवि स १ । पत्र ब ४६ पे १२४ । नि पत्र ब १० प ३३ वर्त । पे ४ । १४ ।

२२ अति ८ ११। पत्र सं ११। के नाल सं १ २६ आयाङ्क नरी १२। के सं २५। म

विशेष—प्रोद्धान्त संघी योजना के अंगियों के अन्तर्गत में १९४ खासकर लक्ष्य ४ को ध्यान में

इसके प्रतिष्ठित च नम्बर के तीन श्रवण (के सं ४४३, ४५५, ४४७) श्रवण च नम्बर के

४ (६ व ३९ ७१) का सम्भार में सीधे प्रविष्टि (६ व ४४, ४४९, ४४५) का सम्भार में ३

सं ११ १११ १११ १११ १११) का आधार में एक तथा का आधार में ३ (३) में १११, ६

द्वन्द्वार मे वो प्रविर्वा (मे र्वा १९१९, २ जड) घोर है।

४३ १ प्रबन्धपरिचय—य गद्यासेवाचार्य । १९४६ २ । भा १ ३०३ पृष्ठ । प्रकाश-विवर ।

५।१. कल × । ने कल × । पुरी । ने थं २३६ । न मथार ।

२. यदि x व y का गुणोत्तर $1:2$ है तो x^2 व y^2 का गुणोत्तर क्या होगा?

२०१३-१४

३२ ॥ अथि ह्ये ३ ॥ निमि क ११ ॥ नो म्मा क १२२२ न्या युवा ४ ॥ व ह ॥ मि । न

०-१६—संख्या १४७१ सर्वे क्षेत्र की कार्यवाही में प्रकाशरी विधिवीये मतदाताओं की संख्या

२. व्यावसायिक कीर्तिपत्र व्यावसायिक म जीवचरित्रविभागाध्यक्ष म कीर्तिपत्र व्यावसायिक म जीवचरित्र

[illegible]

देवास्तत्पट्टे म० श्री प्रभावन्ददेवास्तद्धिष्य महलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये रामसरनगरे श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये खडेल-
वालाचये काटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्रभार्या हरपसू । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्री द्वौ प्रथम साह दामा
द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गंगो तयो पुत्र सा० चोदिय तद्भार्या होरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयो
पुत्र सा० खरहय एतेषा मध्ये जिनपूजापुरद्वरेण सा० खेलाख्येन इद श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाप्य ज्ञानावरणीकर्म क्षयार्थ
निमित्त सत्पात्रायम श्री धर्म इन्द्राय प्रदत्त ।

२२०४ प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सोमकीर्त्ति । पत्र स० १६५ । मा० १२×५३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २० काल स० १५३० । ले० काल स० १७२१ । पूर्ण । वे० स० १५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना सवत् 'क' प्रति मे से है । सवत् १७२१ वर्षे आसीज बदि ७ शुभ दिने लिखित प्रायः
(ग्रामेर) मध्ये लिखारि प्राचार्य श्री महोचद्रकीर्त्तिजी । लिखित जोसि श्रीधर ॥

२२०५ प्रति स० २ । पत्र स० २५५ । ले० काल स० १८८५ मगसिर सुदी ५ । वे० स० ११३ । छ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

भंडारक रत्नभूषण की काम्नाय मे कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोदय-
ऐलिचपुर भाकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई ।

२२०६ प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७ प्रति स० ४ । पत्र स० २२४ । ले० काल स० १८०२ । वे० स० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हासी (भासी) वाले भैया श्री डमरू भगवाल आवक ने ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ प्रतिलिपि
करवाई थी । ५० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र की सम्पत्ति की गई ।

२२०८ प्रति स० ५ । पत्र स० ११६ से १६५ । ले० काल स० १८६६ सावन सुदी १२ । वे० स०
७०७ । छ भण्डार ।

विशेष—लिखित पंडित सगहोजी का मन्दिर वा महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पंडित
गोदंनदामेन आत्मार्थ ।

२२०९ प्रति स० ६ । पत्र स० २२१ । ले० काल स० १८३३ श्रावण सुदी ३ । वे० स० १६ । छ
भण्डार ।

विशेष—पंडित सवाईराम ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी । ये मा० रत्नकीर्त्तिजी के शिष्य थे ।

२२१० प्रति स० ७ । पत्र स० २०२ । ले० काल स० १८१६ मार्गशीर्ष सुदी १० । वे० स० ११५
छ भण्डार ।

विशेष—बलतराम ने स्वपठार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०११ प्रति स० प। पत्र तं २०४। ते पत्रात् १५४ मासवापुरी ८। ते तं १०४। पत्रात्।

विशेष—समस्तसंख्येयों का विचार है प्रतिनिधि व्यवस्था की।

इसके प्रतिरूप का अन्वय है तीन प्रतियां (के सं ४६६ ६४० २ ६ तथा का अन्वय में एक प्रति (के सं २) की है ।

०३१३. प्रयुक्तपरिचय - १५० रं २ । या ११५२ रं ५ । ज्ञान-संयुक्त । विषय-परिचय ।
१. काल × १५ । ज्ञान × १५ । पूर्ण १५ रं ११५ । या ज्ञान १५ ।

८८३ मनुष्यचरित्र-सिंहचरित्र। पृष्ठ ४ के २६। पा १ ॥ ४४॥ ई। मया-मयाव।
मिव-मरि। १। मल ×। १। मल ×। मरुर्न। १। ४। ४। मयाव।

२२१४ मनुष्यचित्रवाचा—महाकाव्य । पृष्ठ २१। का १३×२ इंच। माला-दोरी (बग)।
विषय—वाचि । १ कण्ठ १११५ ज्येष्ठ कुटी २। २। वे काव ११३० वीरवाच कुटी ४। पूर्ण। वे ११४।
३३ मलार ।

२२१५. अति स. य. प. लं. ३९२। शि. गजल. लं. १८९६ बंधनित गुटी २। क. लं. २. ६। क.
बन्धार ।

੨੩੧੬ ਅਧਿਕਾਰੀ ੩। ਅਕਾਲੀ ੧੫੦। ਸਿ. ਭਾਲਾ X। ਸਿ. ਭ. ੬੬੫। ਅ. ਅਧਿਆਪਕ।

विशेष—रश्मि का पूर्ण परिणत बिम्ब होता है।

३२१०. अयुक्तपरिभाषा—। वन नं १०१। भा ११२×०२ दल। भाषा—हिन्दी वन। विषय—
परिण १२ वन ×। से काल नं १८११। पूर्ण। से नं ४९। अ. नंभा ८।

२१६. मीतिप्रकरणम्—अ प्रमाणम् । वष २१ । या १९२३ ई० । अन्तः-संज्ञा ।
 विषय-वर्णन । ५ काल × ३ काल तं १ २० संज्ञित इति । पूर्ण के १२३ । अन्तः-संज्ञा ।

२०१३, प्रसिद्धि २। नवम्बर २३ से मार्च २४। के. वी. २३। ५ नवम्बर।

४२२ प्रति सं ३। वष सं १४। ले पत्र X। तारीख दि सं ११६। अ मन्दा।

निर्देश—२२ के ३१ वन बाटे हैं। अति आशीर्वाद है। श्री लीन सराव भी मिलि है।

१९३२ प्रतिमां ४।५५८ ५।६०५ ६।७५५ ७।९०५ ८।१०५ ९।१५५ १०।२०५ ११।२५५ १२।३०५ १३।३५५ १४।४०५ १५।४५५ १६।५०५ १७।५५५ १८।६०५ १९।६५५ २०।७०५ २१।७५५ २२।८०५ २३।८५५ २४।९०५ २५।९५५ २६।१०५ २७।१५५ २८।२०५ २९।२५५ ३०।३०५ ३१।३५५ ३२।४०५ ३३।४५५ ३४।५०५ ३५।५५५ ३६।६०५ ३७।६५५ ३८।७०५ ३९।७५५ ४०।८०५ ४१।८५५ ४२।९०५ ४३।९५५ ४४।१०५ ४५।१५५ ४६।२०५ ४७।२५५ ४८।३०५ ४९।३५५ ५०।४०५ ५१।४५५ ५२।५०५ ५३।५५५ ५४।६०५ ५५।६५५ ५६।७०५ ५७।७५५ ५८।८०५ ५९।८५५ ६०।९०५ ६१।९५५ ६२।१०५ ६३।१५५ ६४।२०५ ६५।२५५ ६६।३०५ ६७।३५५ ६८।४०५ ६९।४५५ ७०।५०५ ७१।५५५ ७२।६०५ ७३।६५५ ७४।७०५ ७५।७५५ ७६।८०५ ७७।८५५ ७८।९०५ ७९।९५५ ८०।१०५ ८१।१५५ ८२।२०५ ८३।२५५ ८४।३०५ ८५।३५५ ८६।४०५ ८७।४५५ ८८।५०५ ८९।५५५ ९०।६०५ ९१।६५५ ९२।७०५ ९३।७५५ ९४।८०५ ९५।८५५ ९६।९०५ ९७।९५५ ९८।१०५ ९९।१५५ १००।२०५

३६. २. प्रश्न क्र. ४। पृष्ठ क्र. २५। वि. मास क्र. १९७६ म. आश्विन शुद्ध १। वि. क्र. १२३।

REFERENCES

२२३३ प्रतिष्ठ ६। वन १४। नै कान १ २२ पापछ गुरी ७। नै १ २१। न

निर्देश—(1) बीजकाल के दिनांक (2) उपजनकबी के अक्षरों में प्रतिनिधि बी बी :

इसकी दो प्रतियाँ न्य नम्बराट में (पृ. सं. १५, १६) जीर हैं ।

२०२४ प्रीतिकरचरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र स० १० । मा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल स० १७२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८२ । अ मण्डार ।

२२२४ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० १५६ । छ मण्डार ।

२०२६ प्रति स० ३ । पत्र स० २ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३६ । छ मण्डार ।

२२०७ भद्रबाहुचरित्र—रत्ननन्दि । पत्र स० २२ । मा० १२×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० स० १२८ । अ मण्डार ।

२२०८ प्रति स० २ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । वे० स० ५५१ । क मण्डार ।

२२०६ प्रति स० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १६७४ पौष सुदी ८ । वे० स० १३० । ख मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है ।

२२३- प्रति स० ४ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १७८६ वैशाख वृदी ६ । वे० स० ५५८ । च मण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) विशनगढ वालों ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२०३१ प्रति स० ५ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८१६ । वे० स० ३७ । छ मण्डार ।

विशेष—वल्लतराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३२ प्रति स० ६ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १७६३ भासोज सुदी १० । वे० स० ५१७ । ज मण्डार ।

विशेष—क्षेमकीर्ति ने बीली ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२२३३ प्रति स० ७ । पत्र स० ३ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१३३ । ट मण्डार ।

२२३४ भद्रबाहुचरित्र—नवलकवि । पत्र स० ४८ । मा० १२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वे० स० ५५६ । छ मण्डार ।

२२३५ भद्रबाहुचरित्र—चपाराम । पत्र स० ३८ । मा० १२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल स० श्रावण सुदी १५ । ले० काल × । वे० स० १६५ । छ मण्डार ।

२२३६ भद्रबाहुचरित्र । पत्र स० २७ । मा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८५ । अ मण्डार ।

२२३७ प्रति स० २ । पत्र स० २८ । मा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५ । छ मण्डार ।

२२३८ भरतेशवैभव । पत्र स० ५ । मा० ११×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४६ । छ मण्डार ।

२३३६. मणिज्जहासपरिच—पं श्रीधर । पृष्ठ १ । या २५×४३ इंच । भाग-३/४ इंच ।

विषय-वरिष्ठ । रं बाल X । के बाल X । पूर्ण । के धं १२ । अन्वयः ।

विशेष—ग्रन्थिष्वपि च कृता इत्यादि । संसृष्टं च चक्षिण्यं टिप्पण्यं भी विद्या इत्यादि ।

२०५ प्रक्रि.सं. २।पच.सं. १४।ने.नाम.सं. १६१४ भाव.सूची.सं. १।ने.सं. १४१।क

उत्तराखण्ड ।

निवेदन—हमारे को प्रतिनिधि एकत्रित हो चुके हैं। मेरा कहना है कि हमारा प्रतिनिध पत्र नहीं है।

२२५१ प्रति ५३। पत्र सं १२। दि. काग सं १७२४ बीकानेर जूरी ६। दि. सं १२१। व

संख्या ।

विशेष—मेडटा भिवासी नाम्नी ईनर सीबलकी के बल के से वा पाइबल की भर्मा रहलसे के छवि-
र भंडनाबारी धोइरुके के छिज करकल की कर्बलबारी भिवासी दिवा ।

७७५७ प्रसिद्ध ५। पत्र सं ७। दि. ७/१२/१९९३ बैठक सं ७। दि. ७। ७७५७

[illegible]

विशेष—अत्रोपर बह वषले लिखि अर्जुनपुत्र जोभी सुरदास ।

इसकी ओर निम्न प्रयत्नित है ।

हरद्वार मध्ये राजा भी राजचक्राव राजा खोलेनराजराज राजा देव बापू देवराजे ने राजा की प्रतिनिधि

६२४३ प्रसिद्धि ३। १५ व १६। नै. गण्यते १५७० बालीय मूली ७। पूर्वा। ३ व ४२२।

३३ वर्षीय ।

दिनेश—मैराड व मोरारजीराव ।

३२५४ प्रति सं० ६। वम सं ६। मे गुल्ल X। मे सं २६१। ल बन्धार।

२२४५. प्रति सं ७। वष सं २। ले नाल ×। ले सं २१। पत्र सं। ल मथार।

निवेदन—बहुतेक बड़ी नालियाँ जलाने के काम लिये गयी हैं तथा जलाने के १५५ पत्र बहोत लिये गये हैं ।

३२४६ अमि सं ८। पत्र सं १३। दि वारा सं १९०० मासाद मारी ३। दि सं ४७। म

अध्यायः ।

विशेष—आपू लक्ष्मण के लिए रचना की गई थी ।

२२४० प्रति सं० ६। वर्ष सं १०। दि वार सं १९९० वासोय मुदी ६। दि सं १९४८। ६

अध्याय १

टिप्पणी—कावेर में महाराजा जलमिह के आलमखान में प्रतिमिति हुई थी। उससे कावेर का अभिनव बन

०३४५. मरिचकान्तपट्टिप्रमाणा—वज्रालोक चौधरी । १४४ पृ १ । भा ११२×४३ १५।

मार्ग-द्विती (पक्ष) । निष्कर्ष-परिणाम । ८ मार्ग से १९२१ । ९ मार्ग से १९२२ । पूर्ण । से २५४ । क
प्रमाण ।

काव्य एव चरित्र]

२२४६ प्रति स० २ । पत्र स० १३५ । ले० काल X । वे० स० ५५५ । क मण्डार ।

२२४७ प्रति स० ३ । पत्र स० १३८ । ले० काल स० १६४० । वे० स० ५५६ । क मण्डार ।

२२४१ भोज प्रबन्ध—पठितप्रवर वल्लाल । पत्र स० २६ । ग्रा० १२३ X ५ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ५७७ । क मण्डार ।

२२४२ प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १७११ आसोज बुदी ६ । वे० स० ४६ । अपूर्ण ।

क मण्डार ।

२२४३ भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र स० ४३ । ग्रा० १० X ५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

चरित्र । २० काल X । ले० काल स० १८४६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ५६४ । क मण्डार ।

२२४४ मंगलकलशमङ्गलमुनिचतुष्पदी—रगविनयगणि । पत्र स० २ से २४ । ग्रा० १० X ४ इच ।

भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) विषय—चरित्र । २० काल स० १७१४ श्रावण सुदी ११ । ले० काल स० १७१७ । अपूर्ण ।

वे० म० ८४४ । क मण्डार ।

विशेष—चीतोढा ग्राम में श्री रगविनयगणि के शिष्य दयामेर मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

राग धन्यासिरी—

एह बा मुनिवर निसदिन गाईयइ, मन सुधि ध्यान लगाइ ।

पुण्य पुरुषणा गुण धुणता छता पातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥

शातिचरित्र धकी ए चउपई कीषी निज मति सारि ।

मंगलकलसमुनि सतरगा कहा गुण आतम हितकारि ॥२॥ ए० ॥

गद्य अरतर युग अर गुण आगलउ श्री जिराज सुरिद ।

तसु पट्टधारी सुरि शिरोमणी श्री जिनरग मुणिद ॥३॥ ए० ॥

तासु सोस मंगल मुनि रायनउ चरित कहैउ स सनेह ।

रगविनय वाचक मनरग सु, जिन पूजा फल एह ॥४॥ ए० ॥

नगर अमरपुर अति रलिआमणउ जहां जिन गृहचउसात ।

मोहन मूरति वीर जिएदनी सेवक अन सु रसात ॥५॥ ए० ॥

जिन अमइबलि सोवत धणी जूणा देवल ठाम ।

जिहा देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ बछित काम ॥७॥ ए० ॥

निरमल नीर भरयउ सोहई यणु ऊफ महेश्वर नाम ।

आप विधाता जगि अवतरी कीषउ की मति काम ॥८॥ ए० ॥

जिहा किरण आवक सगुण शिरोमणी धरम भरम नेउ जाण ।

श्री नारायणदास सराहियइ मानइ जिएवर आण ॥९॥ ए० ॥

— मासु छणह मासह ए चउडई-ह्रीणी भव ज्ञात ।
 यमिचउ कृष्ण के हृष्टा भाविचउ पिशा मुक्कउ ताव ॥१॥ ॥ ५ ॥
 घासाउ मासक बीर प्रताप नी चउडी चउरी प्रमत्त ।
 अलिमई मुलिमई के वर भावमु भादई वासु बन्धन ॥११॥ ॥ ५ ॥
 ए संवत् करक रस पुणु मरवउ भयन भेति धनुषारि ।
 भरवी पेशु पुषु बीरके भेन रली ऐवभिम्य मुंकावर ॥१६॥ ॥ ५ ॥
 एह वा मुनिवर निशि दिन पाईवह सर्व भावा हूहा ॥ २३२ ॥

इति श्री संक्षुप्तसंहारमुनिचउपदी संतुतिमन्त्रम् विनिष्ठा श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री घासीन कुं
 विजय वलवी वालदे श्री बीरलोका महाराजे पवि श्री वलमर्षिहोत्रे विजयपुत्र्ये वाचमातर्षे श्री रंभनिकर्षि विज
 यविष्य वरादेव मुनि धर्मप्रेमसे कृतं मन्त्र । कल्याणवस्तु मैत्रक पाठक्यो ॥

२०७८ महीपाकपरिच—वारिचमूषण । वष सं ४१ । वा १११५२५ दश । भाता-बीरव ।
 विषय-वरिच । १ । वल सं १७११ भावसु मुदी ११ (क) । मे वल सं ११ कलसु मुदी १४ । पूर्ण । वे
 सं ११३ । क मन्त्र ।

विमेल—यिष्टीमाल बीरवी के प्रतिमिति वरवार् ।

२२०६ प्रति सं ५ । वष सं ४६ । मे वल ५ । वे सं १११५ क मन्त्र ।

२ ४७ प्रति सं ६ । वष सं ४९ । मे वल सं ११२५ कलसु मुदी १२ । वे सं २७१ । क
 मन्त्र ।

विमेल—पेरुपक बीर के प्रतिमिति की बी ।

२८४८ प्रति सं ४ । वष सं १२ । मे वल ५ । वे सं ४५५ क मन्त्र ।

२२४३ प्रति सं ४ । वष सं ४२ । मे वल ५ । वे सं १५० । क मन्त्र ।

२०६ महीपाकपरिच—मं रजनमि । वष सं ३४ । वा १२५२३ दश । भाता-बीरव ।
 विषय-वरिच । १ । वल ५ । मे वल सं १५१६ भावसु मुदी १ । पूर्ण । वे सं १७४ । क मन्त्र ।

२०६१ महीपाकपरिचवाच—मन्त्रमाल । वष सं १९ । वा ११५२ दश । भाता-द्विती वष ।
 विषय-वरिच । वल सं १११ । मे वल सं ११११ भावसु मुदी ३ । वे सं ३७२ । क मन्त्र ।

विमेल—मुनवर्षा वरिच मुन ।

२८६० प्रति सं ५ । वष सं १ । मे वल सं १११२ । वे सं २१२ । क मन्त्र ।

द्वितीय—आम्य के १२ वर्षे वष निमि हूवे हैं ।

अदि वरिच—वर्षमा मनुष्य कालवीर्य के विषय में । हरे विजय वर वाच मुनीक्य वरा लि ।

वा वल विषयक वा ।

काव्य एवं चरित्र - १

२२६३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२६ धावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ ।
चमण्डार ।

२२६४ मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । भा० १२×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । क मण्डार ।

२२६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

२२६७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । ट
मण्डार ।

२२६८ मेघदूतटीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । भा० १०३×४ इच्छ । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १५७१ भाद्रपद सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । व्य मण्डार ।

२२६९ यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । भा० १२३×६ इच्छ । भाषा—संस्कृत
गद्य पद्य । विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन । २० काल शक सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०
८५१ । अ मण्डार ।

विशेष—कई प्रतियों का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

२२७० प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । अ मण्डार ।

२२७१ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । अ
मण्डार ।

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिनदास करमी के पुत्र थे ।

२२७२ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क मण्डार ।

२२७३ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मर्गसिर सुदी ६ । वे० सं० ३५१ । व्य
मण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति प्राचीन हैं । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं ।

प्रभावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगत्कीर्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट
मण्डार ।

२२७५ यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । भा० १२×६ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ भाद्रपद सुदी ३० । पूर्ण । वे० सं० १३७१ । अ मण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता सोमदेव सूरि ।

— प्रभु धरुह धारुह ए चरुह—हीमी मन कलाल ।

धर्मिक पुत्र के हर्ष बाधियत मित्रा कुपक लाह ॥१॥ ए ॥

धाला नमक नीर ज्वाल नी चरुही चरुही प्रगल्ल ।

भरिप्यारं पुष्टिबर्ह के गर भावसु बांद्यारं लासु वस्त्रा ॥११॥ ए ॥

ए संभव सरस रस कुसु भरनन भाव्य भेति धनुसारि ।

बरवी केण कुसु रंभिले मन रनी रंभिवन कुंजवार ॥१२॥ ए ॥

एह वा मुनिवर भित्ति भिन्न भाईबह कर्ब बावा कुहा ॥ ११३ ॥

इति श्री बंजराचरित्राध्यायनिचरपट्टी चरुहीनमःपद् विविधा श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री प्रताप कुटी निवस बरवी चरुही श्री चोटीका बरुमाने पावि श्री वल्लभचरुही निवसपत्नी वरुमानार्थ श्री रंभिवनसि विन वरुमाने मुनि धारुहके कुंज वस्तु । कवचकपत्नी केवक पाठको ॥

७ १४ महीपारुचरित्र—भारिचमुपस । वरुह १४ । वा १११२३ इह । भावा—संवत् ।

निवस—वरुह । १ वल्लभ १७१६ वल्लभ मुनी १२ (क) । श्री काव्य ११ ११ वल्लभ मुनी १४ । पूर्ण । श्री ११३ । क वल्लभ ।

विशेष—महीपारुचरित्र के प्रतिनिधि कवच ।

१२२६ प्रति सं २ । वरुह १४ । श्री काव्य ११ । श्री १११२३ क वल्लभ ।

२ १४ । प्रति सं ३ । वरुह १४ । श्री वल्लभ १११२३ वल्लभ मुनी १२ । श्री १११ । क वल्लभ ।

क वल्लभ ।

विशेष—महीपारुचरित्र के प्रतिनिधि श्री वी ।

१ १४ । प्रति सं ४ । वरुह १४ । श्री काव्य ११ । श्री १११२३ क वल्लभ ।

१२२६ । प्रति सं ५ । वरुह १४ । श्री काव्य ११ । श्री १११२३ क वल्लभ ।

१२६ महीपारुचरित्र—महीपारुचरित्र । वरुह १४ । वा १११२३ इह । भावा—संवत् ।

निवस—वरुह । १ वल्लभ १११६ वल्लभ मुनी १२ । पूर्ण । श्री ११३ । क वल्लभ ।

१२६६ महीपारुचरित्राध्याय—नवमस । वरुह १४ । वा १११२३ इह । भावा—महीपारुचरित्र ।

निवस—वरुह । १ वल्लभ १११६ । श्री वल्लभ १११६ वल्लभ मुनी १२ । श्री ११३ । क वल्लभ ।

विशेष—महीपारुचरित्र के प्रतिनिधि वल्लभ ।

१२६७ प्रति सं ६ । वरुह १४ । श्री काव्य ११ । श्री १११२३ क वल्लभ ।

विशेष—महीपारुचरित्र के प्रतिनिधि वरुह ।

अदि चरित्राध्याय—नवमस वल्लभ वल्लभ वल्लभ के विन । १ वल्लभ वल्लभ वा वल्लभ मुनीपारुचरित्र । वा वल्लभ वल्लभ वा ।

२०८७ प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल X । वे० स० ५६६ । क भण्डार ।

२०८८ प्रति स० २ । पत्र स० २ से ३७ । ले० काल स० १७६५ वातिक सुदी १३ । अपूर्णा । वे०

स० २८४ । च भण्डार ।

२०८९ प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८६२ आसोज सुदी ६ । वे० स० २८५ । च

भण्डार ।

विशेष—प० नोनिपराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०९० प्रति स० ४ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १८५५ आसोज सुदी ११ । वे० स० २२ । छ

भण्डार ।

२०९१ प्रति स० ५ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० स० २३ । च

भण्डार ।

२०९२ प्रति स० ६ । पत्र स० ३५ । ले० काल X । वे० स० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२०९३ प्रति स० ७ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १७७५ चैत्र बुदी ६ । वे० स० २५ । छ

भण्डार ।

विशेष—प्रदास्ति—सबत्तर १७७५ वर्षे मिती चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-तिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तस्य भ्राताविधायि आचार्य श्री दोमकीर्ति । प० चोखचन्द ने बसई ग्राम में प्रतिलिपि की थी—
मन्त में यह शीर लिखा है—

सबत् १३५२ घेली भोले प्रतिष्ठा कराई लाढणा मे तदित्यो ल्होडसाजण उपजो ।

२०९४ प्रति स० ८ । पत्र स० २ से ३८ । ले० काल स० १७८० माघाढ बुदी २ । अपूर्णा । वे० स० २६ । ज भण्डार ।

२०९५ प्रति स० ९ । पत्र स० ५५ । ले० काल X । वे० स० ११४ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । ३७ चित्र हैं, युगलकालीन प्रभाव है । प० गोवर्द्धनजी के दिव्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति दर्शनीय है ।

२०९६ प्रति स० १० । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १७६२ ज्येष्ठ सुदी १४ । अपूर्णा । वे० स० २६ । ज भण्डार ।

विशेष—आचार्य शुभचन्द्र ने टोंक में प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६०४) क भण्डार में दो प्रतिया (वे० स० ५६६, ५६७) भी हैं ।

२०९७ यशोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनाभ । पत्र स० ७० । भा० ११×४६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विर्णय—चरित्र । १० काल X । ले० काल स० १८३२ पौष बुदी १२ । वे० स० ५६२ । क भण्डार ।

काव्य एवं चरित्र]

२२८७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल X । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

२२८८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७६५ कात्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे०

सं० २८४ । च भण्डार ।

२२८९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ भासोज सुदी ६ । वे० सं० २८५ । च

भण्डार ।

विशेष—पं० नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२२९० प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ भासोज सुदी ११ । वे० सं० २२ । छ

भण्डार ।

२२९१ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० सं० २३ । च

भण्डार ।

२२९२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२९३ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० २५ । छ

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत्सर १७७५ वर्षे मिति चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तस्य भाषाविधायि आचार्य श्री क्षेमकीर्ति । पं० श्रीखचन्द ने बसई ग्राम में प्रतिलिपि की थी—ग्रन्थ में यह और लिखा है—

सर्व १३५२ येली मोसे प्रतिष्ठा कराई लाठणा में तदिस्यो ल्होठमाजण उपजो ।

२२९४ प्रति सं० ८ । पत्र सं० २ से ३८ । ले० काल सं० १७८० भाषाठ बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

२२९५ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० सं० ११४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सवित्र है । ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति दर्शनीय है ।

२२९६ प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७६२ जेष्ठ सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ४६३ । ज भण्डार ।

विशेष—आचार्य शुभचन्द्र ने टोंक में प्रतिलिपि की थी ।

ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०४) क भण्डार में दो प्रतिया (वे० सं० ५६६, ५६७) और हैं ।

२२९७ यशोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनाभ । पत्र सं० ७० । भा० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विशेष—चरित्र । ८० काल X । ले० काल सं० १८३२ पौष बुदी १२ । वे० सं० ५६२ । क भण्डार ।

२०६८ प्रति सं २ । प्रति सं ६ । नै जल सं १५६५ जल सं १५ । नै सं १५५ । नै
जल सं १५५ ।

विशेष—इस प्रश्न पीनसिटी के धार्मिक बुद्धमूर्ति की विप्या धारिता सुविधों के लिए स्वतन्त्र है।
 सिद्धांता तथा वैज्ञानिक सूरी १ व २ को संवत्सार्य की धर्मावर्तिविधि के लिए वातावरण में समर्थ विधि।

२२३३. प्रति सं ३ । पत्र सं २४ । ति १७७४ । दि १५ । ज गण्डार ।

निर्देश—कृति यकीन है ।

७३ ० प्रति सं ५। पत्र सं २। दिनांक १९९७। के सं ५६। क मन्त्रालय।

टिप्पणी—आजकल काकापारा के पासकापारा में पाथर में प्रतिष्ठित है।

०३। प्रतिस ५। पत्र सं २३। मे ज्ञान सं १७६९ पीप सुदी १३। मे सं २१। व
द्वारा ।

निवेदन—सबसे कमतर में एवं बलवत्तराज ने कैपिटल पर पैसा लगाने में प्रतिबन्धि रही थी ।

१३३ प्रसिद्ध ६।१२.१९६१ ई. मन्त्रालय अधिसूचना क्र. १३३, ए. ए. ए.

विशेष—डोहरकवची के पत्रार्थ पाठ्य वीरकवचाल में प्रतिनिधि कराई थी। महामुनि कुलदीपति के वरद्वेष्ट के कवचधार ने कवच की रचना की थी।

२३. १. **अयोध्याचरितम्**—**बासिराजसुरिः**। क. घं ९ से १९। या ११५२ इति। **जाना-तंसाव**।

विषय-परिच । ८ पृष्ठ × १ मे पृष्ठ ११२ । मूल्य : १० रु० ।

३३ ४ प्रतिमा २। यमर्च १२। ले काल ६। २४। ले र्च १३। क प्रयाग।

२३ ४. प्रतिष्ठा ३। जल अं ५ से १५। नि जल अं १५१। अमृतं। नि अं २३। य

WATKINS

विशेष—नैकान्त ब्रह्मसिद्ध धर्म है ।

२३.६ प्रतिशत ५।७४ वं १२।९० काग × । के वं २१३ : ८ जपवाट ।

विशेष—अन्तर्गत पत्र बहीन विष्टा गया है ।

२३. अ. अशोषणप्रति-प्राप्तेः। यम सं १६ ११। या १०४३ इति। प्राप्ति-प्राप्ति।

विषय-परिचय । ए कल \times । नि कल \times । मपूर्त । जीर्ण । ऐ ह ऐभर । न मभार ।

१०५. कात्रोपरचरित्र—वासवसेन । पृष्ठ ४१ । भा० १२४५ दृष्ट । (यत्ना-संस्कृत) विपक्ष-

परिचय :- काला रंग १५५५ भाग सुदी १५० पुर्ला १५० रंग १५५५ भाग सुदी १५०

सिद्धि—साधिका—

[illegible]

नद्याम्नाये श्रीकुन्दकुदाचार्यान्वये भट्टाराः श्रीपद्मनदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिष्णुचन्द्रदेवास्त-
त्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खड्गलवालान्वये दोगीगोधे-सा तिहुगा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रय प्रथम सा.
ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा ऊन्हा ईसरभार्या भ्रजपिणी तथा पुत्रा चत्वार प्र० सा० लोहट द्वितीय सा भूणा तृतीय
सा ऊधर चतुर्थ सा देवा सा लोहट भार्या ललितान् तयो पुत्रा पञ्च प्रथम धर्मदास द्वितीय सा धीरा तृतीय लूणा
चतुर्थ हाला पंचम राजा सा भूणा भार्या भ्रजमिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधमिरी तयो पुत्रो द्वौ प्रथम
लाला द्वितीय खरहय-सा० देवा भार्या शोमिरि तयो पुत्र धनिउ बि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरजो धीरा भार्या रमायी
सा टोहा भार्ये द्वे बृहद्दोला लघ्वी मुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य नीलवान सा नान्हा तद्भार्या नयणा नी सा० ऊन्हा भार्या
शाली तयो पुत्र सा डालू तद्भार्या डलसिरि एतेषामध्ये चतुर्विधदान वितरणाशक्तेनप्रिपचाशतश्रावकसत्क्रिया प्रति-
पालण सावधानेन जिष्णुपूजापुरदरेण सद्गुरुपदेश निर्वाहवेन सधपति साह श्री टोहानामधेयेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तम-
पात्राय घटापित ज्ञानावर्णो कर्मक्षय निमित्त ।

२३०६ प्रति म० २ । पत्र स० ४ से ५४ । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० २०७३ । अ भण्डार ।

२३१० प्रति स० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल म० १६६० वैशाख सुदी १३ । वे० स० ५६३ । क
भण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिनिधि की थी ।

२३११ यशोधरचरित्र । पत्र म० १७ से ४५ । मा० ११×४^३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० १६६१ । अ भण्डार ।

२३१२ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० ६१३ । अ भण्डार ।

२३१३ यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र स० ४३ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य ।
विषय-चरित्र । २० काल स० १५८१ भाद्रपद सुदी १२ । ले० काल स० १६३० मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वे० स०
५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है ।

२३१४ यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचंद । पत्र स० ३७ । मा० १२×५^३ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य ।
विषय-चरित्र । २० काल स० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल स० १७६६ भासोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स०
१०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रवास्ति-

मिती भासोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासर स० १७६६ छिनवा । श्रे० कुशलोजी तत्
द्विष्येन लिपिकृत पं० खुशालचंद श्री घृतधिसोलजी के देहुरे पूर्ण कर्त्तव्य ।

दिवालो जिनराज की देखस दिवालो जाय ।

निसि दिवालो बलाइये कर्म दिवाली थाय ॥

श्री रस्तु । कल्याणमस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।

२०६८. प्रति छ ३। प्रति छ २। के काग छ १३२३ काग मुदी १३। के छ १३२। अ
बन्धार।

विशेष—यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।
विशेष—यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।

२०६९. प्रति छ ३। पत्र छ २४। के काग ५। के छ ५४। अ बन्धार।

विशेष—यह एक पीपलिटरी है।

२०७०. प्रति छ ३। पत्र छ २। के काग छ १३२३। के छ १३। अ बन्धार।

विशेष—यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।

२०७१. प्रति छ ३। पत्र छ २३। के काग छ १३२३ पीपलिटरी १३। के छ २३। अ
बन्धार।

विशेष—यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।

२०७२. प्रति छ ३। पत्र छ २३। के काग छ १३२३ पीपलिटरी १३। के छ २३। अ बन्धार।

विशेष—यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।
यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।

२०७३. कागधरपरिच—वाहिराजपुरी के पत्र छ २ के १३। या १३५३ दण्ड। याता-बंदन।
विशेष—यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।

२०७४. प्रति छ ३। पत्र छ २३। के काग १३२३। के छ २३३। अ बन्धार।

२०७५. प्रति छ ३। पत्र छ २ के १३। के काग छ १३२३। पत्र छ २। के
बन्धार।

विशेष—यह एक पीपलिटरी है।

२०७६. प्रति छ ३। पत्र छ २३। के काग ५। के छ २३३। अ बन्धार।

विशेष—यह एक पीपलिटरी है।

२०७७. कागधरपरिच—पूरुषोत्तम। पत्र छ ३ के २। या १३५३ दण्ड। याता-बंदन।
विशेष—यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।

२०७८. कागधरपरिच—वाहिराजपुरी के पत्र छ ३ के १३। या १३५३ दण्ड। याता-बंदन।
विशेष—यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।

विशेष—यह एक पीपलिटरी है।

यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।
यह एक पीपलिटरी के आचार्य भुवनेश्वर की विष्णु दर्शन का प्रतिभा के लिए बनाया गया है।

विशेष—पुण्यदत्त कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। बादशाह बाबर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३०४ रघुवशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र स० १४४। भा० १२३×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ६५४। अ मण्डार।

विशेष—पत्र स० ८२ से १०५ तक नहीं है। पचम सर्ग तक कठिन शब्दों के अर्थ संस्कृत में दिये हुये हैं।

२३२५ प्रति स० २। पत्र स० ७०। ले० काल स० १८२४ कात्ती बुदी ३। वे० स० ६४३। अ मण्डार।

विशेष—कडी ग्राम में पाड्या देवराम के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३०६ प्रति स० ३। पत्र स० १२६। ले० काल स० १८४४। वे० स० २०६६। अ मण्डार।

२३०७ प्रति स० ४। पत्र स० १११। ले० काल स० १६८० भादवा सुदी ८। वे० स० १५४। ख मण्डार।

२३२८ प्रति स० ५। पत्र स० १३२। ले० काल स० १७८६ मगसर सुदी ११। वे० स० १५५। ख मण्डार।

विशेष—हाथिये पर चारो ओर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति मारोठ में ५० अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराम ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३०६ प्रति स० ६। पत्र स० ६६ से १३४। ले० काल स० १६६६ कार्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० स० २४२। छ मण्डार।

२३३० प्रति स० ७। पत्र स० ७५। ले० काल स० १८२८ पौष बुदी ४। वे० स० २४४। छ मण्डार।

२४३१ प्रति स० ८। पत्र स० ६ से १७३। ले० काल स० १७७३ मगमिर सुदी ५। अपूर्ण। वे० स० १६६५। ट मण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहर्य हैं।

इनके प्रतिरिक्त अ मण्डार में ५ प्रतिया (वे० स० १०२८, १२६४, १२६५, १८७४, २०६५) ख मण्डार में एक प्रति (वे० स० १५५ [क])। छ मण्डार में ७ प्रतिया (वे० स० ६१६, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५)। च मण्डार में दो प्रतिया (वे० स० २८६, २६०) छ मण्डार में एक एक प्रतिया (वे० स० २६३, १६६६) भी हैं।

२३३२ रघुवशाटीका—सखिनाथसूरि। पत्र स० २३२। भा० १२×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। वे० स० २१२। ज मण्डार।

२८२३ प्रति स० २। पत्र स० १८ से १४१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ३६८। ज मण्डार।

मये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवारतच्छिष्य भ० श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये शावङ्गागोत्रे सधाधिपति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्तत्रय प्रथम स श्री खीवा तद्भाये द्वे प्रथमा स० खेमलदे द्वितीयो मुहागदे तत्पुत्रास्तत्रय प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय स० वेणा तद्भाये द्वे प्रथमा विमलादे द्वि० नीलादे । तृतीय सं हू गरमी तद्भार्या दाड्योदे एतेसा मध्ये सं विमलादे इद दास्य लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त ज्ञानावर्णा कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३ प्रति स० २ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १८६३ भादवा सुदी १४ । वै० स० ६६६ । छ

भण्डार ।

२३४४ प्रति स० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६४ मगसिर सुदी ८ । वै० स० ३३० । च

भण्डार ।

२३४५ प्रति स० ४ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १८३६ फागुण सुदी १ । वै० स० ४६ । छ

भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय मे सतीपराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६ प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । ले० काल स० १८४७ वैशाख सुदी १ । वै० स० ४७ । छ

भण्डार ।

विशेष—सागावती (सागानेर) मे गोधो के चैत्यालय में प० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४७ प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८३१ भाषाढ सुदी ३ । वै० स० ४६ । च

भण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चद्रप्रभ चैत्यालय में प० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८ प्रति स० ७ । पत्र स० ३० मे ५६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २०५७ । ट भण्डार ।

विशेष—द्वे सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९ वरागचरित्र—भर्तृहरि । पत्र सं० ३ मे १० । भा० १२१×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५० वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनदि । पत्र स० ५० । भा० १०×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल स० १५१८ । पूर्ण । वै० स० ३६६ । च भण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिप्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनदि विरचिते सुखनामा दिने श्री वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय परिच्छेद

काव्य एव चरित्र]

सधे बलात्कारगणो सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनदि देवास्तत्पट्टे स० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिराचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये शावडागोत्रे सधाधि-
पति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणदे तयो पुत्रास्तत्र प्रथम स श्री खीवा तद्भार्ये द्वे प्रथमा स० खेमलदे द्वितीयो
सुहायदे तत्पुत्रास्तत्र प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय स० वेणा तद्भार्ये द्वे प्रथमा विमलादे
द्वि० नीलादे । तृतीय स हृगरसी तद्भार्या दांड्यादे एतेसा मध्ये स विमलादे इद शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त
जानावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३ प्रति स० २ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १८६३ भाद्रवा सुदी १४ । वै० स० ६६६ । छ
मण्डार ।

२३४४ प्रति स० ३ । पत्र स० ७४ । ले० काल स० १८६४ मगसिर सुदी ८ । वै० स० ३३० । छ
मण्डार ।

२३४५ प्रति स० ४ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १८३६ फागुण सुदी १ । वै० स० ४६ । छ
मण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय मे सतोपराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६ प्रति स० ५ । पत्र स० ७९ । ले० काल स० १८४७ वैशाख सुदी १ । वै० स० ४७ । छ
मण्डार ।

विशेष—सागावती (सागातेर) में गोघो के चैत्यालय में प० सवाईराम के शिष्य नौनिघराम ने प्रति-
लिपि की थी ।

२३४७ प्रति स० ६ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८३१ भाद्रवा सुदी ३ । वै० स० ४९ । छ
मण्डार ।

विशेष—जयपुर मे चद्रप्रभ चैत्यालय में प० रामचद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८ प्रति स० ७ । पत्र स० ३० से ५९ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २०५७ । ट मण्डार ।

विशेष—८वें सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९ वरागचरित्र—भर्तृहरि । पत्र स० ३ से १० । भा० १२१×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १७१ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५० वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनदि । पत्र स० ५० । भा० १०×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल स० १५१८ । पूर्ण । वै० स० ३६९ । ख मण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिप्रतममहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनदि विरचिते सुखनामा दिने श्री
वर्द्धमाननिर्वाणमन नाम द्वितीय परिच्छेद

२३६२ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल स० १६१५ चैत्र सुदी ७ । वे० सं० ११५ । छ

भण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२३६३ प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल स० १६५१ पौष बुदी ३ । वे० सं० २७८ । ज

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२३६४ प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल स० १७५६ मगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०१ । ज

भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३६५ प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल स० १७४३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ५०७ । ज

भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य कैमचन्द्र गरिण हैं ।

इनके प्रतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ११३, १४६) व भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०७) भी है ।

२३६६ विदग्धमुखमदनटीका—विनयरत्न । पत्र सं० ३३ । भा० १०३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । टीकाकाल सं० १५३५ । ले० काल स० १६८३ भासोज बुदी १० । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७ विहारकाव्य—कालिदास । पत्र सं० २ । भा० १२×५३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १८५३ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभ वैद्यमालय मे मट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के समय मे लिखी गई थी ।

२३६८ शत्रुघ्नप्रवचन—समयसुन्दरगरिण । पत्र सं० २ मे २१ । भा० १०३×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रीकृष्ण, शत्रुघ्नमात्र एव शत्रुघ्न का जीवन । २० काल × । ले० काल स० १६५६ । अपूर्ण । वे० सं० ७०१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवन् १६५६ वर्षे विजयदशम्या श्रीस्तभतीर्थे श्रीवृहत्खरतरगच्छाधीश्वर श्री दिल्लीपति पारुषिमाह जलालद्दीन मकबरसाहिबप्रदत्तयुगप्रधानपदधारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि मूरखराणां (सूरिभरणां) साहिबमहास्वहस्तस्थापिता भावार्थश्रीजिनसहस्रस्त्रिपुरिकराणां (सूरिभरणां) शिष्य मुम्य पंडित सकलचन्द्रगरिण तच्छिष्य वा० समयसुन्दरगरिणा श्रीनेतलमेव राज्ये नानाविध शांतिविचाररसिक सर्वे सिद्धार्थ समर्थनया कृत श्री श्रवणेश्वरप्रबन्धे प्रथम खंड ।

२३५१ वर्तमानकथा—अथमित्रहृत् । वन सं ७३ । या १३×२३ इत्त । ज्ञान-मरत्त । विषय-
विषय । १ वन × । मे वन सं १६१२ वैयास मुदी ३ । पूर्ण । मे सं १२६ । अथकार ।

विषय—अथरित—

सं १६१२ वरवे वैयास मुदी ३ पुष्करारे मुनलीरुविने कुलपने धीर्दुर्गुवाचमन्त्रिने छान्दो नटारक श्री
दुग्गुवा छान्दो नटारक श्रीमद्विष्णु छान्दो नटारक श्रीप्रभास छान्दो नटारक श्रीवैदिकीति विपिच श्री वेदरा
जावर्त्त संवत्सीवड महापुर्वा । श्रीमैमिमांसा श्रीमन्त्रिने कुलपुर्वा महापुर्वाविराज महापुर्वा श्री वामनवपुर्वा वर
मेरावने सा श्रीप छान्दोवापने छान्दुव कवार वरप पुष्करार । (अथर्व)

२३५२ अथि सं ७ । वन सं २२ । मे वन × । मे सं १६१३ ट अथार ।

२३५३ वर्तमानचरित्र— । वन सं १६१ के २१२ । या १ × २३ इत्त । ज्ञान-मरत्त ।
विषय-चरित्र । १ वन × । मे वन × । पूर्ण । मे सं १७६ । अथकार ।

२३५४ अथि सं ३ । वन सं ११ । मे वन × । पूर्ण । मे सं १६७४ । अथकार ।

२३५५ वर्तमानचरित्र—केटीसिद्ध । वन सं १२ । या ११×२ इत्त । ज्ञान-हिन्दी वन ।
विषय-चरित्र । १ वन सं १११ के वन सं १७१४ वापन मुदी २ । पूर्ण । मे सं १४७ । अथकार ।

विषय—उपमूलनी मोका मे अतिमिति श्री श्री ।

२३५६ विष्णुचरित्र—वाचमार्च अथवसोम । वन सं ४ मे २ । या १ × २३ इत्त । ज्ञान-
हिन्दी । विषय-विष्णुचरित्र वा श्रीव । १ वन सं १७१४ । मे वन सं १७७१ वापन मुदी ४ । पूर्ण । मे
सं १११ । अथकार ।

विषय—उपमूल वर मे अथि रावपुत्र मे अतिमिति श्री श्री ।

२३५७ विष्णुमुपमहन—वैष्णवाचार्य अर्जुनास । वन सं २ । या १३×२ इत्त । ज्ञान-
मरत्त । विषय-वपु । १ वन × । मे वन सं १२१ । पूर्ण । मे सं १६७ । अथकार ।

२३५८ अथि सं ७ । वन सं १७ । मे वन × । मे सं १११ । अथकार ।

२३५९ अथि सं ३ । वन सं २७ । मे वन सं १२१ । मे सं १२७ । अथकार ।

विषय—अथार मे महापुर्वा मे अतिमिति श्री श्री ।

२३६० अथि सं ४ । वन सं २४ । मे वन सं १७१४ । मे सं १२७ । अथकार ।

विषय—मरत्त मे श्रीवा श्री श्री ।

२३६१ अथि सं २ । वन सं २६ । मे वन × । मे सं १११ । अथकार ।

विषय—अथि मरत्त श्रीवा अथि ।

अथ व अर्जुन वन वर श्रीवा श्रीवा है अथ वर अथि है श्री अथ मेवक जादु वरद्वारा अथि श्रीवा

प्रारम्भ—

श्री सासण नायक सुमरिये वर्द्धमान जिनचंद ।

अलीइ विघन दुरोहर आपे प्रमानद ॥१॥

२३८० शिशुपालवध—महाकवि भाष । पत्र सं० ४६ । भा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६३ । अ भण्डार ।

२३८१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२ शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । भा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—६ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र सख्या अलग अलग है ।

२३८३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७६ । ज भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । ज भण्डार ।

२३८५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १४४ । ले० काल सं० १७६६ । अ पूर्ण । वे० सं० १४५ । अ भण्डार ।

२३८६ अश्वत्थभूषण—नरहरिमठ । पत्र सं० २५ । भा० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमडन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—भों नमो पार्वनाथाय ।

हेरवचन किमव किम् तव कारता तस्य चाद्रीकला

कृत्य कि शरजन्मनोक्त मन पार्वताख रं स्यादिति तात ।

कुप्पति गृह्यतामिति विहायाहतुं मन्या कला—

माकाशे जयति प्रसारित कर स्तवेरमयामणी ॥१॥

य साहित्यपुष्पेन्दुर्नरहरि रत्नालनदन ।

कुप्ते सैशवण भूषणव्या विदग्धमुखमडणव्याख्या ॥२॥

प्रकारा संतु बहवो विदग्धमुखमडने ।

तथापि मत्कृत भावि मुख्य भूषण—भूषण ॥३॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरिमठविरचिते अश्वत्थभूषणे चतुर्थ परिच्छेद संपूर्ण ।

प्रारम्भ—

श्री सातण नायक सुमरिये वर्द्धमान जिनचंद ।

अलीइ विघन दुरोहर आपे प्रमानद ॥१॥

२३८० शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४६ । भा० ११३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६३ । अ मण्डार ।

२३८१ प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ मण्डार ।

विशेष—प० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२ शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । भा० ११३×५३ इच्छ । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ मण्डार ।

विशेष—६ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र सख्या अलग अलग है ।

२३८३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७६ । अ मण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । अ मण्डार ।

२३८५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १४४ । ले० काल सं० १७६६ । अ पूर्ण । वे० सं० १६५ । अ
मण्डार ।

२३८६ अथवाभूषण—नरहरिभट्ट । पत्र सं० २५ । भा० १२३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ मण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमदन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—ओं नमो पार्वनाथाय ।

हेरववव किमव किम् तव कारता तस्य चाद्रीकला

श्रुत्य कि शरजन्मनोक्त मन पार्वतारु र स्यादिति तात ।

कुप्पति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्यां कला—

माकागे जयति प्रसारित कर स्तवेरमयामणी ॥१॥

य साहित्यमुषेदुर्नरहरि रत्नलालनदन ।

कुप्ते सैशवणा भूषणव्या विदग्धमुखमदनव्याख्या ॥२॥

प्रकारा सतु बहवो विदग्धमुखमदने ।

तथापि मत्कृत भावि मुख्यं भूषण—भूषण ॥३॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नरहरिभट्टविरचिते अथवाभूषणे चतुर्थ परिच्छेद संपूर्ण ।

२३८७. श्रीवाक्पत्रि—प्र० मेमिस्स। पत्र सं १७। भा १ २५२ ईव। काला—मिस्स। विष्णु-
पत्रि। २ पत्र सं १३२। मे काल सं १९४३। पूर्ण। मे सं ११। अथ अथार।

विशेष—नैराश्रम जगत्सि प्रचुरं हि । जगत्सि—

44

[illegible]

२३५५. प्रतिष्ठ ५। पत्र ५५। वि. क्रम ५५५। पृ. ५५५। अ. ५५५।

२३८. अति सं० ३। पत्र सं० ४२। नि. काल सं० १८४५ ज्येष्ठ शुक्ल ६। ५। ३० १२२। अ. १८४५।

विशेष—मन्नादेव के पुर्वासा नगर में परिवार के सदस्य में अन्य रचना की गई थी। विष्णुदेव के तत्काल (दीर्घावधि) में अपने पुत्र विष्णुदेव के नामावली में उनकी जीव विष में प्रतिष्ठिती की थी।

यद्वा प्रति पं सुखमात्रं भवेत् । इति पुनर्न मे यद्वा कथं विज्ञा ऐसा कस्मात् ।

२३६ प्रति सं ५। पत्र सं ३२। नि. क्रम सं १२२। पालीव सुदी ५। व. सं १३३। अ.
मन्दाटा।

निर्देश—कैफियत में ब्रह्मविधि ही है ।

२३६१ प्रति सं. २। पत्रों में १२६६ सं. के कल में १७११ ब्रिजपुरी ४। के सं. ।
 ४ नम्बर ।

निर्देश—दस्तावेज़ी में इस बुद्धिवाह के वातनयन में एक ही प्रतिनिधि हुई थी।

२६६३. प्रतिष्ठा १। कर्म १। नि. कावर्ग १५११ पञ्चम कुटी १२। १ वं १। १।
बन्धन ।

विशेष—उपरोक्त चर्चों में अनेकानेक नवीन भूतलवर्णन के प्रतिनिधि भी हैं ।

३३२३ प्रसिद्ध ७। फेब्रुअरी १९६१ ई। स. का. नं. १५० बी. ए. मुंबई १४। के. वं. ३३०। अ.
प्रकार ।

शिक्षण—समाप्त अथवा न हो ५५ शिक्षणस्थिति के अन्तर्गत वर्गों की संख्या ५५

विशेष—४ राजपूतानी के विभिन्न पेशवाओं के कौटुंबिक प्रतिनिधियों की।

२३६४ प्रति सं० ६। पृष्ठ सं० २५०। ले० गण सं० १५४४ माधवापुरी

पञ्चाङ्ग ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ मण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० २३३, २५६) हैं, छ तथा न मण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७२१, ३६ तथा ८५) और हैं ।

२३६६ श्रीपालचरित्र—भ० समलकीर्ति । पत्र सं० ५६ । मा० ११×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० बाल दाक सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०१४ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थपारी माणरचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२८ । ले० बाल सं० १७६५ फागुन बुदी १२ । वे० सं० ४० । छ मण्डार ।

विशेष—तारणपुर में मठनाचार्य रत्नवीर के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० बाल × । वे० सं० १६२ । ज मण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ चिरजीलाल मोढ्या ने सं० १६६३ की भादवा बुदी ८ को चढ़ाया था ।

२३६९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ (६० में ८८) ले० बाल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । म मण्डार ।

विशेष—प० हरलाल ने वाम में प्रतिलिपि की थी ।

२४०० श्रीपालचरित्र । पत्र सं० १२ से ३४ । मा० ११^१/_२×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० बाल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६३ । अ मण्डार ।

२४०१ श्रीपालचरित्र । पत्र सं० १७ । मा० ११^१/_२×५ इञ्च । भाषा—प्रपञ्च श । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० बाल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ मण्डार ।

२४०२ श्रीपालचरित्र—परिमल । पत्र सं० १४४ । मा० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । १० काल सं० १६५१ । भाषा बुदी ८ । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । अ मण्डार ।

२४०३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६४ । ले० बाल सं० १८६८ । वे० सं० ४२१ । अ मण्डार ।

२४०४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ से १४४ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० ४०४ । अपूर्ण । अ मण्डार ।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवान शिबचन्दजी ने ग्रन्थ लिखवाया था । २४०५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८८६ पौष बुदी १० । वे० सं० ७६ । ग मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ भागरे में बालमर्गज में लिखा था ।

२४०६ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० बाल सं० १८६७ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ७१७ । क मण्डार ।

विशेष—महात्मा कान्हराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

कान्य एवं चरित्र]

२४१८ श्रीपालचरित्र । पत्र स० ३४ । मा० ११३ × ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७५ ।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं है । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२४१९ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ८१ । ग भण्डार ।

विशेष—कालुराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२० प्रति स० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८४ । च भण्डार ।

२४२१ श्रेणिकचरित्र । पत्र स० २७ से ४८ । मा० १० × ४ ३/४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७३२ । छ भण्डार ।

२४२२ श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० ४६ । मा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३५६ । च भण्डार ।

२४२३ प्रति स० २ । पत्र स० १०७ । ले० काल स० १८३७ कार्तिक सुदी । अपूर्ण । वे० स० २७ ।

छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२४२४ प्रति स० ३ । पत्र स० ७० । ले० काल × । वे० स० २८ । छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

२४२५ प्रति स० ४ । पत्र स० ८१ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० २६ । छ भण्डार ।

२४२६ श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८४ । मा० १२ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । १० काल × । ले० काल स० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २४६ । छ भण्डार ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी । इसका दूसरा नाम मन्विष्यत् पचनामपुत्राणा भी है ।

२४२७ प्रति स० २ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १७०८ वैश्व बुदी १४ । वे० स० १६४ । छ भण्डार ।

२४२८ प्रति स० ३ । पत्र स० १४८ । ले० काल स० १६२६ । वे० स० १०५ । घ भण्डार ।

२४२९ प्रति स० ४ । पत्र स० १३१ । ले० काल स० १८०१ । वे० स० ७३५ । द भण्डार ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखनौती में प्रतिलिपि की थी ।

२४३० प्रति स० ५ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १८६४ माघाढ सुदी १० । वे० स० ३५२ । च भण्डार ।

२४३१. प्रति स० ६ । पत्र स० ७५ । ले० काल स० १८६१ भाद्रपद बुदी १ । वे० स० ३५३ । च भण्डार ।

काव्य एवं चरित्र]

२४१८ श्रीपालचरित्र । पत्र सं० २४ । भा० ११३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७५ ।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं हैं । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२४१९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । ग मण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८४ । च मण्डार ।

२४२१ श्रेणिकचरित्र । पत्र सं० २७ से ४८ । भा० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३२ । छ मण्डार ।

२४२२ श्रेणिकचरित्र—भा० सकलकीर्ति । पत्र सं० ४६ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५६ । च मण्डार ।

२४२३ प्रति सं० २ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३७ कालिक सुदी । अपूर्ण । वे० सं० २७ ।

छ मण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

२४२४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० २८ । छ मण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर अन्य पुरा किया गया है ।

२४२५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० २६ । छ मण्डार ।

२४२६ श्रेणिकचरित्र—भा० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २४६ । छ मण्डार ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी । इसका दूसरा नाम मविष्यत् पथनामपुत्राण भी है ।

२४२७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७०८ चैत्र बुदी १४ । वे० सं० १६४ । छ मण्डार ।

२४२८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० १०५ । च मण्डार ।

२४२९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८०१ । वे० सं० ७३५ । छ मण्डार ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखनौती में प्रतिलिपि की थी ।

२४३० प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १८६४ माघाढ सुदी १० । वे० सं० ३५२ । च मण्डार ।

२४३१ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८६१ भाद्रपद बुदी १ । वे० सं० ३५३ । च मण्डार ।

विशेष—बनपुर में जयसूर्य मठ की स्थापना के प्रतिनिधि की थी।

२४३२. मेखिकपरिचर—महारक विमर्शकीति। पत्र सं १२६। या १ × २६ ई। पत्रा-दिष्टी।

विषय-परिचर। र कल सं १२६ कलसु पुटी ४। के कल सं १२ ३ पीप पुटी ६। मुर्त। के सं ४३७।
य नम्बर।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय-

विषयकीति आहारक नाम यह नामा दीदी परमात्मा ।
संनत कलात्मक बीच कलसु पुटी काँच पु लकीच ॥
मुचनार यह पुस्तक है, स्वार्थ नमन दुख बोध मुचनै ।
बीठ परमात्मा है मुनिगाम, विषयकीति आहारक नाम ॥
जुं कदापी की मुनिगामि नमनपरमात्मा बोध निष्ठाति ।
विशेषकीतिपरिचरपत्र पत्रसि ग्रन्थ परमात्मा नाम ॥
विषयमुनि विधि मुक्ति मुचनार की दीपक नम जनु परमात्मा ।
नमनपरमात्मा नाम जेम्मा बीच परमात्मा विधिपत्र ।
नमनपरमात्मा विचारक नही, नमनपरमात्मा बोध नही ॥

२४३३. प्रति सं ३। पत्र सं ७६। के कल सं १२६ कलसु पुटी २। के सं १। न

नम्बर।

विशेष—ग्रन्थकार की जयसूर्य की स्थापना के प्रतिनिधि की थी। विशेष—ग्रन्थकार की जयसूर्य की स्थापना के प्रतिनिधि की थी। विशेष—ग्रन्थकार की जयसूर्य की स्थापना के प्रतिनिधि की थी।

२४३४. प्रति सं ३। पत्र सं १। के कल ×। के सं १२६। क नम्बर।

२४३५. मेखिकपरिचरमात्रा—। पत्र सं २२। या ११ × २६ ई। पत्रा-दिष्टी। विषय-

परिचर। र कल ×। के कल ×। मुर्त। के सं ७३९। क नम्बर।

२४३६. प्रति सं ३। पत्र सं ३३ के ३३। के कल ×। मुर्त। के सं ७३४। क नम्बर।

२४३७. संनतपरिचरमात्रा (संनतपरिचर) के कल। पत्र सं २२। या १ × २६ ई।

पत्रा-दिष्टी। विषय-परिचर। र कल ×। के कल ×। के सं २२२। य नम्बर।

२४३८. संनतपरिचरमात्रा—दीर्घवि। पत्र सं १ के १। या १ × २६ ई। पत्रा-दिष्टी।

विषय-परिचर। र कल सं १७२४ पत्रा-दिष्टी पुटी १। के कल सं १७२७ कलसु पुटी १। मुर्त। के सं ७३९। य नम्बर।

विशेष—ग्रन्थकार के १७ पत्र नही हैं।

ढाल पञ्चतानीसगो गुरुवानी—

सवत् वेद गुग जाणीय मुनि घणि वर्ष उदार ॥ मुगुग नर मांभलो ॥
 मेदपाठ माटे लिख्यो विजः दशमि दिन मार ॥ ५ ॥ मुगुग
 गढ जालोरद गुग तस्यु जितोडए अधिकार ।
 अमृत मिधि योगइ सही त्रयोदमी दिनमार ॥ ६ ॥ मु०
 भाद्रय मान महिमा धणी पूरण करया विचार ।
 भवि नर सांभलो पञ्चतालीस ढाले गही गाया सातसईतार ॥ ७ ॥ मु०
 छू कइ गच्छ लायक यनी धीर मोह जे मान ।
 गुरु भाभण श्रुत केवली धिवर गुगे चोमाल ॥ ८ ॥ मु०
 समरथधिवर महा मुनी मुदर रूप उदार ।
 तत शिष भाव धरी भणइ मुगुग तरणइ आधार ॥ ९ ॥ मु०
 उछी अधिषयो कसो बवि नातुगेय बिलोल ।
 मिय्या दु कृत ते होग्यो जिन सावइ चउमाल ॥ १० ॥ मु०
 सजन जन नर नारि जे नभनी लहइ उत्थास ।
 नरनारी धर्मातिमा पडित म करो का हाम ॥ ११ ॥ मु०
 दुग्जन नइ न मुहावई नही भावइ कहे दाय ।
 माली बदन नादरइ अमुचिहिहा चलि जाय ॥ १२ ॥ मु०
 प्यारो सागइ संतनइ पामर चित्त मतोप ।
 ढाल भली २ समली चिते थो ढाल रोप ॥ १२ ॥ मु०
 श्री गच्छ नायक तेजसी जव लग प्रतपो भाण ।
 हीर मुनि भासीस छः हो ज्यो कोडि कल्याण ॥ १४ ॥ मु०
 सगस ढाल सरसी कथा सरसी सह अधिकार ।
 हीर मुनि गुरु नाम धी भाणइ हरण उदार ॥ १५ ॥ मु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र संपूर्ण । सर्व गाया ७१७ सवत् १७२७ वर्षे कार्तिक बुदी १ दिने सोम-
 वासरे लिखित श्री धयजी ऋषि श्री केलावजी तत् दिष्य प्रवर पडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदत्तेवासी लिपिकृत
 मुनिसावल ग्रामार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभे भवतु ।

२४३६ मिरीपालचरित्र—प० नरसेन । पत्र स० ४७ । प्रा० ६३×४६ इ व । भाषा—मपभ्र श ।
 विषय—राजा शोपान का जीवन वर्णन । १० काल ८ । ले० काल स० १६१५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । व० स०
 ४१० । व्र भण्डार ।

विशेष—प्रतिम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४४७ प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १८१६ । वे० स० ३२ । छ मण्डार ।

विशेष—कही कही सस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

२४४८ प्रति स० ५ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० स० ३४ । छ मण्डार ।

विशेष—सागानेर में सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४४९ प्रति स० ६ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १८२६ पौष सुदी ५ । वे० स० ८६ । व्य मण्डार ।

विशेष—प० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ, ङ, छ, झ तथा व्य मण्डार में एक एक प्रति (वे० स० ८६५, ३३, २, ३३४) मौजूद हैं ।

२४५० सुकुमालचरित्रभाषा—प० नाथूलाल दोसी । पत्र स० १४३ । भा० १२३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । १० काल स० १६१८ सावन सुदी ७ । ले० काल स० १६३७ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ८०७ । क मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी पद्य में है इसके बाद वचनिका में हैं ।

२४५१ प्रति स० ७ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १६६० । वे० स० ८६१ । ङ मण्डार ।

२४५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६२ । ले० काल × । वे० स० ८६४ । ङ मण्डार ।

२४५३ सुकुमालचरित्र—हरचन्द गगवाल । पत्र स० १५३ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । १० काल स० १६१८ । ले० काल स० १६२६ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ७२० । च मण्डार ।

२४५४ प्रति स० २ । पत्र स० १७४ । ले० काल स० १६३० । वे० स० ७२१ । च मण्डार ।

२४५५ सुकुमालचरित्र । पत्र स० ३६ । भा० ७×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल स० १६३३ । पूर्ण । वे० स० ८६२ । ङ मण्डार ।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रथम २१ पत्रों में तत्त्वार्थसूत्र है ।

२४५६ प्रति स० ७ । पत्र स० ६० से ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८६० । ङ मण्डार ।

२४५७ सुखनिधान—कवि जगन्नाथ । पत्र स० ५१ । भा० ११३×५३ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल स० १७०० आश्विन सुदी १० । ले० काल स० १७१४ । पूर्ण । वे० स० १६६ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

२४६६ सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि । पत्र स० २७ से ३६ । भा० १२१/२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८६३ । छ भण्डार ।

२४७० प्रति सं० २ । पत्र स० २१८ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० ४१३ । च भण्डार ।

२४७१ प्रति सं० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४१४ । च भण्डार ।

२४७२. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १६६५ भादवा बुदी ११ । वे० स० ८८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ सवत्सरति श्रीपतृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गतान्द सवत् १६६५ वर्षे भादौ बुदि ११ शुक्र-वासरे कृष्णशुभे अर्धलापुर्दुर्ध शुभस्थाने अश्वरतिगजपतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिबसेलेमराज्यप्रवर्तमाने श्रीमत् काष्ठामधे मायुरगण्डे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री मानुकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारयोगिस्तदाम्नाये इस्वाकवशे जैसवालावये ठाकुराणिगोत्रे पालव मुभस्थाने जिनचैत्यालये आचार्यगुणकीर्तिना पठनार्थं लिखित ।

२४७३ प्रति सं० ५ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८६३ वैशाख बुदी ४ । वे० म० ३ । झ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूटगढ़ में राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल में पार्वनाथ चैत्यालय में भ० जिनचन्द्रदेव प्रभाचन्द्रदेव आदि शिष्यों ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२४७४ प्रति सं० ६ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स० २१३६ । ट भण्डार ।

२४७५ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ४ से ५६ । भा० १११/२×५१/२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६८ । झ भण्डार ।

२४७६ प्रति सं० ७ । पत्र स० ३ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८५ । झ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२४७७ प्रति सं० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ८५६ । छ भण्डार ।

२४७८ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ५४ । भा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६० । छ भण्डार ।

२४७९. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द्र । पत्र स० ३७ । भा० ८३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभौम चक्रवर्ति का जीवन चरित्र । २० काल स० १६८३ भादवा सुदी ५ । ले० काल स० १८५० । पूर्ण । वे० स० ५५ । छ भण्डार ।

विशेष—विबुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाठनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । पं० सवाईराम के शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी । हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

संवत् १७१४ फाल्गुन सुदी १ भोजवास (मोजवास) मन्थे श्री धर्मोत्तर नैवात्ये विहित १
बामोत्तर ।

२४२८. प्रति सं० २ । पत्र सं ३१ । ले कल ह १५३ नासिक सुदी ११ । के सं १११ । म
अष्टार ।

२४२९. सुदर्शनचरित्र—अ सकलकोटि । पत्र सं १ । वा ११×४५ इंच । गला-तंतुप । विरत-
चरित्र । रं गल × । ले गल सं १७१२ । धनुर् । के सं । अ अष्टार ।

विशेष—२६ से २७ तक पत्र नहीं हैं ।

अवस्थित विभिन्न प्रकार हैं—

संवत् १७७३ वर्षे गान्धुनौकसमयंतोने पुष्कराश्वीनेन विधायकपदोनेन सुदर्शनचरित्र लेखक रामचंद्र
गुप्त कृत ।

२४३१ प्रति सं २ । पत्र सं २ से १४ । ले गल × । धनुर् । के सं ४१३ । अ अष्टार ।

२४३१ प्रति सं ३ । पत्र सं १ से ४१ । ले गल × । धनुर् । के सं ४१६ । अ अष्टार ।

२४३२. प्रति सं ४ । पत्र सं २ । ले गल × । के सं ४२ । अ अष्टार ।

२४३३ सुदर्शनचरित्र—अज्ञानेनिरुद्ध । पत्र सं १२ । वा ११×२ इंच । गला-तंतुप । विरत-
चरित्र । रं गल × । ले गल × । धनुर् । के सं १२ । अ अष्टार ।

२४३४ प्रति सं ३ । पत्र सं १६ । ले गल × । के सं ४ । अ अष्टार ।

विशेष—अवस्थित धनुर् हैं । पत्र २६ से २७ तक नहीं मिले हुए हैं ।

२४३५. प्रति सं ३ । पत्र सं २ । ले गल सं १६२२ फाल्गुन सुदी ११ । के सं २२६ । अ
अष्टार ।

विशेष—छात्र बमोत्तर के सुदर्शन के अतिरिक्त पत्रों की ।

नोट—सं १६२५ के अष्टार सुदी २ की सं सुदर्शन के अष्टार की सं ।

२४३६ प्रति सं ४ । पत्र सं १ । ले गल सं १३ नैव सुदी १ । के सं २२ । अ
अष्टार ।

विशेष—छात्र गान्धुनौक के अतिरिक्त पत्रों के अष्टारों में लिखा है ।

२४३७ प्रति सं २ । पत्र सं १७ । ले गल × । के सं ११२ । अ अष्टार ।

२४३८. प्रति सं ६ । पत्र सं ७१ । ले गल सं ११६ फाल्गुन सुदी २ । के सं २१५ । अ
अष्टार ।

विशेष—लेखक अवस्थित विरत हैं ।

२४६६ सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि । पत्र स० २७ मे ३६ । आ० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८६३ । छ भण्डार ।

२४७८ प्रति स० २ । पत्र स० २१८ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० ४१३ । च भण्डार ।

२४७९ प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४१४ । च भण्डार ।

२४७० प्रति स० ४ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १६६५ भादवा बुदी ११ । वे० स० ८८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ सवत्सरंति श्रीपति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द सवत् १६६५ वर्षे भादौ बुदि ११ गुरु-
वासरं कृष्णशुक्ल अर्धलापुर्ण शुभस्थाने अश्वतिगजपतिनरपतिराज्यय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिस्लेमराज्यप्रवर्तमाने श्रीमत्
काष्ठामधे माधुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री
भावुकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदान्मानये इस्वाकवशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालव सुभस्थाने
जिनचैत्यालये आचार्यगुणकीर्तिना पठनार्थं लिखित ।

२४७३ प्रति स० ५ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८६३ वैशाख बुदी ४ । वे० स० ३ । भ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूटगढ मे राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल मे पार्वनाथ चैत्यालय मे भ०
जिनचन्द्रदेव प्रभावन्ददेव आदि शिष्यो ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२४७४ प्रति स० ६ । पत्र स० ४५ । ले० काल × । वे० स० २१३६ । ट भण्डार ।

२४७५ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ४ से ५६ । आ० ११३×५^१/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६८ । अ भण्डार ।

२४७६ प्रति स० २ । पत्र स० ३ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२४७७ प्रति स० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८५६ । ट भण्डार ।

२४७८ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ५४ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६० । छ भण्डार ।

२४७९ सुभीमचरित्र—भ० रतनचन्द्र । पत्र स० ३७ । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—सुभीम चक्रवर्ति का जीवन चरित्र । २० काल स० १६८३ भादवा बुदी ५ । ले० काल स० १८५० । पूर्ण ।
वे० स० ५५ । छ भण्डार ।

विशेष—विबुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । पं० सवाईराम के शिष्य
नोनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थी । हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२४६१ प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मगसिर सुदी ४ । वै० सं० ३४७ ।
व भण्डार ।

विशेष—ब्र० बालू लोहशल्या सेठी गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२ प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६७४ । वै० सं० ५१२ । व भण्डार ।

२४६३ प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से १०५ । ले० काल सं० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्ण । वै०
सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १, ७३, व १०३ नहीं हैं लेखक प्रशस्ति बड़ी है ।

इनके मतिरिक्त कृ० श्रीर व भण्डार ने एक एक प्रति (वै० सं० १७७ तथा ४७३) श्रीर है ।

२४६४ हनुमच्चरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ३६ । भा० १२×८ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । र० काल सं० १६१६ बैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०१ । अ भण्डार ।

२४६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८२४ । वै० सं० २४२ । ख भण्डार ।

२४६६ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८३ सावण बुदी ६ । वै० सं० ६७ । ग
भण्डार ।

विशेष—साहू कालुराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी १ । वै० सं० ६०२ । ङ
भण्डार ।

विशेष—सं० १६५६ मगसिर बुदी १ शनिवार को सुवालालजी वकी बालो के घड़ी पर संघीजी के
मन्दिर में यह ग्रन्थ भेंट किया गया ।

२४६८ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७६१ कार्तिक सुदी ११ । वै० सं० ६०३ । ड
भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम में घासीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६९ प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वै० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२५०० प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १४१ । झ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२५०१ हारावलि—महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० १३ । भा० ११×५ इच्छ । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८५३ । क भण्डार ।

२५०२ होलीरेणुकाचरित्र—प० जिनदास । पत्र सं० ५६ । भा० ११×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । र० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अतः महत्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

कथा-साहित्य

२५०६ अकलकदेवकथा । पय स० ४ । भा० १०×४३ इच्छ । भापा-मस्कृत । विषय-कथा ।

१० बाल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० २०५६ । ट भण्डार ।

२५०७ अक्षयनित्यमुष्टिकाविधानव्रतकथा । पय स० ६ । भा० २२×६ इच्छ । भापा-मस्कृत ।

विषय-कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १८३४ । ट भण्डार ।

२५०८ अठारहनाते की कथा—अपि लालचन्द । पय स० ४२ । भा० १०×५ इच्छ । भापा-

हिन्दी । विषय-कथा । १० काल स० १८०५ माह सुदी ५ । ले० काल स० १८८३ कार्तिक सुदी ८ । वै० स० ६६८ ।

अ भण्डार ।

विषय—प्रतिम भाग—

सबत अठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पाँचा गुरुवार ।

भरण सुदुरत सुभ जोग मैं जी हो कथण मण्यो सुवीचार ॥ धन धन० ॥४६६॥

श्री चीतोड तलहटी राजियो, जी हो अपि जीनेश्वर स्याम ।

श्री सीध दोलती दो धणी जी हो मीध की पूरी जे हाम ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७०॥

तलहटी श्री सीगराज तो, जी हो बहुलो छय परीवार ।

घेडा वेटी पोतरा जी हो मनघन मधीक अपार ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७१॥

श्री कोठारी काम का धणी, जी हो छाजड सो नगरा मेठ ।

धा रावत मुराणा शोषर दीपता जी हो मोर बाप्पा हेठ ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७२॥

श्री पुन्य मग छगीडवो महा जी हो श्री विजयराम बाखाण ।

पाट घणार आतर जी हो गुण सागर गुण खाण ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७३॥

सामागी सीर सेहरो जी हो साग सुरी कत्याण ।

परवारा पूरो सही जी हो सकल वार्ता सु बीषाण ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७४॥

श्री बीजयेगर्छ गीडवोधणी जी हो श्री भीम सागर सुरी पाट ।

श्री तालक सुरद वीर जीबज्यो जी हो सहसगुणो का थाट ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७५॥

साध सकल मे सोभतो जी हो अपि लालचन्द सुसीम ।

अठारा नता बोधी कथी जी हो ढाल भणी इगतीस ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७६॥

ईती श्री धर्मउपदेस अठारा नाता चरीत्र सपूर्णा ममाता ॥

सिन्धु केनी मुखपुत्र जी घारखा जी जी १ ५ बी बी बी मायाजी दग्ध धमणी जी जी जी दग्ध
बी घारपुत्र जी । बी मेघपुत्र जी बी बंमलाजी बी कुम्हरी भस्मा कुण्डलं संपूर्ण ।

संवत् १० १ वर्षे धर्म वष किती घातोव (गली) गरी मे दिन बार दीये । बाग संशयनदग्ध
संपूर्ण भोगतो टीरो नीची अस्ता १॥ नी बो बो गरी लघी दग्ध बी । बी बी १ ५ बी बी मायाजी क अत्र
मले १ ल मेपुनी ॥ बी बी मायाजी बांमला घारव । घारखा बी बांमला घारव अस्ता ॥ १ ॥

२५६ अनन्तचतुर्दशीकथा—अष्टाशानसागर । पत्र सं ११ । या १ × २ दग्ध । माया—दिष्टी ।
विषय—मया । १ कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं ४२३ । अ मकार ।

२५७ अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीश्वरीर्षि । पत्र सं १ । या ११ × २ दग्ध । माया—मल्लव ।
विषय—मया । १ कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं १ । अ मकार ।

२५८ अनन्तचतुर्दशीकथा— । पत्र सं १ । या १ × १ दग्ध । माया—संस्तुत । विषय—मया ।
१ कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं १ । अ मकार ।

२५९ अनन्तचतुर्दशीकथा—अष्टमर्षि । पत्र सं १ । या ११ × २ दग्ध । माया—संस्तुत ।
विषय—मया । १ कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं १ । अ मकार ।

२६० अनन्तचतुर्दशीकथा—अष्टमर्षि । पत्र सं १ । या १ × १ दग्ध । माया—संस्तुत । विषय—
मया । १ कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं १ । अ मकार ।

विषय—मल्लव पत्रों के दिष्टी धर्म जी विने कुने ह ।

इके धर्मिष्ठ ग मकार मे १ अति (मे सं १) क मकार मे ४ अति (मे सं १)
११) अ मकार मे १ अति (मे सं ४) बीर ह ।

२६१ अनन्तचतुर्दशीकथा—अ पद्मनि । पत्र सं १ । या ११ × २ दग्ध । माया—संस्तुत । विषय—
मया । १ कल × । मे कल सं १०५ बाग बुदी १ । मे सं ४४ । अ मकार ।

२६२ अनन्तचतुर्दशीकथा— । पत्र सं ४ । या ११ × २ दग्ध । माया—संस्तुत । विषय—मया । १
कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं ४ । अ मकार ।

२६३ अति सं १ । पत्र सं १ । मे कल × । पूर्ण । मे सं १ । अ मकार ।

२६४ अनन्तचतुर्दशीकथा— । पत्र सं १ । या १ × १ दग्ध । माया—संस्तुत । विषय—मया (दीनेर)
१ कल × । मे कल सं १ १ माया बुदी । मे सं ११० । अ मकार ।

२६५ अनन्तचतुर्दशीकथा—सुराक्षाम् । पत्र सं १ । या १ × १ दग्ध । माया—दिष्टी । विषय—
मया । १ कल × । मे कल सं १ १ माया बुदी १ । पूर्ण । मे सं १११ । अ मकार ।

२५१६ अजनचोरकथा । पत्र स० ६ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६१४ । ट मण्डार ।

२५२० अषाढएकादशीमहात्म्य । पत्र स० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११४६ । अ मण्डार ।

विशेष—यह जैनेतर ग्रन्थ है ।

२५२१ अष्टागसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्ति । पत्र स० २ से ३६ । आ० ७३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२१ । ट मण्डार ।

विशेष—कुछ बीच के पत्र नहीं हैं । आठो मञ्जो की मलग २ कथायें हैं ।

२५२२ अष्टागोपाख्यान—प० मेधावी । पत्र स० २८ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१८ । अ मण्डार ।

२५२३ अष्टाहिकाकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०० । अ मण्डार ।

विशेष—अ मण्डार में ३ प्रतिमा (वे० स० ४८५, १०७०, १०७२) ग मण्डार में १ प्रति (वे० स० ३) ङ मण्डार में ४ प्रतिमा (वे० स० ४१, ४२, ४३, ४४) च मण्डार में ६ प्रतिमा (वे० स० १५, १६, १७, १८, १९, २०) तथा छ मण्डार में १ प्रति (वे० स० ७४) और हैं ।

२५२४ अष्टाहिकाकथा—नथमल । पत्र स० १८ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिंदी गद्य । विषय—कथा । २० काल स० १६२२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४२५ । अ मण्डार ।

विशेष—पन्नों के चारो ओर बेल बनी हुई है ।

इसके अतिरिक्त क मण्डार में ४ प्रतिमा (वे० स० २७, २८, २९, ७६३) ग मण्डार में १ प्रति (वे० स० ४) ङ मण्डार में ४ प्रतिमा (वे० स० ४५, ४६, ४७, ४८) च मण्डार में ४ प्रतिमा (वे० स० ५०६, ५१०, ५११, ५१२) तथा छ मण्डार में १ प्रति (वे० स० १७६) और है ।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है ।

२५२५ अष्टाहिकाकौमुदी । पत्र स० ५ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७११ । ट मण्डार ।

२५२६ अष्टाहिकाव्रतकथा । पत्र स० ४३ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७२ । छ मण्डार ।

विशेष—छ मण्डार में एक प्रति (वे० स० १४५) की और है ।

२४२० अष्टाद्विकारप्रवर्णन—गुणचम्पू। पत्र १८। या २३×१३ इंच। भाषा—
संस्कृत। विपक्ष—नवा। र कल ×। से कल ×। पूर्ण। से छ ७२। छ कपडार।

२४२८ अष्टोत्तराष्टिगीकथा—भुवसागर। पत्र १। या २ ×२ इंच। भाषा—संस्कृत।
विपक्ष—नवा। र कल ×। से कल छ १२। पूर्ण। से छ १२। छ कपडार।

२४२९ अष्टोत्तराष्टिगीकथा—। पत्र १। या २ ३/४ ×२ इंच। भाषा—हिन्दी बज।
विपक्ष—नवा। र कल ×। से कल ×। पूर्ण। से छ १६। छ कपडार।

२४३१ अष्टोत्तराष्टिगीकथा—। पत्र १। या २ ३/४ ×२ इंच। भाषा—हिन्दी बज। र
कल छ १७। नीच छ ११। पूर्ण। से छ २१। छ कपडार।

२४३१ अष्टोत्तराष्टिगीकथा—भुवसागर। पत्र १। या १ ३/४ ×१ ३/४ इंच। भाषा—संस्कृत।
विपक्ष—नवा। र कल ×। से कल छ १२। नीच छ ११। पूर्ण। से छ २१। छ कपडार।

२४३२ अष्टोत्तराष्टिगीकथा—। पत्र १ छे ११। या १ ×२ ३/४ इंच। भाषा—संस्कृत। विपक्ष—
नवा। र कल ×। से कल ×। वपूर्ण। से छ २। छ कपडार।

२४३३ अष्टोत्तराष्टिगीकथा—। पत्र १ छे ११। या १ ×२ ३/४ इंच। भाषा—संस्कृत।
विपक्ष—नवा। र कल ×। से कल ×। वपूर्ण। से छ १२। छ कपडार।

विशेष—छ कपडार में १ प्रति (से छ १७) तथा छ कपडार में १ प्रति (से छ १२) चीर हैं
तथा दोनों ही वपूर्ण हैं।

२४३४ अष्टोत्तराष्टिगीकथा—। पत्र १ छे ११। या १ ×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विपक्ष—
नवा। र कल ×। से कल ×। वपूर्ण। से छ १२। छ कपडार।

विशेष—नवा की कथा एक पूर्ण है। कपडारों का विपक्ष परिवर्तित किया है।

वी कुलद्वि वरधायो मे वन्द्ये वनप्रसारकोटि रम्ये ।

वीकुलद्वि वरधायो मे वन्द्ये वनप्रसारकोटि रम्ये । ॥१॥

वीकुलद्वि वरधायो मे वन्द्ये वनप्रसारकोटि रम्ये ।

वीकुलद्वि वरधायो मे वन्द्ये वनप्रसारकोटि रम्ये । ॥२॥

वीकुलद्वि वरधायो मे वन्द्ये वनप्रसारकोटि रम्ये । ॥३॥

वीकुलद्वि वरधायो मे वन्द्ये वनप्रसारकोटि रम्ये । ॥४॥

अनेक नवा के कल में परिवर्तित किया गया है।

२४३५ अष्टोत्तराष्टिगीकथा—प्रभाकर। पत्र १ छे ११। या १ ×२ इंच। भाषा—संस्कृत।

विपक्ष—नवा। र कल ×। से कल ×। वपूर्ण। से छ १२। छ कपडार।

विशेष—२९ छे कल तथा नीच में वी नहीं बज गयी है।

२५३६ आरामशोभाकथा । पत्र स० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३६ । अ मण्डार ।

विशेष—जिन पूजाफल कथार्ये हैं ।

प्रारम्भ—

अथदा श्री महावीरस्वामी राजशुद्धेपुरे
समवासरदुद्याने भूयो गुण शिलाभिधे ॥१॥
सद्धर्ममूलसम्यक्त्व नैर्मल्यकरणे सदा ।
यत्तत्त्वमिति तीर्थेशा वक्तिदेवादिपर्वदि ॥२॥
देवपूजादिश्रीराज्यमपद सुरसपद ।
निर्वाणकमलांचापि समते नियत जन ॥३॥

प्रन्तिम पाठ—

यावद्देवी सुते राज्य नाम्ना मलयसुदरे ।
क्षिपामि सफल तावत्करिष्यामि निर्जं जनु ॥७५॥
सूरि नत्वा शुद्धे गरवा राज्य क्षिप्त्वा निजागजे ।
आरामशोभयायुक्ते राजाव्रतमुपाददे ॥७६॥
अधीत सर्वसिद्धात् सविग्नगुणसमुत् ।
एव सस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ॥७७॥
गीतार्यायै तयारामशोभायै गुणभूमये ।
प्रवर्त्तिनीपद प्रादात् गुरुस्तद्गुणरजित ॥७८॥
सबोध्य भविकान् सूरि कृत्वा तेरनशन तथा ।
विषयद्वावपि स्वर्गसपद प्राप्तुर्वर ॥७९॥
सतश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुदता वरान् ।
भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्वती सिद्धिर्मेप्यत ॥८०॥
एवं भोस्तीर्थक्षुद्धमक्ते, फलमाकर्ष्य सुदर ।
कार्यस्तत्करणेष्वशो युष्मामि प्रमदात्सदा ॥८१॥
॥ इति जिनपूजा विषये आरामशोभाकथा संपूर्ण ॥

संस्कृत पद्य संख्या २८१ है ।

२५३७ उपागलजितव्रतकथा । पत्र स० १४ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
कथा (जैनेतर) १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१२३ । अ मण्डार ।

२५२८ अष्टमसप्तमकथा—आमयचक्रगति । पत्र सं ४ । छा १ × ४३ द व । भाषा—ब्राह्मण ।

विषय—कथा । २ । कल × । मे कल सं १५३२ कौट जुही १ । पूर्ण । मे सं ५४ । अ नम्बर ।

विशेष—आमयचक्रगति श्रीशेष अष्टमसप्तमकथा नामकान्तपुरातः कथाविषयं व्याख्यातम् ॥१२॥

इति रिक्त संकेतः ॥१॥

बी बी व बी बी आम्बरिकाव मुनिर्निर्मितः । बी विहारीरम्भे संवत् १५३२ वर्षे कौट नदि १ दिने ।

२५३१ श्रीशेषद्वयकथा—अ मेमिहत्त । पत्र सं ५ । छा १५ × ५ द व । भाषा—ब्राह्मण । विषय—

कथा । २ । कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं १ । १४ नम्बर ।

विशेष—२ से ३ तक पत्र गड़ी है ।

२५४० कठिबारखानकरीबीपई—आम्बरिकाव । पत्र सं १४ । छा १ × ४३ द व । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २ । कल सं १५४० । मे कल × । पूर्ण । मे सं १ । १ । अ नम्बर ।

विशेष—आदि भाग ।

बी बुद्धनीमन- हल बंधुबीच बन्धन पद्धति प्रवृत्त—

बुद्धिबल धर्मबुद्धिमितिरित्त हल बन्धनरह नभर कौटुकि धर्मविचारी ।

चरित्त कल्ल कल्लार कुलवति धामर बहु परिचारी परिक्खत्तम् ॥१॥

बन्ध बांधी विज्ञान मेह तिष्ठो दह्या बीच बुद्धि नभर पद्धतिवा ए ।

नामक नामल कल्ल बुद्धिबल नभरत्ता बन्धनरह धर्म धर्मविचारी ए ॥२॥

कौटुकी नई हल धर्म बुद्धि कौटुकीनमे कल्ल धामर छल्ल व ।

धर्मबुद्धिमितता बीच धर्म छल्ल धर्म धर्मविचारी कल्ल बुद्धि तिष्ठत्तम् ॥३॥

अन्तिम—

सत्तरी बीचल्ल धर्म व तिष्ठो बीची बीचल्ल ॥ १ ॥

सत्तरी न पद्धत बी व बुद्धि नभर बीचल्ल ॥ २ ॥

नाम्नल्लार बुद्ध संकेत व धर्म नात्तरवति बीच ॥ ३ ॥

काकुल्लार बुद्धिधामर व बुद्धि नभर धर्मवत् ॥

विषय कथा बीच बी व रबीची ए धर्मविचारी ।

कठि बी बंधी धर्मबीची व तिष्ठो बुद्ध नभर ॥

नभरी हल बीचल्ल बी व बीची दल्ल धर्मवत् ।

नाम्नल्लार नई नामल्लो विषय विषय कल्लो रव ॥ १ ॥

इति बी बीच विषय कठिबार नामकरी बीपई बंधुर्ण ।

२५४१ कथाकोश—हरिप्रेणाचार्य । पत्र स० ४६१ । मा० १०×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल स० ६८६ । ले० काल स० १४६७ पीप मुदी १४ । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—सभी पदार्थ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२५४२ प्रति स० २ । पत्र स० ३१८ । मा० १०×४^३ इ च । ले० काल १८३३ भादवा मुदी ५५ । वे०

स० ६७१ । क भण्डार ।

२५४३ कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र स० ३६ से १०६ । मा० १२×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १७६७ अषाढ मुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० १६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८६ तक के पत्र नहीं हैं ।

लेखक प्रदास्ति—

संवत् १७६७ तः आसाढमासे गुष्णपक्षे नवम्या दानिवारे अजमेरात्ये नगरे पातित्याहाजी महामदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उमेशिंहजी राज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसघेसरस्वतीगच्छे बलात्वारण्ये नद्याम्नाये कुदबुदाचार्यान्वये मडलाचार्य श्रीरत्नकीर्तिजी तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीविद्यानदिजी तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्तिजी तत्पट्टे मडलाचार्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनंतकीर्तिजी तदाम्नाये ग्रह्यचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पंडित मनसारामेण व्रतकथाकोशाख्य शास्त्रलिखापित धर्मोपदेसदानार्थं जानावरणीकर्मक्षयार्थं मंगलमूयान्चतुर्विधसधाना ।

२५४४ कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—त्र० नेमिदत्त । पत्र स० ४६ से १६२ । मा० १२^३×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८०२ कार्तिक मुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० २२६६ । अ भण्डार ।

२५४५ प्रति स० २ । पत्र स० २०३ । ले० काल स० १६७५ सावन मुदी ११ । वे० स० ६८ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रदास्ति कटी हुई है ।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३४) छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६४, ६५) भीर है ।

२५४६ कथाकोश । पत्र स० २५ । मा० १२×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५६ । च भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ५७, ५८) छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २११७ २११८) भीर हैं ।

२५४७ कथाकोश । पत्र स० २ से ६८ । मा० १२×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६६ । छ भण्डार ।

छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७) भीर है ।

२५५५ कथवन्नाचौपई—जिनचद्रसूरि । पत्र सं० १५ । आ० १०^१/_२ × ४^३/_४ इव । भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । २० काल स० १७२१ । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वे० स० २६ । छ भण्डार ।

विशेष—चयनविजय ने कृष्णगढ़ मे प्रतिलिपि की थी ।

२५५६ कर्मविपाक । पत्र सं० १८ । आ० १० × ४ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८१६ मगसिर बुदी १४ । वे० स० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पृष्ठिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री सूर्याखण्डसवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण ।

२५५७ कवलचन्द्रायणव्रतकथा । पत्र सं० ४ । आ० १२ × ५ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) तथा ब भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६४२) भीर है ।

२५५८ कृष्णकृष्णमणीमगल—पदमभगत । पत्र सं० ७३ । आ० ११^३/_४ × ५^३/_४ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८६० । वे० स० ११६० । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशाय नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । अथ रुक्मणि मगल लिखते ।

यादि कीयो हरि पदमयोजी, दोयो विवाण खिनाय ।
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीया हजुरी बुलाय ॥
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहाँ बड़ा रुक्मणी जादुराय ।
कृपा करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय ॥
आग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि ।
रुक्मणि मगल सुणै जी, ते भमरापुरि जाहि ॥
नरनारियो मगल सुणै जी, हरिचरण चितलाय ।
धै नारी इद्र की अपछरा जी, धै नर बैकुंठ जाय ॥
व्याह वेल भागीरथि जी गोता सहसर नाव ।
गावतो भमरापुरी जी पाव(व)न होय सब गाव ॥
चोले राणी रुक्मणि जी, सुणज्यो भगति सुजाण ।
या किया रति केशो तणी जी, येसडीर करोजी बखान ॥
बो मगल परगट करी जी, सत की सबद विचारि ।
बीडा दीयो हरी भगत नै जी, कधीयो कृष्ण मुरारि ॥

हुव भोधिब नै विगवा बी न यन्निवाही बी देव ।
 तल बन तो घानै बरा बी, कपानी बुरा बी बी देव ॥
 हुव भोधिब बराहवा बी हरी नानै बहुराह ।
 हुव भोधिब के बरनै घानै होबी हुन बी तान बव पेनी ।
 हय्यु हुवा है कान हमारै, बछुवा पवन को तेनी ॥

पद ४ - राज सिधु ।

सतिपात्र राजा बीमबी बी बुद्धि के राज कमार ।
 जी बानु बुव घामवी तो बोंह बजाऊ बार ॥
 के के सार बार वर बैरवा बाल बहू घपार ।
 बोला नाभि घनेक कुई पारण्य री नार ॥
 ब्रह्मनरति घने बी वही वर घाव बुद्धिबी राज के बार ॥
 हुव बरबाहवा बी----- ।

सतिव—

माता करी नै प्रकुवी रो घारियो बोंधि बाल बत होव ।
 अवल बत बुर बालको बोल न तानै नीव ॥
 बीकणु नै ब्राह्मणी, बुद्धी लख बिलाम ॥
 हरि पुरनै बव काला, अरति बुद्धि कलवाम ॥
 हाउनात बालव हुवा, बुद्धिबन के बरीव ।
 बव बिन बावबिया बीनबहि बवरीव ॥

कमलि बी मंगल संपुरन ॥

संवत् १५७ का साल १७११ का गायत्रयमास शुक्लपक्ष चतुर्थी तिथिमासीवमक्षरं शिटीमबरके तुलामन्थं
 सप्तम्योर्ध्व ॥ बुद्ध ॥

१५५१ कैमुदीकथा—आचार्य बरैकीर्ति । पद सं १ ते १४ । वा ११×४ द्रव । बान-
 संकृत । विषय—कथा । र काल × । ते काल सं ११११ । धनुर्मास । ते सं ११११ क बप्पार ।

विशेष—बड़ा हु बरती के निव । बीव के ११ ते १ सफ के जी बव लही है ।

१५६ कथाक गोपीबहवा— । पद सं ११ । वा ११×११ द्रव । बान-विही पद । विषय-
 बान । र काल × । ते काल × । बुद्धी । ते सं ११११ । म बप्पार ।

विशेष—बीव के बीर बी सतिपित्री के बव बिन हुने है ।

१५६१ बभ्रुदसीविद्यामकथा— । पद सं ११ । वा ११×११ द्रव । बान-संस्कृत । विषय—बान ।
 र काल × । ते काल × । बुद्धी । ते सं ११११ । म बप्पार ।

२५६२ चंद्रकुवर की वार्ता—प्रतापसिंह । पत्र स० ६ । भा० ११×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८४१ भादवा । पूर्ण । वै० स० १७१ । ज भण्डार ।

विशेष—६६ पद्य हैं । पंक्ति मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम—

प्रतापसिंह घर मन बसी, कविजन सदा सुहाइ ।

जुग जुग जीवो चंद्रकुवर, बात कही कविराय ॥ ६६ ॥

२५६३ चन्दनमलयागिरीकथा—भद्रसेन । पत्र स० ६ । भा० ११×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । आदि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणमों श्री जगदीश ।

तन मन जीवन सुख करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥

घरदाइक श्रुत देवता, भति विस्तारण मात ।

प्रणमों मन धरि मोद सौं, हरै विघन सघात ॥२॥

मम उपकारी परमगुरु, गुण प्रसर दातार ।

बदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

कहा चन्दन कठा मलयगिरि, कहा सायर कहा नीर ।

कहिये ताकी वारता, सुणो सबै घर वीर ॥४॥

अन्तिम—

कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर सग ।

आसुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गंग ॥ १८६॥

दुख जु मन मे सुख भयो, भागी विरह विजोग ।

आनन्द सौं च्यारों मिले, भयो अपूरव जोग ॥ १८७॥

गाथा—

कच्छवि चदन राया, कच्छव मलयागिरिविते ।

कच्छ जोहि पुण्यवन होई, दिक्ता सजोगो ह्वइ एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य हैं । ६ कलिका हैं ।

२५६४ चन्दनमलयागिरिकथा—चत्तर । पत्र स० १० । भा० १०^३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल स० १७०१ । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० २१७२ । अ भण्डार ।

अन्तिम ढाल—ढाल एहवी साधनुमु ।

कठिन माहावरत राख ही अत राखीहि सोइ चतर सुजाण ॥

अनुकरमइ सुख पायीयाजी, पाय्यो अमर विमाण ॥ १ ॥ गुणवता साधनमु ॥

कुछ बाल हीन उप मोचना, क्या है बरन प्रमाण ॥
 मुनइ पित के पावइ की पावी मुन नमराए ॥ २ ॥ कुल ॥
 इतिथाना कुल पावठा की पावइ पतिप हू ॥
 मनी भावना भावइ की पाव उपतरन दूर ॥ ३ ॥ कुल ॥
 धर्मत सचकइ ह्योतरन की सीसो धर्मन मचात ॥
 के बर नाटी होबसो की हक नन होइ कनक ॥ ४ ॥ कुल ॥
 पत्नी नवर हो बावली की बचइ तई कपक सोक ॥
 देव दुरा नाप बाप की सावइ उक्ता सोक ॥ ५ ॥ कुल ॥
 कुनपति बन्ध बासीवइ की की दुन्य की कहरन ॥
 पावार करी सोबरी की हँ.....भीरन कहरन ॥ ६ ॥ कुल ॥
 एक बन्ध माहि सोमता की सोना बिबर सुवास ॥
 मोहना की ना कल कला की सीसा कुडि बिबल ॥ ७ ॥ कुल ॥
 नीर पथन कइ नीरन हो हक पति परबस ॥
 बाह बिबर भरनलीवइ की पतिह कुण्डि बिबल ॥ ८ ॥ कुल ॥
 एक सेवक हव नीलवइ की पतर कइर पितबल ॥
 कुलकला कुलता बलपुत्री तत नन सीतल बल ॥ ९ ॥ कुल ॥

॥ इति बीरबलनम्यविरचितविषयमाप्तं ॥

२२६३. बन्धनपट्टिका—॥० सुवसागर। पथ हं ४। ना १२५१ दण्ड। बला—हं१००।

विपय—कथा। र कला। र कल ×। के कल ×। पूर्ण। के हं १०। क कथार।

विशेष—क कथार के हक इति के हं १११ की नीर है।

२२६४. बन्धनपट्टिका—॥० पथ हं २४। ना ११५३ दण्ड। बला—हं१००। विपय—कथा।

र कल ×। के कल ×। पूर्ण। के हं १। क कथार।

विशेष—कथ कथार की है।

२२६५. बन्धनपट्टिका—॥० सुवसागर। पथ हं १। ना ११५४ दण्ड। विपय—

कथा। र कल ×। के कल ×। पूर्ण। के हं १११। क कथार।

२२६६. बन्धनपट्टिका—॥० सुवसागर। पथ हं ७०। ना ११५५ दण्ड। बला—हं१००। विपय—कथा।

र कल हं १००। के कल हं १०११। पूर्ण। के हं १। क कथार।

विशेष—दण्ड के पट्टिका विपुलकण्ठ एकीकृत स्तोत्र भाषि नीर है।

कथा साहित्य ।

२५६६ चारमित्रों की कथा—अजयराज । पत्र सं० ५ । भा० १०३×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० ५५३ । च भण्डार ।

२५७० चित्रसेनकथा । पत्र सं० १८ । भा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८२१ वीप बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २२ । व्य भण्डार ।

विशेष—श्लोक सख्या ४६५ ।

२५७१ चौआराधनाउद्योतककथा—जोधराज । पत्र सं० ६२ । भा० १२½×७ इ च । भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ मगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २२ । घ भण्डार ।

विशेष—म० १८०१ की प्रति में लिखी गई है । जमनालाल साहू ने प्रतिलिपि की थी ।

स० १८०१ 'चाकसू' इतना धीरे लिखा है । मूल्य—५) ३) ॥ इस तरह कुल ५॥३ लिखा है ।

२५७२ जयकुमारसुलोचनाकथा " । पत्र सं० १६ । भा० ७×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

२५७३ जिनगुणसपत्तिकथा । पत्र सं० ४ । भा० १०½×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में (वे० सं० १८८) की एक प्रति धीरे है जिसकी जयपुर में मागीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

२५७४ जीवजीतसहार—जैतराम । पत्र सं० ५ । भा० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसमें कवि ने मोह धीरे चेतन के सग्राम का कथा के रूप में वर्णन किया है ।

२५७५ ज्येष्ठजिनवरकथा । पत्र सं० ४ । भा० १३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में (वे० सं० ४८४) की एक प्रति धीरे है ।

२५७६ ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्ति । पत्र सं० ११ से १४ । भा० १२×५ इ च । भाषा—
हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७३७ आसोज बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० २०८० । अ
भण्डार ।

विशेष—जसकीर्ति देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

२५७७ दोलामारुवणी चौपई—कुशललाभगणि । पत्र सं० २८ । भा० ८×४ इ च । भाषा—
हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । ङ भण्डार ।

कुछ बाल सीस तप मानना, म्या रे बरन प्रपाद ॥
 मुनइ भित के पलइ की पासी मुख कम्पाए ॥ १ ॥ कुण ॥
 बहियला कुण पलवा की बावहु पाठिप दूर ॥
 कही मानवा भावइ की बाइ कपतए दूर ॥ २ ॥ कुल ॥
 बँसत सबाइइ इओतारइ की नीमो जमव धमस ॥
 के बर गारी सोकनो की लख मल ह्रीइ कसास ॥ ४ ॥ कुण ॥
 पची बबर सो पावछो की वसइ छाँ घपवक लोक ॥
 हेव कुण बारा बाला की लावइ कला लोक ॥ ५ ॥ कुल ॥
 कुबछति बन्ध बासीबइ की की मुन्य की बसपव ॥
 मानारइ कटो सोकनो की धं.....वीरव कपतव ॥ ६ ॥ कुल ॥
 लख पल बहइ सोकना की सोबा विवर मुबल ॥
 नीहला की बा कल मला की बीका दुहि भिवाल ॥ ७ ॥ कुल ॥
 वीर बचन कइ वीरव ह्री लख पति बरकवस ॥
 बाळ विवर बरवलीवइ की वीरि कुछहि भिवाल ॥ ८ ॥ कुल ॥
 लख लख दूब बीनबइ की बडर बहइ भितवाल ॥
 कुलकण्ठा कुलठा बावहुवी लख लख वीरिठ बाल ॥ ९ ॥ कुल ॥

॥ इति श्रीबलनलकविनिर्दिष्टवार्त्त ॥

२५६३. बाल्यपठिकथा—अ० अष्टमांश । वच ४ । वा १२×१ दृष्ट । बाला—५८५ । विपद—नवा । र बाल × । ले कल × । पूर्ण । के १७ । क कथार ।

विशेष—क कथार के एक प्रति के ११६ की धीर है ।

२५६६. बाल्यपठिकथा—। वच २४ । वा ११×२ दृष्ट । बाला—५८५ । विपद—नवा । र बाल × । ले कल × । पूर्ण । के १ । क कथार ।

विशेष—क कथार की है ।

२५६७. बाल्यपठिकथा—अष्टमांश । वच १ । वा ११×२ दृष्ट । विपद—नवा । र बाल × । ले बाल × । पूर्ण । के ११६ । क कथार ।

२५६८. बहइसकी कथा—हीकथ । वच ७ । वा ८×२ दृष्ट । बाला—५८५ । विपद—नवा । र बाल १७ । ले बाल १७११ । पूर्ण । के १ । क कथार ।

विशेष—इसके अनिर्दिष्ट किमुलकण्ठ एनीवाल लोचन प्रति धीर है ।

कथा साहित्य]

२५६६ चारमित्रों की कथा—अजयराज । पृथ स० ५ । भा० १०३×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । १० काल स० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल स० १७३३ । पूर्ण । वे० स० ५५३ । अ मण्डार ।

२५७०. चित्रसेनकथा । पृथ स० १८ । भा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

१० काल × । ले० काल स० १८२१ वीप बुदी २ । पूर्ण । वे० स० २२ । अ मण्डार ।

विशेष—श्लोक मध्या ४६५ ।

२५७१ चौश्राधनाउद्योतककथा—जोधराज । पृथ स० ६२ । भा० १२½×७ इ च । भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल स० १८८६ मगनिर सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० २२ । घ मण्डार ।

विशेष—स० १८०१ की प्रति में लिखी गई है । जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

स० १८०१ चाकसू" इतना और लिखा है । मूल्य—५) ॥ इस तरह कुल ५॥ लिखा है ।

२५७२ जयकुमारसुलोचनाकथा " । पृथ स० १६ । भा० ७×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६ । छ मण्डार ।

२५७३ जितगुणसपत्तिकथा । पृथ स० ४ । भा० १०½×५ इ च । भाषा संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल स० १७८५ वैश्व बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ३११ । अ मण्डार ।

विशेष—क मण्डार में (वे० स० १८८) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर में मांगीलाल बज ने
प्रतिलिपि की थी ।

२५७४ जीवजीतमहार—जैतराम । पृथ स० ५ । भा० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसमें कवि ने मोह और चेतन के संग्राम का कथा के रूप में वर्णन किया है ।

२५७५ ज्येष्ठजिनवरकथा । पृथ स० ४ । भा० १३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८८३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में (वे० स० ४८४) की एक प्रति और है ।

२५७६ ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्ति । पृथ स० ११ से १४ । भा० १२×५ इ च । भाषा—
हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल स० १७३७ आसोज बुदी ४ । अपूर्ण । वे० स० २०८० । अ
मण्डार ।

विशेष—जसकीर्ति देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

२५७७ दोलामारुखणी चौपई—कुराललाभगणि । पृथ स० २८ । भा० ८×४ इ च । भाषा—
हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३८ । छ मण्डार ।

२५७८. हात्तामाकुलीकीबात— । पत्र नं १ से ७ । पृ० १४० ई । पृ० १४० ई । पृ० १४० ई । पृ० १४० ई । पृ० १४० ई ।

विषय—पत्र । रं । पत्र ४ । के । पत्र नं १२ । पत्राङ्क सुदी । धर्मार्थ । के । १२१२ । ट मध्यार ।

विषय—१ ४ ३ तथा १४५ पत्र नदी है ।

हिन्दी पत्र तथा बोधे हैं । पुन १ । पीछे हैं विमये बोलायक की बात तथा राजा नर की विपत्ति बाधित वा वर्तन है । अन्तिम भाग इस प्रकार है—

राजानी पीछरवी राजा विविध प्रीति के बीच रानी । ई प्रति मरवक की राज करे हैं । राजानी की पू क नंबर निम्नवत् स्वर की हुआ । राजावत् की कुंठि नंबर पीरवत्त की हुआ । दोम नंबर बोधा की क हुआ । बोधा की की राजानी की की महारथ की की विरवा मु अवर बोधी हुई । निम्नवत् स्वर की नंबर मु बोलाय मुअम्मा की बली । बोला मु राजा राजस्वर्ग की तारी पीछी एक तीरत हुई । राजाविराज महाराजमा की लवरी ईवरीहिन्दी रानी पीछी एक ती बार हुई ॥

इति की बोलायवकी वा राजा नर वा विवा की बाट्या मरुत्त । पिछी मरु सुदी पुनवार नं १२ वा निम्नवत्तयम बावरात की पोषी मु अवार निम्नवत्तयम बावरात के—

पत्र ७० वर मुअ गृ वार रत के कविता तथा बोधे हैं । मुअरत तथा राजावत्त के कविता एवं विरवत्त की मुअविद्य की हैं ।

२५७९. हात्तामाकुली की बात— । पत्र नं १ । पृ० १४० ई । पृ० १४० ई । पृ० १४० ई । पृ० १४० ई । पृ० १४० ई ।

विषय—१२ वर तक पत्र तथा पत्र विपत्ति है । बीच बीच के बोधे की दिने बने हैं ।

२५८०. हात्तामाकुलीकीबात— । पत्र नं ४२ के १ । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई ।

विषय—मुअवार मर के प्रकाश की वचन है ।

२५८१. हात्तामाकुलीकीबात (रोटलीकथा) —पृ० अन्तिम । पत्र नं २ । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई ।

विषय—इकी मध्यार के १ प्रति (के नं ३) की वीर है ।

२५८२. हात्तामाकुलीकी (राटलीक) कथा—मुअनन्दि । पत्र नं २ । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई । पृ० १२४ ई ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १३३७) ख भण्डार में एक प्रति (वे० स० २५४)
ह भण्डार में तीन प्रतिया (वे० स० ६६२, ६६३, ६६४) और हैं ।

२५८३. त्रिलोकसारकथा । पत्र स० १२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
१० काल स० १६२७ । ले० काल स० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३८७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

स० १८५० शके १७१५ मिति ज्येष्ठ शुक्ला ७ रविवदिने लिखायित प० जी श्री भागचन्दजी माल कोटै
पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजी चेलान लेवा । दक्षण्याकीर उ भाई कै राठि हुई सूवादार तक्की भाग्यो राजा जी की
फने हुई । लिखित पुकजी मेघराज नगरमध्ये ।

२५८४ वृत्तात्रय । पत्र स० ३६ । आ० १३३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १०
२० काल × । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । वे० स० ३४१ । ज भण्डार ।

२५८५ दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र स० २३ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४१४) क भण्डार में १ प्रति (वे० स०
२६३) ख भण्डार में १ प्रति (वे० स० ३६) च भण्डार में १ प्रति (वे० स० ५८६) तथा ज भण्डार में ३ प्रतिया
(वे० स० २६५, २६६, २६७) और हैं ।

२५८६ दर्शनकथाकोश । पत्र स० २२ से ६० । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

२५८७ दशमूर्खों की कथा । पत्र स० ३६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
१० काल × । ले० काल स० १७४६ । पूर्ण । वे० स० २६० । छ भण्डार ।

२५८८ दशलक्षणकथा—लोकसेन । पत्र स० १२ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वे० स० ३५० । अ भण्डार ।

विशेष—घ भण्डार में दो प्रतिया (वे० स० ३७, ३८) और हैं ।

२५८९ दशलक्षणकथा । पत्र स० ५ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१३ । अ भण्डार ।

विशेष—ह भण्डार में १ प्रति (वे० स० ३०२) की और है ।

२५९० दशलक्षणप्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०७ । अ भण्डार ।

२४११ बामकथा—मारुमङ्ग । पत्र सं १ । या ११ × ८ इंच । माता—हिन्दी । पिता—
बन्ना । र बाल × । मे बाल × । पूर्ण । के सं ४१६ । अ मन्थार ।

विमेष—इसके प्रतिरिक्त अ मन्थार में १ प्रति (के सं १७६) अ मन्थार में १ प्रति (के सं
१४) अ मन्थार में १ प्रति (के सं १४) अ मन्थार में १ प्रति (के सं १) तथा अ मन्थार में १ प्रति
(के सं १६०) धीर है ।

२४१२ बामप्रीक्षितपभावनस्य चाक्रास्या—समयमुद्गरासि । पत्र सं १ । या १ × ४ इंच ।
माता—हिन्दी । पिता—बन्ना । र बाल × । मे बाल × । पूर्ण । के सं ३२ । अ मन्थार ।

विमेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं २१७६) भी धीर है । जिस पर केवल बाल बीम उप
वाचना ही विना है ।

२४१३ देवराजमन्थाराज बीपई—सोमदेवसूरि । पत्र सं २१ । या ११ × २२ इंच । माता—
हिन्दी । पिता—बन्ना । र बाल × । मे बाल × । पूर्ण । के सं १७ । अ मन्थार ।

२४१४ देवराजमन्थाराज— । पत्र सं २ मे २ । या ११ × २२ इंच । माता—मैसूर । पिता—
बन्ना । र बाल × । मे बाल सं १७३३ कातिक सुदी ७ । धूर्त । के सं १६९१ । अ मन्थार ।

२४१५ हावराजमन्थाराज— । पत्र सं ७ । या ११ × २२ इंच । माता—मैसूर । पिता—
बन्ना । र बाल × । मे बाल × । पूर्ण । के सं ३२३ । अ मन्थार ।

विमेष—अ मन्थार में ही प्रति (के सं ७३ एक ही स्थान) धीर है ।

२४१६ हावराजमन्थाराज— । पत्र सं २२ । या ११ × २२ इंच । माता—हिन्दी ।
र बाल × । मे बाल सं १२४ वैशाख सुदी ४ । धूर्त । के सं ३६६ । अ मन्थार ।

विमेष—विमेष बचने धीर है ।

बीम एकलकीका— न बालसमर माता— हिन्दी ।

भुवनेश्वरपन्ना— " " "

बीकानेरपन्ना— न धूर्त " हिन्दी र बाल सं १७३३

विमेष—विमेष बचने धीर है ।

राजबीमपन्ना— " " "

२४१७ हावराजमन्थाराज— । पत्र सं ७ । या ११ × २२ इंच । माता—मैसूर । पिता—बन्ना । र
बाल × । मे बाल × । धूर्त । के सं २ । अ मन्थार ।

विमेष—अ मन्थार में एकल के माता पर इसी रचना भी है ।

न भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १७२, ४३६ तथा ४४०) और हैं ।

२५६८ धनदत्त सेठ की कथा । पत्र स० १४ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल स० १७२५ । ले० काल × । वे० स० ६८३ । अ भण्डार ।

२५६९ धन्नाकथानक । पत्र स० ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७ । घ भण्डार ।

२६०० धन्नासालिभद्रचौपई । पत्र स० २४ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र हैं । २४ से आगे के पत्र नहीं है । प्रति अधिक प्राचीन नहीं है ।

२६०१ धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द । पत्र स० ३७ । आ० ११३×४३ इंच । विषय—कथा । भाषा—हिन्दी पद्य । २० काव स० १७३६ । ले० काल स० १८३० भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ६० । ख भण्डार ।

विशेष—खरतरगन्धर्पति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजैराजगणि ने यह ढाल कही है । (पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२६०२ धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा । पत्र स० १२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८५५ । पूर्ण । वे० स० ६१ । ख भण्डार ।

२६०३ धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—वृन्दावन । पत्र स० २४ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल स० १८०७ । ले० काल स० १६२७ सावण सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३३६ । क भण्डार ।

नदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६२ ।

विशेष—सागनेर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) स० १७८२ की लिखी हुई और है ।

२६०४ नदीश्वरविधानकथा—हरिपेण । पत्र स० १३ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६५ । क भण्डार ।

२६०६ नदीश्वरविधानकथा । पत्र स० ३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७७३ । ट भण्डार ।

२६०७ नागमता । पत्र स० १० । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—यदि वीर नाम विना प्रकर है ।

वी नामयता शिखरों—

बनर हीरपुर पश्यतु अलीबद, माहि हार कैसरसेव ।
 मयलि करत नर बोन मैई नद करत गुम्हाटी सेव ॥१॥
 करत गुम्हाटी सेवनद बसिमरतद पैदासीया ।
 कसब बंजीबदद शिखरित्त बर, यवर सेव मोतासीया ॥२॥
 बाल सेव बालाद बसिका, करत गुम्हाटी सेव ।
 बनर हीरपुर पश्यतु अलीबद, माहि हार कैसरसेव ॥३॥
 राज बहुरातर बहुराद बाले निरमल नीर ।
 बंक बकत मापीरनी, बघुबद वरनद वीर ॥४॥
 नीर मैई बंक मोकमद लानी पति कएबार ।
 बाल बवारन पनीद बोबद, बघुबद वरनवार ॥५॥
 बहुराद बालादी बिहो बैकता, बाई शिखरित्त वदद ।
 बंवा ललत ललत बु बालत राज बहुरा वरनद बर ॥६॥
 राज मोकमद बै बालीन बाले बुर ही बाल ।
 बाले गुप्पी बालीन बाले गुप्पी बाल ॥७॥
 बाले गुप्पी बाल नद, बाले गुप्पी बालीन ।
 बाकमुब बिनद बालनी हरि कल वीर बुलतनी ॥८॥
 बाल बैकत करलत, बैकती राज मय मुँद बु बाली ।
 बुक बरनक बरनद, बालो राजनी बालाद बाली ॥९॥

१०४—

एक कथिलि बर बाली विचोही बरतार ।
 बंक ललत बिर बरलही ललतु बाली बंजरी ॥
 ललतु बालीन बाली, बुक भिन नरद बघुबद ।
 बालि लहरि विष बंजालिद ललतु बरन नद बरद
 बरन करत बुक बाल हरे बु ललहा बाली ।
 विचोही बरतार एक कथिलि बर बाली ॥१॥
 बालाद बाल बाली बाल बाली बरनवार ।

चद्र रोहिणी जिम मिलिउ, तिम घण मिली भरतार नइ ॥

तित्य गिराणउ तूठउ बोलइ, अमीयविष गयउ छुडी ।

ढक तरणइ शिर वूठउ, उठिउ नाह हई मन सती ॥

मू घ भगलक छाजइ, ।

बहु कासी भूमकार डाक छुटा फल वाजइ ॥

इति श्री नागमता सपूर्णम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोयी आ० मेरुकीति जी की ॥ कथा के रूप में है । प्रति अशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८ नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र स० १६ । आ० ११३×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल स० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३६७) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० स० १०८) की
घोर है ।

ज भण्डार वाली प्रति की गरुडमलजी गोष्ठा ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

२६०९ नागश्रीकथा—किशनसिंह । पत्र स० २७५ । आ० ७३×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । १० काल स० १७७३ सावण सुदी ६ । ले० काल स० १७८५ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । क
भण्डार ।

विशेष—जोबनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से आगे भद्रबाहु चरित्र हिन्दी में है किन्तु
अपूर्ण है ।

२६१० निशल्याष्टमीकथा । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
१० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० स० २११७ । अ भण्डार ।

२६११ निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र स० ४० से ५५ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८७ । अ भण्डार ।

विशेष—स्व भण्डार में १ प्रति (वे० स० ६८) की घोर है जिसकी कि स० १८०१ म महाराजा ईश्वर
सिंहजी के शासनकाल में जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२ निशिभोजनकथा । पत्र स० २१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३ नेमिच्याहलो । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२५५ । अ भण्डार ।

विशेष—आरण्य—

मल्लदीपुटी रात्रिबाहु खमरविभव रस्य भारो ।
 तस नंदन भी वेमनी हु बांनल वरण लरीयो ॥
 वन वन बने छो गयो रैव पावकररण वरणा ।
 वाकररणनै भीमनी भी खोरयो हु हुलो ॥
 लखरवनी रो बंद घरेयो नै धाकल भी ।
 हुलो बावनी हु भी रो नवे कल्याण पु पावलो भी ॥

अति मधुद एवं नीर है ।

२६१४ मेमिराककममका—गोपीकुण्ड । पत्र सं १ । धा १ ५४५ दम । माता—हिन्दी ।

विषय—नया । २ नाम सं १ १३३ कामरु गुपी ४ । नै कमल × । कपूरु १ । नै सं २२३ । धा अम्बार ।

आरण्य—

भी विरा वरल कमल बनी पनी धरुमार ।
 वेमनाव र बास लरो व्याहृव बहू मुकबाय ॥
 हारावरी लपटी लली बीरु रैव यम्बार ।
 हेलुटी भी कमला मुबर बहू विस्तार ॥
 भीमा भी बीरुल जिता लीला वारा वरल ।
 छटि कोठि बर बाहि २ वाहर बहुर वमाय ॥२॥

अभिषेक—

राजल नैम लली व्याहृवी भी वावनी भी वरवाटी ।

बल कुल कुलली लली भी वावनी मुल धरार ॥

कदम्ब—

अवन लाल लीन कुनली बार नंबनवार ए ।

लसल लमारा वरल लरेकडि बांन कुल मुम्बार ए ।

भी वेम पावन ललन लीटी लल वरल वभावह ।

मुदल लीला लहि लहि लली लही नया अमल ए ॥

अति भी नैम रावर्ष विवाहणी लीरु ।

लसल लाने वन वन भी लाल भी है वह लपुर्ण है ।

२६१५ पद्माव्याल—विष्णु शर्मा । पत्र सं १ । धा १२३५४३ दम । माता—मैथिल । विषय—

कमा । २ नाम × । नै कमल × । कपूरु १ । नै सं २ ११५ अम्बार ।

विशेष—कैवल २१५० पत्र है । क अम्बार में १ अति (नै सं ४ १) कपूरु नीर है ।

२६१६ परमरामन्या । पत्र स० ६ । भा० १०६×४३ इञ्च । भाषा-मल्लत । विषय-कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०१७ । अ मण्डार ।

२६१७ पन्थिविधानकथा—खुशालचन्द्र । पत्र न० २१ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पत्र ।

विषय-कथा । २० काल स० १७८७ फागुन बुदा १० । पूर्ण । वे० स० २० । म मण्डार ।

२६१८ पल्लविधानत्रतोपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ११७ । भा० ११३×५ इञ्च । भाषा-मल्लत । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४५६ । क मण्डार ।

विशेष—ए मण्डार में एक प्रति (वे० स० १०६) तथा ज मण्डार में १ प्रति (वे० स० ८३) निम्ना ले० काल स० १६१७ दावे है और है ।

२६१९ पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र न० ५ । भा० ११×८ इञ्च । भाषा-मल्लत । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७८ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्राम में ५० मनोहलालजी पाटनी न लिखी थी ।

२६२० पुण्याश्रवकथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र । पत्र स० २०० । भा० ११×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६८ । क मण्डार ।

विशेष—ए मण्डार में एक प्रति (वे० स० ४६७) तथा छ मण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ६६, ७०) और हैं किन्तु तोना ही अपूर्ण हैं ।

२६२१ पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम । पत्र न० २४८ । भा० ११३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पत्र । विषय-कथा । २० काल स० १७७७ भाद्रवा सुदी ५ । ले० काल स० १७८८ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३७० । अ मण्डार ।

विशेष—महमदाबाद में श्री ग्रामनेन ने प्रतिलिपि की थी । इसी मण्डार में ५ प्रतिया (वे० स० ४३३, ४०६, ८६५, ८६६, ८६७) तथा छ मण्डार में ६ प्रतिया (वे० स० ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९) तथा अ मण्डार में १ प्रति (वे० स० ६३५) छ मण्डार में १ प्रति (वे० स० १७७) ज मण्डार में १ प्रति (वे० स० १३) म मण्डार में १ प्रति (वे० स० २६८) तथा ट मण्डार में एक प्रति (वे० स० १६४६) और है ।

२६२२ पुण्याश्रवकथाकोश । पत्र स० ६४ । भा० १६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १६ । पूर्ण । वे० स० ५८ । म मण्डार ।

विशेष—काबूराम साह ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द्र के पुत्र सोनपाल से कराकर चौधरियों के मदिर में चढ़ाई ।

इसके अतिरिक्त छ मण्डार में एक प्रति (वे० स० ४६२) तथा ज मण्डार में एक प्रति (वे० स० २६०) [अपूर्ण] और है ।

२६३. पुष्पाञ्जलीप्रतकथा—टेकचम्पू । पत्र सं १४१ । या ११२× इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । र. काल सं १६२ । ले. काल × । पूर्ण । के. सं ४६७ । छ. मण्डार ।

२६४. पुष्पाञ्जलीप्रतकथा की सूची— । पत्र सं ४ । या १३×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । के. सं १४६ । छ. मण्डार ।

२६५. पुष्पाञ्जलीप्रतकथा—श्रुतकीर्ति । पत्र सं २ । या ११×२ इञ्च । भाषा—होराहट । विषय—

कथा । र. काल × । ले. काल × । पूर्ण । के. सं १३६ । छ. मण्डार ।

विशेष—छ. मण्डार में एक प्रति (के. सं २६) खीर है ।

२६२६. पुष्पाञ्जलीप्रतकथा—अनिरास । पत्र सं ३१ । या १५×२ इञ्च । भाषा—होराहट ।

विषय—कथा । र. काल × । ले. काल सं १९७७ कानुन नुसी ११ । पूर्ण । के. सं ४७४ । छ. मण्डार ।

विशेष—यह प्रति बागड रोड स्थित बाटसन नगर में श्री बल्लुपुत्र्य वैवालय में बह्म ठानरकी के स्थित बसुहास में मिली थी ।

२६२७. पुष्पाञ्जलीप्रतकथा— । पत्र सं १६१ । या १५×२ इञ्च । भाषा—होराहट ।

विषय—कथा । र. काल × । ले. काल × । मपूर्ण । के. सं २२१ । छ. मण्डार ।

२६२८. पुष्पाञ्जलीप्रतकथा—सुरासकचम्पू । पत्र सं ६ । या १५×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । र. काल × । ले. काल सं १९४२ कानुन नुसी ४ । पूर्ण । के. सं १ । छ. मण्डार ।

विशेष—छ. मण्डार में एक प्रति (के. सं १६) की खीर है जिसे बहुला बोधी पद्मालाल ने बरपुर में प्रतिनिधि की थी ।

२६२९. वैताकचकीसी— । पत्र सं २२ । या १५×२ इञ्च । भाषा—होराहट । विषय—कथा । र. काल × । ले. काल × । मपूर्ण । के. सं २२ । छ. मण्डार ।

२६३०. अलामरस्तात्रकथा—मकमल । पत्र सं ६ । या १५×२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र. काल सं १९६ । ले. काल सं १९६ कानुन नुसी ७ । पूर्ण । के. सं १५२ । छ. मण्डार ।

विशेष—छ. मण्डार में एक प्रति (के. सं ७११) खीर है ।

२६३१. अलामरस्तात्रकथा—विमोहीशाल । पत्र सं १५७ । या १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र. काल सं १७४७ कानुन नुसी २ । ले. काल न १९४६ । मपूर्ण । के. सं १९१ । छ. मण्डार ।

विशेष—धीप बा बैचल एव पत्र नम है ।

इनके अनिरास छ. मण्डार में २ प्रति (के. सं २२६ २२४) छ. मण्डार में २ प्रति (के. सं १९ २२) तथा छ. मण्डार में (के. सं १९६) की खीर है ।

२६३२ भक्तामरस्तोत्रकथा—पञ्चालाल चौवरी । पत्र स० १२८ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल स० १६३१ फागुण सुदी ४ । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वे० स० ५४० । क भण्डार ।

२६३३ भोजप्रबन्ध । पत्र स० १२ से २५ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ह भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५७६) की ओर है ।

२६३४ मधुकैटभवध (महिषासुरवध) । पत्र स० २३ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५३ । अ भण्डार ।

२६३५ मधुमालतीस्था—चतुर्भुजदाम । पत्र स० ४८ । आ० ६×६ $\frac{१}{२}$ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल स० १६२८ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५८० । ह भण्डार ।

विशेष—पद्य स० ६२८ । सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अन्त के ५ पत्रों में स्तुति दी हुई है । इसी भण्डार में १ प्रति [अपूर्ण] (वे० स० ५८१) तथा १ प्रति (वे० स० ५८२) की [पूर्ण] ओर है ।

२६३६ मृगापुत्रचण्डाला । पत्र स० १ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मृगारानी के पुत्र का चण्डाला है ।

२६३७ माधवानलकथा—आनन्द । पत्र स० २ से १० । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८०६ । ट भण्डार ।

२६३८ मान्तुगमानवतिचौपड़—मोहनविजय । पत्र स० २६ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा हिन्दी

पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८५१ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५३ । छ भण्डार ।

विशेष—आदि अ तमाम निम्न प्रकार है—

आदि—

ऋषभ जिहव पदाबुजे, मधुकर करी लीन ।

भागम गुण सोइसवर, अति भारव थी लीन ॥१॥

यान पान सम जिनकन, तारण भवनिधि तोय ।

आप तर्या तारे अवर, नेहने प्रणमति होइ ॥२॥

भावे प्रणमु भारती, वरदाता सुविलास ।

चावन अख्यर की भरयो, अखय खजानो जास ॥३॥

धुक्त करमा कैई धनि बना, एहू-बीजे हुनो धक्ति ।

विम धुकाइ ठेहवा पर नीलो निवे भलि । ४ ।

पं. मं. म— पूर्ण नाब सुनीचर रूप बर्ण बुद्धि माता सुनि पये है । (धाने पत्र पटा हुआ है) ४७ डाब्ब ।

१३३ मुक्तावलिप्रतकथा—सुतसागर । पत्र सं ४ । पृ. ११५२ द. व. भाषा—संस्कृत । विपद—

कथा । १. काल × । २. काल सं १५७३ पीप सुदी २ । पूर्ण । ३. सं ७४ । ४. मथार ।

विशेष—कति ब्याचर के प्रतिमिति की पो ।

१३४ मुक्तावलिप्रतकथा—सामग्र्य । पत्र सं ११ । पृ. १३५२ द. व. भाषा—संस्कृत ।

विपद—कथा । १. काल × । २. काल सं १३२ सावन सुदी २ । ३. सं ७४ । ४. मथार ।

विशेष—बकुल में निमिनाम बोधालय में बभ्रुनाम के चत्वार्य प्रतिमिति हुई थी ।

१३५ मुक्तावलिप्रतकथा— । पत्र सं ६ से ११ । पृ. १५४ द. व. भाषा—संस्कृत ।

विपद—कथा । १. काल × । २. काल सं १३४१ पञ्चम सुदी २ । पूर्ण । ३. सं १३६ । ४. मथार ।

विशेष—सन् १३४१ वर्षे पञ्चम सुदी २ श्रीसुमंतसे बलभारतवरी चरत्तरीबन्धे श्रीशुभानुवाचमंतसे

बहुविध नीपधनरिक्ता उत्तरी बहुविध नीपुबन्धेवा उत्तम्य मुनि विनयनरिक्ता बलिभारतवरी बालराजीसे धनवी
सेवा भर्ता होनी उत्तुमा संघरी बन्धन मातल गन्तु, जालय लक्षमल देवाभने संघरी शानु भासा नीलविटी उत्तुमा
हैनदाय रिपवदल सेने टी काह देवराज भासा हिमविटी एवं रिई टीहिणीकुलवनीचबालक सिधारत ।

१३६ मेघमाझाप्रतकथा— । पत्र सं ११ । पृ. १९५२ द. व. भाषा—संस्कृत ।

विपद—कथा । १. काल × । २. काल × । पूर्ण । ३. सं १ । ४. मथार ।

विशेष—क मथार में एक प्रति (३ सं १७६) भीर है ।

१३७ मेघमाझाप्रतकथा । पत्र सं २ । पृ. १९५२ द. व. भाषा—संस्कृत । विपद—कथा ।

१. काल × । २. काल × । पूर्ण । ३. सं १६ । ४. मथार ।

विशेष—क मथार में एक प्रति (३ सं ७४) भीर है ।

१३८ मेघमाझाप्रतकथा—सुराकार्णव । पत्र सं २ । पृ. १९५२ द. व. भाषा—हिन्दी ।

विपद—कथा । १. काल × । २. काल × । पूर्ण । ३. सं २ । ४. मथार ।

१३९ नीतिप्रतकथा—गुणगम । पत्र सं २ । पृ. १९५२ द. व. भाषा—संस्कृत । विपद—

कथा । १. काल × । २. काल × । पूर्ण । ३. सं ४४१ । ४. मथार ।

२६४६ मौनित्रतकथा । पत्र स० १२ । भा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८२ । घ मण्डार ।

२६४७ यमपालमातङ्गीकथा । पत्र स० २९ । भा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५१ । ख मण्डार ।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ९ तक पञ्चरथ राजा दृष्टात कथा तथा पत्र १० से १६ तक पञ्च नमस्कार कथा दी हुई है । कहीं २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । कथायें कथाकोश में से ली गई हैं ।

२६४८ रत्नावन्धनकथा—साथूराम । पत्र स० १२ । भा० १२३×८ इ च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६९१ । झ मण्डार ।

२६४९ रत्नावन्धनकथा । पत्र स० १ । भा० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल स १८३५ सावन सुदी २ । वे० स० ७३ । छ मण्डार ।

२६५० रत्नत्रयगुणकथा—प० शिवजीलाल । पत्र स० १० । भा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७२ । अ मण्डार ।

विशेष—ख मण्डार में एक प्रति (वे० स० १५७) और है ।

२६५१ रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर । पत्र स० ४ । भा० ११३×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १९०४ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ६५२ । क मण्डार ।

विशेष—छ मण्डार में एक प्रति (वे० स० ७३) और है ।

२६५२ रत्नावलिप्रतकथा—जोशी रामदास । पत्र स० ४ । भा० ११×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वे० स० ६३४ । क मण्डार ।

२६५३ रविप्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र स० १८ । भा० ६३×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६ । ज मण्डार ।

२६५४ रविप्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० १८ । भा० ६×३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल स० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । छ मण्डार ।

२६५५ रविप्रतकथा—भाऊकवि । पत्र स० १० । भा० ९३×६ इ च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल स० १७९५ । पूर्ण । वे० स० ६६० । झ मण्डार ।

विशेष—छ मण्डार में एक प्रति (वे० स० ७४), ज मण्डार में एक प्रति (वे० स० ४१), झ मण्डार में एक प्रति (वे० स० ११३) तथा ट मण्डार में एक प्रति (वे० स० १७५०) और हैं ।

२६२६ राठीकरतनमहेश्वरोत्तरी । नम सं ३ से । या २३५४ ई.स. । माता-हिन्दी

[राजस्थानी] विषय-कथा । १ काल सं १२१३ बीजाब कुट्टा २ । के काल × । पयुर्ल । के सं २७७ । अ
अम्बार ।

विषय-अन्तिम पाठ विष्णु प्रकार है—

कथा—

सावित्रीकथा भीमा मारी छम्ही मारी ।

गुंवर सोचवै इधिर नह बचाइ ॥१॥

हुवा बचसि मंगल हरष मचीना मेह बचल ।

सुर पवन कवीर्यं पठेय विभीषा बाह बछ्छ ॥२॥

धी सुरवर कुरवचरे, वैकुण्ठ कीचालल ।

रत्ना रत्नामरपठौ सुर अविचल बह बाल ॥३॥

मल वीरबाहू मिथि मचपी पचरीतरं बरसल ।

बार कुल्ल जीवद्विष्ट, छेहु सुरक बहसल ॥४॥

बीरि कौं विभीषी कवी राजो रतन रत्नाल ।

सुरा सुरा संकलत नह मोटा धुराल ॥५॥

मिली राठ बाबा जमेसी राठा का आर गुंवर हिन्दी कवि बाब वीरी ॥ इति श्री रामेश्वरतन महेश्व
राठीकरतरी मचनिका संयुक्त ।

२६२७ रात्रिमोक्षकथा—माधवसुख । नम सं । या ११४५ ई.स. । माता-हिन्दी नम ।

विषय-कथा । १ काल × । के काल × । पयुर्ल । के सं ४१२ । अ अम्बार ।

२६२८ अति स २ । नम सं १९ । के काल × । के सं ९२ । अ अम्बार ।

विषय-इसका कृता नाम विभिन्नोदय कथा की है ।

२६२९ रात्रिमोक्षकथा—किशोरसिंह । नम सं १४ । या ११५२ ई.स. । माता-हिन्दी नम ।

विषय-कथा । १ काल सं १७७३ भाषल कुटी ९ । के काल सं १८२ भाषल कुटी २ । पयुर्ल । के सं ९३२ ।
अ अम्बार ।

विषय-अ अम्बार में १ अति धीर है जिसका नाम काल सं १५ ३ है । मन्तराम बहू के प्रतिनिधि
कराई की ।

२६३० रात्रिमोक्षकथा— । नम सं ४ । या १२५२ ई.स. । माता-हिन्दी नम ।

१ काल × । के काल × । पयुर्ल । के सं ९८२ । अ अम्बार ।

विषय-अ अम्बार में एक अति (के सं १८१) धीर है ।

कथा-माहित्य]

२६६१ रात्रिभोजनचौपई । पत्र स० २ । भा० १०×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३१ । अ मण्डार ।

२६६२ रूपसेनचरित्र । पत्र स० १७ । भा० १०×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । ह मण्डार ।

२६६३ रैदघ्नतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६ । भा० १०×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१२ । अ मण्डार ।

२६६४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १८३४ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ७४ । छ मण्डार ।

विशेष—सफर (जयपुर) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८५७) तथा ह मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६१) भी और हैं ।

२६६५ रैदघ्नतकथा । पत्र स० ४ । भा० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । क मण्डार ।

विशेष—अ मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३६५) की है जिसका ले० काल स० १७८५ मामोज सुदी ४ है ।

२६६६ रोहिणीव्रतकथा—आचार्य भानुकीर्ति । पत्र स० १ । भा० ११३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८८८ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ६०८ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६७) छ मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) तथा ज मण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७२) और है ।

२६६७ रोहिणीव्रतकथा । पत्र सं० २ । भा० ११×८ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ मण्डार ।

विशेष—ह मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६६७) तथा क मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६५) जिसका ले० काल स० १६१७ वैशाख सुदी ३ और हैं ।

२६६८ लब्धिविधानकथा—पं० अन्नदेव । पत्र स० ६ । भा० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६०७ भाद्रवा सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । च मण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति का संक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भाद्रवा सुदी १४ सोमवासरे श्री भादिनाथचैत्यालये तक्षकगदमहादुर्गे महाराज

पीरामचंद्रकाव्यप्रस्तावने श्री तुलसीने कलाकालपद्धते तत्त्वमयीकथ्ये पुंनपुंवाचलीकथ्ये—मंडनाचार्य वर्मचन्द्रात्मने
अभ्येत्यकालात्मने प्रमतेरालीकथ्ये वा यथा तत्त्वार्थे कैतवदे——— वा. काल्प हर्ष कथा——— मंडनाचार्य वर्मचन्द्रात्म
नार्थे ।

१६६३. रोहिणीविधायकथा—। पत्र पं ५। वा १ × ४३ हज। भाषा—तंतुठ। विषय—कथा ।

१ नाथ × । १ काल × । पूर्ण । के पं १२ । अ मन्थार ।

१६६४. छोकप्रत्याकथानर्पमिश्रकथा—। पत्र पं ७। वा १ × २२ हज। भाषा—तंतुठ। विषय—

कथा । १ नाथ × । १ काल × । पूर्ण । के पं १५३ । अ मन्थार ।

विषय—स्त्रीक पं १४३ है । अति प्राचीन है ।

१६६५. बारियेसुनिकथा—छोकराजगोहीकथा । पत्र पं ३। वा १ × २२ हज। भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । १ काल × । १ काल पं १७६१। पूर्ण । के पं १७४ । अ मन्थार ।

विषय—छद्मनाम विमला के प्रतिनिधि की कवी की ।

१६६६. विक्रमचौबीलीचौपई—आमयचम्पसूरि । पत्र पं ११। वा १ × ४२ हज। भाषा—

हिन्दी । विषय—कथा । १ काल पं १७२४ भाषा कुटी १ । १ काल × । पूर्ण । के पं १२२१ । अ मन्थार ।

विषय—महामुन्दर के विद् कथ की रचना की की ।

१६६७. विष्णुकुमारमुनिकथा—मुत्तसागर । पत्र पं ३। वा ११ × २२ हज। भाषा—तंतुठ ।

विषय—कथा । १ काल × । १ काल × । पूर्ण । के पं ३१ । अ मन्थार ।

१६६८. विष्णुकुमारमुनिकथा—। पत्र पं ३। वा १ × ४३ हज। भाषा—तंतुठ । विषय—

कथा । १ काल × । १ काल × । पूर्ण । के पं १७२ । अ मन्थार ।

१६६९. वैदरमीविवाह—वेमराज । पत्र पं ९। वा १ × ४३ हज। भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।

१ काल × । १ काल × । पूर्ण । के पं २२२४ । अ मन्थार ।

विषय—प्राचीन कथनाम विमल प्रकर है—

श्लो—

विमल बरन मझी दीपदा कटी नरन सुर्ख ।

ओ राधा राधा राखेन बज्ज भगु रोष ॥१॥

रन विमलन म नालवी निवसा कटी विचार ।

पयदा बजि मुक लंपरी हुरत नाल हलद नाल ॥

मुक नालसे हो रोष नष्ट है मिह नाल पीछी कैतवी ।

वीन नालदा बज्जना बालेनचार विमोदाय मैथनी ॥

अन्तिम—

कवनाथ मुजारा छै वेदरभी वेस्वार ।
 सुख अनता भोगिया वेले हुवा भरणगार ॥
 दान देई बारित लीपी होवा तो जय जयकार ।
 पेमराज भुए इम भरी, मुक्त गया तत्काल ॥
 मरी भुरी जे साभली वेदरभी तरणी विवाह ।
 भएण तास वै सुख सपने पढुत्या मुक्त मभार ।
 इति वेदरभी विवाह सपूर्ण ॥

अन्य जोरणी है । इसमें काफी ढालें लिखी हुई हैं ।

२६७६ व्रतकथाकोश—श्रुतसागर । पत्र स० ७६ । भा० १२×५३ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—
 कथा । २० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० ८७८ । अ मण्डार ।

२६७७ प्रति स० २ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १६४७ कार्तिक सुदी ३ । वे० स० ६७ । छ
 मण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कार्तिक सुदि ३ बुधवारि इद पुस्तक लिखायत श्रीमदकाष्ठासधे नदीतरगच्छे
 विद्यागणे भट्टारक श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीसोमकीर्ति तत्पुत्रे भ० यश कीर्ति तत्पुत्रे भ० श्रीउदयसेन तत्प-
 ट्टाधारणधोर भ० श्रीनिभुवनकीर्ति तत्शिष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इद पुस्तिका लिखायित खडेलवालजातीय कानलीवाल
 गोत्रे साह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ बृहद पुत्र जीनो भार्या जयनादे । द्वि० पुत्र खेमसी तस्य भार्या खेमलदे तु० पुत्र
 उत्तर तस्य भार्या महकारदे, चतुर्थ पुत्र नानू तस्य भार्या नायकदे, पञ्चम पुत्र साह वाला तस्य भार्या वालमदे, षष्ठ पुत्र
 लाला तस्य भार्या ललतादे, तेषामध्ये साह बालेन इद पुस्तक कथाकोशनामधेय ब्रह्म श्री नर्वदावै ज्ञानावरणीकर्मक्षमार्थ
 लिखाय्य प्रदत्त । लेखक लपमन श्वेतांबर ।

संवत् १७४१ वर्षे माहा सुदि ४ सोमवासरि भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य महलाचार्य श्री ३ जय-
 कीर्ति प० दीपचंद प० मयाचंद युक्ते ।

२६७८ प्रति स० ३ । पत्र स० ७३ से १२६ । ले० काल १५८६ कार्तिक सुदी २ । मपूर्ण । वे० स०
 ७४ । छ मण्डार ।

२६७९ प्रति स० ४ । पत्र स० ८० । ले० काल स० १७६५ फागुण बुदी ६ । वे० स० ६३ । छ
 मण्डार ।

इनके प्रतिरिक्त क मण्डार में २ प्रतिपा (वे० स० ६७५, ६७६) छ मण्डार ये १ प्रति (वे० स० ६८८)
 तथा ट मण्डार में २ प्रतिपा (वे० स० २० ७३, २१००) मौर हैं ।

२६८० व्रतकथाकोश—प० दामोदर । पत्र स० ६ । भा० १२×६ इ. च । भाषा—संस्कृत । विषय—
 कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७३ । क मण्डार ।

य शुक्लादिपदेषु मालवपते द्वात्रातियुक्त शिव ।
 श्रीसल्लक्षणयास्वमाश्रितवस का प्रापयन्न श्रिय ॥२॥
 श्रीमत्केशवमेनार्यवर्यवास्यादुपेयुषा ।
 पाक्षिकश्रावकीभाव तेन मालवमडले ॥
 सल्लक्षणपुरे तिष्ठन् गृहस्थाचार्यकुजर ।
 पडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्त सम्यगेकदा ॥३॥
 प्रायेण राजकार्येऽवरुद्धर्माश्रितस्य मे ।
 भाद्र किंचिदनुष्टेय व्रतमादिश्यतामिति ॥४॥
 ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तर ।
 उपविष्टसतामिष्टस्तस्याय विधिसत्तम ॥५॥
 तेनार्यश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्ठित ।
 ग्र यो वृषाशाधारेण सद्धर्मार्थमथो कृत ॥६॥
 विक्रमार्कव्यशीत्यष्टादशाब्दगतात्यये ।
 दद्याम्यापक्षिमे कृष्णे प्रयता कथा ॥७॥
 पत्नी श्रीनागदेवस्य नद्याद्धर्मैण नायिका ।
 यासीद्रत्नत्रयविधिं चरतीनां पुरस्मरी ॥८॥

इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधि समाप्त ॥

११	पुरंदरविधानकथा ।	संस्कृत पद्य	५१ मे ५४
१२	रत्नाविधानकथा ।	गद्य	५४ से ५६
१३	दशलक्षजयमाल—रङ्गधू ।	अपभ्रंश	५६ से ५८
१४	पत्न्यविधानकथा ।	संस्कृत पद्य	५८ से ६३
१५	अनयमोत्रतकथा—प० हरिचन्द्र ।	अपभ्रंश	६३ से ६६

अगरवाल वरवसि उष्णण्ड हुरियदेण ।

भक्तिं जिह्वायणपणवेवि पयडिउ पद्धडियाछदेण ॥१६॥

१६	चदनपण्ठीकथा—	”	”	६६ मे ७१
१७	मुखावलोकनकथा	—	संस्कृत	७१ से ७५
१८	रोहिणीचरित्र—	देवनटि	अपभ्रंश	७६ मे ८१
१९	रोहिणीविधानकथा—	”	”	८१ से ८५

२	अथ कनिषिधिपानकम्	—	संस्कृत	पृष्ठ ६८
२१	सुशुप्तसमीकम्—प अथ शैव			पृष्ठ ६९
२२	मौनप्रतिपिधान—रत्नकीर्ति		संस्कृत मध्य	३६ पृष्ठ ७४
२३	रुक्मसिद्धिपिधानकम्—कृष्णसेन		संस्कृत पद्य	१ [अधुना]

संवत् १९६० चर्षे चरुतुलु वरि १ सीयवतरे धीमुजर्षि वनतवारवरो वरसुतीवणे नुरमुंवावर्षि-
वणे

२६-२७ अतः प्रमाणम्—। पत्र सं १२९। या १२०२ हज। मया-संस्तुत। नियम-मया। र
कल ×। के कल ×। पूर्ण। के सं २९। क मया।

२६५२ अथवाकोट—सुराजपुर। पत्र १। आ १२३×१३३। मसाल-हिन्दी। विषय-
माला। १० कल व १००० पातुन बुकी १३। ने कल ×। पुरी। १० व १३०। आ मसाल।

विद्येय—१५ कथामें है ।

इसके प्रतिरिक्त क सम्बार मे एक प्रति (के सं ६१) क सम्बार मे १ प्रति (के सं १६) तथा क सम्बार मे १ प्रति (के सं १७५) धोर हैं।

२६८६. अथवाकोर-----। पत्र ३ । भा १ अ३३ दल । धना शिन्धी । विपय-नवा । र
कल \times । के कल \times । प्रवृत्ति । के तं १७३६ । ट कयार ।

विशेष—विष्णु कल्याणो का संज्ञक है—

नाम	कर्ता	चिह्न
ज्येष्ठशिवलोककथा—	कुप्याकभट्ट	८ वल्ल सं १८५२
कादित्यलोककथा—	भाऊ कवि	×
सुबुद्धिलोककथा—	म. ज्ञानछाया	—
सप्तपरमेश्वारलोककथा—	मुद्राकभट्ट	—
मुकुटसप्तमीकथा—	३३	८ वल्ल सं १८५२
धन्यपवित्रिलोककथा—	३३	—
बोद्धाकारणलोककथा—	३३	—
मेघमाहात्म्यलोककथा—	३३	—
चन्दनचण्डीलोककथा—	३३	—
कल्पिविद्यालोककथा—	३३	—
शिवसूक्तपुराणलोककथा—	३३	—
हर-चरित्रकथा—	३३	—

नाम	वर्ता	विशेष
पुष्पाजलिप्रतकथा—	मुग्धालचन्द्र	—
आशाशर्पचमीकथा—	"	२० भाग में १७५५
मुग्धावलीप्रतकथा—	"	—

पुष्प २६ मे ५० तक दोमक लगी हुई है ।

२६८७. प्रतकथासमष्टि । पत्र म० ६ म ६० । भा० ११३५×५३ इञ्च । भाषा—नरसुत । विषय—
तथा । २० भाग × । ले० भाग × । प्रसूति । दे० स० २०३६ । ट मण्डार ।

विशेष—६० ने भागे भी पत्र लगी है ।

२६८८ प्रतकथानसमष्टि । पत्र म० १०३ । भा० १०×५३ इञ्च । भाषा—नरसुत मकर द । विषय—
तथा । २० भाग × । ले० भाग १० १४१६ भाग्य बुद्धि १४ । पूर्ण । दे० म० ११० । व्य मण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

नाम	वर्ता	भाषा	विशेष
मुग्धचन्द्रमीप्रतकथा ।		मकर द	—
अनन्तप्रतकथा ।		"	—
रोहिणीप्रतकथा—	×	"	—
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	"	—
दुधारमविधानकथा—मुनिविनयचन्द्र ।		"	—
सुखसपत्तिविधानकथा—यिमलकीर्ति ।		"	—
निर्गहपञ्चमीविधानकथा—विनयचन्द्र ।		"	—
पुष्पाजलिविधानकथा—पं० हरिश्चन्द्र ।		"	—
अश्वत्थद्विदशीकथा—पं० अन्नदेव ।		"	—
षोडशकारणविधानकथा—	"	"	—
श्रुतस्कंधविधानकथा—	"	"	—
रुक्मिणीविधानकथा— ध्रुवसेन ।		"	—

प्रारम्भ— जिन प्रणम्य नेमीक्ष ससारार्णवतारक ।

रुक्मिणिचरित वक्ष्ये भव्याना योयकारण ॥

अन्तिम पुष्पिका— इति ध्रुवसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणि विधानकथा समाप्तं ।

पश्यविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
वराहहस्तविधानकथा—	शोकसेन	—	"	—
बन्धनपट्टीविधानकथा—	×	—	कापल ४	—
विमरात्रिविधानकथा—	×	—	"	—
विनयूजापुरवरविधानकथा—	अय्यकीर्ति	—	"	—
त्रिचतुर्विधविधान—	×	—	संस्कृत	—
विममुक्ताशोककथा—	×	—	"	—
शीवविधानकथा—	×	—	"	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	"	—
सुखसपत्तिविधानकथा—	×	—	"	—

लेखक प्रयत्ति—संवत् १८१६ वष माघरा दुर्ग १२ श्रीमूलर्षि सरस्वतीचम्बे बसन्तवारवले न धीपय मीरेवा संस्कृत न श्रीकृष्णप्रवेवा संस्कृत न श्रीजिनकप्रवेवा । महाराज श्रीरघुर्षि द्विप्य धुवि नवपरीति द्विप्य व मर्त्यह निर्मित । कलितवात्सल्ये कीर्तीवीये लंकी राजा बर्मा वेह सुपुत्र कीर्त्ता बर्मा बरलोपुत्र वरु कलना बर्मा बालन कर्त्तव्यार्थ इत्थं यत्नर्त्त निष्कल्प काल प्राप्तवत् ।

२६८. प्रलम्बासम्पद्—। वष लं २८। मा १२००। दश। माघा-संस्कृत। विपय-वषा।

२ वल ×। ते वल ×। पूर्ण। वे सं ११। क वषार।

विपय—मिम वषावो वा संस्कृत है।

हार्दराज्यकथा—	वं अजयदेव।	संस्कृत	—
ककलचम्पूकथस्तकथा—		"	—
बन्धनपट्टीकथकथा—	सुराजकथम्।	हिन्दी	—
बहीरवकथकथा—		संस्कृत	—
विनयुपसपत्तिकथा—		"	—
होली की कथा—	छीवर ठासिवा	हिन्दी	—
रैवकथकथा—	न विनयास	"	—
रत्नावलिस्तकथा—	शुयमर्षि	"	—

२६९. प्रलम्बासम्पद्—म महिसागर। वष लं २७। मा १२०४। माघा-हिन्दी। विपय-

वषा। २ वल ×। ते वल ×। पूर्ण। वे सं २७७। क वषार।

२६६१ व्रतकथासंग्रह । पत्र स० ४ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७२ । क मण्डार ।

विशेष—रविप्रत कथा, अष्टाह्निकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणव्रतकथा इनका संग्रह है षोडशकारणव्रतकथा गुजराती में है ।

२६६२ व्रतकथासंग्रह । पत्र स० २२ में १०४ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७८ । क मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

२६६३ षोडशकारणविधानकथा—प० अभ्रदेव । पत्र स० २६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६६० भादवा सुदी ५ । वे० स० ७२२ । क मण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पंचमी, स्विमणिकथा एवं अनंतव्रतकथा के कर्ता का नाम प० मदनवीर है ।

८ मण्डार में एक प्रति (वे० स० २०२६) और है ।

२६६४ शिवरात्रिविद्यापनविविधकथा—शकरभट्ट । पत्र स० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैनतर) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४७२ । अ मण्डार ।

विशेष—३२ में आगे पत्र नहीं हैं । स्कंधपुराण में है ।

२६६५ शीलकथा—भारामल्ल । पत्र स० २० । आ० १२×७ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ६६६, १११६) ४ मण्डार में एक प्रति (वे० स० ६६२) ५ मण्डार में एक प्रति (वे० स० १००), ६ मण्डार में एक प्रति (वे० स० ७०८), ७ मण्डार में एक प्रति (वे० स० १८०), ८ मण्डार में एक प्रति (ले० स० १६६७) और हैं ।

२६६६ शीलोपदेशमाला—मेरुसुन्दरराणि । पत्र स० १३१ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—गुजराती लिपि हिन्दा । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६७ । ७ मण्डार ।

विशेष—४३वीं कथा (धनश्री तक प्रति पूर्ण है) ।

२६६७ शुक्रसप्तति । पत्र स० ६४ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४५ । च मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२६६८ आर्यणद्वादशीउपाख्यान । पत्र स० ३ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैनतर) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८८० । अ मण्डार ।

२६३३. ज्ञानयज्ञाद्वयीकथा—[पद सं ६८ । या १२०४ दृ० । भाषा—संस्कृत । विषय—
 कथा । २ काल × । से काल × । पुरी । से सं ७११ । छ मन्थार ।

२७०० श्रीपासकथा—[पद सं २७ । या ११०७ दृ० । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २
 काल × । से काल सं १६२९ वैशाख सुदी ७ । पुरी । से सं ७१२ । छ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार से एक प्रति (से सं ७१४) भी है ।

२७०१ श्रेष्ठिकबीरई—कृष्ण बीर । पद सं १४ । या ६१०४ दृ० । भाषा—हिन्दी । विषय—
 कथा । २ काल सं १८२९ । पुरी । से सं ७१४ । छ मन्थार ।

विशेष—कवि बालपुरा के रहने वाले थे ।

अथ श्रेष्ठिक बीरई की कथा—

प्राथम्य ही बचप ही । बहने बलि से होई बचप ही ॥
 कृष्ण बंदी हुए निरर्थक । कृष्ण कथ वीरकाय रच ॥१॥
 लीला साधु सबै का पाह । बीरका लखली कटी लहलह ।
 बहने सेवा से सब मुनि होय । कटी बीरई बन मुनि बोई ॥२॥
 माता हवन कटी जहाँ । बल्लभ हीण लभारो जहाँ ।
 श्रेष्ठिक बलि बल से गहरी । बीरका बली बीरई गहरी ॥३॥
 राखी लही बेलगा बलि । बने बलि केने बलि धरिण ।
 राखा बने बल्लभ बोल । बने बने की बने बोल ॥४॥

पद ७ पर-बीरई—

बीर कृष्ण बल से गहरी, धरणीरक्षा से बोल ।
 से बने बली बल से बने बीरका बली रोल ॥१३१॥

बीरई—

गहरी बली बल बल गुजाल । बलबल एक बली बलि बलि ।
 बल बीर बली बीरका बल । बली बली बल बली बली ॥१३२॥
 बीर बलि बली बलि । बली बल एक बीरका बल ।
 बली बली बली बली बली । बली बली बलि बली ॥१३३॥
 बल बलि बलि बलि । बली बली बलि बली ।
 बल बलि बलि बलि । बली बली बलि बली ॥१३४॥

अन्तिम—

भेद भलो जाणो इक सार । जे सुणिसी ते उत्तरै पार ।
 हीन पद भक्षर जो होय । जको सवारो गुणियर लोय ॥२८॥
 में म्हारी बुधि साहू कही । गुणियर लोग सवारो सही ।
 जे ता तणो कहै निरताय । सुणता सगला पातिग जाइ ॥२९०॥
 लिखिवा चाल्यो सुख नित लही, जे साधा का गुण यो कही ।
 यामे भोलो कोइ नही, दूगै बंद चोपड़ कही ॥२९१॥
 वास भलो मालपुरो जाणि । ठीक मही सो कियो बखाण ।
 जठे वसै माहाजन लोग । पान फूल का कीजै भोग ॥२९२॥
 पोरिण छतीसों लीला करै । दुख ये पेट न कोइ भरै ।
 राइस्यघ जो राजा बखाणि । चौर चवाहन राखै भाणि ॥२९३॥
 जीव दया को अधिक सुभाव । सर्व भलाई साथै ढाव ।
 पतिसाहा बदि दीन्ही छोडि । बुरी कही भवि सुणी बहोडि ॥२९४॥
 धनि हिंदवाणो राज बखाणि । जह में सीसोघो मो जाणि ।
 जीव दया को सदा बीचार । रैति तणो राखै भाधार ॥२९५॥
 कीरति कही कहा लागि जाणि । जीव दया सहू पाले भाणि ।
 इह विधि सगला करै जगीस । राजा जोय्यौ तो भर बीस ॥२९६॥
 एता बरस मै भोलो नही । बेटा पोता फल ज्यो सही ।
 दुखिया का दुख टालै भाय । परमेस्वर जी करै सहाय ॥२९७॥
 इ पुन्य तणो कोइ नही पार । वैदि खलास करै ते सार ।
 धाकी बुरी कहै नर कोइ । जन्म आपणी चाले खोइ ॥२९८॥
 सबव सौलह से प्रमाण । उपर सहो इतासो जाण ।
 निन्याणवे कहा निरदोष । जीव सबै पावै पोष ॥२९९॥
 भाद्रव सुदी तेरस सनिवार । कछा तीन सै पट अधिकाय ।
 इ सुणता सुख पासी देह । आप समाही करै सनेह ॥३००॥

इति श्री श्रेणिक चौपड़ संपूरण भीतो कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्क स० १८२६ काही ग्रामे लीखत
 बखतसागर बाबै जहने निम्सकार नमोस्त बाब उयो जी ।

२७०२ सप्तपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्ति । पत्र स० ११ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—
 संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६८६ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ३५० । ब
 भण्डार ।

२७०३. सप्तमसप्तकथा—आचार्य सोमकीर्ति । पत्र सं ४१ । या १२४५५ दश । मत्त-
नसुत । विषय—कथा । १ मत्त सं १२२६ नाम कुटी १ । के मत्त ४ । पूर्ण । के सं १ । अ मत्तार ।

विषय—यति प्राचीन है ।

२७०४ प्रति सं २ । पत्र सं १४ । के मत्त सं १७७९ नाम कुटी १३ । के सं १ । अ मत्तार ।

अवधि—सं १७७९ वर्षे मत्तारवाले दृष्टकाले प्रयोगमें दिखी मत्तारवाले विनोदमैत्रि विविध
मत्तारपुर लगेलेनु केरवाले ।

२७०५ प्रति सं ३ । पत्र सं १२ । के मत्त सं ११४ नाम कुटी १ । के सं ११३ । अ मत्तार ।

विषय—नेवदा मत्तारी मत्तारवा हीरा के मत्तार के प्रतिमिति की थी । मत्तार लगेले मत्तारवा मत्तार
के प्रतिमिति मत्तार मत्तारवा के मत्तार के लिए मत्तार ।

२७०६ प्रति सं ४ । पत्र सं १४ । के मत्त सं १७७९ नाम कुटी १ । के सं ११३ । अ मत्तार ।

विषय—य मत्तार के मत्तार मत्तारवा के मत्तार मत्तार के प्रतिमिति की थी ।

२७०७ प्रति सं ५ । पत्र सं १२ । के मत्त सं ११४ नाम कुटी १ । के सं ११३ । अ मत्तार ।

२७०८ प्रति सं ६ । पत्र सं ७७ । के मत्त सं १७२९ नाम कुटी १ । के सं ११६ । अ मत्तार ।

विषय—य मत्तार के मत्तार मत्तार के प्रतिमिति की थी ।

इसके प्रतिमिति अ मत्तार के एक प्रति (के सं ११) अ मत्तार के एक प्रति (के सं ७२)
की है ।

२७०९ सप्तमसप्तकथा—आचार्य । पत्र सं ४६ । या ११२४२ दश । मत्त—मत्तारी मत्त ।
विषय—कथा । १ मत्त सं ११४ नाम कुटी १ । पूर्ण । के सं १ । अ मत्तार ।

विषय—य मत्तार के मत्तार के प्रतिमिति की थी ।

२७१० सप्तमसप्तकथा—आचार्य । पत्र सं ११ । या ११४५५ दश । मत्त—मत्तारी मत्त । विषय—कथा ।
१ मत्त सं ११४ नाम कुटी १ । पूर्ण । के सं ११ । अ मत्तार ।

विषय—मत्तार के मत्तार मत्तार के प्रतिमिति की थी ।

अ मत्तार के एक प्रति (के सं ११६) की है ।

०७११. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र स० २६ । भा० १२×५^१/_२ इ च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल स० १८४२ । ले० काल स० १८८७ आषाढ बुदी । वे० स० ८८ । अ भण्डार ।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे । रेवाटी (पञ्जाब) के रहने वाले थे और वही लेखक ने इसे पूर्ण किया ।

२७१२. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि । पत्र स० ४८ । भा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल स० १५०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७६ । अ भण्डार ।

२७१३. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—खेता । पत्र स० ७६ । भा० १२×५^१/_२ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १८३३ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—भा भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६१) तथा अ भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३०) और है ।

२७१४. सम्यक्त्वकौमुदीकथा । पत्र स० १३ से ३३ । भा० १२×५^१/_२ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल स० १६२५ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० १६१० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दीक्षणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे पष्ठम्या शनौ श्रीकुंभलमेरुदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री वरतरंगच्छे श्री गुणलाल नहोपाध्याये स्ववाचनार्थं लिखापिता जीवाच्यमाना चिर नदनात् ।

२७१५. सम्यक्त्वकौमुदीकथा " । पत्र स० ८६ । भा० १०^३/_४×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल स० १६०० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६०० में खेटक स्थान में शाह आलम के राज्य में प्रतिलिपि हुई । श० धर्मदास भगवान गोयल गोश्रीय मदनलालपुर निवासी के वश में उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र आदि ने प्रतिलिपि कराई । लेखक प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है ।

२७१६. प्रति स० २ । पत्र स० १२ से ६० । ले० काल स० १६२८ वैशाख सुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० ६४ । अ भण्डार ।

श्री हू गर ने इस ग्रंथ को ब्र० रायमल को भेंट किया था ।

अथ सवस्तरैस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षपञ्चमीदिने भट्टारक श्रीभानुकीर्तितदाम्नाये अग्रवालान्वये भित्तलगात्रे साह दासु तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा गोपी सा दीपा । सा गोपी तस्य भार्या वीवी तयो पुत्र सा भावन साह उवा सा भावन भार्या बूरदा काही तस्य पुत्र तिपरदाश । साह उवा तस्य भार्या मेघनही तस्यपुत्र हू गरसो साम्प्रतं सम्पत्तं कौमदी अथ ब्रह्मचार रायमल्लदत्तात् पठनार्थं ज्ञानावर्णो कर्मक्षयहेतु । शुभ भवतु । लिखित जीवात्मज गोपालदाश । श्रीचन्द्रप्रभु जैपालये अहिपुरमध्ये ।

२७१७ प्रति सं० २। पत्र सं १। से काल सं १७१६ वाग सुदी १४। पूर्ति। से सं ७२६।

क मन्थार।

२७१८ प्रति सं० ३। पत्र सं ७४। से काल सं १८२१ वाग सुदी २। से सं ७२४। क

मन्थार।

विशेष—अष्टाशुभ वाह के अनुसार नगर के प्रतिनिधि की थी।

इनके प्रतिरिक्त क मन्थार में २ प्रतिष्ठा (से सं २६६, ८१४) क मन्थार में एक प्रति (से सं ११२) क मन्थार में एक प्रति (से सं ७) क मन्थार में एक प्रति (से सं ७७) क मन्थार में एक प्रति (से सं ६१) क मन्थार में एक प्रति (से सं १) तथा क मन्थार में २ प्रतिष्ठा (से सं २१२६, २१३) [दोनो मूर्त] थीर हैं।

२७१९ सम्मन्तकीसुरीकामाया—विनोदीका। पत्र सं १६। या ११×२६ इंच। मन्थार—हिन्दी पत्र। विषय—कथा। ८ काल सं १७४६। से काल सं १६ वाग सुदी २। पूर्ति। से सं ७७। क मन्थार।

२७२० सम्मन्तकीसुरीकामाया—जगदाय। पत्र सं १२१। या ११×२२ इंच। मन्थार—हिन्दी पत्र। विषय—कथा। ८ काल सं १७७९ वाग सुदी १६। से काल सं १७८१। पूर्ति। से सं ७२३। क मन्थार।

२७२१ सम्मन्तकीसुरीकामाया—जोषदाय गोरीका। पत्र सं ४७। या १२×७२ इंच। मन्थार—हिन्दी। विषय—कथा। ८ काल सं १७२४ फाल्गु सुदी १९। से काल सं १८२२ मन्थार सुदी ७। पूर्ति। से सं १३२। क मन्थार।

विशेष—वीरकाय के श्री कृष्णचरणी गोरीका के वाचनार्थ कथाई अनुसार में प्रतिनिधि की थी। सं १९ से गोरी की विजयलालि कथाई व कुमालकी व विरवाजकी गोरीका व इन्हे महाराजा कथाई सं २० (१) किया।

२७२२ प्रति सं २। पत्र सं ४६। से काल सं १८६६ वाग सुदी ९। से सं २११। क मन्थार।

२७२३ प्रति सं ३। पत्र सं ६४। से काल सं १८४३। से सं ७६। क मन्थार।

२७२४ प्रति सं० ४। पत्र सं ६७। से काल सं १८४३। से सं ७०३। क मन्थार।

२७२५ प्रति सं ५। पत्र सं २३। से काल सं १९२८ वाग सुदी १९। से सं १। क मन्थार।

इनके प्रतिरिक्त क मन्थार में एक प्रति (से सं ७४) क मन्थार में एक प्रति (से सं १२४९)

थीर हैं।

२७२६ सम्यक्त्वकौमुदीभाषा । पत्र स० १७४ । आ० १०३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०२ । छ मण्डार ।

२७२७ सयोगपचमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र स० ३ । आ० ११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वे० स० ३०६ । अ मण्डार ।

विशेष—६ मण्डार में एक प्रति (वे० स० ८०१) और है ।

२७२८ शालिभद्रघनान्नीचौपई—जिनसिंहसूरि । पत्र स० ४६ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-कथा । २० काल स० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल स० १८०० चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वे० स० ८४२ । ६ मण्डार ।

विशेष—किशनगढ़ में प्रतिलिपि की गई थी ।

२७२९ सिद्धचक्रकथा । पत्र स० २ से ११ । आ० १०×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४३ । ६ मण्डार ।

२७३० सिंहासनवत्तीसी । पत्र स० ११ से ६१ । आ० ७×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५६७ । ८ मण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय से १२वें अध्याय तक है ।

२७३१ सिंहासनद्वान्निशिका—ज्ञेयकरमुनि । पत्र स० २७ । आ० १०×४३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-राजा विक्रमादित्य की कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२७ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीविक्रमादित्यनरेवरस्य चरित्रमेतत् कविभिर्निबद्ध ।

पुरा महाराष्ट्रपरिष्टभाषा भय महाश्चर्यकरनराणा ॥

क्षेमकरेण मुनिना वरपद्यगद्यवधेनमुत्तिकृतसंस्कृतवधुरेण ।

विश्वोपकार विलसत् गुणकीर्तिनायचक्रे चिरादभरपठितहर्षहेतु ॥

२७३२ सिंहासनद्वान्निशिका । पत्र स० ६३ । आ० ६×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

२० काल × । ले० काल स० १७६८ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० ४११ । च मण्डार ।

विशेष—लिपि विकृत है ।

२७३३ सुकुमालमुनिकथा । पत्र स० २७ । आ० ११३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—

कथा । २० काल × । ले० काल स० १८७१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १०५२ । अ मण्डार ।

विशेष—जयपुर में सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७३४ सुगन्धधरणीकथा—। पय सं १। या ११५×४५ द. व.। माता—तीरकुट। विषय—कथा।

१ कल ×। ११ कल ×। पूर्ण। ११ सं १२। क मन्धार।

विषय—इस कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अनुसृत है।

२७३५ सुगन्धधरणीकथा—हेमराज। पय सं १। या १२×४० द. व.। माता—झिरी। विषय—

कथा। १ कल ×। ११ कल सं ११५२ यमरा मुनी १। पूर्ण। ११ सं १२३। क मन्धार।

विषय—विषय नगर के राज्यसहाय के इतिहास की थी।

अन्त—यह सुगन्धधरणी कथा का अन्त है—

चौपई—
 बह्मपति बंटी तुलसी, दूर नीतय बंटी पितलदा।
 सुगन्धधरणीकथा मुनि कथा बह्मपति पटकली कथा ॥१॥
 सुनिष्ठ राजा बंध लेपिक राज कर अधिपति।
 माव केला तुलसीदासी बंटीझिरी कथा सदा।
 सुनिष्ठ राजा बंटी कथा बंधधरणी कथा सदा ॥२॥

अन्त—
 बह्मपति नीतय पितलदा बंधधरणी की कथा ॥
 यह कथा का अन्त है, बंधधरणी की कथा ॥
 सुनिष्ठ राजा बंध लेपिक राज कर अधिपति।
 माव केला तुलसीदासी बंटीझिरी कथा सदा ॥१॥
 सुनिष्ठ राजा बंध लेपिक राज कर अधिपति।
 माव केला तुलसीदासी बंटीझिरी कथा सदा ॥२॥

चौपई—
 बंधधरणी कथा बंधधरणी कथा ॥
 सुनिष्ठ राजा बंध लेपिक राज कर अधिपति।
 माव केला तुलसीदासी बंटीझिरी कथा सदा ॥
 सुनिष्ठ राजा बंध लेपिक राज कर अधिपति।
 माव केला तुलसीदासी बंटीझिरी कथा सदा ॥

२७३६ सुगन्धधरणीकथा—मुनि कथा। पय सं १०। या १२×४५ द. व.। माता—झिरी। विषय—कथा। १ कल सं ११५२। ११ कल सं १२३। क मन्धार।

विषय—यह कथा के अन्त है।

२७३७ सुगन्धधरणीकथा (कथा) —। पय सं १। या १२×४५ द. व.। माता—झिरी। विषय—कथा। १ कल ×। ११ कल ×। पूर्ण। ११ सं १२। क मन्धार।

२७३८ सोमशर्माविरिपेणकथा ' ' । पत्र सं० ७ । मा० १०×३३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२३ । अ मण्डार ।

२७३९ सौभाग्यपचमीकथा—सुन्दरविजयगणि । पत्र सं० ९ । मा० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-कथा । २० काल सं० १६६६ । ले० काल सं० १८११ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । अ मण्डार ।

विषय—हिन्दी में ग्रंथ भी दिया हुआ है ।

२७४०. हरिवंशवर्णन । पत्र सं० २० । मा० १०^३×४^३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३६ । अ मण्डार ।

२७४१ होलिकाकथा ' ' । पत्र सं० २ । मा० १०^३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । २०
काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० २६३ । अ मण्डार ।

२७४२ होलिकाचौपई—हू गरकवि । पत्र सं० ४ । मा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-
कथा । २० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी २ । ले० काल सं० १७१८ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । अ मण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक मोर से फटा हुआ है । अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार ।

नयर सिकदरावाद ' ' गुणकरि भागाध, वाचक मडण श्री खेमा साध ॥८४॥

तासु सीस हू गर मति रली, भण्यु चरित्र गुण साभली ।

जे नर नारी सुणस्यइ सदा तिह घरि बहुली हुई सपदा ॥८५॥

इति श्री होलिका चउपई । मुनि हरवद लिखित । स्वत् १७१८ वर्षे..... ' ' भागुरामध्ये लिपिकृत ॥
रचना में कुल ८५ पद्य हैं । चौथे पत्र में केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नहीं हैं ।

२७४३ होलीकीकथा—छीतर ठोलिया । पत्र सं० २ । मा० ११^३×५^३ इ च । भाषा-हिन्दी ।
विषय-कथा । २० काल सं० १६६० फागुण सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५८ । अ मण्डार ।

२७४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७५० । वे० सं० ८५६ । अ मण्डार ।

विशेष—लेखक भोजमावाद [जयपुर] का निवासी था इसी गांव में उसने ग्रंथ रचना की थी ।

२७४५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६६ । अ मण्डार ।

विशेष—कादूराय साह ने ग्रंथ लिखवाकर चौघरियो के मन्दिर में चढाया ।

२७४६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२ । वे० सं० १६४२ । अ
मण्डार ।

विशेष—प० रामचन्द्र ने प्रतिनिधि की थी ।

२४४० होलीकथा—विन्मुन्वरसूरि। पत्र सं १४। या १ २०८६ पृ. ५। कथा-बंस्तु। विषय-
कथा ×। ८ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं ७४। अथ कथा।

विशेष—इसी कथा में इसके प्रतिष्ठित ३ प्रतिष्ठा के सं ७४ में ही थीर है।

२४४२ होलीपर्वकथा—। पत्र सं ३। या १ २०८६ पृ. ५। कथा-बंस्तु। विषय-कथा। ८
काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं ७४। अथ कथा।

२४४३. प्रति सं ३। पत्र सं २। के काल सं १ ४ काल मुदी ३। के सं १८९। अ
कथा।

विशेष—इसके प्रतिष्ठित ४ कथा के २ प्रतिष्ठा (के सं ११ १११) थीर है।



व्याकरण-साहित्य

२७५० अनिटकारिका -। पत्र स० १। भा० १०३×५ $\frac{१}{२}$ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० २०३५। अ मण्डार।

२७५१ प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। वै० स० २१४६। ट मण्डार।

२७५२ अनिटकारिकावचुरि *। पत्र स० ३। भा० ११३×४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—

व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० २५०। अ मण्डार।

२७५३ अव्ययप्रकरण। पत्र स० ६। भा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० २०१८। अ मण्डार।

२७५४ अव्ययार्थ। पत्र स० ८। भा० ८×५ $\frac{३}{४}$ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। २०

काल ×। ले० काल स० १८८८। पूर्ण। वै० स० १२२। अ मण्डार।

२७५५ प्रति स० २। पत्र स० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० स० २०२१। ट मण्डार।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है।

२७५६ उणादिसूत्रमग्रह—समग्रकर्त्ता—उज्ज्वलदत्त। पत्र स० ३८। भा० १०×५ इ च। भाषा—

संस्कृत। विषय—व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० १०२७। अ मण्डार।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२७५७ उपाधिव्याकरण। पत्र स० ७। भा० १०×४ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।

२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० १८७२। अ मण्डार।

२७५८ कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचुरि—चारित्रसिंह। पत्र स० १३। भा० १०३×४ $\frac{३}{४}$ इ च। भाषा—

संस्कृत। विषय—व्याकरण। २० काल ×। ले० काल स० १६६६ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वै० स० २४७। अ मण्डार।

विशेष—भादि भन्त भाग निम्न प्रकार है—

नत्वा जिनेन्द्र स्वशुद्ध च भक्त्या तत्तत्प्रसादात्समुसिद्धिगत्या।

सत्संप्रदायादवचुरिमेता लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ॥१॥

२७४७ होलीकथा—विजयपुरसुरि। पत्र सं १४। भा १ २४४२ पृष्ठ। माता-संस्कृत। विषय-
कथा ×। सं. काल ×। के. काल ×। पूर्ण। के. सं. ७४। अ. मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में इसके पठित ३ प्रतिभा के सं. ७४ में ही पाए हैं।

२७४८ होलीकथा—। पत्र सं ३। भा १ ४४२ पृष्ठ। माता-संस्कृत। विषय-कथा। सं.
काल ×। के. काल ×। पूर्ण। के. सं. ७४२। अ. मन्थार।

२७४९ प्रति सं २। पत्र सं २। के. काल सं १ ४ माघ सुदी ३। के. सं. २७९। अ.
मन्थार।

विशेष—इसके पठित ४ मन्थार में २ प्रतिभा (के. सं. २९ २९९) पाए हैं।



प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोंकपत्तने सुरग्राणमलावदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे बलान्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे शिष्य ब्रह्मतीक्ष्ण निमित्त । खडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे स० धन्ना भार्या धनश्री पुत्र स दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतय एतेषामध्ये सा दोदा इद पुस्तक ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्त ।

२७६४ कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र स० ३५ । भा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६६ । अ मण्डार ।

२७६५ कारकप्रक्रिया । पत्र स० ३ । भा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५ । अ मण्डार ।

२७६६ कारकविवेचन । पत्र स० ८ । भा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०७ । अ मण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र स० ५ । भा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३३ । अ मण्डार ।

२७६८ कृदन्तपाठ । पत्र स० ६ । भा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६६ । अ मण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नहीं है । सारस्वत प्रक्रिया में से है ।

२७६९ गणपाठ—वाहिराज जगन्नाथ । पत्र स० ३४ । भा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८० । अ मण्डार ।

२७७० चन्द्रोन्मीलन । पत्र स० ३० । भा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १८३५ फागुन बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६१ । अ मण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१ जैनेन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र स० १२६ । भा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १७१० फागुन सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३१ ।

विशेष—ग्रंथ का नाम पञ्चाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पञ्चवस्तु तक । सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने प० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के सिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० भासोज सुदी १० को पुन श्रीकल्याण व हर्ष को साह श्री लूणा बघेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

केतु नी मुद्रते येनः शब्दिकीति नवा वदः ॥२॥

कस्तमपुनरितः क्तु कस्तम् ।

नवाति शक्तिरु ह्य वाति करोमरीयत् ॥

स्वस्वितरस्वे न पुनोवविभक्तं गार्थी ।

प्रतिपत्तं वयम् शब्दो विप्रय प्रयात् ॥

शक्तिम वाट—

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

कीति

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

कीकपुनरितः क्तु कस्तम् ॥२॥

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

शब्दोपयोग्यं वा निवर्तय विप्रयी ।

व्याकरण-साहित्य]

प्रसस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोंकपत्तने सुरयाणमलावदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य ब्रह्मतीर्थम् निमित्त । खडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे स० घन्ना भार्या घनश्री पुत्र स दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतय एतेषामध्ये सा दोदा इदं पुस्तक ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्त लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्त ।

२७६४ कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र स० ३५ । भा० १०×४ ३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६६ । अ भण्डार ।

२७६५ कारकप्रक्रिया । पत्र स० ३ । भा० १० ३/४ × ५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६ कारकविवेचन । पत्र स० ८ । भा० ११×५ ३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र स० ५ । भा० ११×४ ३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३३ । अ भण्डार ।

२७६८ कृदन्तपाठ । पत्र स० ६ । भा० ६ ३/४ × ५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नहीं है । सारस्वत प्रक्रिया में से है ।

२७६९ गणपाठ—वादिराज जगन्नाथ । पत्र स० ३४ । भा० १० ३/४ × ४ ३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८० । ट भण्डार ।

२७७० चन्द्रोन्मीलन । पत्र स० ३० । भा० १२×५ ३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १८३५ फागुन बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१ जैनैन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र स० १२६ । भा० १२×५ ३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १७१० फागुन सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३१ ।

विशेष—अथ का नाम पचाव्याधी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पञ्चवस्तु तक । सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने प० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० भासोज सुदी १० को पुन श्रीकल्याण व हर्ष को सह श्री लूणा बघेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७०२ प्रति स २। पत्र सं ११। के काल सं १२९३ अष्टम सुदी २। के सं २१२। क
अकार।

२७०३. प्रति स ३। पत्र सं २४ के ११४। के काल सं १२९४ मङ्गल सुदी १। अश्विनी। के सं
२१३। क अकार।

२७०४ प्रति सं ४। पत्र सं १। के काल सं १२९५ कार्तिक सुदी १। के सं २१। क
अकार।

विशेष—हस्तगत में संक्षिप्त श्रुतिार्थ विद्ये दृश्ये हैं। पञ्चमाला बीमा ने प्रतिमिति की थी।

२७०५. प्रति सं ५। पत्र सं १। के काल सं १३०१। के सं ३२५। क अकार।

२७०६ प्रति सं ६। पत्र सं १२३। के काल सं १३०२ अकार सुदी १४। के सं १। अ
अकार।

विशेष—इनके अतिरिक्त क अकार के एक प्रति (के सं १२१) क अकार में २ प्रतिपा (के सं
३२३ २५) भी हैं। (के सं ३२३) बाली काल में होनमेसपुरि छत्र अकारालय पत्रिका नाम की टप्पा की है।

२७०७ जैनसुत्रभाष्य—अभयवर्णन। पत्र सं १४ के २९२। या १२३×६ इंच। भाषा—

हस्तगत। विषय—व्याकरण। र काल ×। के काल ×। अश्विनी। के सं १४९। अ अकार।

२७०८. प्रति सं २। पत्र सं १३। के काल सं १३४६ मल्लिका सुदी १। के सं २११। क
अकार।

विशेष—पञ्चमाला बीमा ने इसकी प्रतिमिति की थी।

२७०९. वसुधैवकुटुम्बकम्—पत्र सं १९। या १४×२ इंच। भाषा—हस्तगत। विषय—व्याकरण।

र काल ×। के काल ×। अश्विनी। के सं १७०। अ अकार।

२७१० बाहुपाठ—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं १९। या १४×२ इंच। भाषा—हस्तगत। विषय—

व्याकरण। र काल ×। के काल सं १७६७ मल्लिका सुदी २। के सं २२९। अ अकार।

२७११ बाहुपाठ—पत्र सं २१। या ११×२ इंच। भाषा—हस्तगत। विषय—व्याकरण। र

काल ×। के काल ×। अश्विनी। के सं २९। अ अकार।

विशेष—बाहुपाठों के पाठ हैं।

२७१२. प्रति स २। पत्र सं १७। के काल सं १३६४ बाहुपाठ सुदी १२। के सं २९। क

अकार।

विशेष—बाहुपाठों में प्रतिमिति करवायी थी।

इनके अतिरिक्त क अकार में एक प्रति (के सं १२३) तथा अ अकार में एक प्रति (के सं

२६) भी हैं।

व्याकरण-साहित्य]

२७८३ धातुरूपावलि " । पृ० स० २२३ । आ० १२×५३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ६ । ज मण्डार ।

विशेष—शब्द एक धातुओं के रूप हैं ।

२७८४ धातुप्रत्यय " । पृ० स० ३ । आ० १०×५३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १२०२८ । ट मण्डार ।

विशेष—श्रेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है ।

२७८५ पञ्चसंधि । पृ० स० २ मे ७ । आ० १०×४ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल स० १७३२ । मपूर्णा । वे० स० १२६२ । प्र मण्डार ।

२८६६ पंचिकरणवार्त्तिक—सुरेश्वराचार्य । पृ० स० २ मे ४ । आ० १२×४ इक्ष । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १७४४ । ट मण्डार ।

२७८७ परिभाषासूत्र । पृ० स० ५ । आ० १०३×४३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल स० १५३० । पूर्णा । वे० स० १६४४ । ट मण्डार ।

विशेष—अंतिम पुण्यको निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्णा ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १५३० वर्षे श्रीहरतरुणच्छेत्रीजयसागरमहोपाध्यायशिरधरीरत्नचन्द्रोपाध्यायनिपुण्यमक्तिलाभगणितज्ञ
ललिता वाचिता च ।

२७८८ परिभाषेष्टुशेखर—नागोजीभट्ट । पृ० स० ६७ । आ० १५×३३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५८ । ज मण्डार ।

२७८९ प्रति स० २ । पृ० स० ५६ । ले० काल × । वे० स० १०० । ज मण्डार ।

२७९० प्रति स० ३ । पृ० स० ११२ । ले० काल × । वे० स० १०२ । ज मण्डार ।

विशेष—दो लिपिवर्तनों ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका की नाम भैरवी टीका है ।

२७९१ प्रक्रियाकौमुदी । पृ० स० १४३ । आ० १२×५ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ६५० । ज मण्डार ।

विशेष—१४३ से आगे पृ० नहीं हैं ।

२७९२ पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पृ० स० ३६ । आ० ६३×३३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १६०२ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पृ० के एक ओर ही लिखा गया है ।

२५६३ प्राकृतकृपमाहा—भीराममाह सुत वरहराज । पत्र ६ ४७ । या १२४४ इत्य । ज्ञान-
प्रकृत । विषय-व्याकरण । १ काल × । नि काल १ ७२४ पात्रात् कुटी १ । पूर्ण । नि ६ २२२ । क
जम्भार ।

विशेष—आचार्य नमस्कृति ने जम्भपुर (जामपुर) में प्रतिमिति की थी ।

२५६४ प्राकृतकृपमाहा— । पत्र ६ २१ २४६ । ज्ञान-प्रकृत । विषय-व्याकरण । १ काल × ।
नि काल × । पूर्ण । नि ६ २४६ । क जम्भार ।

विशेष—संस्कृत में नमस्कार की उक्त विधि है ।

२५६५ प्राकृतव्याकरण—चक्रवर्ति । पत्र ६ १ । या ११२×१२ इत्य । ज्ञान-संस्कृत । विषय-
व्याकरण । १ काल × । नि काल × । पूर्ण । नि ६ ११४ । क जम्भार ।

विशेष—इस का नाम जम्भार प्रकाश भी है । संस्कृत प्राकृत, अप्रकाश वीरवर्तिकी भाषा की उक्त सीरेसेनी
आदि जम्भारों पर प्रकाश ज्ञाना गया है ।

२५६६ प्रति स २ । पत्र ६ ७ । नि काल १ २६१ । नि ६ २२१ । क जम्भार ।

२५६७ प्रति स ३ । पत्र ६ ११ । नि काल १ २६१ । नि ६ २२४ । क जम्भार ।

विशेष—इसी जम्भार में एक प्रति (नि ६ २२२) भी है ।

२५६८ प्रति स ४ । पत्र ६ ४ । नि काल १ २४४ संवत्तर कुटी १२ । नि ६ १ । क
जम्भार ।

विशेष—जम्भार के बोधो के जम्भार वैमिश्र जम्भार के प्रतिमिति हुई थी ।

२५६९ प्राकृतव्युत्पत्तिविधि—वीरामाहा । पत्र ६ २२४ । या ११२×१२ इत्य । ज्ञान-
संस्कृत । विषय-व्याकरण । १ काल × । नि काल १ ११ पात्रात् कुटी १ । पूर्ण । नि ६ २२७ । क
जम्भार ।

२६ माध्यमविधि—कैवल्य । पत्र ६ ११ । या १२२×११ इत्य । ज्ञान-संस्कृत । विषय-
व्याकरण । १ काल × । नि काल × । पूर्ण । नि ६ १२१ । क जम्भार ।

२८ १ कृपमाहा— । पत्र ६ ४ २ । या १२४ इत्य । ज्ञान-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।
१ काल × । नि काल × । पूर्ण । नि ६ २४६ । क जम्भार ।

विशेष—जम्भारों के रूप विधि है ।

इसके प्रतिमिति इसी जम्भार में २ प्रतिमा (नि ६ २७१) भी है ।

२८०२ कृपमाहा— । पत्र ६ १२७ । या १२४ इत्य । ज्ञान-संस्कृत । विषय-
व्याकरण । १ काल × । नि काल × । पूर्ण । नि ६ २७२ । क जम्भार ।

२८०३ लघुरूपसर्गवृत्ति । पत्र स० ४ । मा० १०३×५ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६४८ । ट भण्डार ।

२८०४ लघुशब्देन्दुशेखर । पत्र स० २१५ । मा० ११३×५३ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-

व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं ।

२८०५ लघुमारम्भत—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र स० २३ । मा० ११×५ इच्छ । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ३११, ३१२, ३१३, ३१४) भीर हैं ।

२८०६ प्रति स० २ । पत्र स० २० । मा० ११३×५३ इच्छ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३११ । च भण्डार ।

२८०७ प्रति स० ३ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८ । वे० स० ३१३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतिया (वे० स० ३१३, ३१४) भीर हैं ।

२८०८ लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज । पत्र स० १०४ । मा० १०×४३ इच्छ । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । ख भण्डार ।

२८०९ प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १७८६ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० स० १७३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्राठ ग्रन्थाय तक है ।

च भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ३१५, ३१६) भीर हैं ।

२८१० लघुसिद्धान्तकौस्तुभ । पत्र स० ५१ । मा० १२×५३ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०१२ । ट भण्डार ।

विशेष—पाणिनी व्याकरण की टीका है ।

२८११ वैय्याकरणभूषण—कौहिनभट्ट । पत्र स० ३३ । मा० १०×४ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १७७४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ६८३ । ड भण्डार ।

२८१२ प्रति स० २ । पत्र स० १०४ । ले० काल स० १६०५ कार्तिक बुदी २ । वे० स० २८१ । ड भण्डार ।

२८१३ वैय्याकरणभूषण । पत्र स० ७ । मा० १०३×५ इच्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १८६९ पीप सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ६८२ । ड भण्डार ।

२८१४ प्रति स० २। पत्र सं ४। के काल सं १५११ वीं मुद्रा ४। के सं ११२। क
नम्बर।

विशेष—वास्तवमन्त्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिनिधि हुई थी।

२८१५ व्याकरण—। पत्र सं ४२। पा १ ३/४ दश। वाचा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।
१ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं ११। क नम्बर।

२८१६ व्याकरणदीक्षा—। पत्र सं ७। पा १ ५/४ दश। वाचा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।
१ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं ११। क नम्बर।

२८१७ व्याकरणवाचादीक्षा—। पत्र सं १०। पा १ × २ दश। वाचा—संस्कृत हिन्दी।
विषय—व्याकरण। १ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १६५। क नम्बर।

२८१८ शब्दरोमा—कवि जीसकठ। पत्र सं ४१। पा १ ३/४ दश। वाचा—संस्कृत। विषय—
व्याकरण। १ काल सं १६६१। के काल सं १७९। पूर्ण। के सं ७। क नम्बर।

विशेष—महामा ज्ञानकर्म के प्रतिनिधि की थी।

२८१९ शब्दरूपदीक्षा—। पत्र सं ६। पा १ × ४ दश। वाचा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।
१ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १३९। क नम्बर।

२८२० शब्दरूपदीक्षा—व्याचार्य वरद्वि। पत्र सं १७। पा १ १/४ × ३ दश। वाचा—संस्कृत।
विषय—व्याकरण। १ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १९। क नम्बर।

२८२१ शब्दानुशासन—श्रीमन्मन्त्राचार्य। पत्र सं ११। पा १ × ४ दश। वाचा—संस्कृत।
विषय—व्याकरण। १ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं ४८। क नम्बर।

२८२२ प्रति स० २। पत्र सं १। पा १ ३/४ × ३ दश। के काल ×। पूर्ण। के सं
१६९। क नम्बर।

विशेष—क नम्बर में १ प्रतिष्ठा (के सं ११९ २ ३ ३७९ १ ३ (क) १५४ १२९) तथा क
नम्बर में एक प्रति (के सं १६९) थी।

२८२३ शब्दानुशासननृत्ति—श्रीमन्मन्त्राचार्य। पत्र सं ३८। पा १ ३/४ × ३ दश। वाचा—संस्कृत।
विषय—व्याकरण। १ काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं ३ १२९१। क नम्बर।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शब्द व्याकरण ही है।

२८२४ प्रति सं २। पत्र सं १। के काल सं १९९ वीं मुद्रा ३। के सं १२२। क
नम्बर।

विशेष—बाबेर निवासी पिछमन्त्राचार्य महाराज के प्रतिनिधि की थी।

२८२५ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८६६ चैत्र सुदी १ । वे० स० २४३ । च
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३३६) भी है ।

२८२६ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १५२७ चैत्र सुदी ८ । वे० स० १६५० । ट
भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ८ भीमे गोपावलदुर्गे महाराजाधिराजश्रीकीर्तिसिंहदेवराज-
प्रवर्तमानसमये श्री बालिदास पुत्र श्री हरि ग्रहे ।

२८२७ शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ मे २० । मा० १५×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४० । च भण्डार ।

२८२८ शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र स० ६ । मा० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल स० १७३६ माघ सुदी २ । वे० स० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपाल, नत्वागोपालमोदवर ।

क्रियते काशीनाथेन, दायुबोधविशेषतः ॥

२८२९ सहाप्रक्रिया । पत्र स० ४ । मा० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८५ । छ भण्डार ।

२८३० सम्बन्धविषयता । पत्र स० २४ । मा० ६^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । वे० स० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१ सस्कृतमञ्जरी । पत्र स० ४ । मा० ११×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वे० स० ११६७ । अ भण्डार ।

२८३२ सारस्वतीधातुपाठ । पत्र स० ५ । मा० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३ सारस्वतपंचसंधि । पत्र स० १३ । मा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
२० काल × । ले० काल स० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४ सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र स० १२१ मे १४५ । मा० ८^३×४^३ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १८४६ । अपूर्ण । वे० स० १३६५ । अ भण्डार ।

२८३५ प्रति स० २ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १७८१ । वे० स० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६ प्रति स ३। पत्र बं १५१। के काल बं १६१। के बं १२१। क मयार।

२८३७ प्रति स ४। पत्र बं १६१। के काल स १७१। के बं १३१। क मयार।

विशेष—नौबतबंद के सिद्ध हृष्टावाक्य के प्रतिनिधि की थी।

२८३८ प्रति स ५। पत्र बं १६१। के काल बं १८१। के बं १४१। क मयार।

मयार।

कबई (कबई) मयार के प्रतिनिधि हुई थी।

२८३९ प्रति स ६। पत्र बं १६१। के काल बं १९१। के बं १५१। क मयार।

विशेष—कमलावरकाल के प्रतिनिधि की थी।

२८४० प्रति स ७। पत्र बं १६१। के काल बं २०१। के बं १६१। क मयार।

२८४१ प्रति स ८। पत्र बं १६१। के काल बं २११। के बं १७१। क मयार।

मयार।

२८४२ प्रति स ९। पत्र बं १६१। के काल २२। के बं १८१। क मयार।

विशेष—कमलावरकाल के प्रतिनिधि की थी।

२८४३ प्रति स १०। पत्र बं १६१। के काल बं २३। के बं १९१। क मयार।

विशेष—कमलावरकाल के प्रतिनिधि की थी।

२८४४ प्रति स ११। पत्र बं १६१। के काल बं २४। के बं २०१। क मयार।

२८४५ प्रति स १२। पत्र बं १६१। के काल बं २५। के बं २११। क मयार।

मयार।

विशेष—कमलावरकाल के प्रतिनिधि की थी। केवल विषय

बंदि बंद है।

२८४६ प्रति स १३। पत्र बं १६१। के काल बं २६। के बं २२१। क मयार।

मयार।

२८४७ प्रति स १४। पत्र बं १६१। के काल बं २७। के बं २३१। क मयार।

विशेष—कमलावरकाल के प्रतिनिधि की थी।

२८४८ प्रति स १५। पत्र बं १६१। के काल बं २८। के बं २४१। क मयार।

विशेष—कमलावरकाल के प्रतिनिधि की थी। के प्रतिनिधि की थी।

२८४९ प्रति स १६। पत्र बं १६१। के काल बं २९। के बं २५१। क मयार।

विशेष—कमलावरकाल के प्रतिनिधि की थी। के प्रतिनिधि की थी।

१०३४, १३१३, ६५३, १२८६, १२७२, १२३२, १६५०, १२५०, १८८०, १२६१, १२६८, १२८४, १३०१, १३०२) ख भण्डार ने ७ प्रतिया (वे स० २१५, २१५ [अ], २१६, २१७, २१८, २१९, २६८) घ भण्डार ने ३ प्रतिया (वे० स० ११६, १२०, १२१) ङ भण्डार में १५ प्रतिया (वे० स० ८२१, ८२२, ८२३, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३१, से ८३८, ८३९) च भण्डार में ५ प्रतिया (वे० स० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) छ भण्डार में ६ प्रतिया (वे० स० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७) झ भण्डार में ३ प्रतिया (वे स० १२१, १४०, २२२) ञ भण्डार में १ प्रति (वे० स० २०) तथा ट भण्डार में ५ प्रतिया (वे० स० १६८८, १६९०, २१००, २०७२, २१०५) और हैं ।

उक्त प्रतियो में बहुत सी अपूर्ण प्रतिया भी हैं ।

२८५० सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी । पत्र स० ६७ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ८२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५१ सज्ञाप्रक्रिया । पत्र स० ६ । भा० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०० । ञ भण्डार ।

२८५२ सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति—जिनप्रभसूरि । पत्र स० ३ । भा० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल । ले० काल स० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे स० । ज भण्डार ।

विशेष—संवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

२८५३ सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित । पत्र स० ८ । भा० ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६४ । ज भण्डार ।

२८५४ प्रति स० २ । पत्र स० २४० । ले० काल × । वे० स० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—पूवाद्ध है ।

२८५५ प्रति स० ३ । पत्र स० १७६ । ले० काल × । वे० स० १०१ । ज भण्डार ।

विशेष—उत्तराद्ध पूर्ण है ।

इसके अतिरिक्त ज भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ६५, ६६) तथा ट भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० १६३४, १६६६) और हैं ।

२८५६ सिद्धान्तकौमुदी । पत्र स० ४३ । भा० १२½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४७ । ङ भण्डार ।

२८३६ प्रति स० ३। पत्रार्थ १८१। ने कालार्थ १८६६। ने र्थ १२१। अन्तर।

२८३७ प्रति स० ४। पत्रार्थ १९। ने कालार्थ १३२। ने र्थ १९१। अन्तर।

विशेष—बोधार्थ के द्विवचनार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी।

२८३८ प्रति स० ५। पत्रार्थ ६। ने कालार्थ १८३। अन्तर। ने र्थ १८२। अन्तर।

बोधार्थ (वस्ती) अन्तर में प्रतिनिधि हुई थी।

२८३९ प्रति स० ६। पत्रार्थ ७। ने कालार्थ १७३२। ने र्थ १७३२। अन्तर।

विशेष—अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी।

२८४० प्रति स० ७। पत्रार्थ ८। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७०। अन्तर।

२८४१ प्रति स० ८। पत्रार्थ ९। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७०। अन्तर।

२८४२ प्रति स० ९। पत्रार्थ १०। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७३। अन्तर।

विशेष—अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी।

२८४३ प्रति स० १०। पत्रार्थ ११। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७३। अन्तर।

विशेष—अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी।

२८४४ प्रति स० ११। पत्रार्थ १२। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७३। अन्तर।

२८४५ प्रति स० १२। पत्रार्थ १३। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७३। अन्तर।

विशेष—अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी। अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी। अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी।

२८४६ प्रति स० १३। पत्रार्थ १४। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७३। अन्तर।

२८४७ प्रति स० १४। पत्रार्थ १५। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७३। अन्तर।

विशेष—अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी।

२८४८ प्रति स० १५। पत्रार्थ १६। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७३। अन्तर।

विशेष—अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी। अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी।

२८४९ प्रति स० १६। पत्रार्थ १७। ने कालार्थ १७३। ने र्थ १७३। अन्तर।

विशेष—अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी। अन्तरार्थार्थ में प्रतिनिधि नहीं थी।

२८६५ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । मा० ११३×४३ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ से ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि । पत्र स० १७३ । मा० ११×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २ काल × । ले० काल × । वे० स० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है ।

२८६८ प्रति स० २ । पत्र स० १७८ । ले० काल स० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० स० ३५१ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैस्थालय में प्रतिलिपि की थी ।

२८६९ सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि । पत्र स० १६० । मा० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल स० १६५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७० प्रति स० २ । पत्र स० ६ मे ११६ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण हैं ।

२८७२ प्रति स० ४ पत्र स० ३ । ले० काल स० १६६१ । वे० स० १६४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १०५५, ३६८ तथा २०६४) भीर है ।

२८७३ सारस्वतदशाध्यायी । पत्र स० १० । मा० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
। २० काल × । ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६ । मा० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रतिदिन छ अथवा छ अक्षर में एक एक प्रति (वे सं ४५४ ४ ७ १७२) थीर है ।

२८२७ सिद्धान्तचौमुहीटीका — १। पत्र सं १२। पान ११३ $\frac{1}{2}$ × ११ रीं। नाला काट्टल। विश्व-

मालाछ। २ पत्र ×। वे पत्र ×। पुरी। वे सं १२। अक्षर।

विशेष—पत्रों के कुछ रींका पापी के कम भवे हैं।

२८२८ सिद्धान्तचौमुहीटीका—रामचंद्राग्रम। पत्र सं ४४। पान १३ $\frac{1}{2}$ × १३ रीं। नाला—छंलुछ।

विश्व—मालाछ। २ पत्र ×। वे पत्र ×। पुरी। वे सं ११११। अक्षर।

२८२९ प्रति छ २। पत्र सं २६। वे पत्र सं १५४७। वे सं ११२९। अक्षर।

विशेष—कुलुमह ने मूलरुचिदुर्लभ के प्रतिदिन की थी।

२८३० प्रति छ ३। पत्र सं ११। वे पत्र सं १४७। वे सं ११२३। अक्षर।

विशेष—इसी अक्षर में १ प्रतियां (वे सं ११२१ ११२४ ११२५ ११२६, ११२७ ११२८

१ ११७ ११ २ ११) थीर हैं।

२८३१ प्रति छ ४। पत्र सं १४। पान ११ $\frac{1}{2}$ × १३ रीं। वे पत्र सं १७५४ मालाछ पुरी १४।

वे सं ७५२। अक्षर।

२८३२ प्रति छ ५। पत्र सं १७। वे पत्र सं १६२। वे सं १२१। अक्षर।

विशेष—इसी अक्षर में १ प्रतियां (वे सं १२२ तथा ४) थीर हैं।

२८३३ प्रति छ ६। पत्र सं १६। वे पत्र सं १७२१ बीच पुरी २ वे सं ६। अक्षर।

विशेष—इसी मूल में एक प्रति थीर है।

२८३४ प्रति छ ७। पत्र सं १६। वे पत्र सं १८४ पत्र छ पुरी १। वे सं १२२। अक्षर।

अक्षर।

विशेष—अन्य प्रति एक है। छंलुह में नहीं अक्षरों की हैं। इसी अक्षर में एक प्रति (वे सं १२३)

थीर है।

इसी प्रतिदिन का अक्षर में २ प्रतियां (वे सं १२५४ ११२४ ११२५, ११२६, ११२७,

१ ११७ ११) का अक्षर में २ प्रतियां (वे सं १२९, ४) का तथा का अक्षर में एक एक प्रति (वे

सं ६ १२३ थीर हैं। अक्षर में १ प्रतियां (वे सं ११७७ ११२६, ११२७) का पुरी। अक्षर में २

प्रतियां (वे सं ४ २, ४१) का अक्षर में एक प्रति (वे सं ११६) तथा का अक्षर में १ प्रतियां (वे

सं १४५, १४५, १४६) थीर हैं।

वे सभी प्रतियां अक्षर हैं।

२८६५ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । मा० ११३×४३ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ मे ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि । पत्र स० १७३ । मा० ११×४^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुषोषिनीवृत्ति भी है ।

२८६८ प्रति स० २ । पत्र स० १७८ । ले० काल स० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० स० ३५१ । ज भण्डार ।

विशेष—प० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२८६९ सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्तिसूरि । पत्र स० १६० । मा० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल स० १६५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७० प्रति स० २ । पत्र स० ६ से ११६ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण हैं ।

२८७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६६१ । वे० स० १६४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १०५५, ३६८ तथा २०६४) भी है ।

२८७३ सारस्वतदशाध्यायी । पत्र स० १० । मा० १०^३×४^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६ । मा० १०×४^३ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४६ । ड भण्डार ।

निलेख—संविदात के अंतर्गत प्रत्येक एक एक प्रति (१ १ १५५ ४ ७ २७२) मोर है ।

२८७ मिश्रान्तधौमुदीव्रीहिका - ॥ पृथ १५ ॥ या २२३ × १६५ ॥ जगता सादृत ॥ निम्न-

आवरण । २ वात × । ले वात × । पूर्ण । वे र् ५५ । अ म्पार ।

विषय-पत्रों के कुछ प्रिय पानी से नम करने हैं।

१८२८. सिद्धान्तचन्द्रिका—रामर्षश्राममः । पृष्ठ ४६ । या. ६३×४३ इय। अष्टा-संस्कृत ।

विषय-सूचिका । २ बाल X । ३ बाल X । पूर्ण । ३ र्थ १८२१ । अथवा ।

२८५६ प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । दि० १५/७/१९७७ । पृ० सं० १२६९ । अ० नम्बर ।

विशेष—कृष्णमठ में भद्राष्टक सुरेन्द्रपीठ में प्रतिमिति की थी ।

३८६ प्रति सं ३। पत्र नं ११। वि. पत्र नं १५४७। वे. सं १९५१। अ. पत्र नं १५४७।

विशेष—इसी वर्षार में १ अतिथि (के अ १९११ १९१४ १९१५, १९१६ १९१७ १९१८

६ ६७७ ६८ २ २६) कीट है ।

१८६१ प्रतिष्ठ ४। नमः १४। का ११३५२३ १४। नि नमः १४५५ नमः १४।

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

२८६३. प्रति सं १। पत्र सं १७। दि. गजल १६ २। के सं २२९। का मन्थार।

निम्न—इसी कथार के २ प्रतिभा (के सं २२२ तथा ४) दीए हैं ।

७८६३ प्रति सं ६। पत्र सं २६। तै. शाल सं ३७२९ वीजपुरी २। तै. सं २। छ. बप्पार।

निवेदन—इसी विषय में एक प्रति धीर है ।

२८६४ प्रति छं ७। पत्र सं० १९। मे मन्त्र सं० १५५५५ कुटी १। मे नं० १३२। अ

भारत ।

विशेष—अबय वृत्ति एक है। संसृज्य के नहीं सम्बन्ध में हैं। इसी सम्बन्ध के एक प्रति (के सं २५१)

घोर है ।

इसके प्रतिष्ठित आ अध्यक्ष व ६ सदस्य (व १९७३, १९७४ १९७५, १९७६, १९७७

१ १९७१) का ब्यापार में प्रतिमा (के १९९, ४) का तथा न ब्यापार में एक एक प्रति (के

४. ६ ४२१ सीर है। जय मन्मार मे ३ प्रतिमा (मे ४० ११७० १२६६, १२६०) प्रभुर्ण । जय मन्मार मे २

प्रतिष्ठा (के सं ४६५१) का समारोह में एक प्रति (के सं २१९८) तथा दो समारोह में ३ प्रतिष्ठा (के

† $(\mathbb{Z}_2, \mathbb{Z}_2, \mathbb{Z}_2)$ गीत ॥

६. कृष्ण प्रसिद्ध अष्टांग हैं ।

२८६५ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । आ० ११३×४३ इव । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०१ । क मण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ मे ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३४७ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि । पत्र स० १७३ । आ० ११×४३ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १ काल × । ले० काल × । वे० स० ८६ । छ मण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है ।

२८६८ प्रति स० २ । पत्र स० १७८ । ले० काल स० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० स० ३५१ । ज मण्डार ।

विशेष—प० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैस्थालय में प्रतिलिपि की थी ।

२८६९ सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्तिसूरि । पत्र स० १६० । आ० १०×४ इव । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल स० १६५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६५ । अ मण्डार ।

२८७० प्रति स० २ । पत्र स० ६ मे ११६ । ले० काल स० १६५७ । वे० स० २६४ । छ मण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले० काल स० १८२८ । वे० स० २८३ । छ मण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभाण खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण है ।

२८७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६६१ । वे० स० १६४३ । ट मण्डार ।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त अ च और ट मण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १०५५, ३६८ तथा २०६४)

और है ।

२८७३ सारस्वतदशाध्यायी । पत्र स० १० । आ० १०३×४३ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० स० १३७ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६ । आ० १०×४३ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४६ । छ मण्डार ।

१८०४. सिद्धान्तविष्णु—श्रीमधुसूदन सरस्वती । पृथक् २ । या १ × १ इव । ज्ञाना-
नन्द । विषय—व्याकरण । र. काल × । मे. काल १ ७४९ पाठोप सुपी ११ । पूर्ण । के. १ ५७ । अ
नन्द ।

विशेष—इति श्रीकारणवृद्ध परिव्रज्याचार्य श्रीविश्वेश्वर सरस्वती ऋषयणाथ शिष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती
विरचित सिद्धान्तविष्णुनामः ॥ अथ १७४९ वर्षे व्याधिकृतो वृत्तुल्लोचनीयः सुवराचरे ऋषयणाथमिश्र
श्री रामानन्द सुपीठ ऋषयणाथ सिद्धान्तविष्णुनेति । सुवराचरः ॥

१८०५ सिद्धान्तसंक्षिप्ता—श्रीगोरायड । पृथक् २३ । या १२ × २ इव । ज्ञाना-
नन्द । विषय—व्याकरण । र. काल × । मे. काल × । पूर्ण । के. १ ३४ । अ नन्द ।

१८०७ सिद्धान्तमुद्रणवर्षी—पञ्चमम मुद्राचार्य । पृथक् ७० । या १२ × २ इव । ज्ञाना-
नन्द । विषय—व्याकरण । र. काल × । मे. काल १ ३३ ज्ञाना सुपी ३ । के. १ ३ । अ नन्द ।

१८०८ सिद्धान्तमुद्रणवर्षी— । पृथक् ७ । या १२ × २ इव । ज्ञाना-
नन्द । विषय—व्याकरण । र. काल × । मे. काल १ ७०२ पठ सुपी ३ । पूर्ण । के. १ १ । अ नन्द ।

१८०९ हेमनीवृद्धवृत्ति— । पृथक् ४४ । या १ × २ इव । ज्ञाना-
नन्द । विषय—व्याकरण । र. काल × । मे. काल × । पूर्ण । के. १ ४२ । अ नन्द ।

१८१० हेमनीवृद्धवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पृथक् २४ । या १२ × २ इव । ज्ञाना-
नन्द । विषय—व्याकरण । र. काल × । मे. काल × । पूर्ण । के. १ ४४ । अ नन्द ।

१८११ हेमनीवृद्धवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पृथक् ३ । या १ × २ इव । ज्ञाना-
नन्द । विषय—व्याकरण । र. काल × । मे. काल × । पूर्ण । के. १ ३२ ।

विशेष—श्रीय के अक्षराव नम नदी । इति शशीव ।



कोश

२८८२ अनेकार्थध्वनिमञ्जरी—महीचरण कवि । पत्र स० ११ । ग्रा० १२×५½ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १४ । ङ भण्डार ।

२८८३ अनेकार्थध्वनिमञ्जरी । पत्र स० १४ । ग्रा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६१५ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण है ।

२८८४ अनेकार्थमञ्जरी—तन्त्रदास । पत्र स० २१ । ग्रा० ८½×४½ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१८ । झ भण्डार ।

२८८५ अनेकार्थशत—महाराज हर्षकीर्ति । पत्र स० २३ । ग्रा० १०½×४½ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल स० १६६७ ब्रैशाल बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १५ । ढ भण्डार ।

२८८६ अनेकार्थसमग्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ४ । ग्रा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कोश । २० काल × । ले० काल स० १६६६ अपाठ बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३८ । क भण्डार ।

२८८७ अनेकार्थसमग्र । पत्र स० ४१ । ग्रा० १०×४½ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है ।

२८८८ अभिधानकोष—गुरुपुत्रमन्त्रदेव । पत्र स० ३४ । ग्रा० ११½×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११७१ । अ भण्डार ।

२८८९ अभिधानचिन्तामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०५ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है ।

२८९० प्रति स० २ । पत्र स० २३५ । ले० काल स० १७३० अपाठ बुदी १० । वे० स० ३६ । क

भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । महाराणा राजसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१८८१ प्रति स १। पन ल १९। ने कल ल १८ १ ज्येष्ठ शुदी १। ने ल १३। क
नम्बार।

विशेष—इयोऽस्यवृत्ति है।

१८८२ प्रति स ४। पन ल ७ के ११४। ने कल ल १७८ माघीय शुदी ११। मपूर्व। ने
ल १। क नम्बार।

१८८३ प्रति स ३। पन ल ११९। ने कल ल १८९९ माघीय शुदी २। ने ल १। क
नम्बार।

१८८४ प्रति स ६। पन ल १८३। ने कल ल १ १९ वीषाख शुदी १३। ने ल १११। क
नम्बार।

विशेष—यं जीमद्वय ने प्रतिनिधि की थी।

१८८५ अमिषामासाकर—बर्षासमूहगणि। पन ल १६। या १४४३ दश। माघा—वसुध।
विषय—जीम १८। ने कल ४। मपूर्व। ने ल २७। क नम्बार।

१८८६ अमिषामासा—यं शिवजीसाका। पन ल २३। या १९४२३ दश। माघा—वसुध।
विषय—जीम १८। ने कल ४। मपूर्व। ने ल १। क नम्बार।

विशेष—नेमकाक एक है।

१८८७ अमरकोश—अमरसिद्ध। पन ल २६। या १९४६ दश। माघा—वसुध। विषय—जीम
८। ने कल ४। ने कल ल १ १ ज्येष्ठ शुदी १४। मूर्ति। ने ल २७२। क नम्बार।

विशेष—इसका नाम विनामुद्रासन की है।

१८८८ प्रति स २। पन ल ३। ने कल ल १ १३। ने ल १८११। क नम्बार।

१८८९ प्रति स ३। पन ल १४। ने कल ल १८११। ने ल १९२२। क नम्बार।

१९०० प्रति स ४। पन ल १८ के ११। ने कल ल १ २ माघीय शुदी १। मपूर्व। ने
ल १११। क नम्बार।

१९०१ प्रति स ३। पन ल १६। ने कल ल १ १४। ने ल १४। क नम्बार।

१९०२ प्रति स ६। पन ल १९ के ११। ने कल ल १ १४। ने ल १९। मपूर्व। क
नम्बार।

२६०३ प्रति स० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८६८ आसोज सुदी ६ । वै० स० २४ । ङ

भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४ प्रति स० ८ । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८८३ आसोज सुदी ३ । वै० स० २७ । ङ

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर में मालीराम माह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५ प्रति स० ६ । पत्र स० ८४ । ले० काल स० १८१८ कार्तिक बुदी ८ । वै० स० १३६ । छ

भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी । स० १८२२ आषाढ सुदी २ में ३) ६० देकर पं० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने खेताम्बर अती से ली ।

२६०६ प्रति स० १० । पत्र स० ६१ से १३१ । ले० काल स० १८३० आषाढ बुदी ११ । अपूर्ण ।

वै० स० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—मोतीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६०७ प्रति स० ११ । पत्र स० ८४ । ले० काल स० १८८१ बैशाख सुदी १५ । वै० स० ३४४ । ज

भण्डार ।

विशेष—कह्नी २ टीका भी ली हुई है ।

२६०८ प्रति स० १० । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १७६६ मगसिर सुदी ५ । वै० स० ७ । व्य

भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अथ भण्डार में २१ प्रतिया (वै० स० ६३८ ८०४, ७६१, ६२३, ११६६, ११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७, १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६० १८५१, २१०५) ङ भण्डार में ५ प्रतिया (वै० स० २१, २२, २३, २५, २६) ख भण्डार में ५ प्रतिया (वै० स० ६, १०, ११, २६६ २६६) ङ भण्डार में ११ प्रतिया (वै० स० १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६) च भण्डार में ७ प्रतिया (वै० स० ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार में ४ प्रतिया (वै० स० १३६ १३६, १६१, २४ [क]) ज भण्डार में ४ प्रतिया (वै० स० ५६, ३५०, ३५२, ६२) ङ भण्डार १ प्रति (वै० स० ६५), तथा ट भण्डार में ४ प्रतिया (वै० स० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६) भी हैं ।

२८२१ प्रति स ३। पत्र तं ११। नि पत्र तं १२ एकोष्ठ गुरी १। नि तं ३०। अ

अकार ।

विशेष—स्वोक्तवृत्ति है।

२८२२ प्रति स ४। पत्र तं ७ नि ११४। नि पत्र तं १७० पातोष्ठ गुरी ११। अपूर्व। नि

तं १। अ अकार ।

२८२३ प्रति स ५। पत्र तं ११२। नि पत्र तं ११२२ पातोष्ठ गुरी २। नि तं २। अ

अकार ।

२८२४ प्रति स ६। पत्र तं २। नि पत्र तं ११२ वीर्य गुरी १२। नि तं १११। अ

अकार ।

विशेष—यं ओष्ठगम्य नि प्रतिमिति नी नी।

२८२५ अमिधान्तराकार—अमिधान्तराकार। पत्र तं २१। पा १ २४२२ दन। पाता-वन्तुत।

विशेष—ओष्ठ। १ पत्र ×। नि पत्र ×। अपूर्व। नि तं २७। अ अकार ।

२८२६ अमिधान्तराकार—यं शिवाजीकार। पत्र तं २१। पा १२४२२ दन। पाता-वन्तुत।

विशेष—ओष्ठ। १ पत्र ×। नि पत्र ×। अपूर्व। नि तं १। अ अकार ।

विशेष—द्विपत्राकार है।

२८२७ अमरकोष्ठ—अमरकोष्ठ। पत्र तं २१। पा १२४२२ दन। पाता-वन्तुत। विश्व-ओष्ठ।

१ पत्र ×। नि पत्र तं १ एकोष्ठ गुरी १४। अपूर्व। नि तं २ ७२। अ अकार ।

विशेष—द्विपत्राकार अमरकोष्ठगम्य नी नी।

२८२८ प्रति स २। पत्र तं ११। नि पत्र तं ११२। नि तं ११११। अ अकार ।

२८२९ प्रति स ३। पत्र तं १४। नि पत्र तं १११। नि तं ११२२। अ अकार ।

२९ प्रति स ४। पत्र तं ११ नि १११। नि पत्र तं १ २ पातोष्ठ गुरी १। अपूर्व। नि

तं १११। अ अकार ।

२९ १ प्रति स ५। पत्र तं ११। नि पत्र तं ११४। नि तं १४। अ अकार ।

२९ २ प्रति स ६। पत्र तं ११ नि १११। नि पत्र तं ११४। नि तं ११। अपूर्व। अ

अकार ।

२६१६. त्रिकाष्टशेषाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र स० ४३ । आ० ११×५ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८० । छ मण्डार ।

२६२० प्रति स० २ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । वे० स० १४४ । च मण्डार ।

२६२१ प्रति स० ३ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १६०३ आसीज बुदी ६ । वे० स० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में प० सदाशिवजी के दिव्य फतेहलास ने प्रतिलिपि की थी ।

२६२२. नाममाला—घनजय । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—बोध ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६४७ । अ मण्डार ।

२६२३ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८३७ फागुण सुदी १ । वे० स० २८२ । अ

मण्डार ।

विशेष—पाटोदी के मन्दिर में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ मण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० स० १४, १०७३, १०८६) भी हैं ।

२६२४ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १३०६ कार्तिक बुदी ८ । वे० स० ६३ । ख

मण्डार ।

विशेष—ह मण्डार में एक प्रति (वे० स० ३२२) भी है ।

२६२५ प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० स० २४६ । छ

मण्डार ।

विशेष—प० भारद्वाज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० २६६) तथा ज मण्डार में (वे० स० २७६) की एक प्रति भी है ।

२६२६ प्रति स० ५ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८१६ । वे० स० १८५ । झ मण्डार ।

२६२७ प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८०१ फागुण सुदी ६ । वे० स० ५२२ । ज

मण्डार ।

२६२८ प्रति स० ७ । पत्र स० १७ से ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६०८ । ट मण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ मण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० स० १०७३, १४, १०८६) ड, झ तथा ज मण्डार में १-१ प्रति (वे० स० ३२२, २६६, २७६) भी हैं ।

२६४०. लिङ्गानुशासन—हेमचन्द्र । पृष्ठ सं० १० । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई हैं ।

२६४१ विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर । पृष्ठ सं० १०१ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२ प्रति सं० २ । पृष्ठ सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२६४३ विश्वलोचन—धरसेन । पृष्ठ सं० १८ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

काश । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है ।

२६४४ विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका । पृष्ठ सं० २६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । अ भण्डार ।

२६४५ शतक । पृष्ठ सं० ६ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । छ भण्डार ।

२६४६ शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर । पृष्ठ सं० १६ । आ०

१०×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७ शब्दरत्न । पृष्ठ सं० १६६ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । ज भण्डार ।

२६४८ शारदीयानाममाला । पृष्ठ सं० २४ से ४७ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२६४९ शिलोच्चकोश—कवि सारस्वत । पृष्ठ सं० १७ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—काश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीयखंड तक) वे० सं० ३४३ । च भण्डार ।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है ।

कवेरमहसिहस्य कृतिरेपाति निर्मला ।

श्रीचन्द्रतारकं भूयानामलिङ्गानुशासनम् ।

पद्यानिबोधयत्येकं शास्त्राणि कुर्वते कवि

तत्सोरभनमस्वत सतस्तान्वन्ति तद्गुणा ॥

२६२६ मासमात्रा— । पत्र नं १९ । या १ × २३ इंच । माता-संगुत । विषय-बोध । २
 कल × । ने कल × । पूर्ण । के नं १२९ । छ मन्थार ।

२६२७ मासमात्रा—बनारसीदास । पत्र नं १४ । या २ × २२ इंच । माता-हिन्दी । विषय-भाव ।
 २ कल × । ने कल × । पूर्ण । के नं २४ । छ मन्थार ।

२६२८ शीकर(कारा)—— । पत्र नं २३ । या २ × ४ इंच । माता-हिन्दी । विषय-बोध ।
 २ कल × । ने कल × । पूर्ण । के नं १४ । छ मन्थार ।

विशेष—रिक्तमहंनमति के प्रतिनिधि की थी ।

२६२९ मासमात्रा—महेश्वर । पत्र नं २२ । या २ × २ इंच । माता-हिन्दी विषय-बोध । २
 कल × । ने कल नं १ ३३ कागुण गुरी ११ । पूर्ण । के नं २२३ । छ मन्थार ।

विशेष—कनकमन्त्र के प्रतिनिधि की थी ।

२६३० मेदिनीकाया । पत्र नं २४ । या १ २ × ४ इंच । माता-संगुत । विषय-भाव ।
 २ कल × । ने कल × । पूर्ण । के नं २९ । छ मन्थार ।

२६३१ प्रति सं २ । पत्र नं ११९ । ने कल × । के नं २७ । छ मन्थार ।

२६३२ रूपमन्त्रीन्यासमात्रा—गोपाकाशस मुख रूपमन्त्र । पत्र नं । या १ × २ इंच ।
 माता-संगुत । विषय-बोध । २ कल नं १९४४ । ने कल नं १७ । पत्र गुरी १ । पूर्ण । के नं
 १७७२ । छ मन्थार ।

विशेष—ब्राह्म के नाममन्त्रा की तरह लीक है ।

२६३३ कथुनासमात्रा—हर्षकोटिसूरी । पत्र नं २३ । या २ × ६ इंच । माता-संगुत । विषय-
 बोध । २ कल × । ने कल नं १७९ लीक गुरी २ । पूर्ण । के नं ११२ । छ मन्थार ।

विशेष—सवाईराम के प्रतिनिधि की थी ।

२६३४ प्रति सं २ । पत्र नं २ । ने कल × । के नं ४२ । छ मन्थार ।

२६३५ प्रति सं ३ । पत्र नं के १९, २७ के ४२ । ने कल × । पूर्ण । के नं १२४ । छ
 मन्थार ।

२६३६ विद्यापुत्रासल— । पत्र नं २ । या १ × ४ इंच । माता-संगुत । विषय-बोध ।
 २ कल × । ने कल × । पूर्ण । के नं १९२ । छ मन्थार ।

विशेष—२ के बाले पत्र लगी है ।

२६४०. लिगानुशासन—हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । भा० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ज भण्डार ।

विशेष—कही २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई हैं ।

२६४१ विश्वप्रकाश—चैयराज महेश्वर । पत्र सं० १०१ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२६४३ विश्वलोचन—धरसेन । पत्र सं० १८ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काश । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है ।

२६४४ विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका ” । पत्र सं० २६ । भा० १०×४३ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । अ भण्डार ।

२६४५ शतक । पत्र सं० ६ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । ड भण्डार ।

२६४६ शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर । पत्र सं० १६ । भा०
१०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७ शब्दरत्न । पत्र सं० १६६ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । ज भण्डार ।

२६४८ शारदीयाममाला ” । पत्र सं० २४ से ४७ । भा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२६४९ शिलोच्छकोश—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । भा० १०३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीयखंड तक) वे० सं० ३४३ । च भण्डार ।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है ।

कवेरमर्हसिहस्य कृतिरेपाति निर्मला ।

श्रीचन्द्रतारक भूयाश्चामलिगानुशासनम् ।

पद्यानिबोधयत्यर्कं शास्त्राणि कुर्वते कवि

तत्सौरभनभस्वत सतस्सन्वन्तितद्गुणा ॥

भूमेभ्यवर्यद्वेभ्यः नारायणेषु घटितेषु ।
एष नारायणमण्डलेऽपि विद्यमानो भवति ॥

२६५० सप्तमसप्तमिनी—भद्रकर्मणि । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ ।
विद्वत्—विद्वत् । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ ।
विद्वत्—विद्वत् । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ । पृष्ठ १८५ ।



ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहत केवली पाशा । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-ज्योतिष । २० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सहिजानन्दपुर में हुई थी ।

२६५२ अरिष्ट कर्ता । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—६० श्लोक हैं ।

२६५३ अरिष्टाध्याय । पत्र सं० ११ । आ० ८×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—५० जीवणराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से भागे भारतीस्तोत्र दिया हुआ है ।

२६५४ अयजद केवली । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । ख भण्डार ।

२६५५ दृष्टप्रह फल । पत्र सं० १ । आ० १०×७ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

२६५६ करण कौतूहल । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । ज भण्डार ।

२६५७ करलखण । पत्र सं० ११ । आ० १०×५ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । माणिक्यचन्द्र ने वृन्दावन में प्रतिलिपि की ।

२६५८ कर्पूरचक्र— । पत्र सं० १ । आ० १४×११ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८६३ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्र भवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारों ओर देश चक्र है तथा उनका फल है । ५० शुभाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६३६ प्रति म० २। पत्र नं १। ले बाल नं १५४। वे नं ११२६। अ मन्थार।

विशेष—विष मरलीचर के मन्थार में प्रतिनिधि की थी।

२६३७ वमराशि कल (कर्म विषाक)। पत्र नं ११। या २३४४ द०। मन्थार—मन्थार।

विषय—मोक्षि। १ बाल ×। ले बाल ×। पुर्ण। वे नं ११२६। अ मन्थार।

२६३८ कर्म विषाक कल। पत्र नं १। या १ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय—मोक्षि।

१ बाल ×। ले बाल ×। पुर्ण। वे नं ११। अ मन्थार।

विशेष—मोक्षियों के मन्थार पत्रों का नाम दिया हुआ है।

२६३९ काकाग्राम—। पत्र नं १। या १ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय—मोक्षि। १

बाल ×। ले बाल ×। पुर्ण। वे नं ११। अ मन्थार।

२६४० काकाग्राम—। पत्र नं २। या १ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय—मोक्षि।

१ बाल ×। ले बाल ×। पुर्ण। वे नं ११२६। अ मन्थार।

२६४१ कौमुद जीजावली—। पत्र नं २। या १ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय

मोक्षि। १ बाल ×। ले बाल नं १५२१। मन्थार पुर्ण ११। पुर्ण। वे नं ११२६। अ मन्थार।

२६४२ कर्म मन्थार—। पत्र नं २। या १ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय—मोक्षि।

१ बाल ×। ले बाल ×। पुर्ण। वे नं ११२६। अ मन्थार।

२६४३ मन्थार—। पत्र नं ३। या ३ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय—मोक्षि।

१ बाल ×। ले बाल नं १५। पुर्ण। वे नं ११२६। अ मन्थार।

२६४४ मन्थार—। पत्र नं २। या १ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय—मोक्षि।

१ बाल ×। ले बाल नं १५२६। पुर्ण। वे नं ११२६। अ मन्थार।

२६४५ मन्थार—। पत्र नं १। या १ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय—मोक्षि।

१ बाल ×। ले बाल नं १११। पुर्ण। वे नं ११२६। अ मन्थार।

विशेष—मन्थार की मन्थार तथा मन्थारों के मन्थार एवं मन्थारों के मन्थार हैं।

२६४६ मन्थार—। पत्र नं १। या १ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय—मोक्षि। १

बाल ×। ले बाल ×। पुर्ण। वे नं ११२६। अ मन्थार।

२६४७ मन्थार—। पत्र नं २। या १ × ४५ द०। मन्थार—मन्थार। विषय—

मन्थार। १ बाल ×। ले बाल ×। पुर्ण। वे नं ११२६। अ मन्थार।

ज्योतिष एव निमित्तज्ञान]

२६७८ चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच "" । पत्र स० ५-२३ । आ० १०×४^३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसके आगे पंचमंत्र प्रमाण लक्षण भी है ।

२६७९ चमत्कारचिंतामणि "" । पत्र स० २-६ । आ० १०×४^३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । १० काल × । ले० काल स० × । १८१८ फागुण बुधो ५ । पूर्ण । वे० स० ६३२ । अ भण्डार ।

२६८० चमत्कारचिंतामणि । पत्र स० २६ । आ० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७३० । ट भण्डार ।

२६८१ छायापुरुषलक्षण "" । पत्र सं० २ । आ० ११×४^३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

सांख्यिक शास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

विशेष—नौनिघराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६८२ जन्मपत्रीग्रहविचार "" । पत्र स० १ । आ० १२×४^३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२१३ । अ भण्डार ।

२६८३ जन्मपत्रीविचार " । पत्र स० ३ । आ० १२×४^३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१० । अ भण्डार ।

२६८४ जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य । पत्र स० २-२० । आ० १२×४^३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । १० काल × । ले० काल स० १८३१ । अपूर्ण । वे० स० १०४८ । अ भण्डार ।

विशेष—शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी ।

२६८५ जन्मफल "" । पत्र स० १ । आ० ११^३×४^३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२४ । अ भण्डार ।

२६८६ जातकर्मपद्धति श्रीपति । पत्र स० १४ । आ० ११×४^३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-ज्योतिष । १० काल × । ले० काल स० १६३८ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ६०० । अ भण्डार ।

२६८७ जातकपद्धति—केशव । पत्र स० १० । आ० ११×४^३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१७ । ज भण्डार ।

२६८८ जातकपद्धति । पत्र सं० २६ । आ० ८×६^३ । भाषा-संस्कृत । १० काल × । ले०

काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

॥८८॥ अलङ्कारः—विशदु विराज । नमः ४३ । वा १ ३४४ इव । वाचा—अमृत ।

विषय-सूची । ए. काल X । ले. काल में १७१६ आरम्भ कुटी ११ । पूर्ण । के. में १७ । अ. काल ।

दिवस—मालपुर के ५ मूलपुष्कलपणि के प्रतिनिधि भी थी ।

२६६ अति सं ३ । वन सं १ । नि वन सं १५४ वर्गीक कृती ६ । ३ सं १३७ ।

३. कथम् ?

द्वितीय—यह संकायदर में बाकपुर में प्रतिमिति की थी ।

५६६१ जगन्नाथस्वामि—। ५५ अं १ मे ११। आ १५५१ ह ५। भाग्य-मार्ग। विष्णु-

करीब १५ लाख × १० लाख × २० लाख । ये वं १७४३ । ट बगार ।

२१६२ स्वातिपारम्परा—। पृष्ठ नं १३१४। का १०४४ ६५। ५५—मूल्य। विप-

इतिविषयः । ए. बाल × । नि. बाल × । अतः । वि. न. इति । अ. बाल ।

२६६३ प्रति सं० २ । वष सं ३५ । नि वज्र × । वे सं १५४ । अ मङ्गल ।

विशेष—यदि संसूच हीना समित है ।

२६६५. अवाधिपत्रशिमाला— संराज । वन नं २ मे ९७ । या ६३×४३ इंच । भाषा—संराज ।

विषय—ओष्ठिद्वि । ६ पाठ \times । मे पाठ \times । पूर्ण । मे मं २५ २ । का पथार ।

२६६६. अष्टादशवर्षाभ्यं-----। वयसं ६। आ १ ३४५३ हव। भाना-भारत। विष्णु-शक्ति

१ घण्टा × ३० दिनांक = ३० घण्टा। अतः २४ घण्टा में २४ घण्टा।

२६६ व्यापारसारमाप—छपाराम । नम १३ ३ के २३ । आ २६×६ दम । मात—मिनी

(ब)। विषय-प्रोटिप : १ बाल X। वे कम से १५३ नासिक गुटी १२। धनुर्दः से ल १२११।
मपाः।

विशेष—कोराव रीच के लीनिबराव सब की कुल्फ के निचा ।

बहुरि नाम—(कल ३ वर)

बच बेंदरिबा भिषील बर को बर—

ਸੰਤਰਿਤੀ ਖੋਲੀ ਯਥਾ ਹਰਦਾਸ ਰਾਜੀ ਥਾਨ ।

संस्कृत ग्रन्थों में कविता के विविध प्रकार ॥५॥

श्रीलोक गणेशाय नमः ।

इस की कल्पना बहुत है तब ही हम में है। (17)

ग्रन्थि—

घरप लग्यो जा ग्रस में सोई दिन चित धारि ।

वा दिन उतनी घड़ी जु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥

लग्न लिखे ते गिरह जो जा घर बैठो आय ।

ता घर के फल सुफल को कीजे मित्र बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार संपूर्ण ।

२६६७ ज्योतिषसारलघुचन्द्रिका—काशीनाथ । पत्र स० ६३ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल स० १८६३ पीप सुदी २ । पूर्ण । वै० म० ६३ । ख भण्डार ।

२६६८ ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र । पत्र स० १६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० २८२ । ख भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता सागरचन्द्र हैं ।

२६६९ ज्योतिषशास्त्र । पत्र स० ११ । आ० ५×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २०१ । छ भण्डार ।

३००० प्रति स० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल × । वै० स० ५२१ । ख भण्डार ।

३००१. ज्योतिषशास्त्र । पत्र स० ५ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० म० १६८४ । ट भण्डार ।

३००२. ज्योतिषशास्त्र । पत्र स० ५८ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । १० काल × । ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वै० स० १११५ । अ भण्डार ।

विशेष—ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है ।

प्रारम्भ में कुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी सख्या २२ है । इनमें मुख्यरूप से निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा विशनसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह

जन्म स० १७४५ मगसिर

महाराजा विशनसिंह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह

जन्म स० १७४७ चैत्र सुदी ६

महाराजा सवाई जयसिंह की राणी गौडि के पुत्र

स० १७६६

रामचन्द्र (जन्म नाम भाष्कराम)

स० १७१५ फागुण सुदी २

दौलतरामजी (जन्म नाम बेगराज)

स० १७४६ भाद्रपद बुदी १४

३० ३ सात्रिकसमुच्चय—। पत्र सं १२। या ११×४५ इंच। मापा—संस्तुत। विषय—

ज्योतिष। १। बाल ×। २। बाल सं १ २६। पूर्ण। ३। सं २२२। अथवा

विषय—बड़ा मराणने में श्री पार्वतीमाय श्रीलालय में श्रीमत्पुत्राय के प्रतिमिति की की।

३ ४ सात्रिकसमुच्चय—। पत्र सं ३। या १ ४५ इंच। मापा—संस्तुत।

विषय—ज्योतिष। १। बाल ×। २। बाल ×। पूर्ण। ३। सं १२२। अथवा

३ ०२ त्रिपुरासमुच्चय—। पत्र सं १। या ११×२ इंच। मापा—संस्तुत। विषय—ज्योतिष।

१। बाल ×। २। बाल ×। पूर्ण। ३। सं ११२। अथवा

३००६ श्रीकामाख्या—। पत्र सं १६। या ११×२ इंच। मापा—संस्तुत। विषय—ज्योतिष।

१। बाल ×। २। बाल ×। पूर्ण। ३। सं ११२। अथवा

विषय—१। से १ तक पुनरी प्रति के पत्र हैं। २। से १४ तक वाली प्रति प्राचीन हैं। ३। प्रतिओं का अभिप्राय है।

३००७ दशोत्तमसुचर—। पत्र सं ३। या ३५×४ इंच। मापा—संस्तुत। विषय—ज्योतिष।

१। बाल ×। २। बाल ×। पूर्ण। ३। सं १०२२। अथवा

३ ८ मङ्गलविचार—। पत्र सं ११। या ४२ इंच। मापा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष।

१। बाल ×। २। बाल सं १ १। पूर्ण। ३। सं २०६। अथवा

विषय—टीक मङ्गल विचार की किसे हुये हैं।

निम्नलिखित रचनाओं की हैं—

सात्रिकसमुच्चय—

पत्र कागज हिन्दी [१ पत्रिका]

मित्रविचार के बारे—

हिन्दी [४४ पत्रिका]

दशगुणांकन—

हिन्दी [११ बाल सं १११०]

विषय—मात्र बिंदी का लेख मापा गया है जिसके साथ लेने में क्या समय लगा है इसका वर्णन १६ पत्रों में किया गया है।

३ ८ मङ्गलविचार—। पत्र सं २। या १ ४ इंच। मापा—संस्तुत। विषय—

ज्योतिष। १। बाल ×। पूर्ण। ३। सं २४। अथवा

३ १ मङ्गलसूत्र—। पत्र सं ३। से २४। या २०×३ इंच। मापा—संस्तुत। विषय—ज्योतिष।

१। बाल ×। २। बाल सं १ १५। पूर्ण। ३। सं १११। अथवा

ज्योतिष एव निमित्तज्ञान]

३०११ नरपतिजयचर्या—नरपति । पत्र स० १४८ । भा० १२३×६ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल स० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ६४६ । अ मण्डार ।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं हैं ।

३०१२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र स० २६ । भा० १०×४३ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८१० मगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वै० स० १७२ । अ मण्डार ।

३०१३ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वै० स० ३४५ । अ मण्डार ।

३०१४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८६५ फागुण सुदी ३ । वै० स० ६५ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रत्येक पत्रि के नीचे अर्थ लिखा हुआ है ।

३०१५ निमित्तज्ञान (भद्रबाहु सहिता)—भद्रबाहु । पत्र स० ७७ । भा० १०३×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १७७ । अ मण्डार ।

३०१६ निषेकाध्यायवृत्ति । पत्र स० १८ । भा० ८×६ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १७४८ । ट मण्डार ।

विशेष—१८ से आगे पत्र नहीं हैं ।

३०१७ नीलकण्ठताजिक—नीलकण्ठ । पत्र स० १४ । भा० १२×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १०५८ । अ मण्डार ।

३०१८ पञ्चांगप्रबोध । पत्र स० १० । भा० ८×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १७३५ । ट मण्डार ।

३०१९ पचांग—चण्डू । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न वर्षों के पचांग हैं ।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८३, ८७, ८८ ।

३०२० पचांग । पत्र स० १३ । भा० ७३×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्ण । वै० स० २४७ । ख मण्डार ।

३०२१ पचांगमाधन—गणेश (केशवपुत्र) । पत्र स० ५२ । भा० ६×५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८८२ । वै० स० १७३१ । ट मण्डार ।

३०३ शक्तिप्रसङ्गः—। पत्र नं १२। का ११५६ दृष्ट। भाषा—महाभारत। विषय—शक्ति।
१ का ५। मे का ५। पृष्ठा। मे नं १२३। अथ भाष्यम्।

विरह—यथा भाष्ये मे श्री शक्तिप्रसङ्गः श्री शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः।

३ ०४ शक्तिप्रसङ्गः—। पत्र नं २। का १ ५६ दृष्ट। भाषा—महाभारत।
विषय—शक्ति। १ का ५। मे का ५। पृष्ठा। मे नं १२२। अथ भाष्यम्।

३ ०५ शक्तिप्रसङ्गः—। पत्र नं ३। का ११५६ दृष्ट। भाषा—महाभारत। विषय—शक्ति।
१ का ५। मे का ५। पृष्ठा। मे नं ११३। अथ भाष्यम्।

३ ०६ शक्तिप्रसङ्गः—। पत्र नं ११। का ११५६ दृष्ट। भाषा—महाभारत। विषय—शक्ति।
१ का ५। मे का ५। पृष्ठा। मे नं ११३। अथ भाष्यम्।

विरह—१ मे १ का ५ पृष्ठा। २ मे १५ का ५ पृष्ठा। ३ मे १५ का ५ पृष्ठा। ४ मे १५ का ५ पृष्ठा।
शक्तिप्रसङ्गः।

३ ०७ शक्तिप्रसङ्गः—। पत्र नं ३। का ५६ दृष्ट। भाषा—महाभारत। विषय—शक्ति।
१ का ५। मे का ५। पृष्ठा। मे नं १२३। अथ भाष्यम्।

३ ०८ शक्तिप्रसङ्गः—। पत्र नं ११। का ५६ दृष्ट। भाषा—महाभारत। विषय—शक्ति।
१ का ५। मे का ५। पृष्ठा। मे नं १०३। अथ भाष्यम्।

विरह—शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः।

शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः।

शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः।

शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः।

शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः।

विरह—यथा भाष्ये मे श्री शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः मे श्री शक्तिप्रसङ्गः।
१५ पृष्ठा। मे श्री शक्तिप्रसङ्गः।

३ ०९ शक्तिप्रसङ्गः—। पत्र नं ११। का १ ५ दृष्ट। भाषा—महाभारत। विषय—
शक्ति। १ का ५। मे का ५। पृष्ठा। मे नं १२३। अथ भाष्यम्।

३ १ शक्तिप्रसङ्गः—। पत्र नं ११। का १ ५ दृष्ट। भाषा—महाभारत। विषय—शक्ति।
१ का ५। मे का ५। पृष्ठा। मे नं ११३। अथ भाष्यम्।

ज्योतिष एव निमित्तज्ञान]

३०११ नरपतिजयचर्या—नरपति । पत्र स० १४८ । आ० १२३×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल स० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ६४६ । अ मण्डार ।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं है ।

३०१२ नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र स० २६ । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८१० मगसिर बुदी १४ । पूर्णा । वे० स० १७२ । अ मण्डार ।

३०१३ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ३४५ । अ मण्डार ।

३०१४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८६५ फागुण सुदी ३ । वे० स० ६५ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है ।

३०१५ निमित्तज्ञान (भद्रवाहु संहिता)—भद्रवाहु । पत्र स० ७७ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १७७ । अ मण्डार ।

३०१६ निपेकाध्यायवृत्ति । पत्र स० १८ । आ० ८×६३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १७४८ । ट मण्डार ।

विशेष—१८ से आगे पत्र नहीं है ।

३०१७ नीलकण्ठताजिक—नीलकण्ठ । पत्र स० १४ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १०५८ । अ मण्डार ।

३०१८ पञ्चागप्रबोध । पत्र स० १० । आ० ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० १७३५ । ट मण्डार ।

३०१९ पचाग—चण्डू । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न वर्षों के पचाग हैं ।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८३, ८७, ८८ ।

३०२० पचाग । पत्र स० १३ । आ० ७३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्णा । वे० स० २४७ । ख मण्डार ।

३०२१ पचागसाधन—गणेश (केशवपुत्र) । पत्र स० ५२ । आ० ६×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८८२ । वे० स० १७३१ । ट मण्डार ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार मे ३ प्रतिपा (वे० स० १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १०८) छ भण्डार मे ३ प्रतिपा (वे० स० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार मे १ प्रति (वे० स० १८२४) ओर हैं ।

३०३५ पाशाकेवली । पत्र स० ५ । ग्रा० ११३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वे० स० ३६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३६ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० २५७ । ज भण्डार ।

३०३७ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० ११६ । ख भण्डार ।

३०३८ पाशाकेवली । पत्र स० १ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त शास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५६ । अ भण्डार ।

३०३९ पाशाकेवली । पत्र स० १३ । ग्रा० ८३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—निमित्त

शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८५० । अपूर्ण । वे० स० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—विश्वनलाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । प्रथम पत्र नहीं है ।

३०४० पुरश्चरणविधि । पत्र स० ४ । ग्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पत्र भोग गये हैं जिसमे कई जगह पढा नहीं जा सकता ।

३०४१ प्रश्नचूडामणि । पत्र स० १३ । ग्रा० ६×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६६ । अ भण्डार ।

३०४२ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८०८ ग्रामोज सुदी १२ । अपूर्ण । वे० स० १६५ । छ भण्डार ।

विशेष—तीसरा पत्र नहीं है विजैराम अजमेरा चाटसु वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३०४३ प्रश्नविद्या । पत्र स० २ से ५ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३३ । छ भण्डार ।

३०४४ प्रश्नविनोद । पत्र स० १६ । ग्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । पूर्ण । वे० स० २८४ । छ भण्डार ।

३०४५ प्रश्नसमोरमा—गर्ग । पत्र स० ३ । ग्रा० १३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल स० १६२८ भाद्रवा सुदी ७ । वे० स० १७४१ । ट भण्डार ।

ज्योतिष एव निमित्तज्ञान]

३०५६ भट्टली । पत्र स० ११ । भा० ६५६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । छ भण्डार ।

विशेष—मेघ गर्जना, वररतना दया बिजली आदि चमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं ।

३०५७ भाष्वती—पद्मनाभ । पत्र स० ६ । भा० ११५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६४ । च भण्डार ।

३०५८ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० २६५ । च भण्डार ।

३०५९ भुवनदीपिका । पत्र स० २२ । भा० ७३५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । वे० स० २४१ । ज भण्डार ।

३०६० भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि । पत्र स० ५८ । भा० १०३५५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३०६१ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८५६ फागुण बुदी १० । वे० स० ६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२ प्रति स० ३ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० २६६ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ से भागे कोई भाग ग्रन्थ है जो अपूर्ण है ।

३०६३ भृगुमहिता । पत्र स० २० । भा० ११५७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३०६४ मुहूर्त्तचिन्तामणि । पत्र स० १६ । भा० ११५५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८८६ । अपूर्ण । वे० स० १४७ । ख भण्डार ।

३०६५ मुहूर्त्तमुक्तावली । पत्र स० ६ । भा० १०५४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १३६४ । अ भण्डार ।

३०६६ मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परब्राह्मणवार्ध । पत्र स० ६ । भा० ६३५६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१२ । अ भण्डार ।

विशेष—सब कार्यों के मुहूर्त्त का विवरण है ।

३०६७ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८७१ वैशाख बुदी १ । वे० स० १४८ । ख भण्डार ।

३ १८ प्रति स ३। पत्र स ७। के फल स १७। ए मार्गशीर्ष शुदी ३। अ मषार।

विशेष—सप्तम्या मषार में मुनि श्रीकृष्ण ने प्रतिनिधि की थी।

३ १९ शुक्लपक्ष—। पत्र स १३। से २५। या ३। ४४ दश। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विषय—ज्योतिष। ८ फल ४। से फल ४। शुक्ल। के स १४२। अ मषार।

३ २० शुक्लपक्ष—। पत्र स ३। या १। ४४ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

८ फल ४। से फल स १४२। फलिक शुदी ११। शुक्ल। के स १४२। अ मषार।

३ २१ शुक्लपक्ष—महादेव। पत्र स ३। या १। ४४ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

८ फल ४। से फल स १४२। वैशाख शुदी ३। शुक्ल। के स १४४। अ मषार।

विशेष—नू पारसी के फलार्थ प्रतिनिधि की गई थी।

३ २२ शुक्लपक्ष—। पत्र स ३२। या १। ४४ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

८ फल ४। से फल ४। शुक्ल। के स १३। अ मषार।

३ २३ वैशाख—। पत्र स ३। से ३। या १। ४४ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—

ज्योतिष। ८ फल ४। से फल ४। शुक्ल। के स १३। अ मषार।

विशेष—वर्षा वाले के सप्तमी एवं पारसी पर विलुप्त प्रकृत नामा बना है। फल स १४२ है।

३ २४ प्रति स २। पत्र स ३३। से फल स १४२। के स १४३। अ मषार।

३ २५ प्रति स ३। पत्र स ३। से फल ४। शुक्ल। के स १४४। अ मषार।

३ २६ माघपक्ष—। पत्र स १३। या ३। ४४ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। ८

फल ४। से फल ४। शुक्ल। के स २३। अ मषार।

३ २७ रमजदीपक्ष—माघपक्ष। पत्र स २३। या १२। ४४ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।

८ फल ४। से फल स १३। शुक्ल। के स १३। अ मषार।

३ २८ रमजदीपक्ष—। पत्र स ३। या १३। ४४ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। ८

फल ४। से फल स १३। शुक्ल। के स १३१। अ मषार।

विशेष—अन्वयनी विचार की है।

३ २९ रमजदीपक्ष—वीर विश्वामणि। पत्र स १३। या ४। ४४ दश। भाषा—संस्कृत। विषय—

ज्योतिष। ८ फल ४। से फल ४। शुक्ल। के स १३४। अ मषार।

३ ३० रमजदीपक्ष—। पत्र स १३। या ४। ४४ दश। भाषा—हिन्दी। विषय—निर्मित भाषा

८ फल ४। से फल ४। शुक्ल। के स १३५। अ मषार।

३८६१ स्वल्पज्ञान । पत्र सं० ५ । पृ० ११ । ५ दृश्य । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-निमित्तज्ञान ।

२० पान ५ । बे० पान २० । १८६६ । बे० सं० ११६ । छ म अक्षर ।

विषय—आदिवाप वेदापव म आचार्य रत्नगीति के प्रसिद्ध भाषाईराम व विष्णु गोवन्दराम । प्रतिलिपि की थी ।

३८८० प्रति सं० २ । पत्र सं० २ सं० ८८ । बे० पान सं० १८७८ । सागड बुदी ३ । पृ० १० । १० सं० ११५४ । ट अक्षर ।

३८८३ राजाक्षिप्त । पत्र सं० ५ । पृ० ६१/८ दृश्य । भाषा-संस्कृत । विषय-उद्यतिप । २० पान ५ । बे० पान सं० १८७१ । पूर्ण । १० सं० १६० । १५ अक्षर ।

३८८४. राजकुल । पत्र सं० ८ । पृ० ६३/८ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-भोगीप । २० पान ५ । बे० पान सं० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । बे० सं० १६६ । च अक्षर ।

३८८५ रुद्रज्ञान । पत्र सं० १ । पृ० ६३/८ दृश्य । भाषा-संस्कृत । विषय-गद्य साधन । २० पान ५ । २० पान सं० १७५७ वैश । पूर्ण । ५० सं० २११६ । अ अक्षर ।

विषय—रेवणाग्राम में जानमानर ने प्रतिलिपि की थी ।

३८८६ लघुचन्द्रिकाभाषा । पत्र सं० ८ । पृ० ८५/४ दृश्य । भाषा-हिन्दी । विषय-भोगीप । २० पान ५ । २० पान ५ । पूर्ण । बे० सं० १४८ । म अक्षर ।

३८८७. लघुसाधन—सर्वज्ञानमूर्ति । पत्र सं० ३ । पृ० १०५/४ दृश्य । भाषा-संस्कृत । विषय-भोगीप । २० पान ५ । २० पान ५ । पूर्ण । ५० सं० २१६ । ज अक्षर ।

३८८८ लघुजातन—भट्टोत्पल । पत्र सं० १७ । पृ० ११५/४ दृश्य । भाषा-संस्कृत । विषय-उद्यतिप । २० पान ५ । बे० पान ५ । बे० सं० १६३ । अ अक्षर ।

३८८९ वर्षशोध । पत्र सं० ५० । पृ० १०६/४ दृश्य । भाषा-संस्कृत । विषय-उद्यतिप । २० पान ५ । बे० पान ५ । पूर्ण । बे० सं० ८६३ । अ अक्षर ।

विषय—प्रतिपत्र पत्र नहीं है । वर्षपत्र नियामन की विधि का हर्ष है ।

३८९० विद्याहोषधन । पत्र सं० २ । पृ० ११५/४ दृश्य । भाषा-संस्कृत । विषय-उद्यतिप । २० पान ५ । बे० पान ५ । पूर्ण । बे० सं० २१६० । अ अक्षर ।

३८९१ वृद्धजातक—भट्टोत्पल । पत्र सं० ८ । पृ० १०६/४ दृश्य । भाषा-संस्कृत । विषय-भोगीप । २० पान ५ । बे० पान ५ । पूर्ण । बे० सं० १८०२ । ट अक्षर ।

विषय—भट्टारक महोदय की विषय भारमल ने प्रतिलिपि की थी ।

३ १२. पटपंचाभिका—बराहमिह। पत्र सं १। पा ११५४ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—
ज्योतिष। र काल ×। से काल स १७१९। पूर्ण। से सं ७१९। छ मन्थार।

३ १३. पटपंचाभिकाहृति—समुद्रसूक्त। पत्र सं २२। पा १५०२ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—
ज्योतिष। र काल ×। से काल स १७४५। अपूर्ण। से सं १५४। छ मन्थार।

विशेष—हेमराय भिन्न के तथा लाल पुराणन के प्रतिमिति भी थी। इसमें १२, ८ ११
पत्र नहीं है।

३०१४ शकुन्तलिका—। पत्र सं १। पा १२५४ इव। भाषा—हिन्दी वग। विषय—शकुन्तल
काव्य। र काल ×। से काल ×। पूर्ण। से सं १४५। छ मन्थार।

३ १४. शकुन्तलिका—। पत्र सं २। पा ११५३ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। र
काल ×। से काल ×। पूर्ण। से सं १३। छ मन्थार।

विशेष—१२ पत्रों का संग्रह किया हुआ है।

३ १५. प्रति सं ७। पत्र सं ४। से काल सं १११। से सं १२। छ मन्थार।

विशेष—यं लालपुराण के प्रतिमिति भी थी।

३ १७. शकुन्तलिका—गर्ग। पत्र सं २ से ३। पा १५५३ इव। भाषा—संस्कृत। विषय—
ज्योतिष। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। से सं १३४। छ मन्थार।

विशेष—इसका नाम शकुन्तलिका भी है।

३ १८. प्रति सं २। पत्र सं ९। से काल ×। से सं ११९। छ मन्थार।

विशेष—अन्यत्र के प्रतिमिति भी थी।

३०१६. प्रति सं ३। पत्र सं १। से काल सं ११३ मन्थार मुद्रा ११। अपूर्ण। से सं
१७२। छ मन्थार।

३१. प्रति सं ४। पत्र सं ३ से ७। से काल ×। अपूर्ण। से सं ११। छ मन्थार।

३११ शकुन्तलिका—अन्यत्र। पत्र सं ७। पा ११५३ इव। भाषा—हिन्दी। विषय—शकुन्तल
काव्य। र काल ×। से काल सं ११३ मन्थार मुद्रा ७। पूर्ण। से सं १२। छ मन्थार।

३१० शकुन्तलिका—। पत्र सं ११। पा १५४ इव। भाषा—गुजराती हिन्दी। विषय—शकुन्तल
काव्य। र काल ×। से काल ×। अपूर्ण। से सं ११४। छ मन्थार।

३१३. प्रति सं २। पत्र सं १९। से काल सं १७५१ काव्य मुद्रा १४। से सं ११४। छ
मन्थार।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर मे राणा संग्रामसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी । २० वमलावार चक्र हैं जिनमें २० नाम दिये हुये हैं । पत्र ५ से आगे प्रश्नो का फल दिया हुआ है ।

३१०४ प्रति स० ३ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० ३४० । मृ भण्डार

३१०५ शकुनावली । पत्र स० ५ से ८ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८६० । अपूर्ण । वे० स० १२५८ । अ भण्डार ।

३१०६ शकुनावली । पत्र स० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शकुनशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है ।

३१०७ शनश्चिरदृष्टिविचार । पत्र स० १ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४६ । अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिक्रम से शनिश्चर दृष्टि विचार है ।

३१०८ शीघ्रबोध—काशीनाथ । पत्र स० ११ से ३७ । आ० ८३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४३ । अ भण्डार ।

३१०९ प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८३० । वे० स० १८६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० भाणिकचन्द्र ने थोड़ीग्राम मे प्रतिलिपि की थी ।

३११० प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १८४८ आसोज सुदी ६ । वे० स० १३८ । छ भण्डार ।

विशेष—सपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१११ प्रति स० ४ । पत्र स० ७१ । ले० काल स० १८६८ आषाढ बुदी १४ । वे० स० २५५ । छ भण्डार ।

विशेष—आ० रत्नकीर्ति के शिष्य प० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ६०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार में १ प्रति (वे० स० १८७) छ, म तथा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १३८, १६२ तथा २११६) और हैं ।

३११२ शुभाशुभयोग । पत्र स० ७ । आ० ६३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल स० १८७५ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प० हीरालाल ने जोबनेर में प्रतिलिपि की थी ।

३११३ सक्रातिफल । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१ । ख भण्डार ।

३११४ संक्रांतियज्ञः—। वषत् ११। या १५५४ इव। माता—मंस्तुत। विषय—श्रीविष्णु
१ वज्र ×। ने वज्रत् ११। माता कुटी ११। ने तं १११। अथगार

३११५ संक्रांतियज्ञः—। वषत् २। या १५५४ इव। माता—मंस्तुत। विषय—श्रीविष्णु
१ वज्र ×। ने वज्रत् ×। पूर्ण। ने तं ११५४। अथगार

३११६ समस्तार—समस्तारपेय। वषत् १५। या १५५४ इव। माता—मंस्तुत। विषय—श्रीविष्णु
१ वज्र ×। ने वज्रत् १०११। पूर्ण। ने तं १०११। अथगार

विषय—श्रीविष्णु (विष्णु) में अतिशय हुई। स्वर वज्र ने लिया हुआ है।

३११७ समस्तार विचार—। वषत् १। या १५५४ इव। माता—हिन्दी मय। विषय—श्रीविष्णु
१ वज्र ×। ने वज्रत् ×। पूर्ण। ने तं १०११। अथगार

विषय—तं १११ के तं २ एक वज्र वज्र है।

३११८ सामुद्रिकव्यासः—। वषत् १। या १५५४ इव। माता—मंस्तुत। विषय—श्रीविष्णु
माता। स्त्री पुरा के वंशों के मुनायुन लक्षण मंदि विवे है। १ वज्र ×। ने वज्रत् ११५४ वीन कुटी १२
पूर्ण। ने तं १०११। अथगार

३११९ सामुद्रिकविचार—। वषत् १५। या १५५४ इव। माता—हिन्दी। विषय—श्रीविष्णु
माता। १ वज्र ×। ने वज्रत् १०११ वीन कुटी ५। पूर्ण। ने तं १। अथगार।

३१२० सामुद्रिकव्यासः—श्रीविष्णुसमुद्र। वषत् ११। या १५५४ इव। माता—मंस्तुत
विषय—श्रीविष्णु। १ वज्र ×। ने वज्रत् ×। पूर्ण। ने तं १११। अथगार।

विषय—अतः ने हिन्दी में ११ गृहकार एक के बोद्धे है तथा स्त्री कुटी के वंशों के लक्षण विवे है।

३१२१ सामुद्रिकव्यासः—। वषत् १। या १५५४ इव। माता—मंस्तुत। विषय—श्रीविष्णु
१ वज्र ×। ने वज्रत् ×। पूर्ण। ने तं १०११। अथगार।

विषय—अतः वज्र वज्र ने वर्णवर्णनी वज्र विवे है।

३१२२ सामुद्रिकव्यासः—। वषत् ५१। या १५५४ इव। माता—मंस्तुत। विषय—श्रीविष्णु
१ वज्र ×। ने वज्रत् ११०० वीन कुटी १। पूर्ण। ने तं १११। अथगार।

विषय—अतः वज्र वज्र ने वज्रवर्ण अतिशय वी वी। १, २, ३, ४ वज्र वरी है।

३१२३ प्रति स २। वषत् २१। या १५५४ इव। माता—मंस्तुत। विषय—श्रीविष्णु
१ वज्र ×। ने वज्रत् ११०० वीन कुटी ११। पूर्ण। ने तं १११। अथगार।

विषय—वीन के वी वज्र वरी है।

ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान]

३१०४ सामुद्रिकशास्त्र । पत्र नं० ८ । आ० १२×१३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त ।

२० काल × । ले० काल स० १८८० । पूर्ण । वे० न० ८६२ । अ भण्डार ।

३१०५ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० कान × । अपूर्ण । वे० न० ११४७ । अ भण्डार ।

३१०६, सामुद्रिकशास्त्र । पत्र न० १८ । आ० ८×८ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—निमित्त ।

२० कान × । ले० काल स० १६०८ आमाज बुदी ८ । पूर्ण । वे० न० २७७ । क भण्डार ।

३१०७ सारणी । पत्र न० ८ मे १३४ । आ० १२×१३ इ च । भाषा—मराठी । विषय—

ज्योतिष २० कान × । ले० काल स० १७१६ भादवा बुदी ८ । अपूर्ण । वे० न० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डा में ८ अपूर्ण प्रतिमा (वे० स० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७) मोर हैं ।

३१०८ सारावली । पत्र स० १ । आ० ११×३३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० न० २०२५ । अ भण्डार ।

३१०९ सूर्यगमनविधि । पत्र स० ५ । आ० ११×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२ काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० न० २०५६ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है । देवल गणित भाग दिया है ।

३११० सोमउत्पत्ति । पत्र स० २ । आ० ८×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । वे० स० १३८६ । अ भण्डार ।

३१११ स्वप्नप्रिचार । पत्र स० १ । आ० १२×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्तशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल स० १८१० । पूर्ण । वे० स० ६०६ । अ भण्डार ।

३११२ स्वप्नाध्याय । पत्र स० ४ । आ० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१४७ । अ भण्डार ।

३११३ स्वप्नावली—देवनन्दि । पत्र स० ३ । आ० १२×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त
शास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८५८ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ८३६ । क भण्डार ।

३११४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ८३७ । क भण्डार ।

३११५ स्वप्नावलि । पत्र न० २ । आ० १०×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्तशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८३५ । क भण्डार ।

३११६ होराज्ञान । पत्र स० १३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । २० काल × । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० स० २०४५ । अ भण्डार ।

विषय-सायुर्वेद

३१३०. आजीर्णसमझारी—। वषर् २। वा २१२×२३ २४। माला-मंडूत। विषय-
मासुर। ८ कल ×। के कल ८। कल १। कल १। के १ २१। क मकार।

३१३८. प्रति स० २। वषर् ७। के कल ×। के १ २१। क मकार।

विशेष—अति प्राचीन है।

३१३८. आजीर्णसमझारी—आजीर्णसमझारी। वषर् २। वा २ ३/४×२ १/४ २४। माला-मंडूत। विषय-
मासुर। ८ कल ×। के कल ×। कल १। के १ २१। क मकार।

३१४. अक्षयसमझारी—। वषर् ४। वा ११३×४३ २४। माला-हिन्दी। विषय-मासुर।
८ कल ×। के कल ×। कल १। के १ २१। क मकार।

३१४। अक्षयसमझारी—अक्षयसमझारी। वषर् २१० के ११४। वा २२५×१
२४। माला-हिन्दी। विषय-मासुर। ८ कल ×। के कल ×। कल १। के १ २१। क मकार।

विशेष—अक्षयसमझारी के माला १८ है।

३१४२. प्रति स० ३। वषर् २१। के कल ×। कल १। के १ २१। क मकार।

विशेष—अक्षयसमझारी के माला १८ है।

क मकार के १ प्रति (के १ २१) कल १। के १ २१। क मकार।

३१४३. प्रति स० ३। वषर् १४ के १२। के कल ×। कल १। के १ २१। क मकार।

३१४४. अक्षयसमझारी—अक्षयसमझारी। वषर् २०। वा १ ३/४×२ १/४ २४। माला-मंडूत। विषय-
मासुर। ८ कल ×। के कल ८। कल १। कल १। के १ २१। क मकार।

विशेष—मासुर के विषय ८ कल है। अक्षयसमझारी के विषय ८ कल के विषय ८ कल है।

३१४४. आजीर्णसमझारी—आजीर्णसमझारी। वषर् २२। वा १ ३/४×२ १/४ २४। माला-मंडूत। विषय-
मासुर। ८ कल ×। के कल ८। कल १। कल १। के १ २१। क मकार।

३१४४. आजीर्णसमझारी—आजीर्णसमझारी। वषर् २२। वा १ ३/४×२ १/४ २४। माला-मंडूत। विषय-
मासुर। ८ कल ×। के कल ×। कल १। के १ २१। क मकार।

३१४४. प्रति स० २। वषर् ४। के कल ×। के १ २१। क मकार।

आयुर्वेद]

३१४८ प्रति स० ३ । पत्र सं० ३३ से ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८१ । ट भण्डार ।
विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नहीं हैं ।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे । पत्र सं० ४ से २० । भा० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं ।

३१५० प्रति स० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २५९ । ख भण्डार ।

विशेष—एक पत्र में एक ही नुस्खा है ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६०, २६६, २६६) और हैं ।

३१५१ आयुर्वेदिकग्रंथ । पत्र सं० १६ । भा० १०.३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१५२ प्रति स० २ । पत्र सं० १८ से ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

३१५३ आयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्र सं० २४ । भा० ९.३×४.३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५५ । ब भण्डार ।

३१५४ कल्पपुट—सिद्धनागार्जुन । पत्र सं० ४२ । भा० १.४×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है ।

३१५५ कल्पस्थान (कल्पव्याख्या) । पत्र सं० २१ । भा० ११.३×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७०२ । पूर्ण । वे० सं० १८९७ । ट भण्डार ।

विशेष—सुश्रुतसंहिता का एक भाग है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति सुश्रुतीयाया सहिताया कल्पस्थान समाप्त ॥

३१५६. कालज्ञान । पत्र सं० ३ से १९ । भा० १०×४.३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७८ । अ भण्डार ।

३१५७ प्रति स० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है ।

३१५८ प्रति स० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८४१ मगसिर सुदी ७ । वे० सं० ३३ । ख
भण्डार ।

विशेष—मिरुद ग्राम में लेखचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी । कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है ।

३१३६. प्रति स ४। पम सं ७। के मल ×। के सं ११८। अ मथार।

३१३७. प्रति स ४। पम सं १। के मल ×। के सं १६७४। अ मथार।

३१३९. चिकित्सासाम्यम्—अपाम्बुधविद्यापति। पम सं १। मा ६५७ दण। माता—तंसुत।

विषय-आमुर्षेद। १ मल ×। के मल सं १८११। पूर्ण। के सं ३४९। अ मथार।

३१३८. चिकित्सासार—। पम सं ११। मा १४×९३ दण। माता—हिन्दी। विषय—आमुर्षेद।

१ मल ×। के मल ×। पूर्ण। के सं १८। अ मथार।

३१३९. प्रति स २। पम सं ६-११। के मल ×। पूर्ण। के सं १७६। अ मथार।

३१४०. कूर्वाविचार—। पम सं १२। मा १४×९३ दण। माता—तंसुत। विषय—आमुर्षेद।

१ मल ×। के मल ×। पूर्ण। के सं १४१६। अ मथार।

३१४१. अरकचक्र—। पम सं ४। मा ११×९३ दण। माता—हिन्दी। विषय—आमुर्षेद। १

मल ×। के मल ×। पूर्ण। के सं १९९। अ मथार।

३१४६. अरविचिकित्सा—। पम सं २। मा १ ×९३ दण। माता—तंसुत। विषय—आमुर्षेद।

१ मल ×। के मल ×। पूर्ण। के सं १९३७। अ मथार।

३१४७. प्रति स २। पम सं ११ के ३१। के मल ×। पूर्ण। के सं १९४। अ मथार।

३१४८. अरविमिरमाचर—आमुर्षेद। पम सं ९४। मा १ ×९३ दण। माता—तंसुत।

विषय—आमुर्षेद। १ मल ×। के मल सं १ ९ मल सुती १९। के सं १९७। अ मथार।

विषय—आमुर्षेद के विषयमल के प्रविलिनी की।

३१५३. शिवाजी—आमुर्षेद। पम सं ३९। मा १ ३×९ दण। माता—तंसुत। विषय—आमुर्षेद।

१ मल ×। के मल ×। के सं ३४१। अ मथार।

३१७०. प्रति स २। पम सं ९९। के मल सं १६१६। के सं ९२९। अ मथार।

विषय—पम सं ३९३ है।

३१७१. नृकमीपाठविधि—। पम सं ३। मा ११×९ दण। माता—हिन्दी। विषय—आमुर्षेद।

१ मल ×। के मल ×। पूर्ण। के सं १७६। अ मथार।

३१७२. माडीपरीक्षा—। पम सं ९। मा ११×९ दण। माता—तंसुत। विषय—आमुर्षेद।

१ मल ×। के मल ×। पूर्ण। के सं ९९। अ मथार।

आयुर्वेद]

३१७३ निघट्ट । पत्र स० ७ से ८८ । पत्र स० ११४५ । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०७७ । अ मण्डार ।

३१७४ प्रति स० ७ । पत्र स० ७१ से ८६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०८४ । अ मण्डार ।

३१७५ पत्रप्ररूपणा । पत्र स० ११ । भा० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल स० १५५७ । अपूर्ण । वे० स० २०८० । ट मण्डार ।

विशेष—केवल ११वां पत्र ही है । अन्य से पुनः १५८ श्लोक हैं ।

प्रशस्ति—स० १५५७ वषे ज्येष्ठ बुदी ८ । देवगिरिमगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्त्तमाने स० ब्राह्म लिखित कर्म-
शायनिमित्त । ४० जालप जोयु पठनार्थ दत्त ।

३१७६ पथ्यापथ्यविचार । पत्र स० ३ से ४४ । भा० १२×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७६ । ट मण्डार ।

विशेष—दुलोको के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । विषय रोग पथ्यापथ्य अधिकार तक है । १६ से
आगे के पत्रों में दीर्घक लग गई है ।

३१७७ पाराविधि । पत्र स० १ । भा० ६^३×४^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६६ । ख मण्डार ।

३१७८ भाषप्रकाश—मानमिश्र । पत्र स० २७५ । भा० १०^१×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १८६१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ७३ । ज मण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्रीमानमिश्रलटकनतनयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भाषप्रकाश संपूर्ण ।

प्रशस्ति—संवत् १८८१ मीना वैशाख शुक्ला ६ शुक्र लिखितमृषिणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये ।

३१७९ भाषप्रकाश । पत्र स० १६ । भा० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२२ । अ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री जयु पंडित तनयदास पंडितकुले त्रिसतिकाया रसायन वा जारण समाप्त ।

३१८० भाषसमूह । पत्र स० १० । भा० १०^३×६^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०५६ । ट मण्डार ।

३१८१ मयमविमोह—मयमपात्र । यम तं १३ से १२ । या ८२×१२ ईष । मया—संस्तुत । विषय—आमुर्दे । र कल × । के कल तं १०६३ ज्येष्ठ पुत्री १२ । यपूर्व । के तं १०६ । मोम । या मयार ।

विमोह—यम १३ पर मित्र पुत्रिका है—

इति श्री मयमपात्र विमोहे मयमविमोहे मयमविमोह ।

यम १ पर— यो यमो मुखावका मयारकासेव मयमपात्रोऽपि विमोह ज्येष्ठिका मयमविमोहे मयम विमोह ।

विमोह—

ज्येष्ठ पुत्र १२ पुत्री तदिने नि—मयमो विमोह मयमपात्र । संस्तु १०६३ विमोह तदिने— मयमपात्रविमोहे मयमविमोहे विमोह मयमपात्र मयमपात्र ॥

३१८२ मयम मयमविमोह का मुखा—यम तं १ । या १ ×२ ईष । मया—हिमो । विषय—आमुर्दे । र कल × । के कल × । पुत्री । के तं १२५ । या मयार ।

विमोह—मयम मयम का मयम है ।

३१८३ मयमविमोह—मयमपात्र । यम तं १२४ । या ८×२ ईष । मया—संस्तुत । विषय—आमुर्दे । र कल × । के कल × । पुत्री । के तं १२६३ । या मयार ।

३१८४ इति मयम १ । यम तं १२४ । के कल × । यपूर्व । के तं १ । या मयार ।

विमोह—यम मयम मयम हिमो मयम है ।

मयम पुत्रिका मयम मयार है—

इति श्री मयमविमोहे मयमविमोहे मयमविमोहे मयमविमोह ।

यम मयमपात्र मयमपात्र मयमपात्र मयमपात्र ।

इति मयमपात्र मयमपात्र मयमपात्र (के तं ११४२, ११४३) का मयार में यो मयमपात्र (के तं १४२, १४३) या का मयार में यम मयमपात्र (के तं ७४) मयमपात्र ।

३१८५ मयमविमोह—मयमपात्र । यम तं १७ । या १२४ । विषय—आमुर्दे । र कल × । के कल × । पुत्री । के तं १४४ । या मयार ।

इति मयमपात्र मयमपात्र मयमपात्र है । १७ के मयमपात्र मयमपात्र है ।

३१८६ मयमपात्र—मयमपात्र मयमपात्र है यम तं

विषय—आमुर्दे मयमपात्र । र कल × । के कल × ।

३१८७ योगचिन्तामणि—मनूसिंह । पत्र स० १२ से ४८ । मा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१०२१ ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ में आगे नहीं हैं ।

द्वितीय अधिकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा स्तराजगणि अथेवासि मनूसिंहकृते योगचिन्तामणि चालावबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीय ।

३१८८ योगचिन्तामणि । पत्र स० ४ । मा० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८९ योगचिन्तामणि । पत्र स० १२ से १०५ । मा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १८५४ ज्येष्ठ बुदो ७ । अपूर्ण । वे० स० २०८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जयनगर में फनेहचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३१९० योगचिन्तामणि । पत्र स० २०० । मा० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३४६ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

३१९१ योगचिन्तामणिबीजक । पत्र स० ५ । मा० ६½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५६ । अ भण्डार ।

३१९२ योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्ति । पत्र स० १५८ । मा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में सक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है ।

३१९३ प्रति सं० २ । पत्र स० १२८ । ले० काल × । वे० स० २२०६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१९४ प्रति सं० ३ । पत्र स० १८१ । ले० काल स० १७८१ । वे० स० १६७८ । अ भण्डार ।

३१९५ प्रति सं० ४ । पत्र स० १५६ । ले० काल स० १८३८ आषाढ बुदो २ । वे० सं० ८८ । अ
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । सागानेर में गोधों के चैत्यालय में प० ईश्वरदास के चेले की पुस्तक
में प्रतिलिपि की थी ।

३१९६ प्रति सं० ५ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १७७९ वैशाख बुदो २ । वे० स० ६६ । अ
भण्डार ।

विशेष—मालपुरा में जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

प्रायुर्वेद]

३००७ प्रति स० ७ । पत्र स० १६२ । ले० काल स० १८५१ वैशाख सुदी ११ । वे० स० १६३ । ख
भण्डार ।

विशेष—जीवणालालजी के पठनार्थ भैमलाना ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३००८ प्रति स० ३ । पत्र स० ८३ । ले० काल × । वे० स० २३० । छ भण्डार ।

३००९ प्रति स० ४ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिपा अपूर्ण (वे० स० १६६६, २०१८, २०६२) भी हैं ।

३०१० रासायनिकशास्त्र । पत्र स० ४२ । भा० ५३×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६६८ । च भण्डार ।

३०११ लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण । पत्र स० २ से ८६ । भा० ११३×५ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०८४ । अ भण्डार ।

३०१२ लङ्घनपथ्यनिर्णय । पत्र स० १२ । भा० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १८२२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० स० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवमलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था ।

३०१३ विपहरनविधि—सतोष कधि । पत्र स० १२ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
प्रायुर्वेद । २० काल स० १७४१ । ले० काल स० १८६६ भाव सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

सिस रिप वेद भर खडले जेष्ठ सुकल रुदाम ।

चद्रापुरी सषत् गिनो चद्रापुरी भुकाम ॥२७॥

सवत् यह सतोष कृत तादिन कविता कीन ।

सशि मनि गिर बिब बिजय तादिन हम लिख लीन ॥२८॥

३०१४ वैद्यकसार । पत्र स० ५ से ५४ । भा० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रायुर्वेद । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३४ । च भण्डार ।

३०१५ वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र स० २१ । भा० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रायुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१५७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वीं गिलास तक है ।

३०१६ प्रति स० २ । पत्र स० २१ से ३२ । ले० काल स० १८३८ । वे० स० १५७१ । अ
भण्डार ।

११६७ प्रति स० ३। पत्र ११। मे बाल १७६६ ज्येष्ठ शुक्ल ४। पूर्ण ११। मे १६।

अ अष्टार ।

विशेष—प्रति सदीक है। प्रथम दो पत्र बहो है।

११६८ योगरात—वरुणि। पत्र २१। मा १३५० वज्र। भाग-संस्तुत। विषय-आयुर्वेद।

१ बाल १। मे बाल १११। भागक शुक्ल १। पूर्ण ११। मे २२। अ अष्टार ।

विशेष—आयुर्वेद का संज्ञक पत्र है तथा उसकी टीका है। चंपाली (पाटन) में यह विषय के भाग कुशीनाथ के निजपत्र का।

११६९ योगरातटीका—। पत्र २१। मा ११३५ वज्र। भाग-संस्तुत। विषय-आयुर्वेद।

१ बाल ५। मे बाल ५। पूर्ण ११। मे २७६। अ अष्टार ।

१२० योगरातक—। पत्र ७। मा १५५५ वज्र। भाग-संस्तुत। विषय-आयुर्वेद।

१ बाल ५। मे बाल १११। पूर्ण ११। मे ७२। अ अष्टार ।

विशेष—यं विषय लघुत्र के स्वयम्भूत प्रतिनिधि की थी। प्रति टीका बहिन है।

१२१ योगरातक—। पत्र ७। मा ११५५ वज्र। भाग-द्विती। विषय-आयुर्वेद।

१ बाल ५। मे बाल ५। पूर्ण ११। मे १२१। अ अष्टार ।

१२२ राममञ्जरी—शक्तिनाथ। पत्र ११। मा १५३५ वज्र। भाग-संस्तुत। विषय-

आयुर्वेद। १ बाल ५। मे बाल ५। पूर्ण ११। मे १३६। अ अष्टार ।

१२३ राममञ्जरी—शक्तिधर। पत्र ११। मा १५२५ वज्र। भाग-संस्तुत। विषय-

आयुर्वेद। १ बाल ५। मे बाल ११५६ भागक शुक्ल २२। पूर्ण ११। मे १९१। अ अष्टार ।

विशेष—यं वज्रनाथ जीवनेर मिशाली के अष्टार में विद्यापति की के अष्टार के विषय अष्टार के पत्र भाग प्रतिनिधि की थी।

१२४ राममञ्जरी—। पत्र ४। मा १५५५ वज्र। भाग-द्विती। विषय-आयुर्वेद।

१ बाल ५। मे बाल ५। पूर्ण ११। मे २३२। अ अष्टार ।

१२५ राममञ्जरी—। पत्र ११। मा १५५५ वज्र। भाग-संस्तुत। विषय-आयुर्वेद।

१ बाल ५। मे बाल ५। पूर्ण ११। मे १३९२। अ अष्टार ।

१२६ राममञ्जरी—रामचन्द्र। पत्र ११। मा १५५५ वज्र। भाग-द्विती।

विषय-आयुर्वेद। १ बाल ५। मे बाल ५। पूर्ण ११। मे १३५४। अ अष्टार ।

विशेष—आयुर्वेद का संज्ञक पत्र का द्विती वज्रनाथ है।

आयुर्वेद]

३२२६ वैद्यकसारोद्धार—मग्नहर्कुत्ती श्री हर्षकोत्तिसूरि । पत्र स० १६७ । भा० १०×४ इञ्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १७८६ ग्रामोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १८० । म्र भण्डार ।

विशेष—भानुमती नगर मे श्रीगजकुशलगरि के शिष्य गणिसुन्दरमुद्राल ने प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है ।

३०३० प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १७७३ माघ । वे० स० १४६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है ।

३२३१ वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट । पत्र स० २० । भा० ६×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । वे० स० ३५८ । ज भण्डार ।

विशेष—माणिक्यभट्ट ग्रहमदावाद के रहने वाले थे ।

३२३२ वैद्यविनोद । पत्र स० १८३ । भा० १०३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३०६ । म्र भण्डार ।

३२३३ वैद्यविनोद—भट्टशकर । पत्र स० २०७ । भा० ८३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २७२ । म्र भण्डार ।

विशेष—पत्र १४० तक हिन्दी सवेत भी दिये हुये हैं ।

३२३४ प्रति स० ० । पत्र स० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३१ । ज भण्डार ।

३२३५ प्रति स० ३ । पत्र स० ११२ । ले० काल स० १८७७ । वे० स० १७३३ । ट भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७५६ बैशाख सुदी ५ । वार चद्रवासरे वर्षे शके १६२३ पातिसाहजी नौरगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम कौजदार खानमदुल्लाखाजी के नामवरूपलमवा स्याहीजी श्री म्याहभालमजी की तरफ मिया साहबजी मद्दुलफनेजी का राज्य श्रीमस्तु फन्याणक । स० १८७७ शके १७४२ प्रवर्तमाने कार्तिक १२ गुरुवारलिखित मिश्रलालजी कस्य पुत्र रामनारायण पठनार्थ ।

३२३६ प्रति स० ४ । पत्र स० २२ से ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०७० । ट भण्डार ।

३२३७ शाङ्गहरसहिता—शाङ्गधर । पत्र स० ५८ । भा० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १०८५ । म्र भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ३ प्रतिधा (वे० स० ८०३, ११४२, १५७७) भी हैं ।

३२१७ प्रति सं ३। पत्र सं ३१। ले काल सं १८७२ फरवरी। वे सं १७२। छ

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ही प्रतिमां (वे सं १८ १ १) थीर है।

३२१८. प्रति सं ४। पत्र सं ३१। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११। छ मन्थार।

३२१९. प्रति सं ५। पत्र सं ३१। ले काल ×। वे सं २३। छ मन्थार।

३२२० वैद्यकीयनमस्त्र—। पत्र सं ३१। या १ × २४। पाया—हस्तहृत। विषय—

आधुनिक। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १११। छ मन्थार।

विशेष—प्रतिमा पत्र भी नहीं है।

३२२१ वैद्यकीयनमस्त्र—कट्टाभट्ट। पत्र सं २३। या १ × २४। पाया—हस्तहृत। विषय—

आधुनिक। र काल ×। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं ११११। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ही प्रतिमां (वे सं १११, ११७) थीर है।

३२२२. वैद्यमन्त्रोत्पत्ति—नवनमस्त्र। पत्र सं ३२। या ११ × २१। पाया—हस्तहृत शिष्टी।

विषय—आधुनिक। र काल सं १९४६। पाया—कुछी २। ले काल सं १९४६। अपूर्ण। वे सं ११७१। छ मन्थार।

३२२३।

३२२३ प्रति सं २। पत्र सं १९। ले काल सं १८६। वे सं १७२। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं ११९२) थीर है।

३२२४ प्रति सं ३। पत्र सं २३। ले काल ×। अपूर्ण। वे सं १। छ मन्थार।

३२२५ प्रति सं ४। पत्र सं १। ले काल सं १९३। वे सं ११७। छ मन्थार।

३२२६ प्रति सं ५। पत्र सं १६। ले काल सं १९३। पाया—कुछी १४। वे सं २४। छ

मन्थार।

विशेष—पाठ में कुविमुक्त नैवात्म्य के अनुसार कुबेगनीति के विषय में व्याख्या के स्वयं प्रतिनिधि भी नहीं।

३२२७ वैद्यकज्ञान—। पत्र सं १९। या १ × २४। पाया—हस्तहृत। विषय—आधुनिक।

र काल ×। ले काल सं १९१। पूर्ण। वे सं १८७१।

विशेष—वैद्यालय में सवाई अमपुर में प्रतिनिधि भी नहीं।

३२२८. प्रति सं २। पत्र सं ३। ले काल ×। वे सं ११७। छ मन्थार।

३२४७ सन्निपातकलिका । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । अ मण्डार ।

विशेष—धोवनपुर मे पं० जीवणदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४८ सप्तविधि । पत्र सं० ७ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१७ । अ मण्डार ।

३२४९ सर्पज्वरसमुच्चयदर्पण । पत्र सं० ४२ । आ० ६×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ मण्डार ।

३२५० सारसमह । पत्र सं० २७ से २५७ । आ० १९×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १७४७ कालिक । अपूर्ण । वे० सं० ११५६ । अ मण्डार ।

विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३२५१ साक्षोत्तररास । पत्र सं० ७३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । अ मण्डार ।

३२५२ सिद्धियोग । पत्र सं० ७ ने ४३ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५७ । अ मण्डार ।

३२५३ हरद्वैकल्प । पत्र सं० ४ । आ० ५३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । अ मण्डार ।

विशेष—मालबागडी प्रयोग भी है । (अपूर्ण)



३०३८. प्रति स २। वष र्त् १७। ने कल \times । ने र्त् १८३। क म्पार।

विशेष—इसी म्पार में १ प्रति र्त् (ने र्त् २७ २७१) बीर है।

३२३३. प्रति स ३। वष र्त् ४-४। ने कल \times । म्पुर्त्। ने र्त् २ ८२। ट म्पार।

३०४ शाङ्ग धरसंविताटीका—आइमल। वष र्त् ४१३। या ११ \times ४२ र्त्। म्पार—संस्कृत।

विशेष—आनुवंशिक। र्त् कल \times । ने कल र्त् १ १२ वीर पुत्री १३। पुर्त्। ने र्त् १११३। क म्पार।

विशेष—टीका का नाम शाङ्ग धरसंविता है। ग्रन्थित पुस्तिका मध्य म्पार है—

वास्तव्यान्वयकाल वीर वीरमर्तिहरमर्तिहरमर्तिहर विरचितग्रन्थ शाङ्ग धरसंवितामुत्तरकालीन विरचितग्रन्थ
वर्तमानि इतिग्रन्थम्। अति सुन्दर है।

३०४१ प्रति स २। वष र्त् १ १। ने कल \times । ने र्त् ७। क म्पार।

विशेष—ग्रन्थकाल तक है जिसके ७ म्पार हैं।

३०४२. शाङ्गिहोत्र (अध्यात्मिकता)—आइमल प्रति स २। या १ \times ४२ र्त्। म्पार—

संस्कृत हिन्दी। विश्व-आनुवंशिक। र्त् कल \times । ने कल र्त् १७११। पुर्त्। ने र्त् ११११। क म्पार।

विशेष—वास्तव्यान्वय के अन्तर्गत शाङ्ग धरसंविता के अन्तर्गत शाङ्ग धरसंविता की वी।

३०४३. शाङ्गिहोत्र (अध्यात्मिकता)——। वष र्त् १। या ७३ \times ४२ र्त्। म्पार—संस्कृत।

विश्व-आनुवंशिक। र्त् कल \times । ने कल र्त् १७११ वास्तव पुत्री १। पुर्त्। वीर। ने र्त् ११३। क म्पार।

३०४४. शाङ्गिहोत्र (अध्यात्मिकता)——। वष र्त् ३। या ११ \times ४२ र्त्। म्पार—हिन्दी। विश्व-आनुवंशिक।

१ कल \times । ने कल \times । म्पुर्त्। ने र्त् ११ ७। ट म्पार।

विशेष—ग्रन्थकाल तक है जिसके ७ म्पार हैं।

३०४५. शाङ्गिहोत्र (अध्यात्मिकता)——। वष र्त् ४। या १ \times ४२ र्त्। म्पार—संस्कृत। विश्व-आनुवंशिक।

१ वष \times । ने कल \times । पुर्त्। ने र्त् १३। ट म्पार।

३०४६. शाङ्गिहोत्र (अध्यात्मिकता)——। वष र्त् १४। या १२ \times ४२ र्त्। म्पार—

संस्कृत। विश्व-आनुवंशिक। र्त् कल \times । ने कल र्त् १८१२ वीर पुत्री १३। पुर्त्। ने र्त् २३। ट म्पार।

विशेष—हिन्दी धर्म ग्रन्थ है।

३२४७ सन्निपातकलिका । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । अ मण्डार ।

विशेष—बीबनपुर मे पं० जीवणदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४८ सप्तविधि । पत्र सं० ७ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१७ । अ मण्डार ।

३२४९ सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण । पत्र सं० ४९ । आ० ६×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ मण्डार ।

३२५० सारमप्रह । पत्र सं० २७ से २५७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । १० काल × । ले० काल सं० १७४७ कार्तिक । अपूर्ण । वे० सं० ११४६ । अ मण्डार ।

विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३२५१ सालोत्तरास । पत्र सं० ७३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।
१० काल × । ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७१४ । अ मण्डार ।

३२५२ मिद्धियोग । पत्र सं० ७ से ४६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५७ । अ मण्डार ।

३२५३ हरडैकल्प । पत्र सं० ४ । आ० ५३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । अ मण्डार ।

विशेष—मालवागढ़ी प्रयोग भी है । (अपूर्ण)



विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२४४ अमरवर्णिना—। पं. सं. ७३। या ११४६ द. पं.। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-वैद

प्रसङ्गात्। १. माला ×। २. माला ×। पूर्ण। ३. सं. १३। छ. मन्थार।

विशेष—वस्तुर्ष विधिवत् एक है।

३२४५ अमरवर्णिना—वर्णिपराय वहीधर। पं. सं. ३१। या ३४३६ द. पं.। भाषा-

हिन्दी। विषय-मालाङ्कार। १. माला ×। २. माला ×। पूर्ण। ३. सं. १४। छ. मन्थार।

३२४६ अमरवर्णिना—अमरवर्णिना सुरि। पं. सं. २७। या १२४७ द. पं.। भाषा-हिन्दी।

विषय-रस मालाङ्कार। १. माला ×। २. माला ×। पूर्ण। ३. सं. १४। छ. मन्थार।

३२४७ अमरवर्णिना—। पं. सं. १६। या १२४८ द. पं.। भाषा-हिन्दी। विषय-मालाङ्कार।

१. माला ×। २. माला ×। पूर्ण। ३. सं. १६। छ. मन्थार।

३२४८ अमरवर्णिना—। पं. सं. ७३। या १२४९ द. पं.। भाषा-हिन्दी। विषय-

मालाङ्कार। १. माला ×। २. माला ×। पूर्ण। ३. सं. १६। छ. मन्थार।

विशेष—प्रति वीर्य वीर्य है। वीर के रूप भी नहीं है।

३२४९ अमरवर्णिना—। पं. सं. ९। या १२५० द. पं.। भाषा-हिन्दी। विषय-रस मालाङ्कार।

१. माला ×। २. माला ×। पूर्ण। ३. सं. १६। छ. मन्थार।

विशेष—अति अलङ्कार दीक्षा लक्षित है।

३२५० अमरवर्णिना—। पं. सं. २। या १२५१ द. पं.। भाषा-हिन्दी। विषय-मालाङ्कार।

१. माला ×। २. माला ×। पूर्ण। ३. सं. १७। छ. मन्थार।

३२५१ अमरवर्णिना—। पं. सं. ३। या १२५२ द. पं.। भाषा-हिन्दी। विषय-मालाङ्कार।

३२५२ अमरवर्णिना—। पं. सं. १। या १२५३ द. पं.। भाषा-हिन्दी। विषय-मालाङ्कार।

३२५३ अमरवर्णिना—अमरवर्णिना सुरि। पं. सं. ९। या १२५४ द. पं.। भाषा-हिन्दी। विषय-

मालाङ्कार। १. माला ×। २. माला ×। पूर्ण। ३. सं. १७। छ. मन्थार।

विशेष—सं. १ ३ वाह दुरी ३ को वीरवर्णिना के अमरवर्णिना प्रतिविधि भी नहीं।

छंद एव अलङ्कार]

३२६४ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० १२६ । ङ मण्डार ।

विशेष—जयपुर मे महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५ प्रति स० ३ । पत्र स० ८० । ले० काल स० १६०४ वैशाख सुदी १० । वे० स० ३१४ । ज

मण्डार ।

विशेष—प० सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६६ प्रति स० ४ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १८०६ । वे० स० ३०६ । ज मण्डार ।

३२६७ कुवलयानन्दकारिका । पत्र स० ६ । प्रा० १०×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

मलङ्कार । २० काल × । ले० काल स० १८१६ भाषाठ सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० २८६ । छ मण्डार ।

विशेष—प० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकाएँ हैं ।

३२६८ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ३०६ । ज मण्डार ।

विशेष—हरदास भट्ट की किताब है रामनारायण मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९ चन्द्रावलोक । पत्र स० ११ । प्रा० ११×५^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मलङ्कार ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६२४ । अ मण्डार ।

३०७० प्रति स० २ । पत्र स० १३ । प्रा० १०^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मलङ्कारशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल स० १६०६ कार्तिक सुदी ६ । वे० स० ६१ । च मण्डार ।

विशेष—रूपचन्द्र माह ने प्रतिलिपि की थी ।

३०७१ प्रति स० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६२ । अ मण्डार ।

३०७२ छद्मानुशासनवृत्ति—हैमचन्द्राचार्य । पत्र स० ८ । प्रा० १२×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—छद्मशास्त्र । २० काल / । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६० । अ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्याख्यानानाम् अष्टमाध्याय समस्त । समाप्तोपग्रन्थ । श्री भुवनेश्वर
शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थ निरूप्यत । मु० विनयमेष्टना ।

३०७३ छद्मशतक—हर्षकीर्ति (चद्रकीर्ति के शिष्य) । पत्र स० ७ । प्रा० १०^३×४^३ इ च ।

भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—छद्मशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८१ । अ मण्डार ।

३०७४ छद्मकोश—रत्नशेखर सूरि । पत्र स० ३८ । प्रा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

छद्मशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६५ । ङ मण्डार ।

विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२४४ अमरचंद्रिका—। पम तं ७५। या ११×४६ दंय। अन्ता-रिग्वी पम। विषय-छंद
मलङ्कार। १ काल ×। मे काल ×। अमूर्त। मे तं ११। छ मन्वार।

विशेष—अमूर्त मन्वार एक है।

३२४५ अमरचंद्रिका—इतिषठराच बरीषर। पम तं ३१। या ३२×३५ दंय। अन्ता-
रिग्वी। विषय-मलङ्कार। १ काल ×। मे काल ×। अमूर्त। मे तं ३४। छ मन्वार।

३२४६ अलङ्कारकृति—विमलकेश सुरि। पम तं २७। या १२×४ दंय। अन्ता-अमूर्त।
विषय-एक मलङ्कार। १ काल ×। मे काल ×। अमूर्त। मे तं ३४। छ मन्वार।

३२४७ अलङ्कारकृति—। पम तं १४। या ११×४ दंय। अन्ता-अमूर्त। विषय-मलङ्कार।
१ काल ×। मे काल ×। अमूर्त। मे तं १३। छ मन्वार।

३२४८ अलङ्कारकृति—। पम तं ७५। या ११×३ दंय। अन्ता-अमूर्त। विषय-
मलङ्कार। १ काल ×। मे काल ×। अमूर्त। मे तं २। छ मन्वार।

विशेष—प्रति जीर्ण कीर्ण है। बीच के पम भी नहीं है।

३२४९ अलङ्कारकृति—। पम तं ९। या १२×९ दंय। अन्ता-अमूर्त। विषय-एक मलङ्कार।
१ काल ×। मे काल ×। अमूर्त। मे तं १३। छ मन्वार।

विशेष—प्रति अमूर्त टीका नहीं है।

३२५० अलङ्कारकृति—। पम तं २। या ११×२ दंय। अन्ता-अमूर्त। विषय-मलङ्कार।
१ काल ×। मे काल ×। अमूर्त। मे तं १७। छ मन्वार।

३२५१ प्रति स ३। पम त २। मे काल ×। मे तं १७। छ मन्वार।

३२५२ प्रति स ३। पम त १। मे काल ×। अमूर्त। मे तं २३। छ मन्वार।

३२५३ अलङ्कारकृति—अप्यस्य वीक्षित। पम तं ९। या १२×९ दंय। अन्ता-अमूर्त। विषय-
मलङ्कार। १ काल ×। मे काल ×। अमूर्त। मे तं १३। छ मन्वार।

विशेष—तं १३ है मन्वार की ३ को मन्वार के मन्वार के प्रतिमिति की थी।

दोहा—

हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोषन कछु देह ।
भूखी भ्रम ते हो वहा जहा सोधि किन सेह ॥५॥
सवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।
सित वाण भुति दिन रच्यो माखन छंद विलास ॥६॥

पिंगल छंद में दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छंद का लक्षण निम्ना गया है उसको उसी छंद में वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र में नहीं है ।

३०७८ पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्र सं० १० । आ० १०×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२७ । अ मण्डार ।

३२७९ पिंगलशास्त्र । पत्र सं० ३ से २० । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५९ । अ मण्डार ।

३०८० पिंगलशास्त्र । पत्र सं० ४ । आ० १०^३×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६२ । अ मण्डार ।

३०८१ पिंगलछंदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास । पत्र सं० ७ । आ० १३×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—छंद शास्त्र । २० काल सं० १७९५ । ले० काल सं० १८२९ । पूर्ण । वे० सं० १८६९ । अ मण्डार ।

विशेष— सवतशर नव मुनि शशीनभ नवमी गुरु मानि ।
डिडवाना हद कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी वृत्त छंद रत्नावली संपूर्ण ।

३०८२ पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र सं० ६८ । आ० ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस मलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१३ । अ मण्डार ।

३०८३ प्राकृतछंदकोष—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १३×५^३ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११९ । अ मण्डार ।

३०८४ प्राकृतछंदकोष—अल्लू । पत्र सं० १३ । आ० ८×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १९३ । पीप बुंदो ९ । पूर्ण । वे० सं० ५२१ । क मण्डार ।

३०८५ प्राकृतछंदकोश । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७९२ आखण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८६२ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव फटी हुई है ।

३२०६ अक्षयोरामः—। पञ्चमं १०६ । या १०४ हय । अथा तन्मृत । विषय-संय
 यत्न । १०४ × । १०६ यत्न × । अक्षयोरामः ।

३२०७ अक्षयोरामः—। पञ्चमं १०७ । या १०४ हय । अथा तन्मृत । विषय-संय यत्न ।
 १०४ × । १०६ यत्न × । १०७ यत्न × । अक्षयोरामः ।

३२०८ अक्षयोरामः—। पञ्चमं १०८ । या १०४ हय । अथा तन्मृत । विषय-संय यत्न ।
 १०४ × । १०६ यत्न × । १०८ यत्न × । अक्षयोरामः ।

विषय-संय यत्न ।

आदिमात्र—। यी मन्त्रोक्तमन्त्रः यत्न विषय । सर्वथा ।

अथ यी मन्त्रोक्तमन्त्रः यत्न विषय यत्न विषय यत्न विषय ।
 अथ यी मन्त्रोक्तमन्त्रः यत्न विषय यत्न विषय यत्न विषय ।
 अथ यी मन्त्रोक्तमन्त्रः यत्न विषय यत्न विषय यत्न विषय ।
 अथ यी मन्त्रोक्तमन्त्रः यत्न विषय यत्न विषय यत्न विषय ।

३३१—। यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।

अथ यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।
 यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न यत्न ।

दोहा—

हे कवि जन सरवज्ञ हो मति दोपन कबु देह ।
भूल्यो भ्रम ते ही बहा जहा सोधि किन लेहु ॥८॥
सवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।
सित वाण श्रुति दिन रच्यो माखन छद विलास ॥९॥

पिगल छद मे दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छद मे वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र में नहीं है ।

३०७८ पिगलशास्त्र—नागराज । पत्र स० १० । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ३२७ । अ मण्डार ।

३२७६ पिगलशास्त्र । पत्र स० ३ से २० । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५६ । अ मण्डार ।

३२८८ पिगलशास्त्र । पत्र स० ४ । आ० १०½×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६२ । अ मण्डार ।

३२८१ पिगलछंदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास । पत्र स० ७ । आ० १३×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । २० काल स० १७६५ । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वे० म० १८६६ । अ मण्डार ।

विशेष—

सवतदार नव मुनि दासीनभ नवमी गुरु मानि ।

डिडवाना हठ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छद रत्नावली संपूर्ण ।

३२८२ पिगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र स० ६८ । आ० ६×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस मनङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१३ । अ मण्डार ।

३२८३ प्राकृतछंदकोष—रत्नशेखर । पत्र स० ५ । आ० १३×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ११६ । अ मण्डार ।

३२८४ प्राकृतछंदकोष—अल्लू । पत्र म० १३ । आ० ८×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६३ । पौष बुदी ६ । पूर्ण । वे० म० ५२१ । अ मण्डार ।

३२८५ प्राकृतछंदकोश । पत्र स० ३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७९२ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १८६२ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव फटी हुई है ।

३२७२. अक्षरार्थ—[पक्ष में २ से २३ । या १ × ४२ हव । भाषा—मन्त्र । विषय—सं-
घटन । १ कल × १ से कल × १ घूर्णित । २ से २७ । या फल ।

३२७३. अक्षरार्थ—[पक्ष में ७ । या १ × ४ हव । भाषा—मन्त्र । विषय—सं-
घटन । १ कल × १ से कल × १ घूर्णित । २ से २७ । या फल ।

३२७४. अक्षरार्थ—[पक्ष में ४२ । या १ × ४२ हव । भाषा—मन्त्र ।
विषय—संघटन । १ कल से १ ११ । से कल × १ घूर्णित । २ से २७ । या फल ।

विषय—४२ से पक्ष पक्ष में ।

आदिभाग— श्री गणेशाय नमः । नमः ।

मंगल श्री गणेशाय नमः ।
मंगल श्री गणेशाय नमः ।
मंगल श्री गणेशाय नमः ।
मंगल श्री गणेशाय नमः ।

श्री—

श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।

श्रीगणेश—

श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः ।

दोहा—

हे कवि जन सखज हो भति दोपन कछु देह ।

भूल्यो भ्रम ते ही वहा जहा सोधि किन सेह ॥८॥

सवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास ।

सित वाण श्रुति दिन रच्यो माखन छद विनास ॥९॥

पिंगल छद मे दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा आदि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छद मे वर्णन किया गया है । अन्तिम पद्य भी नहीं है ।

३२७८ पिंगलशास्त्र—नागराज । पद्य स० १० । आ० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२७ । अ मण्डार ।

३२७९ पिंगलशास्त्र । पद्य स० ३ से २० । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५६ । अ मण्डार ।

३२८० पिंगलशास्त्र । पद्य स० ४ । आ० १०½×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६२ । अ मण्डार ।

३२८१ पिंगलछदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास । पद्य स० ७ । आ० १३×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । २० काल स० १७६५ । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वे० स० १८६६ । अ मण्डार ।

विशेष— सवतशर नव मुनि शशीनभ नवमी शुभ मानि ।

डिडवाना हठ कूप तेहि ग्राय जन्म-थल ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छद रत्नावली संपूर्ण ।

३२८२ पिंगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पद्य स० ६८ । आ० ६×८ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१३ । अ मण्डार ।

३२८३ प्राकृतछदकोष—रत्नशेखर । पद्य स० ५ । आ० १३×५३ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । अ मण्डार ।

३२८४ प्राकृतछदकोष—अलङ्कार । पद्य स० १३ । आ० ८×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६३ । पद्य कुटी ६ । पूर्ण । वे० स० ५२१ । क मण्डार ।

३२८५ प्राकृतछदकोष । पद्य स० ३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—छदशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७६२ आवण कुटी ११ । पूर्ण । वे० स० १८६२ । अ मण्डार । विशेष—प्रति जीर्ण एव फटी हुई है ।

३२६४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल म० १७०० कार्तिक सुदी ३। वे० सं० ४५। क
मण्डार।

विशेष—अपि हसा ने साददी मे प्रतिलिपि कराई थी।

इसी मण्डार मे एक प्रति (वे० सं० १४६) और है।

३२६५ वाग्ममृदालङ्कारटीका—वादिराज। पत्र सं० ४०। आ० ६३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—मलङ्कार। १० काल सं० १७२६ कार्तिक सुदी ३३ (दीपावली)। ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६। पूर्ण
वे० सं० १५२। अ मण्डार।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवस्तरे निघट्टगणवशशाकमुक्ते (१७२६) दीपात्सवाख्यदिवस सगुरो सचित्रे।

लग्नेऽलि नाम्नि च समोपगिर प्रसादात् सद्वादिराजचित्ताकविचन्द्रकेय॥

श्रीराजसिंहनृपतिजयसिंह एव श्रीटाडाक्षकारणनगरी अपहृत्य तुल्या।

श्रीवादिराजविषुषोऽपर वाग्मटोय थीसूत्रवृत्तिरिह नदतु चाकर्कचन्द्र॥

श्रीमद्भूमिभूषणजस्य बलिन श्रीराजसिंहस्य मे मेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका विशूना हिता।

हीनाधिकवचोयदत्र लिखित तद्विबुधै क्षम्यतां गार्हस्थ्यवनिनाय मेववाधियोक्तै स्वमुतामाभूयात्॥

इति श्री वाग्ममृदालङ्कारटीकाया पोमराजश्रेष्ठिमुतवादिराजविरचिताया कविचन्द्रिकाया पञ्चम परिच्छेद
समाप्त। सं० १८११ श्रावण सुदी ६ श्रुतवास्तरे लिखित महात्मोरूपनगरका हमराज सबाई जयपुरमध्ये। सुभ भूयात्॥

३२६६ प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६। वे० सं० २५६। अ
मण्डार।

३२६७ प्रति सं० ३। पत्र सं० ११६। ले० काल म० १६६०। वे० सं० ६५४। क मण्डार।

३२६८ प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १७३१। वे० सं० ६५५। क मण्डार।

विशेष—तक्षकगढ मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे खण्डेलवालात्वयै सांगारणी गौत्र वाले
मम्राट गयामुद्दीन से सम्मानित साह महिणा साह पोमा मुन वादिराज की भाषा लोहदी न इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि
करवायी थी।

३२६९ प्रति सं० ५। पत्र म० २०। ले० काल म० १८६२। वे० सं० ६५६। क मण्डार।

३३०० प्रति सं० ६। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। म० सं० ६७३। क मण्डार।

३३०१ वाग्ममृदालङ्कार टीका। पत्र सं० १३। आ० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
मलङ्कार। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण (पञ्चम परिच्छेद तक) वे० सं० २०। अ मण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३३०२. वृत्तरत्नाकर—भाट्ट केशव । पत्र सं ११ । पा १ अ० द० । माला—संस्कृत । विषय—श्रीराम-ध्यान । र माला × । मे माला × । पुरी । के सं १५२१ । अक्षरान्तर ।

३३०३. प्रति स २ । पत्र सं १३ । मे माला सं १९५४ । के सं १५४ । अक्षरान्तर ।

विशेष—इसके अतिरिक्त यह अक्षरान्तर में एक प्रति (के सं १२) का अक्षरान्तर है एक प्रति (के सं २०१) का अक्षरान्तर में दो अतिरिक्त (के सं १७७ व ९) धीरे हैं ।

३३०४. वृत्तरत्नाकर—काकिकाश । पत्र सं ९ । पा १ अ० द० । माला—संस्कृत । विषय—श्रीराम-ध्यान । र माला × । मे माला × । पुरी । के सं १७६ । अक्षरान्तर ।

३३०५. वृत्तरत्नाकर— । पत्र सं ७ । पा १ अ० द० । माला—संस्कृत । विषय—श्रीराम-ध्यान । र माला × । मे माला × । पुरी । के सं ९२ । अक्षरान्तर ।

३३०६. वृत्तरत्नाकरहीन—मुकुटस कवि । पत्र सं ४ । पा १ अ० द० । माला—संस्कृत । विषय—श्रीराम-ध्यान । र माला × । मे माला × । पुरी । के सं १६ । अक्षरान्तर ।

विशेष—मुकुटस द्वारा नामक टीका है ।

३३०७. वृत्तरत्नाकरहीन—समस्तमुद्रादि । पत्र सं १ । पा १ अ० द० । माला—संस्कृत । विषय—श्रीराम-ध्यान । र माला × । मे माला × । पुरी । के सं २२१२ । अक्षरान्तर ।

३३०८. अथर्वशत—काकिकाश । पत्र सं ९ । पा १ अ० द० । माला—संस्कृत । विषय—अथर्वशत । र माला × । मे माला × । पुरी । के सं १२११ । अक्षरान्तर ।

विशेष—संस्कृत विचार एक है ।

३३०९. प्रति स ३ । पत्र सं ४ । मे माला सं १५४६ काकिकाश मुद्रा २ । के सं १२ । अक्षरान्तर ।

विशेष—यं कल्पराज के पञ्चमर्त प्रतिनिधि हुई थी ।

३३१०. प्रति स ३ । पत्र सं ९ । मे माला × । के सं ७२६ । अक्षरान्तर ।

विशेष—जीवराज द्वारा लिखित अति है ।

३३११. प्रति स ४ । पत्र सं ७ । मे माला सं १२२ नामक मुद्रा २ । के सं ७२२ । अक्षरान्तर ।

३३१२. प्रति स ४ । पत्र सं ९ । मे माला सं १४ अक्षरान्तर मुद्रा ३ । के सं ७२७ । अक्षरान्तर ।

विशेष—यं नामक के विजयी नगर में प्रतिनिधि की थी ।

३३१३ प्रति स० ६ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १७८१ क्षेत्र सुदी १ । वै० स० १७८ । अ
भण्डार ।

विशेष—प० सुखानन्द के शिष्य नैनमुख ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३३१४ प्रति स० ७ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वै० स १८११ । ट भण्डार ।

विशेष—भाचार्य विमलकीर्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतिया (वै० सं० ६४८, ६०७, ११६१) क, ङ, च और ज भण्डार
में एक एक प्रति (वै० सं० ७०४, ७२६, ३४८, २८७) अ भण्डार में २ प्रतिया (वै० सं० १५६, १८७)
और हैं ।

३३१५ श्रुतबोध—वररुचि । पत्र सं० ४ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छन्दशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल स० १८५६ । वै० स० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६ श्रुतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र स० ८ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—छन्दशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८६१ मासोज सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ६४७ । क भण्डार ।

३३१७ श्रुतबोधटीका । पत्र स० ३ । मा० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छन्दशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल स० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वै० स० ६४५ । अ भण्डार ।

३३१८ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वै० सं० ७०३ । क भण्डार ।

३३१९ श्रुतबोधवृत्ति—हर्षकीर्ति । पत्र स० ७ । मा० १०३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
दशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७१६ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वै० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री ५ सुन्दरदास के प्रसाद से मुनिमुख ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२० प्रति स० २ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १६०१ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वै० सं०
२३३ । छ भण्डार ।



विषय-संगित एवं नाटक



1

३३०१ काठवाडुनाटक—वी मङ्गलसाध। वषर् १३। या १२५८ ई०। भाषा—हिन्दी।
विषय-नाटक। १ काल ×। मे काल ×। पृष्ठां। १। १। क मकार।

३३०२ अग्नि ५०। वषर् १४। मे काल १६६१ अर्जुन युधि ६। १। १। १०२। अ
मकार।

३३०३ अमिमान शाकुन्तल—वाशिष्ठा। वषर् १५। या १२५९ ई०। भाषा—संस्कृत।
विषय नाटक। १ काल ×। मे काल ×। पृष्ठां। १। १। १६०। अ मकार।

३३०४ कर्तृव्यज्ञी—राज्यम्बर। वषर् १६। या १२५९ ई०। भाषा—संस्कृत। विषय-
नाटक। १ काल ×। मे० काल ×। पृष्ठां। १। १। १६१। अ मकार।

विषय—अग्नि शायी है। बुद्धि शायीनि मे अग्निविधि की थी। अन्य के बीना बीर वष तक संस्कृत
मे व्याख्या की हुई है।

३३०५ आत्मसूक्तनाटक—वादिचन्द्रमूर्ति। वषर् १७। या १२५९ ई०। भाषा—
संस्कृत। विषय-नाटक। १ काल १६५८ काव्य युधि ५। मे काल १६६०। पृष्ठां। १। १। १६। अ
मकार।

विषय—वादि में अग्निविधि हुई थी।

३३०६ अग्नि ५००। वषर् १८। मे काल १६६० काव्य युधि ५। १। १। १६१। अ
मकार।

३३०७ अग्नि ५००। वषर् १९। मे काल १६६० काव्य युधि ५। १। १। १६१। अ
मकार।

विषय—कुल्लुग विवाही महत्वा राधापुष्प मे कवचवर में अग्निविधि की थी तथा इन्ने लंबी कवचवर
वीरान के अन्दर में विराजमान थी।

३३०८ अग्नि ५००। वषर् १९। मे काल १६६१ काव्य युधि ५। १। १। १६१। अ
मकार।

३३०९ अग्नि ५००। वषर् २०। मे काल १६६१। १। १। १६१। अ मकार।

विषय—कुल्लुग कवचवीरि के विषय की आत्मकीर्ति मे अग्निविधि करते व वीरराज को भेद स्वयं की
थी। इन्ने अग्निविधि इन्नी मकार में १ अग्नि (१। १। १६० १६०) बीर है।

३३३० ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र स० ४१ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल स० १९१७ वैशाख बुदी ६ । ले० काल स० १९१७ पौष ११ । पूर्ण । वे० स० २१९ । ढ भण्डार ।

३३३१. प्रति स० २ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १९३९ । वे० स० ५६३ । च भण्डार ।

३३३२ प्रति स० ३ । पत्र स० ४८ से ११५ । ले० काल स० १९३९ । अपूर्ण । वे० स० ३४४ । म भण्डार ।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द । पत्र स० ८१ । आ० १३×७ ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल स० १९३४ । पूर्ण । वे० स० ५६२ । च भण्डार ।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास । पत्र स० ४० । आ० ११ ३/४×७ ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल स० १८७७ भाद्रपद बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २२० । ढ भण्डार ।

३३३५ ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—वस्तावरलाल । पत्र स० ८७ । आ० ११×५ १/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल स० १८५४ ज्येष्ठ बुदी २ । ले० काल स० १९२८ वैशाख बुदी ८ । वे० स० ५६४ । पूर्ण । च भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी ।

३३३६ धर्मदशावतारनाटक । पत्र स० ६६ । आ० ११ ३/४×५ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल स० १९३३ । ले० काल × । वे० स० ११० । ज भण्डार ।

विशेष—प० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है ।

३३३७. नलदमयती नाटक । पत्र स० ३ से २४ । आ० ११×४ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १९९८ । ट भण्डार ।

३३३८ प्रबोधचन्द्रिका—चैजल भूपति । पत्र स० २९ । आ० ६×४ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल स० १९०७ भाद्रपद बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ८१४ । अ भण्डार ।

३३३९ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० २१९ । म भण्डार ।

३३४० भविष्यदत्त तिलकामुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह । पत्र स० ५४ । आ० १३×८ ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । छ भण्डार ।

३३४१ मदनपराजय—जिनदेवसूरि । पत्र स० ३६ । आ० १० ३/४×४ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८८५ । अ भण्डार ।

विशेष—यस ही २ स ७ २० पंक्ति नहीं है तथा ११ वीं पंक्ति के वन भी नहीं हैं।

२२४८. प्रति सं० २१ वन सं ४२। के वन सं १ २६। के सं २६०। क मन्थार।

३३४३ प्रति ख० ३। पत्र सं ४१। वि. काल X। दि. सं २७५। कु. नम्बर १।

विशेष—आम्रगन्ध के एक पत्र महीन लिखे गये हैं ।

३३५५ प्रति सं ४। वच सं ४२। नि काल ×। नि सं १। कु आधार।

१९४८, प्रति स. ५। पत्र सं. ४५। दि. नाग सं. १९१६। दि. सं. ६८। छ. बन्नाट।

३३४३ प्रतिष्ठ ६। पत्र ३ ३३। वि. पत्र ३ २०३६ साहसुवी ६। वि. ३ ४५। पत्र

अप्यार ।

विशेष—सवाई मदनमर ने बंगाल में भीराव में ५ बोलबाल के ठेका ४ लाख ५ हजार में सवाईराम के पदार्थ श्रमिदिनि को दी ।

२३४० प्रति सं० ७। पत्र सं० ४। ले. का. सं० २१।

विषय—राज्यपाल काशीप्रसाद मिश्र ने राज्यपाल के प्रतिनिधि कर्तव्य की।

३६८. मयनपराजयः—। पय सं ३६८३। का १५४३। माया-मयय। विपय

माहक । ए. काल × । मे. काल × । अर्पण । वि. सं. १९९५ । अ. बम्बार ।

१३४२ प्रविष्ट २। पत्र सं ७। के. कल. X। अर्पण। दि. सं १९९३। पत्र संख्या।

३३८ मदनपराजय—१ त्वरूपकम् । अथ र्थ ३२ । या ११३५५ पृष्ठा । प्राया-११५० ।

विंध्य-भस्त्रक । १ साल के १११ मंडिर कुली ७ । के साल X । पूर्ण । के र् २७१ । के मयार ।

२३५१ रागमाळा—। पृष्ठ सं १। आ ४२ वक्र। मरा-मंथन। विषय-वृत्ति। २

कल $\times 1$ मे कल $\times 1$ प्रयुक्त : वे सं १९७६ : का न्यायः ।

२३४१ राग रागनिष्ठों के मध्य—[१५ सं । मा २×९ इक्ष। जाला-हिली । विषय-

उत्तम । र. कल \times । ने. कल \times । पुरी । ने. $\frac{1}{2}$ । र. $\frac{1}{2}$ । म. कल ।



विषय-लोक-विज्ञान

३३५३ अट्टाईद्वीप वर्णन । पत्र सं० १० । भा० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्कराब्द द्वीप का वर्णन है । २० काल × । ले० काल सं० १८१५ । पूर्ण । वे० सं० ३ । ग्व भण्डार ।

३३५४ ग्रहोंकी ऊँचाई एवं आयुवर्णन । पत्र सं० १ । भा० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-नक्षत्रों का वर्णन है । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११० । अ भण्डार ।

३३५५ चन्द्रप्रज्ञप्ति । पत्र सं० ६२ । भा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है । २० काल × । ले० काल सं० १६६४ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १६७३ ।

विशेष—प्रन्तिम पुष्पिका—

इति श्री चन्द्रपण्णत्तसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) संपूर्ण । लिखत परिप करमचंद ।

३३५६ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्रचार्य । पत्र सं० ६० । भा० १२×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ फाल्गुन सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०० । च भण्डार ।

विशेष—मधुपुरी नगरी में प्रतिलिपि की गयी थी ।

३३५७ तीनलोककथन । पत्र सं० ६६ । भा० १० $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० । क भण्डार ।

३३५८ तीनलोकवर्णन । पत्र सं० १५४ । भा० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १० । ज भण्डार ।

विशेष—गोपाल व्यास उग्रिवासा वाले ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्भ में नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है । प्रारम्भ में लिखा है— दू ठार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य पं० सदासुख के शिष्य श्री पं० फतेहलाल की यह पुस्तक है । भादवा सुदी १० सं० १९११ ।

३३५९ तीनलोकचार्द । पत्र सं० १ । भा० ५×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५ । क भण्डार ।

विमान—विजोवगार के आधार पर बनाया गया है। तीव्रगति की आवश्यकता के लिए बना उपकारी है।

३३३ प्रियोक्वित्र—। मा २ × ३ इंच। माता-द्विती। विमान-मोहरिज्ञान। २
मात्र ४। मे मात्र १२०२। गुर्न। ३। मे २३९। क मयार।

विमान—गरे पर तीव्रगति का विमान है।

३३३३ प्रिक्वाक्वीवट—सामयिक। मात्र ७२। मा १९ × ७ इंच। माता-मंगुत। विमान-
मोहरिज्ञान। २ मात्र ४। मे मात्र १२९ माता गुरी २। गुर्न। ३। मे २। क मयार।

विमान—कम लंबि है। जम्बूज तथा विरेह केव का विमान गुम्बर है तथा कम पर केव बूटे भी है।

३३३० प्रिक्वाक्वावट—समिक्वाक्वावट। मात्र १। मा १९ × २ इंच। माता शाइन। विमान-
मोहरिज्ञान। २। मात्र ४। मे मात्र १२९ मंगुत गुरी ११। गुर्न। ३। मे ४२। क मयार।

विमान—प्रति वष पर ६ विमान है। पहिले केविमान की गुर्न का विमान है जिसके बाई घोर बगमट तथा
बाई घोर भीड़पल हान कीये लगे है। तीव्रगति केविमानकार्य का के के मंगुती के मिहान पर बड़े है जाने मंगुती
के रट्ट पर कम है जाने मिहान की बगमट गुरी है। उनके छोटे की विमान भी है जिसमें एक बागुमटल का तथा गुम्बर
घोर विमान कीला का विमान है। तीव्रगति कीये कीये लगे है। विमान गुम्बर है। उनके मंगुतल घोर भी
मोहरिज्ञान कमकी विमान है।

३३३ प्रति ६०६। मात्र ४२। मे मात्र १२९ मंगुत गुरी ११। मे ४२। क मयार।

३३३४ प्रति ३। मात्र २९। मे मात्र १२९ मंगुत गुरी २। मे २९। क मयार।

३३३८ प्रति ४। मात्र ७२। मे मात्र २९। मे २९। क मयार।

विमान—प्रति वषि है।

३३३६ प्रति २। मात्र ९। मे मात्र २९। मे २९। क मयार।

विमान—प्रति वषि है। नई फुटी पर हजिमा मे गुम्बर विमान है।

३३३७ प्रति ६। मात्र ९२। मे मात्र १२९ मंगुत गुरी २। मे २९। क मयार।

विमान—मंगुतल का रमिह के मंगुतल मे मंगुतल मे रमिह मंगुतल मे प्रतिमिति मंगुतल की।

३३३८ प्रति ३। मात्र २९। मे मात्र १२९ मंगुत गुरी २। मे २९। क मयार।

इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० स० २६२, २६३,) च भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० स० १४७, १४८) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४) और है ।

३३६६ त्रिलोकसारदर्पणकथा—खड्गसेन । पत्र स० ३२ से २२८ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल स० १७१३ चैत सुदी ५ । ले० काल स० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नहीं हैं ।

३३७०. प्रति स० २ । पत्र स० १३६ । ले० काल स० १७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४ । वे० स० १८२ । अ भण्डार ।

विशेष—साह लोहट ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१ त्रिलोकसारभाषा—प० टोडरमल । पत्र स० २८६ । आ० १४×७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल स० १८४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७६ । अ भण्डार ।

३३७२ प्रति स० २ । पत्र स० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३७३ । अ भण्डार ।

३३७३ प्रति स० ३ । पत्र स० २१८ । ले० काल स० १८८४ । वे० स० ४३ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया ।

३३७४ प्रति स० ४ । पत्र स० १२५ । ले० काल × । वे० स० ३६ । घ भण्डार ।

३३७५ प्रति स० ५ । पत्र स० ३६४ । ले० काल स० १६६६ । वे० स० २८४ । ङ भण्डार ।

विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी मजमेर वाली ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा । पत्र स० ४५२ । आ० १२३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वे० स० २६२ । क भण्डार ।

३३७७ त्रिलोकसारभाषा । पत्र स० १०८ । आ० ११३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६१ । क भण्डार ।

विशेष—भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है ।

३३७८ त्रिलोकसारभाषा " । पत्र स० १५० । आ० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५८३ । च भण्डार ।

३३७९ त्रिलोकसारभाषा (वचनिका) । पत्र स० ३१० । आ० १०३×७३ इंच । भाषा—हि० दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल स० १८६५ । वे० स० ८५ । झ भण्डार ।

३३६० त्रिलोकवर्णन । एक ही सम्ये पत्र पर । ले० काल × । वे० सं० ७७ । अ भण्डार ।

विषय—सिद्धधिला मे स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलो का सचित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४३ इंच चौड़े पत्र पर दिये हैं । कहीं कहीं पीछे कपड़ा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १×१ फुट है । चित्र सभी विन्दुओं में बने हैं । नरक वर्णन नहीं है ।

३३६१ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ में १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२७ । अ भण्डार ।

३३६२ त्रिलोकवर्णन । पत्र सं० ५ । मा० १७×११ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । अ भण्डार ।

३३६३ त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकोटि । पत्र सं० ७६ । मा० १२×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । अ भण्डार ।

३३६४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० २८७ । अ भण्डार ।

३३६५ भूगोलनिर्माण । पत्र सं० ३ । मा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १७७१ । पूर्ण । वे० सं० ८६८ । अ भण्डार ।

विषय—५० हर्षागम गणि वाचनार्थ लिखित बोरटा नगरे सं० १५७१ दिये । जैनैतर भूगोल है जिसमें सतयुग, द्वापर एवं त्रेता में होने वाले अवतारों का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६ सचपण्टपत्र । पत्र सं० ६ में ४१ । मा० ६३×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३ । अ भण्डार ।

विषय—संस्कृत में ट्ठ्ठा टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २३, २६ । २८ में ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ में आगे पत्र नहीं हैं ।

३३६७ सिद्धांत त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र सं० ६६ । मा० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३११ । अ भण्डार ।



विषय- सुभाषित एवं नीतिशास्त्र



३३६८. अज्ञानमहाकाशी—[पद सं २। वा १२×८८ दण। ज्ञाना—हिन्दी। विषय—सुभाषित।
२। ज्ञान >। नि ज्ञान <। पुर्व। नि सं ११। क मन्थार।

३३६९. प्रति सं २। पद सं २। नि ज्ञान <। नि सं ११। क मन्थार।

३४०. ज्ञानदेवमहाकाशी—विनाहर्ष। पद सं २। वा १ >४ दण। ज्ञाना—हिन्दी। विषय—
सुभाषित। २। ज्ञान <। नि ज्ञान सं १८३६। पुर्व। नि सं ४२८। क मन्थार।

विशेष—

प्रारम्भ—वी सर्वविष्णो भवा। एवं वी जगत्सर्वं वीर विराज्यमानेन जगती जगद्गुरुन लल्लो मयम्।

विस्तारुति—

लल्लु कय माने बभूवा मनुष्य कुर
कुर ज्ञाना भाई है न कबरीय कुर।
पुण्य हि न पात है मरिच है न छत है,
जान के ज्ञान कहे करम करिचतु ॥
ज्ञान नी संवत पुंन लुका लुका के विपुंन
अस्तिवन नीतिव कुति वचन थे विचतु।
हीने निवदल निमर्त्य अल्लुभि जगदेव
नी कतिनी मही जगद लल्लोचतु ॥१॥

अभिराम कवन—

अरे भित मन्थिनीत ज्ञानु पटी मन्थार लीते,
ली कटीभति कटी वी ली पदमि है।
तु ली मही वेण्णा है मन्थो है लोकी कुर
मैरी २ मर लड़ी कर्षि रति मन्थी है ॥
जान वी नीनीर कोल वेक न कपही,
लेरी मोहू वचन मे लो मन्थी ज्ञानी है।
मही लीमर्त्य दण लल्लु कर्षी मार,
कमल नी कुटी मीनू री वी हा मन्थी ॥२॥

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सवैया—

धरम धरम वहै भरम न कोठ लहे,
 भरम में भूलि रहै कुल रुढ कीजीये ।
 कुल रुढ छोरि कै भरम फद तोरि कै,
 सुमति गति फोरि कै सुज्ञान दृष्टि दीजीये ॥
 दया रूप सोइ धर्म धर्म तैं कटै है मर्म,
 भेद जिन धरम पोसूप रस पीजीये ।
 करि कै परीक्ष्या जिनहरप धरम कीजीये,
 बसि कैं कसोटी जैनै कचरण क लीजीये ॥३५॥

अथ प्रथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा

भई उपदेस की छतीसी परिपूर्ण चतुर नर
 है जे याको मव्य रस पीजीये ।
 भेरी है अलपमति तो भी में कोए कवित,
 कविताह सी ही जिन ग्रन्थ मान लीजीये ॥
 सरस है है बखान जौऊ भवसर जाण,
 दोइ तीन याकै भैया सवैया कहीजीयो ।
 कहै जिनहरप सवत्त गुण सिसि भक्ष कीनी,
 छु गुण कै सावास मोकु दीजीयो ॥३६॥
 इति श्री उपदेश छतीसी सपूर्ण ।

सवत् १८३६

गवडि पुछेरे गवडि भा, कवण भले री देश ।
 सपत हुए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश ॥
 सूरवलि तो सूहामणी, कर मोहि गग प्रवाह ।
 माखल तरणे प्रगणे पाणी अथग अयाह ॥२॥

३४०१ उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र स० १४ । भा० १२३×७३ इच । भाषा—हिंदी । विषय—
 सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२६ । च भण्डार ।

३४०२ कर्पूरप्रकरण... । पत्र स० २४ । भा० १०×४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६३ ।

विशेष—१७६ पद्य है। समित्य पद्य निम्न प्रकार है—

वी बन्धनेनान्नं पुरीक्षितपट्टि

सारं ब्रह्मचर्यं तत्तत्पुण्यं ।

विशेष्यं चक्रे हस्तिनेयं मिष्टा

सुतावली वैविधिरिव वर्ता ॥१७६॥

इति वपुःशान्तिं मुखापिठं वीक्ष्य लज्जता ॥

१७७३ प्रति स २। पद्य है २। के गजल है १६७७ ज्येष्ठ सुदी २। के स १३। क

अन्धकार।

१७७४ प्रति स ३। पद्य है १२। के गजल है १७७६ भाद्रपद ४। के स २७६। क

अन्धकार।

विशेष—कुम्हारदास ने प्रतिनिधि भी भी।

१७७५ कामलकीर्ण नीतिश्रुत भाषा—पद्य है २ के १७। या १२४८ दश। गजल—हिन्दी

पद्य। विषय—नीति। के गजल ×। पद्य है २। के स २। क अन्धकार।

१७७६ प्रति स ३। पद्य है ३ के २। के गजल ×। पद्य है २। के स २। क अन्धकार।

१७७७ प्रति स ३। पद्य है ३ के २। के गजल ×। पद्य है २। के स २। क अन्धकार।

१७७८ भाद्रपदकीर्ण—भाद्रपद। पद्य है ११। या १२४९ दश। गजल—वैदिक। विषय—

नीतिश्रुत। के गजल ×। के गजल है १६६ अर्धशत सुदी १४। पद्य है ११। के स ११। क अन्धकार।

इसी अन्धकार में २ प्रति (के स ११ १६१ ११ १६२४ १६२५) भी है।

१७७९ प्रति स २। पद्य है १। के गजल है १६२६ वीं सुदी २। के स ७। क

अन्धकार।

इसी अन्धकार में १ प्रति (के स ७१) भी है।

१७८० प्रति स ३। पद्य है १४। के गजल ×। पद्य है १७२। के स १७२। क अन्धकार।

इसी अन्धकार में २ प्रति (के स १७ १७७) भी है।

१७८१ प्रति स ३। पद्य है २ के १२। के गजल है १६३ अर्धशत सुदी ३। पद्य है १२। के स १२। क

अन्धकार।

इसी अन्धकार में १ प्रति (के स १४) भी है।

१७८२ प्रति स ३। पद्य है १२। के गजल है १६७४ ज्येष्ठ सुदी ११। के स २४२। क

अन्धकार।

सुभाषित एव नीतिशास्त्र]

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १३८, २४८, २५०) और हैं ।

३४१३ चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता—चाणक्य । समग्रकर्त्ता—मयुरेश भट्टाचार्य । पत्र स० ७ ।

भा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१० ।

अ भण्डार ।

३४१४ चाणक्यनीतिभाषा । पत्र स० २० । भा० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नीति

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है । ७वें अध्याय के २ पद्य हैं । दोहा और कुण्डलियो का अधिक प्रयोग हुआ है ।

३४१५ छद्मशतक—चुन्दावनदास । पत्र स० २६ । भा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल स० १८६८ भाग सुदी २ । ले० काल स० १६४० मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १७८ । क भण्डार ।

३४१६ प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १६३७ फागुण सुदी ६ । वे० स० १८१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १७६, १८०) और हैं ।

३४१७ जैनशतक—भूवरदास । पत्र स० १७ । भा० ६×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल स० १७८१ पौष सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १००५ । अ भण्डार ।

३४१८ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १६७७ फागुन सुदी ५ । वे० स० २१८ । क भण्डार ।

३४१९ प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० २१७ । ड भण्डार ।

विशेष—प्रति नीले कागजो पर है । इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २१६) और है ।

३४२० प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ५६० । च भण्डार ।

३४२१ प्रति स० ५ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १८८६ । वे० स० १५८ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २८४) और है जिसमे कर्म छत्तीसी पाठ भी है ।

३४२२ प्रति स० ६ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १८८१ । वे० स० १६४० । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १६५१) और है ।

३४२३ ढालगाय । पत्र स० ८ । भा० १२×७ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३५ । क भण्डार ।

३४३१ प्रति स० ३ । पत्र स० २६१ । ले० काल स० १६१६ । वे० स० ३३६ । ङ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३४०) भी है ।

३४३२ प्रति स० ४ । पत्र स० १६४ । ले० काल × । वे० स० ५१ । ञ भण्डार ।

३४३३ प्रति स० ५ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८८४ । वे० स० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कृत्ति, । पत्र स० २ । ग्रा० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३८८ । अ भण्डार ।

३४३५ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० १७८ । च भण्डार ।

३४३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १६३४ । वे० स० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—पचरत्न भी है । श्री विरधीचंद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७ नीतिसार । पत्र स० ६ । ग्रा० १० ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । वे० स० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८ नीतिसार—इन्द्रनन्द । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम ६वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६३७ भादवा सुदी ४ । वे० स० ३८६ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ३८६, ४००) भी हैं ।

३४४० प्रति स० ३ । पत्र स० २ मे ८ । ले० काल स० १८२२ भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० ३८१ । ङ भण्डार ।

३४४१ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२ प्रति स० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १७८४ । वे० स० १७६ । ञ भण्डार ।

विशेष—फ़लायनगर में पादर्वनाथ चैत्यालय में गोर्दनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३ नीतिशतक—भर्तृहरि । पत्र स० ६ । ग्रा० १० ३/४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७६ । ङ भण्डार ।

३४४४ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० १४२ । ञ भण्डार ।

३४४४. नीतिवाक्याष्ट—सोमदेव सूरि। पत्र सं ३३। या ११५३ दृश्य। भाषा—संस्कृत।

विषय—नीतिवाक्य। १ काल ×। २ काल ×। पूर्ण। ३ सं ३३४। छ मन्थार।

३४४५ भीतिविनाश—। पत्र सं ४। या १५४३ दृश्य। भाषा—हिन्दी। विषय—नीतिवाक्य।

१ काल ×। २ काल सं १२१। ३ सं ३३३। छ मन्थार।

विषय—यमालाभ पाठ्या में संज्ञा करवाया था।

३४४६ नीतिशुद्ध। पत्र सं ११। या १३५४ दृश्य। भाषा—संस्कृत। विषय—मुद्रापत्र। १

काल ×। २ काल ×। पूर्ण। ३ सं ३३५। छ मन्थार।

३४४७ जौरेवा बाघराह की दस दाह। पत्र सं २। या ४३५६ दृश्य। भाषा—हिन्दी। विषय—

जौरेवा। १ काल ×। २ काल सं १३४३ बीदाह पुरी १४। पूर्ण। ३ सं ४। छ मन्थार।

विषय—महोदधाल पाठ्या में अतिविधि की थी।

३४४८ पञ्चतन्त्र—यं विष्णु शर्मा। पत्र सं १४। या १३५३ दृश्य। भाषा—संस्कृत। विषय—

भीति। १ काल ×। २ काल ×। पूर्ण। ३ सं १५। छ मन्थार।

दही मन्थार में एक अति (३ सं ३३७) भीतर है।

३४४९ अति सं २। पत्र सं १। २ काल ×। ३ सं ११। छ मन्थार।

विषय—अति ज्ञानी है।

३४५० अति सं ३। पत्र सं ३४ से १३५। २ काल सं १५३२ बीदाह पुरी १। पूर्ण। ३ सं

१३४। छ मन्थार।

विषय—पूर्वकाल सूरि द्वारा संशोधित पुरीहित ज्ञानीरव ज्ञानीरव वाङ्मय में कर्माई यमनवर (यमपुर)

में ज्ञानीरव की वाङ्मयकाल में अतिविधि की थी। इस अति का बीछोडार सं १ ३३ काल सं पुरी १ में हुआ था।

३४५१ अति सं ४। पत्र सं ३५७। ३ काल सं १५५७ बीदाह पुरी ४। ३ सं १११। छ मन्थार।

विषय—अति हिन्दी वर्ष लक्षित है। प्राच्य में संज्ञा बीदाह यमनवर की वाङ्मय में यमनवर अति के

विषय माङ्गिकयमन में यमनवर की हिन्दी बीदाह लक्षित।

३४५२ पञ्चतन्त्रभाषा—। पत्र सं २२ से १४३। या १५७३ दृश्य। भाषा—हिन्दी पत्र।

विषय—भीति। १ काल ×। २ काल ×। पूर्ण। ३ सं १३७५। छ मन्थार।

विषय—विष्णु शर्मा के संज्ञित पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है।

३४५३ पांचवो—। पत्र सं २। या १५४ दृश्य। भाषा—मुद्रापत्र। विषय—जौरेवा। १

काल ×। २ काल ×। पूर्ण। ३ सं १३५३। छ मन्थार।

३४५५ पेंसठवोल । पत्र सं० १ आ० १०×४३ इ.च. भाषा-हिन्दी । विषय-उपदेश । २०

काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २१७६ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ बोल ६५

[१] भरय लोमी [२] निरदई मनख होसी [३] विसवासघाती मन्त्री [४] पुत्र सुता भरना लोमा [५] नीचा पेपा भारि बंधव [६] असतोप प्रजा [७] विद्यावत दलद्री [८] पावण्डी दास्य बाच [९] जती क्रीषी होइ [१०] प्रजाहीण नगमही [११] वेद रोगी होसी [१२] हीण जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१५] खिसा काया कलेस घाणु करसी दुष्ट बलवत सुभ सो [१६] जीवनवतजरा [१७] प्रकाल मृत्यु होसी [१८] पुद्रा जीव घणा [१९] भगहीण मनुख होसी [२०] मलय मेघ [२१] उल्ल सात बीली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] सया [२५] [२६] [२७] [२८] [२९] [३०] आपकी कीघो दोप पैला का लगावसी [३१] प्रसुद्ध साप भएसी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेप धारावेरागी होसी [३४] बहकार द्वेप मुख घणा [३५] सुरजादा लोप गज ब्राह्मण [३६] माता पिता गुरुदेव मान नही [३७] दुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैला की निंदा घणी करेसी [४०] कुलवता नार लहोसी [४१] वेसा भगतए लग्या करसी [४२] अफल वर्षा होसी [४३] बाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच घरका रूपवत होसी [४७] मुहमाग्या मेघ नही होमी [४८] धरती मे मेह थोडो होसी [४९] मनख्यां में नेह थोडो होसी [५०] बिना देख्या चुगली करसी [५१] जाकी मरणो लेसी तासु ही द्वेप करी खोटी करसी [५२] गज हीणा बाजा होसासी [५३] न्याइ कहीं हान क लेसी [५४] अवबसा राजा हो [५५] रोग सोग घणा होसी [५६] रतवा प्राप्त होसी [५७] नीच जात श्रद्धान होसी [५८] राडजोग घणा होसी [५९] अस्त्री कलेस गराघण [६०] अस्त्री सील हीण घणी होसी [६१] सीलवती विरली होसी [६२] विप विकार घनो रगत होमी [६३] ससार चलावाता ते दुखी जाए जोसी ।

॥ इति श्री पचावण वोल् सपूरण ॥

३४५६ प्रबोधसार—यश कीर्ति । पय स० २३ । मा० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७५ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में मूल अक्षरों का उल्टा है।

३४२७ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल सं० १६५७ । वे० स० ४६५ । क भण्डार ।

३४२८ मरनोत्तर रत्नमाळा—मुक्तीवासा । पत्र सं २ । या २६×३२ द.व । भाषा—ब्रजभाषी ।
विषय—मुक्तावलि । १ काल × १ नि काल × १ पूर्ण । ये सं १२७ । छ मन्थार ।

३४२९ मरनोत्तररत्नमाळिका—समाजबर्षी । पत्र सं २ । या ११×४३ द.व । भाषा—संस्कृत ।
विषय—मुक्तावलि । १ काल × १ नि काल × १ पूर्ण । ये सं २७ । छ मन्थार ।

३४३० प्रति सं २ । पत्र सं २ । नि काल सं १६७१ वर्षादि सुदी १ । ये सं ३१९ । छ
मन्थार ।

३४३१ प्रति सं ३ । पत्र सं २ । नि काल × १ ये सं ११ । छ मन्थार ।

३४३२ प्रति सं ४ । पत्र सं ३ । नि काल × १ ये सं १७९२ । छ मन्थार ।

३४३३ प्रत्याभित रत्नोक्त— । पत्र सं ३९ । या ११×९६ द.व । भाषा—संस्कृत । विषय—
मुक्तावलि । १ काल × १ नि काल × १ पूर्ण । ये सं ३१४ । छ मन्थार ।

विषय—हिन्दी शर्ष काव्य है । विविध प्रश्नों के उत्तर पद्यों का संग्रह है ।

३४३४ बाणभट्टी—सूरत । पत्र सं ७ । या १७×९ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—मुक्तावलि ।
१ काल × १ नि काल × १ पूर्ण । ये सं ३२९ । छ मन्थार ।

३४३५ बाणभट्टी— । पत्र सं २ । या १७×९ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—मुक्तावलि ।
१ काल × १ नि काल × १ पूर्ण । ये सं ३२९ । छ मन्थार ।

३४३६ बाणभट्टी—पारसवासा । पत्र सं २ । या १७×९ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—मुक्तावलि ।
१ काल सं १ ३३ वीं सुदी १ । नि काल × १ पूर्ण । ये सं २४ ।

३४३७ मुचन्द्रनविभासा—मुचन्द्रन । पत्र सं १८ । या ११×२ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—
संग्रह । १ काल सं १ ११ वर्षादि सुदी २ । नि काल × १ पूर्ण । ये सं ८ । छ मन्थार ।

३४३८ मुचन्द्रन सप्तसर्ग—मुचन्द्रन । पत्र सं ४८ । या १७×९ द.व । भाषा—हिन्दी । विषय—
मुक्तावलि । १ काल सं १ ७२ वर्षादि सुदी ५ । नि काल सं ११८ भाग सुदी २ । पूर्ण । ये सं ४८८ । छ
मन्थार ।

विषय—७ शीरो का संग्रह है ।

३४३९ प्रति सं ५ । पत्र सं २२ । नि काल × १ ये सं ७९४ । छ मन्थार ।

द्वि मन्थार के २ प्रतियों (ये सं १२४ ९७४) की है ।

३४४० प्रति सं ३ । पत्र सं ५ । नि काल × १ पूर्ण । ये सं ३३४ । छ मन्थार ।

३४७१ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ७२९ । च भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४६) और है ।

३४७२ प्रति स० ५ । पत्र स० ७३ । ले० काल स० १९५४ आषाढ सुदी १० । वे० स० १६४० । ट

भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६३२) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र स० ३०३ । ले० काल × । वे० स० ५३५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ५३६) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४ ब्रह्मविज्ञास—भैया भगवतीदास । पत्र स० २१३ । आ० १३×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल स० १७५५ बैशाख सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओं का संग्रह है ।

३४७५ प्रति स० २ । पत्र स० २३२ । ले० काल × । वे० स० ५३९ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइन सुनहरी रंग की हैं । प्रति छुटके के रूप मे है तथा प्रदर्शनी मे रखने योग्य है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५३८) और है ।

३४७६ प्रति स० ३ । पत्र स० १२० । ले० काल × । वे० स० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७ प्रति स० ४ । पत्र स० १३७ । ले० काल स० १८५७ । वे० स० १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—माधोराजपुरा मे महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मित्ती माह सुदी ९ स० १८८६ में गोविन्दराम साहवडा (छावडा) की मार्फत पचार के मन्दिर के वालो दिलाया । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

३४७८ प्रति स० ५ । पत्र स० १११ । ले० काल स० १८८३ चैत्र सुदी ९ । वे० स० ६५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी बज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर मे चढाया था ।

३४७९. प्रति स० ६ । पत्र स० २०३ । ले० काल × । वे० स० ७३ । ज भण्डार ।

३४८० ब्रह्मचर्याष्टक । पत्र स० ५६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १७४८ । पूर्ण । वे० स० १२६ । ख भण्डार ।

३४८१ भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र स० २० । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शतकत्रय अथवा त्रिशतक भी है ।

इसी तथ्यपर मैं निवेदन (१५ १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१)
 पीर है ;

३५- प्रति मा० ७। १५ त्त ११ मे १८। मे पात्र X। चतुर्थ। ११ मे १८१। ११ पात्र।

हमारी जयकार में २ प्रतिमां (के ल ३५२, ३५३) प्रपूर्ण वीर हैं ।

३४८३ प्रति मा ३।५५ ल ११।५ गल X।५ ल १११।५ मय्याः।

३८-४ प्रति स० ४।१५ रं २५।३० याम नं १७२ रीत मुदी ७।३ नं ११५।५
अथार ।

एसी भाषाएँ हैं जिनमें प्रत्येक (१०००) शब्द हैं ।

३४२२. प्रसिद्धि ३। गवर्नर १२। वै. गवर्नर ११२५। वै. १५४। अ. गवर्नर।

विमर्श—इति संस्कृत टीका सहित है। मुद्रारूप में सन्तुल्य संस्करण में प्रसिद्धि की थी।

इष्टवर्ग प्रति सं० ६। वक्र सं ४४। त्रि. वक्र X। पृ. सं १६२। पृ. वक्र १।

३४८७ प्रति सं ७। पत्र सं ५६३३। के पत्र X। पत्र सं ११७३। द मन्त्र।

१४८८. माधरायक—भी बागसाह। १५ वें १४। या १४९१, राज। बाग—संभव। विषय—
मुवाफिक। १५ वल ×। मे वल ११ बाग मुदी ११। पुर्त। मे १७। क वलपार।

१४७७. मन्मात्रमपराधीमाप्य-क्षत्रपति क्षैत्रबाह्य । वनं च १६ । वा ११५२, २३३ । मत्ता-
हिनी वप । विषम-मुद्रापित । २ वनं च १२१६ । के वनं च १२१६ । पुर्ण । के च २१२ । क
मत्ता ।

विशेष—सभी सामान्य विषयों पर लंदन का क़ानून है।

इसी कण्टार में एक ऋषि (के अं ३६६) जीए है ।

३४६ मास बावली—मनकवि । वष १ । मा ३३×३३ इति । मास—दिनी । विषय—
मनकवि । १ वल × १ वल × १ वल । व ३३३ । अथमा ।

३४२१ मित्रविकास—धासी। पक्ष १४। या १९८३५ राज। भाषा—हिन्दी पक्ष। विपक्ष—
कुमारिण। य. माल १ १७६६ गजुल मुनी ४। के माल १ १२२९ रीन मुनी १। पूर्वा ३। के २०६। क
मध्याह्न।

विशेष—नैऋत ने यह कल्प धरने मित आराधन तथा पिता महापतिवृत्ति की कृत्याया के विषया था ।

१४६२, राजकोट—जब स १ था (२४६) राज। जाला-बीहण। विरम-मुदविधि। र
 राज ४। मे राज स १७२३ जाला कटी २। पूर्व। मे स १६। जाला-र।

सुभाषित एव नीतिशास्त्र]

विशेष—विश्वसेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०२१) तथा व्य भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४५ क) भी है ।

३४६३ रत्नकोष । पत्र सं० १४ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । क भण्डार ।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ अंगराज्य, राजाओं के गुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि ।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम । पत्र सं० १८ । भा० ५½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । क भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशायनम अथ राजनीत जसुराम कृत लीखत ।

दोहा—

मछर अगम अपार गति कितहु पार न पाय ।

सो मोकु दीजे सकती जै जै जै जगराय ॥

छप्पय—

वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग असरन सरनी ।

कर करुनो करन तरन सब तारन तरनी ॥

धिर पर धरनी छत्र भरन सुख सपत भरनी ।

भरनी अमृत भरन हरन दुख दारिद हरनी ॥

धरनी त्रिसुल खपर धरन भव भय हरनी ।

सकल भय जग बध आदि वरनी जसु जे जग धरनी ॥ मात जे० '

दोहा—

जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि अपार ।

करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत बीसतार ॥३॥

प्रतिम—

लोक सीरकार राजी ओर सब राजी रहै ।

चाकरी के कीये विम लालच न वाइये ॥

किन हु की भली धुरी कहिये न काहु आगे ।

सटका दे लछन कछु न आप साई है ॥

राय के उजीर नमु राख राख लेत रग ।

येक टेक हु की बात उमरनीवाहिये ॥

रीफ खीफ सिरकुं चढाय लीजे जसुराम ।

येक परापत कु येते गुन चाहिये ॥४॥

३४२८. राजनीति शास्त्र—देवीदास । वच ५ । १७ । या ५३५५ ६५ । भाषा—हिन्दी । विपद—राजनीति । ८ वच \times । १६ वच १ । १८७१ । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

३४२९. अनुभाषिक राजनीति—आशुबल । वच १ । या १३५३३ ६५ । भाषा—नेपाल । विपद—राजनीति । ८ वच \times । १६ वच \times । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

३४३०. दुन्दुभससई—कवि दुन्दु । वच ४ । या १३३५५ ६५ । भाषा—हिन्दी । विपद—नुवाचिप । ८ वच १ । १७११ । १६ वच १ । १४ । पूर्ण । १६ व ७७६ । अ. अकार ।

३४३१. प्रति २ । वच ४ । ४८ । १६ वच \times । १६ व १५१ । अ. अकार ।

३४३२. प्रति ३ । वच ४ । ४४ । १६ वच १ । १८७१ । १६ व १६६ । अ. अकार ।

३४३३. दुन्दुभाषिक राजनीतिशास्त्र भाषा—मिर्जापुर । वच १५ । या २५३ ६५ । भाषा—हिन्दी । विपद—नीतिशास्त्र । ८ वच \times । १६ वच \times । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

विपद—मिर्जापुर के अतिविप की भी ।

३४३४. प्रति २ । वच ४ । ४५ । १६ वच \times । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

३४३५. एतिहासिक विपद—मिर्जापुर । वच २ । या १५४ ६५ । भाषा—नेपाल । विपद—नुवाचिप । ८ वच \times । १६ वच १ । १८७२ । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

विपद—मिर्जापुर ।

इति एतिहासिक विपद । १६ वच १ । १८७२ । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

३४३६. एतिहासिक विपद—मिर्जापुर । वच २ । या १५४ ६५ । भाषा—नेपाल । विपद—नुवाचिप । ८ वच \times । १६ वच १ । १८७२ । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

३४३७. एतिहासिक विपद—मिर्जापुर । वच २ । या १५४ ६५ । भाषा—नेपाल । विपद—नुवाचिप । ८ वच \times । १६ वच १ । १८७२ । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

विपद—मिर्जापुर ।

३४३८. एतिहासिक विपद—मिर्जापुर । वच २ । या १५४ ६५ । भाषा—नेपाल । विपद—नुवाचिप । ८ वच \times । १६ वच १ । १८७२ । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

३४३९. एतिहासिक विपद—मिर्जापुर । वच २ । या १५४ ६५ । भाषा—नेपाल । विपद—नुवाचिप । ८ वच \times । १६ वच १ । १८७२ । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

३४४०. एतिहासिक विपद—मिर्जापुर । वच २ । या १५४ ६५ । भाषा—नेपाल । विपद—नुवाचिप । ८ वच \times । १६ वच १ । १८७२ । पूर्ण । १६ व ३५३ । अ. अकार ।

३५०४ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० १४६ । छ मण्डार ।

विशेष—१३६ सोखो का वर्णन है ।

३५०५ सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिपेण । पत्र म० ३ । मा० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वे० स० १०५७ । अ मण्डार ।

३५०६ प्रति स० २ । पत्र म० ४ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० ७३१ । क मण्डार ।

३५०७ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६५४ पौष सुदी ३ । वे० स० ७२८ । क

मण्डार ।

३५०८ प्रति स० ४ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० २६३ । छ मण्डार ।

३५०९ प्रति स० ५ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १७४६ मासीज सुदी ६ । वे० स० ३०४ । अ

मण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३५१० सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्र । पत्र स० ४ । मा० ११×८ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६ । अ मण्डार ।

३५११ सज्जनचित्तवल्लभ । पत्र स० ४ । मा० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १७५६ । पूर्ण । वे० स० २०४ । ख मण्डार ।

३५१२ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १५३ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३५१३ सज्जनचित्तवल्लभ—हर्गूलाल । पत्र स० ६६ । मा० १२३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

सुभाषित । २० काल स० १६०६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२७ । क मण्डार ।

विशेष—हर्गूलाल खतोली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीतमदास था । बाद में सहारनपुर चले गये थे वहाँ मित्रों की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी ।

इसी मण्डार में दो प्रतियाँ (वे० स० ७२६, ७३०) भी हैं ।

३५१४ सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचन्द्र । पत्र स० ३१ । मा० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

सुभाषित । २० काल स० १६२१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२६ । क मण्डार ।

३५१५ प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० ७२५ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी पद्य में भी अनुवाद दिया है ।

नाभि नदनु सकलमहीमडनु पचशत धनुष मानु तो । तोर्यो सुवर्ण समानु हर गवल श्यामल कुंलावली
विभूषित स्कवु केवलज्ञान लक्ष्मी सनाथु भव्य लोकास्त्रिमुक्ति[क्ति]मार्गनी देखाउई । साध ससार शधकूप (अशकूप)
प्राणिवर्ग पडता दह हाय । युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ । भगवत श्री मादिनाथ श्री संपतेशो मनोरथ पुरो ॥१॥
वीतराग वांछा समार नमुत्तारिणी । महोभोह विघ्नसनी । दिनकरानुकारिणी । क्षोधाग्नि दावानलोपशामिनीमुक्तिमार्ग
प्रकाशिनी । सर्व जन चित्त सम्मोहकारिणी । प्रागमोदगारिणी वीतराग वाणी ॥२॥

विशेष अतीसय निधान सकलगुणप्रधान मोहांधकारविधेदन भागु त्रिभुवन सकलसंदेह छेदक । अछेय अभेय
प्राणिगण हृदय भेदक अनतानत विज्ञान इसिउ अपनु केवलज्ञान ॥३॥

अन्तिम पाठ—

अयस्त्री गुणा— १ कुलीना २ शीलवती ३ विवेकी ४ दानसीला ५ कीर्तवती ६ विज्ञानवती ७
श्रृणुग्राहणी ८ उपकारिणी ९ कृतज्ञा १० धर्मवती ११ सोत्साहा १२ सभममत्रा १३ बलेससही १४ अनुपतापीनी
१५ सूपाम मधीर १६ जितेन्द्रिया १७ समृद्धा १८ अल्पाहारा १९ अलडोला २० अल्पनिद्रा २१ मितभाषिणी
२२ चित्तज्ञा २३ जीतरोपा २४ अलोभा २५ विनयवती २६ गरूपा २७ सौभाग्यवती २८ सूचिवेया २९
श्रुवाभूया ३० प्रमत्तमुखी ३१ सुप्रमाणशरीर ३२ सूलपणवती ३३ स्नेहवती । इति योद्धुणा ।

इति सभाशृङ्गार सपूर्ण ॥

प्रथाग्रथ सख्या १००० सषत् १७३१ वर्षमास कार्तिक सुदी १४ वार सोमवारे, लिखत रूपविजयेन ॥

स्त्री पुरुषो के विभिन्न लक्षण, कलामो के लक्षण एव सुभाषित के रूप मे विविध बातें दी हुई है ।

३५२६ सभाशृङ्गार । पत्र स० २८ । आ० १०×४३ इच्छा भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित ।
२० काल × । ले० काल स० १७३२ । पूर्ण । वे० स० ७६४१ ऋ भण्डार ।

३५२७ सवोधसत्ताणु—वीरचद् । पत्र स० ११ । आ० १०×४ इव । भाषा-हिन्दी । विषय-
सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७५६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ—

परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार नोकार ।

परमारथ परि पवणस्थु, सवोधसत्ताणु वीसार ॥१॥

मादि भनादि ते आत्मा, अठवळु ऐहभनिवार ।

धर्म विहणो जीवणो, वापडु पड्यो ये संसार ॥२॥

अन्तिम—

सूरी श्री विद्यानदी ज्यो श्रीमहोपाध्याय मुनिचद ।

तसपरि माहि मानिलो, गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ॥ ६६ ॥

तब मुझे वनस दीव्यवस्ती मकली गयी थीरबंद ।

मुसुता मफता वृ. वाचना पीनीये परमापन्न ॥१७॥

इति श्री थीरबंद विरचिते बंधोपततत्राङ्गुपा लंपूर्ण ।

१११८. सिन्धूरप्रकरक—सामप्रभाचार्य । पत्र सं १ । भा २ ५४ दण । भाषा—हिन्दी । विषय—

मुमर्षित । र. काल × । के काल × । पूर्ण । पीर । के सं २३७ । क मफार ।

विशेष—अति प्राचीन है । सेनसमर के दिव्य नीतिप्रसंग के काल में प्रतिविधि श्री श्री ।

१११९. प्रति सं २ । पत्र सं २ के २७ । के काल सं १६३ । मफार । के सं २६ । क

मफार ।

विशेष—हर्षनीति सुरि हत संस्कृत व्याख्या कहित है ।

धर्मिक—इति सिन्धूर प्रकरणकालेन व्याख्यायां हर्षनीतिः सुरिर्धर्मिहियतात् ।

११२०. प्रति सं ३ । पत्र सं २ के ३४ । के काल सं १५७० । भाषा—हिन्दी । के सं २११ । क मफार ।

क मफार ।

विशेष—हर्षनीति सुरि हत संस्कृत व्याख्या कहित है ।

११२१. सिन्धूरप्रकरकभाषा—बनारसीवास । पत्र सं २१ । भा १ ३५२ । भाषा—हिन्दी ।

विषय—मुमर्षित । र. काल सं ११६१ । के काल सं १२२ । पूर्ण । के सं ५२६ ।

विशेष—सदानुष्ठान भाषा में प्रतिविधि श्री श्री ।

११२२. प्रति सं २ । पत्र सं १३ । के काल × । के सं ७१५ । क मफार ।

इसी मफार में १ प्रति (के सं ७१७) थीर है ।

११२३. सिन्धूरप्रकरकभाषा—मुन्दरवास । पत्र सं २७ । भा १ ५४२ दण । भाषा—हिन्दी ।

विषय—मुमर्षित । र. काल सं १६९९ । के काल सं १६९६ । पूर्ण । के सं ७६७ । क मफार ।

११२४. प्रति सं २ । पत्र सं २ के ३ । के काल सं १६९७ । भाषा—हिन्दी । के सं ५२६ ।

क मफार ।

विशेष—वाचनाय वचनाय के रहने वाले थे । यह थे के मन्त्रवेद के ह वासतिपुर में रहने लगे थे ।

इसी मफार में १ प्रति (के सं ७६८ ५२४ २७) थीर है ।

११२५. सुसुसुसुसुसु—मिन्नास गांधी । पत्र सं ४ । भा १ २५२ दण । भाषा—हिन्दी । पत्र ।

विषय—मुमर्षित । र. काल सं १५२२ । पत्र मुदी ५ । के काल सं १६९७ । भाषा—हिन्दी । के सं ५२६ ।

क मफार ।

सुभाषित एव नीतिशास्त्र]

३५३६ सुभाषितमुक्तावली । पत्र स० २६ । आ० ६×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६७ । अ मण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नमन्दाह—आ० अमितिगति । पत्र स० ५४ । आ० १०×३^३/_४ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल स० १०५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० २६) भी है ।

३५३८ प्रति स० २ । पत्र स० ५४ । ले० काल स० १८२६ भादवा सुदी १ । वे० स० ८२१ । क

मण्डार ।

विशेष—नगमपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३९ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ से ४६ । ले० काल स० १८६२ रामोज बुदी १४ । अपूर्ण । वे०

स० ८७६ । ड मण्डार ।

३५४० प्रति स० ४ । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १६१० कार्तिक बुदी १३ । वे० स० ४२० । च

मण्डार ।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पाठ्या नाथूलाल ने पार्श्वनाथ मंदिर में प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१ सुभाषितरत्नमन्दोद्भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १८८ । आ० १२^३/_४×७ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित । २० काल स० १६३३ । ले० काल × । वे० स० ८१८ । क मण्डार ।

विशेष—पहले मोतीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी मण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ८१६, ८२०, ८१६, ८१६) भी हैं ।

३५४२ सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र । पत्र स० ३८ । आ० १२×५^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १७८७ माह बुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २१ । ब मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ मण्डार में १ प्रति (वे० स० १६७९) भी है ।

३५४३ प्रति स० ७ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० २३१ । ख मण्डार ।

इसी मण्डार में २ प्रतिया (वे० स० २३०, २६८) भी हैं ।

३५४४ सुभाषितसमृद्ध । पत्र स० ३१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल स० १८४३ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २१०२ । अ मण्डार ।

विशेष—नैणवा नगर में मट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य विद्वान् रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

सुभाषित एव नीतिशास्त्र]

३५५३ प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६४७ माघ सुदी । वे० स० २३५ । अ

भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्त । श्रीमच्छ्रीपद्मनागरमूरिविजयराज्ये सवत्
१६४७ वर्ष माघमासे शुक्लपक्षे शुक्लासरे लोपोक्त श्रीगुनि शुभमस्तु । लेखक पाठकयो ।

सवत्सरे पृथ्वीमुनीयतान्द्रमिते (१७७७) माघाशितदशम्या भालपुरेमध्ये श्रीमादिनायचैत्यानये शुद्धी-
कृतोऽय सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पाठेध्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचन्द्रेण ।

अ भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) मौर है ।

३५५४ प्रति स० ५ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६३६ । वे० स० ८१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ८१४) मौर है ।

३५५५ प्रति स० ६ । पत्र ० २६ । ले० काल स० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० स० २३३ । ख भण्डार

विशेष—प० भाणकचन्द की प्रेरणा से प० स्वरूपचन्द ने प० कपूरचन्द मे जवनपुर (जोवनेर) मे
प्रतिलिपि कराई ।

३५५६ प्रति स० ७ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० स० ८७४ । छ

भण्डार ।

विशेष—श्री पाल्हा वाक्लीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ५ प्रतिया (वे० स० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८) मौर है ।

३५५७ प्रति स० ८ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १७६५ आसोज सुदी ८ । वे० स० २६५ । छ

भण्डार ।

३५५८ प्रति स० ९ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १६०४ माघ सुदी ४ । वे० स० ११४ । ज

भण्डार ।

३५५९ प्रति स० १० । पत्र स० ३ से ३० । ले० काल स० १६३५ वैशाख सुदी १५ । अपूर्ण । वे०
स० २१३४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्र नहीं हैं । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३५६० सुभाषितावली । पत्र स० २१ । भा० ११३×५३ इञ्च । माया—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १८१८ । पूर्ण । वे० स० ४१७ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ दीवान सगही जानचन्दजी का है ।

य मन्थार में २ प्रतिमां (के सं ४१०-४१२) का मन्थार में २ अपूर्ण प्रतिमां (के सं २१२, २२१) तथा ८ मन्थार १ (के सं १-१) अपूर्ण प्रतिमां थीं ।

३२६१ सुभाषितावलीभाषा—पद्माकाश चौधरी । पृष्ठ सं १६ । या १२३×२२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । रं काल × । से काल × । पुरालं के सं ५२२ । क मन्थार ।

३२६२ सुभाषितावलीभाषा—दुर्गीचन्द्र । पृष्ठ सं १३२ । या १२३×२२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । रं काल सं १६३१ वरिष्ठ पुरी १ । से काल × । पुरालं के सं ५ । क मन्थार ।

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ५५२) थीर है ।

३२६३ सुभाषितावलीभाषा— । पृष्ठ सं ४२ । या ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । रं काल × । से काल सं १२३५ यापत्र पुरी २ । पुरालं के सं ११ । क मन्थार ।

विशेष—२२ पौष्ठे हैं ।

३२६४ सुक्तिमुक्तमाली—बोमप्रसाधार्थ । पृष्ठ सं १७ । या १२×२३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । रं काल × । से काल × । पुरालं के सं १९९ । क मन्थार ।

विशेष—इसका नाम सुभाषितावली भी है ।

३२६५ प्रति सं २ । पृष्ठ सं १७ । से काल सं १९५४ । के सं ११७ । क मन्थार ।

विशेष—अवसित शिल्प प्रकर है—

संख्या १९५४ वर्षे श्रीकाष्ठान्तरे महीछरनको विद्यालये य श्रीरामचैतन्यने ज्येष्ठ म श्री विश्वदुपय ज्येष्ठ म श्री मन्मथीति ब्रह्म श्रीवैद्यराज ज्येष्ठमन्त्र श्री कालेश्वरी स्वयम्भू हरीच शिल्पि पठनार्थ ।

य मन्थार में ११ प्रतिमां (के सं १९२, १९४, १९५, २१, ४६१, १७२, २१, २, ४७, १९४, २, १३, १९६९) थीर हैं ।

३२६६ प्रति सं ३ । पृष्ठ सं २२ । से काल सं १९५४ यापत्र पुरी । के सं २२ । क मन्थार ।

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ५२४) थीर है ।

३२६७ प्रवि सं ४ । पृष्ठ सं १ । से काल सं १७७१ यापत्र पुरी २ । के सं २९४ । क विशेष—अनुभाषी शैली पठनार्थ माधपुर में प्रतिनिधि हुई थी ।

३२६८ प्रति सं ५ । पृष्ठ सं २४ । से काल × । के सं २२९ । क मन्थार ।

विशेष—श्रीराम यापत्राज्य शिल्पिका के पुत्र कुंवर बल्लभराज के पठनार्थ प्रतिनिधि की गई थी । अन्तर में एक कुंवर है ।

इसी मन्थार में २ अपूर्ण प्रतिमां (के सं २३२, २६५) थीर हैं ।

३५६६ प्रति स० ६ । पत्र स० २ मे २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

छ भण्डार मे ३ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ८८३, ८८४, ८८५) भीर हैं ।

३५७० प्रति स० ७ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १६०१ प्र० श्रावण सुदी ३३ । वे० स० ४२१ ।

च भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ४२२, ४२३) भीर हैं ।

३५७१ प्रति स० ८ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १७४६ भाद्रपद सुदी ६ । वे० स० १०३ । छ

भण्डार ।

विशेष—रत्नवाल मे ऋषभनाथ चैत्यालय मे आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे (वे० स० १०३) में ही ४ प्रतिया भीर हैं ।

३५७२ प्रति स० ९ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६२ पौष सुदी २ । वे० स० १८३ । छ

भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३६) भीर है ।

३५७३ प्रति स० १० । पत्र स० १० । ले० काल स० १७६७ भाद्रपद सुदी ८ । वे० स० ८० । छ

भण्डार ।

विशेष—आचार्य क्षेमकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १६५, २८६, ३७७) तथा छ भण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० १६६४, १६३१) भीर हैं ।

३५७४ सूक्तवली । पत्र स० ९ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वे० स० ३४७ । अ भण्डार ।

३५७५ भृकुटश्लोकमगद । पत्र स० १० से २० । भा० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल स० १८८३ । अपूर्ण । वे० स० २५७ । छ भण्डार ।

३५७६ स्वरोदय—रत्नजीतवास (चरनदास) । पत्र स० २ । भा० १३ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८१५ । अ भण्डार ।

३५७७ हितोपदेश—विष्णुशर्मा । पत्र स० ३६ । भा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । २० काल × । ले० काल स० १८७३ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ८५४ । क भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द ने कुमार ज्ञानचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३४८८. प्रति स० २। वन वं २। मे कल ×। वे वं २४६। अ नम्बार।

३४८९. विद्योपदेशमाप्य ---। वन वं २९। पा ×३ वन। अला-हिन्दी। विषय-मुद्रप्रति।

१ कल ×। मे कल ×। वृत्ती। वे वं २९९९। अ नम्बार।

३४८०. प्रति स० २। वन वं ४९। मे कल ×। वे वं १ ६२। अ नम्बार।



विषय-मन्त्र-शास्त्र



३५८१ इन्द्रजाल । पत्र स० २ से ४२ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-तन्त्र । २० काल × । ले० काल स० १७७८ वैशाख सुदी ६ । अपूर्णा । वै० स० २०१० । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १६ पर पुष्पिका—

इति श्री राजाधिराज गोख नाथ यश केसरीसिंह सहाहितेन मनि मदन मिश्र विरचितेन पुरंदरमाया नाम ग्रंथ बद्धित स्वामिका का माया ।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल समाप्त ।

कई नुपक्वे तथा वशीकरण आदि भी हैं । कई कौतूहल की सी बातें हैं । मंत्र तस्मृत म है अजमेर में प्र तलिवि हुई थी ।

३५८२ कर्मवहनव्रतमन्त्र । पत्र स० १० । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र धाम्प्य । १० काल × । ले० काल म० १६३४ भाद्रमा सुदी ६ । पूर्णा । वै० स० १०४ । छ भण्डार ।

३५८३ क्षेत्रपालस्तोत्र । पत्र स० ८ । आ० ८३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६०६ मगसिर सुदी ७ । पूर्णा । वै० स० ११३७ । अ भण्डार ।

विशेष—सरस्वती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुआ है ।

३५८४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वै० स० ३८ । ग भण्डार ।

३५८५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६६६ । वै० स० २८२ । झ भण्डार ।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है ।

३५८६ घटाकर्णकल्प । पत्र स० ५ । आ० १२३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६२२ । अपूर्णा । वै० स० ४५ । ग भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है । ५ यत्र तथा एक घटा चित्र भी है । जिसमें तीन घण्टे दिये हुये हैं ।

३५८७ घटाकर्णमन्त्र । पत्र स० ५ । आ० १२३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६२५ । पूर्णा । वै० स० ३०३ । ख भण्डार ।

३२८८. चंडाकार्यविष्णुसोत्रम्—। पत्र सं २। या १३×३३ द.व। बाया-हिमो। विप-मन्त्र
 पत्र सं १। ने पत्र सं १२१३ बीयात्त गुरी २। पूर्ण। ने सं १२। अ मन्त्रार।

३२८९. चतुर्विंशविष्णुविधानम्—। पत्र सं ३। या १२३×३३ द.व। बाया-उत्तर। विप-
 मन्त्रात्म। २ पत्र ×। ने पत्र ×। पूर्ण। ने सं १२६। अ मन्त्रार।

३२९०. चिन्तायाम्बुसोत्रम्—। पत्र सं २। या २×६ द.व। बाया-उत्तर। विप-मन्त्र
 पत्र सं १। ने पत्र ×। पूर्ण। ने सं १२७। अ मन्त्रार।

विशेष—बर्हस्पति स्तोत्र भी चिन्ता हुआ है।

३२९१. प्रति सं ३। पत्र सं २। ने पत्र ×। ने सं १२८। अ मन्त्रार।

३२९२. चिन्तायाम्बुसोत्रम्—। पत्र सं ३। या १×२ द.व। बाया-उत्तर। विप-मन्त्र
 २ पत्र ×। ने पत्र ×। पूर्ण। ने सं १२९। अ मन्त्रार।

३२९३. चौसठयोगिनीस्तोत्रम्—। पत्र सं १। या ११×३३ द.व। बाया-उत्तर। विप-
 मन्त्रात्म। २ पत्र ×। ने पत्र ×। पूर्ण। ने सं १३०। अ मन्त्रार।

विशेष—इसी मन्त्रार में ३ प्रतिष्ठा (ने सं ११२७ ११२८, ११२९) भी हैं।

३२९४. प्रति सं ३। पत्र सं १। ने पत्र सं १३१। ने सं १३२। अ मन्त्रार।

३२९५. औसाधप्रदीपमन्त्रविधानम्—। पत्र सं २। या ११×३३ द.व। बाया-उत्तर। विप-
 मन्त्र। २ पत्र ×। ने पत्र ×। पूर्ण। ने सं १३३। अ मन्त्रार।

३२९६. द्यौमकारकम्—। पत्र सं ४। या ५×६ द.व। बाया-उत्तर। विप-मन्त्रात्म।
 २ पत्र ×। ने पत्र सं १३४। पूर्ण। ने सं १३५। अ मन्त्रार।

३२९७. द्यौमकारकम्—। पत्र सं १। या ११३×३ द.व। बाया-उत्तर। विप-मन्त्र
 मन्त्र। २ पत्र ×। ने पत्र सं १३६। पूर्ण। ने सं १३७। अ मन्त्रार।

३२९८. प्रति सं २। पत्र सं २। ने पत्र ×। पूर्ण। ने सं १३८। अ मन्त्रार।

३२९९. प्रति सं ३। पत्र सं ३। ने पत्र सं १३९। ने सं १४०। अ मन्त्रार।

विशेष—हिमो में मन्त्रात्म भी विधि एवं मन्त्र दिया हुआ है।

३३००. द्यौमकार्यैहीसी—। पत्र सं ४। या १२×३३ द.व। बाया-उत्तर व गुरमी हिमो।
 विप-मन्त्रात्म। २ पत्र ×। ने पत्र ×। पूर्ण। ने सं १४१। अ मन्त्रार।

३३०१. प्रति सं २। पत्र सं ३। ने पत्र ×। ने सं १४२। अ मन्त्रार।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिद्धान्ति । पत्र स० ४५ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वे० स० १६० । अ भण्डार ।

३६०३ नवकारकल्प । पत्र स० ६ । आ० ६×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रक्षरो की स्याही मिट जाने से पढ़ने में नहीं आता है ।

३६०४ पचदश (१५) यन्त्र की विधि । पत्र स० २ । आ० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १६७६ फागुण सुदी १ । पूर्ण । वे० स० २४ । ज भण्डार ।

३६०५ पद्मावतीकल्प । पत्र स० २ ने १० । आ० ८×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । १० काल × । ले० काल स० १६८२ । अपूर्ण । वे० स० १३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— सप्त १६८२ आमादेर्गलपुरे श्री मूलसप्तधूरि देवेन्द्रकीर्तिस्तद्वत्तेवासिभिराचार्य श्री हर्षकीर्तिभिरिदमलेखि । चिर नदतु पुस्तकम् ।

३६०६ वाजकोश । पत्र स० ६ । आ० १२×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—संग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मातृका निर्घट भी है ।

३६०७ सुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्य । पत्र स० ६ । आ० ६३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६७ । च भण्डार ।

३६०८ भूवल । पत्र स० ८ । आ० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६८ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पक्ष में 'अयात सप्रवश्यामि भूवलानि समासत ' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है ।

३६०९ भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिपेण सूरि । पत्र स० २४ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५० । अ भण्डार ।

विशेष—३७ यंत्र एवं विधि सहित हैं ।

इसी भण्डार में २ प्रतिमां (वे० स० ३२२, १२७६) भी हैं ।

३६१० प्रति स० २ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १७६३ वैशाख सुदी १३ । वे० स० ५६५ । क भण्डार ।

विषय—प्रति कृषिपट्ट है ।

इसी आधार से १ प्रमुखी मन्त्रिण प्रति (वे नं २६५) जारी है।

३६१७ प्रति सं ३ । वन सं ४३ । नि वन ४ । नि सं ३७३ । अ नगर ।

३६१२. प्रवि स ४। पन नं २। जे काज नं १५६८ बीत मुदी—। वे नं २६१। प

अथवा ।

बिन्दु—इसी प्रकार के १ प्रति संवत् टीना लक्षित (के ४ २०) धीरे है ।

३६३३ प्रवि. स. २। वष. १३। वे. वाल. X। वे. नं. १५३६। ह. मन्थार।

विमेष—बीजाभरो से वह बन्धो के बिना है। यथाविधि ठहरा संशो बहिरु है। संसार दोषा मो है।

[illegible]

३६१४ प्रवि.स. ६। पत्र.सं. ४७ से ५७। ले. पत्र.सं. १। १७ न्ये.स. पृ. २। पार्श्व. ३। स.

१११७ । ४ ज्योतिष ।

विशेष—सवाई मन्पुर में श्री श्रीराम के विष्णु मूर्ताराम ने प्रतिमिति की थी ।

इसी प्रकार से एक प्रति धर्मार्थ (१५५८) कीर ।

३९१५. भैरवपद्यावलीविषय । पृष्ठ सं ४ । छा ३५४ इ.व । वाया संस्कृत । विषय-अज्ञ

आम्र १८ काल × १८ काल × १८ काल । वै. सं. १७४ । ड. कम्पाट ।

३९१६ मन्त्रपुत्रः । पृथक् । भा. ४३. ३५. ब्रह्मा-विष्णु । विष्णु-नारायण । १

काल $\times 1$ से काल $\times 1$ पूर्ण होते में २११। अन्तर।

विशेष—मिथुन मन्त्रो का संज्ञा है ।

१. नीची वाङ्मयसूची में १ नामस्य विधि १ योग ४ अनुमान संव १२, दिग्बो का मन्त्र १ पत्नीता
कृत व पुत्रिक का ७ संव वेदव्या का अनुमान का मन्त्र १२, अर्थात्तर मन्त्र तथा मन्त्र १ अर्थात्तर दिग्बो मन्त्र
(चारो कोषो पर दीर्घानुसंध का नाम दिया हुआ है) ११ कृत कविनी वा मन्त्र ।

१६१७. अम्बुशाला..... पत्र सं १० से १७ । भा २३×२३ इंच । माया-बैलुठ । विषय-लक्ष

बाल्य । २ कल × । नि कल × । जगुर्त्तु नि ३ ४ । क जगुर्त्तु ।

विशेष—इसी मण्डार में ही ब्रह्मिणी (पं सं २२, २६) पाए हैं ।

३६१८. मन्त्रमहोदधि—प० महीधर । पत्र स० १२० । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १८३८ माघ सुदी २ । पूर्ण । वै० स० ६१६ । अ मण्डार ।

३६१९ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वै० स० ५८३ । छ मण्डार ।

विशेष—अन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है ।

३६२० मन्त्रसग्रह । पत्र स० फुटकर । आ० । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५८८ । क मण्डार ।

विशेष—करीब ११५ यन्त्रों के चित्र हैं । प्रतिष्ठा आदि विधानों में काम आने वाले चित्र हैं ।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का सग्रह) ~ । पत्र स० २० । आ० ११३×५ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ७९ । घ मण्डार ।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है ।

३६२२ यज्ञिणीकल्प । पत्र स० १ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—मन्त्र

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६०५ । छ मण्डार ।

३६२३ यत्र मन्त्रयिफल । पत्र स० १५ । आ० ६३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—मन्त्र

ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १६६६ । ट मण्डार ।

विशेष—६२ यत्र मन्त्र सहित दिये हुये हैं । कुछ यन्त्रों के खाली चित्र दिये हुये हैं । मन्त्र बीजाक्षरों में हैं ।

३६२४ वर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक । पत्र स० ६ से २६ । आ० १०३×४ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल स० १४९५ । अपूर्ण । वै० स० १९९७ । ट मण्डार ।

विशेष—१ से ५, ७, १०, १५, १६, १९ से २१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन एवं जोर्रा है ।

नवें पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगणमृच्छिष्य श्रीसिंहतिलकसूरि रिमासाह्लाददेवतोन्मूलविशदमनालिखत
वाक्कल्प ॥९६॥ इति श्रीसिंहतिलक सूरिकृते वर्द्धमानविद्याकल्प ॥

हिन्दी गद्य उदाहरण— पत्र ८ पक्ति ५—

जाइ पुण्य सहस्र १२ जाग । शूल गड बीस सहस्र ॥१२॥ होम कीजइ विद्यालाभ हुई ।

पत्र ८ पक्ति ९— ओ कुरु कुरु कामाख्यादेवी, कामरूप आजीव २ । जग मन मोहनी सूती बड़ी उठी
जगमण हाथ जोड़िकरि साम्नी भावइ । माहरी भक्ति गुरु की शक्ति वायदेवी कामाख्या माहरी शक्ति आकषि ।

पृष्ठ २४— अन्तिम पुष्पिका— इति वर्द्धमानविद्याकल्पस्तृतीयाधिकार ॥ ग्रंथान्त्य १७५ अक्षर १६
स० १४९५ वर्षे सगरकूपशालाया अणिहल्लपाटकपरपर्याये श्रीरत्तनमहानगरेऽप्लेखि ।

। २२—दुष्टियों के बन्धन हैं। पी लीन हैं। पत्र २६ पर नाविकर बना दिया है।

३६२२ विद्याभवनविद्यालय—। पत्र ७। या १२५२ द. प। नावा—नंदपुर। विद्या—बन
पात्र १२ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। के ल १५ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (के ल २६५ ३६२) तथा क मन्थार में १ प्रति (के ल
३३१) मौद है।

३६२३ विद्याभवनविद्यालय—। पत्र ७। या १२५२ द. प। नावा—नंदपुर। १२ कल ×।
मे कल ल १६ ६३ नावा कुटी २। पूर्ण। के ल ३६२। क मन्थार।

विशेष—यह ग्रन्थ-विषय ग्रन्थ की है। यह ग्रन्थ कोटीनामजी कोटिवा के पन्नाई व कोटीनामजी के
हाथ हीपाल कललीपाल के शिल्पिनि करार है। पट्टिपत्रिका दशा—) नावा।

३६२४ प्रति संक १। पत्र ७। या १२५२ द. प। कल ल १६६२ वीरवर कुटी २। के ल ३३। क
मन्थार।

विशेष—यह ग्रन्थ बाइबल में शिल्पिनि की की।

३६२५ विद्याभवनविद्यालय—। पत्र ७। या १२५२ द. प। नावा—नंदपुर। विद्या—बन
१२ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। के ल ३६२। क मन्थार।

विशेष—यह ग्रन्थ ३३ कपी का संग्रह है।

३६२६ विद्याभवनविद्यालय—। पत्र ७। या १२५२ द. प। नावा—नंदपुर। विद्या—बन
१२ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। के ल २१ १। क मन्थार।

विशेष—यह ग्रन्थ का ग्रन्थ है।

३६२७ विद्याभवनविद्यालय—। पत्र ७। या १२५२ द. प। नावा—नंदपुर। विद्या—बन
१२ कल ×। मे कल ×। पूर्ण। के ल ७७०। क मन्थार।



विषय-कामशास्त्र

३६३१ कोकशास्त्र - । पत्र स० ६ । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोक । २०

काल × । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । वे० स० १६५६ । ट मण्डार ।

विशेष—निम्न विषयो का वर्णन है ।

द्रावणविधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण, स्थूलीकरण, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिस्मृतिविधि आदि ।

३६३२ कोकसार । पत्र स० ७ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२६ । ड मण्डार ।

३६३३ कोकसार—आनन्द । पत्र स० ५ । आ० १३३×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८१६ । झ मण्डार ।

३६३४ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६ । ख मण्डार ।

३६३५ प्रति स० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वे० स० २६४ । म मण्डार ।

३६३६ प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १७३६ प्र० चैत्र सुदी ५ । वे० स० १५५२ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जट्ट व्यास ने नरामय्या में प्रतिलिपि की थी ।

३६३७ कामसूत्र—कश्चिहाल । पत्र स० ३२ । आ० १०३×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-कामशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०५ । ख मण्डार ।

विशेष—इसमें कामसूत्र की गायों दी हुई हैं । इसका दूसरा नाम सतसप्तसप्त भी है ।



विषय- शिष्य शास्त्र



३३२८ विष्णुनिर्वाणविधि-----। पृष्ठ सं ५। भा २१३×०३३ इंच। माता-हिन्दी। विषय-विष्णु

शास्त्र। २ कल ×। ने कल ×। पृष्ठ सं ३३३। क मन्थार।

३३३६ विष्णुनिर्वाणविधि-----। पृष्ठ सं ५। भा २२×०३३ इंच। माता-हिन्दी। विषय-विष्णु

शास्त्र। २ कल ×। ने कल ×। पृष्ठ सं ३३४। क मन्थार।

३३४० विष्णुनिर्वाणविधि-----। पृष्ठ सं ५५। भा २३×०३३ इंच। माता-संस्कृत। विषय-

विष्णुशास्त्र [प्रतिष्ठा] २ कल ×। ने कल ×। पृष्ठ सं ३४०। क मन्थार।

विषय-माता शास्त्र है। पं कसुरवर्माजी बाबू द्वारा लिखित हिन्दी वर्ण वर्णित है। शास्त्र में ३ वेद

की प्रशंसा है। पृष्ठ १ के २२ तक प्रतिष्ठा वस्तु के क्लोनों का हिन्दी अनुवाद दिया गया है। श्लोक ६१ है। पृष्ठ २५ के ३५ तक विष्णु निर्वाणविधि नामा की गई है। इसी के साथ १ प्रतिमासी के विधि भी दिये गये हैं। (पृष्ठ सं २४६) क मन्थार। कलदादीनन्द विधि भी है। (पृष्ठ सं २४८) क मन्थार।

३३४१ वास्तुविम्बास-----। पृष्ठ सं ३। भा २३×०३३ इंच। माता-संस्कृत। विषय-विष्णुशास्त्र।

२० कल ×। ने कल ×। पृष्ठ सं ३४२। क मन्थार।



विषय- लक्षणा एवं समीक्षा

३६४२ आगमपरीक्षा— पत्र सं० ३ । भा० ७×३३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—समीक्षा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट मण्डार ।

३६४३ छद्मदर्शरोमणि—शोभनाथ । पत्र सं० ३१ । भा० १×६ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—

लक्षण । २० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी । ले० काल सं० १८२६ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १९३६ । ट मण्डार ।

३६४४ छद्मकीय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ९ । भा० १२×६३ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—लक्षण ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१४ । ट मण्डार ।

अन्तिम पुष्पिका— इति श्री छद्मकीयकवित्ते कामधेन्वाख्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्तिविरचिते समवृतप्रकरणे समाप्त । प्रारम्भ मे कमलवध कवित्त मे चित्र दिये हैं ।

३६४५ धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । भा० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत

हिन्दी गद्य । विषय—समीक्षा । २० काल सं० १७१८ । ले० काल सं० १७५७ । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत मे मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है । टीकाकार का परिचय—

साहु श्री हेमराज सुत मान हमीरदे जाणि ।

कुल निगोत थावक धर्म दशरथ तन वखाणि ॥

सवत सतरासै सही अष्टादश अधिकाय ।

फागुण तम एकादशी पूरण भई सुभाय ॥

धर्म परीक्षा वचनिका सुवरदास सहाय ।

साधर्मि जन समझि नै दशरथ कृति चितलाय ॥

टीका— विषया की वसि पढ्या क्रियण जीव पाप ।

करै छै सह्यो न जाई ती ये दुखी होइ मरे ॥

लेखक प्रशस्ति— सवत् १७५७ वर्षे पीप शुक्ला १२ भृगुवारि विजया नगर्या (दीसा) जिल चौमालये लि० भट्टारक-
श्रीनरेन्द्रकीर्ति तत्वशिष्य प० (सिग्धर) कटा हुआ ।

३६५६ धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास सोनी । पत्र सं० १०० । भा० १०१×८३ इ च । भाषा—
हिन्दी पद्य । विषय—समीक्षा । २० काल १७०० । ले० काल म० १८०१ काष्ठण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ७७३ ।
अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति अपूर्ण (वे० सं० ११६६) भी है ।

३६५७ प्रति सं० २ । पत्र न० १११ । ले० काल म० १६५४ । वे० सं० ३३६ । क भण्डार ।

३६५८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११४ । ले० काल सं० १८२६ भाषाठ सुदी ६ । वे० सं० ५६५ । च

भण्डार ।

विशेष—हमराज ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र चिपके हुये हैं ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५६६) भी है ।

३६५९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६३ । ले० काल सं० १८३० । वे० सं० ३४५ । क भण्डार ।

विशेष—वेद्यरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३६) भी है ।

३६६० प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०३ । ले० काल म० १८२५ । वे० सं० ५२ । च भण्डार ।

विशेष—बलतराम गोपा ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३१४) भी है ।

३६६१ धर्मपरीक्षाभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३८६ । भा० ११×५३ इ च । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—समीक्षा । २० काल सं० १६३२ । ले० काल सं० १६४२ । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । क भण्डार ।

३६६२ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२२ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ३३७ । क भण्डार ।

३६६३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५० । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ३३४ । ड भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ३३३, ३३५) भी हैं ।

३६६४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६२ । ले० काल × । वे० सं० १७०७ । ट भण्डार ।

३६६५ धर्मपरीक्षाभाषा—ब्र० जिनदास । पत्र सं० १८ । भा० ११×४३ इ च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—समीक्षा । २० काल × । ले० काल सं० १६०२ काष्ठण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ६७३ । अ भण्डार ।

विशेष—१६ व १७वा पत्र नहीं है । अन्तिम १८वें पृष्ठ पर जीरावलि स्तोत्र है ।

आदिभाग—

धर्म जिरामर २ नमू ते सार,

तीर्थकर जे पनरमु वाछित फल बढ़ दान दातार,

सारदा स्वामिणि चली तबु बुधिसार,

मुष्ट वैजयन्ता भीमसुखर स्नावी नयनकर्कशी सक्कलीति भवतार,
मुनि जगज्जीति शम्भु श्रुतमि कश्चिन् रत्नार्द्रं वार ॥१॥

इहा—

वरय पटीका नर्क निरुपनी करीकण मुणु तर्ह्युधार ।
व्या निरुपन कश्चि निरुपु निव कोरु निवार ॥१॥
कनक एतम मायिक मायि पटीका करी बीनितार ।
रिय वरय पटीवीह कय बीनि जगदार ॥१॥

मण्डिम प्रसस्ति—

इहा—

बी ककलीरुपिमुपसुधीनि मुनिजगज्जीरुपिक्कदार ।
व्या निरुपन कश्चि यमु एतवीह करिवार ॥१॥
वरयपटीकाएतनिरुपु वरयतु निवत ।
पडि मुष्टि के कोरनि वेहनि करि पडि जग ॥१॥
इति वर्णपटीका रत्न समता

संस्क ११ १ नवै चक्रुत मुष्टी ११ दिने सुपुन्यले श्री बीनववाव बीनवने जावर्न श्री विजयगीति
श्रिय वैजयन्तेन सिद्धि लवविर् ।

११११ वर्णपटीकाभाषा—। वन र् १ से २ । या ११×४ इव । माता-हिन्दी । विषय-
समीक्षा । र । कल × । से कल × । पुर्ण । से र् १११ । क नम्बार ।

१११२ मुर्कके कक्षय—। वन र् २ । या ११×४ इव । भाषा-उत्तर । विषय-नक्षत्रम् ।
र । कल × । से कल × । पुर्ण । से र् ११२ । क नम्बार ।

१११३ रत्नपटीका—उपसन्नि । वन र् १० । या ११×४ इव । माता-हिन्दी । विषय-नक्षत्र
म् । र । कल × । से कल × । पुर्ण । से र् ११ । क नम्बार ।

विषय—एतदुपे में प्रसिद्धि हुई थी ।

आरम्भ—

इह नक्षत्रि करुणति धनदि मर्त वन है मुष्टि ।
करुणमुष्टि कोरु रवी एत पटीका मुनि ॥१॥
एत बीनिषा कय के एत परिष्कृता जग ।
जुव वैव पटारा र् १ माता मर्तो मायि ॥१॥
एत पटीका एतु नीनी राव वरिष ।
एतदुपे में प्रसिद्धि है हिन्दी मु माताजीव ॥११॥

अन्तिम—

लक्षण एवं समीक्षा]

३६६६ रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट । पत्र सं० १२ । मा० ११×५ इंच । भाषा-

संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५३ । ट मण्डार ।

विशेष—१२ से भागे पत्र नहीं ह ।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र । पत्र सं० १७ । मा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल म० १८२७ पीप मुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६४१ । अ मण्डार ।

३६७१. प्रति सं० २ । पत्र म० ३७ । ले० काल सं० १६३५ मासोज मुदी १३ । वे० सं० २३६ । ज मण्डार ।

३६७२ वक्ताश्रोतालक्षण । पत्र सं० ६ । मा० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षण ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । क मण्डार ।

३६७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६४३ । क मण्डार ।

३६७४ वक्ताश्रोतालक्षण । पत्र सं० ८ । मा० १२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षण ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४४ । क मण्डार ।

३६७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६४५ । क मण्डार ।

३६७६ शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २४ । मा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षण ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ मण्डार ।

३६७७ शृङ्गारतिलक—कालिदास । पत्र सं० २ । मा० १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वे० सं० ११४१ । अ मण्डार ।

इति श्री कालिदास कृती शृङ्गारतिलक संपूर्णम्

प्रशस्ति— संवत्सरे सप्तत्रिकवर्षेदु मिते असाढसुखी १३ त्रयोदश्यां पङ्क्तिजी श्री हीरानन्दजी तस्त्रिष्य पङ्क्तिजी श्री चोक्षचन्द्रजी तस्त्रिष्य पङ्क्ति विनयवताजिनदासेन लिपीकृत । भुरामलजी या आका ॥

३६७८ स्त्रीलक्षण । पत्र म० ४ । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८१ । अ मण्डार ।



विषय- कागु रासा एवं वेति साहित्य

३६५१. अङ्गुलारास—रासिकुलारास । पत्र सं १२ से २७ : या १ × ४ ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । १ काल सं १९९७ मङ्गल गुरु २ : से काल सं १९७९ : शुक्र । वे सं २ । छ मप्यार ।

विशेष—अतिशय प्रशस्ति निम्न मप्यार है—

रस रसु लीं अङ्गुला यह कुली बरवाई होई ॥
 अलिङ्गु उल्लं ये कस कुल निम्ना लीप्य होई ॥
 लंवा लोलइ अलिङ्गु लीं बाजा सुनि गी वीण कसलु ॥
 लोलव निरिराल माखीउ यह लोलइ पुन मङ्गु ॥
 ली मङ्ग माङ्ग कुल निम्न निम्न वेन सुटी लरपावइ ॥
 माङ्गलिक लहिवा कली निम्न वेन सुटी लरपावइ ॥
 लोल लरपावइ लीप्यु लल लहिवा कीरति लरिउ ॥
 लोल लेनवे लरि लरवा वेन कइ पाठ्यो लरपावइ ॥
 निम्नलुल ललिउ लर लरपावइ कुललरिउ ॥
 लरल लमल लीं लली ललिपुल लल लल लरिउ ॥
 ललिपुललीरि ललिवा ला ललि लल लीउ लल लल ॥
 लली कुली ल लीलल ललि ललिनी लल लर लल ॥

३६५२. अङ्गुलारास—अङ्गुलारास । पत्र सं ४ : या ११ × २ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

कथा (कथन अङ्गुलारास कथन है) । १ काल × १ से काल सं १९९२ मङ्गल गुरु १ : शुक्र । वे सं ४ । छ मप्यार ।

विशेष—श्री कृष्णजी अङ्गुलारास लीं लललल ललिवा लली ललललली ललललली ललिउ ।

३६५३ अलिङ्गु लीं २ । पत्र सं ११ से २ : से काल × १ से सं ७९ । छ मप्यार ।

३६५४. अङ्गुलारास—अङ्गुलारास । पत्र सं १ : या ११ × २ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । १ काल सं १ : से काल सं १ : शुक्र । वे सं १९९७ । छ मप्यार ।

३६८३ चून्दनबालारास पत्र स० २। घ्रा० ६३×४३ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—नती चन्दनबाला की कथा है। २० काल ×। ने० काल ×। पूर्ण। वे० स० २१६५। अ भण्डार।

३६८४ चन्द्रलेहारास—मत्तिसुशाल। पत्र स० २६। घ्रा० १०×४ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—रासा (चन्द्रलेखा की कथा है) २० काल स० १७२८ ग्रामोज बुदी १०। ले० काल स० १८२६ ग्रामोज बुदी। पूर्ण। वे० स० २१७१। अ भण्डार।

विशेष—अक्षरावाद में प्रतिलिपि की गयी थी। दशा जीर्ण शीर्ण तथा लिपि विकृत एवं अशुद्ध है। प्रारम्भिक २ पद्य पत्र फटा हुआ होने के कारण नहीं लिखे गये हैं।

अन्तिम—

सामाझक सुधा करो, त्रिकरण सुद्ध त्तिकाल।
सद्यु मित्र समतागरिण, तिमतुटै जग जाल ॥३॥
मस्तदेवि भरथादि मुनि, करी समाझक सार।
केवल कमला तिण वरी, पाम्यो भवनो पार ॥४॥
सामाझक मन सुद्ध करी, पामी द्वाम पकत्त।
तिथ ऊपरिन्दु सामलो, चद्रलेहा चरित्र ॥५॥
वचन कला तेह वनिछै, सरसध रसाल।
तीरो जाणु सक्त पडसो, सोमलता खुस्याल ॥६॥
सबत् सिद्धि वर मुनिससी जी वद भासू दसम विचार।
श्री पभीयाव मै प्रेम सु, एह रच्यो अधिकार ॥१२॥
वरतर गणपति सुखकरूजी, श्री जिन सूरिद।
चढवतो जिम साप्पा खमनीजी, जो धू रजनीस दिणद ॥१३॥
सुगुण श्री सुगुणकीरति गणोजी, वाचक पदवी धरत।
अतयवामी चिर गयो जी, मतिवल्लभ महत ॥१४॥
प्रथमत सुसी अति प्रेम स्यु जी, मत्तिकुसल कहै एस।
सामाझक मन सुद्ध करो जी, जीव वए अद्र लेहा जेम ॥१५॥
रतनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम अम्मास।
छसय चौबीस गाहा अछै जी, उगुणतीस ढाल उल्हास ॥१६॥
अरौ गुरो सुरो भावस्यु जी, गरुभातरण गुण जेह।
मन सुध जिनधर्म तैं करै जी, श्री भुवन पति हुवै तेह ॥१७॥
सर्व गाथा ६२४। इति चन्द्रलेहारास सपूर्ण ॥

३६८८. जलगाहाहरास—आममूषण । वन तं २ । पा १ ५४२ इव । भावा-द्विती । विषय-रासा । र वल × । ने वल × । पूर्ण । के तं १६७ । अ मकार ।

विशेष—वन जलने की विधि का वर्णन रास के वप में किया गया है ।

३६८९. पाञ्चाराक्षिमश्रास—विनराजसूरि । वन तं २९ । पा ७५४ इव । भावा-द्विती । विषय-रासा । र वल तं १६७९ अमोय नुरी ९ । ने वल × । पूर्ण । के तं १६४७ । अ मकार ।

विशेष—बुधि इन्द्रविजयसिंह के विरसे मकर में प्रतिमिति की थी ।

३६९०. चर्मरासा— । वन तं २ के २ । पा ११४९ इव । भावा-द्विती । विषय-चर्म । र वल × । ने वल × । पूर्ण । के तं १६४७ । अ मकार ।

विशेष—बहिना, जड़ा तथा ९ के घने के वप करी है ।

३६९१. नवकाररास— । वन तं २ । पा १ ५४२ इव । भावा-द्विती । विषय-सप्तोत्तर मन्त्र महत्त्व वर्तन है । र वल × । ने वल तं १५१२ अमोय नुरी १२ । पूर्ण । के तं ११२ । अ मकार ।

३६९२. नेमिमावरास—विजयशेखसूरि । वन तं १ पा १ ५४२ इव । भावा-द्विती । विषय-रासा (नवराज नेमिमाव का वर्तन है) । र वल × । ने वल तं १ २९ नीच नुरी २ । पूर्ण । के तं १ २९ । अ मकार ।

विशेष—मकर में अग्निवरास के प्रतिमिति की थी ।

३६९३. नेमिमावरास—अपि रामचन्द्र । वन तं ३ । पा १३४९ इव । भावा-द्विती । विषय-रासा । र वल × । ने वल × । पूर्ण । के तं ११४ । अ मकार ।

विशेष—वाचिना-

हुहा— बरिष्ठ विष के बाटपीया उरगवा चलुवार ।

वाधिर वैदुननु महीतार तो वार ॥१॥

बीचवासी बीनु हुवा, रात्रमती रह मैप ।

विनेवठार लीवा बली तामन के वर मैप ॥२॥

बल गिलेनुर बुधिरासा ————— ।

मुनवाटी लोछ देने रात्र नीमन रन मन मीहीनाम ।

दीवती वदरी दुषारवाय ॥३॥

अनुर बिने गिलेनुर मैप देवी राजी करेव ।

बहारमती बानी बली ॥४॥

जाण जन(म)मीया ग्रिहन्त देव इह चोसट सारे ।

ज्यारी तेव मे वाल ग्रहाचारी बावा ममोए ॥३॥

प्रतिम—

मिल ऊपर पत्र ढालियो दीठो दोय सुया मे निचोडरे ।

तिरण समुमार माफक है, रिपि रामच जी कीनो जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री जमाजोरी तत् मीपणी छाटाजोरी चेलाह सतु सोखतु पाली मदे । पाली मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६६१ नेमोश्वरफाग—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र स० ८ मे ७० । भा० ६×४^१ इच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—फागु । २० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० ३८३ । छ भण्डार ।

३६६२ पचेन्द्रियरास । पत्र स० ३ । भा० ६×४^१ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा (पाचो इन्द्रियो के विषय का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५६ । अ भण्डार ।

३६६३ पत्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ५ । भा० ८३×४^३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—गमा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४४३ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्यविधानग्रन्थ का वर्णन है ।

३३६४ बकचूलराम—जयकीर्ति । पत्र स० ४ से १७ । भा० ६×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा (क्या) । २० काल स० १६८५ । ले० काल स० १६६३ फागुण बुदी १३ । प्रपूर्ण । वे० स० २०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं है । ग्रन्थ प्रशस्ति—

कया सुणी बकचूलनी श्रेणिक धरी उल्लास ।

घोरनि वादी भावसु पृहुत राजग्रह वास ॥१॥

सवत सोल पन्नासीइ शूर्जर देस मकार ।

कल्पबल्लीपुर सोमती इन्द्रपुरी धवतार ॥२॥

नरसिंघपुरा वाणिक वसि दया धर्म सुखकद ।

चैर्यालि श्री धूपभवि भावि भवीयण बुद ॥३॥

फागुसघ विद्यागणे श्री सोमकीर्ति मही सोम ।

विजयसेन विजयाकर यशकीर्ति यशस्तोम ॥४॥

उदयमेन महीमोदय त्रिभुवनकीर्ति विख्यात ।

रत्नभूषण गच्छपती हवा भुवनरक्षण जेहजात ॥५॥

तल पाँडू मूरीवरकनु बननीति जवकार ।
 वी भविअण भवि धांमनी ते पायी जवकार ॥१॥
 बरगुमर रलीया मणु बरगुमर बीडु नाय ।
 तेह रल रलु बरगुमर जमरीति गुनवान ॥२॥
 बीय जल निर्वेल कुई पुरबकवे भिर्दार ।
 मोकलता वंदू पति वे भलि नरतिनार ॥३॥
 बरगुमर लल गरीब वर निववान ।
 बननीति कहिहा एउ बरगुमरु रल ॥४॥
 इति बरगुमरु लल ॥

संयुक्त १९६३ का प्रमाण पुनः १३ विभागाएँ जहाँ नवंबर अथवा फी वकीलता प्राप्त करने की आवश्यकता है।

२६६४ समिप्यद्वारास—अष्टादशसप्त। पत्र सं ३६। या १२४। इति। मत्ता रिपि। रिपि-
पत्ता-विरिप्यता की कथा है। री। मत्ता सं १९३९। कातिप मुद्रि १४। री। मत्ता ×। दुर्ल। री। सं १६। मत्ता
मत्ता।

विशेष—सादेर व भी जङ्गलम जैलसम मे भी अद्वारक देखेबरीछि के खिय ब्यापम सोनी मे प्रसिमिपि

३६५७ प्रति भि ३। यत्न १। ने वत्त ४। २०५। ३। २०५। ३। २०५। ३।
विशेष—यं दृष्टव्यम् नै वत्तम् नै प्रतिष्ठितं की नी।

इनके प्रतिरिक्त का बम्बार मे १ प्रति (वी सं १३२) का बम्बार मे १ प्रति (वी सं १६१) तथा ३३ बम्बार मे १ प्रति (वी सं १३३) थीर है ।

१६६८ रुक्मिणीविभागेति (कृष्णरुक्मिणीवैति) — वृषवीराज राठीर । पृथ ५ ११ के
१२१ । आ १५६ ह व । जगता-हिमो १ विभव-वैति । १० जगत् ५ १६३ । १० जगत् ५ १०१२ वीच कुटी ३ ।
मयरी १ के ५ ५४ । आ मयराट ।

विशेष—इसविषय में महत्त्वा ज्ञापन में प्रतिनिधि श्री श्री १३ वर है। किसी वर में दोष भी दो
है है। ११२ वर में दोष वर है।

३६६६ शीलरामा—विजयदेव सूरि । पत्र स० ४ मे ७ । प्रा० १०३×८ इच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रामा । २० काल × । ले० काल स० १६३७ फागुण सुदी १३ । वे० स० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखन प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मवत् १६३७ वर्षे फागुण सुदी १३ गुरुवारे श्रीगुरुतरगच्छे आचार्य श्री राजरत्नमूरि शिष्य प० नदिगग

लिखत । उसवसेसघ बालेचा गोत्रे सा हीरा पुत्री रतन मु आबिका नाली पठनार्थ लिखित दागमध्ये ।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्रीपूज्यपासचद तगुद्द सुपमाय

सोस धरी निज निरमल भाइ ।

नयग जालउरहि जागतु,

नेमि नमउ नित बेकर जोडि ॥

वीनतो एह जि वीनवउ,

इक विण ग्रम्ह मन वीन विछोडि ।

सील तपातइ जी प्रीतही,

उत्तराध्ययन बाबीसमु जोइ ॥

बली अने राम थबी ग्रथ आजा विना जे बहसु होइ ।

विफल हा यो मुक्त पातक मोइ, जिम जिन भाप्यउ ते सही ॥

दुरित नइ दुक्ख सहइ दूरि, बेगि मनोरथ माहरा पूरि ।

आणामुसयम आगिया, इम वीनवउ श्री विजयदेव सूरि ॥

॥ इति शील रामउ समाप्त ॥

३७०० प्रति स० २ । पत्र स० २ मे ७ । ले० काल स० १७०५ आसोज सुदी १८ । वे० स० २०६१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०१ प्रति स० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० २५७ । अ भण्डार ।

३७०२ श्रीपालरास—जिनहर्षगणि । पत्र १० १० । प्रा० १०×४३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—

रासा (श्रीपाल रासा की कथा है) । २० काल स० १७४२ चैत्र बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३० ।

अ भण्डार ।

विशेष—आदि एक अन्त भाग निम्न प्रकार है—

- ३७८८ सुभौमचक्रवर्तिराम—नागचिनदास । पद्य म० १३ । मा० १०३×४ दृष्ट । भाषा-हिन्दी ।
विषय-रघु । २० वात × । ले० वाल × । पूर्ण । वे० म० १६० । रु भण्डार ।
- ३७८९ हमीररासो—महेज कवि । पद्य म० ८८ । मा० ६×६ दृष्ट । भाषा-हिन्दी । विषय-राग ।
(ऐतिहासिक) । २० वात × । वे० वाल म० १८८३ घासोज गुण ३ । मपूर्ण । वे० म० ६०४ । रु भण्डार ।

निषय- गरिमात शास्त्र

३५१ गणितनाममाहा—हरद्वयः यत्र अं १४। या २३×४६६। भाग—द्वयः। विषय—
मलितपात्र। १ यत्र × १६ यत्र × १२५। अं ४। ल यत्र ४।

३०११ शक्तिशाली—। यम नं ६२ । या ६×१५ दक्षः वाता-वस्तुन । विषय-विहितः । र
वात × । ते वात × । इति । के नं ६३ । य वपार ।

१७१७ गणितसार—द्वैतशास्त्र । वच नं २ । का १२४ । दण्ड । अन्तर द्विती । विषय—वर्गित ।
१ वल × १ वल × १ वर्ग । १ न २२३१ । अ यथा ।

विशेष—आदिपर्व ४२ अक्षर सेनाद्वये ॥ । यत्र अक्षर्यं है कथा बीच मे एक एक गयी है ।

३ १३ कृषि महाद्वी की तुलना —। वन में ६। या ६×९ दण्ड। पाता—हल्दी। पिरक—
मल्लि। १ वन ×। के पात ×। कर्पूरी के त १९९५। ट कण्ठा।

[illegible]

१ हरिन्याममात्रा—एकदशारण्यम् । बाल्येन यम १ । शत ।

२ गौडकायांबधी शीखा— हिन्दी बर ४३ पृष्ठ ।

विशेष—कृष्ण अक्षर का वर्णन

१. सामान्यजीवीका—

॥ स्नेहबीजा— वय ४७ (मृत्युर्भूत)

३०१४ शुद्धमयाङ्ग—। पन नं २। मा ५५४ दण्ड। माया-हिन्दी। विषय मणिमयाङ्ग।
॥ बाल ×। ने बाल ×। पुनं। के नं १४५०। पन मयाङ्ग।

३०१६. श्रीमानवीरमाया—श्रीहनुमान् विष्णवे । मा ११×६ इय । अष्टा दिग्दी । विष्णु-
महोत्सव । १८ अक्षर १०१४ । नि १८ अक्षर ११३ अक्षर १०१४ । पुर्ण १०१४ । अष्टा दिग्दी ।

निर्देश—प्रत्येक प्रश्नसिद्ध उत्तर दें।

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरावास । पत्र म० ३ । मा० ६४४३ इष । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० म० ६६१ । क भण्डार ।

३७१७ प्रति स० २ । पत्र म० ५५ । ले० काल × । वे० स० १४४ । ब भण्डार ।

३७१८ लीलावतीभाषा । पत्र न० १३ । मा० १३×८ इष । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । च भण्डार ।

३७१९ प्रति स० २ । पत्र म० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६२ । ट भण्डार ।

३७२० लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र स० १७६ । मा० ११३×४ इष । भाषा—संस्कृत ।

विषय—गणित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित सुन्दर एय नवीन है ।

३७२१ प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल म० १८६२ भादवा बुदी २ । वे० न० १७० । ग भण्डार ।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में भागलपुर के पुत्र मनोरथराम मेठी ने हिण्डीन में प्रति-
लिपि की थी ।

३७२२ प्रति स० ३ । पत्र स० १४४ । ले० काल × । वे० स० ३२३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वे० न० ३२४ में ३२७ तक) और हैं ।

३७२३ प्रति स० ४ । पत्र म० ४८ । ले० काल स० १७६५ । वे० स० २१६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० २२०, २२१) और हैं ।

३७२४ प्रति स० ५ । पत्र म० ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।



निषय- गरिमात-शास्त्र

३०१ गणितनाममाहा—हरद्वय । वय लं १४ । आ १३×४६५ । माता—संभल । पिता—

वर्तमानपत्र । २ वजन $\times 1$ नि वजन $\times 1$ दुग । के ली ४ । लव नभार ।

३०११ गदियतास्तु—। पृष्ठ अं १२। का १×१६ इञ्च। वाता-भस्म-१। दिव्य-मण्डित। ८

बाल X । मे बाल X । कुल्ले । मे मे ७९ । व धप्यार ।

१७१७ गणितसार—द्वयराज । पृष्ठ नं० २ । पा० १९४ इति । अत्रा श्लो० । विषय-गणित ।

२. बाल X । ३. बाल X । अतः १२२२ । अतः १२२२ ।

विषय-नामिके पर सुन्दर लेखक है । पत्र जीर्ण है तथा बीच में एक पत्र नहीं है ।

३०१३. पड़ी पहाड़ों की पुस्तक ---। पत्र नं० ६७। छा. ६५६ दख। जाला-गिरी। विषय-

बजिज्ज । ए बाल × । नि बाल × । अयुर्ध्व । के लं १५२ । इ वण्डार ।

निर्देश—आरम्भ के बच्चा में सेतो की शरीर धादि डालकर बालने की विधि की है। पुनः पत्र १ में ३ तक

सीमा वर्ग समानांतर : अर्द्ध ही पाया मधिका (पाटिका) वा वर्गम है । यह ४ न १ तक वास्तविक सीमा के ब्लोक है । यह १ के ३१ तक बढ़ाये है । बिग्री २ जबतक बढ़ाई पर मुद्रापित पय है । ३१ के ३५ तक सीमा नार के इत बिसे हुये है । किन्त पाठ थीर है ।

१. हरिवामसाक्षा—शङ्कराचार्य । सम्प्रतः वयं ३० वर्ष ।

२. गोरबगांवकी लीला— हिन्दी पत्र ४२, ८८ ।

विशेष—इसका अर्थ है कि

३ सत्यसोपनिषद्—

४ स्नेहबीजा— ५२ ४७ (पार्श्व)

३०४ राजमहाल—। वष रं २। आ ५४ हल। भाषा-हिन्दी। विषय-कविताशास्त्र।

१. काल × १. १. काल × १. पुर्ण। १. १. १४१०। १४१०। १४१०।

६-११६. कल्लिभत्तीयापा—मोहनमिथ। पम सं । मा ११×६ इ य । मत्ता हिन्दी । विपम-

वर्षाप्रमाण : १ काल में १७१४। २ काल में १२ प्रमुख बुटी १। पूर्ण : २ नं १४। प्र. मन्त्राः।

विशेष—मैकन प्रकृति दुर्लभ है।

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरादास । पत्र स० ३ । आ० ६४४३ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८१ । क भण्डार ।

३७१७ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० १४४ । ख भण्डार ।

३७१८ लीलावतीभाषा । पत्र स० १३ । आ० १३४८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । च भण्डार ।

३७१९ प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६४२ । ट भण्डार ।

३७२० लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र स० १७६ । आ० ११३४५ इ च । भाषा—मसूत ।
विषय—गणित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६७ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति ससूत टीका सहित सुन्दर एवं नवीन है ।

३७२१ प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८६२ भादवा बुदी २ । वे० स० १७० । ख भण्डार ।

विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में मारणचन्द के पुत्र मनोन्धराम नेठी ने हिण्डीन में प्रति-
लिपि की थी ।

३७२२ प्रति स० ३ । पत्र स० १५४ । ले० काल × । वे० स० ३२३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ३२४ में ३२७ तक) और हैं ।

३७२३ प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १७६५ । वे० स० २१६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० २२०, २२१) और हैं ।

३७२४ प्रति स० ५ । पत्र स० ८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।



विषय-सूचिका



३०२२. बाबापों का ज्वीरा—। पृष्ठ १। पृष्ठ १२३। २३। बाबा-हिन्दी। विषय-
इतिहास। १। पृष्ठ १। से पृष्ठ १०११। पूर्ण। के १। २३०। अ. नम्बर।

विषय—मुसलमान राजाओं के प्रतिनिधि की थी। इसी केन्द्र में १ प्रति दी गई।

३०२३. कठेराबाबोत्पत्तिवृत्त—। पृष्ठ १। पृष्ठ ७५४। बाबा-हिन्दी। विषय-
इतिहास। १। पृष्ठ १। से पृष्ठ १५५। पूर्ण। के १। २३। अ. नम्बर।

विषय—५ लोगों के नाम भी दिये हुए हैं।

३०२४. गुवाँवलीवृत्त—। पृष्ठ १। पृष्ठ १५४। बाबा-हिन्दी। विषय-इतिहास।
१। पृष्ठ १। से पृष्ठ १५५। पूर्ण। के १। २३। अ. नम्बर।

३०२५. बौरासीकावृत्त—। पृष्ठ १। पृष्ठ १५४। बाबा-हिन्दी। विषय-इतिहास।
१। पृष्ठ १। से पृष्ठ १५५। पूर्ण। के १। २३। अ. नम्बर।

३०२६. बौरासीकावृत्त की जलमात्र—विशालीकावृत्त। पृष्ठ १। पृष्ठ १५४। बाबा-
हिन्दी। विषय-इतिहास। १। पृष्ठ १। से पृष्ठ १५५। पूर्ण। के १। २३। अ. नम्बर।

३०२७. बौरासीकावृत्त की जलमात्र—। पृष्ठ १। पृष्ठ १५४। बाबा-हिन्दी। विषय-
इतिहास। १। पृष्ठ १। से पृष्ठ १५५। पूर्ण। के १। २३। अ. नम्बर।

३०२८. बौरासीकावृत्त की जलमात्र—। पृष्ठ १। पृष्ठ १५४। बाबा-हिन्दी। विषय-
इतिहास। १। पृष्ठ १। से पृष्ठ १५५। पूर्ण। के १। २३। अ. नम्बर।

विषय—उसका उपायबालीपुर बापि बाली का पूर्ण विवरण है।

३०२९. बौरासीकावृत्त की जलमात्र—अ. सुरेन्द्रकीर्ति। पृष्ठ १। पृष्ठ १५४। बाबा-हिन्दी। विषय-
इतिहास। १। पृष्ठ १। से पृष्ठ १५५। पूर्ण। के १। २३। अ. नम्बर।

३०३०. बौरासीकावृत्त की जलमात्र—। पृष्ठ १। पृष्ठ १५४। बाबा-हिन्दी। विषय-
इतिहास। १। पृष्ठ १। से पृष्ठ १५५। पूर्ण। के १। २३। अ. नम्बर।

३०३१. बौरासीकावृत्त की जलमात्र—। पृष्ठ १। पृष्ठ १५४। बाबा-हिन्दी। विषय-
इतिहास। १। पृष्ठ १। से पृष्ठ १५५। पूर्ण। के १। २३। अ. नम्बर।

३७३५ दादूपद्यावली । पृथ म० १ । आ० १०×३ इ च । नापा-हिन्दो । विषय-इतिहास ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६४ । अ भण्डार ।

दादूजी दयाल पाट गरोव मसकीन ठाट ।

जुगलवाई निराट निराणो बिराज ही ॥

बखनोस कर पाक जसो चावो प्राय टाक ।

बडो हू गोपाल ताक गुरुद्वारे राजही ॥

सागानेर रजधनु देवल दयाल दास ।

घड्यो कडाला बसै धरम कीया जही ॥

ईड वैहू जनदास तेजानन्द जोषपुर ।

माहन मु भजनीक आसोपनि बाज ही ॥

गूलर मे भाषोदास विदाध मे हरिसिंह ।

चतरदास सिंध्यावट कोयो तनकाज ही ॥

विहाणी पिरागदास डोडवानै है प्रसिद्ध ।

सुन्दरदास बू सरसू फतेहपुर छाजही ॥

बावो वनवारी हरदास दोऊ रतीय में ।

नाबु एक माडोडी में नीकै नित्य छाजही ॥

सुंदर प्रह्लाद दास घाटबैसु छोड माहि ।

पूरव चतरभुज रामपुर छाजही ॥ १ ॥

निराणदास माढाल्यो सडांग माहि ।

इक्लोड रणतभवर डाढ चरणदास जानियो ॥

हाडोती गेगाइ जामे माखूजी भगन भये ।

जगाजी भडौंच मध्य प्रनाधारी मानियो ॥

लालदास नायक सो पीरान पटणदास ।

फाफली मेवाड माहि टोलोजो प्रमानियो ॥

साधु परमानंद इशोखली मे रहे जाय ।

जैमन पुहाण भलो खालड हरगानियो ॥

जेमल जोगी कुछाहो वनमाली बोक्न्योस ।

साभर भजन सो वितान तानियो ॥

नीहूत बरतौनु नारोठ बिताई मनी ।

बन्याय गैरतौनु बलकर घाबिनी ॥

नानीबहूँ बभवाउ डीरैबल बाबल में ।

ओरवाई ओरुवाकु लखु बीराल बाबिनी ॥

झाबलती जननाय राहोरी बनबोपल ।

बापझररी बंसवाउ बाबलनु बाबिनी ॥

शाबी ये बरीबराउ बाबलनु बाबल की ।

बोहूत येवना बाब बाबल की रहे हैं ॥

रहूटी में नानर बिबल हू बनन बिबो ।

बल बाब बीबल बीबल हू नाने हैं ॥

बोहूत बरिवालीओ लम बलरबल यल ।

बोहूतल संत बुद्धि बीबलिर बन हैं ॥

बीबल बाबली में बोहूत बनलमुनि ।

बलबवाउ बलबलीनु बीबल की में रहे हैं ॥

बीबल बाबल नरहूत बाबल बनन कर ।

बलबल बलबल बल बल बल रहे हैं ॥

बलबल बलबल बलबल बलबल बल ।

बाबी में बनन कर बन बाबल रहे हैं ॥

बलबल बलबीबाई बलबल बनन बल ।

बलबल बलबल बलबल बल बल रहे हैं ॥

बलबल बी बाबा बल बाबल बी बल बल ।

बाबुपनी बलबल बुने बीबल रहे हैं ॥ १ ॥

बे मनी बल बल बलबल बल बल बल के बलबली ।

में बाबी बल बल बलबी ॥ २ ॥

बी बलबल बलबल बल बल बी बल ।

बलबल बी बलबी बी बल बीबल बनन कर बीबी ॥ ३ ॥

बलबल बलबली बल बल बल बीबी बलबी

बलबल बलबली बीबी, बी बल बनन बी बीबी ॥ ४ ॥

बी बल बीबल बलबी बल बल बलबी ।

बलबल बलबी में बल बाबी बलबलबलबी ॥ ५ ॥

खेद—

राग रामगरी—

धेसे पीव यू पाइये, मन चचल भाई ।
 भाव मीच मूनी भया मछी गढ काई ॥टंक॥
 छापा तिलक बनाय वरि नाचै अरु गावै ।
 आपण तो समझे नही, श्रीरा समझावै ॥१॥
 भगति करे पाम्बड की, करणी का काचा ।
 वहै कबीर हरि यू मिलै, हिरदै नही साचा ॥२॥
 ॥ इति ।'

३७३६ देहली के बाहशाहों का ज्यौरा । पत्र स० १६ । भा० ५३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
 विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६ । छ मण्डार

३७३७ पञ्चाधिकार । पत्र म० ५ । भा० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।
 २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४७ । छ मण्डार ।

विशेष—जिनमेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ में आचार्यों का ऐतिहासिक वर्गन है ।

३७३८ पट्टावली । पत्र म० १२ । भा० ८×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
 काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । छ मण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावलि का नाम दिया हुआ है । १८७६ के सबत् की पट्टावलि है । अन्त में खडेलवाल
 वशीत्वति भी दी हुई है ।

३७३९ पट्टावलि । पत्र म० ४ । भा० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ मण्डार ।

विशेष—स० ८४० तक होने वाले भट्टारकों का नामोल्लेख है ।

३७४० पट्टावलि । पत्र स० २ । भा० ११३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रथम बीरासी जातियों के नाम हैं । पीछे सबत् १७६६ में नागीर के गच्छ में अजमेर का गच्छ
 निकला उसके भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं । स० १७७२ में नागीर में अजमेर का गच्छ निकला । उसके स० १८५२
 तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१ प्रतिष्ठाकुसुमपत्रिका । पत्र स० १ । भा० २५×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
 इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ मण्डार ।

बोह्वन वपुःपीडु नारीक विपरीतं चर्त ।

वपुःपीडु नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

नारीक विपरीतं चर्त ।

सोरड—

वे नमो नुर वनु परमज्जम वनु सव संतम के वित्तपारी ।

वे नमो वरवि मुम्हारी ॥ १॥

वे नमो वरवि मुम्हारी ॥ १॥

वे नमो वरवि मुम्हारी ॥ १॥

वे नमो वरवि मुम्हारी ॥ १॥

वे नमो वरवि मुम्हारी ॥ १॥

वे नमो वरवि मुम्हारी ॥ १॥

वे नमो वरवि मुम्हारी ॥ १॥

वे नमो वरवि मुम्हारी ॥ १॥

३७४३ विज्ञप्तिपत्र—हमराज । पत्र म० १ । घा० ८×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।
२० काल × । ले० काल स० १८०७ फायुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ४३ । अ भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हमराज न जयपुर के जैन पंचा के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का मवन पंच साधर्मी बडो पचायत तथा छोटी पचायत का तथा दीवानजी नाहिव का मन्दिर सम्बन्धी पचायत का पत्र आदि समन्त साधर्मी भाइयन को भोपाल का वासी हमराज की या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो । इसमें जयपुर के जैना का अच्छा वर्णन है । हमरचन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमें प्रतिज्ञा पत्र (आवडी पत्र) भी है जिसमें हमराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पड़ता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है । म० १८०० फायुन सुदी १३ बुन्वार का प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७४४ शिलालेखसंग्रह । पत्र स० ८ । घा० ११×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।
२० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० ६६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न लिखे वा संग्रह है ।

१ चातुर्व्य वसोरास पुनकेरी का शिलालेख ।

२ भद्रबाहु प्रशस्ति

३ मल्लियेण प्रशस्ति

३७४५ श्रावक उत्पत्तिवर्णन । पत्र स० १ । घा० ११×२८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६०८ । अ भण्डार ।

विशेष—चौरासी गौत्र, वंश तथा कुलदेवियों का वर्णन है ।

३७४६ श्रावकों की चौरासी जातिया । पत्र स० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३१ । अ भण्डार ।

३७४७ श्रावकों की ७० जातिया । पत्र स० २ । घा० १२×४३ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।
विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जातिया के नाम निम्न प्रकार हैं ।

१ गोलारावे २ गोलसिंघाड़े ३ गालापूर्व ४ लवेनु ५ जैसवाल ६ खंडेलवाल ७ बघेलवाल ८
भगरवाल, ९ सहलवाल, १० असरवापोरवाल, ११ थोसखापोरवाल, १२ दुसरवापोरवाल, १३ जागडापोरवाल,
१४ परवार, १५ बरहोया, १६ भैसरपोरवाल, १७ सोरठीपोरवाल, १८ पद्मावतीपोरभा, १९ खंथड, २० पुसर

विशेष—सं ११२७ काकुल घाल का कुङ्कुमपत्रिका की प्रतिष्ठा वा है। पत्र कारिका बुनी ११ का लिखा है। इसके साथ सं ११३१ की कुङ्कुमपत्रिका की हुई विचार सम्यक् भी सीर है।

३७४२. प्रतिष्ठानामावलि—। पत्र सं १। वा १०७ ई. वा। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास।
१ कल ×। मे कल ×। पुरी। मे सं १४३। अ. अक्षर।

३७४३. प्रति स २। पत्र सं १। मे कल ×। मे सं १४३। अ. अक्षर।

३७४४. बसालकारगणपुत्रावलि—। पत्र सं ३। वा ११५ ई. वा। भाषा—उत्तर। विषय—
इतिहास। १ कल ×। मे कल ×। पुरी। मे सं २९। अ. अक्षर।

३७४५. महारक पट्टावलि। पत्र सं १। वा ११५ ई. वा। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। १
कल ×। मे कल ×। पुरी। मे सं १५३। अ. अक्षर।

विशेष—सं १७७० तक की महारक पट्टावलि की हुई है।

३७४६. प्रति स २। पत्र सं १। मे कल ×। मे सं ११५। अ. अक्षर।

विशेष—सं १७७० तक की महारक पट्टावलि की भाषा हिन्दी है।

३७४७. भाषावलि—। पत्र सं २ से २९ वा १०७ ई. वा। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास।
१ कल ×। मे कल ×। पुरी। मे सं १५३। अ. अक्षर।

३७४८. रचनावाचक—अभिलेख। पत्र सं ३। वा १०७ ई. वा। भाषा—उत्तर।
विषय—इतिहास। १ कल ×। मे कल ×। पुरी। मे सं १५३। अ. अक्षर।

विशेष—बनपुर की रचनावाचक का वर्णन है।

१११ पत्र है—अभिलेख—

एकमेवविशेषवैशेष सहाय्ये वाचकवाचक की विशेषित कलकलस की विशेषित वर सुर्वरवस्यवाचक विनास
बनपुर मन्त्र बनपुर ॥१११॥

एकमेवविशेषवैशेष सहाय्ये वाचकवाचक की विशेषित कलकलस की विशेषित वर सुर्वरवस्यवाचक विनास

भाषा नीमिषवलि सहाय्ये वाचकवाचक की विशेषित कलकलस की विशेषित वर सुर्वरवस्यवाचक विनास

॥ इति रचनावाचक सहाय्ये वाचकवाचक की विशेषित कलकलस की विशेषित वर सुर्वरवस्यवाचक विनास ॥

३७४९. राजवाचक—। पत्र सं २। वा १०७ ई. वा। भाषा—उत्तर। विषय—इतिहास। १
कल ×। मे कल ×। पुरी। मे सं १५३। अ. अक्षर।

विशेष—की विशेषित (कलकलस) है विशेषित वाचक वलिवा के विशेषित विशेषित विशेषित है।

इतिहास]

३७५३ विज्ञप्तिपत्र—हसराम । पत्र सं० १ । आ० ८५६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।

२० काल X । ले० काल म० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ५३ । अ मण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हसराम ने जयपुर के जैन पंचो के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा

है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पंच साधर्मो बड़ी पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी माहिब का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पत्र आदि समस्त साधर्मो भाइयन को भोपाल का वासी हसराम की या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो । इसमें जयपुर के जैनो का अच्छा वर्णन है । अमरवन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमें प्रतिज्ञा पत्र (भावडी पत्र) भी है जिसमें हसराम के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पड़ता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है । म० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७५४ शिलालेखसंग्रह । पत्र म० ८ । आ० ११५७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न लेखों का संग्रह है ।

१ चालुक्य वशोत्तम पुलकेशी का गिलानेख ।

२ मद्रवाह प्रशस्ति

३ मल्लिषण प्रशस्ति

३७५५ श्रावक उत्पत्तिवर्णन । पत्र सं० १ । आ० ११५२८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६०८ । अ मण्डार ।

विशेष—चौरासी गोत्र, वंश तथा कुलदेवियों का वर्णन है ।

३७५६ श्रावकों की चौरासी जातिया । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० म० ७३१ । अ मण्डार ।

३७५७ श्रावकों की ७० जातिया । पत्र सं० २ । आ० १२५३ इ च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ मण्डार ।

विशेष—जातियों के नाम निम्न प्रकार हैं ।

१ गोलारवा २ गोलसिंघाड़े ३ गालापूर्व ४ लवेचु ५ जैसवाल ६ खडेलवाल ७ बघेलवाल ८ अमरवाल, ९ सहलवाल, १० असरवापोरवाड, ११ वासवापोरवाड, १२ दुसरवापोरवाड, १३ जागडापोरवाड, १४ परवार, १५ वरहीया, १६ असरपोरवाड, १७ सोरठीपोरवाड, १८ पयावतीपोरमा, १९ खंघड, २० पुसर

२१ बहुरोम २२ बहुरा २३ बहुरागानी २४ बहुरा २५ बहुरागानी २६ बहुरागानी २७ बहुरागानी २८ बहुरागानी २९ बहुरागानी ३० बहुरागानी ३१ बहुरागानी ३२ बहुरागानी ३३ बहुरागानी ३४ बहुरागानी ३५ बहुरागानी ३६ बहुरागानी ३७ बहुरागानी ३८ बहुरागानी ३९ बहुरागानी ४० बहुरागानी ४१ बहुरागानी ४२ बहुरागानी ४३ बहुरागानी ४४ बहुरागानी ४५ बहुरागानी ४६ बहुरागानी ४७ बहुरागानी ४८ बहुरागानी ४९ बहुरागानी ५० बहुरागानी ५१ बहुरागानी ५२ बहुरागानी ५३ बहुरागानी ५४ बहुरागानी ५५ बहुरागानी ५६ बहुरागानी ५७ बहुरागानी ५८ बहुरागानी ५९ बहुरागानी ६० बहुरागानी ६१ बहुरागानी ६२ बहुरागानी ६३ बहुरागानी ६४ बहुरागानी ६५ बहुरागानी ६६ बहुरागानी ६७ बहुरागानी ६८ बहुरागानी ६९ बहुरागानी ७० बहुरागानी ७१ बहुरागानी ७२ बहुरागानी ७३ बहुरागानी ७४ बहुरागानी ७५ बहुरागानी ७६ बहुरागानी ७७ बहुरागानी ७८ बहुरागानी ७९ बहुरागानी ८० बहुरागानी ८१ बहुरागानी ८२ बहुरागानी ८३ बहुरागानी ८४ बहुरागानी ८५ बहुरागानी ८६ बहुरागानी ८७ बहुरागानी ८८ बहुरागानी ८९ बहुरागानी ९० बहुरागानी ९१ बहुरागानी ९२ बहुरागानी ९३ बहुरागानी ९४ बहुरागानी ९५ बहुरागानी ९६ बहुरागानी ९७ बहुरागानी ९८ बहुरागानी ९९ बहुरागानी १०० बहुरागानी

नोट—हमारे काल में ही यह विधान है।

३०६८. सुवर्णक—हम इसका पत्र है। या ११ × ११ इंच। नया—ब्राह्मण। विषय—
इतिहास। रं काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के स २१। अ नम्बर।

२०६९. प्रति स २। पत्र स १। मे काल ×। के स ३२६। अ नम्बर।

३०७०. प्रति स ३। पत्र स ११। मे काल ×। के स २१६१। अ नम्बर।

विषय—पत्र ३ के आगे सुवर्णक और भी है। पर पत्रों पर नम्बर फिट नये हैं।

३०७१. सुवर्णक—यं श्रीवर। पत्र स २। या १ × ४ इंच। नया—संस्कृत। विषय—
इतिहास। रं काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के स ३३। अ नम्बर।

३०७२. प्रति स ३। पत्र स १। मे काल स १ २१ नीच सुवर्ण १। के स २१। अ
नम्बर।

विषय—कालास टोंका मे इतिहास की थी।

३०७३. प्रति स ३। पत्र स ३। मे काल ×। के स ३२। अ नम्बर।

३०७४. प्रति स ४। पत्र स १। मे काल ×। पूर्ण। के स ३२१। अ नम्बर।

३०७५. संक्षेपश्रीगी—आनन्दराज। पत्र स १। या १ × ४ इंच। नया—हिन्दी। विषय—
इतिहास। रं काल ×। मे काल स १। पूर्ण। के स २१६। अ नम्बर।

विषय—विनायकास नया नया अनन्तरास सुवर्ण है।

३०७६. संक्षेपश्रीगी—यं श्रीवर। पत्र स १ के १३। या १ × ४ इंच। नया—हिन्दी। विषय—
इतिहास। रं काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के स ३३३। अ नम्बर।

३७६७ स्थूलभद्र का चौमारा वर्णन । पत्र स० २ । आ० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११८ । अ मण्डार ।

ईदर आवा आवली रे ए देसी

सावण मास सुहावणो रे लाल जो पीठ होवे पास ।
अरज कटं घरे आवजो रे लाल हू छू ताहरी दास ।
चतुर नर आवो हम चर द्या रे सुगण नर तू छ प्राण आधार ॥१॥
भादवडे पीठ वेगलो रे लाल हू कीम करू सणगारे ।
अरज कटं घर आवजो रे लाल मोरा छद्यत सार ॥२॥
आसोजा मासनी चादणी रे लाल फुलतणी वीछाइ सेज ।
रग रा मत कीजिय रे लाल आणी हीयडे तेज ॥३॥
कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीठ होवे पास ।
सदेसा सयण भण रे लाल मलगायो केम ॥४॥
नजर निहालो बाल हो रे लाल आवो मीगसर मास ।
लोक कहावत कहा करो जी पीठडा परम निवास ॥५॥
पोस बालम वेगलो रे लाल भवडो मुज दोस ।
परीत पनोतर पालीये रे लाल आणी मन मे रोस ॥६॥
सीयाले भती घणो दोहलो रे लाल ते माहे बल माह ।
पोताने घर आवज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह ॥७॥
लाल गुलाल भवीरसु रे लाल खेलण लागा लोग ।
तुज विण मुज नेइहा एरली रे लाल फागुण जाये फोक ॥८॥
सुंदर पान सुहामणो रे लाल कुल तणो मझी मास ।
चीतारया घरे आवज्यो रे लाल तो करसु गेह गाट ॥९॥
वीसारयो न बीसरे रे लाला जे तुम वोल्या बोल ।
बेसाखे तुम नेम छु रे लाल तो वजड ढोल ॥१०॥
केहता दीमे कामो रे लाल काइ करावो वेठ ।
ढीठ वणो हवे कहा करो लाल आझी लागो जेठ ॥११॥

घटगो बरमुसोरे ताल बीच बीच प्रबुके बीचनी रे बाल ।

गुज बीगा गुज गैहारै ताल बरन बाते चौक ॥१२॥

रे रे छबी जटावली रे ताल छबी लीला समुमार ।

मेर बनी पेची गुररदरे ताल मे लीली गार ॥१३॥

बार बरी नी बाब छरी रे ताल बायी बाल भरबाज ।

कमाण बाली कंठ बी रे ताल लबी न बाज्यो बाल ॥१४॥

ठे कडी बपड बरी रे ताल बालब बोले बाक ।

बुलबल गुज बाजेक बी रे ताल ऐह बठो बीपाल ॥१५॥

३७६८. हमीर चौपई—। पत्र ४ ११ से ३० । पृ ४ × ६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । र नाम × । ले नाम × । कपूरों । से १३१६ । छ बन्धार ।

विशेष—रचना मे बायोमेट्रिक नहीं नहीं है । हमीर व अजातशत्रु के युद्ध का रोचक वर्णन दिया हुआ है ।



विषय- स्तोत्र साहित्य



३७६६ अकलकाष्टक । पत्र सं० ५ । मा० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५० । ज मण्डार ।

३७७० प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २५ । ज मण्डार ।

३७७१ अकलकाष्टकभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० २२ । मा० ११३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल सं० १६१५ आषाढ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ६) और हैं ।

३७७२ प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ३ । छ मण्डार ।

३७७३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६१५ आषाढ सुदी २ । वे० सं० १८७ षष्ठ मण्डार ।

३७७४ अजितशातिस्तवन । पत्र सं० ७ । मा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र भी है ।

३७७५ अजितशातिस्तवन—नन्दिपेण । पत्र सं० १५ । मा० ८३×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । अ मण्डार ।

३७७६ अनाघीश्वरपिस्वाध्याय । पत्र सं० १ । मा० ६३×४ इंच । भाषा-हिन्दी गुजराती । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट मण्डार ।

३७७७ अनादिनिघनस्तोत्र । पत्र सं० २ । मा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । ज मण्डार ।

३७७८ अरहन्तस्तवन । पत्र सं० ६ से २४ । मा० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १६२२ कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १६८४ । अ मण्डार ।

३७७९ अवतिपार्श्वजिनस्तवन—धर्मसूरि । पत्र सं० २ । मा० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । ज मण्डार ।

विशेष—७८ पद्य हैं ।

२ वल्ल × १ ले वल्ल × १ पूर्ण । वै स १७ । छ मज्जार ।

कम बिजबनहि है प्रसिद्धि की भी ।

× । मे वल्ल × । पूर्ण । मे सं १६ । क मण्डार ।

२ काल × । ते वाच × । पूर्ण । वे सं २ ३ । अ मध्यार ।

बार ५ । नि बार ५ । पूर्ण । १ नं १५२ । अ मण्डार ।

३७६१ उपदेशसम्माय—रगविजय । पत्र सं. ४ । भा. ११४३३३ । आपा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. २१५३ । अ. मण्डार ।

विशेष—रगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे ।

३७६२ प्रति सं. २ । पत्र सं. ४ । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. २१६१ । अ. मण्डार ।

विशेष—इस पत्र नहीं है ।

३७६३ उपदेशसम्माय—देवादिल । पत्र सं. १ । भा. १०४३४३ । आपा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. २१६२ । अ. मण्डार ।

३७६४ उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णचन्द्राचार्य । पत्र सं. १४ । भा. ३४३४३ । आपा—संस्कृत
प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले. काल सं. १५५३ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे. सं. ४१ । अ. मण्डार ।

विशेष—श्री बृहद्गच्छीय भट्टारक गुणदेवसूरि के शिष्य गुणनिधाम ने इसकी प्रतिलिपि की थी । प्रति
ग्रन्थ सहित है । निम्नलिखित स्तोत्र है ।

नाम स्तोत्र

वृत्ति

(० - ०० ००) आपा—संस्कृत । आपा—हिन्दी

१ अजितशक्तिस्तवन—

विशेष—आचार्य गोविंदकृत संस्कृत वृत्ति सहित है ।

२ भयहरस्तोत्र—

विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ ग्रन्थ ग्रन्थ सहित है । इस स्तोत्र की प्रतिलिपि ११५५ आसोज सुदी १२

को मेदपाट देश में राणा रायमल्ल के शासनकाल में श्रीवाराणसी नगर में श्री गुणदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने
की थी ।

३ भयहरस्तोत्र—

विशेष—इसमें पादव्यय ग्रन्थ ग्रन्थ अष्टादश प्रकार के पत्र की कल्पना आनन्द गोविंद कृत है ।

३७६५ अष्टमदेवस्तुति—जिनसेन । पत्र सं. ७ । भा. १२०३४३ । आपा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. १५६ । अ. मण्डार ।

३७६६ अष्टमदेवस्तुति—पद्मानन्द । पत्र सं. ११ । भा. १२०३४३ । आपा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले. काल × । पूर्ण । वे. सं. १५६ । अ. मण्डार ।

विशेष—द्वेष्ट से दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है । दोनों ही स्तोत्रों के संस्कृत ग्रन्थों की प्रतिलिपि दी
होई हैं ।

मल्ल × । ले मल्ल × । अयुक्त । ले वं २५१ । अ यम्भार ।

३८६. अपिस्त्रिस्तोत्र—गौतमस्वामी । पत्र १ । अ २३४ इव । अवा-हस्त । विप-
स्तोत्र । १. काल × १. २. काल × १. पूर्ण । ३. १४ । अ. अष्टार ।

२०६३. प्रति स० २। पृष्ठ सं १२। ले. क्रमा सं १४२५। वे. सं १९२०। व्य. मध्यार।

बिसेद—इसी वर्षात ये ४ प्रतिवा (वे सं ११ १४२१ १८) मीर ह ।

३८० प्रति स ३। पय रं य। हे यल \times । हे रं २१। क ययार।

विशेष—हिन्दी वर्ण सभा मन्त्र साधन विधि जी वी हुई है।

२८। प्रविष्टं ४।५४८। ६।१११। ४।१११। २१।

विसेय—गुण्यसाध के पञ्चार्थ प्रति लिखी गई थी। लक्ष्मणार के एक प्रति (वे सं २२१) खीर है।

३८२. प्रवि स ५। अथ लं ४। ले पाठ X। वी मं १६६। इ प्रसार।

बिन्दु—इसी जगह पर एक प्रति (नं २१) खीर है ।

२८७३ प्रवि.स. ६।पृ.सं. २।ले.मा.सं. १७६।दि.सं. १४।व्य.सं. ३८।

३८०५ अठि स ७। यष रं ७९ के १ १। ने जल X। य स १ ३६। ट मण्डार।

३८०५ अग्निमहत्तस्तोत्र—। नव स २ । मा १६४६ द व । भावा-संभृत । विषय-स्थान ।

६ कल × । १० कल × । कुर्सी : वे लं ३ ४ । ग्ल मण्डार ।

३८ ६ एककृषिस्तोत्र—(वकाशपुर)—— पत्र ८ १। मा ११×२ इ. च। माया—संश्लेष।

विषय-सूची । ५ पृष्ठ X । के पृष्ठ १८६१ ज्येष्ठ शुक्र । पूर्ण । के १९६ । अ. मध्यार ।

विशेष—संस्कृत शीघ्रा लिखित है । प्रचुरार्थन शीघ्रम् ।

१८०७ एकीभाषस्तोत्र—बाकिराज । पृष्ठ ११ । मा १ X ४ इंच । धातु—मिश्रित । विनय

स्रोत : र. वा. ४। के. मा. सं. १५ र मा. पुष्पा २। पुर्ण। के. सं. ११४। अ. मयार।

विशेष—सभीलपत्रम् नै स्वपदार्थं प्रतिनिधिरि की की :

इसी प्रकार में एक प्रति (५ नं १३) भी है ।

१५०८. प्रति स २। वष ८ २ मे ११। मे वात X। बुध। मे ८ ११९। म मंगार।

३८ ॥ प्रहसिं ३ । यत् १ । ते वाप \times । ते २३ । ज्ञा यथा ।

विशेष—अति संशुद्ध शीतल अद्विष्ट है ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६४) और है ।

३८१०. प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ५३ । च भण्डार ।

विशेष—महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति मम्कृत टीका तहित है ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ५२) और है ।

३८११ प्रति स० ५ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० १२ । छ भण्डार ।

३८१२ एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र स० ३ । मा० १०३×४३ इच । भाषा—हिं शे
पद्य । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०३६ । अ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना तथा शान्तिनाथ स्तोत्र और है ।

३८१३ एकीभावस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र स० २२ । मा० १२३×५ इच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—स्तोत्र । २० काल स० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६४) और है ।

३८१४ एकीभावस्तोत्रभाषा । पत्र स० १० । मा० ७×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल स० १६१८ । पूर्ण । वे० स० ३५३ । क भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका । पत्र स० ३ । मा० १२३×५ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६४ । क भण्डार ।

३८१६ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६३६ आसोज दुदी ५ । वे० स० ६६ । क
भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७) और है ।

३८१७ कल्पसूत्रमहिमा । पत्र स० ४ । मा० ६३×४३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—महात्म्य ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८ कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र स० ५ । मा० १०३×४३ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष—

परणविचि चउवीसवि तिस्थयर,

सुरणार विसहर शुच चलणा ।

पुणु भणमि पच कल्याण दिग,

भविष्यद्दिगमुणह इवकमणा ॥

वरि वस्यारुपुम्भ विजयप्राप्नुही

धरु धरु धरु धरु धरु ।

सहित सम्पूर्ण ग्रन्थों के विषय

१. लिख्यहूँ इमरोप मेव पत्नी ११

इति श्री मयन्तनाथ कृष्ण कल्याणकृतस्य ॥

३=१८. कश्चायमगिरस्तात्र—कुमुदधन्वापाय । वर्षे लं ५ । वा १८^५ ५^५ । वाता-वस्तु ।

विषय-पाठ्यक्रम स्तरीय । २) काल × १ से कम × १ दुर्लभ ३) त^७ वृद्धि के आधार पर । ४)

विशेष—इसी बज्जार में ६ प्रतिष्ठा (६ सँ १५४ ई२५६ १९१२) कीर हैं ।

प्रति स ए। पत्र नं १३। नि. काल X। दि. ५ श्रृ. ६ मयार - १९७१

विशेष—इसी आधार में प्रथिमा कीर हूँ (के संकेत पर) । पृष्ठ १३५

३८२१ प्रति रु० ११. पत्र सं ११। नि. कर्म सं ११७ भाग ११। नि. सं ११। प.

अथवा ।

३८१८. अति ३० ४ (५५ वं १५) नि. काल ३१.१९५२ मध्य पूर्वी १२.१५ पूर्वा १५.०० २२९।

६. चर्चा ।

विशेष—इसका पत्र नं० ६। इसी आधार से एक प्रति (६ वं ११५) और ६।

१०६३ मस्ति सः २। पञ्चमं २। वि कल्ल ४ ॥ १०६४ गङ्गा नदी २। वि लं ७। सु बभार ।

विमेष—राष्ट्र जोबराम जोडीबाली धानबराम से धानानेर मे प्रतिनिधि करवावी थी । यह पुस्तक जोबराम

परीक्षा की तिथि

२८७५ प्रति सा ३। पत्रार्थ १८। नि. पत्रार्थ १८७५। नि. स. ७। अ. पत्रार्थ। १७ अ. १८

विशेष—अस्ति हर्षजीति हृदय संतुष्ट इति वा नहि ति ई । हर्षजीति नांयपुत्रीय उतामज्ज^१ प्रथम वन्दनीति के

प्रिया ॥ १

3 MAY 1961

२५३४ मसि सं ७। वर ल २। मे, पुनर्ल, पुनर्ल, मे ॥ १९९५ : ६ मकार । ७११

[illegible]

इति मन्त्रपुत्राणां वचनं श्रुत्वा तदा विप्रः पुनरुक्तवान् । श्रीगणेशाय नमः ।

टीका संपूर्ण । बसाराय भूवि के स्वाम्यमान हेतु प्रतिनिधि की श्री ।

३८३६ प्रति सं ८। पत्र सं ४४। पत्र सं ३३। सं १३३। ४४ सं ३३।

शिलेय—श्रीरेमान् श्रीनिवा मातुल वागै,ने प्रतिनिधि की की ३५. ET

३८२७ कल्याणमदिरस्तोत्रटीका—प० आशाधर । पत्र स० ४ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५३१ । अ भण्डार ।

३८२८ कल्याणमदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक । पत्र स० १५ । भा० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १० । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार परिचय—

श्रीउकेयगणाधिचन्द्रमहेश विद्वज्जनाह्लादयन्,
प्रवीण्याधनसारपाठनवरा राजति भास्वातर ।
तच्छिष्य कुमुदापिदेवतिलक सद्बुद्धिबुद्धिप्रदा,
धेयोमन्दिरसस्तवस्य मुदितो वृत्ति व्यधादद्भुत ॥१॥
कल्याणमदिरस्तोत्रवृत्ति सौभाग्यमञ्जरी ।
बान्यमानाज्जनेनदाच्चद्रावर्क मुदा ॥२॥
इति धेयोमदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२९ कल्याणमदिरस्तोत्रटीका । पत्र स० ४ से ११ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ११० । अ भण्डार ।

३८३० प्रति स० २ । पत्र स० २ मे १२ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २३३ । अ भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द्र चौधरी कनेसु मुन्दरदास मजमेरी मोल लीमी । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है ।

३८३१ कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—पद्मलाल । पत्र स० ४७ । भा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल स० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १०७ । अ भण्डार ।

३८३२ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वै० स० १०८ । अ भण्डार ।

३८३३ कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र । पत्र स० ५ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १८७१ । अ भण्डार ।

३८३४ कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा—बनारसीदास । पत्र स० ८ । भा० ६×३ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा-हिन्दी । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २२४० । अ भण्डार ।

३८३५ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वै० स० १११ । अ भण्डार ।

३८३६ केवलज्ञानीसम्भाषण—विनयचन्द्र । पत्र स० २ । भा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २१८८ । अ भण्डार ।

३८३० श्रीमद्वाङ्मयामावली—। पत्र सं १। पा १ ५४ द. प। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

१. पत्र \times । २. पत्र \times । पूर्ण। ३. सं १४४। अ. मध्यार।

३८३८ गीतमन्त्र—। पत्र सं २। पा १ ५४ द. प। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।

पत्र \times । २. पत्र \times । पूर्ण। ३. सं १२४। अ. मध्यार।

विषय—हिन्दी में बसन्तराज में एक मन्त्र है।

३८३९ गीत नीतराज—पंडिताचार्य कामिबचचावली—। पत्र सं २१। पा १ ५२ द. प।

भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १. पत्र \times । २. पत्र सं १। ३. अष्टम कुटी ३३। पूर्ण। ३. सं २२। अ. मध्यार।

विषय—बनपुर नगर में श्री कुलीनाल के प्रतिनिधि की की।

गीत नीतराज संस्कृत भाषा की रचना है जिसमें ५४ श्रवणों में निम्नलिखित रूप रत्नविषे में ब्रह्मनाम परिकल्पना का पौराणिक धारणा वर्णित है। कल्पवृक्ष की पंडिताचार्य बचचि से ऐसा प्रकट होता है कि वे अपने समय के विद्वत् विद्वत् के। कल्प का निर्वाह कल्प वृक्ष का रचना के कल्प की होता किन्तु वह समय विस्मय ही मंत्र १ ५२ से पूर्व है क्योंकि अष्टम कुटी धारास्था नं १ २ की बनपुरनगर नगर के मन्दिर के पास रहने वाले श्री कुलीनालजी चण्ड ने इस कल्प की प्रतिनिधि की है अति सुंदर धारों में लिखी हुई है तथा कुछ है। कल्पवृक्ष में ५४ को निम्न रूपों तथा ठानों में संस्कृत गीतों में पूजा है—

राज राजा— ब्रह्म कुर्वरी बचचि राजनी कल्पवृक्ष कल्पवृक्ष कैलाशपर्वत कैलाशपर्वत कुलवरी नामधारी
पूर्वराज भैरवी विराटी विराट कल्परी।

राज— कल्प, एकलाल प्रतिबन्ध परिकल्प विराटी कल्पाल।

नीलों में लक्ष्मी कल्परी बचारी तथा धामोय के पाठ ही बरत है इस सबसे स्पष्ट होता है कि कल्पवृक्ष संस्कृत भाषा के विद्वत् होने के साथ ही साथ अच्छे संगीतज्ञ भी है।

३८४ प्रति सं २। पत्र सं १२। पत्र \times । १४१४ अष्टम कुटी। ३. सं १२२। अ. मध्यार।

विषय—संस्कृत धारणा के लक्ष्य नामिबचचन में पुरोधसजी की भाषा के धारणा वर धारणाधारा के ब्रह्मनामधारी १ ५४ वाली प्रति में प्रतिनिधि की की।

इसी मध्यार में एक प्रति (३ सं १२१) भी है।

३८४१ प्रति सं ३। पत्र सं १४। पत्र \times । ३ सं ५२। अ. मध्यार।

स्तोत्र साहित्य]

३८४० गुरुस्तवन । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५८ । ट मण्डार ।

३८४३ गुरुसहस्रनाम । पत्र सं० ११ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १७४६ वैशाख कुटी ६ । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख मण्डार ।

३८४४ गोम्मटसारस्तोत्र । पत्र सं० १ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३ । ख मण्डार ।

३८४५ घटघरनिसाणी—जिनहरे । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ मण्डार ।

विशेष—पाण्डनाथ की स्तुति है ।

आदि—

सुख मपति नुर नायक परनपि पास जिरादा है ।

जाकी आनि काति अनोपम उपमा दीपत जात दिरादा है ।

अन्तिम—

मिडा दावा सातहार हासा दे सेवक बिलवदा है ।

घघर नीमाणी पास बन्नाणी गुणी जिनहरप कहदा है ।

इति श्री घघर निसाणी संपूर्ण ॥

३८४६ चक्रेश्वरीस्तोत्र । पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । ख मण्डार ।

३८४७ चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि । पत्र सं० ६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । ख मण्डार ।

३८४८ चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल । पत्र सं० १ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । अ मण्डार ।

३८४९ चतुर्विंशतिस्तवन । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में वसुधारा स्तोत्र है । ५० विजयगणि ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३८५० चतुर्विंशतिस्तवन । पत्र सं० ४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ मण्डार ।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है । प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन में ४ पद्य हैं ।

प्रथम चतुर्विंशः प्रकाशः—

कर्मयोगविधीननृणां विस्तारिण्यर्वावधी
एन्नासादिबन्धनमहामहा पद्मावतुरे ।
मत्स्या संवितपद्मपद्मिपुत्री संपाववानीमिन्द्रा ।
रंजयान बन्धनमहामहा पद्मावतुरे ॥१॥

१८२१ चतुर्विंशति वीर्यहूरस्तोत्र—कर्मविजयपद्मि । पत्र सं १२ । या ११ × २ इंच ।
माता—संतुष्ट । विपक—स्तोत्र । रं कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं १४१ । अ मन्थार ।

विशेष—अति संतुष्ट दीप्य इति ।

१८२२ चतुर्विंशति वीर्यहूरस्तुति—आवकन्दि । पत्र सं ३ । या १२ × २ इंच । माता—संतुष्ट ।
विपक—मत्पन । रं कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं २१ । अ मन्थार ।

१८२३ चतुर्विंशति वीर्यहूरस्तुति— । पत्र सं १ । या १२ × २ इंच । माता—संतुष्ट । विपक—
स्तोत्र । रं कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं १२११ । अ मन्थार ।

१८२४ चतुर्विंशति वीर्यहूरस्तुति— । पत्र सं ३ । या १२ × २ इंच । माता—संतुष्ट । विपक—
स्तोत्र । रं कल × । मे कल × । मे सं २३० । अ मन्थार ।

विशेष—अति संतुष्ट दीप्य इति ।

१८२५ चतुर्विंशति वीर्यहूरस्तोत्र— । पत्र सं ६ । या ११ × ४ इंच । माता—संतुष्ट । विपक—
स्तोत्र । रं कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं ११२ । अ मन्थार ।

विशेष—स्तोत्र बहुत वीर्यवती आम्नाय नृ । सभी वीर्य वीर्यवती वा वर्तन स्तोत्र ॥ ६ ।

१८२६ चतुर्विंशति वीर्यहूरस्तोत्र— । पत्र सं ११ । या १२ × २ इंच । माता—संतुष्ट । विपक—स्तोत्र ।
रं कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं १२०२ । अ मन्थार ।

१८२७ चतुर्विंशति वीर्यहूरस्तोत्र— । पत्र सं २ । या १२ × २ इंच । माता—संतुष्ट । विपक—
स्तोत्र । रं कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं १११ । अ मन्थार ।

१८२८ चतुर्विंशति वीर्यहूरस्तोत्र— । पत्र सं ४ । या १२ × २ इंच । माता—संतुष्ट ।
विपक—मत्पन । रं कल × । पूर्ण । मे सं १११४ । अ मन्थार ।

१८२९ चतुर्विंशति वीर्यहूरस्तोत्र— । पत्र सं १ । या ११ × २ इंच । माता—
संतुष्ट । विपक—स्तोत्र । रं कल × । मे कल × । पूर्ण । मे सं ११ । अ मन्थार ।

३८६० प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८३० । आसोज सुदी २ । वे० स० १८१ । ऋ
भण्डार ।

३८६१ चित्रवधस्तोत्र । पत्र स० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं ।

३८६२ चैत्यवदना । पत्र स० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१०३ । अ भण्डार ।

३८६३ चौबीसस्तवन । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०
काल × । ले० काल स० १६७७ फागुन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २१२२ । अ भण्डार ।

विशेष—वल्होराम ने भरतपुर में रणधीरसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी ।

३८६४ छन्दसग्रह । पत्र स० ६ । आ० ११२×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०४२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न छन्द हैं—

नाम छन्द	नाम कर्त्ता	पत्र	विशेष
महावीर छन्द	शुभवन्द	१ पर	×
विजयकीर्ति छन्द	"	२ "	×
शुभ छन्द	"	३ "	×
पार्श्व छन्द	ब्र० लेखराज	३ "	×
शुभ नामावलि छन्द	×	४ "	×
भारती सग्रह	ब्र० जिनदास	४ "	×
चन्द्रकीर्ति छन्द	—	४ "	×
कृपण छन्द	चन्द्रकीर्ति	५ "	×
नेमिनाथ छन्द	शुभवन्द	६ "	×

३८६५ जगन्नाथाष्टक—शङ्कराचार्य । पत्र स० २ । आ० ७×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
(जेनेतर साहित्य) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३३ । अ भण्डार ।

३८६६ त्रिमूर्तिस्तोत्र—। पत्र सं ३। पा ११२×२ इंच। बाया-संस्कृत। विपद-स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल सं १५५२। पूर्ण। वै सं १२। क बन्धार।

विशेष—श्रीगणेश के प्रतिमिति की थी।

३८६७ त्रिमूर्तिस्तोत्र—। पत्र सं १२। पा १×१ इंच। बाया-हिन्दी। विपद-स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं २४१। क बन्धार।

३८६८ त्रिमूर्तिस्तोत्र—। पत्र सं २। पा १×१ इंच। बाया-संस्कृत। विपद-स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं १३२। क बन्धार।

३८६९ त्रिमूर्तिस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १×४ इंच। बाया-संस्कृत। विपद-स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं २२९। क बन्धार।

३८७० त्रिमूर्तिस्तोत्र—। पत्र सं २। पा २२×२ इंच। बाया-संस्कृत। विपद-स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं २१२४। क बन्धार।

३८७१ त्रिमूर्तिस्तोत्र—कृष्णप्रसादार्थ। पत्र सं ३। पा १×४ इंच। बाया-संस्कृत।

विपद-स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ३६। क बन्धार।

विशेष—यं कलाल के कर्म के प्रतिमिति की गई थी।

३८७२ प्रति सं २। पत्र सं २। ले कल ×। वै सं ३। क बन्धार।

३८७३ प्रति सं ३। पत्र सं ३। ले कल ×। वै सं २३। क बन्धार।

३८७४ प्रति सं ४। पत्र सं ४। ले कल ×। वै सं २९३। क बन्धार।

३८७५ त्रिमूर्तिस्तोत्र—पद्मार्थ। पत्र सं २। पा ११×१ इंच। बाया-संस्कृत। विपद-

स्तोत्र। १ कल ×। ले कल सं १२४। पूर्ण। वै सं २। क बन्धार।

३८७६ त्रिमूर्तिस्तोत्र—अष्टाराम। पत्र सं २। पा ११×१ इंच। बाया-हिन्दी। विपद-

स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं ७३३। क बन्धार।

३८७७ त्रिमूर्तिस्तोत्र—शुद्धाशु। पत्र सं २१। पा ११×४ इंच। बाया-संस्कृत।

विपद-स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वै सं १२१। क बन्धार।

विशेष—अष्टाराम—इति शब्द बाहुविकृत त्रिमूर्ति के प्रतिमिति के नाम के प्रतिमिति के नाम।

३८७८ प्रति सं २। पत्र सं ३४। ले कल ×। वै सं ४६। क बन्धार।

३८७६ जिनशतकटीका—नरमिहभट्ट । पत्र स० ३३ । भा० ११×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १५६४ चैत्र सुदी १४ । वे० स० २६ । अ मण्डार ।

विशेष—ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३८८० प्रति स० ८ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६५६ पौष बुदी १० । वे० स० २०० । क

मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतियां (वे० स० २०१, २०२, २०३, २०४) और हैं ।

३८८१ प्रति स० ३ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १६१५ भाद्रवा बुदी १३ । वे० स० १०० । छ

मण्डार ।

३८८२ जिनशतकालङ्कार—समतभट्ट । पत्र स० १४ । भा० १३×७३ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३० । ज मण्डार ।

३८८३ जिनस्तवनद्वार्त्रिशिका । पत्र स० ६ । भा० ६३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६६ । ट मण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है ।

३८८४ जिनस्तुति—शोभनमुनि । पत्र स० ६ । भा० १०३×४३ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० स० १८७ । ज मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३८८५ जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर । पत्र स० १७ । भा० ६×५ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०७६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियां (वे० स० ५२१, ११२६, १०७६) और हैं ।

३८८६ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ५७ । ख मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ५७) और है ।

३८८७ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८३३ कार्तिक बुदी ४ । वे० स० ११४ । च

मण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से आगे हिन्दी में तीर्थङ्करी की स्तुति और है ।

इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे० स० ११६, ११७) और हैं ।

३८८८ प्रति स० ४ । पत्र स० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३४ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० २३३) और है ।

१८८६ प्रति स २।५५ त १२।५५ बल यं १५६६ सालीय मुदी ४।५५ त २।५५
मगार ।

विरोध—इसके पतिविराग तथा लाभविष, तथा स्वयंभूमीय तनुमहत्त्वान एवं वैभवंग्य भी है । यंगु-
रोसल मंडल का विष भी है ।

३३३ प्रति सं० ६। पृष्ठ सं० ४८। ले. पृष्ठ सं० १९२५। वे. सं० ४७। अ. पृष्ठ सं० १।

विषय—संस्कृत भाषा १९२३ सेनागर्भ चौमुखनमि म श्री विद्यानमि उत्तरु म श्री मन्त्रिभूषणत्तरु
म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु
सेनागर्भ श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु
म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु म श्री लक्ष्मणनमि उत्तरु

इसी आधार से एक प्रति (के नं १७९) खीर है ।

३८३ हिममखसामात्र—हिमसमाचारः। पृ. नं. २। वा. १२×१, १३। अत्र-
मंथनं। विषय-स्तोत्रः। र. बाल ×। मे. बाल ×। पूर्णं। पृ. नं. ३३९। अ. मण्डलः।

निर्देश—इसी आधार से ४ प्रतिपत्तियाँ (१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०) दीर हैं ।

१८२ प्रतिमं ३। पदं १। मे कल \times ३। नं ३६। ग अणार।

३८३३ प्रति स ३। वष लं १२। मे वाल ४। से लं ११७ क। थ पयडार।

टिप्पणी—इसी प्रकार के २ अक्षरों (के अ १२१ ११) कीर हैं।

२५६४. अग्नि का जल कम होने का कारण यह है कि जलमय धूरी १५५ के अंश १६२.५ पर गिराव ।

विमेष—इसी कारण से एक प्रति (के अ १२) भीर है ।

३८५६ प्रसिद्धि २। वन नं १४। मि. वाप । दि. तं १९६० म्द मन्पाट।

विशेष—इसी आधार में एच जिन (पृ ३१७) भी रहें।

१२३६ अतस ई। वरुन १। मे वलनी १ ४। के नं १९ । प्र बन्नाट ।

विषय—इसी बजार में एक दिन (के अ ३१९) खीर है ।

१८१७ त्रिवेदसमाधत्तात्र-मित्रसेय विवाकरः वय न ४। वा ११ × ३ १४। वता-
संगुताः शिव-गोषः १ वय ४। न वय ४। पूर्णः ३ न १। य वय ४।

३८१८. प्रति सं० ७। वर्ष नं० २। दि० बल्लभ १९१६ आषाढ शुद्ध १ । पूर्ण। पृ० नं० ५।

प्र. बल्लभ ।

विशेष—बड़े बेटे ने लम्बा समय में ३२ कनोठ दिये हैं ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाकवीश्वरविरचित श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्ण । दुबे ज्ञानचन्द से जोधराज गोदीका

ने आत्मपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

३८६६ जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स० २६ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८११ । छ मण्डार ।

३६०० जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स० ४ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६ । घ मण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं— घटाकरण मंत्र, जिनपजरस्तोत्र पत्रों के दोनों विनारो पर सुन्दर बेलबूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

३६०१ जिनसहस्रनामटीका । पत्र स० १२१ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६३ । क मण्डार ।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी ।

३६०२ जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर । पत्र स० १८० । आ० १२×७ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १६४ म आपाठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १६२ । क मण्डार ।

३६०३ प्रति स० २ । पत्र स० ४ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८१० । छ मण्डार ।

३६०४ जिनसहस्रनामटीका—अमरकीर्ति । पत्र स० ८१ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८८४ पीप सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १६१ । अ मण्डार ।

३६०५ प्रति स० २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १७२५ । वे० स० २६ । घ मण्डार ।

विशेष—बघ गोपालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६०६ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० २०६ । छ मण्डार ।

३६०७ जिनसहस्रनामटीका । पत्र स० ७ । आ० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र

२० काल × । ले० काल स० १८२२ आषाढ़ । पूर्ण । वे० स० ३०६ । ज मण्डार ।

३६०८ जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम । पत्र स० १६ । आ० ७×६ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल स० १६५६ । ले० काल स० १६८४ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० स० २१० । छ मण्डार ।

३६०९ जिनोपकारस्मरण । पत्र स० १३ । आ० १२३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८७ । क मण्डार ।

३६१ प्रति स० ५। पत्र से १०। ले० काल X। वे से २१२। क मन्वार।

३६११ प्रति सं० ३ । पृष्ठ सं० ४ । नि. काल × । वि. सं० १९ । अ. मन्थार ।

विशेष—इसी गण्डार में ७ प्रतिमा (वे सं १ ७ से ११३ तक) पाए हैं ।

३११० यमोदाराविपाद --- । पञ्च लं ३ ४ । या १३४७३ इव । भाषा-श्रुत । विषय-

स्रोत : ए' बाल X। के' बाल तं इवचर न्येयु मरी च। पूर्वः। के' तं २३३। क' मन्वार ।

निवेदन—११ व बार एबीआर मन्त्र सिद्धा हुआ है। अन्त में जायदराज को समाधि भरस पाठ तथा

२१८ बार श्रीमद्भक्तप्रसाद कर्माचार्योपस्थितः । सह पाठं लिख्यते ।

३३१३, प्रति सं २। पक्ष सं १। नि. काल X। नि. सं २४४। क. न्याय।

३१४. समोच्चारणम्—। पञ्च १। या ११×४५ इव। जम्बा जिह्वा। निम्न-स्थान।

१ काश × । २ काश × । पूर्वा । ३ सं २१५३ । काश चकार ।

३१४ लकायकरीस्तोत्र—। पृष्ठ ३ । धा १२० × ६ इंच । बायाँ—सम्पूर्ण । बिन्दु—स्तोत्र ।

१ काव्य × । २ काव्य × । पूर्ण वि सं ११ । अथ कथार ।

विशेष—एतौष की संस्कृत में व्याख्या भी हो चुकी है। तथा सभी स्तरों पर यह सच ही है।
इस प्रकार।

३६१६ तीक्ष्णचक्षुसीसिन्धुवत् — पत्र लं ३३ । पा १९०३ इ व । उवा संभव । विष-

સ્ત્રીશ્ચ | ૯ જાન X | મે માસ થી ૧૭૨૫ | ગુરુ | બીજી | મે થી ૧૮૩ | ક વપ્તાર |

३१.१७ ब्रह्माग्नी सप्तमः— १। पा ४४ इव । माया विनी । विषय-साध ।

२ काल × । मे काल × । पूर्वा । मीरा । मे वी ५१३० । अथ मन्त्रः ।

३३१८ ऐववास्तवि—पद्मलवि । पत्र सं ३ । धा १ २४३ इव । जगत्-विश्व । विष्णु-श्रीव ।

२ अमल × १ के अमल × १ पूर्ण १ के २२५७ १५ अमल १

१६.१६. वैशाखमस्तोत्र—आषाढं समस्तमह । १५ वं ४ । या १९×६, ६५ । बादा—ईश्वर ।

विषय-सूची । ८ काल X । सौ अक्षरों में १७२५ माप सुदी ९ । पूर्ण : वे सं ३७ । अथ बम्बार ।

विशेष—इसी चण्डार में एक प्रति (१ ९ ३) भी है ।

२६२. प्रतिष्ठ २। पत्र ८ २७। ले. नम ८ १६६ विमानपुरी ४। पूर्ण। के. ८ २६६।

२५ अक्टूबर ।

टिप्पण—समयपूर्वक सड़क के लिये नगरपालिका में स्वयंसेवक गतिविधियाँ की थीं।

इसी सम्भार के २ अक्षरों (के ल १५४ १५५) पीर हैं ।

३६०१ प्रति म० ३। पत्र स० ८। ले० काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३। वे० स० १३४। छ

भण्डार।

३६२० प्रति स० ४। पत्र स० ८। ले० काल स० १६२३ वैशाख सुदी ३। वे० स० ७६। ज

भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७७) और है।

३६२३ प्रति स० ५। पत्र स० ६। ले० काल स० १७२५ फागुन सुदी १०। वे० स० ६। म

भण्डार।

विशेष—पाडे वीनाजी ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी। साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पीत दी गई हैं।

३६२४ प्रति स० ६। पत्र स० ७। ले० काल ×। वे० स० १८१। अ भण्डार।

३६२५ देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनदि। पत्र म० २५। मा० १३×५ इ च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र (दर्शन)। २० काल ×। ले० काल स० १५५६ भाद्रवा सुदी १२। पूर्ण। वे० स० १२३।

अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्रीरत्नकीर्ति-देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचन्द्र देवास्तदात्मनाये श्रीपयावास्तव्ये खण्डेलवालान्वये बीजुबागोत्रे सा मदन भार्या हरिसिणी पुत्र सा परिसराम भार्या भपी एतैसास्त्रमिद लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्त।

३६२६ प्रति स० ७। पत्र स० २५। ले० काल स० १६४४ भाद्रवा सुदी १२। वे० स० १६०। ज भण्डार।

विशेष—कुछ पत्र पानी मे थोडे गल गये हैं। यह पुस्तक प० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है।

३६२७ देवागमस्तोत्रभाषा—जयचन्द छावड़ा। पत्र स० १३४। मा० १२×७ इ च। भाषा—हिन्दी। विषय—न्याय। २० काल स० १८६६ चैत्र सुदी १४। ले० काल स० १६३८ साह सुदी १०। पूर्ण। वे० स० ३०६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३१०) और है।

३६२८ प्रति स० ७। पत्र स० ५ मे ८। ले० काल स० १८६८। वे० स० ३०६। ड भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०८) और है।

३६०६ देवाग्रमस्तोत्रमाया —। पम व ४। वा ११×७८ दव। वाया—हिन्दी वव। विपम-
स्तोत्र। २ कमल ×। मे कमल ×। पूर्ण। (द्वितीय परिच्छेद तव) के सं १७। क मन्धार।

विशेष—माय प्रकरण किया हुआ है।

३६०७ देवाग्रमस्तोत्रवृत्ति—विजयसेकसुरि के शिष्य कानुमा। पम व १। वा ११× १३।
वाया संस्कृत। विपम—स्तोत्र। २। कमल ×। मे कमल ५। १ १४ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। के सं ११६। क
मन्धार।

विशेष—यति उत्कृष्ट टीका सहित है।

३६३१ कमलचन्द्रमन्त्र—धर्मचन्द्र। पम व १। वा ११×४६ दव। वाया—वाहव। विपम-
स्तोत्र। २ कमल ×। मे कमल ×। पूर्ण। के सं २७२। क मन्धार।

विशेष—पुरी प्रति भिन्न प्रकार है—

बीरचन्द्रमन्त्र । सदा खं—

कल्लो नवर्ष तिमात्र विचक्र सधराव वस्तुवाही ।
विस्तकल्लुवरो स वा भविष्य को ईश ब्रह्म सवी ।
सम्मवैतल्लमल्लसखीसवीईको मुनीक्षां वरो पद्मसर्प
स नन्दुत सविमको तिहो वरं कुन्दवी ॥१॥

विष्णुबाला खं—

देवतां देवा नमोस्तु भारतीय संवाक्यम् ।
कुन्दोको वापहीरात्र विष्णुबाला लोहीबाल ॥२॥

कुन्दवमन्त्र खं—

नरी मुचसं नै बभारभरपन्थो वरपतिपथे पर्वरोमकथे ।
वरी वस्तु सिस्ती नम्बिनु बीवी बुही वाकचरिता कुन्दवबीवी ॥३॥

वाहीखं—

कथस ववावन्वीवी जीवो परमात्मसह कथम्भि ।
कथिन् भवसु वहीरो कथनको पथो मुनीवरी ॥४॥

कामावधारणं—

विष्णुस कमवीर्य धार्तरैरु धार्द्रिमुष्णसु कथयन्निवात । ॥१॥
सिस्तसु मल्लेख कथसु वल्लेख कथीकथेख मुहातरकेख ॥२॥
विष्णु—तन्त्रकथुरेख कुम्भस केकेख मुदावपूरैख ॥३॥
कथसु कथैरु बीधसु बीधसु कथयन्नि मुनेख नम्बिनु वृत्त ॥४॥
वितोद वनेख कथमलधारैख ईवीवपूरैख वीरवचरसैख ॥५॥

जसाचडेजाण भव्वाज्जणेभाण भत्ताजईभाण भत्तासुहभण ॥६॥

धम्मदुकदेण सद्धम्मचदेण एम्मोत्थुकारेण भत्तिव्वभारेण ॥

त्थुउ भरिट्ठेण ऐमीवि तित्थेण दासेण वूहेण सक्कुज्जमत्तेण ॥८॥

द्वात्रिंशत्यय कमलवध ॥

भार्याछंद—

कोहो सोहोचत्तो भत्तो भजईण सासणे खीणो ।

मा भमोहवि खीणो मारत्थी ककणो छेत्ती ॥६॥

भुजगप्रयात्तछंद—

मुचित्तो वितित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसोहो विईसो ।

मुथम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसो विरामो विभामो विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

भार्याछंद—

सम्मद सणणण सव्वारित्त तहे वसु णाणो ।

चरइ चरावड घम्मो चदो भविपुण्ण विव्वामो ॥११॥

मीत्तिकदामछंद—

तिलग हिमाचल मालव भग वरव्वर केरल वण्णड वग ।

तिलात्त मल्लिग कुरगडहलल कराडम गुज्जर डड तमाल ॥१२॥

सुपोट भवति विरात भवीर सुतुषक तुरुक्क वराड सुवीर ।

भरुयल दक्खण पूरवदेस सुणागवचल सुकुभ लमेस ॥१३॥

चळड गळड सुककणलाट, सुवेद सुभोट सुदव्विड राट ।

सुदेस विदेसह भ्राचइ राम, विवेक विचक्खण पूजइ पाभ ॥१४॥

सुचक्खल पोणपमोहरि णारि, रणक्कण रोउर पाइ विघारि ।

सुविग्गम भंति भहाउ विभाउ, सुगावइ गीउ भणोहरसाउ ॥१५॥

मुउज्जल मुत्ति भहीर पवाल, सुपूरउ णिम्मल रगिहि वाल ।

चउक्क विउप्परि घम्मविचद वधाम्मउ भक्खहि वारु सुभद ॥१६॥

भार्याछंद—

जइ जणदिसिवर सहिभो, सम्मदिट्ठि साव भाइ परि धारिउ ।

जिरणघम्मभवण्णभो विस भंल भकरो जभो जभइ ॥१७॥

समिप्यसी शृङ्ग—

यस रतिनु विवाह सहायक हितस्य सत्वात् समुदायरी बाधुर्न ।
 सम्पत्ती समुदायरी तु सम्पत्तयुक्तं वाच्यतेन नृप आरुतिनायक ॥२५॥
 अहं सम्पत्ती वाच्यतावाप्य, हस्तवन्मा नरा सम्पत्ता वस्य ।
 वाच्य वरिणसि इतिथी विम्वरी सम्पत्तयुक्तं यथो विता इतिम्वरी ॥२६॥

नमो भगवते वासुदेवाय—

भुल्लु अथवाअथर वाक्क वणिक्क अथम विठ्ठलर ।
 वल्लु अथवाअथर अथल्लु अथल्लु अथम अथ वल्लु ।
 वीळि अथल्लु अथम अथल्लु अथल्लु अथल्लु ।
 अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु ।
 अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु ।
 अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु ।
 अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु ।
 अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु अथल्लु ।

३३३२ भिषगुणितसप्तह—। १५ वं ७। या ३५३३ १५५। बाला-वस्तुन हिन्दी। विवर
स्वीय। २५ कल × ३५ कल × ३५ वं ३। ३५ कल × ३५

विशेष—निम्न बाटों का संग्रह है ।

बरा बरब—	बंरुन	—
छोटा बरब—	हिरी	मुबदन
मृदकल बीबीही—	"	×
बैसीकलबल—	"	करब (१ मब ह)
मलिकल पिमि—	बंरुन	×

३६३ निर्वासनप्रस्तावः—। वषर्त्तु १। या १९५२ इव । आवा-प्राप्त । विद्य-स्यव ।
४ काल ×। मे काल ×। पूर्ण । मे र्त्तु १९५२। वा जगत् ।

विशेष—ब्रह्मगीर् विधानं कल्याणक पूजा यी है ।

निर्देश—कृपया सही उत्तर लिखें।

३६३६. प्रति स० ४ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार ३ प्रतिपा (वे० स० १३६, २५६ २५६/२) शीर है ।

३६३७. प्रति स० ५ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ४०३ । ज मण्डार ।

३६३८. प्रति स० ६ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १८६३ । ट मण्डार ।

३६३९ निर्वाणकाण्ठटीका । पत्र स० २४ । मा० १०×५ इच्च । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६ । ख मण्डार ।

३६४० निर्वाणकाण्ठभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र स० ३ । मा० ६×६ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल स० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७५ । ड मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ अपूर्ण प्रतिपा (वे० स० ३७३, ३७४) शीर है ।

३६४१ निर्वाणभक्ति । पत्र स० २४ । मा० ११×७ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८२ । क मण्डार ।

३६४२ निर्वाणभक्ति । पत्र स० ६ । मा० ६३×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०७५ । ट मण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है ।

३६४३ निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र । पत्र स० ६ । मा० ८×६ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल स० १६२३ मासोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० । ज मण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र । पत्र स० ३ से ५ । मा० १०×४ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१७५ । ट मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दो हुई है ।

३६४५ नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्नाथ । पत्र स० ८ । मा० ६३×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७०४ मादवा बुद २ । पूर्ण । वे० स० २३२ । ज मण्डार ।

विशेष—प० दामोदर ने शीरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—प० शाली । पत्र स० १ । मा० ११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वे० स० ३४० । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । द्वयक्षरी स्तात्र है । प्रदर्शन योग्य है ।

३६४७ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० १८३० । ट मण्डार ।

३३४८. नमिस्तमन—अपि शिव । पत्र नं १ । छा १ × ४४ ईंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तमन । १२ पत्र × । के पत्र × । पुरी । के नं १२३४ । अ. अष्टादश ।

विशेष—दीन सोर्षट्टर स्तमन भी है ।

३३४९. मयिस्तमन—अपि स्तामनगम्भी । पत्र नं १ । छा १ × ४४ ईंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तमन । १२ पत्र × । के पत्र × । पुरी । के नं १२३५ । अ. अष्टादश ।

विशेष—पुष्पा वैचिस्तमन भी है ।

३३५०. पञ्चदशपाण्डपाठ—द्वयद । पत्र नं १ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तमन । १२ पत्र
१ ३१ एचेंट पुरी ७ । के पत्र × । पुरी । के नं १२३६ । अ. अष्टादश ।

विशेष—पट्टि पञ्च पत्र विन्ध है—

प्राप्त—

वस्त्राग मात्रक लगी वस्त्र कुट्टर पुनर्द ।

वस्त्राग पुन वस्त्राग वस्त्र, पुनि पुन वस्त्राग शिव ॥१॥

अपस वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग ।

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग ॥२॥

प्राप्त—

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग—

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग

॥ वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग वस्त्राग ॥

३६४१ पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र स० ४ । प्रा० १०३४१ इव । भाषा-

संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७६६ पाण्डु । पूर्ण । वे० स० ३५ । अ भण्डार ।

३६४२ पञ्चमंगलपाठ—स्वयम्भू । पत्र स० ६ । प्रा० १०३४२ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८४४ कर्त्तिक गुदी २ । पूर्ण । वे० स० १०२ ।

विशेष—ग्रन्थ में तीस चौकीरी के नाम भी दिये हुए हैं । ये० गुग्गुलुगन्ध ने प्रतिनिधि की थी ।

इसी भण्डार में ३ प्रतिमा (वे० स० ६४७, ७७१, ६६०) मौजूद हैं ।

३६४३ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६३७ । वे० स० ६१४ । क भण्डार ।

३६४४ प्रति स० ३ । पत्र स० २३ । ले० काल × । वे० स० ३६४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति मौजूद है ।

३६४५ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८८६ श्रावण गुदी १५ । वे० स० ६१८ । क

भण्डार ।

विशेष—पत्र ४ खोया नहीं है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २३६) मौजूद है ।

३६४६ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १४५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २३६) मौजूद है ।

३६४७ पञ्चस्तोत्रसमग्र । पत्र स० ४३ । प्रा० १०४४ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१८ । अ भण्डार ।

विशेष—पाचा ही स्तोत्र टीका सहित हैं ।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१ एषीमाय	नागबन्धूरी	संस्कृत
२ कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्ति	"
३ विद्यापहार	नागबन्धूरी	"
४ भूपालचतुर्विधाति	आचार्य	"
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	—	"

३६४८ पञ्चस्तोत्रसमग्र । पत्र स० २४ । प्रा० ६४४ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८०० । अ भण्डार ।

३६४९ पञ्चस्तोत्रटीका । पत्र स० ४० । प्रा० १२४८ इव । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २००६ । क भण्डार ।

३६७१ परमात्मराजस्तोत्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० ३ । मा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ६६५ । अ भण्डार ।

अथ परमात्मराज स्तात्र लिख्यते

यन्नामसस्तवफलात् महता महत्यप्यष्टौ, विशुद्धय इहाशु भवति पूर्णा ।
 सर्वार्थसिद्धजनका स्वचिदेकमूर्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१॥
 यद्विधानवज्रहृन्नाम्नमहता प्रयाति, कर्माद्रयोति विषमा क्षतचूर्णता च ।
 अतातिगावरशुणा प्रकटाभयेयुर्भक्त्यास्तुवनमनिश परमात्मराज ॥२॥
 यन्मातृदोषवत्तनात्त्रिजगत्प्रदोष, श्रीकेवलोदयमनतमुखाब्धिमाशु ।
 सत श्रयन्ति परम भुवनार्च्य वद्य, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥३॥
 यद्दर्शनेनमुनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्पदार्थान् ।
 पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥४॥
 यद्भावनादिकरणाद्भवनाशानाच्च, प्रणश्यति कर्मरिपवोभवकोटि जाता ।
 अभ्यन्तरेऽत्रविविधा सकलाद्धैर्य स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥५॥
 सन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्थ, दुःकर्मदुर्मलचयाद्विमला भवति
 दक्षा जिनेन्द्रगणमृत्युपद लभते, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥६॥
 य स्वात्सरेतु विमल विमलाविवुद्धय, शुक्लेन तत्त्वमसम परमार्थरूप ।
 महत्पद त्रिजगता शरणा श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥७॥
 यद्विधानशुक्लपविताखिलकर्मक्षोभान्, हत्वा समाप्यशिवदा स्तवचन्दनार्चा ।
 सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजना स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥८॥
 यस्यास्ये सुगणिनो विधिनाचरति, ह्याचारयति यमिनो धरपञ्चभेदात् ।
 आचारसारजनितां परमार्थबुद्ध्या, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥९॥
 य ज्ञातुमात्मसुविदो यातिपाठकाश्च, सर्वाङ्गपूर्वजलधेर्येषु याति पार ।
 अन्याश्रयतिशिवदं परतत्त्वबीज, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१०॥
 ये साधयति वरयोगवलेन नित्यमध्यात्ममार्गनिरतावनपर्वतादौ ।
 श्रीसाधय शिवगते करम तिरस्र्य, भक्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥११॥
 रागदोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानपि च देह वर्जितः ।
 कर्मवानपि कुकर्मदूरगो, निश्चयेन भुवि य स नन्दतु ॥१२॥

आर्यभट्टाचार्यजी महाराज स्व स्व इहं साध्यमेवम् ।

[illegible]

मन्त्रं ध्यात्वा यत्नं करतुकरं तीर्थं वा वाहिनेषु ।

वसन्तीत्यं ह्यमरेष्टं नरभयवचनं उद्वुगमानवपुर्णं ॥

संस्कृत-विद्यायाः प्रवर्धनार्थं विद्युत्-प्रेषकः ।

॥१॥

॥३॥ निम्न वाक्य/वाक्यावली/प्रश्नों के विपरीत दिशा में ।

द्वेषो विरहश्चैव प्रीतिरुदयो ध्यायी इत्यादि लक्षणैश्च विज्ञेयः ॥१३॥

एवं श्री कात्यायनं वृत्तमप्युच्यते श्रीशंभुजीवितम्

मारे इत्ये विद्वत्ता नवदण्डपतिः मीमांसे धनवत् ।

सूः सप्तमोऽध्यायः सप्तविंशतः ॥१॥

म/मन्त्रेयी वसन्ता ब्रह्मनिष्ठपुण्ये वैष्णवानी च पुनः ॥१५॥

इति श्री भगवत्प्रीतिलङ्कारविनिर्दिष्ट परब्राह्मणसंख्योक्त लक्षणसंज्ञः ॥

३१६२ दशमस्कन्धपरिचयः । अथ नं ३ । आ ६४४ दृष्ट । जला-मंगुः । दिव-माथ ।

१. काल \propto दूरी \times द्रव्य के घनत्व \times गुरुत्वाकर्षण।

३१.६३. बरमाविहसलाभ— ११। यम नं ३। या ७२/१ दण्ड। बागा संभृत। विषय-भलाभ। १

बाल \times । न बाल \times । कुर्मी \times । न ११३ । अक्षर ।

३६.७५. प्रति स । वन र्द १ । नि वन x । र्द ३६ । स भव्यार ।

३६७३ प्रणि म ३। वष व २। नि वाम ४। वे व ३३२। व वषार ।

विषय—कृष्णचन्द्र शिन्हायका के प्रतिनिधि श्री श्री । इसी सम्भार के एक प्रति (के नं २११) और है ।

३६७६ परम्यामपुत्रात्—। यय नं ३। भा ११-८३ इय। भाषा-अंशुल। विषय-स्तोत्र।

१. बाल ५। के बाळ वं १२९७ भाषुल सुदी १४। पुण । वै भं ४३ । ह मयार ।

विशेष—हिन्दी कार्य भी दिया हुआ है ।

३६७७ परमार्थसागर—। पृष्ठ नं० ४। का. ११३४३० ह. प.। भाषा—संस्कृत। विषय—श्रीमद्।

२. काल \times । से काल \times । पूर्ण । के धी १ ४ । का जगत् ।

निर्देश—सूर्य की कल्पित की जाती है। प्रत्यक्ष रूप में कुछ लिखने के छ मन्त्र हैं।

३६३८ पाठसमूह पत्र न० ३६ । मा० ४३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १६२८ । अ भण्डार ।

निम्न पाठ है — जैन गायत्री उक्तं यस्मिन्नुत्तर, शान्तिस्तोत्र, एतौ भावस्ताय, शुभो गायत्री, ज्ञाय

३६७६ पाठसमूह । पत्र न० १० । मा० १२×७ इ च । भाषा-हिन्दी मस्युत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २०६८ । अ भण्डार ।

३६८० पाठसमूह—समूहकर्त्ता-जैतराम ब्राह्मण । पत्र न० ७० । मा० ११×७ इ च । भाषा-

हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ४६१ । क भण्डार ।

३६८१ पात्रेश्वरीस्तोत्र । पत्र न० १७ । मा० १०×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—५० श्लोक हैं । प्रत्न प्राचीन एवं मस्युत टीका सहित है ।

३६८२ पार्थिवेश्वरचिन्तामणि । पत्र न० ७ । मा० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल म० १८६० भादवा सुदी ८ । वे० स० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष—धृदावन ने प्रतिलिपि को थी ।

३६८३ पार्थिवेश्वर । पत्र न० ३ । मा० ७×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-त्रैदिक

माहित्य । २० काल × । ले० काल × । वे० म० १४८४ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३६८४ पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र । पत्र न० ३ । मा० ११×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १३६ । छ भण्डार ।

३६८५ पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र न० १ । मा० ६×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० २६८ । ख भण्डार ।

३६८६ प्रति स० ७ । पत्र न० ४ । ले० काल × । वे० स० ६२ । क भण्डार ।

३६८७ पार्श्वनाथ एवं बद्धमानस्तवन । पत्र न० १ । मा० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १४८ । छ भण्डार ।

३६८८ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र न० ३ । मा० १०×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लघु सामायिक श्री है ।

३६८६. पार्ष्णीमासस्तोत्र—। पत्र सं १९। पा १ × ४ $\frac{1}{2}$ ह.। भाषा—दीवृष्ट। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वे सं २३३। अ. बन्धार।

विशेष—कल्प कथित स्तोत्र है। यस्कर सुन्दर एवं मोटे हैं।

३६८७. पार्ष्णीमासस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १२ $\frac{1}{2}$ × ७ ह.। भाषा—कल्लुत। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वे सं ७९९। अ. बन्धार।

३६८८. पार्ष्णीमासस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १ $\frac{1}{2}$ × २ ह.। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वे सं ३९२। अ. बन्धार।

३६८९. पार्ष्णीमासस्तोत्रदीक्षा—। पत्र सं १ पा ११ × ३ $\frac{1}{2}$ ह.। भाषा—कल्लुत। विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वे सं ३४२। अ. बन्धार।

३६९०. पार्ष्णीमासस्तोत्रदीक्षा—। पत्र सं २। पा १ × ५ ह.। भाषा—कल्लुत। विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वे सं ३५७। अ. बन्धार।

३६९१. पार्ष्णीमासस्तोत्रभाषा—आत्मतत्त्व। पत्र सं १। पा १ × ३ $\frac{1}{2}$ ह.। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वे सं २३२। अ. बन्धार।

३६९२. पार्ष्णीमासस्तोत्र—। पत्र सं ४। पा १२ × २ ह.। भाषा—कल्लुत। विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वे सं ३२७। अ. बन्धार।

विशेष—अति कल्प कथित है।

३६९३. पार्ष्णीमासस्तोत्र—अष्टाशुनि राजसिद्ध। पत्र सं ४। पा ११ × ९ ह.। भाषा—कल्लुत। विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल सं १३७। पूर्ण। वे सं ७७। अ. बन्धार।

३६९४. प्रवृत्तस्तोत्र—। पत्र सं ७। पा १ × ५ ह.। भाषा—कल्लुत। विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वे सं १९। अ. बन्धार।

३६९५. आत्मतत्त्वस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १ × ४ ह.। भाषा—कल्लुत। विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल ×। पूर्ण। वे सं १४५३। अ. बन्धार।

३६९६. अष्टाशुनि राजसिद्ध—। पत्र सं १। पा ११ × ९ ह.। भाषा—कल्लुत। विषय—स्तोत्र। १ कल ×। ले कल सं १३७। पूर्ण। वे सं ७७। अ. बन्धार।

विशेष—श्री होरान्त के अष्टाशुनि के प्रतिबिम्ब की थी।

४००० भक्तामरस्तोत्र—मानतुगाचार्य । पत्र स० ८ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२०३ । अ मण्डार ।

४००१ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १७२० । वे० स० २६ । अ मण्डार ।

४००२ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७४५ । वे० स० १०१५ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४००३ प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० २२०१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय है । आ० ५×२ इ च है । इसके अतिरिक्त २ पत्र पुट्टों की जगह हैं । २×१३ इ च चौड़े पत्र पर रामोकार मन्त्र भी है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

४००४ प्रति स० ५ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १७५५ । वे० स० १०१५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ६ प्रतियाँ (वे० स० ४४१, ६५६, ६७३, ८६०, ६२०, ६५६, ११३५, ११८६, १३६६) और हैं ।

४००५ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८६७ पौष सुदी ८ । वे० स० २५१ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । मूल प्रति मधुरादास ने निमखपुर में लिखी तथा उदैराम ने टिप्पण किया । इसी मण्डार में तीन प्रतियाँ (वे० स० १२८, २८८, १८५६) और हैं ।

४००६ प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० ७४ । अ मण्डार ।

४००७ प्रति स० ८ । पत्र स० ६ में ११ । ले० काल स० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । अ पूर्ण । वे० स० २४६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १२ प्रतियाँ (वे० स० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) और हैं ।

४००८ प्रति स० ९ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वे० स० ७३८ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी मण्डार में ७ प्रतियाँ (वे० स० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३९) और हैं ।

४००९ प्रति स० १० । पत्र स० ९ । ले० काल स० १८२२ चैत्र बुदी ९ । वे० स० १३४ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ६ प्रतियाँ (वे० स० १३४ (४) १३६, २२६) और हैं ।

४०१० प्रति स० ११ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १७० । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार एक प्रति (वे० स० २१५) और है ।

४०११ प्रति सं १९। पत्र सं २। मे वल \times ३६० सं १७५ अ मन्थार।

४१२ प्रति सं १३। पत्र सं १६। मे वल सं १७७ पीप बुटी १। के सं २६३। अ
विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिमा (के सं २६२ ३७२ २२३) थीर है।

४१३ प्रति सं १४। पत्र सं ३ मे ३५। मे वल सं १८३२। धनुर्वा। के सं २१३। ट

मन्थार।

विशेष—इस प्रति के ३२ श्लोक हैं। पत्र १: २ ४ ६ ७ ८ १६ अथ वही है। अति हिन्दी भा-
षा लक्षित है। इसी मन्थार में ४ प्रतिमा (के सं १६३४ १७०४ १८६२, २ १४) थीर हैं।

४१४ मल्लामरलाज्जुति—अ राकमल। पत्र सं ३। पा ११० \times ६ इ। भाषा—संस्कृत।

विशेष—तोष। २ का सं १९९६। मे वल सं १७९१। पुल। के सं १ ३३। अ मन्थार।

विशेष—अथ नी टीका बीचपुर में मन्थार वीथालय में भी लक्षित। प्रति वही लक्षित है।

४१५ प्रति सं २। पत्र सं ४०। मे वल सं १९४ पाखोड बुटी २। के सं १६७। अ

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं १४३) थीर है।

४१६ प्रति सं ३। पत्र सं ४। मे वल सं १९११। के सं २४४। अ मन्थार।

४१७ प्रति सं ४। पत्र सं १४६। मे वल \times । के सं ६२। अ मन्थार।

विशेष—अथ वल वल वल के मल्लाल वल वल वल के प्रतिनिधि वराई।

४१८ प्रति सं ५। पत्र सं ३२। मे वल सं १७२४ पीप बुटी १। के सं २२७। अ

मन्थार।

४०१९ प्रति सं ६। पत्र सं ४७। मे वल सं १९२ पीप बुटी २। के सं १२। अ

मन्थार।

विशेष—भाषांतर के व लवार्णव के मेविवार वीथालय के वल वल वी वल वल के प्रतिनिधि वी वी।

४० प्रति सं ७। पत्र सं ४१। मे वल सं १७३ वीप बुटी ११। के सं १२। अ

मन्थार।

विशेष—इतिहासक वल वल वी व लल वल के वल वल वल वल वल के प्रतिनिधि वी वी।

४२१ प्रति सं ८। पत्र सं ४८। मे वल सं १९५ वल वल बुटी १। के सं २। अ

मन्थार।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १६८८ वर्षे फागुण बुदी ८ शुक्रवार नक्षत्र अनुराध व्यतिपात नाम जोगे महा-
राजाधिराज श्री महाराजाराव छत्रसालजी वृ दीरान्ये इवपुस्तक लिखाइत । साह श्री स्योपा तत्पुत्र सहलान तत् पुत्र
साह श्री धराराज भाई मनराज मात्रे पटवोड जाती नघेरवान इव पुस्तक पुनिमय दीयते । लिखत जोसी नराइण ।

४०००. प्रति स० ६ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १७६१ फागुण । वे० स० ३०३ । अ मण्डार ।

४०२३ भक्तामरस्तोत्रटीका—द्वर्पकीर्तिसूरि । पत्र स० १० । मा० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । ३० रा० २७६ । अ मण्डार ।

४००४ प्रति स० ० । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६४० । वे० स० १६२५ । अ मण्डार ।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है ।

४०२४. भक्तामरस्तोत्रटीका । पत्र स० १२ । मा० १०×८½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६७ । अ मण्डार ।

४००६ प्रति स० ० । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० १८४४ । अ मण्डार ।

विशेष—पत्र चिह्ने हुये हैं ।

४००७ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८७२ पीप बुदी १ । वे० स० २१०६ । अ

मण्डार ।

विशेष—मन्नालाल ने शीतलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ११६८) भी है ।

४०२८. प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल × । वे० स० ४६६ । अ मण्डार ।

४०२६ प्रति स० ५ । पत्र स० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १४६ ।

विशेष—३६वें काव्य तक है ।

४०३० भक्तामरस्तोत्रटीका । पत्र स० ११ । मा० १२½×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल स० १६१८ चैत बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १६१२ । अ मण्डार ।

विशेष—मध्य भाग है । संस्कृत तथा हिन्दी में टीका दी हुई है । मगही मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अ मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० २०८२) भी है ।

४०३१ भक्तामरस्तोत्र अष्टमित्र सहित । पत्र स० २७ । मा० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल स० १८४३ बैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० २८५ । अ मण्डार ।

विशेष—वी कृष्णसुन्दर ने कम्पूर में प्रतिनिधि की थी। धर्मिक २ छ ५८ अक्षरों का स्तोत्र निम्न
 हुआ है। रती कृष्णार के एक प्रति (के ल १२१) नीचे है।

४०३३. प्रति स० १। पत्र नं० ११। के नाम नं० १११ बीजाब्द सुदी ७। के लं० १२१। क
 मन्दार।

विशेष—वीजिपत्र में पुष्पीरामकन्दर के प्रतिनिधि की थी।

४०३३. प्रति स० ३। पत्र नं० २२। के नाम नं० १७। के लं० १७१। क मन्दार।

विशेष—कमो के विषय की है।

४०३४. प्रति स० ४। पत्र नं० २३। के नाम नं० १७२ बीजाब्द सुदी ११। के लं० १। क
 मन्दार।

विशेष—यं लवाराय के द्विज कुल के प्रति नि की थी।

४०३५. अक्षरमरसोत्रभाषा—अक्षरमरसोत्रभाषा। पत्र नं० १४। या १९३×२ इंच। भाषा—
 हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र काल नं० १७ अक्षर सुदी ११। पूर्ण। के लं० २४१।

विशेष—क मन्दार ने २ प्रति (के लं० २४१, २४१) नीचे है।

४०३६. प्रति स० ३। पत्र नं० २३। के नाम नं० १८१। के लं० २४१। क मन्दार।

४०३७. प्रति स० ३। पत्र नं० २३। के नाम नं० १८२। के लं० २४२। क मन्दार।

४०३८. प्रति स० ४। पत्र नं० २३। के नाम नं० १८४ बीजाब्द सुदी ११। के लं० १७१। क
 मन्दार।

४०३९. प्रति स० २। पत्र नं० २३। के नाम नं० १८५। के लं० १७१। क मन्दार।

४०४०. अक्षरमरसोत्रभाषा—ईश्वराम। पत्र नं० १५। या १८६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
 स्तोत्र। र काल नं० १८। के नाम नं० १८६। के लं० १८२। क मन्दार।

४०४१. प्रति स० ३। पत्र नं० २४। के नाम नं० १८७। के लं० १८३। क
 मन्दार।

विशेष—वीजिपत्र में कन्दर के प्रतिनिधि की गयी थी।

४०४२. प्रति स० ३। पत्र नं० २४। के नाम नं० १८८। के लं० १८३। क मन्दार।

४०४३. अक्षरमरसोत्रभाषा—ईश्वराम। पत्र नं० २४। या १८७×२ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
 स्तोत्र। र काल नं० १८। के नाम नं० १८८। के लं० १८३। क मन्दार।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। पहिले मूल फिर गगाराम कृत सज्ज्या, हेमचन्द्र कृत पद्य, कही २ भाषा तथा

इसमें प्रागे कृद्धि मन्त्र सहित है।

अन्त में लिखा है—साहजी जानजी रामजी उनके २ पुत्र सोलालजी, लघु भ्राता चैतन्यजी ने कृषि

भागवन्दजी जती को यह पुस्तक पृण्याय दिया सु० १८७२ का साल में ककीड़ में रहे छे।

४८४४ अक्षामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ६ से १० । भा० १०×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

स्तोत्र । १० काल × । ले० काल स० १७८७ । पूर्ण । वे० स० १२६४ । अ मण्डार ।

४८४५ प्रति स० ७ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८२८ मगसिर बुदी ६ । वे० स० २३६ । छ मण्डार ।

मण्डार ।

विशेष—सूधरदास के पुत्र के लिये मयूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४८४६ प्रति स० ३ । पत्र स० २० । ले० काल × । वे० स० ६५३ । छ मण्डार ।

४८४७ प्रति स० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १८६२ । वे० स० १५७ । छ मण्डार ।

विशेष—जयपुर में पत्र लाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४८४८ प्र त स० ५ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८०१ चैत्र बुदी १३ । वे० स० २६० । छ मण्डार ।

मण्डार ।

४८४९ अक्षामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ३ । भा० १०½×७½ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५२ । छ मण्डार ।

४८५० भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्र—भूपाल कृषि । पत्र स० ८ । भा० ६½×४½ इंच । भाषा-

सम्भृत । विषय-स्तोत्र । १० काल × । ले० काल स० १८४३ । पूर्ण । वे० स० ४१ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । अ मण्डार में एक प्रति (वे० स० ३२३) और है ।

४८५१ प्रति स० ७ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० २६८ । छ मण्डार ।

४८५२ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ५७२ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ५७३) है ।

४८५३ भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर । पत्र स० १४ । भा० ६½×४½ इंच । भाषा-सम्भृत ।

विषय-स्तोत्र । १० काल × । ले० काल स० १७७८ भाववा बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ६ । अ मण्डार ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र के पठनार्थ ५० आशाधर ने टीका लिखी थी । ५० हीराचन्द के शिष्य चोसचन्द्र के पठनार्थ मौजमाबाद में प्रतिलिपि कराई गई ।

४०५६ महर्षिस्तवन । पत्र स० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्त मे पूजा भी दी हुई है ।

४०६० प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल स० १८३१ चैत्र बुदी १४ । वे० स० ६११ । अ भण्डार ।

विशेष—मस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

४०६१ महामहिम्नस्तोत्र । पत्र स० ८ । आ० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल स० १६०६ फागुन बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ३११ । ज भण्डार ।

४०६२ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ३१५ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति मस्कृत टीका सहित है ।

४०६३ महामहर्षिस्तवनटीका । पत्र स० २ । आ० ११२×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८ । छ भण्डार ।

४०६४ महालक्ष्मीस्तोत्र । पत्र स० १० । आ० ८३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६५ । ख भण्डार ।

४०६५ महालक्ष्मीस्तोत्र । पत्र स० ६ मे ६ । आ० ६×३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

वैदिक माहित्य स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७८२ ।

४०६६ महात्रीराष्ट्रक—भागचन्द्र । पत्र स० ४ । आ० ११३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी प्रति में जिनोपदेशोपकारम्भर स्तोत्र एवं आदिनाथ स्तोत्र भी हैं ।

४०६७ महिम्नस्तोत्र । पत्र स० ७ । आ० ६×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६ । झ भण्डार ।

४०६८ यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्ति । पत्र स० १ । आ० १२×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८२२ पीप बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ५८६ । क भण्डार ।

४०६९ युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र । पत्र स० २ से १४ । आ० ११×७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम तीन पत्रों में पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं । इसमें आगे महिम्नस्तोत्र हैं ।

४०७० राधिकानाममाळा—। पत्र सं १। पा १ २४४ दृष। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन।

१ पत्र X। मे पत्र X। पृष्ठ। वे सं १४५१। छ मन्थार।

४०७१ रामचन्द्रस्तवन—। पत्र सं ११। पा १ २४४ दृष। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ पत्र X। मे पत्र X। पृष्ठ। वे सं १४५१। छ मन्थार।

विशेष—दक्षिण— श्रीरामचन्द्रमाणसीहिवादी गारोली श्रीरामचन्द्रस्तवन श्रीरामचन्द्र ॥ १ पत्र १।

४०७२ रामचरीसी—कामाक्षि। पत्र सं १। पा १ २४४ दृष। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ पत्र X। मे पत्र सं १४५१ प्रथम पत्र मुद्रा ७। पृष्ठ। वे सं १४५१। छ मन्थार।

विशेष—अथ वीरकरना (पुष्करवा) अथ के के। गणकला में यदुत्तु अथ के प्रतिनिधि की की।

४०७३ रामस्तवन—। पत्र सं ११। पा १ २४४ दृष। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १

पत्र X। मे पत्र X। पृष्ठ। वे सं १४५१। छ मन्थार।

विशेष—११ वे पत्रे पत्र मुद्रा ११। पत्र मीने की घोर से पत्रे पत्र ११।

४०७४ रामस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १ २४४ दृष। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १

पत्र X। मे पत्र सं १४५१ प्रथम पत्र मुद्रा ११। पृष्ठ। वे सं १४५१। छ मन्थार।

विशेष—श्रीरामचन्द्र मीनेका के प्रतिनिधि करवासी की।

४०७५ कल्याणस्तोत्र—। पत्र सं १। पा १ २४४ दृष। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १

पत्र X। मे पत्र X। पृष्ठ। वे सं १४५१। छ मन्थार।

४०७६ कर्कसीस्तात्र—पद्मप्रसन्न। पत्र सं १। पा १ २४४ दृष। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।

१ पत्र X। मे पत्र X। पृष्ठ। वे सं १४५१। छ मन्थार।

विशेष—अथ श्रीरामचन्द्र स्तोत्र स्तोत्र है। इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं १ २५) मीने है।

४०७७ प्रति—। पत्र सं १। मे पत्र X। वे सं १४५१। छ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वे सं १ २५) मीने है।

४०७८ प्रति सं १। पत्र सं १। मे पत्र X। वे सं १४५१। छ मन्थार।

विशेष—अथ श्रीरामचन्द्र स्तोत्र स्तोत्र है।

४०७९ कर्कसीस्तात्र—। पत्र सं ४। पा १ २४४ दृष। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १

पत्र X। मे पत्र X। पृष्ठ। वे सं १४५१। छ मन्थार।

विशेष—इ मन्थार में एक मूली प्रति (वे सं १ २५) मीने है।

-स्तोत्र साहित्य १]

४०८०. लघुस्तोत्र । पत्र, मं० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६६ । अ मण्डार ।

४०८१. वज्रपजरस्तोत्र । पत्र स० १ । आ० ८^३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । वे० स० ६६८ । अ मण्डार ।

४०८२. प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० १६१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र में होम का मन्त्र है ।

४०८३. वद्धमानद्वात्रिंशिका—सिद्धसेन विद्वापर । पत्र स० १२ । आ० १२×५^३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८६७ । अ मण्डार ।

४०८४. वद्धमानस्तोत्र—आचार्य गुणभद्र । पत्र स० १० । आ० ४^३×७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १६३३ । आमोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १४ । अ मण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृत उत्तमपुराण की राजा श्येणिक की स्तुति है तथा ३३ श्लोक हैं । सग्रहकर्ता श्री फतेहलाल शर्मा है ।

४०८५. वद्धमानस्तोत्र । पत्र स० ५ । आ० ७^३×६^३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३२८ । अ मण्डार ।

विशेष—पद्य ३ से आगे निर्वाणकाण्ड गाथा भी है ।

४०८६. धनुषधारापाठ । पत्र स० १६ । आ० ८×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६० । अ मण्डार ।

४०८७. धनुषधारास्तोत्र । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ९७६ । अ मण्डार ।

४०८८. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७१ । अ मण्डार ।

४०८९. विद्यमानवीसतीर्थकरस्तवन—मुनि टीप । पत्र स० १ । आ० ११×४^३ इ च । भाषा-हिंदी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६३३ ।

४०९०. विषाणहारस्तोत्र—धनजय । पत्र स० ४ । आ० १२^३×६ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १८१२ । फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ६६६ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी ली हुई है । इसकी प्रतिलिपि पं० मोहनदासजी ने अपने मित्र्य शुमालीरामजी के पठनार्थ क्षेमकरणजी की पुस्तक में बसई (बम्सी) नगर में शान्तिनाथ चैत्यालय में की थी ।

४०६१ अति स ३। पय न ४। ले गल \times । के न १७६। छ मय्यार।

४०६२ अति स ३। पय न १२। ले गल \times । के न १२२। छ मय्यार।

विशेष—विद्विजिक्कीय की है।

४०६३ अति स ४। पय न १२। ले गल \times । के न १२११। छ मय्यार।

विशेष—अति संसुत टीका बहिष है।

४०६४ विद्यापहारस्तात्रटीका—जगन्नाथसूर। पय न १४। वा १ \times ४२ हय। मता-
संसुत। विषय—स्तोत्र। २ गल \times । न गल \times । पुर्न। के न ३। छ मय्यार।

४०६५ अति स ३। पय न ८। ले १६। ले गल न १७०० मयवा पुो ६। के न ८०६।
छ मय्यार।

विशेष—मोक्षमात्र मकर म न चोमकम ने इकरी अतिमिति की की।

४०६६ विद्यापहारस्तात्रमाया—पद्माज्ञात्र। पय न ११। वा १२२ \times २ हय। मता—हिन्दी।
विषय—स्तोत्र। २ गल न १६४ मसुत पुो ११। ले गल \times । पुर्न। के न ११४। छ मय्यार।

विशेष—ही मय्यार मे एक अति (के न ११२) थीर है।

४०६७ विद्यापहारस्तात्रमाया—मय्यककीति। पय न १। वा ११ \times २१ हय। मता—हिन्दी।
विषय—स्तोत्र। २ गल \times । न गल \times । पुर्न। के न १२२। छ मय्यार।

४०६८ वीररामस्तोत्र—हैमचन्द्राचार्य। पय न २। वा २२ \times ४ हय। मता—संसुत। विषय-
स्तोत्र। २ गल \times । ले गल \times । मसुत। के न २२०। छ मय्यार।

४०६९ वीररामस्तोत्र—। पय न ३। वा १ \times ४२ हय। मता—संसुत। विषय—स्तोत्र। २
गल \times । न गल \times । पुर्न। के न २२२। छ मय्यार।

४०७० वीररामस्तोत्र—। पय न १। वा २२ \times ४ हय। मता—संसुत। विषय—स्तोत्र। २
गल \times । ले गल न १७०६। पुर्न। के न १२२०। छ मय्यार।

४०७१ वीररामस्तोत्र—महमद। पय न १। वा २ \times २ हय। मता—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।
२ गल \times । ले गल \times । पुर्न। के न २२२६। छ मय्यार।

विशेष—“कुली मयरा के काई मने” ११ मीर है।

४०७२ वीररामस्तोत्र—मुसलमान। पय न १। वा २ \times २ हय। मता—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २
गल \times । ले गल न १२। पुर्न। के न २२२। छ मय्यार।

४१०३ षट्पाठ । पत्र स० ६ । आ० ४×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७ । अ मण्डार ।

४१०४ शान्तिघोषणास्तुति । पत्र स० २ । आ० १०×४^३ इ च । भाषा—मस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १५६६ । पूर्ण । वे० स० ८३४ । अ मण्डार ।

४१०५ शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । २० काल स० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२३५ । अ मण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ का एक स्तवन और है ।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन । पत्र स० १ । आ० १०^३×४^३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६५६ । अ मण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के पूर्वभव की कथा भी है ।

अन्तिमपद्य—

कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ गुण हिय मे धरे ।

रोग सोग सताप दूरे जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ॥

इति शान्तिनाथस्तोत्र सपूर्ण ।

४१०७ शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिमद्र । पत्र स० १ । आ० ६^३×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०७० । अ मण्डार ।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते—

काव्य—

नामा विचित्र भवदु खराशि, नामा प्रकार मोहाग्निपाश ।

पापानि दोषानि हरति देवा, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ॥१॥

ससारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिबध ।

ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ॥२॥

काम च क्रोध मायाविलोभ, चतु कपार्य इह जीव बध ।

ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ॥३॥

नोद्वान्महीने कठिनस्थचित्ते, परजीवनिदा मनसा च वाचा ।

ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ॥४॥

चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्न परिपालनीयं ।

ते बध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ॥५॥

आगतं तर्जनीं बुद्ध्या बध्नीयं ही शान्तिदीपं बहुभङ्गम् ॥
 ते नैव श्रेष्ठेन वैश्वदेवेन इह जन्मदरणीं तव शान्तिवार्ध ॥१॥
 वज्रध्वजाय परशारणेया, धार्यद्विजया धार्यवर्धने ।
 ते नैव श्रेष्ठेन वैश्वदेवेन इह जन्मदरणीं तव शान्तिवार्ध ॥२॥
 बुध्दितु मित्राणि नमिष्वर्धे इह जन्मदरणीं तव शान्तिवार्ध ।
 ते नैव श्रेष्ठेन वैश्वदेवेन इह जन्मदरणीं तव मा न्मात्र ॥ ॥

अर्धेन वरति किम् भी शान्तिमात्रादिभ्याम्
 धार्यवर्धनायै वाग्यारोहणाय ।
 बुध्दितु मित्राणि नमिष्वर्धे इह जन्मदरणीं तव मा न्मात्र ॥ ॥

— — — — — ॥ १॥

इति श्रीशान्तिमात्रास्तोत्रं समाप्तम् ॥ पुनः ॥

४१८ शान्तिमात्रास्तोत्रम्—। पद्य सं १। मा १५४ इव। माता-मन्दुत। विषय-स्तोत्र।
 २० वज्र ×। मे वज्र ×। पुनः। मे सं १०१२। अन्तर।

४१९ शान्तिमात्रास्तोत्रम्—। पद्य सं १। मा ११५२ इव। माता-मन्दुत। विषय-स्तोत्र।
 माता ×। मे वज्र ×। पुनः। मे सं ११२। अन्तर।

४१९ शान्तिमात्रास्तोत्रम्—। पद्य सं ३। मा ११ × ११ इव। माता-मन्दुत। विषय-स्तोत्र।
 २ वज्र ×। मे वज्र ×। पुनः। मे सं ११२। अन्तर।

४१९ शान्तिमात्रास्तोत्रम्—। पद्य सं १। मा ११५२ इव। माता-मन्दुत। विषय-स्तोत्र।
 २ वज्र ×। मे वज्र ×। पुनः। मे सं ११२। अन्तर।

४१९ शान्तिमात्रास्तोत्रम्—। पद्य सं २। मा ११ × ११ इव। माता-मन्दुत। विषय-स्तोत्र।
 वज्र ×। मे वज्र सं १२ × वज्र पुनः। पुनः। मे सं ११२। अन्तर।

विषय—स्तोत्रं तत्पुनः टीका तद्विषयम् ।

४१९ शान्तिमात्रास्तोत्रम्—। पद्य सं १। मा ११ × ११ इव। माता-मन्दुत। विषय-
 स्तोत्र। २ वज्र ×। मे वज्र ×। पुनः। मे सं ११२।

विषय—१० पद्यम् ।

४११४ समवशरणस्तोत्र । पत्र स० ८ । आ० १०×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल स० १७६८ फागुन सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० २६६ । छ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

प्रारम्भ—
धूपभाद्यानभिवशान् वदित्वा वीरपश्चिमजिनेन्द्रान् ।
भवत्या नतान्तमाग स्तोत्रे तन्ममवशरणणि ॥२॥

४११५ समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि । पत्र स० २ मे ६ । आ० ११½×५ इ च । भाषा—
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६७ । अ मण्डार ।

४११६ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ७७८ । अ मण्डार ।

४११७ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १७८५ माघ बुदी ५ । वे० स० ३०५ । अ
मण्डार ।

विशेष—प० देवेन्द्रकीर्ति के लिप्य प० मनाहर न प्रतिलिपि की थी ।

४११८ ममवजिनस्तोत्र—मुनि गुणनन्दि । पत्र स० २ । आ० ८½×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६० । छ मण्डार ।

४११९ समुदायस्तोत्र । पत्र स० ५३ । आ० १३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वे० स० ११५ । छ मण्डार ।

विशेष—स्तोत्रो का संग्रह है ।

४१२० समवशरणस्तोत्र—विश्वसेन । पत्र स० ११ । आ० १०½×८ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत श्लोको पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४१२१ सर्वतोभद्रमंत्र । पत्र स० २ । आ० १०×३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल स० १८६७ फागुन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० १८२२ । अ मण्डार ।

४१२२ सरस्वतीस्तवन—लघुकवि । पत्र स० ३ मे ५ । आ० ११½×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२५७ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

निमग्नपुष्पिका— इति भारतपालपुष्पिका कृत लघुस्तवन सम्पूर्णतामागतम् ।

४१२३ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ११५५ । अ मण्डार ।

४१२४ सरस्वतीस्तोत्र—बृहत्सवि । पत्र नं १ । पृ ३०४३ दृश्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र (शैलेन्द्र) । १ काल × । ले काल नं १ २१ । पूर्ण । के नं १२२ । अथ अष्टादश ।

४१२५ सरस्वतीस्तोत्र—सुतसागर । पत्र नं २६ । पृ १ ३०४३ दृश्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के नं १ ३४ । अष्टादश ।

विशेष—शेष के पत्र नहीं हैं ।

४१२६ सरस्वतीस्तोत्र— । पत्र नं ३ । पृ ४४ दृश्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के नं १ ३४ अष्टादश ।

४१२७ प्रति सं २ । पत्र नं १ । ले काल नं १ ३२ । के नं ४३६ । अष्टादश ।

विशेष—राजपूज के प्रतिमिति की थी । भारतीयस्तोत्र की भाव है ।

४१२८ सरस्वतीस्तोत्रमाहा (शारदा-स्तवन)— । पत्र नं २ । पृ २४ दृश्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के नं १२६ । अष्टादश ।

४१२९ सङ्कल्पमा (कथु)—भाचार्य समस्तपत्र । पत्र नं ४ । पृ ११३४ दृश्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १ काल × । ले काल नं १ १४ साधित्तु मुद्रा १ । पूर्ण । के नं १ । अष्टादश ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अष्टादश विपरीत अष्टादश पत्र भी हैं । ४१ स्तिका हैं । अष्टादश पत्र के स्वयं अष्टादश मीमांसा के पठनार्थ प्रतिमिति की थी । 'मीमांसा अष्टादश मीमांसा की पठित की थी' पत्र ४ मुद्रा अष्टादश ।

४१३० सारस्वतीविशेष— । पत्र नं ११२ । पृ १२४ दृश्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १ काल × । ले काल नं १२२ पौष मुद्रा १२ । पूर्ण । के नं २ ४ । अष्टादश ।

विशेष—अष्टादश मुद्रा के अष्टादश पत्र अष्टादश हैं ।

४१३१ सारस्वतीपाठ— । पत्र नं ३ । पृ ४४ दृश्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १ काल × । ले काल नं १ २४ । पूर्ण । के नं १२२ । अष्टादश ।

४१३२ सिद्धिपत्र— । पत्र नं १ । पृ ११३३ दृश्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १ काल × । ले काल नं १२ १ अष्टादश मुद्रा ११ । पूर्ण । के नं १ । अष्टादश ।

विशेष—भीमशक्तिपत्र के प्रतिमिति की थी ।

४१३३ सिद्धिपत्र— । पत्र नं १ । पृ ११३३ दृश्य । अन्त-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । के नं १२२ । अष्टादश ।

४१३४ सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनदि । पत्र स० ८ । भा० ११×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल स० १८८६ माद्रपद बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २००८ । अ भण्डार ।

४१३५ प्रति स० ८ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है ।

४१३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० २६२ । ख भण्डार ।

विशेष—हासिये में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं । प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है । अक्ष—काफी मोटे हैं ।

मुनि विशालकीर्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० २६३, २६८) और हैं ।

४१३७ प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ८५३ । छ भण्डार ।

४१३८ प्रति स० ५ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८६२ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० स० ४०६ ।

च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में अमयचन्द साहू ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३९ प्रति स० ६ । पत्र स० १ । ले० काल × । वे० स० १०२ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ३८, १०३) और हैं ।

४१४० प्रति स० ७ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८६८ । वे० स० १०६ । ज भण्डार ।

४१४१ प्रति स० ८ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० १६८ । ब भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अमरसी ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २८७)
भार है ।

४१४२ प्रति स० ६ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १८२५ । ट भण्डार ।

४१४३ सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका । पत्र स० ५ । भा० १३×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल स० १७५६ आसोज बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३६ । ख भण्डार ।

विशेष—श्रीलोकदाम ने अपने हाथ में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१४४ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पद्मलाल चौधरी । पत्र स० ३६ । भा० १२३×५ इच्छ । भाषा—
हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल स० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०५ । क भण्डार ।

४१४५ सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—नथमल । पत्र स० ८ । भा० ११×६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८४७ । क भण्डार ।

४।४६ अठि सं ३।१० नं ५।१८ कावे × १।१० सं २३९ । क संवत्सर ।

बिसेद—हसी बगडार में एक प्रति (१ सं ६२) खोद है ।

४१४० विप्रिप्रितोत्र—। वन तं ३। मा ११ $\frac{1}{2}$ × ५ इंच । अयः-हिमी ; विषम स्थान ।
काम × से काल ×। पूर्ण। वे लं ४। कु अष्टादश ।

४१४८ सुगन्धस्तोत्र— वन ४१। पा १ X१ दण्ड। जाया-मन्त्रु। विषय-स्तोत्र। र
काल ८। स वान ८। पूर्व १। ३५। १५ अक्षर।

४१५३ बभ्रुवारास्तोत्र—। पत्र सं १ । भा २३५४ ह व । काय—संस्कृत । विषय—स्त्रीय । र
नाम—। म काय—। पूर्वा । सं १२३ । अ कथाद ।

विशेष—यस्य ३ लिखा है— यस्य अंशानुसारं विस्तृत ।

४१३ सौवर्णहरीशोत्र—भृगुराजः खगोलसूक्त्यः । पृथक् १ । या १२८५ इति । जना-
मन्वृत विषय-स्तोत्र । १० वाक्य X । मं कात्त तं १ ७४ । पुर्वे । वी सं १२६५ । ह भध्वा ।

विषय—कृष्णराजी कर्कट में वासवनाथ बेलनाथ में श्मशानक सुरेखाजीति धामिर बाबो में शर्माधुन के सम्बन्ध
प्रतिनिधि ही ही ।

४१२१ सौहार्दकहरीस्तोत्र—। वन सं ७४। वा २३×२३ हवा। भावा-मंथन। विष्णु-
स्तोत्र। १ कल × ३। वन सं १ ३७ वांवा। पुरी २। पुरी ३। सं २७४। वा मयार।

४१४२ श्रुति—। पक्ष १ । या ११×११ व । ज्ञाया-तत्त्वज्ञ । विषय-तत्त्वज्ञ । १ वाम ५ ।
 १ वाम ५ । ज्ञाया-तत्त्वज्ञ । विषय-तत्त्वज्ञ । १ वाम ५ ।

विशेष—कनकाल महावीर की स्तुति है। अति संक्षुब्ध टीका लक्षित है।

[illegible]

वीरो बीरो महावीरोस्तु वैवासि ममारुति ॥२॥

४१३३ शुद्धिमयम् - वषत् २। या १ × ४ इत्ये। ज्ञाने-विन्नी। विषय-स्तोत्र।
वषत् ३५ वषत् × पूर्ण। ३५ नं १२४। ३५ वषत्।

४१२५ गुरुद्वितीयः—पत्र नं ३ के १०। या ११७४ दृश्यः नाग-मंडितः शिव-शिव ।
५ वाच ५। के वाम ५। केवर्तु ५। के नं २१६९। इत्यन्तरः

विशेष — यक्षारणैर्ह्यस्तबन बीजतीर्थं पुरस्तादयं प्रापि ६ ।

४१५५ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० ६ । भा० ११३×५ इ च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०५३ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

नाम स्तोत्र	वर्ति	भाषा
१ शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	प्राकृत
२ भयहरस्तोत्र	×	"
३ लघुशान्तिस्तोत्र	×	संस्कृत
४ बृहद्शान्तिस्तोत्र	×	"
५ अजितशान्तिस्तोत्र	×	"

२२ पत्र नहीं है । सभी द्वैताम्बर स्तोत्र हैं ।

४१५६ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० १० । भा० १०×७३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३०४ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

१ पद्मावतीस्तोत्र —	×
२ कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र —	×
३ चिन्तामणि पार्श्वनाथपूजा एवं स्तोत्र —	लक्ष्मीसेन
४ पार्श्वनाथपूजा —	×
५ लक्ष्मीस्तोत्र —	पद्मप्रमदेव

४१५७ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० २३ । भा० ८२×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३८५ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं— १ एकीभाव, २ विषादहार, ३ स्वर्गमूलास्तोत्र ।

४१५८ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० ४६ । भा० ८२×५ इ च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल < । ले० काल स० १७७६ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १३१२ । अ मण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है । निम्न संग्रह हैं—

१ निर्वाणकाण्डभाषा—	×	हिन्दी
२ श्रीपालस्तुति	×	संस्कृत
३ पद्मावतीस्तवन मंत्र सहित	×	"

४ लकीराहस्तोत्र ५ अनामिकाहस्तोत्र ६ त्रिपदाहस्तोत्र ७ लक्ष्मीहस्तोत्र
बार्हस्पत्यहस्तोत्र

८ लीलाहस्तोत्र—

वर्णमणि

मंजुषू

९ वज्रहस्तोत्र

X

॥

मूर्ति

१० लीलाहस्तोत्र ११ यमिहस्तोत्र १२ लालहस्तोत्र १३ विष्णुहस्तोत्र

१४ वर १५ विष्णु (व्यासहस्तोत्र) १६ लाल के लीलाहस्तोत्र १७ वरहस्तोत्र

मुद्राहस्त के लीलाहस्तोत्र में वर्णमणि की थी।

४१३६ स्नातकश्रद्धा— १ वर २६। या ८७ वर। लाल—मंजुषू। विष्णु—लाल। १

लाल के लाल X। मूर्ति के ल ८६। वर मंजुषू।

विष्णु—लाल लाल है।

१ त्रिपदाहस्तोत्र २ अनामिकाहस्तोत्र (लीलाहस्तोत्र) ३ लक्ष्मीहस्तोत्र

४ बार्हस्पत्यहस्तोत्र ५ त्रिपदाहस्तोत्र।

४१३७ स्नातकश्रद्धा— १ वर २६। या ११७ वर। लाल—मंजुषू। विष्णु—

लाल। लाल के लाल X। मूर्ति के ल २६। वर मंजुषू।

विष्णु—वर १७। ११ मूर्ति है। विष्णु लीलाहस्तोत्र लाली का लाल है।

४१३८ स्नातकश्रद्धा— १ वर २६। या ११७ वर। लाल—मंजुषू। विष्णु—लीला।

१ लाल। लाल के लाल X। मूर्ति के ल २६। वर मंजुषू।

विष्णु— १ वर २६ का वर नहीं है। लालहस्तोत्र लाल लाली लाल है।

४१३९ स्नातकश्रद्धा— १ वर २६। या ११७ वर। लाल—मंजुषू। विष्णु—लीला। १

लाल X। लाल के लाल X। मूर्ति के ल २६। वर मंजुषू।

४१४० स्नातकश्रद्धा— १ वर २६। या ११७ वर। लाल—मंजुषू। विष्णु—लीला। १

लाल X। लाल के लाल X। मूर्ति के ल २६। वर मंजुषू।

४१४१ स्नातकश्रद्धा— १ वर २६। या ११७ वर। लाल—मंजुषू। विष्णु—लीला। १

४१४२ स्नातकश्रद्धा— १ वर २६। या ११७ वर। लाल—मंजुषू। विष्णु—लीला। १

लाल X। लाल के लाल X। मूर्ति के ल २६। वर मंजुषू।

विष्णु—लाल लाल है।

भगवतोस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्वनामस्तोत्र, घण्टावर्णमय आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४१६६ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० ८२ । भा० ११३×६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८३७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम श्लोक अपूर्ण है । कुछ स्तोत्रों की सम्पुत्त टीका भी साथ में दी गई है ।

४१६७ प्रति स० ७ । पत्र स० २५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ८३३ । क भण्डार ।

४१६८ स्तोत्रपाठसमग्र । पत्र स० ५७ । भा० १३×६ इच्छ । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० ८३१ । क भण्डार ।

विशेष—पाठों का संग्रह है ।

४१६९ स्तोत्रसमग्र । पत्र स० ८१ । भा० ११×५ इच्छ । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८२६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नामस्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	प्राकृत, संस्कृत
सामायिक पाठ	×	संस्कृत
श्रुतभक्ति	×	प्राकृत
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
सिद्धभक्ति तथा अन्य भक्ति संग्रह	—	प्राकृत
स्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
देवागमस्तोत्र	”	संस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	”
भक्तामरस्तोत्र	मानवु गाचार्य	”
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	”
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	”
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	”
विषाणहारस्तोत्र	धनञ्जय	”
भूरालचतुर्विधात्मिका	भूपालकवि	”
महिम्नस्तवन	जयकीर्ति	”
समवधारण स्तोत्र	विष्णुसेन	”

नाम स्थापना	कला	भाषा
महर्षि लक्षण	×	मैसूर
ब्रह्माण्डस्तोत्र	×	"
विष्णुस्तोत्र	×	"
नन्दस्तोत्र	ब्रह्मण्ड	"
वेदिकान्त एवम्स्तोत्र	१ कला	"
ननु सामग्रिक	×	"
ननु विद्वत्स्तोत्र	×	"
ननु ब्रह्म	५ ब्रह्मण्ड	"
ननु ब्रह्म	×	"
ननु ब्रह्मस्तोत्र	×	"
ननु ब्रह्मस्तोत्र	×	"
विष्णुस्तोत्र	×	"
ननु ब्रह्म	ब्रह्मण्ड	"
ननु ब्रह्म	×	"

४१ प्रविष्ट २। ब्रह्म १२। ननु कला ५। ननु १५। ननु ब्रह्म।

विशेष—ब्रह्मण्ड एक पाठो वा दो पाठो है।

४२ प्रविष्ट ३। ब्रह्म ११। ननु कला ५। ननु १२। ननु ब्रह्म।

विशेष—एक पाठो के अतिरिक्त भिन्नान्त जोर है।

वीरगावस्तोत्र	×	मैसूर
वीरगावस्तोत्र	✓	"

४३ प्रविष्ट ४। ब्रह्म ११। ननु १२। ननु ब्रह्म। ननु ब्रह्म। ननु ब्रह्म। ननु ब्रह्म।

कला ५। ननु कला ५। ननु १२। ननु ब्रह्म।

विशेष—भिन्नान्त जोर है।

ननु ब्रह्म	कला	भाषा
ननु ब्रह्म	×	मैसूर
ननु ब्रह्म	×	"
ननु ब्रह्म	×	"

नाम स्तोत्र

कर्त्ता

भाषा

तत्त्वार्थसूत्र

उमास्वाति

संस्कृत

स्वयम्भूस्तोत्र

समन्तभद्र

"

४१७३ स्तोत्रसमग्र

। पत्र स० १० । भा० ११३×७ $\frac{१}{२}$ इंच ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८३० । क भण्डार । भाषा—संस्कृत । विषय—गोप ।

विशेष—निम्न समग्र है ।

नेमिनाथस्तोत्र सटीक

×

संस्कृत

द्ववधरस्तवन

×

"

स्वयम्भूस्तोत्र

×

"

चन्द्रप्रभतात्र

×

"

४१७४ स्तोत्रसमग्र

। पत्र स० ८ । भा० १२३×११ $\frac{१}{२}$ इंच ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३६ । ख भण्डार । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १०

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

कल्याणमन्दिरस्तोत्र

कुमुदचन्द्र

संस्कृत

विद्यापहारस्तोत्र

धनञ्जय

"

सिद्धिप्रियस्तोत्र

देवनदि

"

४१७५ स्तोत्रसमग्र

। पत्र स० २२ । भा० १२३×११ $\frac{१}{२}$ इंच ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३८ । ख भण्डार । भाषा—संस्कृत । विषय—गोप ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

एकी भाव

बादिराज

संस्कृत

सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित

×

"

श्रुतिमण्डलस्तोत्र

×

"

भक्तामरस्तोत्र श्रुतिमन्त्र सहित

×

"

हनुमानस्तोत्र

×

"

ज्वालामालिनीस्तोत्र

×

"

वर्केश्वरीस्तोत्र

×

"

४१५६ स्तोत्रसमूह—। पत्र सं १४। या ७४४२ द. व.। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १

काल ×। नै. काल सं १८४४ माह कुटी १। पूर्ण। नै. सं ११७। क. बन्धार।

विशेष—विष्णु स्तोत्रों का संग्रह है।

अज्ञानमन्त्रिणी, कुशीसखी की वचनमाला ज्ञानिर्गन्तस्तोत्र एवं मनस्वस्तोत्र।

४१७७. स्तोत्रसमूह—। पत्र सं १४। या ६४४ द. व.। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १

काल ×। नै. काल ×। पूर्ण। नै. सं ११६। क. बन्धार।

विशेष—विष्णु स्तोत्रों का संग्रह है।

वचनमाला	×	संस्कृत	१ से १ पत्र
वर्त्मनस्तोत्र	×	"	११ से २ पत्र
स्वर्णवर्त्मनस्तोत्र	बहीबंद	"	२४

४१७८. स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ११। या ७२४४ द. व.। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। १

काल ×। पूर्ण। नै. सं ११। क. बन्धार।

४१७९. स्तोत्रसमूह—। पत्र सं १७। या १ ३४४२ द. व.। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। १

काल ×। नै. काल ×। पूर्ण। नै. सं १। क. बन्धार।

विशेष—विष्णु स्तोत्र है।

अज्ञानमन्त्रिणी, कुशीसखी की वचनमाला ज्ञानिर्गन्तस्तोत्र एवं मनस्वस्तोत्र।

४१८०. स्तोत्रसमूह—। पत्र सं १ से ११। या ६४६ द. व.। भाषा—हिन्दी। संस्कृत। विषय—

स्तोत्र। १ काल ×। नै. काल ×। पूर्ण। नै. सं १७। क. बन्धार।

४१८१. स्तोत्रसमूह—। पत्र सं ११ से १४१। या ४४ द. व.। भाषा—संस्कृत। हिन्दी। विषय—

स्तोत्र। १ काल ×। नै. काल ×। पूर्ण। नै. सं १६। क. बन्धार।

विशेष—विष्णु स्तोत्रों का संग्रह है।

विष्णु स्तोत्र	पत्रों	भाषा	अपूर्ण
वचनमाला	अपूर्ण	हिन्दी	
अज्ञानमन्त्रिणी	×	संस्कृत	
वैष्णवस्तोत्र	×	"	
वर्त्मनस्तोत्र	×	"	
स्वर्णवर्त्मनस्तोत्र	×	हिन्दी	

नाम स्तोत्र	वर्त्ता	भाषा
गन्धारामन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदाम	हिन्दी
जैनस्तोत्र	भूधरदास	"
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"
तेजस्वाठिया	बनारसीदाम	"
चैत्यमंदिर	X	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पंचवल्गारपूजा	X	"

४१=२, स्तोत्रसंग्रह । पृष्ठ १० ५१ । भा० ११×७३ इंच । भाषा—मसूदा-हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० पान X । १० पान ८ । पूर्ण । पे० १० ८६५ । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है ।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदाम	हिन्दी	अपूर्ण
मामाधिकपाठ	प० महापन्थ	"	पूर्ण
मामाधिकपाठ	X	"	अपूर्ण
पंचपरमेष्टीपुण	X	"	पूर्ण
लघुसामायिक	X	संस्कृत	"
बाराहभावना	नवलकवि	हिन्दी	"
द्रव्यसंग्रहभाषा	X	"	अपूर्ण
निर्वाणकाण्डभाषा	X	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विंशतिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	"
चौबीसदण्ड	बीलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	X	"	अपूर्ण
भक्तामरस्तोत्र	मानसु ग	संस्कृत	पूर्ण
गन्धारामन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	"
स्वयंभूस्तोत्रभाषा	धानतराम	"	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	अपूर्ण
मालोचनापाठ	X	"	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	संस्कृत	"

नाम स्तोत्र	वर्णा	माया	
विषयहारास्तोत्रमाया	५	द्विती	पूर्व
संकोचपंचद्विका	५	"	

४१२३ स्तोत्रसमूह—। वचन २१। पा १ ५०० इत्य। माया—मस्तुत। विषय—स्तोत्र। र
वचन ×। मे वचन ×। पूर्व। वीर्णा। वे न २४। क मन्थार।

विशेष—विषय स्तोत्रो का संज्ञा है।

नमस्कृत्योप को वनीस्तोत्र पद्यावतीस्तोत्र टीर्णदुरस्तोत्र भावाधिकमल पा. २३।

४१२४ स्तोत्रसमूह—। वचन २३। पा १ ५०२ इत्य। माया—मस्तुत। विषय—स्तोत्र।
र वचन ×। मे वचन ×। पूर्व। वे न २३। क मन्थार।

विशेष—मन्थार पद्यि स्तोत्रो का संज्ञा है।

४१२५ स्तोत्रसमूह—। वचन २३। पा १ ५०३ इत्य। माया—मस्तुत। विषय—मन्थार।
र वचन ×। मे वचन ×। पूर्व। वे न २३। क मन्थार।

४१२६ स्तोत्र—मायावी वसन्त। वचन २। पा १ ५०४ इत्य। माया—मस्तुत। विषय—
स्तोत्र। र वचन ×। मे वचन ×। पूर्व। वे न २३। क मन्थार।

४१२७ स्तोत्रपूजासमूह—। वचन २। पा १ ५०५ इत्य। माया—द्विती। विषय—स्तोत्रपूजा।
र वचन ×। मे वचन ×। पूर्व। वे न २। क मन्थार।

४१२८ स्तोत्रसमूह—। वचन २३। पा १ ५०६ इत्य। माया—द्विती। विषय—स्तोत्र। र
वचन ×। मे वचन ×। पूर्व। वे न २। क मन्थार।

४१२९ स्तोत्रसमूह—। वचन ३ मे ५०। पा १ ५०७ इत्य। माया—मस्तुत। विषय—स्तोत्र
र वचन ×। मे वचन ×। पूर्व। वे न ३। क मन्थार।

४१३० स्तोत्रसमूह—। वचन २३ मे २३। पा १ ५०८ इत्य। माया—मस्तुत। विषय—
स्तोत्र र वचन ×। मे वचन ×। पूर्व। वे न २३। क मन्थार।

विशेष—विषय स्तोत्र है।

पदीव्यवस्थीय	वादिवाय	मन्थार
वचनपद्यिस्तोत्र	पुनर्वचन	"

इति प्रार्थना है मन्थार टीका बहिन है।

४१६१ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० ७ ने ४८ । आ० ८५४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३० । च भण्डार ।

४१६२ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० १४ । आ० ८३५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०
काल × । १० काल स० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४३१ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

१ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	संस्कृत
२ कल्याणमन्दिर	कुमुदबन्दाचार्य	"
३ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	"

४१६३ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० ७ म १७ । आ० ११५८३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३२ । च भण्डार ।

४१६४ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० २४ । आ० १२५७३ इ च । भाषा-हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत ।
विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१६३ । ट भण्डार ।

४१६५ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० ५ से ३५ । आ० ६५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल स० १८७५ । अपूर्ण । वे० स० १८७२ । ट भण्डार ।

४१६६ स्तोत्रसंग्रह । पत्र स० १५ से ३४ । आ० १२५६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३३ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

मामायिक बडा	×	संस्कृत	अपूर्ण
मामायिक लघु	×	"	पूर्ण
महलनाम लघु	×	"	"
महलनाम बडा	×	"	"
श्रुतिमण्डलस्तोत्र	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	×	"	"
नवकारमन्त्र	×	"	"
वृद्धनवकार	×	"	"
श्रीतरागस्तोत्र	देवनदि	संस्कृत	"
जिनपञ्जरस्तोत्र	×	"	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
वपामरीचकैश्वरीस्तोत्र	×	"
वपामरीचस्तोत्र	×	"
इन्द्रमालस्तोत्र	×	हिन्दी
वपामरीच	×	संस्कृत
वपामरीच	×	संस्कृत

४१३७. स्तोत्रसंग्रह—। पृष्ठ सं ४। पृ १। ४२३। वपामरीचकैश्वरी। विष्णु-स्तोत्र। १।
नाम ×। के नाम ×। पृष्ठ सं १४। वपामरीच।

विष्णु-मिथिलिस्तोत्र स्तोत्र है।

वपामरीच वपामरीचकी विष्णुस्तोत्र, वैष्णवीय वपामरीच हिन्दी में है।

४१३८. स्तोत्रसंग्रह—। पृष्ठ सं ७। पृ ४३। ४३३। वपामरीचकैश्वरी। विष्णु-स्तोत्र। १।
नाम ×। के नाम ×। पृष्ठ सं १४। वपामरीच।

मिथिलिस्तोत्र स्तोत्र है।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
वपामरीचस्तोत्र	×	संस्कृत
वैष्णवीयस्तोत्र	×	संस्कृत

विष्णु-मिथिलिस्तोत्र के नाम के विष्णु वपामरीच की स्तुति है।

वपामरीचस्तोत्र	×	संस्कृत
वैष्णवीयस्तोत्र	कर्मसंग्रह	संस्कृत

वैष्णवीयस्तोत्र वपामरीच वपामरीचकी स्तुति है।

वैष्णवीयस्तोत्र वपामरीच वपामरीचकी स्तुति है।

४१३९. स्तोत्रसंग्रह—। पृष्ठ सं १४। पृ ४३। ४३३। वपामरीचकैश्वरी। विष्णु-स्तोत्र। १।
नाम ×। के नाम ×। पृष्ठ सं १४। वपामरीच।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
वैष्णवीयस्तोत्र	×	"
वपामरीचस्तोत्र	×	"

४२०० स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० १३ । मा० १३×७३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । ज भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं ।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमंदिर, भक्तामर तथा परमानन्दस्तोत्र ।

४२०१ स्तोत्रपूजासंग्रह । पत्र सं० १५२ । मा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । ज भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है । प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है ।

४२०२ स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० ३२ । मा० ४३×६३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । म भण्डार ।

विशेष—पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

४२०३ स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० ११ से २२७ । मा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७१ । म भण्डार ।

विशेष—गुटका के रूप में है तथा प्राचीन है ।

४२०४ स्तोत्रसंग्रह । पत्र सं० १४ । मा० ६×६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७७ । व भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र आदि हैं ।

४२०५ स्तोत्रत्रय । पत्र सं० २१ । मा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । व भण्डार ।

विशेष—कल्याणमन्दिर, भक्तामर एवं एकीभाव स्तोत्र हैं ।

४२०६ स्वयंभूस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ५१ । मा० १२३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टण्वा टीका सहित है । इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विधसि स्तोत्र भी है ।

४२०७ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ बुदी १३ । वे० सं० ४३५ । च भण्डार ।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० ४३४, ४३६) भी हैं ।

८. प्रति सं० ३। वष सं २४। ने कल ×। ने सं २६। अ मन्थार।

विशेष—संस्कृत टीका लक्षित है।

४२०६. प्रति सं० ४। वष सं २४। ने कल ×। यपूर्व। ने सं २६४। अ मन्थार।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिखे नये हैं।

४२१. स्वर्णमूर्त्याग्रटीका—प्रभाषणशास्त्रार्थ। वष सं ४१। या ११×११ ई। भाषा—संस्कृत।

विषय—स्तोत्र। २ कल ×। ने कल सं १ ११ अक्षरिद गुरी १२। कुर्त्त। ने सं ४१। क मन्थार।

विशेष—अथ का कुम्हार नाम शिवायकाय टीका भी विद्युतुया है।

इसी मन्थार में दो प्रतिभों (ने सं ४३२, ४३२) थीर हैं।

४२११. प्रति सं २। वष सं ११६। ने कल सं १११२ वीष गुरी १२। ने सं ४४। अ

मन्थार।

विशेष—सुपुल्लाल पांजल जीवटी पादगु के बाईठ अंजाल पादनी से प्रतिनिधि कर्तार।

४२१२. स्वर्णमूर्त्याग्रटीका— वष सं ३२। या १ ×४२ ई। भाषा—संस्कृत। विषय—

स्तोत्र। २ कल ×। ने कल ×। यपूर्व। ने सं ४४४। अ मन्थार।



पद भजन गीत आदि

४२१३ अनाथात्तोचोढाल्या—लेम । पत्र स २ । भा० १०×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।

६० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२१ । अ भण्डार ।

विशेष—राजा थ्रेणिक ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको बनाय कहा था उसी पर चार ढालो के प्रार्थना की गयी है ।

४२१४ अनाथांमुनि सन्माय । पत्र सं० ५ । भा० १०×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७३ । अ भण्डार ।

४२१५ अर्हन्कचौढालियागीत—विमल विनय (विनयरग) । पत्र सं० ३ । भा० १०×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल १६८१ भासोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८४५ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ—

वर्द्धमान चउवीसमठ जिनवदी जगदीस ।

अरहन्क मुनिवर जरीय भणि सुधरीय जमीस ॥१॥

श्रीपद—

धु जगीमधरी मनमाहे, कहिसि सधव छछाहे ।

अरहमकि जिमवत लीधउ, जिम वे तारी वसि कीधउ ॥२॥

निज मात एइ उपपेसइ, बलिधत आदरीय विसेसइ ।

पहुतउ ते देव जिमानि, सुणिछ्यो भविण तिम कानि ॥३॥

श्रीहा—

नगदा नगरी जाणीयइ भलकापुरि भवतार ।

वसइ तिहा बिबहारीयउ सुवत नाम सुविचार ॥४॥

श्रीपद—

सुविचार, सुभद्रा घरणी -- -- -- ।

तसु नदन रूप निषान, अरहन्क नाम प्रधान ॥५॥

पन्तिम—

भ्यार सरण बित चीतवइ जी, परिहरि भ्यारि कशाय ।

शेष तजइ त्रउ उचरइ जी, सत्य रहित निरमाय ॥६॥

यद्वनपाल आरय समी श्री तारिम मेवै विहार ।
 र्छिण्ण आच ए वणि परिहरी श्री मज तमरह मववार ॥१६॥
 तिसा लवारज भग्गरवा श्री मूर निरल्ल तमि छाव ।
 लह्म वरीतह्म लह्म श्री देवद भवना वार ॥१७॥
 वसवारज पग्गि धीमल्ल श्री वनेवरल्ल मुज ध्याम ।
 वल्ल कटी छिन्नी पानीयज श्री मुंदर वैच विवाय ॥१८॥
 मुरव लला मुज बोवरी श्री परमाग्गि वल्ल ।
 छिन्नी श्री वणि वणि पायेवार श्री पडुवणि सिवपुर वल्ल ॥१९॥
 पग्गि वणि विवे वरद श्री, र्छित लवम मुजल्ल ।
 वल्ल वल्ल वरि वे लही श्री पामह वरव वल्ल ॥२०॥
 श्री लल्ल वल्ल वीरवा श्री श्री विमल्ल पुत्ति ।
 वल्ल वल्ल वल्ल वल्ल श्री वल्ल वल्ल वल्ल ॥२१॥
 श्री मुल्ल वल्ल वल्ल वल्ल श्री वल्ल वल्ल वल्ल ।
 लल्ल वल्ल वल्ल वल्ल श्री विमल्ल वल्ल वल्ल ॥२२॥
 ए वल्ल वल्ल वल्ल श्री श्री वल्ल वर वरि ।
 वे वल्ल वल्ल वल्ल श्री विम वल्ल वल्ल वल्ल ॥२३॥
 इति बरह्मज्जन पडुवणि वल्ल वल्ल ॥

संवत् १९११ वर्षे मासु सुदी १४ दिने बुधवारं वीरिष्ठ श्री हर्षविह्वलविदित्वात्पूर्वरीतिवन्निधिनेन
 पदरबुभेदा तेषां । श्री बुधवारवरे ।

४२१६ आदिजिनवरगुप्ति—कमलकीर्ति । पद्य सं २ । या १३५२४ द्य । माला—मुजल्ल ।
 विवद—वीर । २ माला × । ३ माला × । पूर्ण । ४ सं १५७४ । ५ माला ।

विवद—वीर । वीर । वीर । वीर । वीर । वीर । वीर । वीर । वीर । वीर ।

४२१७ आदिनाथकीर्ति—मुनिह्वलविदित्वात्पूर्वरीतिवन्निधिनेन । पद्य सं १ । या २३५२४ द्य । माला—विन्नी । विवद—
 वीर । २ माला सं १५७४ । ३ माला × । ४ सं १५७४ । ५ माला ।

विवद—माला वर बुधवारं वल्ल वल्ल ।

४२१८ आदिनाथकीर्ति—मुनिह्वलविदित्वात्पूर्वरीतिवन्निधिनेन । पद्य सं १ । या २३५२४ द्य । माला—विन्नी । विवद—वीर ।
 २ माला × । ३ माला × । पूर्ण । ४ सं १५७४ । ५ माला ।

पद भजन गीत आदि]

४२१६ आदीश्वरविजति । पत्र सं० १ । मा० ६३×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।

२० काल स० १५६२ । ले० काल स० १७८१ देवाय सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पद्य नहीं हैं । कुल ४५ पद्य रचना में हैं ।

प्रतिम पद्य—

पनरवासद्वि जिनदूर अविचल पद पाथी ।

वीनतदो मुलट पूणोंवा ग्रामुमस वहि दलम दिहाटे मनि घैरागे इम भणोंवा ॥४५॥

४२२० दृग्गवालविलास—श्री निशानलाल । पत्र सं० १५ । मा० ८×५३ इच्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । छ मण्डार ।

४२२१ गुरुस्तवन—सूधरदाम । पत्र सं० ३ । मा० ८३×६३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८ । छ मण्डार ।

४२२२ चतुर्विंशति तीर्थहस्तवन—हेमचिमलसूरि शिष्य आणंद । पत्र सं० २ । मा० ८३×४६

इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल स० १५६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८३ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२२३ चम्पाशतक—चम्पाबाई । पत्र सं० २४ । मा० १२×८३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । छ मण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है । चपाबाई न ६६ वर्ष की उम्र में रणनावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव में रोग दूर हो गया था । यह प्यारेलाल मीरगढ (उ० प्र०) की छोटी बहन थी ।

४२२४ चैतना मञ्जाय—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । मा० ६३×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल स० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २१७५ । छ मण्डार ।

४२२५ चैत्यपरिपाटी । पत्र सं० १ । मा० ११३×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५५ । छ मण्डार ।

४२२६ चैत्यवदना । पत्र सं० ३ । मा० ६×८३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल

× । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६५ । छ मण्डार ।

४२२७ चौबीसी जिनस्तुति—खेमचन्द । पत्र सं० ६ । मा० १०×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल × । ले० काल सं० १७६४ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । छ मण्डार ।

४२२८ चौबीसतीर्थहस्ततीर्थपरिचय । पत्र सं० १ । मा० १०×४३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२० । छ मण्डार ।

४२२६. चौबीसतीर्थहृत्पुष्पि—मन्त्रदेव । पत्र बं १० । पा ११२×२५ इव । माता-हिन्दी ।
विषय-स्वयम् । १ काल × । मे काल × । पूर्ति । दे बं १४१ । अ मन्त्रार ।

विनेर—स्वयम्पुष्प पाञ्च मे अतिमिदि की की ।

४२२७. चौबीसीपुष्पि— । पत्र बं १२ । पा २४ इव । माता-हिन्दी । विषय-स्वयम् । १
काल बं १२ । मे काल × । पूर्ति । दे बं २३२ । अ मन्त्रार ।

४२२८. चौबीसतीर्थहृत्पुष्पि— । पत्र बं ११ । पा १२×२५ इव । माता-हिन्दी । विषय-
स्वयम् । १ काल × । मे काल × । पूर्ति । दे बं १२३ । अ मन्त्रार ।

४२२९. चौबीसतीर्थहृत्पुष्पि— । पत्र बं १० । पा १२×२५ इव । माता-
हिन्दी । विषय-स्वयम् । १ काल × । मे काल × । पूर्ति । दे बं २२० । अ मन्त्रार ।

४२३०. जलपुष्पि— । पत्र बं २ । पा १२×२५ इव । माता-हिन्दी । विषय-स्वयम् ।
१ काल × । मे काल × । पूर्ति । दे बं १२ । अ मन्त्रार ।

४२३१. जलपुष्पि— । पत्र बं १ । पा १२×२५ इव । माता-हिन्दी । विषय-
स्वयम् । १ काल × । मे काल × । पूर्ति । दे बं २१२ । अ मन्त्रार ।

४२३२. जलपुष्पि के मन्त्रिण की मन्त्रा— । पत्र बं १ । पा १२×२५ इव । माता-
हिन्दी । विषय-स्वयम् । १ काल बं १२२ । मे काल बं १२३० । पूर्ति । दे बं १० । अ मन्त्रार ।

४२३३. जलपुष्पि— । पत्र बं १ । पा १२×२५ इव । माता-हिन्दी । विषय-स्वयम् ।
१ काल × । मे काल × । पूर्ति । दे बं १२३२ । अ मन्त्रार ।

४२३४. जलपुष्पि की मन्त्रा— । पत्र बं ४ । पा १२×२५ इव । माता-हिन्दी ।
विषय-स्वयम् । १ काल × । मे काल × । पूर्ति । दे बं १४ । अ मन्त्रार ।

४२३५. जलपुष्पि की मन्त्रा— । पत्र बं १ । पा १२×२५ इव । माता-हिन्दी ।
विषय-स्वयम् । १ काल × । मे काल बं १२३२ । पात्र पुत्री १ । पूर्ति । दे बं १२ । अ मन्त्रार ।

४२३६. जलपुष्पि की मन्त्रा— । पत्र बं ४ । पा १२×२५ इव । माता-हिन्दी । विषय-
स्वयम् । १ काल × । मे काल × । पूर्ति । दे बं २१२ । अ मन्त्रार ।

४२३७. जलपुष्पि की मन्त्रा— । पत्र बं १ । पा १२×२५ इव । माता-हिन्दी । विषय-
स्वयम् । १ काल × । मे काल × । पूर्ति । दे बं २१२३ । अ मन्त्रार ।

विशेष—प्रारम्भ—

सीता ता मनि भेकर ढाल—

रमती चरणे सीम नमावी, प्रणामी मतगुण पाया रे ।

भांभरिया अरुपि ना गुण गाता, उलटं भ्राज सयाया रे ॥

भविष्य वदो मुनि भांभरिया, ससार समुद्र जे तरियो रे ।

सबल साहा परिसा मन सुधे, सील रखण गरि भारियो रे ॥२॥

पदठतपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राणी रे ।

तस सुत मदन भरम बालुडो, कित जास कहाणी रे ॥

नौजी ढाल भूपूर्ण है । भांभरिया मुनि या वर्णन है ।

४०४१ रामोकारपक्षीसी—अरुपि ठाकुरसी । पत्र स० १ । मा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । १० काल स० १८२८ मागढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २१७८ । अ भण्डार ।

४०४२ तमाखू फी जयमाल—आणदमुनि । पत्र स० १ । मा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गीत । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २१७० । अ भण्डार ।

४०४३ दर्शनपाठ—धुधजन । पत्र स० ७ । मा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—प्राप्त ।

१० काल > । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २८८ । अ भण्डार ।

४०४४ दर्शनपाठस्तुति — । पत्र स० ८ । मा० ८×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । १०

१० काल × । ले० काल × । भूर्ण । वै० स० १६२७ । अ भण्डार ।

४०४५ देवकी की ढाल—लूणकरण कासलीवाल । पत्र स० ४ । मा० १०×४ इ च । भाषा—

हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल स० १८८५ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । जीर्ण । वै० स० २२४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ दोहा—

रठ नेमा नामे हुवा लखण सरव संजोग ।

भाठ सहस लखण धरो गोमकार गछ जोग ॥१॥

सहस भठारा साथ जी भजाया चालीस हजार ।

भोटार मुनिवर विचरज्या रो सार ॥२॥

—

बसुदेव राजा ढाकरा देवाकीण मंगजात ॥३॥

मन्दन छ देव बा तणा सा राखा के जणहार ।

बाणी सुण श्री नेम का लाघज सजसार ॥४॥

४०४८ प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१४३ । ट मण्डार ।

विशेष—लिख्या माल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपखाना ।

१० पत्र से आगे नेमिराजुलपद्मौसी विनोदीलाल धृत भी है ।

४०४९ नागश्री सज्जाय—विनयचद । पत्र सं० १ । भा० १०×४३ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—

स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४८ । अ मण्डार ।

विशेष—केवल ३रा पत्र है ।

प्रतिम—

आपण बाधो आप भोगवै कोण ग्रुह कुण चेला ।

सजम लेह गई स्वर्ग पांचमे भजुही नादो न वेरारे ॥१५॥ भा०॥

महा विदेह मुकते जासो मोटी गर्भ बसेरा २ ।

विनयचद जिनघर्म भराघो सब दुख जान परेरे ॥१६॥

इति नागश्री सज्जाय कुचामरो लिखिते ।

४२४० निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र स० ८ । भा० ८×४ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तुति । २० काल स० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । म मण्डार ।

४२४१ नेमिगीत—पासचन्द्र । पत्र स० १ । भा० १२३×४३ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४७ । न मण्डार ।

४२४२ नेमिराजमतीकी घोड़ी । पत्र स० १ । भा० ६×४ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७७ । अ मण्डार ।

४२४३ नेमिराजमती गीत—जीतरमल । पत्र स० १ । भा० ६३×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३५ । अ मण्डार ।

४२४४ नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र स० १ । भा० ८१×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७४ । अ मण्डार ।

सुरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार ।

धालइ जन्म महारिह मोरे, काइ करधारे मन माहि विचार ॥१॥

मति राचो रे रमणी ते रग क सेवोरे जीण वाणी ।

सुम रमखो रे सजम न सगक चेतो रे चित प्राणी ॥२॥

भरिहत देव भराधाइघोजी, रे गुर गरुषा श्री साध ।

धर्म केवलानो भाखीउ, ए समकित वे रतन जिम लाइक ॥३॥

बाल वृमचारही जिएण वाइमममा ॥

समदविजइजी रा नद हो, बैरागी माहरो मन लागो हा नेम त्रिणद सु

जाइव कुल केरा चद हो ॥ बाल० ॥१॥

देव घणा छइ हो पुभ जोदोवता (देवता)

सेतो न चढइ चेत हो, कैंडक रे चेत म्हामत हो ॥ बाल० ॥२॥

कैंडक दोम करइ नर नारनइ मामइ तैलसिद्धर हर हो ।

चाके इक बन बासै बासै वास, यक बनबासो करइ ।

(कष्ट) कसट सहइ मरपुर हो ॥३॥

तु नर मोह्यो रे नर माया तणो, तु जग दीनदयाल हो ।

नाजोवनवतो ए मु दरी तजीउ राखुल नार हो ॥४॥

राजल के नारिणणे उद्धरो पहुतोउ मुकति मकार ।

हीरानद सवेण साहिवा, जी धी नव म्हारी बीनतेडा मयघारि हो ॥५॥

॥ इति नेमि गीत ॥

४०५५ नेमिराजुलसञ्जाय ॥ पद्य सं० १ । मा० ६×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र

१० काल म० १८५१ चैत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१८४ । अ भण्डार ।

४०५६ पञ्चपरमेष्ठीस्तवन—जिनवल्लभ सूरि । पद्य सं० २ । मा० ११×५ इच । भाषा-हिन्दी

विषय-स्तवन । १० काल × । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वे० स० ३८८ । अ भण्डार ।

४०५७ पद—ऋषि शिवलाल । पद्य सं० १ । मा० १०×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१२८ । अ भण्डार ।

विलेप—पूरा पद निम्न है—

या जग म का तेरा म्रधे ॥या०॥

जैसे पछी वीरछ वसेरा, थोडरे होय सवेरा ॥१॥

कोडी २ कर धन जोड्या, ले घरती मे गाढा ।

भंत समे चलण की बेला, ज्याँ गाढा राहो छाढारे ॥२॥

ऊचा २ महल चणाये, जीव कह इहा रेणा ।

चल गया हस पढो रही काया, लेय कलेवर दणा ॥३॥

मात पिता मु पतनी रे थारी, तीण धन जोवन लाया ।

उड गया हँस काया का मडण, काढा मेल पराया ॥४॥

करी कमाइ दण्ड जो धाय, जलटी पुछी कोइ ।
 मेरी २ कण्ठे बनन बनाना बनता संक न होइ ॥१॥
 पल की पीछ नहीं छिर लीनी है मुरख कोरा ।
 हचकी पीट करी तु भाई, तो हीन कुटुम्बनुं न्याय ॥२॥
 साथ सिता कुछ लगन में रा मेरा न बन परिचारी ।
 बैरा २ पका मुकारे बनता नहीं कबु लारी ॥३॥
 जो बैरा ठेरे संक न बनता, बैरा न पाया पाना ।
 मोह संक नकारन बीरगुणी हीरा बनन बनाना ॥४॥
 बाका बैरा केरी कल पद बनन बाका न बनता ।
 कोकर पीता ननु पछाने नानी कु हीन न बनता ॥५॥
 लगन कर भंगन कल कर, कही न पीछ नारी ।
 कल बाका के पीछे बैरा न बन न्या कान नारी ॥६॥
 प कोलपाइ पाइ पुत्रेनी बैरा न पाक नारी ।
 हीन न होन तो हीन न पीछे कुन परो बिरचारी ॥७॥
 हीन कुले बीन बीरगुनी नानी बैरा ननु छुल्ल नारी ।
 दण्ड पीछे ननु कुल बीर नरा करी बिरचारी ॥८॥
 कुन कुन नरा कु बैरा, बैरा बीन का करवा ।
 हीन कोलपाइ ननु बी गरी बावन नारा नरा ॥९॥

।।।।।

४२२२. पदसंग—। पद ३ २२। या १२०२ दण्ड। बाका-हीन। बिर-बन। ॥

बल ×। मे बल ×। मरुती। मे न ४२०। क न्याय।

४२२३. पदसंग—। पद ३ १। मे न्या ×। मे १२०३। या न्याय।

निय-विपुल बावन बावन।

दली न्याय मे १ पदसंग (मे ३ ११२०, ११३) बीर ॥

४२२४. पदसंग—। पद ३ १। मे बल ×। मे ३ २। क न्याय।

निय-दली न्याय मे ११ पदसंग (मे ३ ४ ४ ४०६ मे ४२२) क बीर ॥

४२२५. पदसंग—। पद ३ २। मे बल ×। मे ३ १२२। या न्याय।

४२६२ पदसंग्रह । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ३३ । मृ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २७ पदसंग्रह (वे० स० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ मे ६ तक, ३११ मे ३२४) और हैं ।

नोट—वे० स० ३१८ में जयपुर की राजवशावलि भी है ।

४२६३ पदसंग्रह । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० १७५६ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ पदसंग्रह (वे० स० १७५२, १७५३, १७५८) और हैं ।

नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूषरदास, दीनतराम आदि कवियों के पद हैं ।

४२६४ पदसंग्रह । पत्र स० ३ । भा० १०×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

१ मोहि तारो सामि भव सिधु तै ।

२ राजुल कहै तुमै वेग सिधावे ।

३ मिद्वचक्र वदो रे जयकारी ।

४ चरम जियोसर जिहो साहिबा

चरम धरम उपगार बाल्हेसर ॥

४२६५ पदसंग्रह । पत्र स० १२ मे २५ । भा० १२×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २००८ । ट भण्डार ।

विशेष—भागवन्द, नयनसुख, दानत, जगताराम, जादूाराम, जोषा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल बखतराम, भूभूराज, भैमराज, नवल, भूषर, चैनविजय, जीवणदास, विश्वभूषण, मनोहर आदि कवियों के पद हैं ।

४२६६ पदसंग्रह—उत्तमचन्द । पत्र स० १८ । भा० ६×६३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५२८ । ट भण्डार ।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदों का संग्रह है । पदों के प्रारम्भ में रागरागनियों के नाम भी दिये हैं ।

४२६७ पदसंग्रह—अ० कपूरचन्द । पत्र स० १ । भा० ११३×५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०४३ । अ भण्डार ।

४२६८ पद—केशरगुलाब । पत्र स० १ । भा० ७×५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२४१ । अ भण्डार ।

विशेष—भाष्य—

श्रीभद्र लम्बत मन्मथादम्बज साक्षादेव हमाप्ते श्री ।

रिज्यूअली रिज्यूअर प्याप बी

दिल से सीधे बसता है जिसदिन कम्पन न होना चाहिये तो ।

४३६३ परसमह—बीममुक्त । पत्र सं २ । धा १४०३६ ह व । भाषा—हिन्दी । विषय—प । १
पाल × । न वाच × । पृष्ठ सं १ । १४२७ । ह भाषा १ ।

४७७ पञ्चमसह—अथर्वण्य आचाराः । पत्र ७ ३२ । या ११५२३ ३५ । कथा-हिमो विद-
वद । २ पत्र ७ ३५७४ आचाराः पुरी १ । मे पत्र ७ ३५७४ आचाराः पुरी १ । पुरी १ । मे ४१० । क
अथार ।

विशेष—अष्टम २ वचो में शिवश श्रुती के रखी है । अथवा २ पदों का संग्रह है ।

४०६१ प्रति सं २। पत्र सं १। मै कल सं १५४। व सं ४४५। क अक्षर।

४२२. यदि स ३। पन १ से ४। के बाल X। धर्म १ से १६२। द न्याय।

५३७३ पञ्चसम्यह—हेवाग्रह। पत्र सं ५४। का १५३३ द ५। गता-हिन्दी। विम-१८ मय।
१ गल ×। २ गल सं १३३। पूर्ण। ३ सं १३३३। ४ गता-१।

विशेष—प्रति कुठकाकर है। विभिन्न राज्य राजधानियों के यह चित्रे लुप्त हैं। प्रथम पन्ना पर लिखा है श्री
हरिचन्द्रादौ सं १ ५३ का शेषार्थ कुरी १२। सूक्ष्म मसुदे विलम्बित।

४२७५ पञ्चमः—द्वैतसंसारम् । वषट् ३ । वा ११५० हव । भावा-हृष्टे । निरुप-न ।
६ बल × मे बाब × । धर्मा : मे धं ४२३ । क मया ।

४२७५ वर्द्धमान—पुन्यजन। वन र्त्त ११ के ११। वा ११ × दव। गवा-हिन्दी। निरव
दव गजग। २ दाल ×। नि कर्म ×। मयुर्ध्व। नि तं ७९०। धा नकाः।

४२०६ पञ्चसम्य—भाषासम् । धन र्त् २३ । आ० १२×७ इव । तावा-हिमो । विषय वर व
वयव । ५ कल × । वे काव × । पूर्ण । वे र्त् ४११ । क लम्पार ।

४२०० प्रविर्त्तक ९। १५८६ ९। ३१ अक्षर X। ३१ ४३९। क अक्षर।

विशेष—जोड़ी पक्षी का संघ है ।

५२७८. पद्म—मार्गकेर्षव । पद्म र्ध १ । मा १८४३ द्वा । माता-विष्णु । र मल × । वै
मल × । पूर्ण वि ध १२४१ । ज मकार ।

विशेष—प्रारम्भ—

पत्र सखी मिल मोहियो जीया,

काहा पावेगो तु धाम हो जीवा ।

समभो स्यु त राज ॥

४२७६ पदसमग्रह—मगलचन्द । पत्र स० १० । आ० १०३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३४ । क भण्डार ।

४२८० पदसमग्रह—माणिकचन्द । पत्र स० ५४ । आ० ११×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल स० १६५५ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४३० । क भण्डार ।

४२८१ प्रति स० २ । पत्र स० ६० । ले० काल × । वे० स० ४३८ । क भण्डार ।

४२८२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३ पदसमग्रह—सेवक । पत्र स० १ । आ० ८३×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१४० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल २ पद हैं ।

४२८४ पदसमग्रह—ढीराचन्द्र । पत्र स० १० । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिमां (वे० स० ४३५, ४३६) और हैं ।

४२८५ प्रति स० २ । पत्र स० ६१ । ले० काल × । वे० स० ४१६ । क भण्डार ।

४२८६ पद व स्तोत्रसमग्रह । पत्र स० ८८ । आ० १२३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—समग्रह । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनामा का समग्र है ।

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	८
सुगुणशतक	जिनदास	"	१०
जिनयशमङ्गल	सेवगराम	"	४
जिनगुणपञ्चीसी	"	"	—
गुरुमो की स्तुति	भूधरदास	"	—

मास	कर्त्ता	साधा	पत्र
स्त्रीवासस्तोत्र	सुरदास	हिन्दी	१४
मङ्गलादि मङ्गलार्ति की वाचना	"	"	—
परमेश्वर	मालिनकाव्य	"	४
देवदूतचण्डी	"	"	११
ब्रह्मवर्चस्वीपञ्चस्तोत्र	"	"	—
बीबीच ईशक	वीरतरण	"	१२
रत्नचोखचण्डी	बालतरण	"	१३

४२८० वासुकिवर्णन—आज्ञा (समसप्तम्वर के दिवस) । पत्र नं १ । पृ १ × २ पृष्ठ ।
 भाषा—हिन्दी । विषय—बीच । रं बाल × । ने बाल × । पूर्ण । वे पं १ २ । अ अष्टार ।

४२८८ पार्वतीमास की मिथ्यानी—विश्वार्थ । पत्र पं ३ । पृ १ × ४ पृष्ठ । भाषा—हिन्दी ।
 विषय—स्तवन । र बाल × । ने बाल × । पूर्ण । वे प २२४७ । अ अष्टार ।

विशेष—१२ पत्र ले—

प्रारम्भ—
 कुछ कवि बालक सुन्दर बालक वरुण बाल बिलवा है ।
 बाली छवि नाति बनीपन बीरम दिपति बाल विहवा है ॥

अन्तिम—
 विष्णु विद्यावादात विष्णु २ बाला के मेघक विहववा है ।
 बालर विहववा पाल मङ्गलादी कुछ विहववा बालवा है ॥

प्रारम्भ के पत्र पर बीच बाल बाला बीच की लपकल दी है ।

४२८८. प्रति स २ । पत्र नं १ । ने बाल पं १ २२ । वे पं ११३३ । अ अष्टार ।

४२९६ पार्वतीमासचौपई—व ज्ञानो । पत्र नं १० । पृ १२५ × २५ पृष्ठ । भाषा—हिन्दी ।
 विषय—स्तवन । र बाल पं १०३४ वर्त्तिक गुरी । ने बाल पं १०३३ वर्त्तिक गुरी २ । पूर्ण । वे नं १२१ ।
 अ अष्टार ।

विशेष—कव्य प्रारम्भ—

सर्व बालरानी बीरम वर्त्तिक कुछ बाल बाल बीच ।
 बीरम बाल विष्णु गुहिलाल बनी बुरति बही विदि बाध ॥२९६॥
 बालर बाल बीच बाल बालर बालरानी उत्तम बाल ।
 बाल बालक बाला विहववा बाले बालि बाले बाल बाल ॥२९॥

कर्मक्षय कारण शुभहेतु, पार्श्वनाथ चौपई सचेत ।

पठित लाखो लाख सभाव, मेवो धर्म लाखो सुमथान ॥२६८॥

भाचार्य श्री महेन्द्रकीर्ति पार्श्वनाथ चौपई सपूर्ण ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पाडे दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीर्ति के दासन मे दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर मे प्रतिलिपि की थी ।

४२६१ पार्श्वनाथ जीरोछन्दसत्तरी । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल स० १७८१ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १८६५ । अ मण्डार ।

४२६२ पार्श्वनाथस्तवन । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक पार्श्वनाथ स्तवन और है ।

४२६३ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र सं० २ । आ० ८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ मण्डार ।

४२६४ वन्दनाजखड़ी—बिहारीदास । पत्र सं० ४ । आ० ८×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१३ । च मण्डार ।

४२६५ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । अ मण्डार ।

४२६६ वन्दनाजखड़ी—बुधजन । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ज मण्डार ।

४२६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५२४ । छ मण्डार ।

४२६८ वारहखड़ी एष पद । पत्र सं० २२ । आ० ५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५ । झ मण्डार ।

४२६९ बाहुवली सन्माय—विमलकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० ६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२४५ ।

विशेष—श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सन्माय और है ।

४३०० भक्तिपाठ—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १७६ । आ० १२×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४५ । क मण्डार ।

विशेष—निम्न भक्तिया हैं ।

स्वाम्यामराज, विजयगिरि, मुत्तमगिरि, नगीरगिरि, वाचार्थगिरि, मोनगिरि, बीरगिरि, निर्मलगिरि और
बीरगिरिगिरि ।

४३ १ प्रति सा २। पद १ । मे नाल \times १ मे न २५० । अ मथार ।

४३ २ मतिपाठ—। पद १ । या ११२ \times ५५ दब । गता-हिन्दी । विषय-सीध । र
नाल \times १ मे नाल \times १ पूर्ण । मे न २५६ । अ मथार ।

४३ ३ मङ्गलसंग्रह—अथ साङ्गणम् । पद १ । या २५५ \times ५५ दब । गता-हिन्दी । विषय-ना ।
र नाल \times १ मे नाल \times १ पूर्ण । नीर्ण । मे न २५ । अ मथार ।

४३ ४ महादेवी की सम्मन्ध—अथ साङ्गणम् । पद १ । या २५५ \times ५५ दब । गता-हिन्दी ।
विषय-सम्भन । र नाल १ । कर्त्तिक बुदी ४ । मे नाल \times १ पूर्ण । मे न २५५० । अ मथार ।

४३ ५ महावीरकी का बीडान्या—अथ साङ्गणम् । पद १ । या २५५ \times ५५ दब । गता-
हिन्दी । विषय-सीध । र नाल \times १ मे नाल \times १ पूर्ण । मे न २५ । अ मथार ।

४३ ६ मुनिमुक्तमिनती—वैद्यामः । पद १ । या १ \times ५५ दब । गता-हिन्दी । विषय-
सम्भन । र नाल \times १ मे नाल \times १ पूर्ण । मे न १५० । अ मथार ।

४३ ७ रामायणी सम्मन्ध—। पद १ । या १ \times ५५ दब । गता-हिन्दी । विषय-सीध ।
र नाल \times १ मे नाल \times १ पूर्ण । मे न २५५० । अ मथार ।

४३ ८ राहुपुरासम्भन—। पद १ । या २५५ \times ५५ दब । गता हिन्दी । विषय-सम्भन । र
नाल \times १ मे नाल \times १ पूर्ण । मे न १५१ । अ मथार ।

विषय—राहुपुरा नाम के रथिष वारिवाय की स्तुति है ।

४३ ९ विजयपुरा सम्मन्ध—अथ साङ्गणम् । पद १ । या १ \times ५५ दब । गता-
हिन्दी । विषय-सम्भन । र नाल १ । मे नाल १ । पूर्ण । मे न २५५० । अ मथार ।

विषय—गोदा के राहुपुरा में एक स्थाना हुई । पद ५ के वाये स्तुतवत् सम्भन हिन्दी में गीत है ।
विषय र नाल १ । ५५ कर्त्तिक बुदी १२ है ।

४३१ अति १ । पद १ । मे नाल \times १ मे न २५५ । अ मथार ।

४३११ विजयीसम्भन—। पद १ । या २५५ \times ५५ दब । गता-हिन्दी । विषय-सम्भन । र
नाल \times १ मे नाल १ । २५ । पूर्ण । मे न २५५० । अ मथार ।

विषय—महात्मा रामपुरा में गवाई मथपुर के अतिविधि की की ।

पत्र भजन गीत आदि]

४२१२ विनतीसमह—ब्रह्मदेव । पत्र सं० ३८ । मा० ७३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३१ । अ मण्डार ।

विशेष—मासू बह का भगडा भी है ।

इसी मण्डार मे २ प्रतिमा (वे० सं० ६६३, १०४३) धोर हैं ।

४३१३ प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १७३ । ख मण्डार ।

४३१४ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७८ । ड मण्डार ।

४३१५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८४८ । वे० सं० १६३२ । ट मण्डार ।

४३१६ वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति । पत्र सं० ६ । मा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । क मण्डार ।

४३१७ शीतलनाथस्तवन—ऋषि लाजचन्द । पत्र सं० १ । मा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३४ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थि—

पूज्य श्री श्री दोलतराय जी बहुशुण भगवाणी ।

रिपलाल जी करि जोहि वीनवे फर सिर चरणाणी ॥

सहर माधोपुर रावत पचावन कातीग सुदी जाणी ।

श्री सीतल जिन गुण गाया मति उलास भ्राणी ॥ सीतल० ॥१२॥

॥ इति सीतलनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

४३१८ श्रेयासस्तवन—विजयमानसूरि । पत्र सं० १ । मा० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४१ । अ मण्डार ।

४३१९ सतियोकी मङ्गाय—ऋषि खजमल जी । पत्र सं० २ । मा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । गुजराती । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४५ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थि भाग निम्न है—

इतीदक सतियारां गुण कहा ये सुण सौभलो ।

उत्तम पराणी खजमल जी कहइ ॥३४॥

चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन भी बिया है ।

४३२० मङ्गाय (चौदह दोल)—ऋषि रायचन्द । पत्र सं० १ । मा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८१ । अ मण्डार ।

४३२१ सर्वायसिद्धिसम्पन्नम्—। पत्र नं १। वा १ X ४३ इत्त। वाता-हिन्दी। विषय-
८ वात X। मे वात X। पूर्ण। मे नं १४०। अ. कम्पार।

विषय—पत्र पत्र स्तुति की है।

४३२२ सरस्वतीसम्पन्नम्—। पत्र नं १। वा १ X ४३ इत्त। वाता-हिन्दी। विषय-
वात X। मे वात X। पूर्ण। मे नं १११। अ. कम्पार।

४३२३ साधुवर्षा—साधिकम्पन्। पत्र नं १। वा १ X ४३ इत्त। वाता-हिन्दी। वि-
सम्पन्न। ८ वात X। मे वात X। पूर्ण। मे नं १२४। अ. कम्पार।

विषय—सर्वोत्तम वातवात की साधुवर्षा है। पुन १० पत्र है।

४३२४ साधुवर्षा—पुनवर्षा। पत्र नं १। वा १ X ४३ इत्त। वाता-पुनर्वा हिन्दी। वि-
सम्पन्न। ८ वात X। मे वात X। पूर्ण। मे नं १। अ. कम्पार।

४३२५ सरस्वतीसीमावा—सरस्वतीसिद्धिसम्पन्न। पत्र नं १०। वा ११२ X ४३ इत्त।
हिन्दी विषय-स्तुति। ८ वात नं ११२५ वातिक मुनी २। मे वात नं ११२५ वीर मुनी २। पूर्ण। मे
७ २। अ. कम्पार।

४३२६ प्रति स० २। पत्र नं २२। मे वात नं १२५ वीरवात मुनी २। मे नं १२५।
कम्पार।

४३२७ प्रति स० ३। पत्र नं २३२। मे वात X। मे नं १२२। अ. कम्पार।

४३२८ सीमावात—। पत्र नं १। वा १३ X ४३ इत्त। वाता-हिन्दी। विषय-वात।
वात X। मे वात X। पूर्ण। मे नं ११२७। अ. कम्पार।

विषय—सीमावात इत्त वात वात की है।

४३२९ साधुवर्षासीमावात—। पत्र नं १। वा १ X ४३ इत्त। वाता-हिन्दी। विषय-
८ वात X। मे वात X। पूर्ण। मे नं १२१। अ. कम्पार।

४३३० साधुवर्षासम्पन्नम्—। पत्र नं १। वा १ X ४३ इत्त। वाता-हिन्दी। विषय-
८ वात X। मे वात X। पूर्ण। मे नं ११२। अ. कम्पार।



पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१ अकुरोपणविधि—इन्द्रनदि । पत्र स० १५ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७० । अ मण्डार ।

विशेष—पत्र १४-१५ पर यत्र है ।

४३३२ अकुरोपणविधि—प० आशाधर । पत्र स० ३ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल १३वीं क्षताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१७ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ मे से लिया गया है ।

४३३३ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २रा पत्र नहीं है । संस्कृत मे कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है ।

४३३४ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ३१६ । ज मण्डार ।

४३३५ अकुरोपणविधि । पत्र स० २ से २७ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १ । ख मण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

४३३६ अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल । पत्र स० २६ । भा० १२×७ इञ्च । भाषा—

प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० स० १ । च मण्डार ।

४३३७ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जिनदास । पत्र स० २६ । भा० १२×५ इञ्च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १७६४ । पूर्ण । वे० स० १८५६ । ट मण्डार ।

४३३८ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत । पत्र स० २१४ । भा० १४×८ इञ्च । भाषा—

हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १८७० । ले० काल स० १८७२ । पूर्ण । वे० स० ५०१ । च मण्डार ।

विशेष—गोपाललदुर्ग (गालियर) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४३३९ अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र स० ४८ । भा० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल स० १६३० फाल्गुन सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०५ । अ मण्डार ।

४३४० प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ले० काल × । वे० स० ४१ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ६) भी है ।

५३५१ प्रतिभं विदुषं तस्यै वारम् १२३१३ नं ४ ।। अभागा ।

निर्देश—इसी मास में एक से अधिक (१ से अधिक) पीर है ।

४३५२ प्रति सं० ४। वन सं ३९। मे वन ५। मे व ३८। ॥ ॥ ॥ ॥

निर्णय—इसी प्रकार के दो प्रश्नों (३ अं ३ व ४ के ही) पर ३३।

४३२३ क्षतिग्रस्त। वसुधै कुरुते। वसुधै कुरुते। १९९। १९९। १९९।

विषय—आचार्य श्री १८ १९१३ की ४७ वीं वर्षाव घोषणा के आधार पर।

५३५५ अकृत्रिमभावानयुक्ता—अमरह्रस्वात् । १५ मं ३ । दा ११× ६५ । दादा-ह्रि ।

विषय-सूची । १। काग मं ३६० भाव मुनि २७५ काग / सुर्त ३६० मं ४। भावसाद ।

दिग्गज—अन्धकार बँटवः—

मात्र १०/१० वर्षांचा जी जी प्रदि राधे जीव ।

गोरखी महापात्र की शक्त देखी बिना हीन ॥

श्रीदेवता उद्दिष्टान् श्री देवता वाऽऽशुभम् ।

ଜାଣି ନବ ପଦ୍ମୋତ୍ପତ୍ତି ଯାହା ଶ୍ରବଣଶ୍ରୀ ନବ ୧୧

एकनाईसव्या मंत्राची प्रार्थना—

विद्यति इव सप्त एतत् वै विद्यमानं भावि ।

ਸਾਚ ਸਾਧੁ ਬਖਸ਼ਿਓ ਭੁਲੀ ਜਾਣ ਭਰਾਮ ॥

४३५४ अक्षयनिन्दुका—पृष्ठ ४ व १। मा १२x११ इंच। माता-मन्दार। लाल-पुल।

१ वाच \times १ ले वाच \times पूर्ण । १ वी वी \times १ वी वी । १ वी वी । १ वी वी ।

५३४१ ऋद्धमलिविभूता ॥ १ ॥ वा ११५३ ह व । माता-वैभव । त्रिविभूता । ८

शान्द ५ । ते शान्द । पूर्ण । वे रं १ ३ । य ककार ।

विशेष सम्मानित सिन्धी हैं ।

४१८ अक्षुष्यार्तिवृत्ता—आनन्दमुखा । वष ३ । पा ११७४२८८ । अक्षुष्य—अक्षुष्य । विष

पृष्ठा १२ पन्ना ४ / ५ दिनांक १०-०६-२०१९ कागद क्रमांक ११७८३ दिनांक १०-०६-२०१९

निष्पत्ति—यही है वही वास्तविक जीवन में प्रतिबिम्बित हो गया ।

५३५६. कवचविधिनिर्णयः—। ११ अ. ४ । भा. १२७२ इ. ४ । भाषा-संभवः । विष्णु-पुरा.

१. वाच X । मं वाच X । पूर्ण । वे वं हवे । ज भगाः ।

विशेष—अति गौरव है। इसी सम्भार के एक भाग (के अं ११७२) कीट है।

४३४६ अढाई (साख्खे द्वय) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ६१ । भा० ११×५३ इञ्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० का १ × । अपूर्णा । वे० स० ४५० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १०४४) और है ।

४३५०. प्रति स० २ । पत्र स० १५१ । ले० काल स० १८२४ ज्येष्ठ सुदी १२ । वे० स० ७८७ । क

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ७८८) और है ।

४३५१ प्रति स० ३ । पत्र स० ८५ । ले० काल स० १८६२ माघ सुदी ३ । वे० स० ८४० । छ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्णा प्रतियां (वे० स० ५, ८१) और हैं ।

४३५२ प्रति स० ४ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८८४ भाद्रपद सुदी १ । वे० स० १३१ । छ

भण्डार ।

४३५३ प्रति स० ५ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १८६० । वे० स० ४२ । ज भण्डार ।

४३५४. प्रति स० ६ । पत्र स० ८३ । ले० काल × । वे० स० १२६ । झ भण्डार ।

विशेष—विजयराम पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४३५५ अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण । पत्र स० ११३ । भा० १०३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६०२ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वे० स० २ । च भण्डार ।

४३५६ अढाईद्वीपपूजा । पत्र स० १२३ । भा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल स० १८६२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ५०५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रीवावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५३४) और है ।

४३५७ प्रति स० २ । पत्र स० १२१ । ले० काल स० १८८० । वे० स० २१४ । ख भण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी जीवरु ने जोधनेर में प्रतिलिपि की थी ।

४३५८ प्रति स० ३ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १८७० कार्तिक सुदी ४ । वे० स० १२३ । घ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति [वे० स० १२२] और है ।

४३५९ अढाईद्वीपपूजा—ढालूराम । पत्र स० १६३ । भा० १२३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—पूजा । २० काल स० चैत सुदी ६ । ले० काल स० १६३६ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ८ । क भण्डार ।

विशेष—ममरचन्द दीवान के कहने से ढालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा में पूजा रचना की ।

४३६ प्रति मं ३। वष मं १८। मे वल मं ११५०। के मं ३५। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार के २ प्रतिमं [के मं ३४३३] पीर है।

४३६१ प्रति मं ३। वष मं १४४। मे वल \times । के मं ११। अ मण्डार।

४३६२ अमृतमधुहरीपूजा—शर्मिष्ठा। वष मं ११। या ८ \times ३४। मता-मंडप।

विषय—पूजा। र वल \times । मे वल \times । पूर्ण। के मं ४। अ मण्डार।

विशेष—इसीपूजा के विधि महिष है। यह पुष्प मन्मथी मन्मथ के केशवों के कन्द के बहाँ की।

४३६३ प्रति मं ३। वष मं १४। मे वल \times । के मं १४१। अ मण्डार।

विशेष—पूजा विधि एवं मन्मथ कृष्ण के वष के है।

इसी मण्डार के एक प्रति मं १२ की [के मं ३१] पीर है।

४३६४ अमृतमधुहरीपूजा—। वष मं १३। या १२ \times ३४। मता-मंडप। विषय—

पूजा। र वल \times । मे वल \times । पूर्ण। के मं ३। अ मण्डार।

विशेष—मन्मथ के अमृतमधु वष पूजा है।

४३६५ अमृतमधुहरीपूजा—भी मूषण। वष मं १८। या १३ \times ३४। मता-मंडप।

विषय—पूजा। र वल \times । मे वल \times । पूर्ण। के मं ३४। अ मण्डार।

४३६६ प्रति मं ३। वष मं ११। मे वल मं १२०। के मं ३५१। अ मण्डार।

विशेष—मन्मथ मण्डार के वं मन्मथ के प्रतिमं की की।

४३६७ अमृतमधुहरीपूजा—। वष मं ९। या १२ \times ३४। मता-मंडप। विषय—

पूजा। र वल \times । मे वल \times । पूर्ण। के मं ३। अ मण्डार।

४३६८ अमृतमधुहरीपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति। वष मं १। या १३ \times ३४। मता-मंडप।

विषय—पूजा। र वल \times । मे वल \times । के मं ३४२। अ मण्डार।

४३६९ अमृतमधुहरीपूजा—भी मूषण। वष मं १। या ७ \times ३४। मता-मंडप। विषय—

पूजा। र वल \times । मे वल \times । पूर्ण। के मं ११२३। अ मण्डार।

४३७० अमृतमधुहरीपूजा—। वष मं १। या ८ \times ३४। मता-मंडप। विषय—पूजा।

र वल \times । के वल \times । पूर्ण। के मं ३१। अ मण्डार।

४३७१ अमृतमधुहरीपूजा—सेवक। वष मं १। या १२ \times ३४। मता-मंडप। विषय—पूजा।

र वल \times । मे वल \times । पूर्ण। के मं ३३। अ मण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नीचे से कटा हुआ है ।

४३७२ अनन्तनाथपूजा । पत्र स० ३ । मा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६४ । अ मण्डार ।

४३७३ अनन्तव्रतपूजा । पत्र स० २ । मा० ११×५ इ अ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार म २ प्रतिष्ठा (वे० स० ५२०, ६६५) और है ।

४३७४ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० ११७ । छ मण्डार ।

४३७५ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल × । वे० स० २३० । ज मण्डार ।

४३७६ अनन्तव्रतपूजा । पत्र स० २ । मा० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५२ । अ मण्डार ।

विशेष—जैनतर पूजा ग्रन्थ है ।

४३७७ अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्ति । पत्र स० २ । मा० १२×५ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४१ । छ मण्डार ।

४३७८ अनन्तव्रतपूजा—साह सेवाराज । पत्र स० ३ । मा० ८×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६६ । अ मण्डार ।

४३७९ अनन्तव्रतपूजाविधि । पत्र स० १८ । मा० १०३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८५८ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १ । ग मण्डार ।

४३८० अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य । पत्र स० ६ । मा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वे० स० १३६३ । अ मण्डार ।

४३८१ अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र । पत्र स० १८ । मा० १२×५ इ च । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल स० १६३० । ले० काल स० १८४५ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४६७ । अ
मण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इत्याचार्याश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीअनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

संवत् १८४५ का—अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तिथौ च चौथि लिखित पिरागदास मोहा का जाति वाकलीयान
प्रतापसिंहराज्ये सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक विराजमाने सति पं० कल्याणदासतत्त्ववेदक आज्ञाकारी पंडित खुसालचन्द्रेण इदं
अनन्तव्रतोद्यापनलिखापित ॥१॥

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४३६६ अष्टिध्याय । पत्र सं० ६ । भा० ११×५ इ० । भाषा-प्राकृत । विषय-सल्लेखना

विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ मण्डार ।

विशेष—२०३ कुल गायार्थे हैं— ग्रन्थका नाम रिद्धाई है । जिसका संस्कृत रूपान्तर प्रतिष्ठाध्याय है । भादि
अन्त की गायार्थे निम्न प्रकार हैं—

परमत् सुरासुरमउ लिखणवरकिरणकतविछुरिय ।

बीरजिणपायुयल एमिऊण भणेमि रिद्धाई ॥१॥

ससारम्म भमतो जीवो बहुमेय भिण्ण जोगिणु ।

पुरकेण कहवि पावइ सुहमणु मत्त ए सवेहो ॥२॥

अन्त—

पुणु विज्जवेज्जहणूणां वारुड एव वीस सामिम्प ।

सुणीव सुमतेण रइय भणिण सुणि ठीरे वरि देहि ॥२०१॥

सूई भूमिले फलए समरे हाहि विराम परिहाणो ।

कहिजइ भूमिण समबरे हातय-वच्छा ॥२०२॥

अट्ठाट्ठाहू छिणे जे लद्धोह लच्छरेहाउ ।

पढमोहिरे मंके गविजए याहि ए तच्छ ॥२०३॥

इति अष्टिध्यायशास्त्र समाप्तम् । ब्रह्मवस्ता लेखित ॥ श्री ॥ छ ॥

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४१) और है ।

४३६७ अष्टाहिकाजयमाल । पत्र सं० ४ । भा० ६३×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-मृदा-

ह्लिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३१ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत में है ।

४३६८ अष्टाहिकाजयमाल । पत्र सं० ४ । भा० १३×४ इ० । भाषा-प्राकृत । विषय-मृदा-

ह्लिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३० । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१) और है ।

४३६९ अष्टाहिकापूजा । पत्र सं० ४ । भा० ११×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-मृदाह्लिका

पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६०) और है ।

४४०० अष्टाहिकापूजा । पत्र सं० ३१ । भा० १०३×४ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-

मृदाह्लिका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १५३३ । पूर्ण । वे० सं० ३३ । क मण्डार ।

विशेष—मैसूरु १९३३ में इस कृषि की प्रतिनिधि कराई जाकर स्टूडेंट भी राज्य में भी भेद की गई थी । व्यवसायी प्रत्युत हैं ।

४४०१ अष्टाद्विकार्याकथा—सुवेम्बुकीणि । वन नं १ । जा १ ३४२ दख । माला-माला ।
विनय कट्टिल्लिया वनं नी पुमा । माला माला । २ वन नं १ ३१ । माला माला १ १८ माला माला १ । ३
नं ३९९ । माला माला ।

विदेर—1 मुद्रास्वच्छता में बीबराज पारोधी के बनवाये हुए अक्षर में दिये हुए में अतिमिषि की भी।

अनाद्योऽनन्तमव्ययमिदं श्रीगुरुभक्तैः वरदास्तेषु ।

मन्त्रार्थः सत्यमुराधिरात्रि देवेभ्यो नमः ॥१॥ ॥१॥

साम्प्रदायिकीय व समाजवादीय विचारधारास्य प्रभावः ।

महोदधीर्निः प्रवृत्तः सैकःधीर्निः कृतस्त्वमेव ॥१३८॥

কান্দুইয়ে/তথ্যালি: দুবি কনুতমৎশাদেদর্জবেদাট ।

श्रीगङ्गादेवीं विनामस्तुभ्यो नमः ॥

तस्य लीलाटीक्ष्णायवचनविषदुः श्रीगुरुण्येति ।

१००० पुष्पावतारः श्रवणमुनिविरचितं श्रीचण्डीसाहस्रनामः ॥१॥ १५॥

४) अन्तर्गतप्रमाण्यं प्रियं सुखालम्बनं च स्वहोमं निरीहं नीचराजं पक्षीहीनं हृत् नीचालम् ॥ सुखं सुखम् ॥

इसके परिणाम यह भी निम्न है—

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

इसी कारण से कुछ प्रति नं १ की (के ल १४२) पीर है ।

४४० अष्टाङ्गिप्रज्ञा—आत्मराशः १४ नं ३। या ४५२ दशः शता-दिष्टी। विद-
यताः २ वा ४। नं ४५२। पूर्णः ३ नं ३। अथवा ४।

बिनीय—बनी का कुल नाम बना गया है ।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४४०३ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६३१ । वे० स० ३२ । क मण्डार ।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा । पत्र स० ४४ । मा० ११×५३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका

पर्व की पूजा । र० काल स० १८७६ कार्तिक बुदी ६ । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० १० । क मण्डार ।

४४०५ अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ३ । मा० ११×४ इक्ष । भाषा-

हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका व्रत विधान एव पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४२३ । व्य मण्डार ।

४४०६ अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन । पत्र स० २२ । मा० ११×५३ इक्ष । भाषा-हिन्दी पद्य ।

विषय-अष्टाह्निका व्रत एव पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६ । क मण्डार ।

४४०७ आचार्य शान्तिसागरपूजा—भगवानदास । पत्र स० ४ । मा० ११३×६३ इक्ष । भाषा-

हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६८४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२२ । छ मण्डार ।

४४०८ आठकोष्ठिमुनिपूजा—विश्वभूषण । पत्र स० ४ । मा० १२×६ इक्ष । भाषा-संस्कृत ।

पद्य-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ मण्डार ।

४४०९ आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन । पत्र स० ८ । मा० १२×५३ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-

रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५०० । अ मण्डार ।

४४१० प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १७८३ श्रावण सुदी ६ । वे० स० ६२ । छ

मण्डार ।

४४११ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६०५ मासोज बुदी २ । वे० स० १८० । म

मण्डार ।

४४१२ आदित्यव्रतपूजा । पत्र स० ३५ से ४७ । मा० १३×५ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-

रविव्रत पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७६१ । अपूर्ण । वे० स० २०६८ । ट मण्डार ।

४४१३ आदित्यवारपूजा । पत्र स० १४ । मा० १०×४३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-रवि

व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५२० । च मण्डार ।

४४१४ आदित्यवारव्रतपूजा । पत्र स० ६ । मा० ११×५ इक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-रवि

व्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ११७ । छ मण्डार ।

४४१५ आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र स० ४ । मा० १०३×५ इक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४८ । अ मण्डार ।

४४१६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ५१६ । च मण्डार ।

विषय—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ५१७) भी है ।

४४१०. प्रति मा० ३। पत्र सं ६। नै काल ×। नै सं ११२। अथकार।

विशेष—वाल्मीकि की गीता की सीटी के नाम तथा मनु दर्शन पाठ की है।

४४११. आदिमाधवपूजा—। पत्र सं ४। या १२३×२३ इंच। जाला—हिन्दी। विषय—गुना
८ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं ११२३। अथकार।

४४१२. आदिमाधवपूजा—। पत्र सं १। या १२×२३ इंच। जाला—हिन्दी। विषय—गुना
८ काल ×। नै काल ×। नै सं ११२३। अथकार।

विशेष—नैविद्यां गुणार्थ की है।

४४१३. श्रीगौरचरणपूजा—। पत्र सं २। या १२×२३ इंच। जाला—हिन्दी। विषय—गौर
नाम तीर्थपुर की गुना। ८ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं ११२३। अथकार।

विशेष—गङ्गातीर गुणार्थ की है की संस्तुत की है।

४४१४. आराधनाविधान—। पत्र सं १०। या १×२३ इंच। जाला—संस्तुत। विषय—
विषय विधान। ८ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै सं ४१२। अथकार।

विशेष—विष्णु की सीटी की उपकरणों आदि विधान विषय है।

४४१५. इन्द्रधनुषपूजा—। पत्र सं २। या १२×२३ इंच। जाला—संस्तुत।
विषय—गुना। ८ काल ×। नै काल सं १२३३ इन्द्रधनुष की ११। पूर्ण। नै सं ४१२। अथकार।

विशेष—विष्णुकीर्त्यात्मक न विषयगुण विरचितार्थ देखा विधान है।

४४१६. प्रति सं २। पत्र सं २२। नै काल सं १२३ इन्द्रधनुष की २। नै सं ४२०।
अथकार।

विशेष—गुण एवं विषय के हैं। काल की प्रतिविधि मनुष्य में महारत्ना अर्थात् विष्णु के वास्तविक न
है की।

४४१७. प्रति सं ३। पत्र सं २३। नै काल ×। नै सं ५। अथकार।

४४१८. प्रति सं ४। पत्र सं २४। नै काल ×। नै सं १२। अथकार।

विशेष—अथकार में २ पूर्ण प्रतिमा (नै सं १२ ४३) की है।

४४१९. इन्द्रधनुषपूजा—। पत्र सं २०। या ११×२३ इंच। जाला—संस्तुत। विषय—
केलो एवं अर्थों आदि के विधान के की जाले वाली गुना। ८ काल ×। नै काल सं १२३३ इन्द्रधनुष की २।
पूर्ण। नै सं १२। अथकार।

विशेष—अथकारवाली वाली के सीटीवाली के विशेष के प्रतिविधि की। मनुष्य की गुणों की
है की है।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४४२७ उपवासप्रदणविधि । पत्र सं० १ । मा० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—उपवास विधि । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२५ । पूर्ण । अ भण्डार ।

४४२८ ऋषिमडलपूजा—आचार्य गुणानन्दि । पत्र सं० ११ से ३० । मा० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विभिन्न प्रकार के मुनियों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१५ वंशाख बुद्धी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । अ भण्डार ।

विषय—पत्र १ से १० तक अन्य पूजायें हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

सवत् १६१५ वर्षे वैशाख वदि ५ गुरुवासरे श्री मूलसधे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगन्धे गुणानन्दि-मुनीन्द्रेण रचितामक्तिभावत । शतभाषिकाशीतिश्लोकाना ग्रन्थ सख्यस्या ॥ग्रन्थाग्रन्थ ३८०॥

इसी भण्डार भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७२) भीर है ।

४४२९ प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—मृष्टाह्निका जयमाल एव निर्वाणकाण्ड भीर है । ग्रन्थ के दोनों भीर सुन्दर बेल बूटे हैं । श्री भादिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं ।

४४३० प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनों भीर स्वर्ण के बेल बूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७७५ । वे० सं० १३७ (क) घ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है प्रति सुन्दर एव दर्शनीय है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) भीर है ।

४४३२ प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १५ । ङ भण्डार ।

४४३३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । झ भण्डार ।

४४३४ प्रति सं० ७ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० २१० । ब्भ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४३३) भीर है जो कि मूलसध के आचार्य नेमिकन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५ ऋषिमडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

४४३६ प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

४४३७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५६ ।

विशेष—अथवा नमः पर सकलभक्त्युपनिषत् विद्या भूषा है।

४४३८. अष्टमिर्दशपूजा—। नमः १ । या ११३×२३ दण । याता-संस्तुत । विष्णु-पूजा ।

२ नमः × । नै कल १०१२ नैय बुदी १२ । पूर्ण । नै ४८ । नमः अथवा ।

विशेष—महामा नागनी नै धामैर नै अतिनिधि नै नी ।

४४३९. अष्टमिर्दशपूजा—। नमः २ । या ११३×२३ दण । याता-संस्तुत । विष्णु-पूजा ।

२ कल × । नै कल १०१२ नैय बुदी १ । पूर्ण । नै ४९ । नमः अथवा ।

विशेष—अति नमः एवं याता संस्तुत है ।

४४४०. अष्टमिर्दशपूजा—दोस्त आसेरी । नमः ३ । या ११३×२३ दण । याता-हिन्दी ।

विष्णु-पूजा । २ नमः × । नै कल १०१२ नैय बुदी १ । पूर्ण । नै ५० । नमः अथवा ।

४४४१. अष्टमिर्दशपूजा—। नमः ४ । या ११३×२३ दण । याता-संस्तुत । विष्णु-पूजा एवं विधि ।

२ कल × । नै कल १०१२ नैय बुदी १ । पूर्ण । नै ५१ । नमः अथवा ।

विशेष—अष्टमिर्दशपूजा का कल यातापुटी १२ नी विद्या याता है ।

४४४२. अष्टमिर्दशपूजा—। नमः ५ । या ११३×२३ दण । याता-संस्तुत । विष्णु-पूजा ।

२ नमः × । नै कल १०१२ नैय बुदी १ । पूर्ण । नै ५२ । नमः अथवा ।

विशेष—अष्टमिर्दशपूजा का नै है ।

४४४३. अष्टमिर्दशपूजा—। नमः ६ । या ११३×२३ दण । याता-संस्तुत हिन्दी ।

विष्णु-पूजा एवं विधि । २ कल × । नै कल १०१२ नैय बुदी १ । पूर्ण । नै ५३ । नमः अथवा ।

विशेष—पूजा संस्तुत नै है तथा विधि हिन्दी नै है ।

४४४४. अष्टमिर्दशपूजा—। नमः ७ । या ११३×२३ दण । याता-संस्तुत । विष्णु-पूजा ।

२ कल × । नै कल १०१२ नैय बुदी १ । पूर्ण । नै ५४ । नमः अथवा ।

विशेष—अष्टमिर्दशपूजा नै एक अति (नै ५) नीर है ।

४४४५. अष्टमिर्दशपूजा—। नमः ८ । या ११३×२३ दण । याता-संस्तुत । विष्णु-पूजा । २ नमः × ।

४४४६. अष्टमिर्दशपूजा—अष्टमिर्दशपूजा । नमः ९ । या ११३×२३ दण । याता-संस्तुत ।

विष्णु-पूजा । २ कल × । नै कल १०१२ नैय बुदी १ । पूर्ण । नै ५५ । नमः अथवा ।

४४४७. अष्टमिर्दशपूजा—। नमः १० । या ११३×२३ दण । याता-संस्तुत ।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४४४८ कर्मदहनपूजा—म० शुभचन्द्र । पत्र स० ३० । आ० १०३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा । २० काल × । ले० काल स० १७६४ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वै० स० १६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वै० स० ३०) और है ।

४४४९ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६७२ आसोज । वै० स० २१३ । ब भण्डार ।

४४५० प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६३५ मगसिर बुदी १० । वै० स० २२५ । ब भण्डार ।

विशेष—आ० नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखा गया था ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० स० २६७) और है ।

४४५१ कर्मदहनपूजा— । पत्र स० ११ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—कर्मों के नष्ट करने की पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८३६ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वै० स० ५२५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वै० स० ५१३) और है जिसका ले० काल स० १८२४ भाद्रवा सुदी १३ है ।

४४५२ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १८८८ माघ शुक्ला ८ । वै० स० १० । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

४४५३ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १७०८ श्रावण सुदी २ । वै० स० १०१ । ङ भण्डार ।

विशेष—माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतिया (वै० स० १००, १०१) और हैं ।

४४५४ प्रति स० ४ । पत्र स० ४३ । ले० काल × । वै० स० ६३ । च भण्डार ।

४४५५ प्रति स० ५ । पत्र स० ३० । ले० काल × । वै० स० १२५ । छ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणिकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है । इसी भण्डार में और इसी वेष्टन मे १ प्रति और है ।

४४५६ कर्मदहनपूजा—टेकचन्द्र । पत्र स० २२ । आ० ११×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—कर्मों को नष्ट करने के लिये पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७०६ । अ भण्डार ।

४४५७ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वै० स० ११ । घ भण्डार ।

४४५८ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १८६८ फागुण बुदी ३ । वै० स० ५३२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वै० स० ५३१, ५३३) और है ।

४४२६ प्रति स ४। पत्र सं १९। ने काल सं १२१। ने सं १९। क मन्थार।

४४२७ प्रति स ५। पत्र सं २४। ने काल सं १२२। ने सं २२१। क मन्थार।

विशेष—मन्थार बाबों के श्रीमद्विष्णु मन्थार में प्रतिष्ठित हुई थी।

इसी मन्थार में एक प्रति (ने सं २३६) भी है।

४४२८ कन्नडाविधान—मोहना। पत्र सं ६। पा ११×२५ इंच। मन्थार—मोहना। विधान—मन्थार
एवं मन्थार मन्थार की विधि। १ काल सं १२१७। ने काल सं १२२२। मुल्ल। ने सं २७। क
मन्थार।

विशेष—मोहना के मन्थारमन्थार के विधान (मोहना) मन्थार में मन्थार मन्थार के विधान
काल के लिए यह विधान रचा गया।

मन्थार मन्थार मन्थार मन्थार है—

मन्थार में मन्थारमन्थार मन्थार में मन्थारमन्थार मन्थार में १ काल सं १२२२। ने काल सं १२२२। ने सं २७। क
मन्थार। १ काल सं १२२२। ने काल सं १२२२। ने सं २७। क मन्थार।
१ काल सं १२२२। ने काल सं १२२२। ने सं २७। क मन्थार।
१ काल सं १२२२। ने काल सं १२२२। ने सं २७। क मन्थार।

४४२९ कन्नडाविधान—मोहना। पत्र सं ६। पा ११×२५ इंच। मन्थार—मोहना। विधान—मन्थार
एवं मन्थार मन्थार की विधि। १ काल सं १२२२। ने काल सं १२२२। ने सं २७। क मन्थार।

४४३० कन्नडाविधान—मोहना। पत्र सं ६। पा ११×२५ इंच। मन्थार—मोहना। विधान—मन्थार
विधि। १ काल सं १२२२। ने काल सं १२२२। ने सं २७। क मन्थार।

४४३१ कन्नडाविधान—मोहना। पत्र सं ६। पा ११×२५ इंच। मन्थार—मोहना। विधान—मन्थार
मन्थार के विधान पर मन्थार मन्थार की विधि विधान। १ काल सं १२२२। ने काल सं १२२२। ने सं २७। क
मन्थार।

विशेष—मोहना मन्थार मन्थार मन्थार है।

४४३२ कन्नडाविधान—मोहना। पत्र सं ६। पा ११×२५ इंच। मन्थार—मोहना। विधान—मन्थार
के विधान पर मन्थार मन्थार की विधि विधान। १ काल सं १२२२। ने काल सं १२२२। ने सं २७। क
मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (ने सं १२२) भी है।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४४६६. कलशाभिषेक—आशाधर । पत्र स० ६ । मा० १०^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अभिषेक विधि । २० काल × । ले० काल स० १८३८ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वे० स० १०६ । ड मण्डार ।

विशेष—प० दाम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय में प्रातःलिपि की थी ।

४४६७ कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र । पत्र स० ३४ । मा० १०^३×५ इ च । भाषा—

संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२६ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ५८१ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रवांति निम्न प्रकार है—

सवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीगुरुनमः नद्याम्माये वलात्कारण्ये सरस्वतीगन्धे श्रीकुदकुंदाचार्यो-

न्वये भ० पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिण्णचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य श्रीमडनाचार्यधर्मचन्द्रदेवा तच्छिष्य मडलाचार्यश्रीललितकोत्तिदेवा तदाम्नाये खडेलवालात्त्वये मडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-
शिष्यगि वाई नानी इदं शास्त्रं लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्त ।

४४६८ कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा— । पत्र स० ७ । मा० १०^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१६ । व्य मण्डार ।

४४६९ कलिकुण्डपूजा । पत्र स० ३ । मा० १०^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११८३ । अ मण्डार ।

४४७०. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० १०८ । ड मण्डार ।

४४७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल × । वे० स० २५६ । ज मण्डार । और भी पूजायें हैं ।

४४७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० २२४ । झ मण्डार ।

४४७३ कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र स० ६ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५०३ । अ मण्डार ।

विशेष—रुचिकरगिरि, मानुषीत्तरगिरि तथा पुष्कराढ की पूजायें और हैं ।

४४७४ क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन । पत्र स० २ से २८ । मा० १०^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८७४ भादवा बुदी ६ । अपूर्ण । वे० स० १३३ । (क) छ मण्डार ।

४४७५ प्रति स० २ । पत्र स० २० । ले० काल स० १६३० ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० स० १२४ । छ मण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पाड्या चौधरी घाटसू वाले के लिए प० मनमुखजी ने गोधो के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४४७६ प्रति सं ३। पत्र सं ५३। के काल सं १२१६ बीघाब बुधी १९। के सं ११। क
अध्यास।

४४७७. क्षेत्रपात्रपूजा—। पत्र सं ९। या ११३×२२ इंच। अया—तल्लु। विषय—वैव
वत्सलानुसार वैष्णव की पूजा। के काल ×। के काल सं १२ काकुल बुधी ७। पूर्ण। के सं ७९। क
अध्यास।

विशेष—वैष्णव की अयावाकरी टोम्ब अक्षिपत्त के पं अयावाक वत्सल के प्रतिमिति करवाई की।

४४७८. प्रति सं २। पत्र सं ४। के काल सं १२१ वैव बुधी ९। के सं ४५३। क
अध्यास।

विशेष—इसी अध्यास में २ प्रतिमिति (के सं ४२२ १२२, और ६।

४४७९. प्रति सं ३। पत्र सं १३। के काल ×। के सं १२४। क अध्यास।

विशेष—२ प्रतिमिति और ६।

४४८०. कश्चिन्मात्रोद्यापनपूजा—सुमि कश्चित्कीर्ति। पत्र सं २। या १२×२ इंच। अया—
तल्लु। विषय—पूजा। के काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं २११। क अध्यास।

४४८१. प्रति सं २। पत्र सं ९। के काल ×। के सं ११। क अध्यास।

४४८२. प्रति सं ३। पत्र सं ४। के काल सं १२२। के सं ९९। क अध्यास।

४४८३. कश्चिन्मात्रोद्यापन—। पत्र सं १७ सं २१। या १२×२३ इंच। अया—तल्लु।
विषय—पूजा। के काल ×। के काल ×। पूर्ण। के सं १२५। क अध्यास।

४४८४. राजपदामकपूजा—म क्षेत्रपात्रकीर्ति (जागौर पट्ट)। पत्र सं १। या १२×२३
इंच। अया—तल्लु। विषय—पूजा। के काल ×। के काल सं १२४। पूर्ण। के सं ११। क अध्यास।

विशेष—प्रतिमिति अक्षिपत्त—

पूजार्थे वनजगारे वन्द्ये वात्सल्ये वन्द्यम् ।

सुखसुखान्तये वात्स्य सुखवागवधारम् ॥११॥

वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि। वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि ।

वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि। वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि ॥२॥

वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि। वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि ।

वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि। वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि ॥३॥

वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि। वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि ।

वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि। वन्द्यारिर्बुद्धि वन्द्यारिर्बुद्धि ॥४॥

जीयादिद पूजन च विश्वभूषणवधुव ।

तस्यानुसारतो ज्ञेय न च बुद्धिकृत त्विद ॥२३॥

इति नागोरपट्टविराजमान श्रीभट्टारक्षसेमेन्द्रकीर्तिविरचित गजपयमण्डलपूजनविधान समाप्तम् ॥

४४८५ गणधरचरणारविन्दपूजा । पत्र स० ३ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १२१ । क मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीका सहित है ।

४४८६ गणधरजयमाला । पत्र स० १ । आ० ८×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २१०० । अ मण्डार ।

४४८७ गणधरवलयपूजा । पत्र स० ७ । आ० १०३×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १४२ । क मण्डार ।

४४८८ प्रति स० २ । पत्र स० २ से ७ । ले० काल × । वै० स० १३४ । क मण्डार ।

४४८९ प्रति स० ३ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वै० स० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिया (वै० स० ११६, १२२) भी हैं ।

४४९० गणधरवलयपूजा । पत्र स० २२ । आ० ११×४ इ च । भाषा-विषय-पूजा । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ४२१ । ब मण्डार ।

४४९१ गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र स० ११ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल स० १७५६ । ले० काल स० १६०४ साध बुदी ६ । पूर्ण । वै० स० ६१२ । अ मण्डार ।

४४९२ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वै० स० ११६ । छ मण्डार ।

विशेष—एक प्रति भी है ।

४४९३ गिरिनारक्षेत्रपूजा । पत्र स० ४ । आ० ८×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल स० १६६० । पूर्ण । वै० स० १४० । क मण्डार ।

४४९४ चतुर्दशीव्रतपूजा * । पत्र स० १३ । आ० ११३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १५३ । क मण्डार ।

४४९५ चतुर्विंशतिजयमाल—यति साधनदि । पत्र स० २ । आ० १२×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २६८ । ख मण्डार ।

४४३६ चतुर्विंशतितीर्थहस्तपूजा—। पत्र सं ३१। या ११×२ इय। माता—संस्तुत। विपन-
पूजा। १ कल ×। २ काज ×। ३ गुर्त। ४ सं ११। अ मन्थार।

विशेष—केवल प्रतिष्ठा वन नहीं है।

४४३७ प्रति स २। पत्र सं ४६। १ कल सं ११ २ मन्थार गुटी १। ३ सं १११। अ
मन्थार।

४४३८ चतुर्विंशतितीर्थहस्तपूजा—। पत्र सं ४६। या ११×२ इय। माता—संस्तुत। विपन-
पूजा। १ कल ×। २ कल ×। ३ गुर्त। ४ सं १। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार के मन्थार में बताया भी।

४४३९ प्रति स ३। पत्र सं ४९। १ कल सं ११ २। ३ सं १११। अ मन्थार।

४४ चतुर्विंशतितीर्थहस्तपूजा—। पत्र सं ४९। या १ २×२ इय। माता—संस्तुत। विपन-
पूजा। १ कल ×। २ कल ×। ३ गुर्त। ४ सं ११७। अ मन्थार।

विशेष—यही २ मन्थारा क्रिन्ती में भी है।

४४ १ प्रति स ३। पत्र सं ४७। १ कल सं ११ २। ३ सं १११। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक मन्थार प्रति (३ सं १११) भी है।

४४ २ प्रति स ३। पत्र सं २। १ कल ×। ३ सं ७६। अ मन्थार।

४४ ३ चतुर्विंशतितीर्थहस्तपूजा—सेवाराम सप्त। पत्र सं ४६। या १२×७ इय। माता—
क्रिन्ती। विपन-पूजा। १ कल स १ २४ मन्थार गुटी १। २ कल सं १ २४ मन्थार गुटी ११। गुर्त। ३
सं ७११। अ मन्थार।

विशेष—आहुत के प्रतिनिधि भी भी। यदि वे अपने पिता मन्थार के बगले हुए निम्नलिखित
मोर बुद्धिबिदास का मन्थार किया है।

इसी मन्थार में एक प्रति (३ सं ७१४) भी है।

४४ ४ प्रति स २। पत्र सं ६। १ कल स ११ २ मन्थार गुटी ३। ३ सं ७१४। अ
मन्थार।

४४ ५ प्रति स ३। पत्र सं २९। १ कल सं ११४ मन्थार गुटी ११। ३ सं ४६। अ
मन्थार।

४४ ६ प्रति सं ४। पत्र सं ४६। १ कल सं १ २। ३ सं २३। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रति (३ सं २१ २२) भी है।

४५०७ चतुर्विंशतिपूजा " १। पत्र स० २०। मा० १२×५½ इ च। मापा-हिन्दी। विषय-पूजा।

२० काल ×। ले० काल ×। मपूर्ण। वे० म० १२०। छ मण्डार।

४५०८ चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा—घृन्दावन। पत्र स० १६। मा० ११×५½ इ च। मापा-हिन्दी।

विषय-पूजा। २० काल स० १८१६ कार्तिक सुदी ३। ले० कान स० १६१५ मापाठ सुदी ५। पूर्ण। वे० म० ७१६।

अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ७ प्रतिमा (वे० स० ७२०, ६२७) भीर हैं।

४५०९ प्रति स० २। पत्र स० ४६। ले० काल ×। वे० स० १४५। क मण्डार।

४५१० प्रति स० ३। पत्र स० ६५। ले० काल ×। वे० स० ४७। ख मण्डार।

४५११ प्रति स० ४। पत्र स० ४६। ले० कान स० १६५६ कार्तिक सुदी १०। वे० स० २६। ग

मण्डार।

४५१२ प्रति स० ५। पत्र स० ५५। ले० काल ×। मपूर्ण। वे० स० २५। घ मण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

४५१३. प्रति स० ६। पत्र स० ७०। ले० काल स० १६२७ सावन सुदी ३। वे० स० १६०। ङ

मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ४ प्रतिमा (वे० स० १६१, १६२, १६३, १६४) भीर है।

४५१४ प्रति स० ७। पत्र स० १०५। ले० काल ×। वे० स० ५४४। च मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ३ प्रतिमा (वे० स० ५४२, ५४३, ५४५) भीर हैं।

४५१५ प्रति स० ८। पत्र स० ४७। ले० काल ×। वे० स० २०२। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ४ प्रतिमा (वे० स० २०४ मे ३ प्रतिमा, २०५) भीर हैं।

४५१६ प्रति स० ९। पत्र स० ६७। ले० काल स० १६४२ चैत्र सुदी १५। वे० स० २६१। ज

मण्डार।

४५१७ प्रति स० १०। पत्र स० ८१। ले० काल ×। वे० स० १८६। झ मण्डार।

विशेष—सर्वमुखजी गोधा ने स० १६०० भादवा सुदी ५ को चढ़ाया था।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० १४५) भीर है।

४५१८ प्रति स० ११। पत्र स० ११५। ले० काल स० १६४६ सावन सुदी २। वे० स० ४४५। ञ

मण्डार।

४५१९ प्रति स० १२। पत्र स० १४७। ले० काल स० १६३७। वे० स० १७०६। ट मण्डार।

विशेष—छोटेलाल भांवसा ने स्वपठनार्थ श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

४७३ अष्टमिदिशीयहूरपूजा—शमनपूजा । वन नं १ । या ११×११ दण्ड । शान्ति द्विती
पद । विषय—पूजा । १ । वन नं १ २४ । नै । वन नं ५ । पूर्ण । नै । नं २८१ । वन मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा (नै । नं २१२ २ २) धीर है ।

४७४ प्रमि स २ । वन नं २ । नै । वन नं १ ३१ शान्तिपुत्री १ । नै । नं २४ । म
मन्थार ।

विशेष—मन्थारपुत्र शान्तिपुत्र के प्रतिष्ठित की थी ।

इसी मन्थार के एक प्रति (नै । नं २२) धीर है ।

४७५ प्रमि स ३ । वन नं २१ । नै । वन नं ११२४ । नै । नं १७ । वन मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा (नै । नं १९ २४) धीर है ।

४७६ प्रति स ४ । वन नं २७ । नै । वन नं १२७ । वन मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिष्ठा (नै । नं १३ १३२, ७ ७) धीर है ।

४७७ प्रति स ५ । वन नं ३६ । नै । वन नं १२९६ । नै । नं २४२ । वन मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिष्ठा (नै । नं २४६ २४७ २४८) धीर है ।

४७८ प्रति स ६ । वन नं ३४ । नै । वन नं १ २१ । नै । नं २१२ । वन मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा (नै । नं २१७ २१ २२ / १) धीर है ।

४७९ प्रति स ७ । वन नं २६ । नै । वन नं ५ । नै । नं २ ७ । वन मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (नै । नं २ ७) धीर है ।

४८० प्रति स ८ । वन नं १ १ । नै । वन नं १७६१ शान्तिपुत्री ४ । नै । नं १ । म
मन्थार ।

विशेष—शेखराय शंकरा के प्रतिष्ठित कर्ण एवं मन्थारपुत्र शान्तिपुत्र के विहीन शान्तिपुत्र के मन्थार में बड़ा
की । इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा (नै । नं २ १ १) धीर है ।

४८१ प्रति स ९ । वन नं ७३ । नै । वन नं १ २२ शान्तिपुत्री १२ । नै । नं १४ । म
मन्थार ।

विशेष—मन्थारपुत्र शान्तिपुत्र के प्रतिष्ठित की थी ।

इसी मन्थार में २ प्रतिष्ठा (नै । नं २१२, २११) धीर है ।

४८२ अष्टमिदिशीयहूरपूजा—शमनपूजा पाठमी । वन नं १ । या ११२×१२ दण्ड । शान्ति
द्विती । विषय—पूजा । १ । वन नं १ । वन नं १२१ शान्तिपुत्री ११ । नै । नं
१४४ । वन मन्थार ।

विशेष—ग्रन्थ में कवि का सक्षिप्त परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि दीवान प्रमरचंद

जी के मन्दिर में कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहाँ से प्रमरावती गये ।

४५३० चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरगलाल । पत्र स० ५१ । भा० ११×८ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२१ । अ मण्डार ।

४५३१ प्रति स० २ । पत्र स० ६६ । ले० काल × । वे० स० १८३ । क मण्डार ।

विशेष—पूजा के ग्रन्थ में कवि का परिचय भी है ।

४५३२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६० । ले० काल × । वे० स० २०३ । छ मण्डार ।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वस्तुवरलाल । पत्र स० ५४ । भा० ११३×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १८५८ मगसिर बुदी ६ । ले० काल स० १६०१ वार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५५० । च मण्डार ।

विशेष—तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी ।

४५३४ प्रति स० २ । पत्र स० ५ मे ६६ । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० २०५ । छ मण्डार ।

४५३५ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द्र । पत्र स० ६७ । भा० ११३×८ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ५५५ । च मण्डार ।

४५३६ प्रति स० २ । पत्र स० ८४ । ले० काल स० १६२८ वैशाख सुदी ५ । वे० स० ५५६ । च मण्डार ।

४५३७ चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा । पत्र स० ७७ । भा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६१६ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६२६ । अ मण्डार ।

४५३८ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० १५४ । छ मण्डार ।

४५३९ चन्दनपष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० १० । भा० ६×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६८ । म मण्डार ।

४५४० चन्दनपष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द्र । पत्र स० ८ । भा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१६ । च मण्डार ।

विशेष—‘वतुर्थ पूजा की जयमाल’ यह नाम दिया हुआ है । जयमाल हिन्दी में है ।

४५४१ चन्दनपष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६ । भा० ८३×४ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चन्द्रप्रभ की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७१ । क मण्डार ।

४२४२. चम्पनपट्टीकृतपूजा—। पत्र सं २१। या १२×२२ इंच। माता—संस्कृत। विषय—

तीर्थहृत् चम्पन की पूजा। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १२२। अथ कथार।

विशेष—विष्णु पूजार्थे धीर है— पञ्चमी व्रतोद्यायक नमःपुत्राविधान।

४२४३. चम्पनपट्टीकृतपूजा—। पत्र सं ३। या १२×२२ इंच। माता—संस्कृत। विषय—

चम्पन तीर्थहृत् पूजा। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं २१२२। अथ कथार।

विशेष—इसी कथार में एक प्रति (मे सं २१२३) धीर है।

४२४४. प्रति सं २। पत्र सं ३। मे काल ×। अर्घ्य। मे सं २११। अथ कथार।

४२४५. चम्पनपट्टीकृतपूजा—। पत्र सं २। या ११×२२ इंच। माता—संस्कृत। विषय—

चम्पन तीर्थहृत् पूजा। र काल ×। मे काल ×। अर्घ्य। मे सं २१७। अथ कथार।

विशेष—इस पत्र नहीं है।

४२४६. चम्पनपट्टीकृतपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं ७। या १२×२२ इंच। माता—हिन्दी। विषय—

पूजा। र काल ×। मे काल सं १२७२ मासोज भुटी ४। पूर्ण। मे सं ४९। अथ कथार।

विशेष—उद्योग बावलीवाल बहुधा गली में प्रतिनिधि की की।

४२४७. चम्पनपट्टीकृतपूजा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र सं २। या ११×२२ इंच। माता—संस्कृत।

विषय—पूजा। र काल ×। मे काल सं १२३। पूर्ण। मे सं २७९। अथ कथार।

४२४८. प्रति सं २। पत्र सं २। मे काल सं १२३। मे सं ४९। अथ कथार।

विशेष—मातेर में १२७९ में रामचन्द्र की किसी हुई प्रति में प्रतिनिधि की गई की।

४२४९. चम्पनपट्टीकृतपूजा—। पत्र सं २। या ७×२२ इंच। माता—हिन्दी। विषय—

पूजा। र काल ×। मे काल सं १९२७ वैशाख भुटी १३। पूर्ण। मे सं ९२। अथ कथार।

४२५०. कारिकामुद्रि विधान—श्री मूषण। पत्र सं १७। या १२×२२ इंच। माता—संस्कृत।

विषय—मुद्रि कीर्ति के समय होने वाले विधान एवं पूजन। र काल ×। मे काल सं १। पत्र भुटी। पूर्ण। मे सं ४८२। अथ कथार।

विशेष—इसका दूसरा नाम बाण्डी कीर्तिवाचन पूजा विधान की है।

४२५१. प्रति सं २। पत्र सं २। मे काल ×। मे सं १५२। अथ कथार।

विशेष—केवल कथार नहीं हुई है।

४५५० चारित्रशुद्धिविधान—सुमतित्रय । पत्र स० ८४ । भा० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल स० १६३७ वैशाख सुदी १५ ।
पूर्णा । वे० स० १२३ । ख भण्डार ।

४५५३ चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र । पत्र स० ६६ । भा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।
मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल स० १७१४ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्णा ।
वे० स० २०४ । ज भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रणप्ति—

संवत् १७१४ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे चउथ तिया शुक्लवासरे । घडमोलास्थाने मु डलदेशे श्रीधर्मनाथ
चैत्रपालये श्रीमूलसधे सरम्बतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्रा तत्पट्टे भ० हर्षचन्द्रा
तदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरमी तत्शिष्य ब्रह्म श्री गणदास तत्शिष्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ उद्यापन
बारमे चौत्रीमु स्वहस्तेन लिखित ।

४५५४ चिन्तामणिपूजा (वृद्ध)—विद्याभूषण सूरि । पत्र स० ११ । भा० ६३×४३ इ च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ५५१ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नहीं हैं ।

४५५५ चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा (वृद्ध)—शुभचन्द्र । पत्र स० १० । भा० ११३×५ इ च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५७४ । अ भण्डार ।

४५५६ प्रति स- ७ । पत्र स० ८२ । ले० काल स० १६६१ पौष सुदी ११ । वे० स० ४१७ । ख
भण्डार ।

४५५७ चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा । पत्र स० ३ । भा० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ११८४ । अ भण्डार ।

४५५८ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० २८ । ग भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें गौर हैं । चिन्तामणिस्तोत्र, कलि कुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा ।

४५५९ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० ६६ । च भण्डार ।

४५६० चिन्तामणिपार्श्वनाथपूजा । पत्र स० ११ । भा० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ५८३ । ख भण्डार ।

४२६१ विष्णुमणिपार्ष्णीमात्रपूजा—। पत्र सं २। या ११५×१५ दण। माता-दत्त।

विशेष—पूजा-१८ काल × १८ काल × १८ काल। के सं १११४। अ मन्थार।

विशेष—यज्ञविधि पूर्व स्तोत्र भी विधा है।

इसी मन्थार में एक प्रति (के सं १४) भी है।

४२६२ श्रीरूपपूजा—। पत्र सं १६। या १ × ७ दण। माता-मंदर। विशेष—पूजा-१८

काल × १८ काल × १८ काल। के सं २६६। अ मन्थार।

विशेष—यज्ञविधान में लेकर धर्मतन्त्र तक पुनर्लेख है।

४२६३ श्रीसठशक्तिपूजा—स्वरूपपूजा। पत्र सं ३२। या ११ × २ दण। माता-हिन्दी।

विशेष—१४ प्रकार की शक्ति पारण करने वाले मुनिजी की पूजा-१८ काल सं १६१ साधन मुनी ७। के सं १६२। के सं १६४। अ मन्थार।

विशेष—इसका दूसरा नाम सुदृष्टपूजा भी है।

इसी मन्थार में ४ प्रति (के सं ७१५ ७१७ ७१८ ७१९) भी है।

४२६४ प्रति सं २। पत्र सं ६। के सं १६१। के सं १७। अ मन्थार।

४२६५ प्रति सं ३। पत्र सं १२। के सं १६२। के सं १६। अ मन्थार।

४२६६ प्रति सं ४। पत्र सं १९। के सं १६२। के सं १६। अ मन्थार।

मन्थार।

४२६७ प्रति सं ५। पत्र सं २२। के सं १६२। के सं १६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं १६४) भी है।

४२६८ प्रति सं ६। पत्र सं २५। के सं १६४। अ मन्थार।

४२६९ प्रति सं ७। पत्र सं ३०। के सं १६२। के सं १६५। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ४ प्रति (के सं १७२ १७३/१) भी है।

४२७० प्रति सं ८। पत्र सं ३५। के सं १६४। के सं १६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रति (के सं १६५/२ १६६) भी है।

४२७१ प्रति सं ९। पत्र सं ४०। के सं १६४। के सं १६५। अ मन्थार।

४२७२ प्रति सं १०। पत्र सं ४५। के सं १६४। के सं १६५। अ मन्थार।

४२७३ क्षातिविचारविधि—। पत्र सं ३। या ११×४ दण। माता-हिन्दी। विशेष—

विशेष—१८ काल × १८ काल × १८ काल। के सं १६७। अ मन्थार।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान माहित्य]

४५७४ जम्बूद्वीपपूजा—पाडे जिनदास । पत्र स० १६ । आ० १०३×६ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल स० १८२२ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १८३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति मङ्गलम जिनालय तथा भूत, भविष्यत्, वर्तमान जिनपूजा सहित है । प० चोखन्द ने माहचन्द्र से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४५७५ प्रति स० २ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १६ । वे० स० १८८ । च भण्डार ।

विशेष—भवानीचन्द भाषासा फिनाय वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५७६ जम्बूद्वीपपूजा । पत्र स० १० । आ० ८×५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्रिम वेवली जम्बूद्वीप की पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वे० स० ६०१ । अ भण्डार ।

४५७७ जयमाल—रायचन्द्र । पत्र स० १ । आ० ८३×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल स० १८५५ फागुण सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१३२ । अ भण्डार ।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ़ में प्रतिलिपि की थी ।

४५७८ जलहरतेलाविधान । पत्र स० ४ । आ० ११३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ३२३ । ज भण्डार ।

विशेष—जलहर तेले (घृत) की विधि है । इसका दूसरा नाम भरतेला घन भी है ।

४५७९ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १६२८ । वे० स० ३०२ । ख भण्डार ।

४५८० जलयात्रापूजाविधान । पत्र स० २ । आ० ११×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६३ । ज भण्डार ।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान ।

४५८१ जलयात्राविधान—महा प० आशाधर । पत्र स० ८ । आ० ११३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-जमाभिषेक के लिए जल लाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६६ । अ भण्डार ।

४५८२ जलयात्रा (तीर्थोदकादानविधान) । पत्र स० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—जलयात्रा के यत्र भी दिये हैं ।

४५८३ जिनगुणसप्तपूजा—भ० रत्नचन्द्र । पत्र स० ६ । आ० ११३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२ । छ भण्डार ।

४७८४ प्रति स० २। वषर्त् १। नै कालर्त् ११३। वै र्त् १७१। अ म्प्यार।

विशेष—वीपति बोधी वै प्रतिविधि भी भी।

४७८५. जिनगुणसंपत्तिपूजा—। वषर्त् ११। मा १२०२ दृष। माता—संतुष्ट। विप-

पूजा। २ काल ×। नै काल ×। पुर्त्। वै र्त् २११७। अ म्प्यार।

विशेष—२वी वष नहीं है।

४७८६ प्रति स० २। वषर्त् ४। नै कालर्त् १२२१। वै र्त् २२१। अ म्प्यार।

४७८७ जिनगुणसंपत्तिपूजा—। वषर्त् २। मा ७१×१२ दृष। माता—संतुष्ट प्रत्य।

विप-पूजा। २ काल ×। नै काल ×। पुर्त्। वै र्त् २१२। अ म्प्यार।

४७८८ जिनपुरस्कारसंपत्तिपूजा—। वषर्त् १४। मा १२०२ दृष। माता—संतुष्ट। विप-

पूजा। २ काल ×। नै काल ×। पुर्त्। वै र्त् २१। अ म्प्यार।

४७८९ जिनपूजाकर्मप्रतिष्ठा—। वषर्त् २। मा १ ×२२ दृष। माता संतुष्ट। विप-

पूजा २ काल ×। नै काल ×। पुर्त्। वै र्त् ४७२। अ म्प्यार।

विशेष—पूजा के बाद २ कमा भी है।

४७९० जिनवक्त्रकल्प (प्रतिष्ठासार)—सहा र्त् आश्विनवार। वषर्त् १२। मा १ ×४

दृष। माता—संतुष्ट। विप-वृत्ति कपी प्रतिष्ठावि विधानों की विधि। २ काल र्त् १२०२ मातुष कुटी। नै काल र्त् १४२२ मातुष कुटी (वर्त् १२६) पुर्त्। वै र्त् २। अ म्प्यार।

विशेष—प्रवर्त्ति विधान प्रकार है—

वर्त्त् १४२२ वर्त्त् १२६ वष मातुष वरि कुलपति— (अपुर्त्)

४७९१ प्रति स० २। वषर्त् ७७। नै काल र्त् १२२१। वै र्त् ४७२। अ म्प्यार।

विशेष—प्रवर्त्ति—वर्त्त् १२२२ वर्त्त्—।

४७९२ प्रति र्त् ३। वषर्त् १२। नै काल र्त् १२०२ मातुष कुटी १२। वै र्त् १७। अ

म्प्यार

विशेष—वपुत्त मे वीरकर्म के वाचककाल में प्रतिविधि हुई।

विशेष प्रवर्त्ति—

वीरकर्मके वपुत्तकी भी वपुत्त वपुत्तकाल में प्रतिविधि।

विधानों भी वपुत्तकाल में वपुत्तकाल में विधानों में विधानों में।

श्रीकुन्दकुदाखिलयोगनाथ पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गा ।
 दुर्वादिबाहुन्मयनैकसज्ज विद्यामुनदीश्वरसूरिमुख्य ॥
 तदन्वये योऽमरकीर्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेभयायु ।
 तस्यानुशिष्यशुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगया ॥
 पुर्यां द्युभाया पट्टपशुवत्या सुवर्णकाणाप्रत नीचकार ॥

४५६३ प्रति स० ४ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १६५६ भादवा सुदी १२ । वे० स० २२३ ।

क मण्डार ।

विशेष—बगाल में भकबरा नगर में राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल में आचार्य कुन्दकुन्द के बला-
 त्कारण सरस्वतीगच्छ में भट्टारक पद्मनाद के शिष्य भ० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्ति की माम्नाय में खडेल-
 वाल दशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साहू धी पट्टिराज बलू, फरना, कपूरा, मायू भादि में से कपूरा ने षोडशकारण व्रतीधा-
 वन में प० श्री जयवत को यह प्रति भेंट की थी ।

४५६४. प्रति स० ५ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० स० ४२ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नद्यान् क्षड्विज्जवद्योत्य केल्हणोन्यासवित्तर ।

लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रथम पुस्तकं ॥२०॥

४५६५ प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १६६२ भादवा सुदी २ । वे० स० ४२५ । अ मण्डार ।

विशेष—संवत् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ भोमि मच्छेह राजपुरनगरवास्तव्य माम्नासरनागरजाती
 पचोली त्यागभाट्टमुख नरसिंहन लिखित ।

क मण्डार में एक मपूर्णी प्रति (वे० सं० २०७) अ मण्डार में २ मपूर्णी प्रतिया (वे० सं० १२०, १०५) तथा क मण्डार में एक मपूर्णी प्रति (वे० सं० २०७) और है ।

४५६६ जिनयक्षविधान । पत्र स० १ । मा० १०×४३ इ अ । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८३ । ट मण्डार ।

४५६७ जिनस्तपन (अभियेक पाठ) । पत्र स० १४ । मा० ६३×४ इ अ । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८११ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० १७७८ । ट मण्डार ।

४५६८ जिनसहिता । पत्र स० ४६ । मा० १३×८३ इ अ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रति-
 स्ठादि एव आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७ । छ मण्डार ।

४५३. विनसंहिता—अश्वपाद। पत्र सं ११। या ११×३३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा प्रविष्टादि एवं धातार सम्बन्धी विद्या। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। के सं १२६। क मन्थार।

४६ विनसंहिता—अ एकसन्धि। पत्र सं ८४। या ११×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा प्रविष्टादि एवं धातार सम्बन्धी विद्या। र काल ×। ले काल सं १२३० रीत कुटी ११। पूर्ण। के सं १२७। क मन्थार।

विशेष—३७ ३८ १ २ तथा ७३ पत्र बाली हैं।

४६ १ प्रति सं २। पत्र सं ३। ले काल सं १२३। के सं १२८। क मन्थार।

४६ २, प्रति सं ३। पत्र सं १११। ले काल ×। के सं ३२। क मन्थार।

४६०३ विनसंहिता—। पत्र सं १२। या १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा प्रविष्टादि एवं धातार सम्बन्धी विद्या। र काल ×। ले काल सं १२९ धातार कुटी २। पूर्ण। के सं १२९। क मन्थार।

विशेष—कल्प का कुसरा नाम पुनःकार भी है। यह एक संस्कृत कल्प है जिसका विषय वीरसेन विनयेन पुनःप्राप्त तथा कुलप्राप्ति धातारों के लक्ष्य के संग्रह विद्या गया है। ४६ पुस्तकों के प्रतिरिक्त १ पत्रों में कल्प के नाम विद्यत ४३ कल्प देखे हैं।

४६ ४ विनसंहितानामपूजा—अर्धमूषक। पत्र सं ११६। या १ × ४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र काल ×। ले काल सं १३९ रीतार कुटी २। पूर्ण। के सं ४३। क मन्थार।

विशेष—विद्यमल्लनाम से पुस्तकालयी के पदार्थ दीपलालजी रीतार तथा पत्रेवर बालों के विद्या धातार के प्रतिरिक्ति करवाई थी।

प्रतिपद प्रवृत्ति—य पुस्तक लिखाई विद्या धातारों के कीटविराज्ये जीवामादिहो वत् संवर नष्टविहो दुस्तारा रीत-बालसु वीरवी विमित भीरुहृत्नाम की रीतार की रीतार ज्ञाप करायी। की ज्ञापरीतवी का बतार के मल विनी वरीणा वनपुत्रवी वारी वरक का वीर वारणी व १३) रीतार की वरीपलालजी वाह रानी सहाय भू हुनी।

४६ ५ प्रति सं २। पत्र सं ४७। ले काल ×। के सं १२४। क मन्थार।

४६ ६ विनसंहितानामपूजा—स्वल्पपत्रविद्याका। पत्र सं २३। या ११×२ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र काल सं १२१६ रीतार कुटी २। ले काल ×। पूर्ण। के सं ४७१३। क मन्थार।

४६ ७ विनसंहितानामपूजा—चैतन्यसुखादिना। पत्र सं २६। या ११×२ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र काल ×। ले काल सं १२३६ रीतार कुटी २। पूर्ण। के सं ४७१३। क मन्थार।

४६०८ जिनसहस्रनामपूजा * । पत्र स० १८ । भा० १३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२४ । अ मण्डार ।

४६०९ प्रति स० २ । पत्र स० २३ । ले० काल × । वे० स० ७२४ । अ मण्डार ।

४६१० विनाभिषेकनिर्णय । पत्र स० १० । भा० १२×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—भूमिपक
विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११ । ह मण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधन के प्रथमकाण्ड में सातवें जल्लास की हिन्दी भाषा है ।

४६११ जैनप्रतिष्ठापाठ । पत्र स० २ से ३५ । भा० ११३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११६ । च मण्डार ।

४६१२ जैनाववाहपद्धति । पत्र स० ३४ । भा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विवाह
विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१५ । क मण्डार ।

विशेष—प्राचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार सम्यक् किया गया है । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६१३ प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० काल × । वे० स० १७ । ज मण्डार ।

४६१४ ज्ञानपञ्चविंशतिकाप्रनोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० १६ । भा० १०३×५ इ च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल स० १८४७ चैत्र शुदी ६ । ले० काल स० १८६३ भाषा शुदी ५ । पूर्ण ।
वे० स० १२२ । च मण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में रचना की गई थी । सोनजी पांढ्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५ ज्येष्ठजिनव्रतपूजा * । पत्र स० ७ । भा० ११×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५०४ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ७२३) भी है ।

४६१६ ज्येष्ठजिनव्रतपूजा * । पत्र स० १२ । भा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१६ । क मण्डार ।

४६१७ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६२१ । वे० स० २६३ । ख मण्डार ।

४६१८ ज्येष्ठजिनव्रतपूजा * । पत्र स० १ । भा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६० भाषा शुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २२१२ । अ मण्डार ।

विशेष—विद्वान् भुवाल ने जोधराज के बनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । सरहो सुरेन्द्र-
कीर्तिजी को रच्यो ।

४६१६. खमोकारपैवीसीसूत्रा—अक्षयरात्रि। पत्र सं ३। या १२×२३ इंच। माता-संगठ।
विषय—खमोकार मन्त्र पूजा। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं ४८८। क मन्त्र।

विवेक—साधारण अर्घ्यद्वय के अलग-अलग में एक एकवा की गई थी।

इसी मन्त्र में एक प्रति (मे सं २७) थीर है।

४६१७ प्रति सं २। पत्र सं ३। मे काल सं १७८२ प्र भारतीय मुद्रा १। मे सं १२४। क मन्त्र।

४६२१ खमोकारपैवीसीसूत्रविधान—आ श्री कनककीर्ति। पत्र सं २। या १२×२ इंच।
माता—संगठ। विषय—पूजा एवं विधान। ८ काल ×। मे काल सं १२२। पूर्ण। मे सं २१६। क मन्त्र।

विवेक—इसकी कनककीर्ति के प्रतिविधि की थी।

४६२२ प्रति सं २। पत्र सं २। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १७४। क मन्त्र।

४६२३ वरुणार्चसूत्रदशम्यापूजा—इषाचन्द्र। पत्र सं १। या ११×४ इंच। माता—संगठ।
विषय—पूजा। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं २६। क मन्त्र।

विवेक—इसी मन्त्र में एक प्रति मे सं २६१। थीर है।

४६२४ वरुणार्चसूत्रदशम्यापूजा—। पत्र सं २। या ११×२। माता—संगठ। विषय—
पूजा। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं २६२। क मन्त्र।

विवेक—किन्तु १ में अक्षय की पूजा है।

४६२५ तीनबीबीसीपूजा—। पत्र सं १। या १२×२ इंच। माता—संगठ। विषय—
अभिषेक तथा अर्घ्यद्वय के बीबीबी तीनबीबी की पूजा। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं २४
क मन्त्र।

४६२६ तीनबीबीसीसमुच्चयपूजा—। पत्र सं २। या ११३×२ इंच। माता—संगठ।
विषय—पूजा। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १२। क मन्त्र।

४६२७ तीनबीबीसीपूजा—मैत्रीचन्द्र पाटनी। पत्र सं २७। या ११२×२ इंच। माता
हिन्दी। विषय—पूजा। ८ काल सं १२४ भारतीय मुद्रा १४। मे काल सं १२२ पाटनी मुद्रा ७। पूर्ण। मे
सं २७२। क मन्त्र।

४६२८ तीनबीबीसीपूजा—। पत्र सं २७। या ११×२ इंच। माता—हिन्दी। विषय—पूजा
८ काल सं १२२। मे काल सं १२। पूर्ण। मे सं २७३। क मन्त्र।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा । पत्र स० २० । भा० ११६×४१ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२५ । छ मण्डार ।

४६३० तीनलोकपूजा—टेकचन्द । पत्र स० ४१० । भा० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १८२८ । ले० काल स० १६७३ । पूर्ण । वे० स० २७७ । छ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ लिखाने में ३७।।।—) लगे थे ।

इसी मण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० स० ५७६, ५७७) और हैं ।

४६३१ प्रति स० २ । पत्र स० ३५० । ले० काल × । वे० स० २४१ । छ मण्डार ।

४६३२ तीनलोकपूजा—नेमीचन्द । पत्र स० ८५१ । भा० १३×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २२०३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एव त्रिलोकपूजा भी है ।

४६३३ प्रति स० २ । पत्र स० १०८८ । ले० काल × । वे० स० २७० । क मण्डार ।

४६३४ प्रति स० ३ । पत्र स० ६८७ । ले० काल स० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० स० २२६ । छ मण्डार ।

विशेष—दो वेष्टनों में है ।

४६३५ तीसचौबीसीनाम..... । पत्र स० ६ । भा० १०×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० स० ५७८ । च मण्डार ।

४६३६ तीसचौबीसीपूजा—घुन्दावन । पत्र स० ११६ । भा० १०३×७३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५८० । च मण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि बनारस में गङ्गातट पर हुई थी ।

४६३७ प्रति स० २ । पत्र स० १२२ । ले० काल स० १६०१ भाषाष्ट सुदी २ । वे० स० ५७ । अ मण्डार ।

४६३८ तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा । पत्र स० ६ । भा० ८×६१ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १८०८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७८ । छ मण्डार ।

विशेष—मठाईद्वीप अन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है ।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ५७६) और है ।

४६३९ तेरहद्वीपपूजा—शुभचन्द्र । पत्र स० १५४ । भा० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२१ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ७३ । ख मण्डार ।

४६४ ताराङ्गीपत्रिका—अ० विश्वमूकणः । वर्ष १९३३ या १९४२ इति । भाग-साहा ।

विषय-इन सम्पत्तियों पर १६ बीघे की भूमा १८ गज \times १८ गज की दूबाई आकरा मुहरी २।६ में १९०१ में बसाया।

विदेह—विभीषणकी आज्ञा के मन्दिर से दूर मे निरुपारी थी ।

४६४१ तोरहरीगुन्ना—) ११ म २४। ४ ११×१४ इ. ४। अना-संतुष्ट। तिर-२५

मध्यमवार १३ हीरो की कुमा। ८ पाप \times । मे पाप म १ २१। पुर्त। मे वं ४१। ज मगार।

विशेष—इसी आधार के एक धारणा प्रति (के नं २) थीर है ।

४६४६. मेरहदीपूडा—। पृष्ठ ४ २ । का ११५२ ६५ । भाषा-बंगाल । लिपि-प्रा।

१. काल $\times 1$ से काल $\times 2$ १२२४। पूर्ण। से $\times 2$ २३६। अथ २३६४।

४६४३ गिरहड़ीपट्टा—सात्रजीव । पृ. ५ ११२ । पा. १२४×८ इ. ५ । माता—हिन्दी । विप.

पुष्पा । २ बाग में १ ७० कालिब गुटी १२ । ३ बाग में १६२ बादाम गुटी ५ । पुष्पा । ३ में १ ७१७
कपड़ा ।

विदेह—श्रीविश्वराम ने प्रतिनिधि भी भी ।

४६४४ मरहट्टीविजया—। वष मं १०१। या ११५७६५। वषा-तिथी। तिथि-पुनः।

१. काल \times १ है काल \times १ है न ३०३। न भगवत् ।

४९४२ मेरठडोबपूजा - - । ११ नं ११४ । या ११२० ११ । जाला-हिली । रिप-पूजा ।

१ बाब X । मे बाब न १३४६ वारिह मुदी ५३ पूर्ण । वे मं ३४९ । अ मय्याद ।

४१४९ तारहीनसूत्रविभाज - १। ११ न १। ११ ११४९ ११। ११४९-११४९। ११४९-

१५।२ कभ \times ३ मे बाभ \times १ बाभुर्ग। ३ मे १ १३। ५ बाभार।

४६६० शिवालयकीसीसूत्रा-शिवुपनयन । ११ मं १३ । वा ११५२ १३ । वाता-अमृत ।

लिय-मी) नाम के ह के बाले जिंदगी की दुआ। र नाम \times । के बार \times । दुर्ग। वी में १०२। वी
बनार ।

(वर्तमान—आजकाल के मेरु के शीत नहीं होते।)

११४८. विद्यापतीजीकी हूमा— १ वर ४ ६। मा १ १ १११ १४। मा १४। १४८

पुष्पा १२ का $\times 10$ के मान $\times 1$ पूर्ण है व १ । ५ प्रमाण ।

४५६६ अति उत्तम ३१५५ नं १०१६६ पत्र नं १०४५ अति उत्तम ३१५५ नं १०१६६

निर्देश—कमला में बायाँ की ओर से आने वाले पत्रों में बायें के अक्षरों को ही ।

४६५० प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६६१ भाद्रवा सुदी ३ । वे० स० २२२ । छ

भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती मजिका की पुस्तक है ।

४६५१ प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १७४७ फाल्गुन बुदी १३ । वे० स० ४११ । ज

भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १७५) भी है ।

४६५२ प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा " । पत्र स० १६ । भा० ११×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—मृत, भविष्यत्, वर्तमान के त्रैलोक्यशालाका पुरुषों की पूजा है ।

४६५४ त्रिलोकक्षेत्रपूजा" । पत्र स० ५१ । भा० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल स० १८४२ । ले० काल स० १८८६ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५ त्रिलोकस्थजिनालयपूजा । पत्र स० ६ । भा० ११×७^३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२८ । ज भण्डार ।

४६५६ त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र स० ३६ । भा० १३^३×७ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वे० स० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र से नवीन पत्र जोड़े गये हैं ।

४६५७ त्रिलोकसारपूजा । पत्र स० २६० । भा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल स० १६३० भाद्रवा सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८ त्रेपनक्रियापूजा । पत्र स० ६ । भा० १२×५^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल स० १८२३ । पूर्ण । वे० स० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५९ त्रेपनक्रियाम्रतपूजा " । पत्र स० ५ । भा० ११^३×५^३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल स० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने सागानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४६६० त्रैलोक्यसारपूजा—सुमत्तिसागर । पत्र स० १७२ । भा० ११^३×५^३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८२६ भाद्रवा सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१ त्रैलोक्यसारसहाय्य—यम स १४२। या १ ×२५ व। माता-तरुण। विषम-
पुत्र। र मात ×। ने काल ११११। पुर्ण। ने स ७२। अ मन्थार।

४६६२, वराहकृत्यजयमाल—य रश्मि या १ ×२५ व। माता-मयम व। विषम-वर्ग के दश
पैरों की पूजा। र मात ×। ने काल ×। पुर्ण। ने स २६। अ मन्थार।

विशेष—वस्तुत में पर्याप्ततर विधा हुआ है।

४६६३ प्रति स २। यम स १। ने मात १७६२। ने स ११। अ मन्थार।

विशेष—वस्तुत में समान्य टीका की हुई है। इसी मन्थार में एक प्रति (ने स १२) भी है।

४६६४ प्रति स ३। यम स ११। ने मात ×। ने स २६७। अ मन्थार।

विशेष—वस्तुत में वर्णवर्णनी चक्र विधि हुई है। इसी मन्थार में एक प्रति (ने स २६६) भी है।

४६६५ प्रति स ४। यम स ७। ने मात स ११। ने स २६। अ मन्थार।

विशेष—बीड़ी कुचालीयन के लोक में प्रतिविधि की थी।

इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (ने स २, ३/१) भी हैं।

४६६६ प्रति स ५। यम स ११। ने काल ×। ने स २६४। अ मन्थार।

विशेष—वस्तुत में वनित विधि हुई है। इसी मन्थार में एक अपूर्ण प्रति (ने स २६२) भी है।

४६६७ प्रति स ६। यम स ११। ने काल ×। ने स १२६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (ने स १२) भी है।

४६६८ प्रति स ७। यम स ११। ने मात स १७२२ मन्थार पुरी १२। ने स १२६। अ

मन्थार।

४६६९ प्रति स ८। यम स ११। ने मात स १२७। ने स ७२। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (ने स १२, २२) भी हैं।

४६७० प्रति स ९। यम स ४। ने काल स १७४१। ने स १७। अ मन्थार।

विशेष—प्रति वस्तुत में टीका बहिल है। इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (ने स २६, २२) भी हैं।

४६७१ प्रति स १०। यम स ११। ने मात ×। ने स १७७६। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतियाँ (ने स १७७७, १७७४) भी हैं।

४६७२, वराहकृत्यजयमाल—य माय रायी। यम स १। या १२ × २५ व। माता-माता।

विषम-पुत्र। र मात ×। ने काल स १११ माता पुरी ११। मन्थार। ने स २६। अ मन्थार।

विशेष—वस्तुत में टीका की हुई है। इसी मन्थार में एक प्रति (ने स ४७१) भी है।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४६७३ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल स० १७३४ पोष सुदी १२ । वे० स० ३०२ । क

भण्डार ।

विशेष—अमरावती जिले में समरपुर नामक नगर में आचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने स्वयं के पढ़ने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३०१) भी है ।

४६७४ प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६१२ । वे० स० १८१ । ख भण्डार ।

विशेष—जयपुर के जोवनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४६७५ प्रति स० ४ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १८६२ भाद्रवा सुदी ८ । वे० स० १५१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

४६७६ प्रति स० ५ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० १२६ । छ भण्डार ।

४६७७ प्रति स० ६ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० २०५ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४८१) भी है ।

४६७८ प्रति स० ७ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १७८४ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० स० १७८६, १७९०, १७९२, १७९४) भी हैं ।

४६७९ दशलक्षजयमाल - । पत्र स० ८ । आ० १०×५ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल स० १७८४ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २६३ । ठ भण्डार ।

४६८० प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० २०६ । ड भण्डार ।

४६८१ प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० ७२६ । अ भण्डार ।

४६८२ प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २६० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० स० २६७, २६८) भी हैं ।

४६८३ प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८६६ भाद्रवा सुदी ३ । वे० स० १५३ । च भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—महात्मा चौधमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० स० १४२, १५४) भी हैं ।

४६८४ दशलक्षजयमाल । पत्र स० ५ । आ० ११^३×५^३ इ च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २११५ । अ भण्डार ।

४६८३. दशरूपकपूजा—। पत्र नं. १। पा. १३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
१ कल ×। नि. कल नं. १७३६ मन्त्रोक्त कुटी ४। पूर्ण। नि. नं. ४। का नम्बर।

विशेष—बाहीर में प्रतिमिति हुई थी।

४६८४. दशरूपकपूजा—। पत्र नं. ७। पा. ११×२३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
१ कल ×। नि. कल ×। पूर्ण। नि. नं. ७४२१ का नम्बर।

४६८५. दशरूपकपूजा—आम्रदेव। पत्र नं. १३। पा. १३×२३ इंच। भाषा—बोहट। विषय—
पूजा। १ कल ×। नि. कल ×। पूर्ण। नि. नं. १७२। का नम्बर।

४६८६. दशरूपकपूजा—आद्यपनम्। पत्र नं. १३। पा. १२×१६ इंच। भाषा—मल्लुट। विषय—
पूजा। १ कल ×। नि. कल ×। पूर्ण। नि. नं. १६६। का नम्बर।

४६८७. दशरूपकपूजा—। पत्र नं. २। पा. ११×२३ इंच। भाषा—मल्लुट। विषय—
१ कल ×। नि. कल ×। पूर्ण। नि. नं. १६७। का नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (नि. नं. १२४) भीर है।

४६८८. प्रति नं. २। पत्र नं. १। नि. कल नं. १७४७ मन्त्रोक्त कुटी ४। नि. नं. १११ का
नम्बर।

विशेष—झोपानेर में विद्यविशेष में वी. विरवार के वाचनार्थ प्रतिमिति की थी।

इसी नम्बर में एक प्रति (नि. नं. १६५) भीर है।

४६८९. प्रति नं. ३। पत्र नं. १। नि. कल ×। नि. नं. १७४२ का नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (नि. नं. १७६१) भीर है।

४६९०. दशरूपकपूजा—। पत्र नं. १७। पा. ११×४३ इंच। भाषा—मल्लुट। विषय—
१ कल ×। नि. कल नं. १६६। पूर्ण। नि. नं. १३२। का नम्बर।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका लक्षित है।

४६९१. दशरूपकपूजा—आमरदेव। पत्र नं. १। पा. ११×१६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
पूजा। १ कल ×। नि. कल ×। पूर्ण। नि. नं. ७२३। का नम्बर।

विशेष—पत्र नं. ७ तक जलमयूरा की हुई है।

४६९२. प्रति नं. २। पत्र नं. ४। नि. कल नं. १६३७ मन्त्रोक्त कुटी २। नि. नं. १११ का
नम्बर।

४६९३. प्रति नं. ३। पत्र नं. २। नि. कल ×। नि. नं. १११ का नम्बर।

४६६६ दशलक्षपूजा । पत्र म० ३५ । आ० १०३×७३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल स० १६५४ । पूर्ण । वै० स० ५८८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० म० ५८६) और है ।

४६६७ प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १६३७ । वै० म० ३१७ । च भण्डार ।

४६६८ दशलक्षपूजा । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० स० १६२० । ट भण्डार ।

विशेष—स्थापना दानतराय वृत्त पूजा की है अष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है ।

४६६९ दशलक्षमण्डलपूजा । पत्र म० ६३ । आ० ११३×५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल स० १८८० चैत्र सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ३०३ । क भण्डार ।

४७०० प्रति स० २ । पत्र म० ५२ । ले० काल × । वै० स० ३०१ । छ भण्डार ।

४७०१ प्रति स० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १६३७ भाद्रपद सुदी १० । वै० म० ३०० । छ
भण्डार ।

४७०२ दशलक्षव्रतपूजा—सुमतिमागर । पत्र स० २२ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६६ भाद्रपद सुदी ३ । पूर्ण । वै० स० ७६६ । अ भण्डार ।

४७०३ प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८२६ । वै० स० ४६८ । अ भण्डार ।

४७०४ प्रति स० ३ । पत्र म० १३ । ले० काल स० १८७६ भाद्रपद सुदी ५ । वै० स० १४६ । च
भण्डार ।

विशेष—सदासुख बाबलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०५ दशलक्षव्रतोद्यापन—जिनचन्द्र सूरि । पत्र म० १६ ~ २५ । आ० १०३×५ इ च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० म० २६१ । छ भण्डार ।

४७०६ दशलक्षव्रतोद्यापन—मल्लिभूषण । पत्र म० १४ । आ० १२३×६ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १२६ । छ भण्डार ।

४७०७ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वै० स० ७५ । छ भण्डार ।

४७०८ दशलक्षव्रतोद्यापन । पत्र स० ४३ । आ० १०×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । वै० स० ७० । छ भण्डार ।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है ।

४००३. द्वात्रिंशद्विंशतिपूजा—पत्र सं १ । या १२३×४५ दण । माता-हिन्दी । विष्णु-पूजा । ८ कल × । ने कल × । पूर्ण । के सं २७ । अथ गण्यार ।

विशेष—इसी गण्यार में २ प्रतिष्ठा इती कृत्य में धीर है ।

४०१ वैष्णवपूजा—इन्द्रनमि धोणीम् । पत्र सं ३ । या १३×४५ दण । माता-वसुध । विष्णु-पूजा । ८ कल × । ने कल × । पूर्ण । के सं १९ । अथ गण्यार ।

४०११ वैष्णवपूजा—पत्र सं ११ । या १३×४५ दण । माता-वसुध । विष्णु-पूजा । ८ कल × । ने कल × । पूर्ण । के सं १२९ । अथ गण्यार ।

४०१२. प्रति सं २ । पत्र सं ४ से १२ । ने कल × । अपूर्ण । के सं ४६ । अथ गण्यार ।

४०१३. प्रति सं ३ । पत्र सं ३ । ने कल × । के सं ३५ । अथ गण्यार ।

विशेष—इसी गण्यार में एक प्रति (के सं ३५) धीर है ।

४०१४. प्रति सं ४ । पत्र सं ३ । ने कल × । के सं १९१ । अथ गण्यार ।

विशेष—इसी गण्यार में २ प्रतिष्ठा (के सं १९१ १९३) धीर है ।

४०१५. प्रति सं ५ । पत्र सं ३ । ने कल सं १३१ धीर कुटी न । के सं १९१ । अथ गण्यार ।

विशेष—इसी गण्यार में २ प्रतिष्ठा (के सं १९१, १९३) धीर है ।

४०१६. प्रति सं ६ । पत्र सं ३ । ने कल सं १३३ माता कुटी १२ । के सं १९४२ । अथ गण्यार ।

विशेष—हीरान्तक वास्तव में प्रतिष्ठा की की ।

४०१७. वैष्णवपूजा—पत्र सं १ । या १३×४५ दण । माता-वसुध । विष्णु-पूजा । ८ कल × । ने कल सं १३५ । पूर्ण । के सं ११२ । अथ गण्यार ।

४०१८. वैष्णवपूजा—मन्मथ माता । पत्र सं १० । या १३×४५ दण । माता-हिन्दी । विष्णु-पूजा । ८ कल × । ने कल सं १२४५ प्रतिष्ठा कुटी न । पूर्ण । के सं ११२ । अथ गण्यार ।

४०१९. वैष्णवपूजा—पत्र सं १३ । या १३×४५ दण । माता-वसुध । विष्णु-पूजा । ८ कल × । ने कल × । पूर्ण । के सं १२३ । अथ गण्यार ।

विशेष—इसी कृत्य में एक प्रति धीर है ।

४०२. द्वात्रिंशद्विंशतिपूजा—पत्र सं ७ । या १३×४५ दण । माता-वसुध । विष्णु-पूजा । ८ कल × । ने कल × । पूर्ण । के सं ३५४ । अथ गण्यार ।

४७०१ द्वादशप्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । मा० ११×४३ इ च । भाषा—गण्डूत ।

विषय—पूजा । २० काल स० १७७२ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । अ भण्डार ।

४७०२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३२० । अ भण्डार ।

४७०३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । अ भण्डार ।

४७०४ द्वादशप्रतोद्यापनपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० ६ । मा० ७३×४ इ च । भाषा—गण्डूत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । अ भण्डार ।

४७०५ द्वादशप्रतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्ति । पत्र सं० ६ । मा० १०३×६ इ च । भाषा—सम्युत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

४७०६ द्वादशप्रतोद्यापन । पत्र सं० ४ । मा० ११३/४ इ च । भाषा—गण्डूत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । अ भण्डार ।

विशेष—मार्पनदाम ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०७ द्वादशांगपूजा—दालूराम । पत्र सं० १६ । मा० ११×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल स० १६३० । भाषा—सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३२४ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्मानान चौधरी ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०८ द्वादशांगपूजा । पत्र सं० ८ । मा० ११३×४३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ ।

विशेष—इसी नेटन मे २ प्रतिषां शीर हैं ।

४७०९ द्वादशांगपूजा । पत्र सं० ६ । मा० १२×७३ इ च । भाषा—सम्युत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० सं० ३२७) शीर है ।

४७१० प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । अ भण्डार ।

४७११ धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० १६ । मा० १२×४३ इ च । भाषा—सम्युत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

४७१२ प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल स० १६४२ कापुस सुदी १० । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्मलाल जीबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४०३३ धर्मचक्रपूजा—साधु रसामय । पत्र नं १ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-पूजा । र. काल × । नि. काल नं १ । धर्मचक्रपूजा । धर्म नं ३२ । अ. मन्त्रार ।

विशेष—यं पुष्पात्मकम् मे वाचराज पञ्चादी के मन्दिर मे प्रतिमिति की की ।

४०३४ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं १ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-पूजा । र. काल × । नि. काल × । पूर्ण । धर्म नं ३२ । अ. मन्त्रार ।

४०३५ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं १ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-पूजा । र. काल × । नि. काल × । पूर्ण । धर्म नं ३२ । अ. मन्त्रार ।

४०३६ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं ४ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-पूजा । र. काल × । नि. काल × । पूर्ण । धर्म नं ३२ । अ. मन्त्रार ।

४०३७ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं २० । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-मन्दिर मे धर्मचक्रपूजा के विधान । र. काल × । नि. काल × । पूर्ण । अ. मन्त्रार ।

४०३८ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं ११ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-मन्दिर मे धर्मचक्रपूजा के विधान । र. काल × । नि. काल × । पूर्ण । अ. मन्त्रार ।

विशेष—यही मन्त्रार मे ३ प्रतिमिति (धर्म नं ४३४ धर्मचक्र) धारण ।

४०३९ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं १ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत ।

४०४० धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं १ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-पूजा । र. काल × । नि. काल नं ११९० । पूर्ण । धर्म नं २०१ । अ. मन्त्रार ।

४०४१ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं १-४ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत ।

४०४२ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं १ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-पूजा । र. काल × । नि. काल × । पूर्ण । धर्म नं १००१ । अ. मन्त्रार ।

४०४३ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं ३ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-पूजा । र. काल × । नि. काल × । पूर्ण । धर्म नं १०० । अ. मन्त्रार ।

४०४४ धर्मचक्रपूजा— । पत्र नं १ । या ११×२५ इंच । भाषा—मल्लुत । विपक-पूजा । र. काल × । नि. काल × । पूर्ण । धर्म नं ११ । अ. मन्त्रार ।

विशेष—यही मन्त्रार मे ।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४७४५. प्रति सं० २ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८६१ भाषाढ बुदी ३ । वे० स० १६१ । च

मण्डार ।

विशेष—पत्र चूहों ने खा रखे हैं ।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा । पत्र स० ४ । भा० ८५६ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०० । अ मण्डार ।

विशेष—जयमाल प्राकृत में है । इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ७६७) भी है ।

४७४७ नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल । पत्र स० ३१ । भा० १२५७ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८०७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५६६ । च मण्डार ।

४७४८ नन्दीश्वरपक्षिपूजा । पत्र स० ६ । भा० ११५५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल स० १७४६ भाद्रवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ४२६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ४४७) भी है ।

४७४९ प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ३६३ । क मण्डार ।

४७५० नन्दीश्वरपक्षिपूजा । पत्र स० ३ । भा० १०३५ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १८८३ । अ मण्डार ।

४७५१ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ६ । भा० ११५४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०० । व्य मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियां (वे० स० ४०६, २१२, २७४ ले० काल स० १८२४) भी हैं ।

४७५२ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ४ । भा० ८३५ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११५२ । अ मण्डार ।

४७५३ प्रति सं० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३४८ । क मण्डार ।

४७५४ नन्दीश्वरपूजा । पत्र स० ४ । भा० ६५७ इच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ मण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि भी थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये दिये हैं ।

४७५५ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ३१ । भा० ६३५ इच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । ज मण्डार ।

४७५६ नन्दीश्वरपूजा । पत्र स० ३० । भा० १२५८ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वे० स० ३४६ । क मण्डार ।

४७२० नन्दीश्वरमहिषाया—पञ्चाङ्गात् । पत्र तं २६ । या १३३×७ इव । गणा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । रं काल तं १६९१ । ने काल तं १६४६ । पूर्ण । ने तं ३२४ । छ मन्थार ।

४७२१ नन्दीश्वरविधान—जितेश्वरदास । पत्र तं १११ । या १३×७ इव । गणा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । रं काल तं १६९१ । ने काल तं १६४२ । पूर्ण । ने तं ३२ । छ मन्थार ।

विशेष—जिह्वाई एव कथ्यते ये चतस १३) इ कर्ष हुन ये ।

४७२२ नन्दीश्वरज्योत्स्नापनपूजा—जम्बिधरा । पत्र तं २ । या १३३×२३ इव । गणा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रं काल × । ने काल × । पूर्ण । ने तं १६९१ । छ मन्थार ।

४७२३ नन्दीश्वरज्योत्स्नापनपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र तं १६ । या ७३×४ इव । गणा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । रं काल × । ने काल तं १७२० पाराज बुदी ३ । कपूर्य । ने तं २१० । छ मन्थार ।

विशेष—हृत्तर । पत्र नहीं है । उक्तपत्र के प्रतिनिधि हुई थी ।

४७२४ नन्दीश्वरज्योत्स्नापनपूजा— । पत्र तं २ । या १३३×२ इव । गणा-संस्कृत । विषय-पूजा । रं काल × । ने काल × । पूर्ण । ने तं १६९१ । छ मन्थार ।

४७२५ नन्दीश्वरज्योत्स्नापनपूजा— । पत्र तं ३ । या ७×६ इव । गणा-हिन्दी । विषय-पूजा । रं काल × । ने काल तं १६९१ पाराज बुदी ७ । पूर्ण । ने तं १६९१ । छ मन्थार ।

विशेष—स्त्रीपूजा यंत्रणा के प्रतिनिधि की थी ।

४७२६ नन्दीश्वरपूजाविधान—हेमचन्द्र । पत्र तं ४६ । या ७३×६ इव । गणा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । रं काल × । ने काल तं १६९१ पाराज बुदी १ । पूर्ण । ने तं १७७ । छ मन्थार ।

विशेष—कठोक्त पारम्परिक के बन्धु के पामलाल यज्ञिक के प्रतिनिधि कराई थी ।

४७२७ नन्दसमीपज्योत्स्नापनपूजा— । पत्र तं १ । या ७×४ इव । गणा-संस्कृत । विषय-पूजा । रं काल × । ने काल तं १६४७ । पूर्ण । ने तं १६९१ । छ मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एव प्रति (ने तं १३) की है ।

४७२८ नन्दसमीपज्योत्स्नापनपूजा—मन्मथ । पत्र तं १ । या १३×२३ इव । गणा-संस्कृत । विषय-पूजा । रं काल × । ने काल × । पूर्ण । ने तं १६९१ । छ मन्थार ।

४७२९ प्रति ३ । पत्र तं ६ । ने काल × । ने तं १६९१ । छ मन्थार ।

विशेष—अथ नन्द नन्द नन्दनृपा वि है तथा विषय यह ही प्रति के लिए किन्तु तीर्थभूत की पूजा करनी चाहिये यह लिखा है ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४७६७ नवग्रहपूजा । पत्र स० ७ । मा० ११३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतिष्ठा (वे० स० ४७५, ४६०, ४७३, १०७१, २११२) भी हैं ।

४७६८ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३ । वे० स० १२७ । छ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ८ प्रतिष्ठा (वे० स० १२७) भी हैं ।

४७६९ प्रति स० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १६८८ कार्तिक बुदी ७ । वे० स० १२३ ज

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिष्ठा (वे० स० १८५, १६३, २८०) भी हैं ।

४७७० प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० २०१५ । ट भण्डार ।

४७७१ नवग्रहपूजा । पत्र स० २६ । मा० ६×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १११६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ७१३) भी है ।

४७७२ प्रति स० ० । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० २२१ । छ भण्डार ।

४७७३ नित्यकृत्यवर्णन । पत्र स० १० । मा० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ हैं । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—बरा पृष्ठ नहीं है ।

४७७४ नित्यक्रिया । पत्र स० ६८ । मा० ८२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है । ५४, ६७, तथा ६८ से भागों के पत्र नहीं हैं ।

४७७५ नित्यनियमपूजा । पत्र स० २६ । मा० ६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० स० ३७०, ३७१) भी हैं ।

४७७६ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० ३६७ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० स० ३६० से ३६३) भी हैं ।

४७७७ प्रति स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८६३ । वे० स० ५२६ । ज भण्डार ।

४७८८. विष्णुविग्रहपूजा—पत्र सं १२। पा १ × ७ द. व। भाषा—हस्तलिखित। विष्णु-

पूजा। र. काल ×। मे. काष्ठ ×। पूर्ण। मे. सं ७१२। अ. मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में १ प्रतिमा (मे. सं ७० १११४) भीर है।

४७८९. प्रति सं २। पत्र सं ११। मे. काल सं ११४ काष्ठिक मुदी १२। मे. सं ११५। अ.

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (मे. सं ११६) भीर है।

४७९०. प्रति सं ३। पत्र सं ७। मे. काल सं ११५। मे. सं ११९। अ. मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिमा (मे. सं ११९/२ १२१/२) भीर है।

४७९१. विष्णुविग्रहपूजा—पत्र सं १० सहायक अक्षरहीन। पत्र सं ४६। पा २ × १२ द. व। भाषा-

हिन्दी व. विष्णु-पूजा। र. काल सं ११५१ काष्ठिक मुदी २। मे. काल सं ११२१। पूर्ण। मे. सं ४६। अ.

मन्थार।

४७९२. प्रति सं २। पत्र सं १३। मे. काल सं ११२ काष्ठिक मुदी १। मे. सं १७०। अ.

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (मे. सं १७१) भीर है।

४७९३. प्रति सं ३। पत्र सं १६। मे. काल सं ११२१ काष्ठिक मुदी २। मे. सं १७१। अ.

मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (मे. सं १७२) भीर है।

४७९४. प्रति सं ४। पत्र सं १३। मे. काल सं ११५१ काष्ठिक मुदी ३। मे. सं ११४। अ.

मन्थार।

विशेष—पत्र की छवि एवं भीर है।

४७९५. प्रति सं ३। पत्र सं ४४। मे. काल ×। मे. सं ११। अ. मन्थार।

विशेष—इसका मुद्रा बहुत सुन्दर एवं अक्षरहीन में रहने योग्य है।

४७९६. प्रति सं ६। पत्र सं ४९। मे. काल सं ११३३। मे. सं ११३३। अ. मन्थार।

४७९७. विष्णुविग्रहपूजाभाषा—पत्र सं १६। पा १ × ७ द. व। भाषा—हिन्दी। विष्णु-

पूजा। र. काल ×। मे. काल सं ११३३ काष्ठिक मुदी ११। पूर्ण। मे. सं ७०७। अ. मन्थार।

विशेष—इसका कालिका में प्रतिमा की भी।

४७९८. प्रति सं २। पत्र सं १। मे. काल ×। पूर्ण। मे. सं ४७। अ. मन्थार।

विशेष—मन्थार में सुन्दर भी है। (भीर नहीं) सं ११३३ में लक्ष्मी हुई भी। कलपी लक्ष्मी

के लक्षण का मन्थार हुआ लगता है।

४७८६. प्रति स० ३ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १६६६ भाद्रवा बुदी १३ । वे० स० ४८ । ग

भण्डार ।

४७८७. प्रति स० ४ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १६६७ । वे० स० २६२ । म् भण्डार ।

४७८८. प्रति स० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १६५६ । वे० स० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष— ५० मोतीलालजी सेठी ने यति यशोदानन्दजी के मन्दिर में चढ़ाई ।

४७८९. नित्यनैमित्तिकपूजापाठसमग्र । पत्र स० ५८ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत,

हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१ । छ भण्डार ।

४७९०. नित्यपूजासमग्र । पत्र स० ८ । मा० १०×४ इ च । भाषा—संस्कृत, अंग्रेज श । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७७७ । ट भण्डार ।

४७९१. नित्यपूजासमग्र । पत्र स० ५ । मा० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८५ । च भण्डार ।

४७९२. प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १६१६ वैशाख बुदी ११ । वे० स० ११७ । ज

भण्डार ।

४७९३. प्रति स० ३ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० १८६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० १६६५, २०६३)

भी हैं ।

४७९४. नित्यपूजासमग्र । पत्र सं० २-३० । मा० ७३×२ इ च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६५६ चैत्र बुदी १ । अपूर्ण । वे० स० १८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० १८३, १८४) भी हैं ।

४७९५. नित्यपूजासमग्र । पत्र सं० ३६ । मा० १०३×७ इ च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६५७ । अपूर्ण । वे० स० ७११ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र स० २७, २८ तथा ३५ नहीं हैं कुछ पत्र भिन्न गये हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे०

सं० १३२२) भी है ।

४७९६. प्रति स० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० स० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १७४ । ज भण्डार ।

४८०१. प्रति स० ४ । पत्र स० २-३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठों का भी संग्रह है ।

४८१३ निर्वाणक्षेत्रपूजा । पत्र स० ११ । मा० ११×७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल स० १८७१ । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वे० स० १३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ५ प्रतिमां (वे० स० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०६९) भीर हैं ।

४८१४ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८७१ भादवा बुदी ७ । वे० स० २६६ । ज

भण्डार । [गुटका साहज]

४८१५ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १८८४ मगसिर बुदी २ । वे० स० १८७ । म

भण्डार ।

४८१६ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६०६ । च भण्डार ।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है ।

४८१७ निर्वाणपूजा । पत्र स० १ । मा० १२×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७१८ । अ भण्डार ।

४८१८ निर्वाणपूजापाठ—मनरगलाल । पत्र स० ३३ । मा० १०६×४३ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । २० काल स० १८४२ भादवा बुदी २ । ले० काल स० १८८८ चैत्र बुदी ३ । वे० स० ८२ । म
भण्डार ।

४८१९ नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ५ । मा० ६×३३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६५ । अ भण्डार ।

४८२० नेमिनाथपूजा । पत्र स० १ । मा० ७×५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३१४ । अ भण्डार ।

४८२१ नेमिनाथपूजाष्टक—शभूराम । पत्र स० १ । मा० ११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४२ । अ भण्डार ।

४८२२ नेमिनाथपूजाष्टक । पत्र स० १ । मा० ६१×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२२४ । अ भण्डार ।

४८२३ पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० १६ । मा० ११३×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७६ । क भण्डार ।

४८२४ प्रति स० २ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १८७६ । वे० स० १०३७ । अ भण्डार ।

४८२५ पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल । पत्र स० १२६ । मा० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५६ । अ भण्डार ।

४८२६ पञ्चकन्यायकमुखा—बाइलमणि । पत्र सं ३६ । या १९४८ इव । यथा—वसुव ।
विषय—मुखा । र काल सं १६२३ । के काल × । पूर्ण । के सं १२ । अ मन्थार ।

४८२७ पञ्चकन्यायकमुखा—गुवापीति । पत्र सं २२ । या १९४२ इव । यथा—वसुव ।
विषय—मुखा । र काल × । के काल १६११ । पूर्ण । के सं २४ । अ मन्थार ।

४८२८ पञ्चकन्यायकमुखा—बाहीमणिह । पत्र सं १ । या १९४२ इव । यथा—वसुव ।
विषय—मुखा । र काल × । के काल × । पूर्ण । के सं २८६ । अ मन्थार ।

४८२९ पञ्चकन्यायकमुखा—गुवापीति । पत्र सं ७-२६ । या १९४२ इव । यथा—वसुव ।
विषय—मुखा । र काल × । के काल × । पूर्ण । के सं २२ । अ मन्थार ।

४८३० पञ्चकन्यायकमुखा—सुधासागर । पत्र सं १६ । या १९४२ इव । यथा—वसुव ।
विषय—मुखा । र काल × । के काल × । पूर्ण । के सं ४२ । अ मन्थार ।

४८३१ पञ्चकन्यायकमुखा— । पत्र सं १६ । या १९४८ इव । यथा—वसुव । विषय—
मुखा । र काल × । के काल सं १६ । यथा—वसुव । पूर्ण । के सं ७ । अ मन्थार ।

४८३२, प्रति सं २ । पत्र सं १ । के काल सं १८१५ । के सं ३१ । अ मन्थार ।

४८३३, प्रति सं ३ । पत्र सं ७ । के काल × । के सं ३८४ । अ मन्थार ।

विषय—वसी मन्थार के एक प्रति (के सं ३८३) धीर है ।

४८३४ प्रति सं ४ । पत्र सं २२ । के काल सं १६३६ । यथा—वसुव । पूर्ण । के सं १२
अ मन्थार ।

विषय—वसी मन्थार में २ प्रतिय (के सं १९७, १) धीर है ।

४८३५, प्रति सं ५ । पत्र सं १४ । के काल सं १८१९ । के सं १६९ । अ मन्थार ।

४८३६, प्रति सं ६ । पत्र सं १२ । के काल सं १९११ । के सं २९६ । अ मन्थार ।

विषय—वसी मन्थार में एक प्रति (के सं १९२) धीर है ।

४८३७ पञ्चकन्यायकमुखा—कोटेशाक मिश्र । पत्र सं १६ । या १९४२ इव । यथा—वसुव ।
विषय—मुखा । र काल सं १६१ । यथा—वसुव । पूर्ण । के सं ७२ । अ मन्थार ।

विषय—कोटेशाक मन्थार के चले गले के । वसी मन्थार में २ प्रतिय (के सं १७१, १७२)

धीर है ।

४८३८, पञ्चकन्यायकमुखा—रूपमण्ड । पत्र सं १४ । या १९४२ । यथा—वसुव । विषय—
मुखा । र काल × । के काल सं १६२ । पूर्ण । के सं २९७ । अ मन्थार ।

४८३६. पञ्चकल्याणकपूजा—टेकचन्द । पत्र स० २२ । भा० १०३×५३ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल स० १८८७ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६६२ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिष्ठा (वै० स० १०८०, ११२०) और है ।

४८४० प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६५४ चैत्र सुदी १ । वै० सं० ५० । ग

मण्डार ।

४८४१ प्रति स० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल स० १६५४ माह सुदी ११ । वै० स० ६७ । घ

मण्डार ।

विशेष—किशनलाल पापढीवाल ने प्रतिलिपि की थी । इसी मण्डार में एक प्रति (वै० स० ६७)

और है ।

४८४२ प्रति स० ४ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १६६१ ज्येष्ठ सुदी १ । वै० स० ६१२ । च

मण्डार ।

४८४३ प्रति स० ५ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वै० सं० २१५ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

४८४४. प्रति स० ६ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० स० २६८ । ज मण्डार ।

४८४५. प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल × । वै० स० १२० । क मण्डार ।

४८४६ प्रति स० ८ । पत्र स० २७ । ले० काल स० १६२८ । वै० सं० ५३६ । ख मण्डार ।

४८४७ पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल । पत्र सं० ७ । भा० १२×८ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल सं० १६२२ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ३८८ । ङ मण्डार ।

विशेष—तीले कागजों पर है ।

४८४८ प्रति स० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × वै० स० २१५ । छ मण्डार ।

विशेष—सघोजी के मन्दिर की पुस्तक है ।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र स० ३१ । भा० ११३×८ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० माववा सुदी १३ । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । वै० स० ६१५ । च मण्डार ।

४८५० पञ्चकल्याणकपूजा"" । पत्र स० २५ । भा० ६×६ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६६ । छ मण्डार ।

४८५१ प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १६३६ । वै० स० १०० । झ मण्डार ।

४८५२ प्रति स० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वै० स० ३८६ । ङ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वै० स० ३८७) और है ।

४८२३ प्रति सं ४। वन सं ११। मे वन सं ११। मे सं १११। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के सं ११४) भी है।

४८२४ वज्रकुमारपूजा—मन्थार सं ७। वा सं २१७। दण्ड। माता हिन्दी। विष्णु-पूजा।

वन सं १। मे वन सं १। पूर्ण। मे सं ७२। अ मन्थार।

४८२५ वज्रकुमारपूजा—मन्थार सं १४। वा सं १४३। दण्ड। माता-बंसुत।

विष्णु-पूजा। र वन सं १। मे वन सं १। पूर्ण। मे सं ११४। अ मन्थार।

४८२६ प्रति सं २। वन सं १। मे वन सं ११२१। मे सं ११२१। अ मन्थार।

४८२७ वज्रकुमारपूजा—मन्थार सं १२। वा सं ११२२। दण्ड। माता-बंसुत।

विष्णु-पूजा। र वन सं १। मे वन सं ११२२। मे सं ११२२। अ मन्थार।

विशेष—माता-बंसुत के विष्णु वंश के वज्रकुमार प्रतिनिधि हैं।

४८२८ वज्रपरमेष्ठीपूजा—मन्थार सं ११। वा सं ११२३। दण्ड। माता-बंसुत। विष्णु-पूजा।

र वन सं ११२। मे वन सं १। पूर्ण। मे सं ११२। अ मन्थार।

४८२९ वज्रपरमेष्ठीपूजा—मन्थार सं ४। वा सं ११२४। दण्ड। माता हिन्दी। विष्णु-पूजा।

र वन सं १। मे वन सं १। पूर्ण। मे सं ११२४। अ मन्थार।

४८३० वज्रपरमेष्ठीपूजा—मन्थार सं १४। वा सं ११२५। दण्ड। माता-बंसुत। विष्णु-पूजा।

र वन सं १। मे वन सं १। पूर्ण। मे सं ११२५। अ मन्थार।

४८३१ प्रति सं १। वन सं ११। मे वन सं १। मे सं ११२। अ मन्थार।

४८३२ प्रति सं ३। वन सं १२। मे वन सं १। मे सं १२। अ मन्थार।

४८३३ वज्रपरमेष्ठीपूजा—मन्थार सं १२। वा सं ११२६। दण्ड। माता-बंसुत। विष्णु-पूजा।

र वन सं १। मे वन सं ११२६। मे सं ११२६। अ मन्थार।

विशेष—इसी की प्रतिनिधि वज्रकुमारपूजा में वज्रकुमार के वंश के वंश हैं।

४८३४ प्रति सं २। वन सं १२। मे वन सं १२२। मे सं १२२। अ मन्थार।

विशेष—इसी वन में वज्रकुमार के प्रतिनिधि हैं।

४८३५ प्रति सं ३। वन सं १४। मे वन सं १४३। मे सं १४३। अ मन्थार।

४८३६ प्रति सं ४। वन सं १४। मे वन सं १४३। मे सं १४३। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार के एक प्रति (के सं १४३) भी है।

४८६७ प्रति स० ५ । पत्र स० ३२ । ले० काल X । वे० स० १६३ । ज भण्डार ।

४८६८ पञ्चपरमेष्ठीपूजा । पत्र स० १५ । मा० १२X५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ४१२ । क भण्डार ।

४८६९ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल स० १८६२ मापाठ सुदी ८ । वे० स० ३६२ । द भण्डार ।

४८७० प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल X । वे० स० १७६७ । ट भण्डार ।

४८७१ पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द । पत्र स० १५ । मा० १०X५ ३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १२० । छ भण्डार ।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालू राम । पत्र स० ३५ । मा० १०३X५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल स० १८६२ संवत्सर सुदी ६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १०८६) भी है ।

४८७३ प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले० काल स० १८६२ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० स० ५१ । ग भण्डार ।

४८७४ प्रति स० ३ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १६८७ । वे० स० ३८६ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३६०) भी है ।

४८७५ प्रति स० ४ । पत्र स० ४५ । ले० काल X । वे० स० ६१६ । च भण्डार ।

४८७६ प्रति स० ५ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६२६ । वे० स० ५१ । ज भण्डार ।

विशेष—धन्नालाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७ प्रति स० ६ । पत्र स० ३५ । ले० काल स० १६१३ । वे० स० १८७६ । ट भण्डार ।

विशेष—ईसरदा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८ पञ्चपरमेष्ठीपूजा । पत्र स० ३६ । मा० १३X५ ३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ३६१ । ड भण्डार ।

४८७९ प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ले० काल X । वे० स० ६१७ । च भण्डार ।

४८८० प्रति स० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल X । वे० स० ३२१ । ज भण्डार ।

४८८१ प्रति स० ४ । पत्र स० २० । ले० काल X । वे० स० ३१६ । ज भण्डार ।

४८८२ प्रति स० ५ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६८१ । वे० स० १७१० । ट भण्डार ।

विशेष—धानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी है ।

४८८३ पञ्चमासपवित्रपूजा—। पत्र तं ६। या १४० हव। मन्त्र-ह्रिन्। विष्णु-पूजा।
काल ×। ने काल ×। पूर्ण। के त १२९। छ मन्त्र।

४८८४ पञ्चमङ्गलपूजा—। पत्र त १३। या ४४ हव। मन्त्र-ह्रिन्। विष्णु-पूजा।
काल ×। ने काल ×। पूर्ण। के त १२४। छ मन्त्र।

४८८५ पञ्चमासपवित्रपूजा—। म सुदेवकीर्ति। पत्र तं ४। या १४२ हव।
मन्त्र-ह्रिन्। विष्णु-पूजा। र काल त १८२० मन्त्रा कुटी ८। ने काल ×। पूर्ण। के त १४।
मन्त्र।

४८८६ प्रति तं २। पत्र तं ४। ने काल ×। के त १३७। छ मन्त्र।

४८८७ प्रति स ३। पत्र तं ५। ने काल त १८३३ मन्त्रा कुटी ७। के त १६।
मन्त्र।

विशेष—बहुमन्त्रा मन्त्रानाम् के तर्थात् अथुत में प्रतिविधि की थी। इसी मन्त्रा के एक प्रति (३) १३३) कीर्ति है।

४८८८ प्रति स ४। पत्र तं ३। ने काल ×। के त १३७। छ मन्त्र।

४८८९ प्रति स ५। पत्र त ३। ने काल त १८३३ मन्त्रा कुटी ३। के त १७।
मन्त्र।

विशेष—अथुत मन्त्र के भी विष्णुमन्त्र मन्त्रानाम् के तर्थात् अथुत के प्रतिविधि की थी।

४८९० पञ्चमीशिवपूजा—। म सुदेवकीर्ति। पत्र तं ३। या १४२ हव। मन्त्र-ह्रिन्। विष्णु-
पूजा। र काल ×। ने काल ×। पूर्ण। के त १३। छ मन्त्र।

४८९१ पञ्चमीशिवपूजा—। म सुदेवकीर्ति। पत्र तं ७। या १४२ हव। मन्त्र-ह्रिन्।
विष्णु-पूजा। र काल ×। ने काल त १८ मन्त्रा कुटी ४। पूर्ण। के त १३३। छ मन्त्र।

विशेष—अथुत मन्त्र के प्रतिविधि की थी।

४८९२ प्रति स ३। पत्र तं ५। ने काल त १८३३ मन्त्रा कुटी ३। के त १७।
मन्त्र।

४८९३ प्रति तं ३। पत्र तं ७। या १४२ हव। मन्त्र-ह्रिन्। विष्णु-पूजा।
काल ×। ने काल त १८३३ मन्त्रा कुटी ७। पूर्ण। के त १३७। छ मन्त्र।

४८९४ पञ्चमीशिवपूजा—। पत्र तं १। या ४४ हव। मन्त्र-ह्रिन्। विष्णु-
पूजा। र काल ×। ने काल ×। पूर्ण। के त १२९। छ मन्त्र।

विशेष—बाजी मन्त्रा मन्त्रा के प्रतिविधि की थी।

४८६५ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १६०५ प्रासोज बुदी १२ । वे० स० ६४ । म्

मण्डार ।

४८६६ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३८८ । मण्डार ।

४८६७ पञ्चमेरूपूजा—टेकचन्द । पत्र स० ३३ । मा० १२×८ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३२ । अ मण्डार ।

४८६८ प्रति स० २ । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८८३ । वे० स० ६१६ । च मण्डार ।

४८६९ प्रति स० ३ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६७६ । वे० स० २१३ । छ मण्डार ।

विशेष—मजमेर वालों के चौबारे जयपुर में लिखा गया । कीमत ४ III)

४८७०. पञ्चमेरूपूजा—द्यानतराय । पत्र स० ६ । मा० १२×५३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६६१ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । अ मण्डार ।

४८७१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ३६५ । छ मण्डार ।

४८७२. पञ्चमेरूपूजा—भूधरदास । पत्र स० ८ । मा० ८३×४ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । अ मण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ में संस्कृत पूजा भी है जो अपूर्ण है । इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ५६८) और है ।

४८७३ प्रति स० २ । पत्र स० १० । ले० काल × । वे० स० १४६ । छ मण्डार ।

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्तनपन विधि भी दी हुई है ।

४८७४ पञ्चमेरूपूजा—डालू राम । पत्र स० ४४ । मा० ११×५ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० ४१५ । क मण्डार ।

४८७५ पञ्चमेरूपूजा—सुखानन्द । पत्र स० २२ । मा० ११×५ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६६ । छ मण्डार ।

४८७६. पञ्चमेरूपूजा । पत्र स० २ । मा० ११×५३ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६६ । अ मण्डार ।

४८७७ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४८७ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ४७६) और है ।

४८७८ पञ्चमेरूपूजा—भ० रत्नचन्द । पत्र स० ६ । मा० १०३×५ इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २०१ । च मण्डार ।

४८७९ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । च मण्डार ।

४२१० पद्मावतीपूजा—पत्र ५१। पा १३५२ दृश्य। माता-संतुष्ट। विष्णु-पूजा।
८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं ११५। अथ मन्त्रः।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है।

४२११ प्रति सं २। पत्र सं १६। मे काल ×। के सं १२७। अथ मन्त्रः।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र पद्मावतीकथन पद्मावतीदहन एवं पद्मावतीचतुस्मान भी है। काल में १ काल भी दिये हुये हैं। मन्त्रकथन के विधि भी दी हुई है। इसी मन्त्र के एक अंति (के सं १२६) द्योत है।

४२१२ प्रति सं ३। पत्र सं १। मे काल ×। पूर्ण। के सं १। अथ मन्त्रः।

४२१३ प्रति सं ४। पत्र सं ७। मे काल ×। के सं १४४। अथ मन्त्रः।

४२१४ प्रति सं ५। पत्र सं २। मे काल ×। के सं १। अथ मन्त्रः।

४२१५ पद्मावतीमहापूजा—पत्र ५१। पा ११५२ दृश्य। माता-संतुष्ट। विष्णु-पूजा।
८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं ११७५। अथ मन्त्रः।

विशेष—शक्तिपञ्चक पूजा भी है।

४२१६ पद्मावतीप्राप्तिक—पत्र सं १७। पा १३५२ दृश्य। माता-संतुष्ट। विष्णु-पूजा।
८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं २२९। अथ मन्त्रः।

विशेष—शक्ति पञ्चक संहिता है।

४२१७ पद्मावतीछात्रानाम पूजा—पत्र ५१। पा १३५२ दृश्य। माता-संतुष्ट।
विष्णु-पूजा। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं ४३। अथ मन्त्रः।

४२१८ पद्मविद्यापूजा—छात्रविद्यापि। पत्र सं ७। पा ११५२ दृश्य। माता-संतुष्ट।
विष्णु-पूजा। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं २११। अथ मन्त्रः।

विशेष—कुशावचन के प्रतिनिधि भी भी।

४२१९ पद्मविद्यापूजा—रत्नमणि। पत्र सं १४। पा ११५२ दृश्य। माता-संतुष्ट। विष्णु-
पूजा। ८ काल ×। मे काल ×। पूर्ण। के सं १३५। अथ मन्त्रः।

विशेष—मन्त्रविद्या के प्रतिनिधि भी भी।

४२२० प्रति सं १। पत्र सं २। मे काल ×। के सं २१५। अथ मन्त्रः।

४२२१ प्रति सं ३। पत्र सं १। मे काल सं १५ दृश्य। पूर्ण। के सं ११९। अथ
मन्त्रः।

विशेष—माता मन्त्र (हूरी मन्त्र) में माता की आज्ञा के उपरान्त के प्रतिनिधि द्योत है।

४६२२ पत्न्यविधानपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र स० ६ । मा० १२×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४५३ । क मण्डार ।

४६२३. पत्न्यविधानपूजा । मा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७५ । अ मण्डार ।

४६२४ प्रति स० २ । पत्र स० २ मे ५ । ले० काल स० १८२१ । अपूर्ण । वे० स० १०५४ । अ

मण्डार ।

विशेष—१० जैनसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२५ पत्न्यव्रतोत्थापन—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ६ । मा० १०^३×४^३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतियां (वे० सं० ५८२, ६०७) भी हैं ।

४६२६ पत्न्योपमोपव्रामविधि । पत्र स० ४ । मा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा एव उपवास विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४८४ । अ मण्डार ।

४६२७ पार्श्वजिलपूजा—साह लोहट । पत्र स० २ । मा० १०^३×५ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६० । अ मण्डार ।

४६२८ पार्श्वनाथपूजा । पत्र स० ४ । मा० ७×५^३ इ च । भाषा—हिंदी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११३२ । अ मण्डार ।

४६२९ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४६१ । इ मण्डार ।

४६३० पुण्याहवाचन । पत्र स० ५ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्राप्ति

विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७६ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ३ प्रतियां (वे० स० ५५६, १३६१, १८०३) भी हैं ।

४६३१ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ मण्डार ।

४६३२. प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६०६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० स० २७ । ज

मण्डार ।

विशेष—प० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशान से प्रतिलिपि कराई थी ।

४६३३ प्रति स० ४ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १६६४ चैत्र सुदी १० । वे० स० २००६ । ट

मण्डार ।

४६३४ पुरंदरस्तोत्रोपायम्—। वन सं २। पा ११×२२ दण्ड। माला—संस्कृत। विषय—पूजा।
२ माला×। नै माला सं १२११ पादपत्र कुटी १। पूर्ण। के सं ७२। अ मण्डार।

४६३५ पुष्पाक्षमिश्रतपूजा—य रत्नचमू। वन सं ३। पा १२×७२ दण्ड। माला—संस्कृत।
विषय—पूजा। २ माला सं १६८१। नै माला×। पूर्ण। के सं २२६। अ मण्डार।

विशेष—यह रत्नचमू कावचागुर के पादपत्रों की श्रेष्ठता से जगुराक रत्नचमू के सं १६८१ के बराबर की।
४६३६ प्रति सं ९। वन सं १५। नै माला सं १६२४ मालोत्र कुटी १। के सं ११०। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार के एक प्रति इसी कृष्ण के धीरे है।

४६३७ प्रति सं ३। वन सं ७। नै माला×। के सं ३०७। अ मण्डार।

४६३८ पुष्पाक्षमिश्रतपूजा—य रुच्यचमू। वन सं १। पा १×३ दण्ड। माला—संस्कृत।
विषय—पूजा। २ माला×। नै माला×। पूर्ण। के सं ३२३। अ मण्डार।

४६३९ पुष्पाक्षमिश्रतपूजा—। वन सं ८। पा १×४३ दण्ड। माला—संस्कृत।
माला×। नै माला सं १६३६ पादपत्र कुटी ३। पूर्ण। के सं २२९। अ मण्डार।

४६४० पुष्पाक्षमिश्रतपूजा—य मालापाद। वन सं १। पा ४२ दण्ड। माला—संस्कृत।
विषय—पूजा। २ माला×। नै माला सं १६६। पूर्ण। के सं ४८। अ मण्डार।

विशेष—मालापाद जगुराक चर्मचमू के सिद्ध है। इसी मण्डार के एक प्रति (के सं १११) धीरे है।
४६४१ प्रति सं ९। वन सं ९। नै माला सं १६९ मालोत्र कुटी १४। के सं ७८। अ मण्डार।

४६४२ पूजाक्रिया—। वन सं १। पा ११२×२ दण्ड। माला—हिन्दी। विषय—पूजा करने की
विधि का विधान। २ माला×। नै माला×। पूर्ण। के सं १२६। अ मण्डार।

४६४३ पूजापाठसंग्रह—। वन सं २। पा ११×६ दण्ड। माला—संस्कृत। विषय—
पूजा। २ माला×। नै माला×। पूर्ण। के सं १२२। अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार के एक पूर्ण प्रति (के सं १७८) धीरे है।

४६४४ पूजापाठसंग्रह—। वन सं ३। पा ७×३२ दण्ड। माला—संस्कृत। विषय—पूजा।
२ माला×। नै माला×। पूर्ण। के सं १३१२। अ मण्डार।

विशेष—पूजा पाठ के संग्रह संग्रह के हैं। अधिकांश कर्मों के हैं। पूजा का विधान है, फिर भी विधान
विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें धारा दिया जा रहा है।

४६४५. प्रति स० २ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १६३७ । वे० स० ५६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

- | | | |
|--------------------------|---------|-----------------|
| १. पुष्पदन्त जिनपूजा | — | संस्कृत |
| २ चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा | " | |
| ३ चन्द्रप्रभपूजा | " | |
| ४ शान्तिनाथपूजा | " | |
| ५ मुनिसुप्रतनाथपूजा | " | |
| ६ दर्शनस्तोत्र—पद्मनन्दि | प्राकृत | ले० काल स० १६३७ |
| ७ ऋषभदेवस्तोत्र | " " | |

४६४६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १८६६ द्वि० चैत्र बुदी ५ । वे० स० ४५३ । अ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियाँ (वे० स० ७२६, ७३३, १३७०, २०६७) भी हैं ।

४६४७ प्रति स० ४ । पत्र स० १२० । ले० काल स० १८२७ चैत्र सुदी ४ । वे० स० ४८१ । क

भण्डार ।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

४६४८ प्रति स० ५ । पत्र स० १८५ । ले० काल × । वे० स० ४८० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं ।

पल्यविधानप्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
बृहद्पोडशकारणपूजा	—	"
जैष्ठजिनवरउद्यापनपूजा	—	"
त्रिकालचीवीसीपूजा	—	प्राकृत
चन्दनपष्ठिप्रवपूजा	विजयकीर्त्ति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	"
जम्बूद्वीपपूजा	प० जिनदास	"
भक्षयनिधिपूजा	—	"
कर्मचूरयतोद्यापनपूजा	—	"

४६४६. प्रति सं० ६। पत्र सं० १ के ११६। न काल X। मूर्ति। वि सं० ४२७। क मन्थार।

विशेष—बुद्ध बुद्धान विष्णु मन्थार है—

विशेषबुद्धनाम	—	संख्या
वीर्यवाराहबुद्धा	बुधनाम	२
विमलवर्णवर्णबुद्धा	व रत्नकम	२
राजकारणविमलिकबुद्धा	—	२
सात्वतसर्वबुद्धा	—	२
सर्वबुद्धा	—	२
विमलबुद्धा	मन्थार	२

इसी मन्थार में २ प्रतिमां (वि सं० ४७१ ४७२) भी हैं।

४६४७. प्रति सं० ७। पत्र सं० २७ के २७। न काल X। मूर्ति। वि सं० २२६। क मन्थार।

विशेष—सात्वत बुद्धा एवं वासी ना संज्ञा है।

४६४८. प्रति सं० ८। पत्र सं० १४। न काल X। वि सं० १४। क मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (वि सं० १६६) भी है।

४६४९. प्रति सं० ९। पत्र सं० १२३। न काल X। ४ वासीव बुद्धा ४। वि सं० ४१६। क

मन्थार।

विशेष—विष्णु वैश्विक बुद्धा वास संज्ञा है।

४६५०. पूजापाठसंज्ञा—। पत्र सं० २९। वा १२X ६५। वास-वैश्विक विष्णु। विष्णु-बुद्धा

वास। २ काल X। न काल X। मूर्ति। वि सं० ७२५। क मन्थार।

विशेष—वासावर, वासवर्णबुद्धा वासी वा संज्ञा है। सात्वत बुद्धा वासी ही मन्थार में ३ प्रतिमां (वि सं० २, ३६४ ३) भी हैं।

४६५१. प्रति सं० १०। पत्र सं० २। न काल सं० १३३३ वासाव बुद्धा १४। वि सं० ४२५। क मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिमां (वि सं० ४७४ ४७५, ४७६ ४७७, ४७८ ४७९ ४८० ४८१) भी हैं।

४६५२. प्रति सं० ११। पत्र सं० ४२ के ४२। न काल X। मूर्ति। वि सं० ११२४। क मन्थार।

४६५६. पूजापाठसंग्रह " । पत्र स० ४० । मा० १२×८ २ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३५ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

आदिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्पेदतिगरपूजा	—	"
विलमानबीसतीर्थद्वारी की पूजा	—	१० काल स० १६४१
अनुभव विलास		ले० " १६४६
[पदसंग्रह]		हिन्दी

४६५७ प्रति स० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० स० ७४६ । क मण्डार ।

विशेष—हमी मण्डार मे ५ प्रतिष्ठा (वे० स० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२) प्रौर है ।

४६५८ प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० २४१ । छ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजा पाठ हैं—

चीवीसदण्डक	—	दीनतराम
बिनती गुरमा की	—	भूपरदास
बीस तीर्थद्वार जयमाल	—	—
सोलहकारणपूजा	—	दानतराम

मण्डार ।

४६५९ प्रति स० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १८६० फागुण सुदी २ । वे० स० २२० । ज

४६६० प्रति स० ५ । पत्र स० ६ से २२२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७० । म मण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

४६६१ पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचन्द । पत्र स० । मा० ११×५ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७४६ । क मण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

जयपुर नगर सम्बाधी चैत्यालयों की वदना	स्वरूपचन्द	हिन्दी
ऋद्धि सिद्धि पातक	"	"
महावीरस्तोत्र	"	"
जितपञ्जरस्तोत्र	"	"
त्रिलोकसार चौपई	"	"
अमलकारजिनेश्वरपूजा	"	"
सुगधीदशमीपूजा	"	"

४१६२. पूजाप्रकरण—उमास्वामी । पत्र सं १ । पा १ ५४३ दश । भाषा—बंजरा । विषय—विधान । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १२२ । अ अक्षर ।

विशेष—पुष्पक वादि के लक्षण दिने हुके हैं । अन्तिम पुष्पिका विग्रह अक्षर है—

इति श्रीब्रह्मसंहितादीनिरचितं प्रकरणं ॥

४१६३. पूजामहात्म्यविधि— । पत्र सं १ । पा ११३५४३ दश । भाषा—बंजरा । विषय—पूजा विधि । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं २२४ । अ अक्षर ।

४१६४. पूजाव्यविधि— । पत्र सं १ । पा २५४ दश । भाषा—बंजरा । विषय—पूजाविधि । १ काल × । ले काल सं १५२३ । पूर्ण । वे सं १५५७ । अ अक्षर ।

४१६५. पूजापाठ— । पत्र सं १४ । पा १ २५४ दश । भाषा—हिन्दी वगैरे । विषय—पूजा । १ काल × । ले काल सं १ ११ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे सं १ १ । अ अक्षर ।

विशेष—वास्तविक के प्रतिविधि भी भी । अन्तिम पत्र काल का विधान हुआ है ।

४१६६. पूजाविधि— । पत्र सं १ । पा १ ५४३ दश । भाषा—बाह्य । विषय—विधान । १ काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १७५६ । अ अक्षर ।

४१६७. पूजाविधि— । पत्र सं ४ । पा १ ५४३ दश । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११७ । अ अक्षर ।

४१६८. पूजापत्र—आत्मिकम् । पत्र सं १ । पा १ ५४३ दश । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११११ । अ अक्षर ।

४१६९. पूजापत्र—साह्य । पत्र सं १ । पा १ ५४३ दश । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १११ । अ अक्षर ।

४१७०. पूजापत्र—आत्मिकम् । पत्र सं १ । पा १ ५४३ दश । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं १११ । अ अक्षर ।

४१७१. पूजापत्र— । पत्र सं १ । पा १ ५४३ दश । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १ काल × । ले काल × । पूर्ण । वे सं ११११ । अ अक्षर ।

४१७२. पूजापत्र— । पत्र सं ११ । पा १ ५४३ दश । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १ काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे सं १५७५ । अ अक्षर ।

४६७३ पूजाष्टक—विश्वमूषण । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । दि०—२०
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१२ । अ मण्डार ।

४६७४ पूजासंग्रह । पत्र सं० ३३१ । आ० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । -
काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० ४६० ये ४७८ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का मग्न है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र सं०	वे० सं०
१ काजीब्रतोद्यापनमङ्गलपूजा	×	संस्कृत	१०	४७८
२ श्रुतज्ञानब्रतोद्योतनपूजा	×	हिन्दी	२०	४७३
३ रोहिणीव्रतपूजा	मङ्गलाचार्य केशवसेन	संस्कृत	१२	४७२
४ दशलक्षणब्रतोद्यापनपूजा	×	"	२७	४७१
५ लब्धिविधानपूजा	×	"	१२	४७०
६ ध्वजारोपणपूजा	×	"	११	४६६
७ रोहिणीव्रतोद्यापन	×	"	१३	४६८
८ अनन्तब्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचन्द्र	"	३०	४६७
९ रत्नत्रयब्रतोद्यापन	×	"	१६	४६६
१० श्रुतज्ञानब्रतोद्यापन	×	"	१२	४६५
११ शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वमूषण	"	२०	४६४
१२ गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	"	२२	४६३
१३ त्रिलोकसारपूजा	×	"	८	४६२
१४ पार्वनाथपूजा (नवग्रहपूजाविधान सहित)		"	१८	४६१
१५ त्रिलोकसारपूजा	×	"	१०	४६०

इसी मण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ११२६, २२१६) और हैं जिनके विषय—

४६७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १६१८ । वे० सं० ४६१ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

नाम	कर्त्ता
त्रिपञ्चाशत्ब्रतोद्यापन	—

नाम	कथा	भाषा
ब्रह्मरक्षेण्डाशुभा	—	ब्रह्मरक्ष
ब्रह्मरक्षायामशुभा	—	"
बीमठ विषयमादवा बीमी की भूमा	मतिठबीमि	"
बलुवरवसतभूमा	—	"
मुर्धनरक्षणीयथा	धुमनामर	"
बलनरक्षणीयथा	"	"
बाह्यवालेविषयमादवा	मदनबीमि	"
मन्दीरविषयमादवा	हरिषेण	"
मेदमलाशतनथा	धुमनामर	"

४२७१ प्रति स ३। वस न ४। मे वस ४ १२५६। के ल ४८३। क मकार।

विशेष—निम्न प्रकार कहते हैं—

नाम	कथा	भाषा
मुर्धनरक्षणीयामशुभा	×	ब्रह्मरक्ष
मन्दीरविषयामशुभा	×	"
सिद्धयामशुभा	प्रसाध	"
प्रतिमालोकपुर्वधी शनीयामशुभा	×	"

विशेष—शास्त्रान्त [अक्षयि के कथा] के प्रतिमिषि की की।

मधुरस्याम	×	ब्रह्मरक्ष
सपत्नीयारोविषय	×	"

द्वी मकार के २ अक्षरों (के ल ४७७ ४७८) और हैं निम्नो वाक्यमा भूमा हैं।

४२७७ प्रति स ४। वस न २। मे वस ७। के ल २१२। क मकार।

विशेष—निम्न भूमाओं या ब्रह्म हैं— सिद्धयामशुभा, कतिपुष्पामशुभा, वायव्य स्तवन एवं बलाशतनम
कमला। प्रति प्राचीन तथा नव विधि लिखित हैं।

४२७८ प्रति स २। वस न २२। मे वस ४। के ल ४२४। क मकार।

विशेष—द्वी मकार के २ अक्षरों (के ल ४२४ ४२५) और हैं।

४६७६ प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ले० काल X । वे० स० २२५ । च भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एवं इन्द्राकार पूजा का संग्रह है ।

४६८० प्रति स० ७ । पत्र स० १५ मे ७३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१ प्रति स० ८ । पत्र स० ३८ से ३१५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२ प्रति स० ९ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १८०० प्रापाठ सुदी १ । वे० स० ६६ । ब

भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
धर्मचक्रपूजा	यशोवन्दि	संस्कृत	१-१६
नदीश्वरपूजा	—	"	१६-२४
सकलीकरणविधि	—	"	२४-२५
नवसुखयन्त्रपूजा	समन्तभद्र	"	२५-२६
श्रमन्तव्रतपूजा	श्रीभूषण	"	२६-३३
भक्तामरस्तावपूजा	केशवमेत	"	३३-३६

आचार्य विश्वकीर्ति की सहायता से रचना की गई थी ।

पञ्चसौव्रतपूजा केशवसेन " ३६-४५

इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० स० ४६६, ४७०) और हैं जिनमें नैमित्तिक पूजाएँ हैं ।

४६८३ प्रति स० १० । पत्र स० ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४ पूजासंग्रह । पत्र स० ३४ । भा० १०^३ X ५ इञ्च । संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, भक्तत्रिभुजैश्वरानयपूजा, सिद्धपूजा, शुभान्विलीपूजा, बीसतीर्थस्नानपूजा, क्षेत्रपालपूजा, षोडश कारणपूजा, क्षीरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (ज्ञानभूषण) एवं शान्तिपाठ आदि हैं ।

४६८५ पूजासंग्रह । पत्र स० २ मे ४५ । भा० ७^३ X ५^३ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२७ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २२८) और है ।

४६८६ पूजासंग्रह । पत्र स० ४६७ । भा० १२ X ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी । विषय—संग्रह । २० भात X । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वे० स० ५४० । ख भण्डार ।

विशेष—विष्णु वाङ्मय—

नाम	कर्त्ता	भाषा	र. वाङ्म.	सं. वाङ्म.	पत्र
१. मत्तावतपुत्रा	—	मल्ल			
२. तिष्ठतपुत्रा	विष्णुपुत्र	"		न १ वट ज्येष्ठ मुदी ११	
३. वीरवीरपुत्रा	—	"		×	धूर्वा
४. मित्तमित्रपुत्रा	—	मल्ल			
५. मत्तावतपुत्रा	—	मल्ल			
६. पञ्चविंशतपुत्रा	विष्णुपुत्र	"	८	न १ वट	धूर्वा
७. ज्येष्ठमित्रपुत्रा	मुद्रिणीति	"			
८. मत्तावतपुत्रा	मत्तावतपुत्र	मल्ल			
९. पुष्पाञ्जलिपुत्रा	मत्तावत	मल्ल [मत्तावत विष्णु मल्ल]			
१०. रत्नपुत्रा	—	"			
११. मत्तावतपुत्रा	मत्तावत	"	८ वाङ्म १५	मे वाङ्म १५३७	
१२. पञ्चविंशतपुत्रा	मत्तावतपुत्र	"		" ० १ १५	
१३. मत्तावतपुत्रा	—	मल्ल			
१४. मत्तावतपुत्रा	मत्तावतपुत्र	मल्ल		मे वाङ्म १३	
१५. पञ्चविंशतपुत्रा	मुद्रिणीति	"			
१६. पुष्पाञ्जलिपुत्रा	मत्तावत	"		मे वाङ्म १२९	
१७. मत्तावतपुत्रा	—	"			
१८. मत्तावतपुत्रा	—	"			
१९. मत्तावतपुत्रा	—	"			
२०. मत्तावतपुत्रा	मुद्रिणीति	"			
२१. मत्तावतपुत्रा	मत्तावत	"			
२२. मत्तावतपुत्रा	मत्तावत	"			
२३. मत्तावतपुत्रा	मत्तावत	"			
२४. मत्तावतपुत्रा	—	"			
२५. मत्तावतपुत्रा	मत्तावत	"			

२५. कर्मवृत्तप्रोक्षण	कर्मवृत्त	मातृ	
२६. कर्मवृत्तप्रोक्षण	कर्मवृत्त	"	
२७. निषेधकर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	मे० बान १८३१
२८. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
२९. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	मे० बान १८३८
३०. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
३१. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
३२. कर्मवृत्तप्रोक्षण	कर्मवृत्त	मातृ	मातृ
३३. कर्मवृत्तप्रोक्षण	मातृ	मातृ	
३४. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	मातृ	मे० बान १८५०
३५. कर्मवृत्तप्रोक्षण	मातृ	"	
३६. कर्मवृत्तप्रोक्षण	मातृ	"	
३७. कर्मवृत्तप्रोक्षण	मातृ	"	
३८. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
३९. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
४०. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
४१. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
४२. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
४३. कर्मवृत्तप्रोक्षण	मातृ	"	मे० बान १८३०
४४. कर्मवृत्तप्रोक्षण	मातृ	"	
४५. कर्मवृत्तप्रोक्षण	मातृ	"	मे० बान १८२७
४६. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	मातृ	
४७. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
४८. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
४९. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	
५०. कर्मवृत्तप्रोक्षण	—	"	मे० बान १८२७

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४६६१ पूजा एव कथा समग्र—सुरालचन्द्र । पत्र सं० ५० । मा० ८५४ इ व । भाषा—हिंदी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८७३ पोप बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५६१ । अ मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं तथा कथाओं का समग्र है ।

चन्दनपष्ठीपूजा, दशतक्षणापूजा, दोषदाकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, अमन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा । तप सक्षणाकथा, मेरुपति तप की कथा, सुगन्धदशमीव्रतकथा ।

४६६२. पूजासमग्र—हीराचन्द्र । पत्र स० ५१ । मा० ६३५ इ व । भाषा—हिंदी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४८२ । क मण्डार ।

४६६३. पूजासमग्र । पत्र स० ६ । मा० ८५५ इ व । भाषा—हिंदी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२७ । अ मण्डार ।

विशेष—पञ्चमेरु पूजा एव रत्नत्रय पूजा का समग्र है ।

इसी मण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० स० ७३४, ६७१, १३१६, १३७७) भी हैं जिनमें सामान्य पूजाएँ हैं ।

४६६४ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । वे० स० ६० । ग मण्डार ।

४६६५ प्रति स० ३ । पत्र स० ४३ । ले० काल × । वे० स० ४७६ । क मण्डार ।

४६६६ प्रति स० ४ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १६५५ मंगसिर बुदी २ । वे० स० ७३ । घ

मण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का समग्र है—

देवपूजा, सिद्धपूजा एव दान्तिपाठ, पञ्चमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एव दशतक्षणा पूजा दानतराय कृत ।

अमन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एव दाल्त्रपूजा ।

४६६७ प्रति स० ५ । पत्र स० ७५ । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० ४८६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ५ प्रतिष्ठा (वे० स० ४८७, ४८८, ४८९, ४८५, ४९३) भी हैं जो सभी मपूर्णा हैं ।

४६६८ प्रति स० ६ । पत्र स० ८५ । ले० काल × । वे० स० ६३७ । च मण्डार ।

४६६९ प्रति स० ७ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० २२२ । छ मण्डार ।

५००० प्रति स० ८ । पत्र स० १३६ । ले० काल × । वे० स० १२२ । ज मण्डार ।

विशेष—पञ्चकल्याणकपूजा, पञ्चपरमेष्ठीपूजा एव नित्य पूजाएँ हैं ।

५००१ प्रति स० ९ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । मपूर्णा । वे० स० १६३५ । ट मण्डार ।

५ २. पूजासमय—राधकर्म । पत्र नं १ । पा ११३×१३ हफ । मापा लिप्ता । विषय-पूजा ।

१ काल × १ के काल × १ पूर्ण । के नं ४६३ । क मन्थार ।

विशेष—आदिनाथ के चरणमय तक की बुझाई है ।

५ ३ पूजासार— । पत्र नं ४६ । पा १ × ३ हफ । मापा-संस्तुत । विषय-पूजा एवं

विधि विधान । १ काल × १ के काल × १ पूर्ण । के नं ४६४ । क मन्थार ।

५४ प्रति सं १ । पत्र नं ४७ । के काल × १ के नं २२६ । क मन्थार ।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के नं ४७) भी है ।

५५ ५ प्रतिमासास्तुर्द्वैशीप्रोधापनपूजा—कञ्जचराय । पत्र नं १४ । पा १ × ३ हफ ।

मापा-संस्तुत । विषय-पूजा । १ काल × १ के काल नं ११ । मापा-गुड़ी १४ । पूर्ण । के नं १५७ । क मन्थार ।

विशेष—वीरान चाराकर्म के बन्धुर के प्रतिनिधि की भी ।

५ ६ प्रति सं २ । पत्र नं १४ । के काल नं १ । मापा-गुड़ी १ । के नं ४५४ । क

मन्थार ।

५७ ७ प्रति सं ३ । पत्र नं १ । के काल नं १ । मापा-गुड़ी ३ । के नं १३३ । क

मन्थार ।

५ ८ प्रतिमासास्तुर्द्वैशीप्रोधापनपूजा—राधकर्म । पत्र नं १२ । पा १२ × २ हफ ।

मापा-संस्तुत । विषय-पूजा । १ काल × १ के काल नं १ । मापा-गुड़ी १४ । पूर्ण । के नं १९ । क मन्थार ।

विशेष—वीरचन्द्र महाराज के वीरान चाराकर्म मालक के रूपदा करवाई की ।

५ ९ प्रतिमासास्तुर्द्वैशीप्रोधापनपूजा— । पत्र नं १९ । पा १ × ७ हफ । मापा-

संस्तुत । विषय-पूजा । १ काल × १ के काल नं १ । पूर्ण । के नं २ । क मन्थार ।

५ १० प्रति सं २ । पत्र नं १७ । के काल नं १५७६ मापा-गुड़ी १ । के नं २१९ । क

मन्थार ।

विशेष—अनन्तनाथ मालकीनाथ मीठा का के बन्धुर के प्रतिनिधि की भी । वीरान मन्थारम ७ मन्थारी के प्रतिनिधि करवाई की ।

५ ११ प्रतिमासास्तुर्द्वैशीप्रोधापनपूजा— । पत्र नं २१ । पा १२ × २ हफ । मापा-संस्तुत ।

विषय-प्रतिष्ठा (विधान) । १ काल × १ के काल × १ पूर्ण । के नं ३ । क मन्थार ।

५०१२ प्रतिष्ठादीपक—पठिताचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र सं० १४ । मा० १२५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ चैत्र शुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० ५०० । छ भण्डार ।
विशेष—भट्टारक राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५०१३ प्रतिष्ठापाठ—आ० वसुनन्दि (अपर नाम जयसेन) । पत्र सं० १३६ । मा० ११३×८३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक शुदी ११ । पूर्ण । वै० सं० ४८५ । क भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी है ।

५०१४ प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १८४६ । वै० सं० ४८७ । क भण्डार ।
विशेष—३६ पत्रों पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं ।

५०१५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १८४६ । वै० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—यानावर्ग व्यास ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अतः में एक प्रतिरिक्त पत्र पर मङ्कल्यापनार्थ मूर्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है । उसमें मङ्कल लिये हुये हैं ।

५०१६ प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २७१ । ज भण्डार ।
विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्पुद्गुदाचार्य पट्टोदयभूषणदिवामणि श्रीवसुविद्वाचार्येण जयमेनापरनामकेन विरचित । प्रतिष्ठा-सार पूर्णमममत्त ।

५०१७ प्रतिष्ठापाठ—आशाधर । पत्र सं० ११६ । मा० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल सं० १२८५ आसोज शुदी १५ । ले० काल सं० १८८४ भाद्रपद शुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० १२ । ज भण्डार ।

५०१८ प्रतिष्ठापाठ " । पत्र सं० १ । मा० ३३ गज सत्रा १० इ च चौटा । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ शुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ४० । ज भण्डार ।

विशेष—यह पाठ कपड़े पर लिखा हुआ है । कपड़े पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं । यह कपड़े की १० इ च चौड़ी पट्टी पर सिमटता हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सद्धि ॥ भो नमो वीतरागाय ॥ तवसु १५१६ वर्षे ज्येष्ठ शुदी १३ तैरसि सोमवासरे अश्विनि

नक्षत्रे श्रीहृण्कापथे श्रीसर्वशर्चैपालये श्रीमूलसथे श्रीकुन्दपुदाचार्यान्वये बलात्कारण्ये 'सरस्वतीगच्छे भट्टारक धोरलकीर्ति देवा तत्पट्टे श्रीप्रभाषद्रवेदा तत्पट्टे श्रीवसुनन्दिदेवा तत्पट्टे श्रीभुवषद्रवेदा ॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा ॥

२०१३. प्रति सं ९। पत्र सं १२। ले पत्र सं १०११ पीप बुटी ४। पत्र सं २४।

क मन्थार।

विशेष—हिन्दी में प्रथम १ पत्र में प्रतिष्ठा में कर्म वाले वाली वाली का विवरण दिया हुआ है।

२०२. प्रतिष्ठापाठभाषा—भाषा तुलसीदास। पत्र सं २५। या ११२×२२५। भाषा—हिन्दी।

विषय—विशेष। १। कर्म ×। ले कर्म ×। पत्र सं २५२। क मन्थार।

विशेष—बुधवारों आचार्य बुधवारों हैं। इनका बुधवार नाम कर्मों की दिया हुआ है। अंग्रेज में बुधवार नामों के दृष्टि बहुराज्य के सभी एनपिरे पर नामों का एक एनपिरे बन गया हुआ विद्यालय बताया है। उसकी प्रतिष्ठा होने के विना एक एनपिरे ऐसा निम्न है।

इसी मन्थार में एक प्रति (१ ७ ४६) थीर है।

२ २१ प्रतिष्ठाविधि—पत्र सं १०९ के १२२। या ११०×४६५। भाषा—हिन्दी।

विषय—विधि विधान। २। कर्म ×। ले कर्म ×। पत्र सं २५३। क मन्थार।

२ २२. प्रतिष्ठासार—य शिवजीका। पत्र सं १२। या १२५०५५। भाषा—हिन्दी। विषय—

विधि विधान। २। कर्म ×। ले कर्म १२२१ एनपिरे बुटी ४। पत्र सं २५४। क मन्थार।

२ २३. प्रतिष्ठासार—पत्र सं २। या १२२×२२५। भाषा—हिन्दी। विषय—विधि

विधान। २। कर्म ×। ले कर्म १२२१ एनपिरे बुटी ४। पत्र सं २५५। क मन्थार।

विशेष—य एनपिरे नाम में प्रतिष्ठा की थी। यों के यों के नाम वाली के यों हुए हैं।

२ २४. प्रतिष्ठासारमन्थार—या बलुनमिह। पत्र सं २२। या १२५५५५। भाषा—हिन्दी।

विषय—विधि विधान। २। कर्म ×। ले कर्म ×। पत्र सं २२१। क मन्थार।

२ २५. प्रति सं २। पत्र सं २४। ले कर्म सं १२२। पत्र सं २५६। क मन्थार।

२ २६. प्रति सं ३। पत्र सं २७। ले कर्म सं १२७०। पत्र सं २५७। क मन्थार।

२ २७. प्रति सं ४। पत्र सं २९। ले कर्म १२७२ एनपिरे बुटी २२। पत्र सं २५८। क मन्थार।

क मन्थार।

विशेष—टीकरे परिष्कार में है।

२ २८. प्रतिष्ठासारोन्मथार—पत्र सं ७५। या १२५५५५। भाषा—हिन्दी। विषय—

विधि विधान। २। कर्म ×। ले कर्म ×। पत्र सं २५९। क मन्थार।

२ २९. प्रतिष्ठासारोन्मथार—पत्र सं २२। या १२५५५५। भाषा—हिन्दी। विषय—

विधान। २। कर्म ×। ले कर्म सं १२२१। पत्र सं २६०। क मन्थार।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

५०३० प्राणप्रतिष्ठा । पत्र सं० ३ । मा० ६३×६३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७ । ज भण्डार ।

५०३१ वात्यकालवर्णन । पत्र सं० ४ से २३ । मा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

विशेष—बालक के गर्भमें घाते के प्रथम मास से लेकर दसवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है ।

५०३२ बीसतीर्थङ्करपूजा—थानजी अजमेरा । पत्र सं० ५८ । मा० १२३×८ इ च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करों की पूजा । २० काल सं० १६३४ भासोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी श्रेष्ठ में एक प्रति भी है ।

५०३३ बीसतीर्थङ्करपूजा । पत्र सं० ५३ । मा० १३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १६४५ पोष सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३२२ । ज भण्डार ।

५०३४ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७१ । झ भण्डार ।

५०३५ भक्तामरपूजा—श्री ज्ञानभूषण । पत्र सं० १० । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३६ । ङ भण्डार ।

५०३६ भक्तामरपूजाव्यापन—श्री भूषण । पत्र सं० १३ । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५२ । च भण्डार ।

विशेष—१०, ११, १२वां पत्र नहीं है ।

५०३७ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—नेमिनाथ चैथ्यालय में हरबंसलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५०३८ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ आश्विन सुदी ५ । वे० सं० १२० । ज भण्डार ।

५०३९ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८११ भासोज सुदी १२ । वे० सं० ५० । झ भण्डार ।

विशेष—जयमाता हिन्दी में है ।

५०४० भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा—विश्वकीर्ति । पत्र सं० ७ । मा० १०३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल सं० १६६६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । ङ भण्डार ।

विशेष— निमि निमि रक्ष नैत्रीतन्त्र संनलपेहि
 विशवचनविधायो कतमी यवधारि ।
 कलवरवरुर्न पञ्चनाभस्य नैत्रे
 विचिन्तयितुं कल्प्या नैत्रधामयथैव ॥

१ ४१ प्रति सं २ । पत्र सं ५ । के कल × १ । के सं २३ । छ कपार ।

२ ४२. मलयसरस्वतीपूजा— । पत्र सं ५ । या ११ × २३ इंच । कला—संस्तुत । विषय—पूजा ।

१ कल × १ । के कल × १ । पूर्यो । के सं २३० । छ कपार ।

३ ४३ प्रति सं २ । पत्र सं १२ । के कल × १ । के सं २३१ । छ कपार ।

४ ४४ प्रति सं ३ । पत्र सं १६ । के कल × १ । के सं ४४४ । छ कपार ।

५ ४५. मातृपदपूजासंमह— धाकतराय । पत्र सं १९ से २६ । या १२ × ४३ इंच । कला—
 हिन्दी । विषय—पूजा । १ कल × १ । के कल × १ । पूर्यो । के सं २३२ । छ कपार ।

६ ४६. मातृपदपूजासंमह— । पत्र सं २४ से ३६ । या १२ × ४३ इंच । कला—हिन्दी ।
 विषय—पूजा । १ कल × १ । के कल × १ । पूर्यो । के सं २३२ । छ कपार ।

७ ४७. मातृपदपूजा— । पत्र सं १ । या ११ × २३ इंच । कला—संस्तुत । विषय—पूजा ।
 १ कल × १ । के कल × १ । पूर्यो । के सं २ । छ कपार ।

८ ४८. धाकतरायकीसीप्रतीक्षापत्र— । पत्र सं ३६ । या १२ × ६ इंच । कला—संस्तुत ।
 विषय—पूजा । १ कल × १ । के कल × १ । पूर्यो । के सं ३६९ । छ कपार ।

९ ४९. मंडको के चित्र— । पत्र सं १४ । या ११ × २३ इंच । कला—हिन्दी । विषय—पूजा ।
 कलमी कलमी का चित्र । के कल × १ । के सं ३३ । छ कपार ।

विशेष—पत्र सं १२ है । निम्नलिखित कलाओं के चित्र हैं—

१. पुष्पबंध	(पृष्ठ २)	७. अधिविषय	(" २१)
२. केनचिन्ता	(पृष्ठ २३)	८. कलाविषय	(")
३. दुर्गाविषय	(" २६)	९. लीलाविषय	(" २२)
४. विष्णुविषय	(" २७)	१०. लीलाविषय	(" २३)
५. विष्णु	(" २८)	११. लीलाविषय	(" २४)
६. विष्णुविषय	(" २९)	१२. लीलाविषय	(" ३०)

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

१३ बारहमास की चौदस (कोष्ठ १६६)	३२. भक्रुरारोपण (कोष्ठ)
१४ पाचमाह की चौदस (" २५)	३३. गणधरवलय (" ४८)
१५. अणतका मडल (" १६६)	३४. नवग्रह (" ६)
१६ मेघमालाव्रत (" १५०)	३५. सुगन्धदशमी (" ६०)
१७. रोहिणीव्रत (कोष्ठ ६१)	३६ सारसुतयत्रमडल (" २८)
१८ लव्घिविधान (" ८१)	३७. शास्त्रजी का मडल (" १२)
१९ रत्नत्रय (" २६)	३८. अक्षयनिधिमडल (" १५०)
२० पञ्चकल्याणक (" १२०)	३९ भठाई का मडल (" ५२)
२१ पञ्चपरमेष्ठी (" १६३)	४०. भक्रुरारोपण (" —)
२२ रविवारव्रत (" ८१)	४१. कलिकुडपार्श्वनाथ (" ८)
२३ मुक्तावली (" ८१)	४२ विमानशुद्धिशांतिक (" १०८)
२४. कर्मदहन (" १४८)	४३ बासठकुमार (" ५२)
२५ काजीबारस (" ६४)	४४ धर्मचक्र (" १५७)
२६ कर्मचूर (" ६४)	४५. लघुशान्तिक (" —)
२७ ज्येष्ठजिनवर (" ४६)	४६ विमानशुद्धिशांतिक (" ८१)
२८ बारहमाह की पञ्चमी (" ६५)	४७. छिनवै क्षेत्रपाल व
२९. चारमाह की पञ्चमी (" २५)	चौबीस तीर्थङ्कर (" २४)
३० फलफादल [पञ्चमेरु] (" २५)	४८ धृतज्ञान (" १५८)
३१ पांचदासो का मडल (" २५)	४९. दशलक्षण (" १००)

५०५० प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० १३८ क । ख मण्डार ।

५०५१. मडपविधि " । पत्र स० ४ । मा० ६×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान ।

२० काल × । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वे० स० १२४० । अ मण्डार ।

५०५२ मडपविधि " । पत्र स० १ । मा० ११३×५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८८ । झ मण्डार ।

५०५३ मध्यलोकपूजा । पत्र स० ५६ । मा० ११३×५३ इ च । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । २० बास × । ले० बाल × । अपूर्ण । वे० स० १२५ । छ मण्डार ।

२०२४ महावीरनिर्वाणपूजा—। पत्र सं १। या ११४२ ई. व। भाग-हस्त। विप-
पूजा। २ भाग X। के भाग सं १०२१। पूर्ण। के सं २१। अ मकार।

विषय—निर्वाणपूजा यात्रा काव्य में वर्णित है।

२ २२ महावीरनिर्वाणपूजा—। पत्र सं १। या ११४२ ई. व। भाग-हस्त।

विप-पूजा। २ भाग X। के भाग X। पूर्ण। के सं २२। अ मकार।

विषय—इसी मकार में एक प्रति (के सं १२१६) वर्णित है।

२०२६ महावीरपूजा—मुद्रापत्र। पत्र सं २। या १०४२ ई. व। भाग-हिन्दी। विप-पूजा।

२ भाग X। के भाग X। पूर्ण। के सं २२२। अ मकार।

२ २० मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा—विप-पूजा। पत्र सं ११। या १२४२ ई. व। भाग-

हस्त। विप-पूजा २ भाग सं १०२९। के भाग सं १२४० ई. व. कुटी १४। पूर्ण। के सं १४२। अ मकार।

विषय—आठवें के १४ पंक्तियों में विप-पूजा का उल्लेख वर्णित है।

अन्य ग्रन्थों में विप-पूजा है—

(

वीरपूजा में विप-पूजा की वृत्तान्तानुसार वर्णित है।

महावीरपूजा का उल्लेख महावीरपूजा विप-पूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में ॥१॥

२०२४ प्रति सं १। पत्र सं १। के भाग सं १०२१। के सं २१। अ मकार।

विषय—मांसीतुषीमिरिमेंदकपूजा में वर्णित है। पत्रों का कुछ हिस्सा पूर्ण में पाया गया है।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान माहित्ये]

५०५६. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन । पत्र स० २ । भा० १२३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२८ । पूर्ण । वै० स० ३०२ । ख भण्डार ।

५०६० मुक्तावलीव्रतपूजा । पत्र स० २ । भा० १२×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २७४ । च भण्डार ।

५०६१ मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा । पत्र स० १६ । भा० ११३×६ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वै० स० २७६ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५०६२ मुक्तावलीव्रतविधान । पत्र स० २४ । भा० ८३×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा एव विधान । २० काल × । ले० काल स० १६२५ । पूर्ण । वै० स० २४८ । ख भण्डार ।

५०६३ मुक्तावलीपूजा—वर्षा सुखसागर । पत्र स० ३ । भा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ५६५ । छ भण्डार ।

५०६४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वै० स० ५६६ । छ भण्डार ।

५०६५ मेघमालाविधि । पत्र स० ६ । भा० १०×४३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रत

विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ८६६ । अ भण्डार ।

५०६६ मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा । पत्र स० ३ । भा० १०३×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्रत पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६२ । पूर्ण । वै० स० ५८० । अ भण्डार ।

५०६७ रत्नत्रयव्रतोद्यापनपूजा । पत्र स० २६ । भा० ११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वै० स० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—१ अपूर्णा प्रति और है ।

५०६८ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वै० स० ६६ । छ भण्डार ।

५०६९ रत्नत्रयजयमाला । पत्र स० ४ । भा० १०३×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २६७ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति (वै० स० २७१) और है ।

५०७० प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६१२ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वै० स० १५८ ।

ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० स० १५६) और है ।

१०७१. प्रति स० ३। पत्र बं १। मे कल \times । मे बं १४०। अ मन्थार।

१०७२. प्रति स० ४। पत्र बं २। मे कल बं १ १२ भागवा सुदी ११। मे बं ११०। अ मन्थार।

१०७३. प्रति स० ५। पत्र बं ३। मे कल \times । मे बं १ । अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (मे बं ११) भी है।

१०७४. राजपत्रमन्थार—। पत्र बं १। या १ \times ४४ द०। भाग—मन्थार। विषय—पूजा।
१ कल \times । मे कल बं १४३। मे बं १११। अ मन्थार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची कल लिखे हुये हैं। पत्र १ से चण्डालकला मुटुवातर कुट तथा लल्ल
माल पूजा की हुई है।

१०७५. प्रति स० १। पत्र बं २। मे कल बं १ ११ भागवा सुदी ११। मे बं १११। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमें इसी विषय में भी है।

१०७६. राजपत्रमन्थार—। पत्र बं १। या १ २ \times ४२ द०। भाग—संस्कृत। विषय—पूजा।
१ कल \times । मे कल बं १ १० भागवा सुदी ११। सुदी १। मे बं १११। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (मे बं ७४१) भी है।

१०७७. प्रति स० २। पत्र बं १। मे कल \times । मे बं ७४४। अ मन्थार।

१०७८. प्रति स० ३। पत्र बं १। मे कल \times । मे बं २१। अ मन्थार।

१०७९. राजपत्रमन्थारमाध—मन्थार। पत्र बं २। या १२ \times ४२ द०। भाग—हिन्दी।
विषय—पूजा। १ कल बं ११२१ मन्थार सुदी १। मे कल \times । सुदी १। मे बं ११३। अ मन्थार।

१०८०. प्रति स० ४। पत्र बं ७। मे कल बं ११३०। मे बं ११३१। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमें (मे बं ११३०, ११ ११० १२ ११२) भी है।

१०८१. प्रति स० ५। पत्र बं २। मे कल \times । मे बं ४२। अ मन्थार।

१०८२. प्रति स० ६। पत्र बं ४। मे कल बं ११२ कर्त्तिका सुदी १। मे बं ११४। अ मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में २ प्रतिमें (मे बं ११४ ११५) भी है।

१०८३. प्रति स० ७। पत्र बं ७। मे कल \times । मे बं ११०। अ मन्थार।

५०८४ रत्नत्रयजयमाला । पत्र स० ३ । मा० १३३×४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । वे० स० ६३६ । क मण्डार ।

५०८५ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० ६६७ । च मण्डार ।

५०८६ प्रति स० ३ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १६०७ द्वि० मासोज बुदी १ । वे० स० १८५ ।

म मण्डार ।

५०८७. रत्नत्रयपूजा—प० आशाधर । पत्र स० ४ । मा० ८३×४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १११० । अ मण्डार ।

५०८८ रत्नत्रयपूजा—केशवसेन । पत्र स० १२ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६६ । च मण्डार ।

५०८९ प्रति स० २ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ४७६ । ज मण्डार ।

५०९०. रत्नत्रयपूजा—पद्मानन्दि । पत्र स० १३ । मा० १०३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०० । च मण्डार ।

५०९१ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० स० ३०५ । च मण्डार ।

५०९२ रत्नत्रयपूजा । पत्र स० १५ । मा० ११×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४७८ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ५ प्रतियां (वे० स० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६) और हैं ।

५०९३ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६८१ । वे० स० ३०१ । ख मण्डार ।

५०९४. प्रति स० ३ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वे० स० ८६ । घ मण्डार ।

५०९५ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६१६ । स० वे० ६४७ । ङ मण्डार ।

विशेष—छोटलाल मजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५०९६ प्रति स० ५ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १८५८ पोष सुदी ३ । वे० स० ३०१ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० ३०२, ३०३, ३०४) और हैं ।

५०९७ प्रति स० ६ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ६० । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ४८२, ५२६) और हैं ।

५०९८. प्रति स० ७ । पत्र स० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६७५ । ट मण्डार ।

५०९९ रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय । पत्र स० २ से ५ । मा० १०३×५३ इ च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६३७ चैत्र बुदी ३ । अपूर्ण । वे० स० ६३३ । क मण्डार ।

५१ प्रति स ५। पत्र सं ६। के काल X। वै सं ३१। अ मकार।

५१ १ राजनयपूजा—आयसदास। पत्र सं १७। या १२ X ४३ दण। भाषा—हिन्दी (पुरानी)

विषय—पूजा। २ काल X। के काल सं १५४९ पीर जुरी ४। पूर्ण। वै सं ४६६। अ मकार।

५१ २ प्रति सं ९। पत्र सं १२। या १५३ X ४३ दण। के काल X। पूर्ण। वै सं १७३।

अ मकार।

विशेष—अष्टक अष्टक तथा अष्टक व तीनों ही भाषा के पाठ हैं।

कवित्त—

किहि किहिनिहि किहुनी
रिहइ बाह कुहराह कलीहं।
इस लेख पवार बरिहइ
जंहेने मरिहइ कवित्तइ ॥

५१ ३ राजनयपूजा—। पत्र सं ३। या १९ X ४५। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २ काल X। के काल X। पूर्ण। वै सं ७४२। अ मकार।

५१०४ प्रति सं ७। पत्र सं ४६। के काल X। वै सं १९९। अ मकार।

५१ ४ अष्टक ६। पत्र सं ३३। के काल सं १६६४ पीर जुरी ९। वै सं १४६। अ मकार।

विशेष—इसी मकार के एक प्रति (वै सं १४५) भीर है।

५१ ६ प्रति सं ४। पत्र सं ६। के काल X। वै सं १९। अ मकार।

विशेष—इसी मकार में एक प्रति (वै सं १९) भीर है।

५१ ७ प्रति सं ५। पत्र सं ३३। के काल सं १६७। वै सं २१। अ मकार।

५१ ८ प्रति सं ६। पत्र सं ३३। के काल X। वै सं ३१। अ मकार।

५१ ९ राजनयपूजा—। पत्र सं ३३। या १ X ४६ दण। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २ काल X। के काल X। वै सं १७। अ मकार।

५११ राजनयपूजा—य राजनीति। पत्र सं १। या १ X ४३ दण। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा एवं विधि विधान। २ काल X। के काल X। पूर्ण। वै सं १२१। अ मकार।

५१११ राजनयपूजा—। पत्र सं १५। या १ X ४३ दण। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा एवं विधि विधान। २ काल X। के काल सं १५९ पत्र जुरी ९। वै सं १६६। अ मकार।

५१० रत्नत्रयविधानपूजा—टेकचन्द । पत्र स० ३६ । मा० १३५७३ इ व । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । १० काल X । ले० काल स० १६७७ । पूर्ण । वे० स० ६६ । ग भण्डार ।

५११३ प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल X । वे० स० १६७ । म भण्डार ।

५११४ रत्नत्रयप्रतोद्यापन । पत्र स० ६ । मा० ७५५ इ व । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
१० काल X । ले० काल X । मपूर्ण । वे० स० ६५० । ह भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६५३) भी है ।

५११५ रत्नावलीव्रतविधान—प्र० कृष्णदास । पत्र स० ७ । मा० १०५४३ इ व । भाषा—हिन्दी ।
विषय—विधि विधान एव पूजा । १० काल X । ले० काल स० १६८५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३८३ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्री गुरुदेवस्य श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

जय जय नाभि नरेन्द्रमुत्तम सुरगण सेवित पाद ।
तत्त्व सिंधु सागर तल्लित योजन एक निनाद ॥
सारद गुरु चरणे नमो नमु निरञ्जन हस ।
रत्नावलि तप विधि बहु तिम वाधि सुख वश ॥२॥
जहूदीप भरत उदार, यहू बडी धरणीधर सार ।
तेह मध्य एक मार्ग सुखंद, पञ्चम्लेखपमति प्रसद ॥
चंद्रपुरी नमरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम दीप्तिधाम ।
उर्वेस्तर जिनबर प्रासाद, अन्तर होल पटह्यास नाद ॥
अनुक्रमि सुतनि देईराज, दिशा लेई करि प्रातम नाज ।
शुक्ति काम रूप हूइ प्रमाण, ए महा पूरमसह बाण ॥१८॥
रत्नावलि विधि भारव, भावि सु नरनारि ।
तिम मन पक्षित फल लहू, मासु भव विस्तारि ॥१९॥
मनह मनारण सपजि होई, नारी वेद विद्येद ।
पाप पद्म सबि कुभाकि, रत्नावलि बहु भेद ।
जे कसिसुखसि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास ।
हर्य सुत मकुल कमल रवि, कहि ब्रह्म कृष्ण उजास ॥

इति श्री रत्नावली व्रत विधान निरूपण श्री वास अर्वांतर सम्बन्ध समाप्त ॥

बं १६५२ वर्षे श्रीम नुदी २ श्रीम व हृष्यराज भूतनमस्त्री तत्पत्न्य व वरु मास तिथिः ॥

५११६ रविशुद्धोद्यापनपूजा—देवैश्वरीति । वष बं १ । या १९५२३ दश । मासा—मंसृत ।

विषय—पूजा । रं मास ५ । ने काल ५ । ने तं २ । अ मन्वार ।

५११७. प्रति सं १ । वष बं १ । ने मास त १५ । ने तं १६ । अ मन्वार ।

५११८ देवामयीपूजा—विश्वभूषण । वष बं १ । या १९२५६ दश । मासा—मंसृत । विषय—

पूजा । र मास त १७१६ । ने मास बं १६४ । पूर्ण । ने तं ३ । अ मन्वार ।

विशेष—अन्तिम—
 अष्टमशैवेरहितलवचनं कानुन्यमाने विन हृष्यराजो ।
 अवरचरने परिपूर्णतन्तुः कथा कथनां अवधनु विधिः ॥
 इति श्री देवामयी पूजा समाप्ता ।

इत्यत्र हृष्यरा मास धनुक ओति पूजा भी है ।

५११९ ईश्वर—गंगाराज । वष बं ४ । या १९५२ दश । मासा—मंसृत । विषय—पूजा । र

काल ५ । ने काल ५ । ने बं ४३६ । अ मन्वार ।

५१२० ऐश्वर्योद्योतकविधान—केशवसेन । वष तं १४ । या १६५२३ दश । मासा—मंसृत ।

विषय—पूजा विधान । र काल ५ । ने काल तं १५७५ । पूर्ण । ने त ७९ । अ मन्वार ।

विशेष—वचनामा द्विती में है । इती मन्वार ने ९ प्रतिष्ठा ने बं ७९३, १९४ धीर है ।

५१२१ प्रति सं २ । वष बं ११ । ने मास बं १७१२ श्रीम नुदी १२ । ने बं १३४ । अ

मन्वार ।

विशेष—इती मन्वार ने ९ प्रतिष्ठा (ने तं २९ १६२) धीर है ।

५१२२ प्रति सं ३ । वष बं १ । ने मास बं १६७६ । ने बं ११ । अ मन्वार ।

५१२३ रविशुद्धोद्यापन— वष बं २ । या १९५६ दश । मासा—मंसृत । विषय—पूजा ।

र मास ५ । ने मास ५ । पूर्ण । ने बं ३२ । अ मन्वार ।

विशेष—इती मन्वार ने एक प्रति (ने तं ७४) धीर है ।

५१२४ प्रति सं १ । वष तं १ । ने काल तं १६२९ । ने बं १६२ । अ मन्वार ।

५१२५. प्रति सं ३ । वष बं ६ । ने काल ५ । ने तं १६६ । अ मन्वार ।

विशेष—इती मन्वार ने एक प्रति (ने तं १६२) धीर है ।

५१२६ प्रति सं ३ । वष त ७ । ने काल ५ । ने बं १६४ । अ मन्वार ।

५१२७ लघुअभिषेकविधान । पत्र स० ३ । भा० १२३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

भगवान् के अभिषेक की पूजा व विधान । २० काल × । ले० काल स० १६६६ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वै० स० १७७ । ज भण्डार ।

५१२८. लघुकल्याण । पत्र स० ८ । भा० १२×६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक

विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६३७ । क भण्डार ।

५१२९ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वै० स० १६२९ । ट भण्डार ।

५१३० लघुअनन्तव्रतपूजा । पत्र स० ३ । भा० १२×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८३९ भाद्रपद सुदी १२ । पूर्ण । वै० स० १८५७ । ट भण्डार ।

५१३१ लघुशाक्तिकपूजाविधान । पत्र स० १५ । भा० १०३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६०६ भाद्रपद सुदी ८ । पूर्ण । वै० स० ७३ । अ भण्डार ।

५१३२ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८६० । अपूर्ण । वै० स० ८८३ । अ भण्डार ।

५१३३ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल स० १६७१ । वै० स० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—राजूलाल भौसा ने जयपुर में प्रतिर्लिपि की थी ।

५१३४. प्रति स० ४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८८६ । वै० स० ११६ । छ भण्डार ।

५१३५ प्रति स० ५ । पत्र स० १४ । ले० काल × । वै० स० १४२ । ज भण्डार ।

५१३६ लघुश्रेयविधि—अभयनन्दि । पत्र स० ६ । भा० १०३×७ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

विधि विधान । २० काल × । ले० काल स० १६०६ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वै० स० १५८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयविधान भी है ।

५१३७. लघुस्नपनटीका—प० भावशर्मा । पत्र स० २२ । भा० १२×१५ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-अभिषेक विधि । २० काल स० १५६० । ले० काल स० १८१५ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वै० स० २३२ । अ भण्डार ।

५१३८ लघुस्नपन । पत्र स० ५ । भा० ८×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७३ । ग भण्डार ।

५१३९ लघुविधानपूजा—हर्षकीर्ति । पत्र स० २ । भा० ११३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २२०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० स० १६४६) और है ।

२१४० प्रति स २। पत्र स १। नि काल ×। नि स १२४। अ नम्बार।

२१४१ प्रति स ३। पत्र स १। नि काल। नि स ७७। अ नम्बार।

२१४२ कृत्विविधानपूजा—। पत्र स २। या ११×२ दण। यत्ना—हस्तुत। विपन पूजा।

२ काल ×। नि काल ×। पुरी। नि स ४०२। अ नम्बार।

विशेष—इसी नम्बार के १ प्रतिपद्य (नि स ४२४ २ २) दीर है।

२१४३ प्रति स २। पत्र स १२। नि काल ×। नि स १९५। अ नम्बार।

२१४४ प्रति स ३। पत्र स १। नि काल ×। नि स ७। अ नम्बार।

२१४५ प्रति स ४। पत्र स १। नि काल स १२२। नि स १२३। अ नम्बार।

२१४६ प्रति स ५। पत्र स २। नि काल ×। नि स ११५। अ नम्बार।

विशेष—इसी नम्बार के २ प्रतिपद्य (नि स ११२, ११) दीर है।

२१४७ प्रति स ६। पत्र स ७। नि काल ×। नि स ११७। अ नम्बार।

२१४८ प्रति स ७। पत्र स ८। नि काल स १२। यत्ना मुदी १। पुरी। नि स ११७। अ नम्बार।

विशेष—इसी नम्बार के एक प्रति (नि स ११७) दीर है।

२१४९ प्रति स ८। पत्र स १४। नि काल स १२१२। नि स ११४। अ नम्बार।

२१५० प्रति स ९। पत्र स ७। नि काल स १७। यत्ना मुदी १। नि स ११। अ नम्बार।

विशेष—मंडल का विषय भी दिया हुआ है।

२१५१ कृत्विविधानप्रत्यक्षपूजा—। पत्र स २। या ११×२ दण। यत्ना—हस्तुत।

विपन-पूजा। २ काल ×। नि काल स यत्ना मुदी १। पुरी। नि स ७४। अ नम्बार।

विशेष—मन्त्रालय कालीबाल के प्रतिनिधि करके बीमारियों के लक्षण में पढ़ाई।

२१५२ प्रति स ३। पत्र स १। नि काल ×। नि स १०६। अ नम्बार।

२१५३ कृत्विविधानपूजा—ज्ञानपत्र। पत्र स २१। या ११×२ दण। यत्ना—हस्तुत। विपन-पूजा। २ काल स १२३३। नि काल स १२३३। पुरी। नि स ७४४। अ नम्बार।

विशेष—इसी नम्बार के २ प्रतिपद्य (नि स ७४३ ७४४/१) दीर है।

२१५४ कृत्विविधानपूजा—। पत्र स १२। या ११×२१ दण। यत्ना हस्तुत। विपन-पूजा। २ काल ×। नि काल ×। पुरी। नि स १७। अ नम्बार।

५१५० लब्धिविधानउद्यापनपूजा " । पत्र स० ८ । मा० ११३×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण । वे० स० ६६२ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ६६१) भी है ।

५१५६ प्रति स० २ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६२६ । वे० स० २२७ । ज मण्डार ।

५१५७ वाम्नुपूजा । पत्र स० ५ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—गृह प्रवेश पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२४ । अ मण्डार ।

५१५८ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल स० १६३१ वैशाख सुदी ८ । वे० स० ११६ । छ मण्डार ।

विशेष—उद्यन्नाल पाठ्या ने प्रतिलिपि की थी ।

५१५९ प्रातः स० ३ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६१६ वैशाख सुदी ८ । वे० स० २० । ज मण्डार ।

५१६० विद्यमानश्रीसतीर्थद्वारपूजा—नरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० २ । मा० १०×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८१० । पूर्ण । वे० स० ६७२ । अ मण्डार ।

५१६१ विद्यमानश्रीसतीर्थद्वारपूजा—जौहरीलाल बिलाला । पत्र स० ४२ । मा० १२×७३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १६४६ सावन सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७३६ । अ मण्डार ।

५१६२ प्रति स० २ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ६७५ । छ मण्डार ।

५१६३ प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ सुदी २ । वे० स० ६७८ । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ६७९) भी है ।

५१६४ प्रति स० ४ । पत्र स० ४३ । ले० काल × । वे० स० २०६ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति भी है ।

५१६५ विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६ । मा० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान एवं पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७७ । अ मण्डार ।

विशेष—कुछ प्रष्ट पामी में भी गये हैं ।

५१६६ प्रति स० २ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर में लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२१६० विद्यावृद्धिपूजा—पत्र सं १२। या १९×७ इंच। जाया—हस्तुत। विभव—
 नुवा। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं ७४६। का मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (मे सं १६९) थीर है।

२१६१ प्रति सं २। पत्र सं १। मे काल ×। मे सं १६५। का मन्थार।

विशेष—आदिवाक भी विद्या है।

२१६२ विद्यावृद्धि—सोमसेन। पत्र सं २३। या १९×७ इंच। जाया—हस्तुत। विभव भी
 विवह विधि। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १६२। का मन्थार।

२१६३ विद्यावृद्धि—पत्र सं ५। या २०×३ इंच। जाया—हस्तुत। विभव—वीर विवह
 विधि। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं ११६६। का मन्थार।

२१६४ प्रति सं ३। पत्र सं ४। मे काल ×। मे सं १७४। का मन्थार।

२१६५ प्रति सं ३। पत्र सं ३। मे काल ×। मे सं १७४। का मन्थार।

२१६६ प्रति सं ४। पत्र सं ८। मे काल सं १७६५ ज्येष्ठ सुदी १९। मे सं १२९। का मन्थार।

२१६७ प्रति सं ५। पत्र सं १। मे काल ×। मे सं १७६। का मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (मे सं १७६) थीर है।

२१७२ विष्णुकुमार मुनिपूजा—वायुकांड। पत्र सं ५। या ११×७ इंच। जाया—हिन्दी।
 विभव—नुवा। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं ७४२। का मन्थार।

२१७३ विहार मन्थार—पत्र सं ७। या ५×१३ इंच। जाया—हस्तुत। विभव विमान।
 र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १७७३। का मन्थार।

२१७४ अरविर्जय—आश्वय। पत्र सं ३४। या १३×६ इंच। जाया—हस्तुत। विभव—विधि
 विमान। र काल सं १६९९। मे काल सं १६४६। पूर्ण। मे सं १३। का मन्थार।

विशेष—आश्विन में एक ही वज्र विह्वल में इस मन्त्र की रचना की थी। धर्मदेव की प्रतिनिधि हुई।

२१७५ अरविर्जय—पत्र सं १। या १३×६ इंच। जाया—हिन्दी। विभव—कटी के नाम।
 र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १७७। का मन्थार।

विशेष—इसके प्रतिनिधि १ वरी वर जाया, जाया तथा अरवि के विभव हैं। कुल ६ विभव हैं।

२१७६ अरविर्जय—पत्र सं १६५। या १३×१३ इंच। जाया—हस्तुत। विभव—
 नुवा। र काल ×। मे काल ×। पूर्ण। मे सं १२। का मन्थार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
वारहमी चौतीसव्रतपूजा	श्रीगुरुपण	संस्कृत	से० काल स० १८००
विशेष—देवगिरि में पार्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई ।			
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदास	"	पौष बुदी ४
रत्नत्रयपूजा	—	"	ते० काल १८०० पौष बुदी ६
वीसतीर्थशुद्धरपूजा	—	"	" " " पौष बुदी ६
श्रुतपूजा	ज्ञानगुरुपण	हिन्दी	
गुरुपूजा	जिनदास	संस्कृत	
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	"	
पोडगकारण	—	"	
दशतक्षणपूजाजयमाल	रङ्ग	"	
तपुस्त्रयसूक्तोत्र	—	अपभ्रंश	
नन्दीश्वर उद्यापन	—	संस्कृत	
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	"	से० काल स० १८००
ऋषिमण्डलपूजाविधान	गुणनन्दि	"	
सत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द	"	
धर्मचक्रपूजा	—	संस्कृत	
जिनगुणसप्तपत्तिपूजा	केशवमेव	"	
रत्नत्रयपूजा जयमाल	ऋषभदास	"	२० काल १६६५
नवकार पैंतीसीपूजा	—	अपभ्रंश	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द	संस्कृत	
रविवारपूजा	—	"	
पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	"	

२१८ अतिविशाल—पत्र लं ४। या ११५×४५ द.व। भावा-हिन्दी। विषय-विधि विधान। र. काल ×। से काल ×। पूर्ण। के लं १७६। द.व. मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में ३ प्रतिष्ठा (के लं ४६४ २६२, २ ३७) भी रहें हैं।

२१८१ प्रति स २। पत्र लं १। से काल ×। के लं १५। द.व. मन्थार।

२१८२ प्रति स ३। पत्र लं १५। से काल ×। के लं १७६। द.व. मन्थार।

२१८३ प्रति स ४। पत्र लं १। से काल ×। के लं १७। द.व. मन्थार।

विशेष—भीमेश तीर्थपुरी के पंचरात्रमण्डल की विधियां भी वही हुई हैं।

२१८४ अतिविशालरासा—हौसठरामसही। पत्र लं ११। या ११×४६ द.व। भावा-हिन्दी। विषय-विधान। र. काल ल १७१७ पाखोज कुटी १। से काल लं १ १६३ मन्थार कुटी ६। पूर्ण। के लं ११६। द.व. मन्थार।

२१८५ अतिविशाल—पत्र लं ४। या १२×४६ द.व। भावा-हिन्दी। विषय-वत विधि। र. काल ×। से काल ×। पूर्ण। के लं १७११ द.व. मन्थार।

विशेष—इसी मन्थार में एक प्रति (के लं १२४६) भी रहें हैं।

२१८६ प्रति स २। पत्र लं १ के ११। से काल ×। पूर्ण। के लं १ ११। द.व. मन्थार।

२१८७ अतिविशाल—पत्र लं ११। या १ ×४६ द.व। भावा-हिन्दी। विषय-वत विधि। र. काल ×। से काल ×। पूर्ण। के लं १ १६। द.व. मन्थार।

२१८८ अतिशाल—भीम शिवकाष्ठि। पत्र लं १। या ११×४२ द.व। भावा-हिन्दी। विषय-वत विधान। र. काल ×। से काल ×। पूर्ण। के लं १७१४। द.व. मन्थार।

२१८९ अतिशालमण्डल—पत्र लं ४६६। या ११×४६ द.व। भावा-हिन्दी। विषय-वत विधान। र. काल ×। से काल लं १ १७। पूर्ण। के लं ४६२। द.व. मन्थार।

विशेष—विष्णु पादों की उपाधि है—

नाम	कला	भावा
स्वयंभूतविधान	कुलमण्ड	हिन्दी
अतिशालविधान	—	"
भीमेशतीर्थमण्ड	—	"
भीमेशतीर्थमण्ड	—	"

पञ्चमेरुजयमाला	भूषरदास	हिन्दी
ऋषिमठलपूजा	गुणानन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	"
पञ्चमेरुपूजा	—	"
भनन्तव्रतपूजा	—	"
मुक्तावलिपूजा	—	"
शास्त्रपूजा	—	"
षोडशकारण व्रतोद्यापन	वैद्यवर्सेन	"
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	"
दशलक्षणपूजा	—	"
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा [बृहद्]	—	"
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन [बृहद्]	केशवसेन	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
भनन्तव्रतोद्यापन	गुणचन्द्रसूरि	"
द्वादशमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
अष्टाङ्गिकाव्रतोद्यापन	—	"
भक्तयनिधिपूजा	—	"
सौख्यव्रतोद्यापन	—	"
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	"
एगोकारपैत्तीसीपूजा	—	"
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	"
जिर्नगुणसप्तपूजा	—	"
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	"

वैष्णवविष्णुपूजा	—	वैष्णव
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	भी नृप	११
वैष्णवविष्णुपूजा	वैष्णव	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११

२१३. प्रति सं० २। वन ११९। वै. काल X। वै. सं. १८४। वन ११९।

विष्णु पूजाओं का संक्षेप है—

विष्णु	वैष्णु	वैष्णु
वैष्णवविष्णुपूजा	—	वैष्णव
वैष्णवविष्णुपूजा	—	वैष्णु
वैष्णवविष्णुपूजा	वैष्णव	वैष्णु
वैष्णवविष्णुपूजा	वैष्णव	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	वैष्णव	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	वैष्णव	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११
वैष्णवविष्णुपूजा	—	११

२१४. वैष्णवविष्णुपूजा—। वन सं. १। वन १८४। वन १८४। वैष्णव-वैष्णव।

१. वन X। वै. काल X। वै. सं. १८४। वन १८४।

५१६२ वृहद्गुरावलीशास्तिमहलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा) — स्वरूपचद । पत्र स० ५६ । आ० ११×५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७० । क मण्डार ।

५१६३. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ६४ । घ मण्डार ।

५१६४. प्रति स० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६५० । च मण्डार ।

५१६५ प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६८६ । छ मण्डार ।

५१६६ पणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । आ० १०^३×५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१ । अ मण्डार ।

विशेष—मन्त्रिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं ।

श्रीमच्छ्रीकाष्ठासधे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।
गच्छे नदोतटास्ये यगदितिह मुनेषु छकर्मामुनीन्द्र ॥
ख्यातोसोमिश्रसेनोविमलतरमतिर्येनयज्ञ चकार्षीत् ।
सोममुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालानां शिवाय ॥

चौबीस तीर्थङ्करों के चौबीस क्षेत्रपालों की पूजा है ।

५१६७ प्रति स० २ । पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६२ । ख मण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल । पत्र स० १८ । आ० ११^३×५^३ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८६४ भादवा सुदी १३ । वे० स० ३२९ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्णायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी मण्डार में ५ प्रतिया (वे० स० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६९ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल स० १७६० आसोज सुदी १४ । वे० स० ३०३ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२०० प्रति स० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल × । वे० स० ७२० । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति (वे० स० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल × । वे० स० १६८ । ख मण्डार ।

५२०२. प्रति स० ५ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६०२ मगसिर सुदी १० । वे० स० ३६० । च मण्डार ।
विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ३५६) और है ।

४०७३ प्रति सं० ६। वष सं १२। मे वाम ×। के सं १०। अथ मन्त्रः।

मन्त्रः। ४२४ प्रति सं ७। वष सं १३। मे वाम सं १०२ मन्त्रिरुचि ११। के सं १०। अथ

४२५ वाक्याकारसूत्रमाला—४२५। वष सं ११। मा ११×२४ द्रव। माता-मन्त्रः। विषय-
पूजा। रं वाम ×। मे वाम ×। पूर्ण। के सं ०७०। अथ मन्त्रः।

विषय—संस्तुत टीका सहित है। इसी मन्त्र में एक प्रति (के सं ७६) भी है।

४२०६ वाक्याकारसूत्रमाला—४२०६। वष सं १३। मा १३×२४ द्रव। माता-मन्त्रः। विषय-
पूजा। रं वाम ×। मे वाम ×। पूर्ण। के सं १२६। अथ मन्त्रः।

४२०७ प्रति सं २। वष सं १४। मे वाम ×। के सं १३६। अथ मन्त्रः।

विषय—संस्तुत में लिखित विधा हुआ है। इसी मन्त्र में एक प्रति (के सं १३६) भी है।

४२०८ वाक्याकारसूत्रमाला—४२०८। वष सं १३। मा १३×२४ द्रव। माता-संस्तुत। विषय-
पूजा। रं वाम ×। मे वाम सं १३३ माता मन्त्र १३। पूर्ण। के सं १३३। अथ मन्त्रः।

विषय—गीतों के मन्त्र के वं सहाय के वं वामार्थ प्रतिनिधि हुई थी।

४२०९ वाक्याकारसूत्रमाला—४२०९। वष सं १३। मा १३×२४ द्रव। माता-संस्तुत संस्तुत।
विषय-पूजा। रं वाम ×। मे वाम ×। पूर्ण। के सं १३२। अथ मन्त्रः।

४२१० प्रति सं २। वष सं १। मे वाम ×। के सं ०७०। अथ मन्त्रः।

४२११ वाक्याकारसूत्रमाला—४२११। वष सं १२। मा १२×२४ द्रव। माता-हिन्दी मन्त्र।
विषय-पूजा। रं वाम ×। मे वाम सं १३३ माता मन्त्र १३। पूर्ण। के सं १३३। अथ मन्त्रः।

४२१२ वाक्याकारसूत्रमाला—४२१२। वष सं १३। मा १३×२४ द्रव। माता-
मन्त्रः। विषय-पूजा। रं वाम ×। मे वाम ×। पूर्ण। के सं १३३। अथ मन्त्रः।

४२१३ वाक्याकारसूत्रमाला—४२१३। वष सं १३। मा १३×२४ द्रव। माता-संस्तुत।
विषय-पूजा। रं वाम सं १३३ माता मन्त्र १३। मे वाम सं १३३ माता मन्त्र १३। पूर्ण। के सं १३३।
अथ मन्त्रः।

विषय—इसी मन्त्र में एक प्रति (के सं २) भी है।

४२१४ प्रति सं ३। वष सं ११। मे वाम ×। के सं ३। अथ मन्त्रः।

४२१५ वाक्याकारसूत्रमाला—४२१५। वष सं १३। मा १३×२४ द्रव। माता-संस्तुत। विषय-
पूजा। रं वाम ×। मे वाम ×। पूर्ण। के सं १३। अथ मन्त्रः।

विषय—इसी मन्त्र में एक प्रति (के सं १३३) भी है।

५०१६ प्रति स० २ । पत्र स० १३ । ले० काल × । मूर्त्तयः । वे० स० ७५१ । क मण्डार ।

५०१७ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ मे २२ । ले० काल × । मूर्त्तयः । वे० स० ४२४ । च मण्डार ।

विशेष—प्राचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजमावाद मे प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५०१८ प्रति स० ४ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६३ सावण सुदी ११ । वे० स० ४२५ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति (वे० स० ४२६) भी है ।

५०१९ प्रति स० ५ । पत्र स० १३ । ले० काल × । वे० स० ७२ । क मण्डार ।

५०२० पोद्दशकारणपूजा (वृहद्) । पत्र स० २६ । भा० ११३ × ५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७१८ । क मण्डार ।

५०२१ प्रति स० ७ । पत्र स० २ से २२ । ले० काल × । मूर्त्तयः । वे० स० ४२६ । क मण्डार ।

५०२२ पोद्दशकारण व्रतोद्यापनपूजा—राजकीर्ति । पत्र स० ३७ । भा० १२ × ५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल स० १७६६ मासोज सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५०७ । क मण्डार ।

५०२३ पोद्दशकारणव्रतोद्यापनपूजा—सुमतिसागर । पत्र स० २१ । भा० १२ × ५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५१४ । क मण्डार ।

५०२४ शत्रुञ्जयगिरिपूजा—भट्टारक विश्वभूषण । पत्र स० ६ । भा० ११३ × ५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०६७ । क मण्डार ।

५०२५ शरदुत्सवदीपिका (मङ्गल विधान पूजा)—सिंहनन्दि । पत्र स० ७ । भा० ६ × ४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४६४ । क मण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्रीवीर शिरसा नत्वा वीरनदिमहागुरु ।

सिंहनन्दिहं वक्ष्ये शरदुत्सवदीपिका ॥१॥

अथात्र भारते क्षेत्रे जन्मदीपमनोहरे ।

रम्पदेशेस्ति विख्याता मियिलानामतः पुरी ॥२॥

अन्तिमपाठ—

एव महप्रभाष च दृष्ट्वा लग्नास्तपा जना ।

कतुं प्रभावनां च ततोऽत्रैव प्रवर्त्तते ॥२॥

तदाप्रश्रुत्यारम्येदं प्रसिद्धं जगतीतले ।

दृष्ट्वा दृष्ट्वा गृहीतं च वेदगुणादिकर्तव्यं ॥२॥

५२३२ शान्तिपाठ (बृहद्)

। पत्र स० ४० । आ० १०×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि

विधान । २० काल × । ले० काल स० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वै० स० १६५ । ज मण्डार ।

विशेष—प० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३३ शान्तिचक्रपूजा

। पत्र स० ४ । आ० १०३×५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल स० १७६७ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वै० स० १३६ । ज मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वै० स० १७६) और है ।

५०३४ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वै० स० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वै० स० १२२) और है ।

५०३५ शान्तिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र स० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७०५ । छ मण्डार ।

५०३६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वै० स० ६८२ । च मण्डार ।

५२३७ शांतिमङ्गलपूजा । पत्र स० ३८ । आ० १०३×५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७०६ । छ मण्डार ।

५२३८ शांतिपाठ

। पत्र स० १ । आ० १०३×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा के अन्त

में पढ़ा जाने वाला पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १२२७ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतिया (वै० स० १२३८, १३१८, १३२४) और हैं ।

५२३९. शांतिरत्नसूची

। पत्र स० ३ । आ० ८३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १६६४ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ में उद्धृत है ।

५२४० शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र स० ५ । आ० ११३×६३ इ च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७४७ । अ मण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ में से सग्रहीत है ।

५०४१ शास्त्रगुरुजयमाल

। पत्र स० २ । आ० ११×५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वै० स० ३४२ । च मण्डार ।

५२४२ शास्त्रजयमाल—ज्ञानभूषण । पत्र स० ३ । आ० १३३×४ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६८८ । क मण्डार ।

२२४३ श्वशुरप्रवचन शारङ्ग कामे की विधि-----। पत्र सं १। या १३×४३ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-विधान। र काल ×। नि काल ×। पूर्ण। वै सं १५५। छ मण्डार।

२२४४ शासनवैद्यार्थनविधाय-----। पत्र सं २१। या ११×२३ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-पूजा विधि विधान। र काल ×। नि काल ×। पूर्ण। वै सं ७०७। छ मण्डार।

२२४५ शिवरविज्ञानपूजा-----। पत्र सं ७३। या ११×२ इंच। धाता-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×। नि काल ×। पूर्ण। वै सं १२। छ मण्डार।

२२४६ शीतलपूजा-वर्मामूचय। पत्र सं २। या १३×२ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। नि काल सं १६२१। पूर्ण। वै सं १६३। छ मण्डार।

२२४७ शक्ति सं० २। पत्र सं १। नि काल सं १६२१ प्र माला नुरी १४। वै सं १२२। छ मण्डार।

२२४८ शुक्रपञ्चमीशिवपूजा-----। पत्र सं ७। या १२×२३ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल सं १। नि काल ×। पूर्ण। वै सं १४४। छ मण्डार।

विषय-रत्ना सं किन्तु मण्डार है- मन्त्रे रत्न मन्त्र वसु मन्त्र।

२२४९ शुक्रपञ्चमीशिवोपायपूजा-----। पत्र सं ३। या ११×२ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। नि काल ×। पूर्ण। वै सं ३२७। छ मण्डार।

२२५० सुतपूजा-----। पत्र सं ३। या ११×२ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। नि काल सं १९१ माला नुरी १२। पूर्ण। वै सं ७२९। छ मण्डार।

२२५१ प्रति सं २। पत्र सं २। नि काल ×। वै सं ६५७। छ मण्डार।

२२५२ प्रति सं ३। पत्र सं १६। नि काल ×। वै सं ११७। छ मण्डार।

२२५३ सुतपूजा-----। पत्र सं १। या ११×३ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-पूजा। काल ×। नि काल ×। पूर्ण। वै सं १९९। छ मण्डार।

२२५४ सुतपूजाप्रतोपायपूजा-----। पत्र सं ११। या ११×२३ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। नि काल ×। पूर्ण। वै सं ७२४। छ मण्डार।

२२५५ सुतपूजाप्रतोपायपूजा-----। पत्र सं १। या १३×२ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। नि काल सं १६२१। पूर्ण। वै सं ३। छ मण्डार।

२२५६ सुतपूजा-----। पत्र सं ४। या १३×२ इंच। धाता-संस्कृत। विषय-पूजा। र काल ×। नि काल सं ७६३ नुरी ३। पूर्ण। वै सं १०५। छ मण्डार।

५२५७ श्रुतस्कधपूजा—श्रुतसागर । पत्र स० २ से १३ । आ० ११३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०५ । क मण्डार ।

५२५८ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० ३६६ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ३५०) भी है ।

५२५९ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १८४ । ज मण्डार ।

५२६० श्रुतस्कधपूजा (ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा)—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ५ । आ० १२×५ इ च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल स० १८४७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२२ । अ मण्डार ।

विशेष—इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था में किया था ।

५२६१ श्रुतस्कधपूजा । पत्र स० ५ । आ० ८३×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०२ । अ मण्डार ।

५२६२ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ले० काल × । वे० स० २६२ । ख मण्डार ।

५२६३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० स० १८८ । ज मण्डार ।

५२६४ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० स० ४६० । ज मण्डार ।

५२६५ श्रुतस्कधपूजाकथा । पत्र स० २८ । आ० १२३×७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा तथा कथा । २० काल × । ले० काल वीर स० २४३४ । पूर्ण । वे० स० ७२८ । क मण्डार ।

विशेष—बावली (भागदा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर स० २४५७ को पद्मलालजी
गांधी ने तुकीगञ्ज इन्दौर में लिखवाया । जीहरीलाल फिरोजपुर जि० मुडगावां ।

वनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है ।

५२६६ सकलीकरणविधि । पत्र स० ३ । आ० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतियां (वे० स० ८०, ४७१, ६६१) भी हैं ।

५२६७ प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० ७२३ । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ७२४) भी है ।

५२६८ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ३६८ । ज मण्डार ।

विशेष—भाचार्य हर्षकीर्ति के वाचको के लिए प्रतिलिपि हुई थी ।

४२६६. सकलीकरण—। पत्र नं २१। या ११×२२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि

विधान। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै व १७१। अ नम्बर।

४२७. प्रति सु ३। पत्र नं ३। नै काल ×। नै व ७२७। अ नम्बर।

४२७१. प्रति स २। पत्र नं ३। नै काल ×। नै व १२२। अ नम्बर।

विशेष—इसो नम्बर के एक प्रति (नै नं १११) धीर है।

४२७२. प्रति स ४। पत्र नं ७। नै काल ×। नै व ११४। अ नम्बर।

४२७३. प्रति स ५। पत्र नं ३। नै काल ×। नै व ४२४। अ नम्बर।

विशेष—इसका पर संस्कृत टिप्पण किया हुआ है। इसो नम्बर के एक प्रति (नै व ४४१) धीर है।

४२७४. सारासिद्धि—। पत्र नं १। या १ × ४२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय

विधान। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै व १२११। अ नम्बर।

विशेष—इसो नम्बर के एक प्रति (नै नं १२११) धीर है।

४२७५. सम्पत्ति—। पत्र नं २ के १६। या ७१×२२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधान।

र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै व १२१६। अ नम्बर।

४२७६. सम्पत्तिपूजा—। पत्र नं ३। या १ २ × २ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय

पूजा। र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै व १२१। अ नम्बर।

४२७७. प्रति स २। पत्र नं १२। नै काल ×। नै व ७६१। अ नम्बर।

४२७८. सम्पत्तिपूजा—विद्यवाच। पत्र नं ७। या २ × ४२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै व २२२। अ नम्बर।

४२७९. सम्पत्तिपूजा—आनीसंज्ञ। पत्र नं ९। या ११×२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा।

र काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै व १२७। अ नम्बर।

४२८. प्रति स २। पत्र नं १। नै काल नं १२। भाषा—संस्कृत। नै व ४१। अ

नम्बर।

४२८१. प्रति स ३। पत्र नं ७। नै काल ×। नै व १११। अ नम्बर।

विशेष—अष्टादश भुजकीर्ति द्वारा रचित श्रीवैष्णव के महावीर की संस्कृत पूजा श्री है।

४२८२. सम्पत्तिपूजा—विश्वमूर्धन्य। पत्र नं १६। या १ २ × २ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

पूजा। र काल ×। नै काल नं १२१७। पूर्ण। नै व ३१। अ नम्बर।

५२८३. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६३० ज्येष्ठ सुदी ८ । वै० स० १२७ । छ
मण्डार ।

५२८४ समर्पिपूजा । पत्र स० १३ । आ० ११×५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १०६१ । अ मण्डार ।

५२८५ समवशरणपूजा—कलितकीर्त्ति । पत्र स० ४७ । आ० १०३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८७७ मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वै० स० ४५१ । अ मण्डार ।

विशेष—खुसालजी ने जयपुर नगर में महात्मा शम्भुराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

५२८६ समवशरणपूजा (वृद्ध)—रूपचन्द । पत्र स० ६४ । आ० ६३×५ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय पूजा । २० काल स० १५६२ । ले० काल स० १८७६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वै० स० ४५५ । अ मण्डार ।

विशेष—रत्ननाकाल निम्न प्रकार है— अतीतेहगनन्दभद्रासंस्कृत परिमिते कृष्णपक्षे च भासे ॥

५२८७ प्रति स० २ । पत्र स० ६२ । ले० काल स० १६३७ चैत्र बुदी १५ । वै० स० २०६ । ख

मण्डार ।

विशेष—प० पद्मालालजी जोबनेर वालो ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८८ प्रति स० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल स० १६४० । वै० स० १३३ । छ मण्डार ।

५२८९ समवशरणपूजा—सोमकीर्त्ति । पत्र स० २८ । आ० १२×५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८०७ बैशाख सुदी १ । वै० स० ३८४ । अ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम श्लोक—

व्याजस्तुत्यार्चा शुण्वीतराग ज्ञानार्कसाभ्राज्यविकासमान ।

श्रीसोमकीर्त्तिविकासमान रत्नेपरत्नाकरचार्ककीर्त्ति ॥

जयपुर में सदानन्द सौगाणो के पठनार्थ छाजूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

इसी मण्डार में एक प्रति (वै० स० ४०५) और है ।

५२९० समवशरणपूजा । पत्र स० ७ । आ० ११×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७७४ । छ मण्डार ।

५२९१ सम्मेशिखरपूजा—गङ्गादास । पत्र स० १० । आ० ११३×७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल स० १८८६ भाष सुदी ६ । पूर्ण । वै० स० २०११ । अ मण्डार ।

विशेष—गङ्गादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे । इसी मण्डार में एक प्रति (वै० स० ५०६) और है ।

५२९२ प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल स० १६२१ मगसिर बुदी ११ । वै० स० २१० । ख

मण्डार ।

४२६६ सकृन्नीकरणम्—। पत्र न २१। पा ११५२ द. ५। जाला—संस्कृत। विषय—विधि

विधान : १ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै त २७१। अ नम्बार।

४२७ प्रति स २। पत्र न ३। नै काल ×। नै त ७२७। अ नम्बार।

४२७१ प्रति स ३। पत्र न ३। नै काल ×। नै त १२२। अ नम्बार।

विशेष—इसी नम्बार में एक प्रति (नै त ११२) भी है।

४२७२ प्रति स ४। पत्र न ७। नै काल ×। नै त १२४। अ नम्बार।

४२७३ प्रति स ५। पत्र न ३। नै काल ×। नै त ४२४। अ नम्बार।

विशेष—इतिहास पर संस्कृत टिप्पण दिया हुआ है। इसी नम्बार में एक प्रति (नै त ४४१) भी है।

४२७४ सप्ताहविधि—। पत्र न १। पा १५२२ द. ५। जाला—संस्कृत। विषय—विधान

विधान : १ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै त १२१६। अ नम्बार।

विशेष—इसी नम्बार में एक प्रति (नै त १२११) भी है।

४२७५ सप्तपद्वी—। पत्र न २। नै १६। पा ७२५२ द. ५। जाला—संस्कृत। विषय—विधान।

१ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै त १२१६। अ नम्बार।

४२७६ सप्तपद्वीविधानपूजा—। पत्र न ३। पा १२५२ द. ५। जाला—संस्कृत। विषय—

पूजा। १ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै त २६६। अ नम्बार।

४२७७ प्रति स ३। पत्र न १२। नै काल ×। नै त ७६९। अ नम्बार।

४ ७८ सप्तपिपूजा—विशेषाद्य। पत्र न ७। पा ५४२ द. ५। जाला—संस्कृत। विषय—पूजा।

१ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै त २२२। अ नम्बार।

४२७९ सप्तपिपूजा—सकृन्नीकरण। पत्र न ३। पा ११५२ द. ५। जाला—संस्कृत। विषय—पूजा।

१ काल ×। नै काल ×। पूर्ण। नै त १२७। अ नम्बार।

४२८० प्रति स ३। पत्र न ५। नै काल त १२ नवमिक सुदी ९। नै त ४१। अ नम्बार।

४२८१ प्रति स ३। पत्र न ७। नै काल ×। नै त १२२। अ नम्बार।

विशेष—भारतक मुद्राप्रतीति द्वारा चित्त नालपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है।

४२८२ सप्तपिपूजा—विशेषाद्य। पत्र न १६। पा १२५२ द. ५। जाला—संस्कृत। विषय—

पूजा। १ काल ×। नै काल त १२१। पूर्ण। नै त ३१। अ नम्बार।

५३०६ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल X । वे० स० २६१ । अ भण्डार ।

५३०७ सर्वतोभद्रपूजा । पत्र स० ५ । आ० ६X३३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३६३ । अ भण्डार ।

५३०८ सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र स० १ । आ० ६X६ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १३३४ । अ भण्डार ।

५३०९. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र स० ६ । आ० ८X४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० स० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिष्ठा (वे० स० ६८६, १३११, ११०८, १०१०) भी हैं ।

५३१० सरस्वतीपूजा । पत्र स० ३ । आ० ११X५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ८०३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ८०२) भी है ।

५३११ सरस्वतीपूजा—रुघी पञ्जालाल । पत्र स० १७ । आ० १२X८ इ च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल स० १६२१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे इसी वेष्टन मे १ प्रति भी है ।

५३१२ सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द्र बक्शी । पत्र स० ८ मे १७ । आ० ११X५ इ च । भाषा—
हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वे० स० ७७१ । अ
भण्डार ।

५३१३ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल X । वे० स० ८०४ । अ भण्डार ।

५३१४ सरस्वतीपूजा—प० धुधजनजी । पत्र स० ५ । आ० ६X५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १००६ । अ भण्डार ।

५३१५ सरस्वतीपूजा । पत्र स० २१ । आ० ११X५ इ च । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ७०६ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६ सहस्रकूटमिनालयपूजा । पत्र स० १११ । आ० ११३X४३ इ च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वे० स० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—प० पञ्जालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२२६३ प्रति छ ३। पत्र सं ७। ले काल सं १८६३ मेषाब्द सुदी ३। वै सं ४१९। अ
 नम्बर।

२२६४ सम्मोदशिक्षणपूजा—प कबाहरकाछ। पत्र सं १९। वा १९×४ दण। माता-हिन्दी।
 विषय-पूजा। र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं ७४८। अ नम्बर।

२२६५ प्रति छ २। पत्र सं १९। र काल सं १६१। ले काल सं १६१२। वै सं ११९।
 अ नम्बर।

२२६६ प्रति सं ३। पत्र सं १५। ले काल सं १६२२ माघाब्द सुदी १। वै सं १४। अ
 नम्बर।

२२६७ सम्मोदशिक्षणपूजा—रासचक्र। पत्र सं ८। वा ११३×४ दण। माता-हिन्दी। विषय-
 पूजा। र काल ×। ले काल सं १६२२ माघाब्द सुदी ३। पूर्ण। वै सं ११९। अ नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (वै सं ११९३) भी है।

२२६८ प्रति सं ३। पत्र सं ७। ले काल सं १६३ माघ सुदी १४। वै सं ७८१। अ
 नम्बर।

२२६९ प्रति छ ३। पत्र सं १९। ले काल ×। वै सं ७६१। अ नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (वै सं ७६४) भी है।

२३ प्रति छ ४। पत्र सं ७। ले काल ×। वै सं २९९। अ नम्बर।

२३१ सम्मोदशिक्षणपूजा—आगचक्र। पत्र सं १। वा १९×४ दण। माता-हिन्दी।
 विषय-पूजा। र काल सं १६२६। ले काल सं १६३। पूर्ण। वै सं ७९७। अ नम्बर।

विशेष—पूजा के पत्रात् पत्र भी मिले हुए हैं।

२३२ प्रति छ २। पत्र सं १। ले काल ×। वै सं १४७। अ नम्बर।

विशेष—छिन्नलेखी की स्तुति भी है।

२३३ सम्मोदशिक्षणपूजा—म सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं २१। वा १९×४ दण। माता-हिन्दी।
 विषय-पूजा। र काल ×। ले काल सं १६१९। पूर्ण। वै सं २६१। अ नम्बर।

विशेष—१ से पत्र के साथे मन्त्रोप पूजा भी हुई है।

२३४ सम्मोदशिक्षणपूजा—। पत्र सं ३। वा १९×४ दण। माता-हिन्दी। विषय-पूजा।
 र काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वै सं १२११। अ नम्बर।

२३५ प्रति सं ३। पत्र सं २। वा १×४ दण। माता-हिन्दी। विषय-पूजा। र काल ×।
 ले काल ×। पूर्ण। वै सं ७६१। अ नम्बर।

विशेष—इसी नम्बर में एक प्रति (वै सं ७६२) भी है।

४३०६ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० वा० १ । वे० स० १३१ । अ मण्डार ।

४३०७ सर्वतोमन्त्रपूजा । पत्र स० ४ । पा० ६४३ द व । मापा-हिंदा । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३८३ । अ मण्डार ।

४३०८ सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र स० १ । पा० ६४६ द व । मापा-हिंदा । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३३८ । अ मण्डार ।

४३०९ सरस्वतीपूजा—मानभूषण । पत्र स० ६ । पा० ८४८ द व । मापा-हिंदा । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० स० १३६७ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० स० ६८६, १३११, ११०८, १०१०) थीं ।
४३१० सरस्वतीपूजा । पत्र स० ३ । पा० ११४३ द व । मापा-हिंदा । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०३ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ८०२) थी ।
४३११ सरस्वतीपूजा—रुघी पञ्चालाल । पत्र स० १७ । पा० १२८ द व । मापा-हिंदा ।
विषय-पूजा । २० काल स० १६२१ । ले० वा० × । पूर्ण । वे० स० २०१ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में इसी वेष्टन में १ प्रति थीर है ।
४३१२ सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द वरुणी । पत्र स० ८ व १३ । पा० ११४ द व । मापा-हिंदा ।
विषय-पूजा । २० काल स० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० वा० स० १६३७ । पूर्ण । वे० स० ३३१ । अ मण्डार ।

४३१३ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० वा० × । वे० स० ८०४ । अ मण्डार ।
४३१४ सरस्वतीपूजा—प० सुधजनजी । पत्र स० ५ । पा० ६४४ द व । मापा-हिंदा । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १००६ । अ मण्डार ।

४३१५ सरस्वतीपूजा । पत्र स० २१ । पा० १८४५ द व । मापा-हिंदा । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । अ मण्डार ।
विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

४३१६ सहस्रकूटजिनालयपूजा । पत्र स० १११ । पा० ११३४३ द व । मापा-हिंदा ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वे० स० २२३ । अ मण्डार ।
विशेष—प० पञ्चालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४३१७ सङ्कल्पविधिपूजा—म० बर्गकीर्ति । पत्र सं १९ । या १२३×९ द० । माता—संतत ।

विषय—पूजा । १ कल × । नि कल सं १७६६ माता ६ सुदी ९ । पूर्ण । नि सं ३३९ । अ मन्त्र ।

विधेय—इसी मन्त्र में एक प्रति (नि सं ३३९) धीर है ।

४३१८ प्रति सं ३ । पत्र सं २ । नि कल सं १६९२ । नि व २४६ । अ मन्त्र ।

४३१९ प्रति सं ३ । पत्र सं १९२ । नि कल सं १६६ । नि सं व ६ । अ मन्त्र ।

४३२० प्रति सं ४ । पत्र सं १६ । नि कल × । नि सं १९ । अ मन्त्र ।

४३२१ प्रति सं ३ । पत्र सं १४ । नि कल × । नि सं १९ । अ मन्त्र ।

विधेय—मातासं हर्षकीर्ति के विद्याचक्र में प्रतिनिधि कराई थी ।

४३२२ सङ्कल्पविधिपूजा—पत्र सं १९ । या १ ×३ द० । माता—संतत । विषय—पूजा ।

१ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं ११७ । अ मन्त्र ।

४३२३ प्रति सं २ । पत्र सं ३० । नि कल × । पूर्ण । नि सं १४ । अ मन्त्र ।

४३२४ सङ्कल्पविधिपूजा—मर्मसूत्र । पत्र सं १६ । या १ १/२ × २ १/२ द० । माता—संतत ।

विषय पूजा । १ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं ३३ । अ मन्त्र ।

४३२५ प्रति सं २ । पत्र सं १६ के १६ । नि कल सं १६५४ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । नि सं

३५३ । अ मन्त्र ।

विधेय—इसी मन्त्र के २ पूर्ण प्रतियें (नि सं ३५४ ३५६) धीर है ।

४३२६ सङ्कल्पविधिपूजा—पत्र सं १९९ के १३ । या १२×१३ द० । माता—संतत ।

विषय—पूजा । १ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं ३५२ । अ मन्त्र ।

विधेय—इसी मन्त्र में एक प्रति (नि सं ३५७) धीर है ।

४३२७ सङ्कल्पविधिपूजा—चैतन्यसूत्र । पत्र सं २२ । या ११३×५३ द० । माता—हिमो । विषय—

पूजा । १ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं २२१ । अ मन्त्र ।

४३२८ सङ्कल्पविधिपूजा—पत्र सं १ । या ११×५ द० । माता—हिमो । विषय—पूजा ।

१ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं ७०७ । अ मन्त्र ।

४३२९ सारस्वतसङ्कल्पपूजा—पत्र सं ४ । या १ १/२×४ १/२ द० । माता—संतत । विषय—

पूजा । १ कल × । नि कल × । पूर्ण । नि सं ३७७ । अ मन्त्र ।

४३३० प्रति सं ३ । पत्र सं १ । नि कल × । नि सं १९२ । अ मन्त्र ।

५३३१ सिद्धक्षेत्रपूजा—गान्तराय । पत्र स० २ । भा० ६३×५३ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६१० । ट भण्डार ।

५३३२ सिद्धक्षेत्रपूजा (वृहद्) —स्वरूपचन्द्र । पत्र स० ५३ । भा० ११३×४ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल स० १६१६ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल स० १६४१ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ में भण्डाल विधि भी दी हुई है । रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी । इसे मुगनचन्द गगवान ने चौधरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

५३३३ सिद्धक्षेत्रपूजा । पत्र स० ६३ । भा० १३×८३ इक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वे० स० २०४ । छ भण्डार ।

५३३४ प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल × । वे० स० २६४ । ज भण्डार ।

५३३५ सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा । पत्र स० १२६ । भा० ११३×५३ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६४० भाद्रपद सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० २२० । ख भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापक्षेत्र पूजा भी है ।

५३३६ सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० भानुकीर्ति । पत्र स० १४३ । भा० १०३×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६२२ । वे० स० १७८ । ख भण्डार ।

५३३७ सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ४१ । भा० १२×८ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६७२ । पूर्ण । वे० स० ७५० । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ७५१) भी है ।

५३३८ प्रति स० ८ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । वे० स० ८४५ । छ भण्डार ।

५३३९ प्रति स० ३ । पत्र स० ८४ । ले० काल × । वे० स० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—स० १६६६ फागुण सुदी २ की पुष्पचन्द्र अजमेरा ने सशोधित की । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २१२) भी है ।

५३४० सिद्धचक्रपूजा—श्रुतसागर । पत्र स० ३० में ६० । भा० १२×६ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ८४४ । छ भण्डार ।

५३४१ सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द्र । पत्र स० ६ । भा० १२×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७६२ । क भण्डार ।

२३४२. सिद्धचक्रपूजा (बुद्ध)—। वन सं १४। वा ११×१२ दण। मत्ता-संस्तुत।

विषय-पूजा। र वन ×। मे वन ×। गुण। के सं १५०। क मत्तार।

२३४३. सिद्धचक्रपूजा—। वन सं ३। वा ११×१२ दण। मत्ता-संस्तुत। विषय-पूजा।

र वन ×। मे वन ×। गुण। के सं २२६। क मत्तार।

२३४४. प्रति सं २। वन सं ३। मे वन ×। के सं ४२। क मत्तार।

२३४५. प्रति सं ३। वन सं १०। मे वन सं १६ माण्ड कुटी १। के सं २१।

क मत्तार।

२३४६. सिद्धचक्रपूजा (बुद्ध)—संतकाज। वन सं १। वा ११×१२ दण। मत्ता-विष्टी।

विषय-पूजा। र वन ×। मे वन सं १२ १। गुण। के सं ४४६। क मत्तार।

विशेष—ईश्वरलाल बाबबाग में प्रतिष्ठित की थी।

२३४७. सिद्धचक्रपूजा—। वन सं ११९। वा १२×०२ दण। मत्ता-विष्टी। विषय-

पूजा। र वन ×। मे वन ×। गुण। के सं ४४६। क मत्तार।

२३४८. सिद्धपूजा—छत्रमूषण। वन सं ९। वा १२×४९ दण। मत्ता-संस्तुत। विषय-पूजा।

र वन ×। मे वन सं १०९। गुण। के सं २९। क मत्तार।

विशेष—घोरज्जबेव के बालमल में लेशामपुर में प्रतिष्ठित हुई थी।

२३४९. प्रति सं २। वन सं ३। वा ३×९ दण। मत्ता संस्तुत। विषय-पूजा। र वन ×।

मे वन ×। गुण। के सं ४६९। क मत्तार।

२३५०. सिद्धपूजा—महा पं आराधन। वन सं २। वा ११×९ दण। मत्ता-साइत।

विषय-पूजा। र वन ×। मे वन सं १२२। गुण। के सं ४६४। क मत्तार।

विशेष—इसी मत्तार में एक प्रति (के सं ४६६) भी है।

२३५१. प्रति सं २। वन सं ३। मे वन सं १२२ मण्डिर कुटी १। के सं २३३। क

मत्तार।

विशेष—पूजा के आरम्भ के स्वराला नहीं है किन्तु आरम्भ में ही वन पढ़ने का मन्त्र है।

२३५२. सिद्धपूजा—। वन सं ४। वा २३×०२ दण। मत्ता-संस्तुत। विषय-पूजा।

र वन ×। मे वन ×। गुण। के सं १९९। क मत्तार।

विशेष—इसी मत्तार में एक प्रति (के सं १९२४) भी है।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

५३५३ सिद्धपूजा । पत्र स० ४४ । मा० ६५५ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वे० स० ७१५ । च भण्डार ।

५३५४ सीमधरस्वामीपूजा । पत्र स० ७ । मा० ८५६३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८५८ । छ भण्डार ।

५३५५ सुखसपत्तिव्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ७ । मा० ८५६३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल स० १८६६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०४१ । अ भण्डार ।

५३५६ सुखसपत्तिव्रतपूजा—अखयरास । पत्र स० ६ । मा० १२५५३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय पूजा । २० काल स० १८०० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०८ । क भण्डार ।

५३५७ सुगन्धदशमीव्रतोद्यापन । पत्र स० १३ । मा० ८५६३ इ च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १११२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ७ प्रतियां (वे० स० १११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६) भीर हैं ।

५३५८ प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १६२८ । वे० स० ३०२ । ख भण्डार ।

५३५९ प्रति स० ३ । पत्र स० ८ । ले० काल × । वे० स० ८६६ । छ भण्डार ।

५३६० प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १६५६ मासोज बुदी ७ । वे० स० २०३४ । ट भण्डार ।

५३६१ सुपाश्वनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र स० ५ । मा० १२५५३ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२३ । च भण्डार ।

५३६२ सूतकनिर्णय । पत्र स० २१ । मा० ८५४ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५ । झ भण्डार ।

विशेष—सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला करने की विधि आदि भी हैं ।

५३६३ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० स० २०६ । झ भण्डार ।

५३६४ सूतकवर्णन । पत्र स० १ । मा० १०३५५ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । अ भण्डार ।

५३६५ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० काल स० १८५५ । वे० स० १२१४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २०३२) भीर है ।

५३६६ सोनागिरपूजा—आशा । पत्र स० ८ । मा० ५३५५३ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल स० १६३८ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । छ भण्डार ।

विशेष—यं यथावर लोलादिभिः वाती नै प्रतिविधि की नी ।

४३६७ सामागिरपूजा—पत्र तं ५ । या २३×४३ इय । यत्ना—हिन्दी । विनय—पूजा ।

२ कल × । नि कल × । पूर्ण । के तं ५५२ । क यत्ना ।

४३६८ साङ्गद्वारपूजा—धामतराय । पत्र तं २ । या २३×३३ इय । यत्ना—हिन्दी । विनय—

पूजा । २ कल × । नि कल × । पूर्ण । के तं १३२६ । क यत्ना ।

४३६९ प्रति स ७ । पत्र तं २ । नि कल तं १३३७ । के तं २२ । क यत्ना ।

४३७० प्रति स ३ । पत्र तं २ । नि कल × । के तं ६३ । क यत्ना ।

४३७१ प्रति स ४ । पत्र तं २ । नि कल × । के तं ११ । क यत्ना ।

विनय—इसके प्रतिष्ठित पञ्चमैव यत्ना तथा लोलाद्वारण संस्तुत पूजक वीर है ।

इसी यत्ना के एक प्रति (के तं १६४) वीर है ।

४३७२ साङ्गद्वारपूजा—पत्र तं १४ । या २३×३३ इय । यत्ना—हिन्दी । विनय—पूजा ।

२ कल × । नि कल × । पूर्ण । के तं ७२२ । क यत्ना ।

४३७३ साङ्गद्वारसमस्तविधाय—देवकन्द । पत्र तं ४५ । या १३×५३ इय । यत्ना—हिन्दी ।

विनय—पूजा । २ कल × । नि कल × । पूर्ण । के तं ७ । क यत्ना ।

४३७४ प्रति स २ । पत्र तं २६ । नि कल × । के तं ७२४ । क यत्ना ।

विशेष—इसी यत्ना के एक प्रति (के तं ७१२) वीर है ।

४३७५ प्रति तं ३ । पत्र तं ४२ । नि कल × । के तं १२ । क यत्ना ।

४३७६ प्रति स ४ । पत्र तं ४२ । नि कल × । के तं २६४ । क यत्ना ।

४३७७ लोकायुक्ताधामपूजा—कञ्जवराह । पत्र तं १२ । या १३×४३ इय । यत्ना—संस्तुत ।

विनय पूजा । २ कल तं ११ । नि कल × । पूर्ण । के तं २६ । क यत्ना ।

४३७८ प्रति स २ । पत्र तं १२ । नि कल तं १२३ वीर वृत्ति । के तं ४२७ । क यत्ना ।

४३७९ स्वयम्भविमान—पत्र तं १ । या १३×४३ इय । यत्ना—हिन्दी । विनय—विमान ।

२ कल × । नि कल × । पूर्ण । के तं ४२१ । क यत्ना ।

४३८० स्वयम्भविधि (वृद्ध)—पत्र तं २२ । या १३×२३ इय । यत्ना—संस्तुत । विनय—

पूजा । २ कल × । नि कल × । के तं २७ । क यत्ना ।

विशेष—अन्तिम २ वृत्तों के विशेषतः पूजा है जो कि वृत्त है ।

गुटका-संग्रह

(शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाठों की, जयपुर)

५३८१ गुटका सं० १ । पत्र सं० २८४ । मा० ६×६ इ च । भाषा—हिन्दी सम्स्कृत । विषय—संग्रह ।

ने० काल सं० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ६ । अपूर्णा । दशा—सामान्य ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
१ भट्टाभिषेक	×	संस्कृत	पूर्ण
२ रत्नत्रयपूजा	×	"	"
३ पञ्चमेखपूजा	×	"	"
४ अनन्तचतुर्दशीपूजा	×	"	"
५ षोडशकारणपूजा	सुभ्रतिमागर	संस्कृत	"
६ दशलक्षणउद्यापनपाठ	×	"	"
७. सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	श्रद्धाजयसागर	"	"
८. मुनिमुव्रतछन्द	म० प्रभाषन्द	संस्कृत हिन्दी	"

मुनिमुव्रत छन्द लिख्यते—

पृष्ठ

१२०-१२४

पुष्पापुष्पनिरूपकं गुरानिधि शुद्धव्रत मुव्रत

स्वादादाभृततपिताखिलजर्नं दु ख्वाग्निधाराधर ।

क्रोधारण्यधनेजयं धनकर प्रध्वस्तकर्मारिण

धदे तद्गुणसिद्धये हरिनुत सोमात्मज सौख्यद ॥१॥

जलधिसमगभौर प्राप्तजन्माविधितर

प्रबलमदनवीर पचधामुक्तवीर

हतविषयविकार सततत्वप्रचार

स जयति गुराधार सुव्रतो विघ्नहार ॥२॥

पार्श्व—

निजुवाभनमहितपदां कर्ता सुपवित्रमुक्तिमरकमन्त्रः ।

कथयन्त्येतां मुक्तयेवो यमसि कुलपदां ॥१॥

वी यथापीतिर्षयतुमुद्रमहात्मात्मात्मनश्चिकर ।

प्रतिपादितपरपरत्वं केवलपीये संक्षिप्तमुक्तं ॥२॥

तं पुनिसुखतमार्थं नत्वा कथयामि तन्म कथोह ।

कृष्णस्तु कथयन्त्या दिनवर्षपरं तीनर्तुसुखं ॥३॥

पश्चिम—

प्रथम कथास्तु यत्नं यमनोत्तम यमय सुखेय वने वसि वीह्य ।

रात्रौ नयति पर सुन्दर सुवित्र सुप सिद्धं विवी दूरपर ॥१॥

कथयुद्धीयुनमन्त्री बाला, तत्त रात्री बीमा सुविचाला ।

यक्षिमास्तु वसिदुखबाला स्वयं मोक्ष केने सुखबाला ॥२॥

एतादे तं वसि सु विचाला कथय कथारि केने सुखबाल ।

एतादृष्टि कर्त्त यमय कथारि एव कथय यथा सुख सुखकर ॥३॥

हरिपद्मां सुपति सुवि र्भवत्त बालस्तु स्वर्ण हवी यमकथय ।

बालस्तुवि वीर्ये सुखबाली यमवी वर्य रात्री सुखबाली ॥४॥

दुर्गमपदा—

वसिष्ठ प्रमति वरं वर्यवार्त्त न ईक्षामय यमयमपदां ।

तथा बालता एतादृष्टास्तुसुखासाधकता न पुनः सुखदा ॥१॥

पुरं विचरिष्यामिनिविक्रमा दुर्गं ताम्रं लोहितं कृते कटा वा ।

निपत वर्यवादे स्मिन् विषयार्थं ब्रह्माचार्यसे वताद्विषयार्थं ॥२॥

दुर्गमो हि केनां लक्ष्मिनि बालः किमप्योग्यनदीपमुद्रकथयत्त ।

वरं यमपुत्रं कथास्तुदुर्गं लक्ष्मिनि विषयार्थं दुर्गं पुनर्गं ॥३॥

ब्रह्माचार्यनदीपमुद्रकथयत्त दुर्गं पुनर्गं ।

विषयं वर्यवादा विविर्गुणार्थं ५६ लोहितं लीलायार्थं लीलायार्थं ॥४॥

पश्चिम—

वीक्षयितुं यमपदां । नहि निजुचय विज्ञा हवां मुक्तये वदि ।

वदा विहं शंख ब्रह्माचार्य मुक्तये कथना वरं यम यमय ॥१॥

ईक्षामय वदी यमवी विषय वारी, मुक्तये व वीर्ये तत्त वारी ।

ईक्षामय बालस्तु पुरं वर, वपीनदीप वीहं पुनर्वीर ॥२॥

मोतीरेणुछन्द—

तब ऐरावण सजकरी, चढ्यो शतमुख आणद भरी ।
जस कीटी सतावीस छे श्रमरी, करें गीत नृत्य बलीदें भमरी ॥३॥
गज कानें सोहैं सोवर्ण चमरी, घण्टा टङ्कार चदि सहू भरी ।
आखण्डलअकुसुममैधरी, उच्छवमगल गया जिन नयरी ॥
राजगणें मलया इन्द्रसहू, वाजें वाजिअ सुरग बहु ।
धक्कें कह्यु जिनवर सावें सहो, इद्राणी तब धर मभे गई ॥
जिन बालक दीठो निज नयगों, इद्राणी बोलें वर वयगों ।
माया मेसि सुतहि एष कीयो, जिनवर युगतें जइ उन्द्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है । सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन है जिसका रचना के आधे से अधिक भाग में वर्णन किया गया है इसमें उक्त छंदों के प्रतिरिक्त सीलारती छन्द, हनुमतछन्द, दूहा, चभाग छन्दों का और प्रयोग हुआ है । अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस—

बीस धनुष जस देह जह जित कछप लाछन ।
औस सहस्र वर अर्पे आयु सजजन मन रखन ॥
हरवशी पुणबोमल, भक्त वारिअ विहडन ।
मनवाछितदातार, नयरबालोढतु मडन ॥
श्री मूलसप सघद तिलक, ज्ञानभूषण भट्टारण ।
श्रीप्रभावन्द सुरिवर कहें, मुनिसुप्रतभगनकरण ॥

इति मुनिसुप्रत छन्द सम्पूर्णोऽय ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

सवत् १८१८ वर्षे शके १८८४ प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसन्ने सरस्वतीगच्छे बलात्कार-
गुणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीविद्यातन्दि तत्पट्टे भट्टारक श्री
मल्लिभूषण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभावन्द तत्पट्टे
भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमहोचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजैनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्द तच्छिष्य
ब्रह्मनेमसागर पठनाथ । पुष्पार्थ पुस्तक लिखायित श्रीसूर्यपुरे श्रीआदिनाथ चैत्यालये ।

विवरण	कार्य	भाषा	विशेष
१. मातासदावतीक्षेत्र	महीचण्ड कटारक	मराठी व हिन्दी	१९१-२४
१. बल्लभगानधुमा	×	संस्कृत	
११. कर्मवृद्धपुत्रा	बघविल्ल	"	
१२. धनलक्ष्मणराज	कटारकिल्ल	हिन्दी	
१३. धनक पुत्रा]	वेविल्ल	संस्कृत	१. पापक की शिरहा १
१३. धनक	×	हिन्दी	मछि पूर्वक की वर
१४. धनलक्ष्मण राजपुत्र धनक	×	संस्कृत	
१५. धनपुत्रा	×	"	

विशेष—पत्र न १६ पर किन्तु लेख लिखा हुआ है—

कटारक की १ की विचलनकी १ ११ वीं वर्ष तक १६६६ अवर्तमाने वर्तमानको इच्छा
प्रतिरक्षाविधि रमि और पालनीय वेवलीक गया है।

१३-२ गुटका स २। पत्र १ १३। या २२×१६ द. १। भाषा—हिन्दी। विषय—वर्ग। १. पत्र
१ १३। ले. कल १ १३। पुर्ण। वचन—वाचन।

विशेष—इस गुटके में बल्लभगान धनक का विचलन कल्पन बल्लभ है। यह प्रति स्वयं लेखक हाथ लिखे
हुए हैं। अन्तिम पुष्पिका विषय प्रकार है—

एति की विचलनकल्पन बल्लभ सम्पूर्ण। विषय बल्लभगान धनक। १ १३।

१३-३ गुटका स ३। पत्र १ १३। या ४४×४ द. १। भाषा—संस्कृत-हिन्दी। विषय—X। ले.
पत्र १ १३। पुर्ण। वचन—वाचन।

विशेष—कटारक लोदीना में लिखा था।

१. रत्नमयविधि	×	हिन्दी	१-३
१. बल्लभगानधुमा	बल्लभगानधुमा	"	२-११
१. धनलक्ष्मणराज	×	संस्कृत	१३-४३
४. धनलक्ष्मणराज	×	हिन्दी	४३-४४
१. धनलक्ष्मण	×	संस्कृत	४४-४५
१. पुत्रा	बघविल्ल	"	४५-४६

७ क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	५५-५६
८ पूजा व जयमाल	×	"	५६-७५

५३८४ गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । भा० ३×२ इच्च । भाषा-संस्कृत हिंदी । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में ज्वालामालिनीस्तोत्र, अष्टादशसहस्रशीलभेद, पट्टलेख्यावर्णन, जैनसंस्थामन्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५३८५, गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । भा० ८×६ इच्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—भट्टहरिशतक (नीतिशतक) हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३८६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । भा० ८×६ । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं शांतिपाठ का संग्रह है ।

५३८७ गुटका सं० ७ । पत्र सं० ११६ । भा० ६×७ इच्च । ले० काल १८५८ मासोज बुदी ४ शनिवार । पूर्ण ।

१ नाटकसमयसार	वनारसीदास	हिन्दी	१-६७
२ पद-होजी म्हारो कथ	चतुर दिलजानी हो	विश्वभूषण	६७
३ सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	"	६८-११६

५३८८ गुटका सं० ८ । पत्र सं० २१२ । भा० ६×६ इच्च । ले० काल सं० १७६८ । दशा-सामान्य ।

विशेष—प० धनराज ने लिखवाया था ।

५३८९ गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३५ । भा० ६×६ इच्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जिनदास, नवल आदि के पदों का संग्रह है ।

५३९० गुटका सं० १० । पत्र सं० १५३ । भा० ६×५ इच्च । ले० काल सं० १६५४ आश्विन सुदी १३ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ पद-जिनवाणीमाता दर्शन की बलिहारी	×	हिन्दी	१
२ वारहभावना	दीनतराम	"	
३ भालोचनापाठ	जीहरीलाल	"	
४ दशलक्षणपूजा	सूधरदास	"	

५. पञ्चमेव एवं नदीधरपुत्रा	धामतराज	हिन्दी	२ १३
६. तीम नीवीही के नाम व वर्मनपाठ	×	संस्कृत हिन्दी	
७. परममन्त्रस्तोत्र	बनारसीबल	"	१
अथर्वस्तोत्र	धामतराज	"	१
८. निर्दिष्टकाम्यमाया	बनारसीबल	"	३-६
९. तत्पार्त्तुव	अथर्वबानी	"	
११. वैमल्यमद्रुमुत्रा	×	हिन्दी	
१२. नीवीह तीर्त्तुट्टों की पुत्रा	×	"	१२१ तक

२३३१ गुटका सं ११। वन सं २२२। या १ ४×६ राज। वाता-हिन्दी। के फल ६
(३४६)

विशेष—विष्णु पाठों का संग्रह है।

१. दाम्भ्य ब्रह्माचार कथा	×	हिन्दी पद्य	३ १४
[४६ अंकों का उत्तर है]			
२. कर्मद्वारवर्णि	शुनि अथर्ववर्णि	"	१२-१४

अथ वेनि निकले—

टीका—

कर्मद्वार कव के कर, नीलवाली संस्कार।

अथर्वरि नन बंभन बरे, कतर नीलसी बु वार ॥

नीवी मुली बुल बारम्बो सप्तनीति भाग

कर्म वेदन कीवी मुली नीलसी बनि पात्र ॥

बनसी बुल निरर्थक वे बाण वल्लुख पुरे।

नही वर्य केवि ज्वरु करवसेक कर्मद्वारे ॥

अज्ञातार्थ वर्त्त घाता वेवनी बोल्ल मंभरार्थ।

अर्द्ध नीलसी वेति हीनी क्कामु कर वल्लुख पुहार्थ ॥

वास कर्म पांचनीव कुहनी पात्रु केरी।

बोध नील बलि नीलो बाही, अन्तरार्थ नन केरी ॥

विद्यावलि बुधिय परिवाली कर्मसेक बुल्लवार्थ ॥१॥

हा—

एक बर्म को वेदना, भु जे

नरनारी बरि उपरै, चरण गुणनगपान गजोर्द ॥१॥

लित्तिमराठ— कवित्त—

सकलकीर्ति मुनि आप मुनत मिटै सतान चौरागी भरि जाई फिर भजर भ्रमर पद पाये ॥

छूनी पोषी भई भहार दोसै नही फेर उत्तारी बध छद दयित बैली बनाई क गाईये ॥

चप नेरी चाटसू केते भट्टारक भये साधा पार भजसठि जेहि कर्मचूर बरत बहो है बगगाई ध्याइये ॥

सवत् १७४६ सोमवार ७ परबोबु बर्मचूर व्रत बैठगी भ्रमर पद चुरी सीर सीधातम जाइये ॥

नोट—पाठ एक दम भ्रमुद्ध है । तोपि भी विरुद्ध है ।

२ श्रुतिमण्डलमन्त्र

×

सम्भुत

मे० वान १७३६

४. चित्तमणि पार्श्वनाथस्तोत्र

×

१७-१६

५. भजना को रास

धर्मभूषण

”

प्रपूर्णा २०

हिन्दी

२१-३६

प्रारम्भ—

पहिली रे भईत पाय नर्म ।

हरै भव दुन भजन त्व भगवत बर्म कायातना वा पत्नी ।

पाप ना प्रभव भसि सी भत ती रास भणै इति भजना

तै ती समय साधि न गई त्वर लौक ती सती न सरोमणि वदीये ॥१॥

चस विषाधर उपनी माय, नामे तीन धर्नधि सपखे ।

भाव करता ही भवदुख जाय, सती न सरोमणि वदये ॥२॥

ब्राह्मी नै गु वरी वदये, राजा ही रसभ तणै घर द्वैय ।

बाल परौ तप वन गई काम ना भोगन वछीय जे हुती ॥ सती न ३ ॥

मेघ मेनापति नै धरनारि भजना सो मदालसा ।

त्यारे न कीनै सीयाल लगार तो ॥ सती न ४ ॥

पचसै किसन कुमारिका, ईनि बाल कुबारी लागी रे पावै ।

जादव जग जानी करि, दारिका दहन मुनि तप जाय ।

हरी सती भजना वदीय जिनै राग छौकी मन में धरघी वैराग तो ॥ सती न ५ ॥

११	हनुमतकथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	५३-१०६
१२	वीस विरहमानपूजा	हर्षकीर्ति	"	११०
१३	निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	१११
१४	सरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	संस्कृत	११२
१५	अभिषेकपाठ	X	"	११२
१६	रविमृतकथा	भास्व	हिन्दी	११२-१२१
१७	चिन्तामणिलग्न	X	संस्कृत	ले० काल १५२१ १२२
१८	प्रद्युम्नकुमाररासो	जह्मरायमल्ल	हिन्दी	१२३-१५१
१९	श्रुतपूजा	X	२० काल १६२८ ले० काल १८११	
२०	विपापहारस्तोत्र	घनछाय	संस्कृत	१५२
२१	सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	१५३-१५६
२२	पूजासंग्रह	X	हिन्दी	१५७-१६६
२३	कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	१६७-१७२
२४	पाशाकेवली	X	संस्कृत	१८३
२५	पञ्चकल्याणकपाठ	रूपचन्द	हिन्दी	१८४-२१७
			"	२१७-२२२

विशेष—कई जगह पत्रा के दोनों ओर मुन्दर बेलें हैं ।

५२६२ गुटका सं० १२ । पत्र सं० १०६ । भा० १०३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—निम्न पाठा का संग्रह है ।

१. यज्ञ की सामग्री का व्यौरा

X

हिन्दी

१

विशेष—(अथ जागी की मौजे सिमरिया में प्र० देवाराम ने ताकी सामा भाई सख्या १७६७ माह बुदी । पूर्णिमा पुरानी पोथी में से उतारी । पोथी जीरण होगई तब उतरी । सब चीजों का निरख भी दिया हुआ है ।

२ यज्ञमहिमा

X

हिन्दी

२

विशेष—मौजे सिमरिया में माह बुदी १५ सं० १७६७ में यज्ञ किया उसका परिचय है । सिमरिया में चोहान वंश के राजा श्रीराव थे । मायाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे । यज्ञाचार्य मोरेना के प० टेकचन्द थे । यह यज्ञ सात दिन तक चला था ।

१. बर्मादितर

✕

महाराज

१ ११

विशेष—गुरुदास महाराज के गे निवास बसा है । तीन आश्रम है ।

४. बारीभर ५: मन्मथदास

✕

हिन्दी १९६७ ई. ११ ११

बारीभर की मन्मथदास—

गुरु बर्मादितर बसा आश्रम विन बरन मन्मथ आश्रम ।
 गति बर्मादितर बरी भुवि बर्मादितर बरी ॥१॥
 बारीभर दुल बर्मादितर बर बरन मन्मथ (२) बर्मादितर ।
 बर्मादितर विन बरीभर, बरन बर बरन बरी ॥२॥
 बरि बरन बरीभर बरन बरीभर बरन बरी ।
 बरि बरन बरीभर बरि बरन बरन बरी ॥३॥
 बरि बरन बरीभर, बरि बरन बरि बरन ॥४॥

बर्मादितर—

बर्मादितर बरन बरन बरन बरीभर बरीभर ।
 बरि बरन बरन बरन बरन बरन ॥५॥

बरीभर—

बरीभर बरन बरन बरीभर बरीभर ।
 बरन बरन बरन बरन बरन बरन ॥६॥
 बरीभर बरन बरन बरन बरीभर ।
 बरीभर बरन बरन बरन बरीभर ॥ ७॥
 बरि बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर ॥

१. बरीभर मन्मथदास

बरीभरदास

हिन्दी

१४ ११

बरीभर—

बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर ।
 बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर ॥१॥
 बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर ।
 बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर ॥२॥
 बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर ।
 बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर बरीभर ॥३॥

मुभ आसन दिढ जंग ध्यान, वद्धमान भयो केवल ज्ञान ।

समोसरण रचना अति बनी, परम घरम महिमा अति तणी ॥४॥

अन्तिमभाग—

चल्यो नगर फिरि अपने राइ, चरण सरण जिन अति सुख पाइ ।

समोसरणय पूरण भयो, सुनत पढित पातिग गलि गयी ॥६५॥

दोहरा—

सोरह सँ अठसठि समै, माघ दसै सित पक्ष ।

गुलालब्रह्म मनि गीत गति, जसोनदि पद सिख ॥६६॥

नूरदेस हथि कतपुर, राजा वक्रम साहि ।

गुलालब्रह्म जिन धर्मु जय, उपमा दोजै काहि ॥६७॥

इति समोसरन ब्रह्मगुलाल कृत सपूर्ण ॥

६ नेमिजी को भगल

जगतभूषण के शिष्य

हिन्दी

१६-१७

विश्वभूषण

रचना स० १६६८ श्रावण सुदी ८

आदेशभाग—

प्रथम जपो परमेष्ठि तो गुर हीयो धरी ।

मस्वती करहु प्रणाम कवित्त जिन उच्चरी ॥

सोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति बनी ।

रची इन्द्र नै भ्राइ सुरनि मनि बहुकनी ॥

बहु कनीम मंदिर चैत्य स्त्रीयो, देखि सुरनर हरपीयो ।

समुद्र विजै वर भूष राजा, सक सोमा निरस्त्रीयो ॥

प्रिया जा सिव देवि जानौ, रूप भ्रमरो ऊढया ।

राति सुदरि सेन सूती, देखि सुपन पोडया ॥१॥

अन्तिम भाग—

एवन् सोलह सँ भठानूवा जारणीयो ।

सावन मास प्रसिद्ध भएयो मानियो ॥

गाऊ सिवदराबाद पार्श्वजिन देहरे ।

अ वग क्रीया मुजान धर्म सौ नेहरे ॥

धर्म सौ नेहु अति ही देहो सबको दान जू ।

स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पढित मान जू ॥

अथगुरुग गद्वारन विधगुरुग मुनिवर ।

अर नारी मयनवार काँसे पदन पातिप निम्न ॥

इति श्रीनिवास कू वी मलय मवाता ॥

७ पार्थनापथरिप

विधगुरुग

द्विती

१७-१८

अतिनाम रागुमद—

पारम शिवदेव वी मुनगु गरिगु मनु नाई ॥ देव ॥

मनह छारवा नाह अमी मयनार विगुनाई ।

पारम मया मर्बन वही अरवा मुनगई ॥

अगु वलिप अरव ॥ मयन पीरवा नाह ।

रावा भी अतिविध कू, दुपरी मुन मयाव ॥ पारम शिव ॥

विम लगी पदु वही गुन ही पम मुनारा ।

मनगु वही विषपीन विमल की वी अराप ॥

मनु मीवा मरगुति भी मनुचरि वई ता मय ।

एति बीडा मयवा रानी ह्री मनह अर के मय ॥ पारम शिव ॥

वीगु वीवी मरगुति वही मयी भी रानी ।

बीक वई मही वही मय रन मंदर अरानी ॥

मनह विही रम वारन मयन मुनि वीवी नाई ।

वी मरि मय हानी मयी हविनि कहीं विम धाह ॥ पारम शिव ॥

अवधि कृत वरि मय लही देवनि लव अली ।

पमवावहि मरलेख अथ मरिपय पर ठानी ॥

मय अथगुरु निवारिके पार्थनापथरिप ।

मयन करम वर मरिपि मये मुनि विमर्बन ॥ पारम शिव ॥

मुनर्बन गुरु विधगुरुग मुनि राई ।

अरर देवि गुरुम एवि मय वई मुनगई ॥

वही महात्मन अंग कू, मय मनुविधि वर मी ।

पार्थनापथरिप मयी ह्री मीनि मरिपि मय मय ॥

पारम शिवदेव वी, मुनगु गरिगु मय नाह ॥२५॥

इति श्री पार्थनापथरिप वी गरिगु मनुना ।

८ वीरजिगादगीत	भगीतोदास	हिन्दी	१६-२०
९ सम्पन्नानी घमाल	"	"	२०-२१
१० स्थूलभद्रशीलरासो	×	"	२१-२२
११ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२२-२३
१२ "	द्यानतराय	"	२३
१३ "	×	संस्कृत	२३
१४ पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	"	२४
१५ "	पद्मनन्दि	"	२४
१६ हनुमतकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	२५-७५
१७ सीताचरित्र	×	ले० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३	७७-१०६
		हिन्दी	अपूर्णा

५३६३ गुटका स० १३ । पत्र स० ३७ । भा० ७३ × १० इञ्च । ले० काल स० १८६२ भासोज बुदी

७ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का संग्रह है—

१ कल्याणन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	पूर्ण
२ लक्ष्मीस्तोत्र (पार्श्वनाथस्तोत्र)	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	"
३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	"
४ मत्तामरस्तोत्र	भा० मानतु ग	"	"
५. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	"
६ सिद्धपूजा	×	"	"
७ दशलक्षणपूजा जयमाल	×	संस्कृत	"
८ षोडशकारणपूजा	×	"	"
९ पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	"
१० क्षातिपाठ	×	संस्कृत	"
११ सहजनामस्तोत्र	१० भाशाधर	"	"
१२ पञ्चमेष्टपूजा	सूयत्यति	हिन्दी	"

१३ मष्टमिहयपुत्रा	×	धरहर	
१४ मष्टमिहयपुत्रि	×	"	
१५ मष्टमिहयपुत्राया	मष्टमिहय	हिन्दी	५
१६ मष्टमिहय	मष्टमिहय	"	
१७ मष्टमिहय	×	धरहर	

विशेष—यह पुस्तक मुक्तमाला की वन के पुत्र मष्टमिहय के रहने के लिए लिखी गई थी ।

३३३४ गुरुका न १४ । पत्र १३ । पा ४०४६ इति । बाला—मिश्र । कुली । बाला—बाला ।

विशेष—आचार्य (हिन्दी) तथा ४ आचार्यों के नाम हैं ।

३३३५ गुरुका न १५ । पत्र ४३ । पा ३०३ इति । बाला—हिन्दी । के बाल १९ । ३५

विशेष—पाठ मष्टमिहय है—

१ मष्टमिहय मष्टमिहय बाल मष्टमिहय बाल बाला	×	हिन्दी	१
२. ही मष्टमिहय वन मिहय है मष्टमिहय	मष्टमिहय	"	१-२
३ मष्टमिहय ही मष्टमिहय	×	"	१
४ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	मष्टमिहय	"	६
५ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	×		६
६ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	×	"	१
७ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	×	"	११
८ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	×	"	११
९ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	मष्टमिहय	"	११ १
१० मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	मष्टमिहय	"	११ ११
११ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	×	"	११
१२ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	×	"	११ ११
१३ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	×	"	१४
१४ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	×	"	१४
१५ मष्टमिहय मष्टमिहय मष्टमिहय	×	"	१४

गुटका-संग्रह]

१६ म्हे निशिदिन ध्यावाला	बुधजन	"	२६
१७ दर्शनपाठ	×	"	२६-२७
१८ कवित्त	×	"	२८-२९
१९ वारहभावना	नवल	"	३३-३५
२०. विनती	×	"	३६-३७
२१ वारहभावना	दलजी	"	३८-३९

५३६६ गुटका स० १६ । पत्र स० २२६ । घा० ५३×५ इच्छ । ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १ ।

पूरण । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाओं को मिला दिया गया है ।

विषयसूची—

१ बृहदकल्पसूत्र	×	हिन्दी	३-१२
२ मुक्तावलिप्रत की तिथिया	×	"	१२
३ श्लाघा देने का मन्त्र	×	"	१२-१६
४ राजा प्रजाको वशमें करने का मन्त्र	×	"	१७-१८
५ मुनीश्वरों की जयमाला	ब्रह्म जिनदास	"	२३-२४
६ दश प्रकार के ब्राह्मण	×	संस्कृत	२५-२६
७ सूतकवर्णन (यशस्तिलक से)	सोमदेव	"	३०-३१
८ गृहप्रवेशविचार	×	"	३०
९ भक्तिनामवर्णन	×	हिन्दी संस्कृत	३३-३५
१० दीपावतारमन्त्र	×	"	३६
११ काले विष्णुके डङ्कु उतारने का मन्त्र	×	हिन्दी	३८

नोज—यहा से फिर सख्या प्रारम्भ होती है ।

१२ स्वाध्याय	×	संस्कृत	१-३
१३. तत्त्वार्थसूत्र	रमास्वाति	"	१ ३
१४ प्रतिक्रमणपाठ	×	"	१६-३७
१५ भक्तिगाथ (सात)	×	"	३७-७२

५ सहस्रि	×	संस्कृत	६-११
६ मन्त्र	×	"	१४
७ उपवास के दशमेद	×	"	१५
८ फुटकर ज्योतिष पद्य	×	"	१५
९ अढाई का व्यौरा	×	"	१५
१० फुटकर पाठ	×	"	१५
११. पाठसंग्रह	×	"	१५-२०
		मसूदा प्राकृत	२१-२४
१२ प्रश्नोत्तररत्नमाला	अमोघवर्ष	गोमटसार, समयसार, द्रव्यमग्न आदि में संगृहीत पाठ हैं ।	
१३ सज्जनचित्तवृत्तम	मल्लिपेणाचार्य	संस्कृत	२४-२५
१४ गुरुरस्यानव्याख्या	×	"	२६-२८
		"	२९-३१
१५ छातीसुख की औपधि का नुसखा	×	प्रवचनसार तथा टीका आदि से संगृहीत	
१६ जयमाल (मालारोहण)	×	हिन्दी	३२
१७ उपवासविधान	×	अपभ्रंश	३२-३५
१८ पाठसंग्रह	×	हिन्दी	३५-३६
१९ अन्वययोगव्यवच्छेदकद्वित्रिशिका	हेमचन्द्राचार्य	प्राकृत	३६-३७
२० गर्भ कल्याणक क्रिया में भक्तिया	×	संस्कृत	मन्त्र आदि भी हैं ३८-४०
२१ जिनसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	हिन्दी	४१
२२ भक्तामरस्तोत्र	मानसु गाचार्य	संस्कृत	४२-४६
२३ यतिभावनाष्टक	भा० कुदकुद	"	४६-५२
२४ भावनाद्वित्रिशिका	भा० अमितगति	"	५२
२५ भाराधनासार	देवसेन	"	५३-५४
२६ सर्वोपपंचासिका	×	प्राकृत	५५-५८
२७ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	अपभ्रंश	५९-६०
२८ प्रतिक्रमण	×	संस्कृत	६१-६७
२९ भक्तिस्तोत्र (आचार्यभक्ति तब)	×	प्राकृत संस्कृत	६७-८८
		संस्कृत	८९-१०७

१	स्वर्गमूक्तोप	या	समस्तम	संस्कृत	१ ५ ११
११	नवमीस्तोत्र		पद्यप्रबन्ध	"	११५
१२	वर्धनस्तोत्र		सकलचन्द्र		११६
१३	मुक्तामृतस्तोत्र	×		"	११६-११७
१४	वर्धनस्तोत्र	×		प्राकृत	११७
१५	वसन्तवार कुरावली	×		संस्कृत	११७-११८
१६	पद्मलालस्तोत्र		पुष्पावली	"	११८-११९
१७	नाममाला		चन्द्रिका	"	११९-१२०
१	वीररामस्तोत्र		पद्यमन्त्र	"	१२०
१६	कस्तुरीचन्द्रिका		"	"	१२६
४	विश्वामित्रस्तोत्र		वेदमन्त्र	"	१२६-१२७
४१	नवमकारणाला	या	कुम्भपुष्प	"	१२७
४२	मई-कुलिविद्या	×		"	१२७-१२८
४३	स्वस्त्यस्तोत्र	×		"	१२८-१२९
४४	रत्नचन्द्रिका	×		"	१२९-१३०
४५	विश्वामित्र	×		"	१३०-१३१
४६	कविचन्द्रिका	×		"	१३१-१३२
४७	पद्मलालचन्द्रिका	×			१३२-१३३
४८	वसन्तवारणाला	×			१३३-१३४
४९	निवृत्त्युक्ति	×		"	१३४-१३५
५	सिद्धपुष्पा	×			१३५-१३६
५१	कुम्भपुष्पा		वीरर	"	१३६-१३७
५२	नारदपुष्पा		कुम्भपुष्पा	"	१३७-१३८
५३	वाग्नि स्तव	×		" १. पद्य ७७ वाग्नि	१ ७-१८
५४	पुष्करवर्णन	×		"	२ ६
५५	पद्मलालचन्द्रिका	×		"	१३

५६ औपधियो के नुसखे	X	हिन्दी	५७५
५७ संग्रहसूक्ति	X		२११
५८ दीक्षापटल	X	संस्कृत	२१२
५९ पार्वनाथपूजा (मन्त्र सहित)	X	"	२१३
६० दीक्षा पटल	X	"	२१४
६१ सरस्वतीस्तोत्र	X	"	२१८
६२ क्षेत्रपालस्तोत्र	X	"	२२३
६३ सुभाषितसंग्रह	X	"	२२३-१२४
६४ तत्वसार	देवसेन	"	२२५-२२८
६५ योगसार	योगचन्द्र	प्राकृत	२३१-२३५
६६ द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	संस्कृत	२३१-२३५
६७ धावकप्रतिक्रमण	X	प्राकृत	२३६-२३७
६८ भावनापद्धति	पद्मनन्दि	संस्कृत	२३७-२४५
६९ रत्नत्रयपूजा	"	"	२४६-२४७
७० कल्याणमाला	प० आशाधर	"	२४८-२५६
७१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	२५६-२६०
७२ समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	"	२६०-२६३
७३ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	"	२६४-२८५
७४ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	अपभ्रंश	२८६-३०३
७५ परमेश्वरियो के गुण व प्रतिशय	X	संस्कृत	३०४-२०६
७६ स्तोत्र	पद्मनन्दि	प्राकृत	३०७
७७ प्रमाणप्रमेयबलिषा	नरेन्द्रसूरि	संस्कृत	३०८-३०९
७८ देवागमस्तोत्र	भा० समन्तभद्र	"	३१०-३२१
७९ अक्षयस्तोत्र	अष्टावल्लभ	"	३२२-३२७
८० सुभाषित	X	"	३२८-३२९
८१ जिनगुणस्तवन	X	"	३३०-३३१
		"	३३१-३३२

सुदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।
 सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥
 हित सौ राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
 ज्या हाथा रे वरह ए, पात्या मैड कारन भारि ॥४॥
 तरसे हू परसे नहीं, नौढा रहत उदास ।
 जे सर सूकै भादवे, की सी उन्हालै ग्रास ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नहो, नादुरि मिलै विनु नेह ।
 औसरि चुक्यौ मेहरा, काई वरसि करैह ॥६॥
 मुदरो लै छलस्यो कह्यै, औ हौं फिर ना पैद ।
 काम सरै दुख वीसरै, बैरी हुवो वैद ॥७॥
 मानवती निस दिन हरै, बोलत खरीबदास ।
 नदी किनारै रूखडौ, जब तव होइ विनास ॥१००॥
 सिव सुखदायक प्रानपति, जरी भान कौ भोग ।
 नासै देसी रूखडौ, ना परदेसी लोग ॥१०१॥
 गता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर सुजान ।
 राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गंगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रबध प्रभाव । श्री मिती सावण वशि १२
 बुधवार सवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्य लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोषी लिखत मारिकचन्द बज बाचै जीहने
 जिसा माफिक बंख्या ।

५३६६. गुटका स० १६ । पत्र स० ३६ । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १६३० आषाढ सुदी १५ ।
 पूर्ण ।

विशेष—रसालकुधर की चौपई—तखरू कवि कृत है ।

५४०० गुटका स० २० । पत्र स० ६८ । भा० ६×३ इञ्च । ले० काल स० १६६५ ज्येष्ठ बुदी १२ ।
 पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महीदधि है ।

४५ १ गुरुका सं २१ । पद्य सं १११ । धा १५२ हज । पूर्ण । बला-साया ।

१ सायप्रियपाठ	×	संस्कृत ग्राह्य	१-२४
२ सिद्ध शक्ति धादि संवह	×	ग्राह्य	११-१०
३ समस्तपदस्तुति	समस्तपद	संस्कृत	७१
४ सायप्रियपाठ	×	ग्राह्य	७१-८१
५ शिद्धिप्रियपाठ	संस्कृत	संस्कृत	८१-८१
६ पारमार्थिक का रत्नोप	×	"	८७-१
७ अनुविद्यार्थिगणक	गुरुपद	"	१ १ १४
पञ्चस्तोत्र	×	"	१४०-१४०
८ विनयस्तोत्र	×	"	१४ १
९ सुतीक्ष्णरी की अथवा	×	"	१ १ १२
१० सप्तमीकृतसंविधान	×	"	१२१ १
११ विनयीकीसमस्तपदस्तुति	विनयीकीसंविधान	विनयी पद्य	पद्य सं ४८ १ १

धादिनाम—

विनयद सुवीर्यद शक्ति शान्ति पदम गरी वहुं धनई विचार ।

अथविद सुकृत के लव ॥१॥

यमकव दामा व ल कलीह, नाम भूमि काह पति सुलीह ।

वीरर ईशवि देव ॥२॥

सुविद्याय लालवद शक्ति शान्ति पदम गरी वहुं धनई विचार ।

अथविद सुकृत के लव ॥३॥

यमकव दामा व ल कलीह, नाम भूमि काह पति सुलीह ।

वीरर ईशवि देव ॥४॥

विनयद सुवीर्यद शक्ति शान्ति पदम गरी वहुं धनई विचार ।

अथविद सुकृत के लव ॥५॥

यमकव दामा व ल कलीह, नाम भूमि काह पति सुलीह ।

वीरर ईशवि देव ॥६॥

विमल वाहन राजा धरि मुण्णोइ, प्रथमश्रीवि भ्रमिद्र मुमण्णोइ ।

शभव जिन भवतार ॥७॥

अन्तिमभाग—

आदिनाथ भग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर ।

शान्तिनाथ भवपार ॥४५॥

नमिनाथ भवदशा तम्हे जाणु, पार्श्वनाथ भव दसइ वखाणुं ।

महावीर भव तेजोसइ ॥४६॥

भजितनाथ जिन आदि कही जइ, अठार जिनेश्वर हिइ धरोजई ।

त्रिणि त्रिणि भव सही जाणु ॥४७॥

जिन चुवोस भवातर सारो, भगता सुणता पुण्य भपारो ।

श्री विमलेन्द्रकीर्ति इम बोलइ ॥४८॥

इति जिन चुवोस भवान्तर रास समाप्ता ॥

१३ मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	३०८-३१०
१४ नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	संस्कृत	३११-३३
१५ पद-जीवारे जिणवर नाम भजै	×	हिन्दी	३१४-३५
१६ पद-जीमा प्रभु न सुमरयो रे	×	"	३१६

५४०० शुटका सं० २२ । पद्य सं० १५४ । आ० ६५३ इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ नेमि गुण गाऊ बाटित पाऊ	महोचन्द्र सूरि *	हिन्दी	१
	वाय नगर मे सं० १८८२ मे य० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।		
२ पार्श्वनाथजी की निशाणु	हर्ष	हिन्दी	१-६
३ रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	"	६
४ सुख कारण सुमरो	×	"	७
५ फर जोर रे जीवा जिनजी	प० फतेहचन्द	"	८
६ चरण शरण भव आइयो	"	"	९
७ रुलत फिरयो अनादिहो रे जीवा	"	"	९

३५ श्रीजिनराय की प्रतिमा बंदी जाय	त्रिलोककीर्ति	हिन्दी	३१
३६ होजी थाकी सावली सूरत	प० फतेहचन्द	"	३२
३७ कबही मिलसी हो मुनिवर	×	"	३३
३८ नेमीसुर गुरु सरस्वती	सूरजमल	" २० काल स० १७८४	३३
३९ श्री जिन तुमसे बीनऊ	भजयराज	"	३५
४० समदविजयजीरो नंदको	मुनि हीराचन्द	"	३५
४१ शम्भुजारी वासी प्यारो	नयविमल	"	३६
४२ मन्दिर आत्ताला	×	"	३६
४३ ध्यान धरधाजी मुनिवर	जिनदास	"	३७
४४ ज्यारे सोसें राजि	निर्मल	"	३८
४५ केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	"	३९
४६ समन्ति थारी सहलडीजी	पुरुषोत्तम	"	४०
४७ भगति मुक्ति नही छै रे	रामचन्द्र	"	४१
४८ वधावा	"	"	४२
४९ श्रीमदरजी सुणज्यो भीरी बीनती	गुणचन्द्र	"	४३
५० करकसारी बीनती	भगोसाह	"	४४-४५

सूया नगर में स० १८२६ में रचना हुई थी ।

५१ उपदेशबावनी	×	हिन्दी	४५-६१
५२ जैनवद्री देशकी पथी	भजलसराय	" स० १८२१	६२-६६
५३ ८५ प्रकार के मूसों के भेद	×	"	६७-६९
५४ रागमाला	×	" ३६ रागनियों के नाम हैं	७०
५५ प्रात भयो सुमरदेव	जगतारामगोदीका	" राग भैरव	७०
५६ चलि २ हो भवि दर्शन काजै	"	"	७१
५७ देवी जिनराज देव सेव	"	"	७२
५८ महाभीर जिन मुक्ति पधारै	"	"	७२
५९ हमरैतो प्रभु सुरति	"	"	७३

१	धीरिष नदी को ध्यान करी	जयतराय गोरीजा	क्षिप्ती	७३
११	माल प्रथम ही बधो	७७	७७	७४
१२	बाने की भैविहुमार	७७	७७	७४
१३	मनु के दर्शन को मैं धायो	७७	७७	७५
१४	कुछ्डी घन रोष मिटाये	७७	७७	७५
१५	कून बंढरी भैवि फडाई	७७	७७	७५
१६	विद्या तु बाल्य कलौ मझिंदे	७७	७७	७६
१७	उत्तौ मेरे ब्रह्म को विचारो	७७	७७	७६
१	रत्नोन्नी जिनराज करन	७७	७७	७६
१६	जिनकी से कैरी प्रथम मनी	७७	७७	७६
७७	कुनि ही करन तेरे पांव पारी	७७	७७	७७
७८	कैरी कीज दानि होखी	७७	७७	७७
७९	बेसोरी नेन कैरी टिडि पारी	७७	७७	७८
७९	धर्मि बडाई रत्ना नाभि के	७७	७७	७८
७४	बीतराय नम कुनरि	कुनि विजयगोति	७७	७८
७५	वा बैतन लम कुनि लीं	बनारसीदास	७७	७८
७६	इत नबरी के फिल विम रत्न	बनारसीदास	७७	७८
७	मैं बाने पुन विदुषन राज	हरीकिश	७७	७
७	अचमकवित रंजन हरला	ब विजयगोति	७७	७७
७६	बडो तेरी बुक बैनु	बनारसीदास	७७	७७
देखी की दासीअरत्नाजी कीना ब्रह्म नमामा है गुणगुणव				७६
१	ॐ नमो नमो जिनराज	नमनराज	७७	१
१	मनु की छिहारी कुरा	हरीकिश	७७	१
१	नमकि १ कुन पांचव दि वा वा	रामनमन	७७	१
७४	विषम त्याग कुन कारन मायो	नमन	७७	१
१	सुनि विम देखी देखी	नमन	७७	७६

गुटक-संग्रह]

८६ देखि प्रभु दरस कौण	—	६७
८७ प्रभु नेमका भजन करि	—	६७
८८ आजि उदै घर सपदा	—	६८
८९ भज धी ऋषम जिनद	—	६८
९० मेरे ता योही चाव है	/	६८
९१ मुनिसुप्रत जिनराम को	—	६९
९२ मारे प्रभु सु प्रीति लगी	—	६९
९३ कौतल गगादिक जल	—	६९
९४ तुम आवम गुण जानि	—	६९
९५ सब स्वारथ के भीत है	/	१००
९६ तुम जिन भटके रे मन	—	"
९७ कहा रे मसाली जीवहू	/	"
९८ जिन नाम सुमर मन बावर	—	१०१
९९ सहस राम रस पीजिय	—	"
१०० सुनि मेरी मनसा मासखी	/	"
१०१ वा साधु ससार में	/	"
१०२ जिनमुद्रा जिन सारसी	/	"
१०३ इणविधि देव भदेव की मृग गधि पारे	/	१०२
१०४ विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनदका	/	"
१०५ काया बाही काऊरे सीवत मून भार मुनि	/	"
१०६ ऐसे क्यों प्रभु पाइये	/	१०३
१०७ ऐसे या प्रभु पाइये	/	"
१०८ ऐसे यो प्रभु पाइये मुनि वडित प्राणी	/	"
१०९ भेटो विषा हमारी	/	"
११० प्रभुजी ओ तुम तारक नाम गगाध	—	"
१११ रे मन विपमां मुसियो	—	१०४

११२	मुमरन ही मे त्पारै	वागतराज	हिन्दी	११
११३	घब लै नैनकर्म को सरलो	×	"	११
११४	बैठे बज्जराग सुपास	वागतराज	"	११
११५	इह बुंदर दूरत वास्य की	×	"	१२
११६	घाँठि संभारे बीजियो बरसल	×	"	१२
११७	कौन कुमारा परी रे बबा लेटी	×	"	१२
११८	राम धरम लीं बड़े सुबाज	वागतराज	"	११
११९	बड़े मरतबी मुझि हो राम	"	"	१३
१२०	मूरति कैरे रावै	वागतराज	"	११
१२१	देखो लखि नीम है नैम कुमारा	विजयश्रीति	"	११
१२२	विजयश्रीति श्रीति करी यी	"	"	१४
१२३	मोर ही भाये महु कर्षन मो	हृदयराज	"	१४
१२४	जिनेमुरखेन दासे करल गुन लेख	वागतराज	"	१४
१२५	कौी बने लीं लारि मोहु	कुमारदुपल	"	१४
१२६	हवाटी बारि धी नैमिनुवार	×	"	१४
१२७	दासे राज रावे कली कौ	×	"	१५
१२८	परी बबो प्रकुमो वर्य करी	वागतराज	"	१५
१२९	बैबा मेरे कर्षन है सुबाज	×	"	१५
१३०	साली लाम्ही श्रीति नू दासे	×	"	१५
१३१	लैं लीं मेटी मुझि हू न लई	×	"	१५
१३२	माली में लीं खिब खिब भाई	×	"	१६
१३३	जालीये लो बाली लेरे बगली बहली	विजयश्रीति	"	१६
१३४	मकल लये मेरे मकल बने	×	"	१६
१३५	मुझमें बहरि करी महाराज	विजयश्रीति	"	१६
१३६	कैतव कैत विज कट बाझि	"	"	१७
१३७	विज विज वल विज वरक विहाल	"	"	१७

१३८. अजित जिन सरण तुम्हारी	मानुकीति	हिन्दी	६७
१३९ तेरी मूरति रूप बनी	रूपचन्द	"	६७
१४० अगिर नरभव जागिरे	विजयकीति	"	६८
१४१ हम हैं श्रीमहावीर	"	"	६८
१४२ भलैभल आसकली मुझ आज	"	"	६८
१४३ कहा लो दास तेरी पूज करे	"	"	६८
१४४ आज ऋषभ घरि जावे	"	"	६९
१४५. प्रात भयो बलि जाऊ	"	"	६९
१४६ जागो जागोजी जागो	"	"	६९
१४७ प्रात समै उठि जिन नाम लीजै	हर्षचन्द	"	६९
१४८ ऐसे जिनवर मे मेरे मन बिललायो	अनन्तकीति	"	१००
१४९ आयो सरण तुम्हारी	×	"	"
१५० सरण तिहारी आयो प्रभु मैं	अख्यराम	"	"
१५१. वीस तीर्थङ्कर प्रात सभारो	विजयकीति	"	१०१
१५२ कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	दानतराय	"	"
१५३ म्हारे प्रकटे देव निरञ्जन	वनारसीदास	"	"
१५४ हू सरणगत तोरी रे	×	"	"
१५५ प्रभु मेरे देखत आनन्द भये	जगताराम	"	१०२
१५६. जीवढा तू जागिनै प्यारा समकिल महलमे	हरीसिंह	"	"
१५७ घोर घटाकरि आयोरी जलधर	जयकीति	"	"
१५८ कौन दिखसू आयो रे वनचर	×	"	"
१५९ सुमति जिनद गुणमाला	गुणचन्द	"	१०३
१६० जिन बादल चढ़ि आयो ही जगमे	"	"	"
१६१ प्रभु हम चरणन सरन करी	ऋषभहरी	"	"
१६२ दिन-२ देही होत पुरानी	जनमल	"	"
१६३ सुगुरु मेरे बरसत ज्ञान झरी	हरखचन्द	"	१०४

११४	क्या लोचन घटित जारी है मग	आनन्दराम	हिन्दी	१ ४
११५	समयित जलन भाई बचन	"	"	"
११६	है मेरे बटभान कलापन छाव्यो	"	"	१ ५
११७	आन सरोवर लोह ह्यो अभिमान	"	"	"
११८	हो परमदुष्ट बरनत आनन्दरी	"	"	"
११९	उन १। १ जिन दर्शन की मेम	देवरी	"	"
१	मेरे मन हुए हैं मनु मे बचनो	हर्षवर्षि	"	१ ६
१२०	अनिहारी मुखा के बन्धे	आदि बौद्ध	"	"
१२१	मैं तो तेरी आन कहिवा जानी	बुधराम	"	"
१२२	देखोटी आन मेरीमुर मुनि	×	"	"
१२३	नहाटी मनु बहूत न आन	आनन्दराम	"	१ ७
१२४	है मन बरि लया लोचन	बनारसीराम	"	"
१२५	मेरी २ बरनत आनन बन्धे	बनारस	"	"
१२६	हैं मुखा की मे जानी	विजयवर्षि	"	"
१२७	माया नं जो मुनि बचनी	बनारसीराम	"	१
१२८	लवि द्रिवा आन	विजयवर्षि	"	"
१	तब मन बौद्ध आन लवत मे	×	"	"
१ १	बैराग मन मे लोहो नीर	बुधराम	"	१ ८
१ २	बनन मेनु न लोहो लोचन	बनारसीराम	"	"
१ ३	अनि दलोरे लो	बनारस	"	"
१ ४	आदि दलोरी जीव बरनत मे	×	"	"
१ ५	हम लोह आनन्दराम लो	आनन्दराम	"	१ ९
१ ६	निन्दे २ भाऊ मेनि जिनन	विजयवर्षि	"	"
१ ७	विन लोहो नीकी नीन लो	बुधराम	"	"
१ ८	हम नीके आन नीन लो	बनारसीराम	"	"
१ ९	हुँ बन्धन बन्ध नीकी	×	"	१ १०

१८० जगत में सो देवन का देव	बनारसीदास	हिन्दी	१११
१८१ मन लागो धी नवकारसू	गुणवन्द	"	"
१८२ चेतन भव खोजिये	"	" राम सारङ्ग	११२
१८३ आये जिनवर मनके भावतें	राजसिंह	"	"
१८४ करो नाभि कवरजी की आरती	सालवन्द	"	"
१८५ री भाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	नन्ददास	"	११३
१८६ तैं नरभव पाथ कहा कियो	रूपवन्द	"	"
१८७ अखिया जिन दर्शन की प्यासी	×	"	"
१८८ बलि जइये नेमि जिनदकी	भाउ	"	"
१८९ सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्ति	"	११४
२०० मुक्तागिरी वदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	"	"

स० १८२१ में विजयकीर्ति ने मुक्तागिरी की वचना की थी ।

२०१ उमाहो लाग रह्यो दरशन को	जगतराम	हिन्दी	११४
२०२ नाभि के नद चरण रज बदीं	बिसनदास	"	"
२०३ लाग्यो आतमराम सों नेह	द्यानतराम	"	"
२०४ धनि मेरी आजकी घरी	×	"	११५
२०५ मेरी मन बस कीनी जिनराज	चन्द	"	"
२०६ धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मदयाल	"	"
२०७ आज मैं नीके दर्शन पायो	कर्मचन्द	"	"
२०८ देखो भाई माया लागत प्यारी	×	"	११६
२०९ कलिजुग में ऐंमे ही दिन जाये	हर्षकीर्ति	"	"
२१० धीनेमि जले राजुल तजिके	×	"	"
२११ नेमि कवर वर बीद बिराजें	×	"	११७
२१२ तेइ बडभागी तेइ वडभागी	सुंदरभूषण	"	"
२१३ अरे मन के के बर समभायो	×	"	"
२१४ कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदास	"	"

२१३. मैमिबिर्नर बर्नर को	ममनकीति	हिन्दी	११
२१६. सब छात्रों को सब को है मन्ने थीम्यबल	×	"	"
२१७. १ मम ममको किम ठीर	×	"	"
२१८. निम्न ईन्द्रिय को होय	×	"	"
२१९. सब मम कीमन कोटी	सम्बन्ध	"	"
२२०. सब मम ममन हुआटी	सम्बन्ध	"	११६
२२१. सब को को मने २ मम सबको	मम विजय	"	"
२२२. माधुटी ममनबाणी	ममनराज	"	"
२२३. हम मने है विमराज ठोरे कन्धन की	ममनराज	"	"
२२४. मम ममको ८. ममको	ममनराज	"	"
२२५. मम मम मदी कीमन ममन केटी बाटी	ममनराज	"	११७
२२६. हम मने को मदी ममन	"	"	"
२२७. मम ममन मने मम ममन ममनी	ममनराज	"	"
२२८. सब मम मम है ममन	ममनराज	"	"
२२९. सब मम मम मम मम	ममनराज	"	"
२३०. १ मम ममको किम ठीर	ममनराज	"	११८
२३१. मम मम ममनी के मम	ममनराज	"	"
२३२. सब मम मम है मम ममन मम	ममनराज	"	"
२३३. ममन ममन को ममनी ममनी	×	"	"
२३४. ममन मम ममन ममन	ममनराज	"	"
२३५. सब मम ममनी ममनराज	ममनराज	"	११९
२३६. मम ममन ममन है	ममनराज	"	"
२३७. मम १ म मम मम मम मम	ममनराज	"	"
२३८. मम मम ममन है ममन	ममनराज	"	"
२३९. मम ममन है ममन	ममनराज	"	१२०
२४०. मम मम मम मम मम	ममनराज	"	"

२४१	मैं बदा तेरा हो स्वामी	धाननराय	हिन्दी	१२३
२४२	जै जै हो स्वामी जिनराय	रूपचन्द	"	"
२४३	तुम ज्ञान विभो फूली बसत	धानतराय	"	१२४
२४४	नैननि ऐसी बानि परि गई	जगताराम	"	"
२४५	लागि लौ नाभिनदन स्त्री	भूधरदास	"	"
२४६	हम प्रातम को पहिचाना है	धानतराय	"	"
२४७	कौन समानन कोन्होरे जीव	जगताराम	"	"
२४८	निपट ही बठिन हरी	विजयकीर्ति	"	"
२४९	हो जो प्रभु दीनदयाल मैं बदा तेरा	अक्षयराम	"	१२५
२५०	जिनवाणी दरयाव मन मेरा	गुणचन्द्र	"	"
२५१	मनहु महागज राज प्रभु	"	"	"
२५२	इन्द्रिय ऊपर असवार चैनन	"	"	"
२५३	भारसी देखत मोहि भारसी लागो	ममयसुन्दर	"	१२६
२५४	काके गढ फौज खढी है	×	"	"
२५५	दरवाजे बेडा खोलि खोलि	अमृतचन्द्र	"	"
२५६	चेति रे हित चेति चेति	धानतराय	"	"
२५७	बितामणि स्वामी सोचा साहव मेरा	वनारसीदास	"	"
२५८	सुनि माया ठगिनी तैं सब ठिगी धामा	भूधरदास	"	१२७
२५९	चलि परसैं श्री शिखरसमेद गिरिरी	×	"	"
२६०	जिन गुण गाओ रो	×	"	"
२६१	वीतराग तेरो माहिनी भूरत	विजयकीर्ति	"	"
२६२	प्रभु सुभरन की या विरिया	"	"	१२८
२६३	किये आराधना तेरी	नवल	"	"
२६४	घड़ी घन आजकी ये ही	नवल	"	"
२६५	मैय्या अपराध क्या किया	विजयकीर्ति	"	"
२६६	तजिके गये पीव हमको तकसौर क्या विचारी, नवल	"	"	१२९

२६३	होजी हा सुधानम एह निज पद भूलि गला	५	हिन्दी	१३६
२६४	मुनि बनन कीनि की जयडो	मोतीराम	"	१३७
रचना काल स० १८५३ लेखन काल सवत् १८५६ नागौर मे प० रामचन्द्र ने लिपि की ।				
२६५	छोक विचार	×	हिन्दी	ले० कान १८५७ १३७
२६६	मावरिया अरज मुनी मुक्त दीन की हूं	प० रोमचंद	हिन्दी	१३८
२६७	आंदखेडी मे प्रभुजी राजिया	"	"	"
२६८	ज्यो जानत प्रभु जोग धर्या है	चन्द्रभान	"	"
२६९	आदिनाथ की विनती	मुनि बनक कीर्ति	"	२० वान १८५६ १३९-४०
३००	पादर्वनाथ की आरतो	"	"	१४०
३०१	नगरी की बसावत का सवत्वार विवरण	"	"	१४१

सवत् ११११ नागौर मठाणों आसा सोज २ दिन ।

" ६०६ दिली यमार्द अनगवान तु वर वैसाय मुदी १२ भौम ।

" १६१२ अरजर पातगाह आगरी बसायो ।

" ७३१ राजा भोज उजणो बसाई ।

" १८०७ अहमदाबाद अहमद पातगाह बसाई ।

" १११५ राजा जोधे जोधपुर बसायो जेठ मुदी ११ ।

" १५४५ बीकानेर राव बीकै बसाई ।

" १४०० उदयपुर राणी उदयसिंह बसाई ।

" १४४५ राव हमीर न रावत फनोधी बसाई ।

" १०७७ राजा भोज २ बेटे बीर नारामण सेवाणो बसायो ।

" १५६६ रावल बीकै मर्याो बसायो ।

" १२१२ भाटी जैसे जैसलमेर बसायो सां (वन) बुदी १२ रवी ।

" ११०० पवार नाहरराव मडोवर बसायो ।

" १६११ राव मालदे माल कीट करायो ।

" १५१८ राव जोधावत मेहता बसायो ।

" १७८३ राजा जैसिंह जैपुर बसायो कछाबै ।

किरपा फुणि मोहन जीवणय, अरपुर मारोठ थानकयं ।
 मरवोपम लायक थान छजै, गुरु देख सु भागम भक्ति यजै ॥२॥
 तोर्यङ्कर ईस भक्ति धरै, जिन पूज पुरदर जेम करै ।
 चतुसघ सुभार घुरधरय, जिन चैति कैत्यालय फारकय ॥३॥
 व्रत द्वादस पालम सुद्ध खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुयरा ।
 बहु दान चतुर्विध देय सदा, गुरु शास्त्र मुदेव पुजै सुखदा ॥४॥
 धर्म प्रश्न जु श्रेणिक भूप जिसा, सद्यश्रेयास दानपति जु तिसा ।
 निज वस जु व्योम दिवाकरय, गुण मौख्य कलानिधि बोधमय ॥५॥
 सु इत्यादिक वीर्यम योगि बहु, लिखियो जु कहा लग वीर्य सह ।
 द्युढा गोठि जु श्रावग पच लसै, बुद्धि वृद्धि समृद्धि ध्यानन्द वसै । ६॥
 तिह योगि लिखै धर्म बुद्धि सदा, लहियो सुख सपति भोग मुदा ।
 ॥७॥

इह थानक भानन्द देव जपै, उत चाहत खेम जिनेन्द्र कृपै ।
 अपरच जु कागद आइ इतै, समाचार वाच्या परमन तितै ॥८॥
 सह वात जु लाय धमकर, धर्म देव गुरु पति भक्ति भर ।
 मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम सुदायक हो ॥९॥
 यशवत विनैवत दातृ गहो, गुणशील दयाधर्म पालक हो ।
 इत है व्यवहार सदा तुम को, उपराति तुमै नहि भौरन को ॥१०॥
 लिखियो लघु को विघमान यह, सुख पत्र जु बाहुडता लिखि हू ।
 वसूँ वाणँ वसूँ पुनि चन्द्र^१ क्रिय, वदि मास असख चतुर्दशियं ॥११॥
 इह नोटक छद सुचाल मही, लिखवी पतरी हित रीति वही ।
 ॥१२॥

तुम भेजि हू येक सफर नै, समचार कहा मुख तै सुझै ।
 इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवान सवै सुखतै ॥१३॥

॥ इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पचायती नुं ॥

२४०३. गुह्यका स २३ । पत्र बं १४२ । पा ८५३१ द. ब । पूर्ण । ब्रह्म-नामान्न ।

विशेष—विशेष एवमासी जे से विशिष्ट पाठों का संग्रह है ।

२४ ४ गुह्यका स २४ । पत्र बं १ । पा ७५६ द. ब । आपा-संस्कृत हिन्दी । विश्व-दुवा ।

पूर्ण । ब्रह्म-नामान्न ।

१ अनुविमर्श दीव्यद्वारा	आश्वीति	उद्भव	१-१२
२ जिनदीनान्न ब्रह्म	एकद्वारा	हिन्दी	११-१२
३ एवम् इति श्री ब्रह्म	आश्वीति	"	७०-७१
४ आदिनाम्न	×	"	७१-७२
५ श्रीगणेश ब्रह्म	×	"	७२-७३
६ श्रीगणेश ब्रह्म	×	"	१

२४०४. गुह्यका स २४ । पत्र बं १४३ । पा ९५६ द. ब । आपा-संस्कृत हिन्दी । जे ब्रह्म

१ २२ भागों में १३ ।

१ ब्रह्मद्वारा	×	संस्कृत	१ ५
२ अनुविमर्श दीव्य	×	"	१६-१७
३ ब्रह्मद्वारा	×	"	१८-१९
४ श्रीगणेश ब्रह्म	×	"	२०-२१
५ जिनदीनान्न (गुह्य)	×	"	२२-२३
६ श्रीगणेश ब्रह्म	गुह्य ब्रह्मदीति	हिन्दी	२४-२५
७ ब्रह्मद्वारा	×	संस्कृत	२ - १६
८ ब्रह्मद्वारा	×	"	१७-१८
९ ब्रह्मद्वारा	×	"	१९-२०
१० ब्रह्मद्वारा	×	"	२१-२२
११ ब्रह्मद्वारा	ब्रह्मदीति	"	२३-२४
१२ ब्रह्मद्वारा	ब्रह्मदीति	"	२५-२६
१३ ब्रह्मद्वारा	ब्रह्मदीति	"	२७-२८
१४ ब्रह्मद्वारा	×	हिन्दी	२९

गुटका-संग्रह]

१५ दोसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	×	संस्कृत	१५१-५४
१६ शास्त्रजयमाला	×	प्राकृत	१५५-५१

५१०६ गुटका सं० २६ । पत्र सं० १४३ । भा० ५५४ इच्छ । ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ बुदी २ ।

पूर्णा । दशा-जोर्णा ।

१ विपापहारस्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२ भूपालस्तोत्र	भूपाल	"	५-६
३ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	६-१३
४ सामयिक पाठ	×	"	१३-३२
५ भक्तिपाठ (सिद्ध भक्ति आदि)	×	"	३३-७०
६ स्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्राच	"	७१-८७
७ वन्देस्तान की जयमाला	×	"	८८-८९
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	८९-१०७
९ श्रावकप्रतिक्रमण	×	"	१०८-२३
१० गुर्वावलि	×	"	१२४-३३
११ कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	"	१३४-१३६
१२ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१३६-१४३

संवत् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी द्वितीया रवौदिने अर्घ्यह श्री धनोभेन्द्रो श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसमे सरस्वतीगण्डे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानन्दि पट्टे भ० श्रीमस्त्रिभूषणपट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टे भ० श्रीभ्रमयचन्द्रपट्टे भ० श्रीभ्रमयनन्दिपट्टे भ० श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीकुमुदचन्द्रास्तपट्टे भ० श्रीभ्रमयचन्द्र ग्रहा श्री भ्रमयसागर सहायेनेव क्रियाकलापपुस्तक लिखित श्रीमदधनोभेन्द्रगच्छ हुंयहजातीय लघुशास्त्राया मुमुक्षुस्य परिह-
रविदासस्य भार्या वाई कीकी तयो सभवा सुता भताइनाम्ने प्रदत्त पठनार्थ व ।

५४०७ गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५७ । भा० ६५५ इच्छ । ले० काल सं० १८८७ । पूर्णा । दशा-
सामाय ।

विशेष—५० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१ शास्त्र पूजा	×	संस्कृत	१-२
२ स्फुट हिन्दी पद्य	×	हिन्दी	३-७

१. नंदन वट	×	नंदन	५-२
४. वामनानी	×	"	२-११
२. टील बीबीबी नाम	×	हिन्दी	१२-१३
१. वरुणपट्ट	×	नंदन	१३-१४
७. दीर्घनामस्तोत्र	×	"	१४-१५
पञ्चमस्तोत्र	गुटभ	हिन्दी	१५-१६
८. पञ्चमस्तोत्र	×	नंदन	१६-१७
१. वीरवामनस्तोत्र	×	"	१७-१८
११. वरुणपट्ट	×	"	१८-१९
१२. वरुणपट्ट	×	"	१९-२०
१३. वरुणपट्ट	×	हिन्दी	२०-२१
१४. वरुणपट्ट	गुटभ	नंदन	२१-२२
१५. वरुणपट्ट	गुटभ	नंदन	२२-२३
१६. वरुणपट्ट	गुटभ	"	२३-२४
१७. वरुणपट्ट	गुटभ	"	२४-२५
१८. वरुणपट्ट	गुटभ	"	२५-२६
१९. वरुणपट्ट	गुटभ	"	२६-२७
२०. वरुणपट्ट	गुटभ	"	२७-२८
२१. वरुणपट्ट	गुटभ	"	२८-२९
२२. वरुणपट्ट	गुटभ	"	२९-३०
२३. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३०-३१
२४. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३१-३२
२५. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३२-३३
२६. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३३-३४
२७. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३४-३५
२८. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३५-३६
२९. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३६-३७
३०. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३७-३८
३१. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३८-३९
३२. वरुणपट्ट	गुटभ	"	३९-४०
३३. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४०-४१
३४. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४१-४२
३५. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४२-४३
३६. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४३-४४
३७. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४४-४५
३८. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४५-४६
३९. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४६-४७
४०. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४७-४८
४१. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४८-४९
४२. वरुणपट्ट	गुटभ	"	४९-५०
४३. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५०-५१
४४. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५१-५२
४५. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५२-५३
४६. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५३-५४
४७. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५४-५५
४८. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५५-५६
४९. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५६-५७
५०. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५७-५८
५१. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५८-५९
५२. वरुणपट्ट	गुटभ	"	५९-६०
५३. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६०-६१
५४. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६१-६२
५५. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६२-६३
५६. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६३-६४
५७. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६४-६५
५८. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६५-६६
५९. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६६-६७
६०. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६७-६८
६१. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६८-६९
६२. वरुणपट्ट	गुटभ	"	६९-७०
६३. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७०-७१
६४. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७१-७२
६५. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७२-७३
६६. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७३-७४
६७. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७४-७५
६८. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७५-७६
६९. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७६-७७
७०. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७७-७८
७१. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७८-७९
७२. वरुणपट्ट	गुटभ	"	७९-८०
७३. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८०-८१
७४. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८१-८२
७५. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८२-८३
७६. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८३-८४
७७. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८४-८५
७८. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८५-८६
७९. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८६-८७
८०. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८७-८८
८१. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८८-८९
८२. वरुणपट्ट	गुटभ	"	८९-९०
८३. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९०-९१
८४. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९१-९२
८५. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९२-९३
८६. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९३-९४
८७. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९४-९५
८८. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९५-९६
८९. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९६-९७
९०. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९७-९८
९१. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९८-९९
९२. वरुणपट्ट	गुटभ	"	९९-१००

२९ श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६-२८
३० क्षेत्रपालपूजा	×	"	१२८-३२
३१ चितामणीपार्ष्णनाथपूजा स्तोत्र	×	संस्कृत	१३२-३६
३२ कलिकुण्डपार्ष्णनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६-३९
३३ पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०-४२
३४ सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१४३-४६
३५ ज्योतिष चर्चा,	×	"	१४७-१५७

५४०८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । आ० ८३×७ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५४०९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २१ । आ० ६३×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मगसिर बुदी

१० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत वा सामायिक पाठ है ।

५४१० गुटका सं० ३० । पत्र सं० ८ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १३ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमें नित्य नियम पूजा है ।

५४१२ गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १०२ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८९६

फागुण बुदी ३ । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें प० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है । तनमुख मोनी ने अलवर में साहू

डुलोचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० २४० । आ० ५×६ इञ्च । विषय-भजन संग्रह । ले० काल × ।

पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनो का संग्रह है ।

५४१४ गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४१ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०८

पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

१. अथवा पाठ	×	संस्कृत	५-६
४. नामावली	×	"	६-११
२. टीका श्रीश्री टीका	×	हिन्दी	११-११
६. अर्थपाठ	×	संस्कृत	११-११
७. अर्थपाठ	×	"	१४-१५
पञ्चमस्कन्धा	पुस्तक	हिन्दी	१५-२
८. अष्टमस्कन्धा	×	संस्कृत	२१-२३
९. अष्टमस्कन्धा	×	"	२३-२७
११. अष्टमस्कन्धा	×	"	२७-२८
१२. अष्टमस्कन्धा	×	"	२८-३
१३. अष्टमस्कन्धा	×	हिन्दी	३१-३३
१४. अष्टमस्कन्धा	पुस्तक	संस्कृत	३४-४५
१५. अष्टमस्कन्धा	पुस्तक	संस्कृत	४७-५१
१६. अष्टमस्कन्धा	पुस्तक	"	५२-५३
१७. अष्टमस्कन्धा	×	"	५३-५४
१. अष्टमस्कन्धा	×	"	५४-५५
१८. अष्टमस्कन्धा	पुस्तक	"	५५-५७
१. अष्टमस्कन्धा	×	हिन्दी	५८-६१
२१. अष्टमस्कन्धा	×	संस्कृत	६२-६७
२२. अष्टमस्कन्धा (१-२ अंश)	पुस्तक	"	६८-६९
२३. अष्टमस्कन्धा	पुस्तक	हिन्दी	६९-७१
२४. अष्टमस्कन्धा	पुस्तक	"	७१-७३
२५. अष्टमस्कन्धा	पुस्तक	"	७३-७४
२६. अष्टमस्कन्धा	×	"	७४-७५
२७. अष्टमस्कन्धा	×	"	७५-७६
२८. अष्टमस्कन्धा	×	"	७६-७७

२६ श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६-२८
३० क्षेत्रपालपूजा	X	"	१२८-३२
३१ चित्तामणीपार्वनाथपूजा स्तोत्र	X	संस्कृत	१३२-३६
३२ कलिकुण्डपार्वनाथ पूजा	X	हिन्दी	१३६-३९
३३ पद्मावतीपूजा	X	संस्कृत	१४०-४२
३४ सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्द	"	१४३-४६
३५ ज्योतिष चर्चा	X	"	१४७-१५७

५४०८ गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । भा० ८३×७ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५४०९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २१ । भा० ६३×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मगसिर मुदी १० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत का सामायिक पाठ है ।

५४१० गुटका सं० ३० । पत्र सं० ८ । भा० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें अक्षामर स्तोत्र है ।

५४११ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १३ । भा० ६३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमें नित्य नियम पूजा है ।

५४१२ गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १०२ । भा० ६३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८९६ काष्ठण बुदी ३ । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें ५० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है । तनमुख सोनी ने श्रवण में साह दुलोचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० २४० । भा० ५×६ इञ्च । विषय-भजन संग्रह । ले० काल X । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनो का संग्रह है ।

५४१४ गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४१ । भा० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०८ पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

१ ग्योनिपसार

दुवापन

हिली

१-१

२ बाल धं १७१२ कर्तिक सुदी १ ।

घादिमन बोझा—

सबन जपत गुर धनुर गर, परबल नलुपति पास ।
 सो कलुपति बुझि बोझिये जल धर्मो बिलसल ॥
 धर बरछो बरबल बरबल बुधत राबिबा स्थाप ।
 बरछ ध्यान मिल बरब को गुर व (२) बुझि धार्यो बाब ॥
 हरि राजा राधा हरि, बुधन पुरता बाल ।
 बलत धारवी मैं मयों हूयो ब्रिबिन्ध बाल ॥
 बौद्धति बोझै नल पर, एकहि बुधन विचोर ।
 मनो लख बल बोझ ब्रिबिन्ध बाब धोर ॥
 बरछे ब्रिबि बाब बिल नै बरब राबिबा स्थाप ।
 नमस्कार नर बोझि नै बाबल विररापन ॥
 ताहिबहुगुर कहर मे बामन रायापन ।
 गुवापन लिहि बंन में ता गुन विरवापन ॥६॥
 लख बलन को लख बह गुनी पंडितन पाल ।
 ताके लखै लोचन नै बीझा नरे बवाल ॥७॥
 लो बचन के गुनी लखी बु बरब विचारि ।
 ताका बहुविधि हूँ ली, बहो लख विचार ॥८॥
 लखन बलपद नै बरब धोर बागुनै ब्रिबि ।
 बानिज मुदी बलवी बुध, बली बल पदबर्धन ॥९॥
 बल ज्यो लख बी नार बह निबी बु बरब विचारि ।
 बल बलवी बा लख बी लखे ज्योनिज लार ॥१०॥
 ज्योनिज लार बु लख बी बलन बह लखु लैल ।
 लखी नर बलन लखन गुदी गुदी बल देखि ॥११॥

अथ वरस फल लिखते—

सवत् महै होन करि, जनम वर (प) ली मित ।
 रहै भेष सो गत वरप, आवरदा म वित्त ॥६०॥
 भये वरप गत अरु, निख घर वाहू ईस ।
 प्रथम येक मन्दर है, ईह वही इततीस ॥६१॥
 अरतीस पहलै धूरवा, अक को दिन अपनै मन जानि ।
 हूजै घर फल तौसरो, चौथे अ अखिर ज ठान ॥६२॥
 भये वरप गत अक को, गुन घरवावो चित्त ।
 गुणाकार के अक म, भाग सात हरि मित ॥६३॥
 भाग हरै तै सात को, लब्ध अक सो जानि ।
 जो मिलै य पल में वट्टरि, फल तै घटी बखानि ॥६४॥
 घटिका मै तै दिवस मै, मिलि जै है जो अक ।
 तामे भाग जु सप्त को, हरि ये मित न सं ॥६५॥
 भाग रहै जो भेष सो, वचै अक पहिचानि ।
 तिन में फल घटीका दसा, जन्म मिलावो आनि ॥६६॥
 जन्मकाल के अत रवि, जितने बीते जानि ।
 उत्तर्न वाते अस रवि, वरस लिख्यो पहिचानि ॥६७॥
 वरस लग्यो जा अत मै, सोइ देत चित धारि ।
 वादिन इतनी घटी जु, पल बीते लग्न बीचारि ॥६८॥
 लगन लिखै तै गारह जो, जा घर बैठो जाह ।
 ता घर के फल सुफल को, दोजे मित बनाइ ॥६९॥
 इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार संपूर्णम्

४४१४ शुद्धका सी० ३४। पत्र लं १५। मा १२०२३ दण्ड। माया ×। विषय-१. वृद्ध। ने वल

६ १८८३ माया कुटी ३। कुटी विद्वत्। वला-सायन्य।

विशेष—अनुर में प्रतिविधि की गई थी।

१ वैदिकारवरी के दण्ड लं	×	हिन्दी पत्र	१ ५
२ निर्वाण कर्म्य मला	मललीवाल	२ मल १७४।	१ ७
३ शर्वन पाठ	×	मल्लन	
४ पार्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१-१
५ शर्वन पाठ	×	"	११
६ राजपुत्रजी	मालकन विनोदीनाथ	"	१२-१

४४१५ शुद्धका सी ३५। पत्र लं १६। मा १०२९ दण्ड। माया-हिन्दी। विषय-वैद्वत्। ने मल १७८२ माद्र कुटी ३। कुटी लल्लु। वला-जीर्ण।

विशेष—कुम्भवा जीर्ण है। जिति विद्वत् एवं विलकुल धनुष है।

१ लीना वल्लरी की वल	×	हिन्दी मापीय पत्र लं ४१५।	१ २४
२ वरलीमावरी के लं	×	"	२४-१
		ने मल १७ २ माद्र कुटी	
३ वल लीना	×	हिन्दी	१०-११
४ ब्रह्मन् परिष	×	"	११-१४
५ बोद्धमन् दला की वला	×	"	१२-४२
		११३ मल। वीरपुष्प वला के ललाट वर।	
६ मलदवालावली	×	हिन्दी	४२-४४
		ने १७८२ माद्र कुटी १६।	
७ ललर वीट	×	"	१११ पत्र ४४ २१
कुलीना	×	"	२१-२२
८ वल वील वला	×	"	२२-२३
९ कुलीना	×	"	पत्र लं २४ २१-१

११ बारहखडी	×	हिन्दी	६०-६२
१२ विरहमञ्जरी	×	"	६२-६८
१३ हरि घोला चित्रावली	×	" पद्य स० २६	६८-७०
१४ जगन्नाथ नारायण स्तवन	×	"	७०-७४
१५ रामस्तोत्र कवच	×	संस्कृत	७५-७७
१६ हरिरस	×	हिन्दी	७८-८५

विशेष—गुटका साजहानावाद जयसिंहपुरा में लिखा गया था । लेखक रामजी मीणा था ।

५४१७ गुटका स० ३७ । पद्य स० २४० । आ० ७३×५३ इञ्च ।

१ नमस्कार मन्त्र सटीक	×	हिन्दी	३
२ मानवावनी	मानकवि	"	५३ पद्य हैं ४-२८
३ चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति	×	"	३२
४ आयुर्वेद के मुसखे	×	"	३५
५ स्तुति	कनककीर्ति	"	३७

लिपि स० १७६६ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार

६ नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	संस्कृत	४१
-----------------------	---	---------	----

कुशला सौगाणी ने स० १७७० मे सा० फतेहचन्द गोदीका के भोत्ये से लिखी ।

७ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६ अध्याय तक ६१
८ नैमोदवररास	ब्रह्मराममल्ल	हिन्दी	२० स० १६१५ १७२
९ जोगीरासो	जिनदास	"	लिपि स० १७१० १७६
१० पद	×	"	"
११ आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	"	२०४
१२ दानशीलतपभावना	×	"	२०५-२३६
१३ चतुर्विंशति छप्पय	शुणकीर्ति	"	२० स० १७७७ असाढ़ वदी १४

आदि भाग—

आदि भक्त जिन देव, मेव मुर नर तुम करता ।

जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतहि भ्रम हरता ॥

तरपुति तगद पताह ज्ञान धनवीरिष्ठ दूरह ।
 तारह भावी बाह बैमि बुद्ध दानिह भरह ॥
 दूर निरपन्ध मण्डप कर, धिन नजवीतो मन भरह ।
 कुनवीरि इय उभारह सुन वताह व बैसा तरह ॥१॥
 बाविराम कुलधन्व नंद नन्देहि जामर ।
 काह वपुष कठ पञ्च वृषभ बाह्यन धु बज्रमण्ड ॥
 हेम नर्न कहि बाहु, धामु नरन धु बीरवी ।
 दूरन वरवी एह जय्य मयोध्या वरवी ॥
 यरवहि राहु नु लीपि कर घस्टारन चीनय तथा ।
 कुनवीरि इय उभारह, मुनविठ लोक नन्दु तथा ॥२॥

अन्तिम भाग—

बीमूनसंभ निम्नप्रपञ्च तरपुतिन वज्रमण्ड ।
 विहि नहि विन नजवीम देह सिद्धा मन बाधन ॥
 परम ज्ञान प्रसाधु, ज्ञान कुलधन्व मनुजानी ।
 वरवीविहारी पतिव्रताहि, राहु विनीतति धानी ॥
 उतरहसहस्र लोचनार, वरि मन्त्रज नजवति करन ।
 कुनवीरि इय उभारह, धु वपुष वरि विनवर वरन ॥

॥ इति श्री कृष्णविरचितोर्वकर ज्ञेय्य सम्पूर्ण ॥

१४ लीखरण

कुनवीरि

हिन्दी

रचना सं १७११

२४

२४१८ गुटका सं २—वपुषेका—२२४।—या १ X ७१। वरना—वीरि ।

विशेष—१४ छल तक बापुर्वर के बाधे मुक्त हैं ।

१ वपुषेकी वरना

X

हिन्दी

कई दोषों का एक गुटका है ।

२ नाड़ी वरिणा

X

वस्तुतः

करीब २ दोषों को विनिश्चया वा विस्तृत वर्णन है ।

३ शील सुदर्शन रासो × हिन्दी ३७-४२

४ पृष्ठ सख्या ५२ तक निम्न अवतारों के सामान्य रंगीन चित्र हैं जा प्रदर्शनों के योग्य हैं ।

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार (६) वराहावतार (७) नृसिंहावतार (८) कल्किावतार (९) बुद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा (११) पार्श्वनाथ चैत्यमय (पार्श्वनाथ की मूर्ति सहित)

५ मकुनावली × संस्कृत ५६

६ पाशाकेवली (दाप परीक्षा) × हिन्दी ६६

जन्म कुण्डली विचार

७ पृष्ठ ६८ पर नगे हुए व्यक्ति के वापिस आने का पत्र है ।

८ भक्तामरन्तोष मानतु ग संस्कृत ७३

९ वैद्यमनोत्सव (भाषा) नयन सुख हिन्दी ७४-८१

१० राम विनाद (भाषुर्वेद) × " ८२-८८

११ सामुद्रिक शास्त्र (भाषा) × " ८९-११२

लिपी कर्ता—सुखराम ब्राह्मण पचोली

१२ शोधबाध काशीनाथ संस्कृत

१३ पूजा सग्रह × " १६४

१४ योगीरासो जिनदास हिन्दी १६७

१५ तत्त्वार्थसूत्र " उमा स्वामि संस्कृत २०७

{ १६ कल्याणमंदिर (भाषा) बनारसीदास हिन्दी २१०

१७ रविवारव्रत कथा × " २२१

१८ व्रतों का व्योरा × " "

अन्त म ६४ योगिनी आदि के यत्र हैं ।

४४१६ गुटका सं० ३८—पत्र सं० २४ । भा० ६५६ इक्ष । पूर्ण । दशो—सामान्य ।

विशेष—सामान्य पाठा का सग्रह है ।

४४२ गुटका स ४०—पत्र १ १ १ । या ॥४४ दण्ड । भाषा—हिन्दी । ले १ २५
पुर्ण । अमान्य कुल ।

निलेन—मुनायों का बंधू तथा पुत्र ५ से बरक स्वर्ण एवं कुम्भी भावि का वरिष्ठ विवाह हुआ है ।

४४३ गुटका स ४१—पत्र १४३—२४७ । या०—४४३१ दण्ड । लेखन काल—अर्थात् १४३२
बद्ध पुरी ७ । पूर्ण । वका काल ।

१. समन्वयवाचक	बनारसीवाच	हिन्दी	पत्र १ १११३ यातो गु. १११-११
२. भाषितवनाला	वचन कर्ता	हिन्दी	संस्कृत ब्रह्मठ मुनायित ३२ १११
३. वचनवाचक	वका कालवाच		
४. वचनवाचक	वाचनार्थ वचनवाच	संस्कृत	निति अर्थात् १ ११

कुनायनवाचक ३ कर्मी तथा ३ वचनार्थ वचनार्थ वाच से अति निति की । पुत्र १११ १११ ।

५. वचनवाचकवाचक	×	॥	निति १ ११ १११-१११
६. वचनवाचक	×	संस्कृत	१११-११३
७. वचनवाचक	वचनवाच	"	११३-११५
८. वचनवाचक	×	"	११५
९. वचनवाचक	×	"	११५-११७

निलेन १ ११३ वचनवाचक १

१०. वचनवाचक	बनारसीवाच	हिन्दी	११
११. वचनवाचक	×	संस्कृत	१११
१२. वचनवाचक	वचनवाच	हिन्दी	११३-११५
१३. वचनवाचक	बनारसीवाच	"	११५-११७
१४. वचनवाचक	वचनवाच	"	११७-११९
वचनवाचक १ १११			
१५. वचनवाचक	वचनवाच	हिन्दी	१११ ११३
१६. वचनवाचक	वचनवाच	"	११३-११५

१६. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवती दास	"	१३-३७
१७. श्रीपाल स्तुति	×	हिन्दी	१३७-३८
१८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१३८-४५
१९. सामायिक बड़ा	×	"	१४५-५२
२०. लघु सामायिक	×	"	१५२-५३
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	हिन्दी	१५३-५४
२२. बार्डस परिपह	भूषरदास	"	१५४-५७
२३. जिनदर्शन	"	"	१५७ ५८
२४. सवोधपचासिका	धानतराय	"	१५८-६०
२५. बीसतीर्थकर की जकटी	×	"	१६०-६१
२६. नेमिनाथ भगल	लाल	हिन्दी	१६१ १६७
२७. दान बावनी	धानतराय	"	२० स० १७४४ सावरण सु० ६
२८. चेतनकर्म चरित्र	श्रेय्या भगवतीदास	"	१६७-७१
२९. जिनसहस्रनाम	भासाधर	"	१७१-१८३
३०. भक्तामरस्तोत्र	भानतु ग	संस्कृत	२० १७३६ जेठ बदी ७
३१. बन्ध्याणमन्दिरस्तोत्र	मुमुक्षुचन्द	"	१८६-८९
३२. विपाकहारस्तोत्र	धनझाय	संस्कृत	१८९-९२
३३. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१९२-९४
३४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१९४-९६
३५. भूगालनौबीसी	भूपाल नवि	"	१९६-९८
३६. देवपूजा	×	"	१९८-२००
३७. विरहमान पूजा	×	"	२००-२०२
३८. सिद्धि सा	×	"	२०२-२०५
	×	"	२०५-२०६
		"	२०६-२०७

१२. धोलकृकारमुखा	×	"	२ ७-१०५
४. बलसकमुखा	×	"	२ -२ ६
४१. रानकमुखा	×	"	१ ६-१४
४२. कश्चिमुखा	×	"	११४-१२३
४३. विद्यामसि पार्श्वनाथमुखा	×	"	११४-११
४४. शक्तिनाथस्तोत्र	×	"	११६
४५. पार्श्वनाथमुखा	×	"	दुर्लभ ११६-१७
४६. श्रीशिव तीर्थङ्कर स्तवन	विशेष	"	१२ -१७
४७. लघुहृदयित पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	११७-४
४८. कश्चिमुखास्तवनाथस्तोत्र	×	"	१४०-४१
लेखन काल १८६६ नाम मुदी ३			
४९. परमात्मस्तोत्र	×	"	१४१-४६
५. लघुविनयस्तोत्र	×	"	१४१-४६
लेखन काल १८७० विद्याल मुदी ३			
५१. कश्चिमुखास्तोत्र	×	"	१४१-४६
५२. विनयस्तोत्र	×	"	१४१-४४
५३. बहुराजना पुस्तक	×	हिन्दी बन्ध	१४७
५४. नीलकण्ठ स्तोत्र	×	"	"

१४२. गुटका स ४२। पत्र १ १२३। पत्र ७४४ दृष्ट। दुर्लभ।

विशेष—इसमें बृहदारण्यक की अर्थात् अष्टावक्र है।

१४३. गुटका स ४३—पत्र १ १२३। पत्र ७४४ दृष्ट। बन्ध—विनय। ये बन्ध १८७०
वार्तिक मुद्रा ११। दुर्लभ एवं मुद्रा।

विशेष—यह वेदव्याख्या है। तात्त्विक नीलकण्ठ के पञ्चाङ्ग अनुसार नीलकण्ठ के प्रतिनिधि की भी। अर्थात्
बहुत ही साधारण है। सामाजिक बन्ध का भी काव्य है।

१४४. गुटका स ४४। पत्र १ १२३। पत्र ७४४ दृष्ट। बन्ध—हिन्दी। दुर्लभ। बन्ध नीलकण्ठ।

विशेष—अर्थात् काव्य है।

५४७५ गुटका स० ४५ । पत्र स० १४० । आ० ६३×५ इच्छ । पूर्ण ।

१ देवशास्त्रगुरु पूजा	×	संस्कृत	१-७
२ कमलाष्टक	×	"	६-१०
३ गुरुस्तुति	×	"	१०-११
४ सिद्धपूजा	×	"	१२-१५
५ कलिकुण्डस्तवन पूजा	×	"	१६-१६
६ षोडशकारणपूजा	×	"	१६-२२
७ दशलक्षणपूजा	×	"	२२-३२
८ नन्दीश्वरपूजा	×	"	३२-३६
९ पञ्चमेरुपूजा	×	"	३६-४५
१० अनन्तचतुर्दशी पू ।।	भट्टारक महीचन्द्र	"	४५-५७
११ ऋषिमण्डलपूजा	" मेरुचन्द्र	"	५७-६५
१२ जिनसहस्रनाम	गीतमस्वाभी	"	६५-७४
१३ महाभिषेक पाठ	आशाधर	"	७४-८६
१४ रत्नत्रयपूजाविधान	×	"	८६-१२१
१५ ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	"	१२२-२५
१६ क्षेत्रपाल की आरती	×	हिन्दी	१२६-२७
१७ गणधरवल्लभमंत्र	×	"	१२८
१८ आदित्यनारकथा	वादीचन्द्र	संस्कृत	१२८-३१
१९ गीत	विद्याभूषण	हिन्दी	३१-३३
२० लघु सामायिक	×	"	३३-३४
२१ पञ्चवतीछन्द	भ० महीचन्द्र	संस्कृत	३४-१४०
		"	

५४७६ गुटका स० ४६—पत्र स० ४६ । आ० ७३×५ इच्छ । भाषा-हिन्दी । पूर्ण एव

अशुद्ध ।

विशेष—वसंतराज कृत शकुन शास्त्र है ।

५४२७. गुटका सं ४७ । पत्र सं ३४ । भा ५४ राज पूर्ण । वषा-गामात्र ।

१. दूर के कम नाय	×	नष्ट	१
२. कभी मोय स्तोत्र	×	"	१ २
३. विष्णुविधि	×	"	२-३
४. मार्कण्डेयपुराण	×	"	४ २६
५. कालीकृतनाम	×	"	५५-१३३
६. मुनिवृद्धा	×	"	१३३-१४
७. विष्णुपुत्र	×	"	१३३-६६
८. मंत्र-चंद्रिका	×	नष्ट	१६६-२३३
९. ज्वालाभक्तिपी स्तोत्र	×	"	२३३-३६
१०. हारपीटी कथा	×	"	२३३-७३
११. नाट्यसूत्र कथ एवं नष्ट	×	"	२३३-७६
१२. बाहुधोयनिक	×	"	२३३-१५१
१३. वीर पुत्र	×	"	२ १-८७
१४. श्रीमती कथा	×	"	२५५-३३
१५. बालकवृद्धी स्तोत्र	अक्षरधार	"	३३३-१४

५४२८ गुटका सं ४८ । पत्र सं — २२२ । भा — ६।५४२१ राज पूर्ण । वषा-गामात्र ।

१. विष्णुसूक्त	वै. अक्षरधार	नष्ट	१-१४१
२. प्रकृति	बहु. बांधीवर	"	१४१-४५

बोद्धा—

३३ वषा अक्षरधार । वषा प्रकृति ।

धीमर्त्य सप्तविंशति विष्णुसूक्त कथकृतम् ।

अक्षरधार अक्षरधार वषावर्धनी वषावर्धनी ॥ १ ॥

वषावर्धनी वषावर्धनी वषावर्धनी-वषावर्धनी ।

वषावर्धनी वषावर्धनी वषावर्धनी वषावर्धनी ॥ २ ॥

वषावर्धनी वषावर्धनी वषावर्धनी वषावर्धनी ।

वषावर्धनी वषावर्धनी वषावर्धनी वषावर्धनी ॥ ३ ॥

मूलसधे वलात्कारगणे सारस्वते सति ।
 गच्छे विश्वपदष्ठाने वधे वृ दारकादिति ॥ ४ ॥
 नदिसधोभवत्तत्र नदितामरनायक ।
 कु दकु दार्यसज्जोऽसौ घृतरत्नाकरो महान् ॥ ५ ॥
 तत्पट्टक्रमतो जात सर्वसिद्धान्तपारग ।
 हमीर-भूपसेव्योय धर्मचद्रो यतीश्वर ॥ ६ ॥
 तत्पट्टे विश्वतत्त्वज्ञो नानाग्र यविशारद ।
 रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीर्तिरभून्मुनि ॥ ७ ॥
 शकम्बामिसभामध्ये प्राप्तमानशतोत्सव ।
 प्रभाचद्रो जगद्व द्यो परवादिभयकर ॥ ८ ॥
 कवित्वे वापि वक्त्रुत्वे मेधावी शान्तपुद्रक ।
 पयनदो जिताक्षोभूतत्पट्टे यतिनायक ॥ ९ ॥
 तच्छिष्योजनिमव्यौघपूजिताह्निविशुद्धधी ।
 श्रुतचद्रो महासाधु साधुलोककृतार्थक ॥ १० ॥
 प्रामाणिक प्रमाणेऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधी ।
 लक्षणो लक्षणार्थज्ञो भूपालवृ दसेवित ॥ ११ ॥
 भर्हत्प्रणीततत्त्वार्थजाद पति निशापति ।
 हतपचेपुरम्तारिजिनचद्रो विचक्षण ॥ १२ ॥
 जम्बूद्व माफिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको ।
 तत्रास्ति भारत क्षेत्र सर्वभोगफलप्रद ॥ १३ ॥
 मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तम ।
 धनधान्यसमाकीर्णग्रामैर्देवहिंसितमे ॥ १४ ॥
 नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्त्वसुखकर ।
 मनोगतमहाभोग दाता दातृसमन्वित ॥ १५ ॥
 तोडास्थोभूत्महादुर्गो दुर्गमुख्य त्रिगापर ।
 तच्छाखानगर योपि विश्वभूतिविधाययत् ॥ १६ ॥

- स्वच्छासीयधूमै कापिङ्गुगतिनिर्गहम् ।
 श्रीमद्भद्रकालापरहृत्पदापरहृत्पदा ॥ १७ ॥
 अर्धत्वंनामके देवे अमरार्धवराचरे ।
 विविधपद-योहि अतिप्रमत्तमुक्तिरो ॥ १८ ॥
 यत्तयाविपतिस्तप इन्द्रासी कस्तुभुक्तः ।
 बालवार्धो विधानेव देवतापरमार्थक ॥ १९ ॥
 विपदाय बालकी जातो बुद्धविपदापरक ।
 नैकादमंविपदापो विपदापरविपदापर ॥ २० ॥
 योर्ध्वार्धभुक्तोरेवो राजनीतिविपदापर ।
 एवार्धो विपदापरम् भूयस्को महापरी ॥ २१ ॥
 अर्धोर्ध्वविपदापरक अमरार्धपरमार्थक ।
 बाधवत्तापर अर्धो विपदापरभुक्तोरेव ॥ २२ ॥
 बालवत्तापरार्धक अर्धोर्ध्वविपदापरक ।
 योर्ध्वविपदापरक अमरार्धपरमार्थक ॥ २३ ॥
 बुद्धपरवीरभुक्तोर्ध्वविपदापरमार्थक ॥
 योर्ध्वपरमार्थक विपदापरमार्थक ॥ २४ ॥
 श्रीमत्तापरमार्थक बुद्धपरमार्थक ॥
 देवता बाधु यत्तापरमार्थक अमरपरमार्थक ॥ २५ ॥
 एव अर्धो महापार्थक श्रीमत्तापरमार्थक ।
 विपदापरमार्थक अमरपरमार्थक ॥ २६ ॥
 एव अर्धो अमरार्थक बुद्धो महापार्थक ।
 अमरपरमार्थक अमरपरमार्थक ॥ २७ ॥
 विपदापरमार्थक अमरपरमार्थक ॥
 अर्धोर्ध्वमहापार्थक अमरपरमार्थक ॥ २८ ॥
 एवार्धो महापार्थक अमरपरमार्थक ॥
 अमरपरमार्थक अमरपरमार्थक ॥ २९ ॥

तथ्यादरोभवद्दीरो नायको खचन्द्रमा ।
 नोकप्रशस्यसत्कीर्ति धर्मसिंहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥
 सत्कामिनो महद्दोलधारिणी शिवकारिणी ।
 चन्द्रस्य वसती ज्योत्स्ना पापघ्नान्ताहारिणी ॥ ३१ ॥
 कुनन्दयविशुद्धासीत् सधर्मक्तिमुरूपणा ।
 धर्मनिन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्मवृत् भाक्तिका ॥ ३२ ॥
 पुत्रावाम्नान्तयो स्वीयरूपनिर्जितमन्मयी ।
 लक्षणाक्षूणसदगात्रो योपि मानसवल्लभौ ॥ ३३ ॥
 महर्द्धे वसुसिद्धान्तगुरुमत्तिसमुद्यतो ।
 विद्वज्जनप्रियौ सौम्यौ मोल्हाद्वयपदार्यकौ ॥ ३४ ॥
 सुधारद्विष्टीरसमानकीर्ति कुटुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी ।
 प्रतापवान्धर्मधरो हि धीमान् खण्डेलवालान्वयवजमानु ॥ ३५ ॥
 भूपेन्द्रकार्यविकरो दयाढ्यो पूढ्यो पूर्णेन्दुसकासमुखोवरिष्ठ ।
 श्रेष्ठी चिवेकाहितमानसोऽसौ सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ॥ ३६ ॥
 ह्यम्नद्वये यस्य जिनार्चनं वैजैनवरावागमुख्यपंकजे च ।
 ह्यक्षरं बार्हत्मक्षयं वा करोतु राज्यं पुरुषोत्तमोय ॥ ३७ ॥
 सत्प्राणवल्लभाजाता जैनव्रतविधानिनी ।
 मती मल्लिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥ ३८ ॥
 चतुर्विधस्य सधस्य भवत्पुत्रासि मनोरथी ।
 जैनश्री सुधावाल्क्योकोशाभोजसन्मुखी ॥ ३९ ॥
 हर्षमदे सहर्षात् द्वितीया तस्य वल्लभा ।
 दानमालीन्सवानन्दवद्विताशेषचेतस ॥ ४० ॥
 श्रीरामसिंहेन वृषेण मान्यश्चतुर्विधश्रीवरसधर्मकः ।
 प्रयोजिताशेषपुराणलोको नाथ चिवेकी चिरमेवजीयात् ॥ ४१ ॥
 माहारशास्त्रीपधजीवरक्षा दानैः पुं सर्वार्थकरेण साधु ।
 कल्पद्रुमोपाचककामधेनुर्नाथुमुसाधुर्जयतात्वरिष्या ॥ ४२ ॥

१ सयोगवत्तीसी	मानकवि	हिन्दी	१-२५
२ फुटकर रचनाएँ	×	”	२६-५८

५४३० गुटका स० ५० । पत्र स० ७४ । आ० ८५ इत्य । ने० काल १८६४ मगस सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—गगाराम वैद्य ने सिरोंज में ब्रह्मजी सतसागर के पठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

१ राजुल पञ्चीसी	बिनीदीलाल लालचंद	हिन्दी	१-५
२ चेतनचरित्र	भैयाभगवतीदाम	”	६-२६
३ नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्रह्मज्ञानसागर	”	२७-३१

नेमीश्वर राजुल को भगडो लिखते ।

आदि भाग—राजुल उवाच—

भोग अनोपम छोड़ी करी तुम योग लियों सो कहा मन ठाणो ।
सेज विचित्र तु लाई अनोपम सु दर नारि को सग न जानू ॥
सूक्त तनु सुख छोड़ि प्रतप्त काहा दुख देखत हों भनजानू ।
राजुल पूछत नेमि कु वर कू योग विचार बाहा मन भानू ॥ १ ॥

नेमीश्वर उवाच

मृन रि मति मुठ न जान जानत हों भव भोग तन जोर घटें हैं ।
पाप बड़े खटकर्म धके परमारथ को सब पैट फटे हैं ॥
इ द्रिय को सुख किंचित्काल ही भागिर दुख ही दुख रटे हैं ।
नेमि कु वर कहे सुनि राजुल योग बिना नहि कर्म कटे ह ॥ २ ॥

मध्य भाग—राजुलोवाच—

करि निरधार तजि घरवार भये व्रतधार प्रोक्त गोसाई ।
धूप भक्षण घनाघन धार तुवाट सहो कु काई के तोई ॥
भूख पियास अनेक परिमह पावन हो कटु सिद्धि आई ।
राजुल मार कहे सुविचार कु नेमि कु वर सुनु मन लाई ॥ ३७ ॥

नेमीश्वरोवाच

काहे को बहूत करो तुम स्थापन येक सुनो उपदेस हमारो ।
भोगहि भोग किये भव ह्वत काज न येक सरे कु तुम्हारी ॥

मातर जग्य करी अपमान के नाश बिना मनु जून में बारी ।

मैनी बड़े गुन पञ्चुन तु सब मोह छवि मे बाध छपारो ॥ १ ॥

अष्टम भाग—राजुकोलाव—

भायक अर्थ बिबा गुन केन काय कि सबत बैब सुनाई ।

भोय छवि बन भुव करि जिन बैब छवि जय बनत पाई ॥

बैर छनेक करी हृदय जिन भास्य की सब बन्ध सुनाई ।

मोय करी बन भाव करी करी पञ्चुन नार बई सब बाई ॥ २१ ॥

अवध—

आवि रचन्या विकैक कवन पुनरी समझायो ।

मैमिनाय हृद चित नभहु पञ्चुन तु सबावस्यो ॥

पञ्चमति अवीच के गुन भाव छवय बीस्यो ।

बहु जलजालर बड़े बाध मैमि पञ्चुन बीस्यो ॥ २२ ॥

॥ इति मैनीसर पञ्चुन विषय अन्तर्गत ॥

४ अष्टमिद्वयवत नया	विनवरीति	हिन्दी	१२-१३
५ पार्श्वनाथस्योच	नयनवदेव	अष्टम	१३
६ आदिनाथस्योच	मुनिमुक्तमह	"	
७ अर्धमातास्योच	×	"	१५
विनायकविनायकस्योच	×	"	१७
८ विनयविनायक भावा	नयनवीरवत	हिन्दी	१८
९ आचनस्योच	आचनस्योच	"	१९
१० दुर्धिनरी	दुर्धिनरी	"	४
११ आचनस्योच	नयनवीरवत	"	४१-४२
१२ अचानी अचनस्योच	×	"	४३
१४ को बटीय नु ताहव छारोमी	कुलावधिधन	"	"
१५ अच नीरी गुन बैसू	दीवद	"	४४
१६ अच नुनी गुन बैसू	दुर्धिनरी	"	४५

गुटका-समग्र १

१७ ऋषभजिनन्दबुद्धाङ्ग वन्दारिया	भावुकीनि	हिन्दो	४५
१८. वरु मराधना तेरी	नवल	"	"
१९. भूल भ्रमा गेई भवे	X	"	४६
२० श्रीपाददर्शन	X	"	४७
२१ भक्तामर भाषा	X	"	४८-४९
२२ सावरिया तेरे द्वार द्वार बारि जाऊं	जगतराम	"	४९
२३ तेर दरवार स्वामी डड हा नडे ह	X	"	५३
२४ जितजी बाकी मूरत मनटा मोह्यो	ब्रह्मबपू	"	"
२५ पार्यनाथ नीम	धानतराग	"	५५
२६. त्रिभुवन गुरु स्वामी	जिनदाम	"	२० स० १७५२, ५४
२७. ग्रहो जगद्गुरु	भूधरदास	"	५६
२८ चितामणि स्वामी नागा साहय मरा	बनारसीदास	"	५६-५७
२९. बन्ध्याणमिदरस्नाय	कुमुद	"	५७-६०
३० गरिबुग नी बिनती	ब्रह्मदत्त	"	६१-६३
३१ नीलवत न भेद	X	"	६३-६४
३२ पदमपर	गगाराग नैथ	"	६५-६८

५५५१. गुटका म० ५१ । पत्र म० १०९ । पान ८५६ द. व । विषय-संग्रह । न० पान १७६६
पागल मुदी ४ मगराग । पूर्ण । दया-सामाग ।

विषय-संग्रह जयपुर म विनि नी गर्ई नी ।

१ भावनागमदास	पामुदराग	मन्त्र	१-६०
२ नमामस्ताग विनी होका गति	X	"	म० १८०० ६१-१०६

५५५२ गुटका म० ५१ । पत्र म० १४२ । पान ८५६ द. व । म० पान १७६३ भाव मुदी २ ।
पूर्ण । दया-सामाग ।

विषय-विषयगिरि मृग विद्वानाग भाग १ ।

५५५३ गुटका म० ५२ । पत्र म० १४४६८-८६ । पान ८५७ द. व ।

विशेष—वीज मनु रू कुटनों का विभाग है ।

१. बहिरन्मलसूत्र	×	प्रसूत
२. बन्धनसूत्र	×	"
३. कन्दे मू मूत्र	×	"
४. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र (बृहत्)	मुद्रिपत्रसूत्र	गुह्यो द्विती
५. अन्तिमसूत्रसूत्र	×	"
६. "	×	"
७. बन्धनसूत्र	×	"
८. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	विनयसूत्र	"
९. बन्धनसूत्र २०० कठान्तर	"	"
१०. बन्धनसूत्र	प्रधानसूत्र	ब्रह्म
११. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	मुद्रिपत्र	"
१२. बन्धनसूत्र	विनयसूत्र	"
१३. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	×	प्रसूत

विशेष—१०२. बन्धनसूत्र ४ को बन्धनसूत्र १०२ के अन्तिमसूत्र की वी ।

१४. बन्धनसूत्र	बन्धनसूत्र	प्रसूत
१५. बन्धनसूत्र	×	"
१६. अन्तिमसूत्रमन्त्रसूत्र	मेघनसूत्र	गुह्यो द्विती
१७. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	×	"
१८. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	बन्धनसूत्र	ब्रह्म
१९. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	×	"
२०. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	×	"
२१. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	बन्धनसूत्र	"
२२. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	बन्धनसूत्र	द्विती
२३. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	बन्धनसूत्र	ब्रह्म
२४. बन्धनसूत्रमन्त्रसूत्र	बन्धनसूत्र	ब्रह्म

रचना १११२

२५ पार्वनायस्तवन	समयसुन्दरगण	राजस्थानी
२६ "	"	"
२७ गोडीपार्वनायस्तवन	"	"
२८ "	जोधराज	"
२९ चितामणिपार्वनायस्तवन	लालचंद	"
३०. तीर्थमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
३१ "	समयसुन्दर	"
३२ वीसविरहमानजकडी	"	"
३३ नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	"
३४ गौतमस्वामीरास	X	"
३५ बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा सकलित	"
३६ शीलरास	विजयदेवसूरि	"

जोधराज ने खोंबसी की भार्या के पठनार्थ लिखा ।

३७ साधुवदना	आनंद सूरि	"
३८ दानवपशीलसवाद	समयसुन्दर	राजस्थानी
३९. आषाढभूतिचौडालिया	कनकसोम	हिन्दी

२० काल १६३८ । लिपि काल म० १७५० कार्तिक बुदी ५ ।

४०. आदिकुमार धमाल	"	"
-------------------	---	---

रचना सवत् १६४४ । अमरसर में रचना हुई थी ।

४१. मेघकुमार चौडालिया	"	हिन्दी
४२ क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	"

लिपि सवत् १७५० कार्तिक सुदी १३ । अमरशावाद ।

४३ कर्मवत्तीसी	राजसमुद्र	हिन्दी
४४ नारहमावना	जयसोमगण	"
४५. पद्मावतीरानीमाराधना	समयसुन्दर	"
४६ शत्रुञ्जयरास	"	"

४७ मैयिप्रिप्रस्तव	बीरराम मुनि	हिन्दी	
४८ मन्त्रीरामदासस्तव	"	"	
४९ पञ्चरात्रप्रशस्ति	×	माह्य	
५० पञ्चमस्तुति	×	बसन्त	-
५१ संयुक्तकव्यात्म्यविमलस्तुति	×	हिन्दी	
५२ विमलस्तुति	×	"	विमल १७२
५३ कवचप्रमहिमास्तव	विमलस्तुति	"	
५४ कवचारमन्त्र	कवचारमन्त्र	"	
५५ "	कुलप्रशस्ति	"	
५६ मन्त्रप्रमहिमास्तव	कवचारमन्त्र	"	
५७ "	×	"	
५८ विमलस्तुति	कुलप्रशस्ति	"	
५९ विमलस्तुति श्री ११	कवचारमन्त्र	"	
६० विमलस्तुतिस्तव	×	"	१ संवत् १८८१
६१ मैयिराजप्रशस्ति	कवचारमन्त्र	"	१ ८ ११ २
६२ मैयिराज प्रीति	कुलप्रशस्ति	"	
६३ "	विमलस्तुति	"	
६४ "	×	"	
६५ कुनिमल प्रीति	×	"	
६६ कवचारमन्त्र ८.५.५	कवचारमन्त्र	"	
६७ कवचार	"	"	
६८ कवचारमन्त्र	"	"	
६९ मैयिराजप्रशस्ति	"	"	
७० कवचारमन्त्र	"	"	
७१ कवचारमन्त्र	"	"	

गुटका-संग्रह]

	×	हिन्दी
७२ चेलना री सज्जाय	×	
७३ जीवकाया ,,	भुवनकोति	"
७४ ,, ,,	राजसमुद्र	"
७५ मातमशिक्षा ,,	"	"
७६. ,, ,,	पद्मकुमार	"
७७ ,, ,,	सालम	"
७८ ,, ,,	प्रसन्नचन्द्र	"
७९ स्वार्थवीसी	मुनिश्रीसार	"
८० शत्रु जयभास	राजसमुद्र	"
८१ सोलह सतियों के नाम	"	"
८२ बलदेव महामुनि सज्जाय	समयसुन्दर	"
८३ श्रेणिकराजासज्जाय	"	हिन्दी
८४ बाहुबलि ,,	"	"
८५ शालिसद्र महामुनि ,,	×	"
८६. वभणवाही स्तवन	कमलकलश	"
८७ शत्रुञ्जयस्तवन	राजसमुद्र	"
८८ राणपुर का स्तवन	समयसुन्दर	"
८९ गौतमपृच्छा	"	"
९० नेमिराजमति का चौमागिया	×	"
९१ स्थूलिभद्र सज्जाय	×	"
९२ कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	"
९३ पुण्यछत्तीसी	"	"
९४ गौड़ीपार्श्वनाथस्तवन	"	"
९५ पञ्चमतिस्तवन	समयसुन्दर	"
९६ नन्दथेराहमहामुनिसज्जाय	×	"
९७ क्षीलबत्तीसी	×	"

६५. नीलकण्ठी स्तम्भ

अथगुण

द्विती

रचना सं १६५१ । नीलकण्ठी में एकी गई । विधि सं १७५१ ।

२४३४ शुद्ध सं ३३ । पत्र सं १२२ । पत्र सं २४३४ दक्ष । नीलकण्ठी (७७६) (पूर्व)

दक्ष-ताम्रम् ।

१. राजाजगन्नाथ की नील	अथगुण	द्विती
२. निरालम्बता	नील अथगुण	७

वद—

३. अथगुण की गुण वारण	अथगुण	७
४. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
५. गुण वारण के द्वार नील	अथगुण	७
६. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
७. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
८. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
९. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
१०. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
११. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
१२. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
१३. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
१४. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
१५. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
१६. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
१७. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
१८. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
१९. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७
२०. अथगुण के द्वार नील	अथगुण	७

राजमती वीनवै-नेमजी भजी	विश्वसूयण	हिन्दी
कुम क्यो चढ़ा गिरनारि (विनती)		
१६ नेमोश्वररास	ब्रह्म रायमल्ल	" २० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२० चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों का फल	×	"
२१ निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत
२२ चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी
२३ पाच परवीव्रत की कथा	वेणीदास	" लेखन सवत् १७७५
२४ पद	बनारसीदास	"
२५ मुनिश्वरों की जयमाला	×	"
२६ भारती	धामतराय	"
२७ नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द्र	"
२८ विनति-(बदहू श्री जिनराय मनवच काब करोजी)	कनककीर्ति	"
२९ जिन भक्ति पद	हर्षकीर्ति	"
३० प्राणी रो गीत (प्राणीठा रैनू काई सोवै रैन चित्त)	×	"
३१ जकडी (रिपभ जितेश्वर बंदस्यी)	देवेन्द्रकीर्ति	"
३२. जीव सद्योपन गीत (होजीव नव मास रह्यो गर्भ वासा)	×	"
३३ लुहरि (नेमि नगीना नाथ था परि चारी म्हारालाल)	×	"
३४ मोरहो (म्हारो रै मन मोरहो वूतो छडि गिरनारि जाइ रै)	×	"
३५ बटोइ (तू तोजिन भजि विलस न लाय बटोई मारग भूली रै)	×	हिन्दी
३६ पंचम गति की वेलि	हर्षकीर्ति	" २० सं० १६८३

३७	करम हिप्पीनछा	×	हिप्पी
३८	पर—(बाग लठेकर बाहि बुनै रे हुंछा)	गुरेखरीति	"
३९	पर (जौबीतों प्रीवैकर करो यदि बरव)	मेनिबन्ध	"
४०	करना की बटि म्हाटे हो	बहुपानु	"
४१	भाछी (करी बरिज कुंवरजी की भाछी)	बालबन्ध	"
४२	भाछी	बालबन्ध	"
४३	बन्—(बोवड़ा बुनो की पारत मिनेत्र ९)	"	"
४४	बीठ (मोठी के बवाली हो केयजी का नाम ल्यो)	पति मातृपथ	"
४५	बुझि—(बी बहार बनारस की लोछी बाव बन्धो टी लो)	मेनिबन्ध	"
४६	बुझि—(मेनि कुंवर बन्धन बन्धी उनुच करे र विचार)	"	"
४७	बोबोउलो	पति विस्वासा	"
४८	बबिबुन की कमा	केवल	" ४४ पत्र । वि १९०१
४९	उनुचपन्धीली	बालबन्ध विचोरीबाल	" "
५०	बहुप्रीति का कमा	"	हिप्पी
५१	पुनिस्सों की बबनल	बहुप्रीति	"
५२	बबनलपुनिस्सोंबबनल	बबनलपुनिस्सों	"
५३	प्रीवैकर बन्धी	प्रीवैकर	"
५४	बन्ध मे लो बन्ध की बन्ध	बबनलपुनिस्सों	"
५५	हम बीठ पन्धी बीठ के	"	"
५६	बहा बन्धी बीठकी बुन बाल बन्धी	"	"

५७ रंग बनाने की विधि	×	हिन्दी
५८. स्फुट दोहे	"	"
५९ गुणवेलि (चन्दन वाला गीत)	"	"
६०. श्रीपालस्तवन	"	"
६१. तीन मियाँ की जकड़ी	धनराज	"
६२. सुखघडो	"	"
६३ कक्का कीनती (बारहखड़ी)	"	"
६४ भठारह नाते कीक्या	लोहट	"
६५ भठारह नाता का व्यौरा	×	"
६६ आदित्यवार कया	×	"
६७ धर्मरासो	×	१५४ पद्य
६८ पद-देखो भाई आजि रिपभ घरि आवे	×	"
६९ क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	"
७०. गुरुओं की स्तुति	—	"
७१ सुभाषित पद्य	×	संस्कृत
७२ पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी
७३ पद-उठो तेरो मुख देखू नाभिजी के नद टोकर		"
७४ जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"
७५. दुविधा कव जइ या मन की	×	"
७६ इह चेतन की सब सुधि गई	बनारसीदास	"
७७ नेमीसुरजी को जनम हुयो	×	"
७८. चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न	×	"
७९ दोहासग्रह	नानिगनास	"
८० धार्मिक चर्चा	×	"
८१. दूरि गयो जग चैती		"
८२ देखो माइ आज रिपभ घर आवे	धनश्याम	"
	×	"

४३. बरहस्पति की प्यास भरी	×	द्विती
४४. बिजली बाँधीली बूछ पगडी बोहियो	×	"
४५. गायी मुकसि पंच बट गायी गायी	"	"
४६. लमकि बर बीबन बोरी	बचकल	"
४७. मेनकी के बाई हूँ नारकी बहाराज	हर्षरीति	"
४८. बैसरी बहूँ मेनि दुपार	"	"
४९. प्रभु ठीरी बूछ बन बकी	बचकल	"
५०. पिठालमणी ल्वाकी सोच बज्ज मेरा	"	"
५१. बुझमणी नम बातेनी	हर्षरीति	"
५२. मेराब नु दिहूँ नाल बकेला	"	"
५३. बच मंदल	बचकल	"
५४. प्रभुकी गंगा बरहल नु बुझ गंगा	बच बचकल	"
५५. बच मंदल	बचकल	"
५६. लम्बे पिछर लकी रे बीबड़ा	×	"
५७. हूँ बाये हूँ बिबरान मुम्हारी कलम को	बालराज	"
५८. बालराजकी	बालराज	"
५९. नु प्रभु बूधि न रे प्रभुकी बज्जानी	×	"
६०. बूधिये बज्ज प्रभु बूधिये बज्ज	×	"
६१. मेरा मन की बज्ज कलु बहिये	बचकल	"
६२. बूछ ठीरी मुकर बोझी	×	"
६३. प्यारे ही नाल प्रभु का बरह की बलिहारी	×	"
६४. प्रभुकी लपारीयें प्रभु बालु बालिली लपारीयें	×	"
६५. ली बारी ली लपारीयें बज्जनिनि	बुझकल	"
६६. नीहि बज्ज की बिब प्यारा	हृदयकल	"
६७. प्रभु ही मैं लपारी प्रभु		"
प्रभु ही मैं लपारी	बालराज	"

१०८ पार्श्वनाथ के दर्शन

यून्दावन

हिन्दी

२० सं० १७६८

१०९ प्रभुजी में तुम चरणगणना गहो

बालबन्द

"

५४३५ गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ८८ । आ० ८५६ ५३ । मूल । दत्ता-सामाय ।

विशेष—इस गुटके में पृष्ठ ६५ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महाशक्तिव पूजा विधान है । ६५ में ८१ तक ग्रन्थ प्रतिष्ठा सन्धी पूजाएँ एवं विधान हैं । पत्र ८० पर अष्टाक्षर में चौबीस तीर्थक्षुर म्मुनि है । पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे मन रमि रहू चरणजिनन्द' नामक एक वटा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है ।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ॥४॥

जह पठावहि तिहुवरण इद ॥ रे मन० ॥

यहु ससार असार मुणो धिगु कळ जिय धम्मु दयाल ।

परनाय तच्छु मुणहि परमेष्ठिहि सुमरीह अप्पु गुणाल ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ भजीउ दुविहु पुणु आमय बन्धु मुणहि चउभेय ।

तवर निजळ मोछु बियाणहि पृष्णपाप सुविणोय ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ दुभेउ मुक्त ससारो मुक्त सिद्ध मुवियाणे ।

वसु गुण वुत्त बलहु विवजिद भासिये केवलणाणे ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

जे ससारि भमहि जिय सबुल लख जोणि चउरासी ।

धावर विमलदिय सयलदिय ते पुगल सहवासी ॥ रे मन० ॥ ४ ॥

पच भजीव पढयमु तहि पुगलु, धम्मु धम्मु आगास ।

कालु भराउ पच कायासी, ऐच्छह दव्व पयास ॥ रे मन० ॥ ५ ॥

आसउ दुविहु दव्वभावह, पुणु पच पयार जिणुत्त ।

मिच्छा विरय पमाय कसायह जोगह जीव प्रमुत्त ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

चारि पयार वधु पयडिय हिदि तह आणुभाव पयूस ।

जोगा पयडि पयूसडिदायणु भाव कसाय बिसेस ॥ रे मन० ॥ ७ ॥

सुह परिणामे होइ सुहासव, असुहि असुह बियाणे ।

सुह परिणामु कण्ह हो भविणहु, जिस सुह होय नियाणे ॥ रे मन० ॥ ८ ॥

संदर्भ करहि नीच धन सुन्दर आसन बार गिरीह ।

प्रसन्न विष सप्तु पातु विवाहसु सोह सोह बीह ।। १ मग ।। ६ ।।

मिन्नर बरछ बिछामातु पायल, बिय भिखनकर लभले ।

बारह बिह ठप समधिह लभतु, पंच महाभर पाले ।। १ मग ।। १ ।।

महबिहि नम्मविपुल्लु परमरउ परमपुल्लुवि बातो ।

लिचल्लु मुल्लुवि चळु लविगुलि, विल्लु वीर्यर बातो ।। १ मग ।। ११ ।।

आलि भतरल बल्लु नया करला पविनु नगह विचारह ।

जिल्लर लल्लु लल्लु पलातल्लु, लो विह बुध विर बारह ।। १ मग ।। १२ ।।

२४३६ गुटका स २५ । पच स २४ । आ ६५१६ बल्ल । बापा-विन्नी संस्तु । १ मग

१ ११ २ ।

विशेष—पूजा पाठ एक स्तोत्र आदि का संघट्ट है ।

२४३७ गुटका स २६ । पच स १३ । आ ६६५६ बल्ल । पूर्ण एवं बीह । मविहंन पच पचुड है । निवि विहृह है ।

विशेष—इतने निम्न पाठों का संघट्ट है ।

१ कर्मलोचन वर्जित	×	आहुत	६-६
२ आ ६ पच एवं बीह पूजों का विवरण	×	विन्नी	६-११
३ वीर्यरको के ५४ बल्ल	×	"	११-११
४ महाभर नाम	×	"	११
५ मविहंन पच	×	"	१४

२५ मग श्री वाक्पनाथ कले बुद्धदीप्तिवा एवमपि विम्वरपवीत्र स्थापित ।। १ ।।

संघट्ट १३६ बर्ये मविहंनविपुल्लु विम्वरपवीत्र कलेविम्वरपवीत्र स्थापित ।। १ ।।

श्री वीर्यरकोचकुरकले वीर्यरकोचकुरकले पर्वतीय विपरीतमर्त विम्वरप स्थापित ।। १ ।।

वर्जितोचकुरकले विम्वरपविम्वरप ।। ४ ।।

श्रीवाक्पनाथकले विम्वरप कलेविपुल्लुविम्वरप श्री महाभर कले स्थापित ।। २ ।।

संघट्ट २२६ बर्ये श्री पुन्यवाक्पनाथ विम्वरप विम्वरप विम्वरप विम्वरप विम्वरप स्थापित ।।

संघट्ट १ ३ बर्ये वीर्यरकोच श्रीकलापान् पामनाथ संवीर्यदीप्तिवा ।। ७ ।।

गुटमा-रु प्रह ।

चतु सघोरति कथ्यते । श्रीभद्रबाहुशिष्येण श्रीमूलसधमडितेन ग्रहद्विनिश्रुतिगुसाचार्यविद्यावाचार्येति नामयय चारकेण श्रीगुसाचार्येण नन्दिमघ, मिहमघ, मेनसघ, देवसघ इति चत्वार सघा स्थापिता । तेभ्यो ययाक्रम बलात्कारगणादयो गणा सरम्बत्तादयो गच्छाश्च जातानि तेषा प्राप्रज्यादियु कर्मसु षोडि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

सवत् २५३ वर्षे वितययेनम्य शिष्येण मन्वासाभगयुक्तेन गुमाग्नेनन दारुमघ स्थापित ॥ ९ ॥

सवत् ६५३ वर्षे सम्यवतप्रकृत्यदयेन राममेनेन नि पिच्छव स्थापित ॥ १० ॥

सवत् १८०० वर्षे मतीते वीरचद्रमुने सबाशात् भिल्लमघोत्पति भविष्यति ॥

एभ्योनायेषामुत्तरति पचमकालावसाने सर्वेषामेषा ॥

गुह्यमाना निष्याण विनायो भवेप्यत्येव जिनमत विपन्नात् स्थापयतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्त ॥

६ गुणन्याय चर्चा	×	प्राकृत	१५-२०
७ जिनान्तर	वीरचद्र	हिन्दी	२१-२३
८ सामुद्रिक फाल्गु भाषा	×	"	२४-२७
९ स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२-३७
१० यति ग्राह्य का ६६ दोष	×	"	३७
११ लोक वर्णन	×	"	३८-५३
१२ चउवीस ठाणा चर्चा	×	"	५४-८६
१३ अन्यस्फुट पाठ संग्रह	×	"	९०-१५०

१४३८ गुटका म० १७-पय म० ४-१२१ । भा० ६५६ इच्छ । मपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१ त्रिकालदेववचना	×	संस्कृत	५-१२
२ सिद्धभक्ति	×	"	१२-१४
३ नदीश्वरादिभक्ति	×	प्राकृत	१४-१६
४ चौतीस प्रतिशय भक्ति	×	संस्कृत	१६-१८
५ श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१८-२१
६ दर्शन भक्ति	×	"	२१-२२
७ ज्ञान भक्ति	×	"	२२
८ चरित्र भक्ति	×	संस्कृत	२२-२४
९ धनागार भक्ति	×	"	२४-२६

भवसुखि जोरारति करेसइ, सो मरद्वयकूट लहेसइ ।
 सारउ सुउ महियलि भु जेसइ, रइ समाण कुले उत्तरमेसइ ॥
 पुणु सोहम्म सगगी जाएसइ, सहु कीसेसइ गिरु सुकुमालिहि ।
 मणुवसुखु भु जिवि जाएसइ, सिवपुरि बासु सोवि पावेसइ ।
 इय जिएरति विहाणु पयोसिउ, जहजिएसासणि गणहरि भासिउ ।
 जे हीराहिउ काइमि युत्तउ, त बुहारण मठु रामहु गिरुत्तउ ।
 एहु मत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ ।
 जो नर नारि एहमणि भावइ, पुणइ ग्रहिउ पुणए फलु पावइ ।

धत्ता—

सिरि एरसेणह सामिउ, सिवपुरि गामिउ, बढ्ढमाण तितवक्क ।
 जइ मागिउ देइ करण करेइ देउ सुबोहि लाहु परमेसर ॥ २७ ॥
 इय सिरि बढ्ढमाणकहापूराणे सिघादिभवभाववण्णणो जिएराइविहाणफलसपत्ती ॥
 सिरि एरसेण विरइए सुभञ्जासम्पण्णणिमित्ते पढम परिछेह सम्मत्तो ।

॥ इति जिएराणि विधान कया समाप्ता ॥

२ रोहिणिविधान

सुरिणपुराणभद्र

अपभ्रंश

२१ २५

प्रारम्भिक भाग—

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयञ्जुल ।
 सिवमगसहायहो केवलकायहो रिसहुहो पणविधि कयकमलु
 परमेद्धि पच्च पणविधि महत्त, भवजलहि पोय विहडिय कयत्त ।
 सारम सारस ससि जोह्म जेम, रिणम्मल बणिज्ज केणकेम ।
 जिहि गोयमए विणिष वरस्स, सेणिय रायस्स जसोहरस्स ।
 तिह रोहिणी वय कह कहमि भव्व, जह सत्तिणि वारिय पावणच्च ।
 इय जव्वदीव हो मरइ खेत्ति, कुरु जगल ए सिवि गए जरोत्ति ।
 हयिणाउरु पुरजण पवररिद्धु जणु वसइ जित्थु सह सय समिद्धु ।
 तहि वीयसोउ गयसोउ भूउ, निज्जु पहरइ रइ हियय भूउ ।
 तहाँ रादणु कुलणन्दण असोउ, जमिल्लवि गउ मइ पूरि सोउ ।

धत्ता—

सिरि गुणभद्रमुगीमरेण विहिय बहा बुधी भरेण ।

सिरि मलयवित्ति पयल जुयलणाविवि, मावयनमो यह मणुछविवि ।

एदउ सिरि गिणसय, गदउ तहभूमि वानुणि विग्गं ।

एदउ लउसणु सयल, दिनु सया कप्पतर वजइ भिय ।

॥ इति श्री रोहिणी विधान समाप्त ॥

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	प्रपन्न श	२६-२६
४. दयालक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	”	३०-३३
५. चदनपट्टीप्रतकथा	आचार्य छत्रसेन	संस्कृत	३३-३६

नरदेव के उपदेश से आचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिन प्रणम्य चद्राभ कर्मोपध्वान्तभाम्कर ।

विधान चदनपट्टयत्र भगवानां कथमिहां ॥ १ ॥

द्वीपे जम्बूद्वीप केष्मिन्नु क्षेत्रे भरतनामनि ।

काशी देशोस्ति विख्यातो वज्जितो बहुधाबुधे ॥ २ ॥

अन्तिम—

आचार्यछत्रमेनेन नरदेवोपदेशत ।

कृत्वा चदनपट्टोय कृत्वा मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥

यो भव्य कुस्ते विधानममल स्वर्गपिवर्गप्रदा ।

योय कार्यते करोति भविन व्याख्याय सवोधन ॥

भूत्यासी नरदेवयोर्व्वरसुख सच्छत्रमेनाप्रता ।

यास्यतो जिननायकेन महते प्राप्तेति जैन श्रीया ॥ ७८ ॥

॥ इति चदनपट्टी समाप्त ॥

६. मुक्तावली कथा	×	संस्कृत	३६-३८
------------------	---	---------	-------

आरम्भ—

आदि देव प्रणम्याक्त मुक्तात्मान विमुक्तिद ।

अथ सक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्तावलिविधि ॥ १ ॥

७. मुनवरपदी कथा

रामजीति के दिव्य

अवतार

१-४१

विमल कीर्ति

आदि याग

पण्डितगुरु सम्मद विसेसरहो का मुम्बहुरि भावय कथिया ।

तिमुण्डिगम्बु कथिन्नु हकम्बदा बहुरह्मि मुनवरपदी हितकथिया ॥

अन्तिम पाठ

बसमिहि मुर्धन विह्वलपुकोविणु तद्वद नत्प कल्पय करैविराजु ।

नरवद मन्त्रदेहि पद्यहिब कमी मुहुर मु बह कथिरो य ॥

मुहुरी मन्त्रपु पुब मुह मुहुरा पाठ पशान दयाजल मन्त्रह ।

बालत मु बरि पति कपम्भी मन्त्रात्मनि नयि ६पुष्पी ॥

विणि धिधि मुर्धरि विमलनु कती पम्बसोय बाणत मोहवी ।

बालवत्त मन्त्रनि मुपहि तणु विमलव सावित्र परवद धणु विणु ॥

धणु नरविह विनि ए लम्बनद तद्व न क्कन का वण ए लम्बद ।

बालवत्त पेशि एण्डरहि गोमाहवद मन्त्र मन्त्रहि ॥

रत्नं बालविह्वलनिब बालहि, पुत मन्त्राहि बहिव्बालहि ॥

रामजीति कुटविणु करैविराजु विणु विमल कीर्ति मन्त्रिनि रवेविणु ।

नरवद पुणु तव वणु करैविराजु बह मन्त्रात्मनि लोयनमुनहेवद ॥

पद्या

बी नरवद कटावद लुम्बिहि मन्त्रात्मनि विमन्त्रिन्नु बरैद ।

वी विह्वलान्ना बालिन्नु वणु मोलनु का पशद ॥ ॥

इति मुनवरपदीकथा समाप्ता

पुनर्वाचन कथा

X

अवतार

४१ ४१

आरम्भ

बाल नर वद विसेसर हम्बम्भीतर मुतिविटीवरवत्तभरत ।

धकताय नरावत्तु वद्वम्भीतर मुति विरम्बर बमकरत ॥ १ ॥

अन्तिम पद्या

बालवत्तपिण्डि रमलकिति मुति विमल मुहुरि विमल ।

बालकिति मुत मन्त्रात्मनिपुन पुणु बलि विहि विमल ॥ २१ ॥

पुनर्वाचन कथा समाप्ता

६ अनतविधान कथा

×

घटन व

६६-५१

५४४० मुटका न० ५६-११ संस्त-१८३ । पा०-३॥१६ । वगा गामायनीर्ग ।

१. नित्ययदना सामाया

×

मस्तुत प्राशुन

१-१२

२. नैमित्तिकप्रयोग

×

मस्तुत

१५

३. भुतभक्ति

×

"

१५

४. चारित्र्यभक्ति

×

"

१६

५. आचार्यभक्ति

×

"

२१

६. निर्वाणभक्ति

×

"

२३

७. योगभक्ति

×

"

"

८. नदीश्वरभक्ति

×

"

२६

९. स्वयम्भूस्तोत्र

आचार्य समन्तामद

"

६३

१०. पुर्वादिनि

×

"

६५

११. स्वाध्यायपाठ

×

"

५७

१२. तत्त्वार्थसूत्र

उपास्यामि

प्राशुत सन्त

५७

१३. सुप्रभाताष्टक

यत्तिनेमिचद

सररुत

६७

१४. सुप्रभातिवस्तुति

सुवनसूपाण

"

पत्र १० ८

१५. स्वप्नाविनि

मुनि देवनदि

"

२५

१६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र

"

"

२१

१७. नृपानस्तोत्र

नृपान भवि

"

२५

१८. एकोभावस्तोत्र

वादिराज

"

२५

१९. बिषाणहार स्तोत्र

धनस्रय

"

२६

२०. पार्वनाथस्तोत्र

देवचन्द्र भूरि

"

४०

२१. कल्याण मंदिर स्तोत्र

पुत्रुदव द्रगूरि

"

४४

२२. भावना बत्तीसी

×

सस्तुत

२३. फरणाष्टक

पचनदी

"

२४. वीतराग गाय

×

"

प्राशुत

स्वस्त्रोच्छलब्धशिरिण्जितमेधन द, स्याद्वाद्वादितमयाकृतसद्विपादं ।

नि सीमसजमसुधारसतत्तद्भाग पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ॥ ७ ॥

सम्यक्प्रमाणकुमुदाकरपूर्णचन्द्र भागल्यकारणमनसयुगल वितन्द ।

इष्टप्रदाणविधिपोषितभूमिभाग, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतराग ॥ ८ ॥

श्रीपद्मनन्दिरचित किलबोतरागस्तोत्र,

पवित्रमणवचमनादिनादौ ।

य कोमलेन वचसा विनयाविधीते,

स्वर्गापवर्गकमलातमलं वृणीत ॥ ९ ॥

॥ इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिरचिते वीतरागस्तोत्र समाप्तेति ॥

२६ आराधनासार	देवसेन	मपभ्र श	२० स० १०८६
३० हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयम्भू	" स्वयम्भू रामयण का एक अंश	११६
३१. कालावलीपद्धती	×	"	११६
३२. ज्ञानपिण्ड की विंशति पद्धतिका	×	"	१३१
३३ ज्ञानाकुश	×	संस्कृत	१३२
३४, इष्टोपदेश	पूज्यपाद	"	१३६
३५ सूक्तिमुक्तावलि	आचार्य सोमदेव	"	१४६
३६ ध्यावकाचार	महापंडित आशाधर	" ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण	१८३

५४४१ गुटका सं० ६० । पत्र सं० ५६ । भा० ८५६ इक्ष । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२२-२७
२. पञ्चमेव की पूजा	×	"	२७-३१
३ लघुसामायिक	×	संस्कृत	३२-३३
४ भारती	×	"	३४-३५
५ निर्याणकाण्ड	×	प्राकृत	३६-३७

५४४२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । भा० ८५६ इक्ष । अपूर्ण ।

विशेष—देवा ब्रह्मकुल हिन्दी पद सग्रह है ।

२४४३ गुडका सं० ६२ । पृष्ठ १२५ । भा ४२६ दण्ड । भाषा-हिन्दी । के काल सं १५२५
अपूर्ण ।

विषय—प्रति गीर्णबीरों पराका में है । मनुवाला की वधा है ।

२४४४ गुडका सं० ६३ । पृष्ठ १२६ । भा ४२७ दण्ड । भाषा-उर्दू । के काल सं १५२६

१ गीर्णबीरविनाश	×	उत्तर	१-११
२ विनाशकाल	पापावर	"	१२-२२
३ विनाशकाल	"	"	२३-३६
४ विनाशकाल	"	"	३७-४८

२४ २ गुडका सं ६४ । पृष्ठ ४ । भा ४२८ दण्ड । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विषय—विनाश कालों के पद्यों का संग्रह है ।

२४४५ गुडका सं० ६५—पृष्ठ संख्या— १-४११ । भा ४२९ । विनाशकाल—१६९१ । अपूर्ण ।
वधा-बीरों ।

१ लक्ष्मण	४ पापावर	उत्तर	अपूर्ण । १-५०
२ लक्ष्मण	पापावर	भाषा	" ५०-६१
३ लक्ष्मण	"	उत्तर	" ६२-६३
४ लक्ष्मण (कर्णवध)	लोकावर		६ - १ ६
५ लक्ष्मण	×	"	१
६ लक्ष्मण	×		१ ७ १११
७ लक्ष्मण	×		१११-११६
८ लक्ष्मण	×	भाषा	११६
९ लक्ष्मण	×	उत्तर	११६-१२५
१० लक्ष्मण	भाषा	"	१२५-१३६
११ लक्ष्मण	×	"	१३७-१
१२ लक्ष्मण (कर्णवध)	×	भाषा	१३८-४१
१३ लक्ष्मण	×	"	१४२
१४ लक्ष्मण	×	"	१४३-४४

१५ मुनीश्वरो की जयमाल	×		
१६ रामोकार पायडी जयमाल	×	अपत्र श	१४७
१७ चौबीस जिनद जयमाल	×	"	१४६
१८ दशलक्षण जयमाल	रङ्गू	"	१५०-१५२
१९ भक्तामरस्तोत्र	मानवुङ्गाचार्य	"	१५३-१५५
२० कन्याणामन्दिरस्तोत्र	कुमुदच द्र	नमृत	१५४-१५७
२१ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१५७-१५८
२२ भक्ताकाष्टक	स्वामी भक्ताक	"	१५८-१६०
२३ भूपालचतुर्विंशति	भूपाल	"	१६०
२४ स्वयम्भूस्तोत्र (इष्टोपदेश	पूज्यपाद	"	१६१-६२
२५ लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनदि	"	१६२-६४
२६ लघुनह्ननाम	×	"	१६६
२७ सामायिकपाठ	×	"	१६५
२८ सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनदि	प्राकृत संस्कृत	ने० सं० १६७५, १६५-७०
२९ भावनाद्वात्रिंशिका	×	संस्कृत	१७१
३० विपापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१७१-७२
३१ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१७२-७४
३२ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	"	१७४-७८
३३ सुम्पयदीहा	×	अपत्र श	१७६-८८
३४ परमानन्दस्तोत्र	×	ने० सं० १६६१ वैद्याव मुदी ५ ।	
३५ यतिभावनाष्टक	×	×	१८८-९०
३६ कदणाष्टक	×	संस्कृत	१८१
३७ तत्त्वसार	पद्मनदि	"	"
३८ दुर्लभायुप्रेक्षा	देवमेन	"	१८२
३९ वैराग्यगीत (उदरगीत)	×	प्राकृत	१८४
४० मुनिमुनतनायस्तुति	छीह्न	"	"
	×	हिन्दी	१८५
		अपत्र श	अपूर्व १८५

४१ बिजयकुन्ना	×	संस्कृत	११६-८७
४२ विनयामनवर्ति	×	प्राकृत	मगुर्ल ११८-९
४३ बर्मपुत्रेना जैनी का (विपनक्रिया)	×	हिन्दी	१ ९-१७

विशेष—जिसे १ वत् १९३९ । या सुबचन के पुटके की प्रतिनिधि बराम्भी तथा भी मानवविहारी के पात्रमन्त्र के बड़ोटा नामों हूणों जीवी के प्रतिनिधि की ।

४४ वैधिरिभर व्याख्यानो	पैतली	हिन्दी	११७-४२
४५ मल्लवरवमनवर्ममन्त्र (कोठे)	×	"	१४२
४६ बर्मपुत्रेना का मन्त्र	×	"	१४१
४७ बरुनमरुतपोपानमपुत्रा	गुपतिमाचर	हिन्दी	१४३-६४
४८ पंचवीरपोपानमपुत्रा	केवलमेन	"	१४४-७४
४९ रोहिणीवत पुत्रा	×	"	२७३
५० वेदविक्रियोपानम	वैकुण्ठकीर्ति	संस्कृत	२७३-८९
५१ विनयकुन्नावर्तन	×	हिन्दी	मगुर्ल १ ९-३४
५२ वसिष्ठवर्तन	कीर्तन	हिन्दी	मगुर्ल १ ७
५३ मेनीपुर कवित (मेनीपुर राज्यवर्तन)	कवि ठगुपरी (कविमेन का पुत्र)	"	१ ७-६
५४ विजयकुन्ना की बरवमल	×	"	१ ८-८१
५५ हृदयकुन्ना की बरवमल	×	प्राकृत	१११ १४
५६ विनयकुन्नावर्तन	×	प्राकृत	११४
५७ कनककुन्ना	ठगुपरी	हिन्दी	११४-१७
५८ बरवमलकुन्ना की	पराधाम	"	११ २१
५९ बरवमल की बरवमल			११२ २
६० वेनीपुर की रत्न	बालकवि		११२-११
६१ "	बालकवि	"	११२, १११ ४१
६२ वैदिकवर्तन	पराधाम	"	१४१-१४१
६३ बीरवर्तन	बालकवि	"	१४१-१४१

६४ सुदर्शनरासो

ब्रह्म रायमल्ल

हिन्दी र स. १६२६ ३५६-६६

संवत् १६६१ मे महाराजाधिराज साधोसिंहजी के शासन काल मे मालपुरा मे श्रीलाला भावसा ने आत्म

पठनार्थ लिखवाया ।

६५ जोगीरासा	जिनदास	हिन्दी	३६७-६८
६६ सोलहकारणरास	भ० सकलकीर्ति	"	३६८-६९
६७ प्रद्युम्नकुमाररास	प्रहारायमल्ल	"	३६९-८३

रचना संवत् १६२८ । गढ़ हरसीर मे रचना की गई थी ।

६८ सकलीकरणविधि	×	संस्कृत	३८३-९५
६० बीसविरहमासपूजा	×	"	३९५-९७
७० पकल्यमाणकपूजा	×	"	अपूर्णा ३९८-४११

५४४७ शुटका सं० ६६ । पत्र सं० ३७ । आ० ७×५ इच्छ । अपूर्णा । दशा-सामान्य ।

१ भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-२६
२ पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	२६-२७

५४४८ शुटका सं० ६७ । पत्र सं० ७० । आ० ८३×६ इच्छ । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१ नवकारमंत्र आदि	×	प्राकृत	१
२ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	८-२१

हिन्दी अर्थ सहित । अपूर्ण

३ जम्बूस्वामी चरित्र	×	हिन्दी	अपूर्णा
४ चन्द्रहसकथा	टीकमचन्द	"	र स १७०८ । अपूर्णा
५ श्रीपालजी की स्तुति	"	"	पूर्णा
६ स्तुति	"	"	अपूर्णा

५४४९ शुटका सं० ६८ । पत्र सं० ८८-११२ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । ले० काल सं० १७८० चैत्र वदी १३ ।

विशेष—प्रारम्भ मे वैद्य मनोत्सव एव बाव मे आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

५४५० शुटका सं० ६९ । पत्र सं० ११८ । आ० ९×६ इच्छ । हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—बनारसीदास त समयसार नाटक है ।

५४५४ गुटका सं० ७३ । पत्र सं० १५२ । मा० ७×६ इ च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण शीर्ण ।

१ राग भासावरी रूपचन्द अपन्न श १

प्रारम्भ—

विसउणामेण कुरुजंगले तहि यर वाउ जीउ राजे ।

धरणकणायार पूरियउ कणायप्पहु धरण जीउ राजे ॥ १ ॥

विशेष—गीत अपूर्ण है तथा भ्रष्ट है ।

२ पदढी (कौमुदीमध्यात्) सहणपाल अपन्न श २-७

प्रारम्भ—

हाहउ धम्ममुउ हिडिउ ससारि मसारइ ।

कोइपए सुणउ, गुणदिठु सख बिणु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम पंक्ता—

पुणुमति कहइ सिवाय सुणि, साहणमेयहु किज्जइ ।

परिहरि बिगेहु सिरि सतियत सधि सुमइ साहिज्जइ ॥ ६ ॥

॥ इति सहणपालकृते कौमुदीमध्यात् पदढी छन्द लिखित ॥

३ कल्याणकविधि मुनि विनयचन्द अपन्न श ७-१३

प्रारम्भ—

सिद्धि सुहकरसिद्धियहु

पराविधि तिजइ पयासण केवलसिद्धिहि कारणपुणमिहउ ।

सयलवि जिण कल्लाण निहयमल सिद्धि सुहकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

अन्तिम—

एयभत्तु एक्कु जि कल्लाणउ विहिणिवियडि भइवइ गणणउ ।

भइवासय लहखणविहि, विणयचदि सुणि कहिउ समत्यह ॥

सिद्धि सुहकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

॥ इति विनयचन्द कृत कल्याणकविधि समाप्ता ॥

४ चूतढी (विणय वदिवि पच गुरु) यति विनयचन्द अपन्न श १३-१७

५ रत्नययपूजा	×	हिन्दी	५६-६१
६ पार्श्वनाथपूजा	×	"	६२-६७
७ धातिपाठ	×	"	६७-६८
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०-११४

५४५६ गुटका सं० ७८ । पत्र सख्या १६० । आ० ६४४ इ च । अपूर्ण । दया-जीर्ण ।

विशेष—दो गुटकों का सम्मिश्रण है ।

१ ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०-२७
२ चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा	×	"	२८-३१
३ चितामणिस्तोत्र	×	"	३६
४ लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	३७-३८
५ पार्श्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३९-४०
६ कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१-४३
७ चितामणि पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	४३-४८
८ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	४८-५३
९ पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५४-६१
१० चितामणि पार्श्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र	"	६१-८६
११ गणधरवल्लय पूजा	×	"	८६-११४
१२ अष्टाङ्गिका कथा	यश कीर्ति	"	१०४-११२
१३ अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्ति	"	११२-११८
१४ सुगन्धदशमी कथा	"	"	११८-१२७
१५ पोडपकारण कथा	"	"	१२७-१३६
१६ रत्नत्रय कथा	"	"	१३६-१४१
१७ जिनचरित्र कथा	"	"	१४१-१४७
१८ आकाशपञ्चमी कथा	"	"	१४७-१५३
१९ रोहिणीव्रत कथा	"	"	अपूर्ण १५४-१५७

१ लक्ष्मीस्तोत्र	वचनमय	संस्कृत	
४ श्रीपालकी की स्तुति	×	हिन्दी	
५ तानुवचना	मनास्वीनाथ	"	
६ श्रीसीतेश्वर की भजनी	हर्षवीरि	"	
७ बाणभक्त	×	"	
८ दर्शनशुद्ध	×	हिन्दी	यह दर्शनों का वर्णन है।
९ पद-भरत केवल की ध्याना	हरीशचन्द्र	"	"
१ मत्स्यस्तोत्रनामा	×	"	"

१४४४ गुरुका स ७६। पद संख्या—१५। भा०—२। १८५। विषय स १७। ३। धर्म।

१ लक्ष्मीस्तोत्र	वचनमय	संस्कृत	
२ निरुक्तना व बाणभक्त	×	"	
३ श्रीलक्ष्मीस्तोत्र	×	"	
			पंथि वचन के हिन्दुओं में प्रतिनिधि की।
४ श्रीसीतेश्वर की भजनी	×	हिन्दी	प्रतिनिधि का भी है।
५ विद्वत्सिद्ध	देवकी	संस्कृत	
६ एकाग्रस्तोत्र	वचनमय	"	
७ निरुक्तना व श्रीलक्ष्मी	×	हिन्दी	
चित्तमयिनी की भजना	वचन	"	श्रीलक्ष्मी वचनमय प्रतिनिधि की की।
८ श्रीलक्ष्मीस्तोत्र	×	संस्कृत	
१ मत्स्यस्तोत्र	वचनमय व	"	

१४४५ गुरुका स ७७। पद स १९३। भा १८५। २। भाषा—संस्कृत। वि ३। पद १५३।

नाम गुरी १९।

१ श्रीलक्ष्मीस्तोत्र	×	संस्कृत	१-१२
२ श्रीलक्ष्मीस्तोत्र	×	"	१३-१४
३ श्रीलक्ष्मीस्तोत्र	×	"	१५-१६
४ वचनमय	×	"	१७-१८

गुटका-सूत्रह]

५ रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६-६१
६ पार्श्वनाथपूजा	×	"	६२-६७
७ धातिपाठ	×	"	६७-६९
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०-११४

५४५६ गुटका स० ७८ । पत्र सख्या १६० । आ० ६×४ इ च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—दो गुटका का सम्मिश्रण है ।

१ ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०-२७
२ चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा	×	"	२८-३१
३ चितामणिस्तोत्र	×	"	३६
४ लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	३७-३८
५ पार्श्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३९-४०
६ कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१-४३
७ चितामणि पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	४३-४८
८ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	४८-५३
९ पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५४-६१
१० चितामणि पार्श्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र	"	६१-८६
११. गरुडचरवल्लय पूजा	×	"	८६-११४
१२ अष्टाङ्गिका कथा	यश कीर्ति	"	१०४-११२
१३ अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्ति	"	११२-११८
१४ सुगन्धदशमी कथा	"	"	११८-१२७
१५ षोडशकारण कथा	"	"	१२७-१३६
१६ रत्नत्रय कथा	"	"	१३६-१४१
१७ जिनचरित्र कथा	"	"	१४१-१४७
१८ आकाशपञ्चमी कथा	"	"	१४७-१५३
१९. रोहिणीव्रत कथा	"	"	१५४-१५७

अपूर्ण १५४-१५७

१. ज्वालामग्निगीस्तोत्र	×	संस्कृत	११५-११६
२१. शैवपास्तोत्र	×	"	११७-११८
२२. भाग्यद्वीप विधि	×	"	१७४-७५
२३. लीलीली विवरी	म. रत्नमाला	हिन्दी	१५६-५८

४४६. गुह्यका स. ७३। पत्र सं. ३३। भा. ७४४२ द. व.। प्रपूर्णा।

१. पञ्चोत्तिष्ठस्तोत्र	अष्टावक्र	संस्कृत	१-२५
२. एकीकृत रामायण	×	"	१६
३. एकीकृत भक्तवत्सल	×	"	"
४. कपिलेश्वरस्तोत्र	×	"	१०-११
५. नवग्रहस्तोत्र	विष्णुसूक्त	"	१२-१३

४४६१. गुह्यका स. ८। पत्र सं. १-४४। भा. १. ४४२ द. व.। अष्टा-संस्कृत तथा हिन्दी।

प्रपूर्णा।

विशेष—पञ्चमहात्म्य आदि पवित्र, वैष्णव एवं ज्ञानार्थसूत्र का संग्रह है।

४४६२. गुह्यका सं. ८१। पत्र सं. १-२९। भा. ३४४४ द. व.। अष्टा-संस्कृत। प्रपूर्णा। अष्टा-

सामान्य।

विशेष—लिख पुत्रा एवं पात्रो का संग्रह है।

४४६३. गुह्यका सं. ८३। पत्र सं. १। भा. ३४४४ द. व.। अष्टा-संस्कृत। भा. अष्टा सं. १५५१।

विशेष—नवग्रहोत्थी स्तोत्र एवं विष्णुहस्तोत्र (१. भाग्यवत्) का संग्रह है।

४४६४. गुह्यका स. ८४। पत्र सं. १-२१। भा. ७४४५ द. व.।

१. स्वस्त्यस्तोत्र	×	संस्कृत	१-२
२. विष्णुस्तोत्र	×	"	२१-२२
३. श्रीकृष्णार्जुनसंवा	×	"	२४-२५
४. अष्टावक्रस्तोत्र	×	"	२६-२७
५. अष्टावक्रस्तोत्र	×	"	२८-२९
६. इन्द्रस्तोत्र	×	"	३०-३१

७. विनामसिद्धि	X	संस्कृत	३८-४१
८. तत्त्वार्थसूत्र	दशमस्कन्धि	"	४२-४९

४४८५. गुटका सं० २५ । पत्र न० २२ । मा० ६४४ इत्य । भाषा—संस्कृत । मूत्रा । दशा—मानान्य ।
विशेष—पत्र ३-४ नहीं हैं । जिनमेनावार्ध कृत जिन महानाम मोक्ष है ।

४४८६. गुटका सं० २६ । पत्र न० ५ से २५ । मा० ६४५ इत्य । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—१८ से २३ मंत्रों का संग्रह है किन्तु जिन पत्र के हैं वह संग्रहित हैं ।

४४८७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ३३ । मा० ६४६ इत्य । भाषा—संस्कृत । मूत्रा । दशा—मानान्य ।

१. जैनरामान्दोत्र	X	संस्कृत	१-३
२. जिनविजयान्दोत्र	X	"	४-५
३. पार्वतीपञ्चोत्र	X	"	६
४. ब्रह्मेश्वरान्दोत्र	X	"	७
५. पद्मावलीान्दोत्र	X	"	८-१४
६. ज्ञानानाम्नीलीनोत्र	X	"	१५-१८
७. ऋषि मंडनान्दोत्र	तीर्थमन्त्र	"	१९-२४
८. सारस्वतीान्दोत्र	भाषांतर	"	२५-२६
९. शीतलापूज	X	"	२७-३०
१०. क्षेत्रमन्त्रोत्र	X	"	३१-३३

४४८८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २१ । मा० ६४७ इत्य । मूत्रा । दशा—मानान्य ।

विशेष—भाषावार्ध विरचित नामा संग्रह है ।

४४८९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० ११४ । मा० ६४८ इत्य । भाषा—संस्कृत हिन्दी । मूत्रा ।

विशेष—भाषा में पूजाओं का संग्रह है तथा मन्त्र में भवनीति कृत मंत्र नवकारांग है ।

४४९०. गुटका सं० ३० । पत्र न० ५० से १०० । मा० ६४९ इत्य । भाषा—संस्कृत । मूत्रा ।

विशेष—जिन पाठ तथा चतुर्विंशति तीर्थहृद मन्त्र (भाषार्ध मन्त्रमन्त्र) हैं ।

४४९१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ७ से २० । मा० ६५० इत्य । विषय—मन्त्र । मूत्रा । दशा—

१ संशोध संशोधितामसा	आनतराम	हिन्दी	७-८
२ अन्तरामसा	हेमराज	"	१-१४
३ अन्तराम मन्त्रिणीयमासा	अन्तराम	"	११ ११

२४७ गुह्यमन्त्र ६२। पत्र १३०-२३। या X ह. व। आया-संस्कृत हिन्दी। मे

पत्र १ ११। पत्र ११। वया नामक।

१ अन्तरामसा	अन्तराम	हिन्दी	१३०-११
२ अन्तरामसा	X	संस्कृत	१२१ १७
३ अन्तरामसा	X	"	१२२
४ अन्तराम (अन्तराम मन्त्र)	X	हिन्दी	१ १-११
५ अन्तराम	X	"	१२३-११

२४७ गुह्यमन्त्र ६३। पत्र १३-१३। या २X१ ह. व। अन्तराम।

मन्त्रिणी—आन्तराम के १४ पत्र मन्त्रिणी हैं।

१ अन्तरामसा	X	हिन्दी	१२
२ अन्तरामसा	आन्तराम	संस्कृत	१४
३ अन्तरामसा	अन्तराम	"	११
४ अन्तराम सा अन्तराम	अन्तराम	हिन्दी	१२
५ अन्तराम सा अन्तराम	X	"	१३
६ अन्तराम सा अन्तराम	X	"	१
७ अन्तराम सा अन्तराम	X	"	७१
८ अन्तराम सा अन्तराम	अन्तराम	संस्कृत	७२-१४
९ अन्तराम सा अन्तराम	X	हिन्दी	अन्तराम ११
१० अन्तराम सा अन्तराम	X	"	१७
११ अन्तराम सा अन्तराम	X	"	११
१२ अन्तराम सा अन्तराम	अन्तराम	"	११
१३ अन्तराम सा अन्तराम	X	"	१
१४ अन्तराम सा अन्तराम	अन्तराम	"	१ १

१५ खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
(राग काफी)	.		
१६ देखो करमा सू फुन्द रही भजरी	किशनदास	"	१०३
१७. सखी नेमोजीसू मोहे मिलायोरी (रागहोरी) धानतराय		"	"
१८ दुरमति दूरि खडी रहो री	देवीदास	"	१०५
१९. भरज सुनो म्हारी भन्तरजामी	सेमचन्द	"	१०६
२० जिनजी की छवि सुन्दर या मेरे मन आई	X	"	अपूर्णा १०८

५४७४ गुटका स० ६४ । पत्र स० ३-४७ । भा० ५X५ इ च । ले० काल स० १८२१ । अपूर्णा ।

विषय—पत्र सख्या २९ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आयुर्वेद के नुसखे हैं । तेजरी, इकातरा आदि के मंत्र हैं । स० १८२१ में श्री हरलाल ने पावटा में प्रतिलिपि की थी ।

५४७५ गुटका स० ६५ । पत्र स० १८७ । भा० ४X३ इ छ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१ आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-११८
२ चर्चासिमाधान	भूषरदास	हिन्दी	११९-१३७
३ सूर्यस्तोत्र	X	संस्कृत	१३८
४ सामायिकपाठ	X	"	१३८-१४४
५ मुनीश्वरी की जयमाल	X	"	१४५-१४६
६ शातिनाथस्तोत्र	X	"	१४७-१४८
७ जिनपजरस्तोत्र	कमलमलसूरि	"	१४९-१५१
८ भैरवाष्टक	X	"	१५१-१५६
९ भक्तलंकारक	भक्तलक	"	१५६-१५९
१० पूजापाठ	X	"	१६०-१६७

५४७६ गुटका स ६६ । पत्र स० १९० । भा० ३X३ इ छ । ले० काल स० १८५७ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१ विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२ ज्वानामालिनीस्तोत्र	X	"	

२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	"	
३. एकोभावस्तोत्र	बादिराज	"	
४. कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	
५. पौर्णवर्णस्तोत्र	×	"	
६. वर्धमानस्तोत्र	×	"	
७. स्तोत्र संग्रह	×	"	५६-७५

५४७८. गुटका सं० ६८ पत्र सं० १३-११५। आ० २३×२३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। अपूर्ण।

दशा सामान्य।

विशेष-नित्य पूजा एवं षोडशकारणादि भाद्रपद पूजामो का संग्रह है।

५४७९. गुटका सं० ६९। पत्र सं० ४-१०५। आ० ४×३ इञ्च।

१. कक्कावतीसी	×	हिन्दी	४-१३
२. त्रिकालचौवीसी	×	"	१४-१७
३. भक्तिपाठ	कलककीर्ति	"	१७-२०
४. तीसचौवीसी	×	"	२१-२३
५. पहिलियां	मारु	"	२४-६३
६. तीनचौवीसीरास	×	"	६४-६६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	६७-७३
८. श्रीपाल वीनती	×	"	७४-७८
९. भजन	×	"	७९-८०
१०. नवकार बड़ी वीनती	ब्रह्मदेव	"	सं० १८४५ ८१-८२
११. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	"	८३-१०१
१२. नेमीश्वर का व्याहला	लालचन्द	"	अपूर्ण १०१-१०५

५४८०. गुटका सं० १००। पत्र सं० २-८०। आ० १०×६ इञ्च। अपूर्ण। दशा सामान्य।

१. जिनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२
२. आदिनाथपूजा	रामचन्द्र	"	२-३
३. सिद्धपूजा	×	संस्कृत	४-५

४ एकीकृतसीमा	बाहिराव	बेस्तत	१-४
५. शिवपुराविभाग (कैमपुरा)	×	हिन्दी	७-११
६. धर्मपुरा	पालातल	"	११-१५
७. मन्दावसीम	मानु पावार्थ	बस्तत	११-१५
८. लालमपुर	उमामात्रि	"	११-११
९. शीवपुरा	×	"	१२ १४
१०. शिवपुरा	×	"	१२ ११
११. लालमपुर	×	"	११ ११
१२. शिवपुरा	×	हिन्दी	१०
१३. मन्दावसीमपुरा	×	बस्तत	१०-१५
१४. धर्मपुरा	×	"	४
१५. लालमपुर	×	हिन्दी	४१
१६. लालमपुर	×	"	४१
१७. लालमपुर के बीच दुरी का वस्ति	×	"	४१-४
१८. लालमपुर	मुबारक	"	४१-४६
१९. एकीकृतसीमपुरा	"	"	१०-११
२०. धर्मपुरा	×	"	११-११
२१. धर्मपुरा	×	"	११ १४
२२. धर्मपुरा	मन्दावसीम	"	१४-१५
२३. लालमपुर	बस्तत	हिन्दी	११-१५
२४. लालमपुर	बस्तत	"	१५-१५
२५. लालमपुर	×	"	१०-४

२४८१ गुप्तकाल १० १ १। १५ व १-१६। का १२× १५ व। मन्दा-बस्तत। शिव-बस्तत।
 मूर्ति। बस्तत-बस्तत। शीव-बस्तत। का १२ व।

२४८२ गुप्तकाल १० १ १। १५ व १-१६। का १२× १५ व। मन्दा-हिन्दी। मूर्ति। धर्म-
 बस्तत। शिव-बस्तत के वस्ति का मूर्ति व।

		हिन्दी	[६५३]
१. दून क्यों गया जी म्हाणे	X		
२. जिन दुखि पर लाज की बारी	गान		०
३. अखिया लगी सँडे	X	"	०
४. दणनि मुख पायो जिनवर डेनि	X	"	२
५. लाल मोहो लगी देखन की	बुधवन	"	२
६. जिनको का ध्यान में मन लगि रह्यो	X	"	३
७. प्रभु निम्ना दीवानी विद्योबा जैन निम्ना सडपा	X	"	३
८. नहीं ऐनों जनन बारम्बार	नवनराम	"	४
९. आनन्द नङ्गल भाव हमारे	X	"	४
१०. जिनराय मजो मोहो लोखो	नवनराम	"	४
११. लुन पय लगे ज्यो होय नला	"	"	४
१२. छावरे मनकी हो कुटिलता	"	"	४
१३. सबन ने ड्रया है धर्म कोटन	"	"	५
१४. दुख काहु नहीं दीजे रे भाई	X	"	६
१५. गारुनाम्पो	नवनराम	"	६
१६. जिन वग्गा चित लगाय मन	"	"	६
१७. हे ना जा निनिदे यो नेनवार	"	"	७
१८. म्हाणे नामो प्रभु नू नेह	"	"	७
१९. यो ही लम नेह नामो है	"	"	८
२०. या पर बारी हो जिनराय	"	"	८
२१. नो मन या ही वा नामो	"	"	८
२२. बनि बही ये नई देखे प्रभु नैना	"	"	८
२३. बीर से पीर मोरी काखो कहिये	"	"	८
२४. जिनराय ध्याकी नखि भाव ने	"	"	१०
२५. सनो जाय जादी पति को मनकावो	"	"	१०
२६. प्रभुकी म्हाणे जिनकी अववाये हो गव	"	"	११
		"	११

४. सूत्रीभाष्यसमीक्षा	बाहिराम	संस्कृत	११
५. विनयुक्तानिबन्ध (वैकुण्ठ)	×	हिन्दी	७-११
६. व्याख्या	बाहिराम	"	११-१
७. मध्यमपरिचय	बाह्यु पाचार्य	संस्कृत	११-१२
८. पराचार्यसूत्र	जगन्नाथ	"	१२-११
९. ज्ञानसूत्रावली	×	"	११-१२
१०. ब्रह्मसूत्रसूत्र	×	"	१२-११
११. ज्ञानसूत्र	×	"	११-११
१२. पञ्चमसूत्र	×	हिन्दी	१३
१३. श्रीकृष्णसूत्र	×	संस्कृत	१३-११
१४. ज्ञानसूत्र	×	"	४
१५. ज्ञानसूत्र	×	हिन्दी	४१
१६. श्रीकृष्णसूत्र	×	"	४१
१७. मध्यमपरिचय के संक्षेप सूत्रों की व्याख्या	×	"	४१-२
१८. ब्रह्मसूत्र	सूत्रसंग्रह	"	४१-४१
१९. सूत्रीभाष्यसमीक्षा	"	"	१०-११
२०. ब्रह्मसूत्र	×	"	११-११
२१. ब्रह्मसूत्र	×	"	११-१४
२२. ब्रह्मसूत्र	बाह्यु पाचार्य	"	१४-११
२३. ब्रह्मसूत्र	जगन्नाथ	हिन्दी	११-११
२४. श्रीकृष्णसूत्र	विनयुक्त	"	११-७७
२५. ब्रह्मसूत्र	×	"	७-७

२४५१. गुटका पत्र ११। पत्र सं १-२१। भा ७ २५२ ४४। ज्ञान-संग्रह। विनय-सूत्र।
पत्र १। ज्ञान-संग्रह। श्रीकृष्णसूत्र का पत्र है।

२४५२. गुटका पत्र ११। पत्र सं १-२१। भा २५४ ४४। ज्ञान-हिन्दी। पत्र १।
ज्ञानसंग्रह। विनय-सूत्रों के पत्रों का संग्रह है।

१ मूल क्यों गया जी म्हाँ	×	हिन्दी	२
२ जिन छवि पर जाऊ मैं बारी	राम	"	२
३ अखिया लगी तैडे	×	"	२
४ दृगनि सुख पायो जिनवर देखि	×	"	२
५ लगेन मोहे लगी देखन की	धुषमन	"	३
६ जिनजी का ध्यान मे मन लगि रह्यो	×	"	३
७ प्रभु मिल्या दीवानी विद्योवा कैसे किया सइया	×	"	४
८ नहीं ऐसो जनम बारम्बार	नवलराम	"	४
९ आनन्द मङ्गल आज हमारे	×	"	४
१० जिनराज भजो सोही जीत्यो	नवलराम	"	५
११ सुम पथ लगे ज्यो होय भला	"	"	५
१२ छाडदे मनकी हो कुटिलता	"	"	५
१३ सवन में द्रमा है धर्म कोमूल	"	"	६
१४ दुल काहू नहीं दीजे रे भाई	×	"	६
१५ मारण लाग्यो	नवलराम	"	६
१६ जिन खरणां चित लगाय मन	"	"	७
१७ हे मा जा मिलिये श्री नेमकवार	"	"	७
१८ म्हारो लाग्यो प्रभु तू नेह	"	"	८
१९ या ही सग नेह लग्यो है	"	"	८
२० या पर बारी हो जिनराय	"	"	८
२१ मो मन यां हो सग लाग्यो	"	"	८
२२ पनि घटो ये भई देखे प्रभु नैना	"	"	८
२३ बीर रो पीर गोरो बातों कहिये	"	"	१०
२४ जिनराय ध्यावो भवि नाव से	"	"	१०
२५ समो जाय जादो पति को समकावो	"	"	११
२६ प्रभुजी म्हारो बिनती भवधारो हो राज	"	"	११

२७ ईं विष बेबिने हो कतुर गर	नवसराम	हिन्दी	१२
२ प्रभु कुन नामो अधिक बन	३०		१९
२८. को मन म्हारो विनवी धू लाथी	३०	३०	१९
३ प्रभु फुक लकडीर मेटी नाक करो के	३०	३०	१९
३१ बरठन करठ बन सब बसे	३०		१९
३२. ई बन लोईल्ला ई	३०	३०	१४
३३ म ठ कुन बेरले किठ भीनी	३०	३०	१२
३४ देव दीन को बलास लागि बरछु बरछु बाली	३०	३०	३०
३५. नाथो हूँ भी विष विषमय करि	३०	३०	३०
३६ प्रभुवी म्हारो परब सुयो किलसल	३०	३०	१९
३७ के बिडा किठ लार्ई	३०	३०	१९-१७
३ धी पूजा फल बरछु सुयो	३०	३०	१
३८. विष मुगरन की बार	३०	३०	३०
४ लामरिषि लुठि नैबन करि के	३०	३०	१६
४१ विमलवी की एक एक नैब लाम	संदबास	३०	३०
४२ कैटी नथी न लाली विवा	३०	३०	९
४३ एक परब सुयो बरछु बीटी	बालसराम	३०	३०
४४ को वे बरमा कर बवार रिखन दीन देरा	बुचनम	३०	९
४५. धरमा ईन में देव क्योवी बरछु	×	३०	३०
४६ कैरा फल कतुर बरछु	×	३०	१६
४७. नैवा सुन बीटी लालीवी	बालसराम	३०	३०
४८ कपी १ पब २ रिण २	बीनसराम	३०	३०
४९. फल फल बरछु	×	३०	१९
५ नारन बरनी बीन कुलली बीटी	×	३०	३०
५१ बुनि बीन ई बिरलल ई कोकी	×	३०	३०
५२. बन कबिडा ई काई	बुचनम	३०	३०

गुटका-संग्रह]

५३. माई सांही सुघर बखानि रे	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हो, मन जिनजी न क्या नहीं रटे	"	"	"
५५. बी परि इतनी मगरूरी करो	"	"	अपूर्णा

५४-५५ गुटका सं० १०३ । पत्र सं० ३-२० । प्रा० ६५५ इक्ष । अपूर्णा । दया-जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदा का संग्रह है ।

५४-५६ गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३०-१४४ । प्रा० ६५५ इक्ष । मे० काल सं० १७२८ वातिक

शुद्धी १५ । अपूर्णा । दया-जीर्ण ।

१. रत्नप्रपूजा	×	प्राकृत	३०-३२
२. नन्दीनररक्षीप पूजा	×	"	३३-४७
३. स्नानविधि	×	गद्य	४८-६०
४. शोचपात्रपूजा	×	"	६०-६४
५. शोचपात्राष्टक	×	.	६४-६५
६. पन्देशान की जयमाला	×	"	६५-६६
७. पार्श्वनाथ पूजा	×	"	७०
८. पार्श्वनाथ जयमाला	×	"	७०-७३
९. पूजा धमन	×	संस्कृत	७४
१०. गितामलि की जयमाला	ग्रहगणमाला	हिन्दी	७५
११. कलिकुण्डलन	×	प्राकृत	७६-७८
१२. विष्णुमान शीत शीर्षक पूजा	नरेन्द्रनाथ	गद्य	८२
१३. दधारातीपूजा	"	"	८३
१४. रत्नाचरी धनी की त्रिविधों के नाम	"	हिन्दी	८५-८७
१५. हास मलय की	"	"	८८-८९
१६. शिवमहोत्सव	धाराधर	गद्य	८९-१०२
१७. शिवमालाविधान	×	"	१०२-१२१
१८. दया की त्रिविधों का श्लोक	×	हिन्दी	१२१-१३६

५४-५५ गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ११७ । प्रा० ६५५ इक्ष ।

१. बर्द्धपुरसेन बाण्ड बाणा	अवतार	हिन्दी	अनुर्ण	२४-२५
२. बर्द्धपुरसेन बाण्ड बाणा	X	"	"	२४-२५
[निम्न बर्द्धपुरसेन के नामक बाण्ड बाणा बर्द्धपुरसेन हैं ।]				
३. अरुण बर्द्धपुरसेन	X	हिन्दी	अनुर्ण	२४-२५
४. बर्द्धपुरसेन	अनुर्ण	"	"	२४-२५

अनुर्ण गुरुकुल में १०६ । अथ २४ । या २५ । अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

विशेष—अनुर्ण बाण्ड बाणा अनुर्ण हैं ।

अनुर्ण गुरुकुल में १०६ । अथ २४ । या २५ । अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

विशेष गुरुकुल में १०६ । अथ २४ । या २५ । अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

१. अरुण बाण्ड बाणा हिन्दी अथ हीवा अरुण अनुर्ण २४-२५
अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

टीका—अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।
अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

टीका—अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।
अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

टीका—अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।
अथ २६ । अथ २७ । अथ २८ । अथ २९ । अथ ३० ।

वेद बीज जल पयस्य सुववि जउ मटीम धर ।

पत्र दूहा गुण पुहपवात भोगो तिगमी यर ॥

पनरो दीप प्रदीप अधिक गहरी या टवर ।

मनसुजगति भव पन पामिद मंवर ॥

विस्तार कोष बुधि जुगो विमल धणी निसन वदणहार धन ।

ममृत धेनि पीपल घतइ रोपी नवियाण सजुज ॥ ३१३ ॥

अर्थ—मूत्र वेद पाठ तीको बीज जल पाणी तिगो नवियण तिये वयणे गरि जटमाडीस हउ पगिद ॥

दूहा ते पय दूहा गुण ते पून सुगन्ध बाग भागी भमर श्रीकृष्णजी वेतिद मागहद करो विस्तरी जगत्र नद निगे दीप प्रदीप ।
व दीवा धी अधिक अत्यन्त विस्तरी जिके मन मुपी एह मउ धी जाणइ तीको दगा पन पामिद । मवर महिता स्वर्ग
ना सुरा पामे । विस्तार करी जगत्र नद विपद विमल करीना निर्मल श्रीनिसनजी जेनि मा धणी नद नहण हार धव
तिको विए ममृत रूपण । वेति धृव्यी नद तिगद अधिकन धृव्यी नद वविराज श्री वन्माण तम वेटा वृवीराजइ काया ।

इति धृव्यीराज श्रुत रूपण कामरणी वेति सपूर्ण । गुणि जग विमल वाचगार्थ । सवत् १७४८ वर्ष वैशाख
मासै कीपण पक्षे तिथि १४ भद्रपदारे लिखत उणिमरा नम्रे ॥ श्री ॥ रन्तु ॥ इति मगल ॥

२. कीवमजरी	×	हिंदी	५५
३. बिरहमजरी	नददाम	"	५५-६१
४. बापनी	हेमराज	" ४६ पल हैं	६१-६७
५. नैमिराजमति बाह्यमाता	×	"	६७
६. पृच्छावलि	×	"	६६-८७
७. नाटक समयसार	बनारसीदाम	"	८८-११४

४४८८ मुद्रिका स० १०७ क । पत्र स० २३५ । मा० ४५४ इअ । विषय-पूजा एव स्तोत्र ।

१. देवपूजाष्टक	×	संस्कृत	१-४
२. सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"	४-६
३. श्रुताष्टक	×	"	६-७
४. गुरुस्तवन	धातिदास	"	८
५. गुर्वाष्टक	वाविराज	"	९

१. सरस्वती जयपान	अष्टादिनवत	हिन्दी	१०-११
७. पुत्रजयपान	"	"	११-१२
ननुन्वातविधि	×	महाभूत	११-१३
८. विद्वत्पुत्रा	×	"	१४-१
९. वसिष्ठपुत्रसंज्ञकपुत्रा	अष्टादिनवत	"	११-१२
११. लोहमकारणपुत्रा	×	"	१२-१३
१२. वज्रमकारणपुत्रा	×	"	१३-१४
१३. कर्णपुत्रा	×	"	१४-१५
१४. विजयपुत्रा	अष्टादिनवत	"	१५-१६
१५. महानुक्तिविधान	×	"	१६-१७
१६. अष्टादिनवतपुत्रा	×	"	१७-१८
१७. मत्स्यपुत्रा	अष्टादिनवत	सम्पूर्ण	१८-१९
२. ज्ञानपुत्रा	×	"	१९-२०
१९. महापुत्रा	×	"	२०-२१
२. अष्टादिनवतविधान	×	"	२१-२२
२१. अष्टादिनवत	×	"	२२-२३
२. अष्टादिनवतविधान	×	अष्टादिनवत	२-२३
२३. अष्टादिनवत विधि	×	संस्कृत	२३-२४
२४. अष्टादिनवत विधान	×	"	२४-२५
२५. अष्टादिनवत विधान	×	"	२५-२६
२६. अष्टादिनवत विधान	×	"	२६-२७
२७. अष्टादिनवत विधान	×	"	२७-२८
२८. अष्टादिनवत विधान	×	"	२८-२९
२९. अष्टादिनवत विधान	×	"	२९-३०
३. अष्टादिनवत विधान	अष्टादिनवत	हिन्दी	३०-३१

॥ ३० नमः शिवाय ॥

वी विद्वत्पुत्रसंज्ञकपुत्रा लोहमकारणपुत्रा

महापुत्रा अष्टादिनवत विधान अष्टादिनवत ॥ १ ॥

हो क्षपक वयण अरुधारि, हवि चाल्यो तुम भवपारि ।
हो सुभट कहू तुझ भेट, धरी समक्षित पालन एहु ॥ २ ॥
हवि जिनवरदेव प्रारोहि, तू सिध समरि मन माहि ।
मुणि जीव दया घुरि धर्म, हवि छाडि अनुए वर्म्म ॥ ३ ॥
मिथ्यात कु सग टालो, गणगुरु वचनि पालो ।
हवि भान धरे मन धीर, ल्यो सजम दोहोलो वीर ॥ ४ ॥
उपप्राचित करि व्रत सुधि, मन वचन काय निरोधि ।
तू क्रोध मान माया छाडि, आपुण सू सिलि माडि ॥ ५ ॥
हवि क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार ।
तु मत्र समरे नवकार, धीए तन करे भवनार ॥ ६ ॥
हवि मवे परिसह जिपि, अभतर ध्याने दीपि ।
वैराग्य धरै मन माहि, मन मावड गाढु साहि ॥ ७ ॥
मुणि देह भोग सार, भवलधो वयण मा हार ।
हवि भोजन पाणि छाडि, मन लेई भुगति माडि ॥ ८ ॥
हवि छुणक्षण पुटि मायु, मनासि छाडो काय ।
इ द्वीय वस करि धीर, कुटव मोह मेल्ले वीर ॥ ९ ॥
हवि मन गन गाढु बाधे, तू मरण समाधि साधि ।
जे साधो मरण सुनेह, जेया स्वर्ग भुगतिय भरोय ॥ १० ॥

×

×

×

×

शान्तिम भाग

हवि हडि जाणि विचार, घणु कहिइ किहि सु अपार ।
लिमा अणसण दीख्या जाण, सयास छाडो प्राण ॥ १३ ॥
सन्पास तरणा फल जोड, स्वर्ग सुखि फलि सुनु होइ ।
वनि श्रावक कोल तू पामोइ, लही निर्वाण भुगती गामीइ ॥ १४ ॥
जे भणि सुणिन नरनारी, ते जाइ भववि पारि ।
धी विमलेन्द्रकीति कह्यो विचार, प्राराधना प्रतिबोधसार ॥ १५ ॥

इति श्री प्राराधना प्रतिबोध समाप्त

१०. पनमगति वेति	हर्षकीति	हिंदी	म० १६८३ थापगा प्रतूर्ण
११ पंच सधावा	×	"	"
१२ मेघमुमारगीत	पूना	हिंदी	८०-८५
१३ भतामरस्तोत्र	हैमराज	"	८६
१४ पद-प्रव मोहे गछन उपाय	रूपचंद	"	४७
१५. पंगवरमेष्टीस्तवन	×	प्राज्ञ	४७-४८
१६ दातिपाठ	×	सख्त	५०-५२
१७ स्तवन	धानापर	"	५२
१८ बारह भावना	बदिप्राप्त	हिंदी	
१९. पचमात	रूपचंद	"	
२० जयष्टी	"	"	
२१ "	"	"	
२२ "	"	"	
२३. "	दरिगाह	"	

मुनि मुनि जियरा रे नू त्रिभुवन वा राउ रे ।

नू तजि परपरयारे चेतसि सहज गुभाव रे ॥

चेतसि सहज गुभाव रे जियरा परम्यो मिनि क्या राउ रहे ।

प्रप्या पर जाप्या पर प्रप्याणा चउगइ दुग्य प्रप्याइ सहै ॥

प्रयसो गुण कीजे यर्म हं छीछे गुणहु न एक उपाय रे ।

दंसण एणए चरणमय रे जिउ नू त्रिभुवन वा राउ रे ॥ १ ॥

वरमनि वसि पडिया रे प्रणया मूढ़ विभाव रे ।

मिय्या मद नटिया रे मोहा मोहि प्रणाइ रे ॥

मोहा मोह प्रणाइ रे जिय रे मिय्यामद नित माचि रएया ।

पढ पढिहार राढग मदिरायत ज्ञानायरणी प्रादि कएया ॥

हछि चित्त पुलाल भदयारीण प्रणउदोघे चताई रे ।

रे जीवछे वरमनि वसि पडिया प्रणया मूढ़ विभाव रे ॥ २ ॥

तु मति सोपहि न बीठा रे वीरिय मी कझा बात रे ।
 ममन बुद्धयस करे तिनका करे विहास रे ॥
 तिनका करहि विहास रे बिबडे तु मुडा नहि भियणु करे ।
 अम्बरु बरलु बरु बुद्धयसक तिनसी तु भित वैह करे ॥
 घाते प्यासा घाते छिटा नहि लमप्याऊ वास रे ।
 रे बीठ तु मति सोपहि न बीठा वीरिय के कझाबात रे ॥
 ठे कनवाहि बाजे रे रडे मरुपबनमाह रे ।
 केवल विपल जबादे, प्रबटी बीठि मुनाह रे ॥
 प्रबटी बीठि मुनाह रे बीबडे विप्या रैलि विहारी ।
 एवारेव कालु किन्हु विमिया ठे कन हुवा बसरी ॥
 मुहुड सुवर्ग पंच बालेप्यो तिनके काली बस रे ।
 नहु छरिह विम विबुधन लेवी रडे अंतर लयनमाह रे ॥ ४ ॥

२४ बन्धुगुमहिलेकीबन्धना	बनारसीदास	हिन्दी से बन्ध १७१५ बासीर कुटी ६
२५ निर्वाणवाग्द बाबा	×	ग्राह्य
२६ बुवा लख	×	हिन्दी

२४६ गुह्य स १ ६ । वन सी १२२ । वा ६५४ दस । से बन्ध १ ३२ ठारल कुटी ९ ।

अपूर्ण । वसा—बीहारी ।

विरोध—निनि विरुद्ध एक अणु है ।

१ लडिअदेव की वसा	×	हिन्दी	११४
२ बन्धुगुमहिलेकीबन्धना	बनारसीदास	"	१२-१४
३ मेमिदास का बाणबला	×	"	अपूर्ण १२-१६
४ जगदी	मेमिदास	"	१७
५ लंबा (मुल हीन घरीरकी बागिर बाधि बाह)	×	"	१
६ बंदल (बी विपराय के प्यास सी उग्रह बीहो मने)		"	१२
७ निर्वाणवाग्द बाबा	बनारसीदास	"	१०-११

८ स्तुति (भाग्य प्रभु को जब भयो)	×	हिन्दी	३४-३६
९ बारहमासा	×	"	३७-३९
१०. पद व भजन	×	"	४०-४७
११ पार्वनाथपूजा	हर्षकीर्ति	"	४८-४९
१२ ग्राम नीलू का भगडा	×	"	५०-५१
१३ पद-काइ समुद विजयमुत्त सार	×	"	५२-५७
१४ गुरुओं की स्तुति	भूषणदास	"	५८-५९
१५ दर्शनपाठ	×	संस्कृत	६०-६३
१६ विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	भूषणदास	हिन्दी	६४-६६
१७ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	६७-६८
१८ पद-मेरा मन बस कीनी जिनराज	×	हिन्दी	७०
१९. मेरा मन बस कीनी महावीरा	हर्षकीर्ति	"	७१
२० पद-(नैना सफल भयो प्रभु दरमण पाय)	रामदास	"	७२
२१ चलो जिनन्द बदस्या	×	"	७२-७३
२२ पद-प्रभुजी तुम मैं चरण शरण गहो	×	"	७४
२३ ग्रामेर के राजाओं के नाम	×	"	७५
२४ " "	×	"	७६
२५. विनती-बोल २ भूली रे माई	नेमिचन्द्र	"	७८-७९
२६ पद-चेतन मानि ले बात	×	"	७९
२७ मेरा मन बस कीनी जिनराज	×	"	८०
२८ विनती-बहु श्री भरहन्तदेव	हरिसिंह	"	८१-८२
२९ पद-सेवक हू महाराज तुम्हारी	दुलीचन्द	"	८२-८४
३०. मन धरी वे होत उछावा	×	"	८४-८६
३१ घरम का डोल बजाये सूणी	×	"	८७
३२ भव मोहि तारोनी जगदगुरु	मनमाराम	"	८८
३३ लागो दीर लागो दीर प्रभुजी का ध्यानमे मन । पूरणदेव		"	८८
३४ भासरा जिनराज तेरा	×	"	८८

१३. कु बागो कौं ठापीही	×	हिमरी	५३
१४. मुम्बारे बर्य रैपल ही	बीचराज	"	३
१५. मुदि १ २ बीच मिरा	मनकापज		२ -२१
१६. बरनय २ बँसलर कपुर्नसि कुल वहा	×	"	३१-३३
१७. धीमेवकुमार ह्मनो कौं व छठारो पार	×	"	३३
४. बागपी	×	"	३५-३७
४१. पद—बिनती कपकां प्रहु पानो बी	विद्यवकुमार	"	३५
४२. वे बी प्रहु कुल ही छठारो पार	"		३६
४३. प्रहुवी भोहा सै ठम नल बाग	×	"	३६
४४. बँहु धीमेवपज	कपकपीति	"	१ -१ १
४५. बाजा बरम्या प्यार २	×	"	१ १
४६. वरन कवी हो प्रहुवी	कुलमपज	"	१ १
४७. पद	वेमधिह	"	१ ५-१ ६
४८. बरका कलवा बांही २	ह्मरबाज	"	१ १
४९. कपकमस्तोष	मलमुक्तपार्य	बँसल	१ ७-१७
५०. कीमोव पीलकर लुधि	"	हिमरी	१११-११
५१. मेकमुनारवाठां	"	"	१११-१४
५२. कपकपट की कवा	"		११२-४१
५३. कपेमुड की विपती	"		१४२-११
५४. पद—बरन बर्य कु वीठरल	"	"	१४१-४७
५५. लुड पल	"		१४५ ३१

५५.१ गुटका स ११ । पद १ ४३ । या १४४ दप । माला—हिमरी बरकट ।

१. मितमुबा	×	बँसल	१-२६
२. मोमबजम	जमनबागि		२३-४६
३. मलमस्तोष	या मलमु व	"	२०-३
४. बँसलपज	कपकप	"	२ -१४

५ कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	६८-७५
६ पूजासंग्रह	×	"	७५-१००
७ विनतीसंग्रह	देवाग्रहा	"	१०२-१४३

५४६० गुटका सं० १११ । पत्र सं० २८ । आ० ६३×४३ इ च । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—सामान्य

१ भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१-६
२ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११
३ चरवा	×	प्राकृतहिन्दी	११-२६

विशेष—“पुस्तक भक्तामरजी की प० लिखमीचन्द रैनवाल हाली की छै । मिति चैत सुदी ६ सवत् १९५४ का मे मिली मार्फन राज श्री राठोडजी की सू पचासू ।” यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है ।

५४६३ गुटका सं० ११० । पत्र सं० १५ । आ० ६×६ इ च । भाषा—संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाग्रो का संग्रह है ।

५४६४ गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १६-२२ । आ० ६३×५ इ च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र सं० १८-२० ।

डोकरी ने राजा भोज कहाँ डोकरी हे राम राम । वीरा राम राम । डोकरी यो मारग कहा जाय छै । वीरा ई मारग परयो भाई भर परयो गई ॥ १ ॥ डोकरी मेहे बटाठ हे बटाठ । ना वीरा थे बटाऊ नाहीं । बटाऊ तो ससार मांही दोय और ही छै ॥ एक तो चाद भर एक सूरज ॥ २ ॥ डोकरी मेहे राजा हे राजा ॥ ना वीरा थे तो राजा नाही । राजा तो ससार मे दोय और ही । एक तो मन्न भर एक पाणी ॥ ३ ॥ डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना वीरा थे चोर ना । चोर तो ससार में दाय और ही छै । एक नेत्र चोर और एक मन चोर छै ॥ ४ ॥ डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा । ना वीरा थे तो हलवा नाही ॥ हलवा तो ससार में दोय और ही छै । कोई पराये घर बसत मागिवा जाइ उका घर मे छै पणि नट जाय सो हलवो ॥ ५ ॥ डोकरी तू माहा के माता हे माता । ना वीरा माता तो दोय और ही छै । एक तो उदर माही सू काढ़े सो माता । दूसरी घाय माता ॥ ६ ॥ डोकरी मेहे तें हारघा हे हरघा । ना वीरा थे क्या ने हारघो । हारघो तो ससार मे तोन और ही छै । एक तो मारग चालतो हारघो । दूसरो वेटी जाई सो हारघो तीसरो जैकी भोडी भस्त्री होइ सो हारघो ॥ ७ ॥ डोकरी मेहे बापडा हे बापडा । ना वीरा थे बापडा नाही । बापडा तो च्यारा और छै । एक तो गऊ को जायो बापडो । दूसरो छधाली को जायो बापडो । तीसरो जै की माता जनमता ही मर गई सो बापडो । चौथा धामण बाण्या की वेटी विधवा हो जाय सो बापडो ॥ ८ ॥ डोकरी आपा मिला हे

मिना । बीछ बिजबा बाबा सो सभार में आवि गीर ही छी । जैनी बाद बिजबा होकी छी बां मिमती । बर के ती
 डेने परदेस सु दासो होकी लीं बां बिजती । बूझतो सांजलु मावबा नी मैह बरल लीं बां सभार सु । छिहरो बल्ले
 नी बाग दीराबा जल्लो सो नी बिजली । बीबा रबी दुख बिजली । खोकरो बाग्या है जल्ला । बरिप नई न बरने
 मलली धाबा । दुखी धाई पावका बीवार लावा ॥ १ ॥

राखियो जिमि कसैऽ करिहि वनउ करि इम बोलइ ।
 गुरु सियाल मेरह जिउअ जगमु पवण भइ किम बोलए ।
 जो पच विषय विरतु चित्तिहि किमउ खिउ कम्मह तणु ।
 श्री भुवनकीर्ति चरण प्रणमइ धरइ अठाइस मूलगुणा ॥ ३ ॥
 दस लाक्षण धर्म निखु धारि कु सजमु सजमु भसणु वनिए ।
 सन्नु मिथु जो सम किरि देखई गुरनिरगथु महा मुनीए ॥
 निरगथु गुरु मद अट्ट परिहरि सवय जिय प्रतिपालए ।
 मिय्यात तम निद्वैण दिन म जैणधर्म उजालए ॥
 तेरभ्रतह अखल चिघह कियउ सक्यो जम ।
 श्री भुवनकीर्ति चरण पणमउ धरइ दशलक्षिण धर्मु ॥ ४ ॥
 सुरु तरु सघ कलिउ चितामणि दुहिए दुहि ।
 महो धरि धरि ए पच सवद वाजहि उछरगि हिए ॥
 गावहि ए कामणि मधुर सरे प्रति मधुर सरि गावति कामणि ।
 जिणह मन्दिर भवही अष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसममाल चढावहि ॥
 धूचराज भणि श्री रत्नकीर्ति पाटिउ दयोसह गुरो ।
 श्री भुवनकीर्ति आसीरवादिह सघु कलियो सुरतरो ॥

॥ इति आचार्य श्री भुवनकीर्ति गीत ॥

५ नाडी परीक्षा	×	संस्कृत	१५-१८
६ आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१६-१०६
७ पार्श्वनाथस्तवन	समयराज	"	१०७

सुन्दर सोहरण गुण निलउ, जग जीधरण जिण चन्दोजी ।
 मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनदो जी ॥ १ ॥
 जेसलमेरु जुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।
 पास जिलेसुर जग धणी फलियो सुरतरु कन्दोजी ॥ २ ॥ जे० ॥
 मणि माणिक मोती जड्यउ कचणरूप रसालो जी ।
 सिस्वर सेहर सोहतउ पूनिम ससिदल भालोजी ॥ ३ ॥ जे० ॥

द्विरयम तिलक सौहृदयतु विम मुक्त कर्मस विमलोमी ।

बार्मी कुण्डल दीपता मिक मिय आक ममलोमी ॥ ४ ॥ वे ॥

बकि बनीहूर बटिमन उरि बरि नम भिर हारीमी ।

बहिर बबहि भना करता ममे मय नारीमी ॥ ५ ॥ वे ॥

बरचत बलि तनु बीपनी मोहन सुपनि भापेमी ।

मुन सोएग संपद भिलद डिपुवर बाय बारीमी ॥ ६ ॥ वे ॥

इन परि पाले जिहैसद केटयन मुन विहारीमी ।

जिलखन सुरि पसाइ लह सवयराज मुक्कनारीमी ॥ ७ ॥ वे ॥

॥ इति श्री पार्वनाथस्वयं व्रतलोड्य ॥

२४६८, गुरुका सं ११७, पत्र सं १३, भा १ × ४ इ. भाषा-संस्कृत हिन्दी । पृष्ठ १

यथा सामान्य ।

विशेष- विविध पाठो का संग्रह है । वर्षादि पुनर्य वर्ष प्रतिष्ठिति विषयो के संबंधित पद्यों ।

२४६९, गुरुका सं ११८, पत्र सं १२३, भा १ × ४ इ. भाषा-

१	शिक्षा वसुध	वचनराज	हिन्दी	
२	श्री विभवत पद बलि के बी	वचनराज	"	३-७
३	मार्तण्ड वरमणित लाल	राजविजय	"	४-१
४	केटन हो तेरे वरन विजय	विजयल	"	११-१२
५	वैष्णवना	सम्प्रदाय	संस्कृत	१२ १३
६	कमण्डल	वचनवि	"	२१
७	पद-प्राप्ति विवर्ति बलि मेले मेखवा	राजकन	हिन्दी	३७
	पद-व्रतमयी सुमरि वैव	वचनराज		२५
८	पद-मुक्तामयी प्रभु	मुक्तामय		७२
९	निर्वाणवृद्धि संवद	विश्ववृद्ध	"	१-६

अथ १७२३ में कुलकर्णेय के केटोपिह मे लिखा ।

११ पञ्चमण्डलीति हर्षकृति हिन्दी ११२-१

पत्रा सं १५ ५ प्रति विपि सं १५५

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २५१ । आ० ६३×६ इञ्च । ले० काल सं० १८३० असाढ़ बुदी
८ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—पुराने घाट जयपुर में ऋषभ देव चैत्यालय में रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।
इसमें कवि बालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमें २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नहीं हैं ।

५५०१ गुटका सं० १२० । पत्र सं० १३३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह ।
पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ रविब्रतकथा

जयकीर्ति

हिन्दी २-३ ले० काल सं० १७६३ पीप सु० २

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरो सरसति वित ध्याऊ ।

सदगुरु चरण कमल नमि रविब्रत गुण गाऊ ॥ १ ॥

व रणरसी पुरी सोमती मत्तिसागर तह साह ।

सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥

मुनिवादि सेठे लीयो रविनोब्रत सार ।

सामालि कहु बहासा कीया ब्रत नद्यो अपार ॥ ३ ॥

नेह थी धन कण सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ ।

सात पुत्र बाल्या परदेश अजीध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविनो ब्रत कर सी ।

त्रिभुवन ता फल ने लही शिव रमनी बरसी ॥ २० ॥

नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी राधरत्न सुमुपन ।

जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासत्र गति द्वपण ॥ २१ ॥

इति रविब्रत कथा सपूर्णा । हन्दोर मध्ये लिपि कृत ।

ले० काल सं० १७६३ पीप सुदी ८ प० दयाराम ने लिपी की थी ।

धर्मसार चौपई

पं० शिरोमणि

हिन्दी

३-७३

२० काल १७३२ । ले० काल १७६४ अवन्तिका पुरी में श्रीदयाराम ने प्रतिलिपि की ।

१ विद्याभार स्तोत्रमाला	अथवासीति	हिन्दी	४१-४४
४ वसन्त भट्ट	×	संस्कृत	११
बनारस में गुरुत में प्रतिनिधि की थी। सं १७२५। पूरा है।			
२ विपश्चिन्नाकाश	बीराल	संस्कृत	२१-२२
१ पर—बीई बीई बीई कृष्णि भगरी	दुपुत्रक	हिन्दी	१३
७ पर—प्राप्त लगे मुकरी जिनदेव	बीराल	"	१७
पल्लोविनयी	बहुगल	"	१४-१६
८ वसित	बहुगुलाल	"	१२२

विद्याभार की भाषा के लक्षण गुरुत में विविदिता बना।

२४०२ गुरुका सं १२१। पत्र सं १३। भा १२५५६ दल। जल-हिन्दी।

विद्येय-विनिष्ठ कविता के परी का संकल है।

२४३ गुरुका सं १२२। पत्र सं १३। भा २२५५६ दल। जल-हिन्दी संस्कृत।

विद्येय-टीका कोटीटी नाम कर्मसतोष (संस्कृत) कल्याणविस्तार नाम (बनावीराल) बलभार
सतोष (नामगु भाषा) लक्ष्मीसतोष (संस्कृत) विष्णुसतोष संवत्सर देवदूत, विष्णुदूत, श्रीगुरुदूत दूत,
पक्षी (भवत) वसन्तसतोष गुरुत की भाषाको भाषित गरीब, वीरगुरु (कृष्णसतोष) सामाजिक टीका
(हिन्दी) अर्द्ध नाम के संकल है।

२४४ गुरुका सं १२३। पत्र सं २३। भा १५६ दल जल-संस्कृत हिन्दी। दल-विनिष्ठ।

१ बलभारसतोष अर्द्ध नाम कविता	×	संस्कृत	२-६
२ लक्ष्मी	×	"	१ २२
३ वीरगुरुटी	मलभार	हिन्दी	२२-२६

२४५ गुरुका सं १२४। पत्र सं १३। भा ७५६ दल।

विद्येय-कृष्णटी एक सतोष का संकल है।

२४६ गुरुका सं १२५। पत्र सं १३। भा १२५५ दल। पूर्ण। सामाजिक दूत। दल-भाषा।

१ कर्म अर्द्ध नाम	×	हिन्दी	
२ बीरगुरुटी नाम			

गुटका-समग्र]

३ चतुर्दशमार्गणा चर्चा	×	हिन्दी
४ द्वीप समुद्रों के नाम	×	"
५ देशों (भारत) के नाम	×	हिन्दी

१ भगवदेश । २ वगवदेश । ३ कलिगदेश । ४ तिलगदेश । ५ राट्टदेश । ६ लाट्टदेश ।
 ७ कण्टिदेश । ८ भेदपाट्टदेश । ९ वैराट्टदेश । १० गौरुदेश । ११ चौरुदेश । १२ द्राविणुदेश । १३ महाराष्ट्र-
 देश । १४ सौराष्ट्रदेश । १५ कासमीरदेश । १६ कीरदेश । १७ महाकीरदेश । १८ मगधदेश । १९ सूरसेनुदेश ।
 २० कावेरदेश । २१ कम्बोजदेश । २२ कमलदेश । २३ उत्करदेश । २४ करहाट्टदेश । २५ कुचदेश ।
 २६ क्लारणदेश । २७ कच्छदेश । २८ कौसिकदेश । २९ सकदेश । ३० भयानकदेश । ३१ कौसिकदेश । ३२
 । ३३ कारुतदेश । ३४ कापुतदेश । ३५ कच्छदेश । ३६ महाकच्छदेश । ३७ भोटदेश । ३८ महाभोटदेश ।
 ३९ कीटिकदेश । ४० केकिदेश । ४१ कोल्लगिरिदेश । ४२ कामरुणदेश । ४३ कुण्कुणदेश । ४४ कुतलदेश ।
 ४५ कलकूटदेश । ४६ कर्कटदेश । ४७ केरलदेश । ४८ खगदेश । ४९ खर्परदेश । ५० खेटदेश । ५१ विष्णु-
 देश । ५२ वैदिदेश । ५३ जालधरदेश । ५४ टकरण टक्क । ५५ मोडियाणदेश । ५६ नहालदेश । ५७ तुङ्गदेश ।
 ५८ लायकदेश । ५९ कौसलदेश । ६० दशाणदेश । ६१ दण्डकदेश । ६२ देशसभदेश । ६३ नेपालदेश । ६४ नर्तक-
 देश । ६५ पञ्चालदेश । ६६ पल्लवदेश । ६७ पूठदेश । ६८ पाण्ड्यदेश । ६९ प्रत्यगदेश । ७० अंबुददेश । ७१ वसु-
 देश । ७२ गभीरदेश । ७३ महिषकदेश । ७४ महोदयदेश । ७५ मुरण्डदेश । ७६ मुरलदेश । ७७ मरुस्थलदेश ।
 ७८ मुद्गरदेश । ७९ मगनदेश । ८० मल्लवर्तदेश । ८१ पवनदेश । ८२ आरामदेश । ८३ राढ़कदेश । ८४
 ब्रह्मोत्तरदेश । ८५ ब्रह्मावर्तदेश । ८६ ब्रह्मणदेश । ८७ बाह्वदेश । विदेहदेश । ८८ वनवासदेश । ८९ वनायुक्-
 देश । ९० वाल्हाकदेश । ९१ वल्लवदेश । ९२ अवन्तिदेश । ९३ वन्दिदेश । ९४ सिंहलदेश । ९५ सुह्रदेश ।
 ९६ सुपरदेश । ९७ सुह्रदेश । ९८ अस्मकदेश । १०० हूणदेश । १०१ हूर्मकदेश । १०२ हूर्मजदेश ।
 १०३ हसदेश । १०४ हूहकदेश । १०५ हेरकदेश । १०६ वीरुदेश । १०७ महावीरुदेश । १०८ मट्टीयदेश ।
 १०९ गोप्यदेश । ११० गाढाकदेश । १११ गुजरातदेश । ११२ पारसकुलदेश । ११३ शवालक्षदेश ।
 ११४ कोलवदेश । ११५ शाकभरिदेश । ११६ कनरुजदेश । ११७ आदनदेश । ११८ उचीविसदेश । ११९ नीला-
 वरदेश । १२० गगापारदेश । १२१ सजाणदेश । १२२ कनकगिरिदेश । १२३ नवसारिदेश । १२४ भाभिरिदेश ।

६ क्रियावादियों के ३६३ भेद

×

हिन्दी

श्लोकोट— यह नाम गुटके में खाली छोड़ा हुआ है ।

७ स्फुट कविता एवं पद्य संग्रह	×	हिन्दी संस्कृत
८ शास्त्राभ्युपेक्षा	×	संस्कृत
९ सूत्रमणि	×	॥ वि काल १८३९ भागए मुद्रा १
१ स्फुट पद्य एवं मंत्र-मार्ग	×	हिन्दी

३३६. गुडका सं १२६। पद्य सं ४३। भा १ \times ४५ दण्ड। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-वर्णन विवेक—वर्णनों का संग्रह है।

३३७. गुडका सं १२७। पद्य सं ३३। भा ७०२ दण्ड।

विषय—गुहा पाठ संग्रह है।

३३८. गुडका सं १३७ क। पद्य सं ३३। भा ७३५९ दण्ड।

१ श्रीमद्योग \times संस्कृत १-१९

२. मधुसूदनकी \times १७-१६

विषय—वैष्णवधर्म। वि काल सं १ ७

३. ज्योतिष्कृतसंस्कृत। ओपधि संस्कृत ४०-११

४. मारपी \times हिन्दी ३१-३३

ग्रन्थों की रीतकर वर्णन होने का योग

३३९. गुडका सं १३८। पद्य सं ३-३। भा ७९५९ दण्ड। भाषा-संस्कृत।

विषय—साधारण पाठों का संग्रह है।

३३९१. गुडका सं १३९। पद्य सं -३४। भा ७०२ दण्ड। भाषा-संस्कृत।

विषय—शेषपालस्तोत्र लक्ष्मीस्तोत्र (३) एवं पञ्चमङ्गलपाठ हैं।

३३९२. गुडका सं १३९। पद्य सं ९। भा ९०४ दण्ड। वि काल १७३९ भागए मुद्रा १।

१. कर्तुर्द्वितीयकृतपुष्पा \times संस्कृत १-३४

२. श्रीमद्योग \times संस्कृत ३३-३७

३. श्रीमद्योग \times संस्कृत १५

३३९३. गुडका सं १३९। पद्य सं १४। भा ७०२ दण्ड। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विषय—साधारण पाठों का संग्रह।

३३९४. गुडका सं १३९। पद्य सं १४-४१। भा ९०४ दण्ड। भाषा-हिन्दी।

गुटका-संग्रह

१ पञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द	हिन्दी	ले० काल १८२६ १५-२२
२. स्तुति	X	"	२३-२३
३ दोहायतक	रूपचन्द	"	२५-३८
४. स्फुटदोहे	X	"	३४-८१

५५१५ गुटका सं० १३३। पत्र सं० १२१। भा० ५३X४ इ च। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विशेष—छहठाला (चानतराय), पचमङ्गल (रूपचन्द), पूजायै एव तत्त्वार्थसूत्र, भक्तामरस्तोत्र आदि का संग्रह है।

५५१६ गुटका सं० १३४। पत्र सं० ४१। भा० ५३X४ इ च। भाषा-संस्कृत।

विशेष—शातिनाथस्तोत्र, स्वन्दपुराण, भगवद्गीता के कुछ स्थल। ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ११।

५५१७ गुटका सं० १३५। पत्र सं० १३-१३४। भा० ३३X४ इ च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—पचमङ्गल, तत्त्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५१८ गुटका सं० १३६। पत्र सं० ४-१०८। भा० ८३X२ इ च। भाषा-संस्कृत।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, अष्टक आदि हैं।

५५१९ गुटका सं० १३७। पत्र सं० १६। भा० ६X४३। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

१ मोरपिच्छधारी (इच्छा) के कवित्त धर्मदास, वपोत, विचित्र देव हिन्दी ३ कवित्त हैं।

२ वाजिदजी के अट्टल वाजिद "

वाजिद के कवित्तों के ६ ग्रंथ हैं। जिनमें ६० पद्य हैं। इनमें से विरह के ग्रंथ के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं।

वाजिद विपत्ति वेहद बहो कहाँ तुम सो। सर ममान की प्रीत करी पीव मुम सी।

पहले अपनी मोर तीर को तान ही, परि हाँ पीछे डारत दूरि जगत सब जानई ॥२॥

बिन बालम वेहाल रह्यो क्यों जीव रे। जरद हरद सी भई बिना तोहि पीवरे।

रधिर मोस के सास है क चाम है। परि हाँ जब जीव सागा पीव मोर क्यों देखना ॥२५॥

कहिये सुनिये राम मोर न बित रे। हरि ठाकुर को ध्यान स धरिये नित रे।

जीव बिलम्ब्याँ पीव दुहाई राम की। परि हाँ सुख सपति वाजिद कही क्यों काम की। २६॥

५५२० गुटका सं० १३६। पत्र सं० ६। भा० ७X४३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-क्या। पूर्ण।

एव शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—मुक्तावली व्रतकथा भाषा।

४४२१ शुद्धका सं० १४०। पत्र ४ व। पा १३५३ द व। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। मे

काल सं १४१५ भाषा सं १४। पूर्ण एवं सुद्ध रक्षा—आत्मन्य।

विषय—श्रीमद्भिरि पूजा है।

४४२२ शुद्धका सं १४१। पत्र सं १७। पा ३५३ द व। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तीव।

विषय—श्रीमद्भिरि तद्भवान् स्तीव है।

४४२३ शुद्धका सं० १४२। पत्र सं ९। पा २५४ द व। भाषा—हिन्दी। मे काल सं १४१५

भाषा सं १४।

विषय—श्रीमद्भिरि मे विष्णु २ वरत्त अनेकनीय है।

१. अक्षराला	आत्मतत्त्व	हिन्दी	१ १
२. अक्षराला	विष्णु	॥	१ १२

४४२४ शुद्धका सं० १४३। पत्र सं १७४। पा २ ५४ द व। भाषा—हिन्दी। विषय—मे काल

१४१५। पूर्ण।

विषय—आत्मन्य पाठों का संग्रह है।

४४२५ शुद्धका सं० १४४। पत्र सं १९। पा ५४ द व। भाषा—वस्तुतः, हिन्दी। पूर्ण।

विषय—आत्मन्य पाठों का संग्रह है।

४४२६ शुद्धका सं १४५। पत्र सं ११। पा १५२ द व। भाषा—वस्तुतः। विषय—स्तीवतः।

मे काल १५७४ ग्रेट्ट बुकी १४।

आत्मन्य के पद्य—

अक्षरालाग्रेट्ट बुकी आत्मन्यविचार।

अक्षरालाग्रेट्ट बुकी वस्तुतः पद्यविचार ॥१॥

अक्षरालाग्रेट्ट बुकी वस्तुतः पद्य।

अक्षरालाग्रेट्ट बुकी वस्तुतः पद्य ॥२॥

४४२७ शुद्धका सं १४६। पत्र सं २२। पा ७५२ द व। भाषा—हिन्दी। पूर्ण। रक्षा—आत्मन्य

विषय—आत्मन्य पूजा (वस्तुतः) अक्षर एवं वस्तुतः की भाषा (वस्तुतः) का संग्रह है।

पद्य पद्यों की विषय वस्तु है। आत्मन्य पद्य संग्रह है।

५५२८ गुटका स० १४५। पत्र स० ३-२७। मा० ६५५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष।
दशा-जीर्ण शीर्ण।

विशेष-शोधबोध है।

५५२९ गुटका स० १४८। पत्र स० ५५। मा० ७५५ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय स्तोत्र सग्रह है।

५५३० गुटका स० १४९। पत्र स० ८६। मा० ६५६ इ च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८४६

कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

१ बिहारीसतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	१-३५
--------------	-----------	--------	------

२ वृन्द सतसई	वृन्दकवि	"	३६-८०
--------------	----------	---	-------

७०८ पय है। ले० काल स० १८४६ चैत सुदी १०।

३ कवित्त	देवीदास	हिन्दी	३६-८०
----------	---------	--------	-------

५५३१ गुटका स० १५०। पत्र स० १३५। मा० ६३५ इ च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल

स० १८४५। दशा-जीर्ण शीर्ण।

विशेष-लिपि विवृत है। कवका बत्तीसी, राग चीतण का दूहा, फूल भीतणी का दूहा, प्राप्ति पाठ है।

प्रविर्भाव पत्र लाती है।

५५३२ गुटका स० १५१ पत्र स० १८। मा० ६५४ इ च। भाषा-हिन्दी।

विशेष-पदों तथा विनयियों का सग्रह है तथा जैन पद्योमी (नवलराम) बारह भावना (दीनाराम)

निर्वाणकाण्ड है।

५५३३ गुटका स० १५२। पत्र स० १०७। मा० १२५ इ च। भाषा-संस्कृत हिन्दी। दशा-जीर्ण

शीर्ण।

विशेष-विभिन्न ग्रन्थों में से छोटे २ पाठों का सग्रह है। पत्र १०७ पर भट्टारक पट्टावलि उल्लेखनीय है।

५५३४ गुटका स० १५३। पत्र स० ६०। मा० ८५५ इ च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-सग्रह

अपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष-मत्तार स्तुति सत्त्वार्थ सूत्र, पूजाएँ एवं पञ्चमंगल पाठ है।

५५३५ गुटका स० १५४। पत्र स० ८६। मा० ६५४ इ च। ले० काल १८७६।

१ भागवत	×	संस्कृत	१-८
---------	---	---------	-----

२ मय प्रादि सग्रह	×	"	६-१२
-------------------	---	---	------

१. अनुसूची की टीका	×	"	२१-२४
४. भाषागत यद्दिना	×	हिन्दी	२२, २३
टीकों के नाम एवं विषयविशेष लघु हैं।			
२. महाभारत विष्णु सहस्रनाम	×	संस्कृत	२२-२३
२२३६ गुडका सं० १२३। पृष्ठ ६५। ६×९ इंच। भाषा-संस्कृत। पूर्ण।			
१. भोक्तेषु पुत्रा	×	संस्कृत	१-३
२. भार्गवाण्य वचनाल	×	"	४-१३
३. विष्णुपुत्रा	×	"	१, २
४. पार्श्वनाथपुत्र	×	"	३, ४
५. श्रीकृष्णपुत्रपुत्रा	भाषार्थ के साथ	"	१-१४
६. श्रीकृष्णपुत्र वचनाल	×	संस्कृत	१६-२
७. वचनाल वचनाल	×	"	२१, २३
८. इन्द्रपुत्रपुत्रा वचनाल	×	संस्कृत	१४-५
९. सुभोचर देवीकी	×	"	५१-५३

२२३७. गुडका सं० १२३। पृष्ठ ६५। भा० ६×९ इंच। के. काल १७७२ मंडित मुद्रित २।

भाषा-हिन्दी। पृष्ठ ७३।

विषय—वाचक वचनाल वचनाल हैं।

२२३८. गुडका सं० १२७। पृष्ठ ६३। भा० ६×९ इंच। के. काल १७३९।

विषय—वाचकवचनाल वचनाल वचनाल, (वाचकवचनाल) एवं वचनाल के पत्र हैं। व वचनाल के वचनाल वचनाल के हैं १, ३२ व वचनाल वचनाल।

२२३९. गुडका सं० १२७ (क) पृष्ठ ६४। भा० ६×९ इंच। भाषा-हिन्दी। विभिन्न वचनाल के वचनाल का संग्रह हैं।

२२४०. गुडका सं० १२८। पृष्ठ ६३। भा० ६×९ इंच। भाषा-हिन्दी। के. काल १९११।

विषय—वाचक वचनाल वचनाल वचनाल हैं।

२२४१. गुडका सं० १२९। पृष्ठ ६३। भा० ७×९। के. काल—१९११ वचनाल-वचनाल। विभिन्न वचनाल के वचनाल का संग्रह हैं।

गुटका-समग्र]

५५४० गुटका सं० १६० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५५४३ गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २६ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७३७

पूर्ण । सामान्य पाठ हैं ।

५५४४ गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ११ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । पूजाभो,

का संग्रह है ।

५५४५ गुटका सं० १६३ । पत्र सं० २१ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष-भगवद् गीता स्तोत्र एवं दर्शन पाठ आदि हैं ।

५५४६ गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १६३४ पूर्ण ।

विशेष-पद्मपुराण में से गीता महात्म्य लिया हुआ है । प्रारम्भ के ७ पत्रों में सर्वत्र में भगवद् गीता

माला दी हुई है ।

५५४७ गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ३० । आ० ६३×५३ इञ्च । विषय-आयुर्वेद । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष-आयुर्वेद के मुख्य हैं ।

५५४८ गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ६८ । आ० ४×२३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-४०
२ कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	"	४१-६८

५५४९ गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४८-२४७ । आ० २×२ इञ्च । अपूर्ण ।

५५५० गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इञ्च । पूर्ण ।

५५५१ गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८०

आवण सुदी २ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ धर्मरासो	×	हिन्दी	१-१८
------------	---	--------	------

अथ धर्म रासो लिख्यते—

पहली वदो जिएवर राइ, तिहि वद्या दुख दालिद्र जाइ ।

रोग कनेस न सचरे, पाप करम सेव जाइ पुलाई ॥

निदचे मुक्ति पद सचरे, ताको जिन धर्म होई सहार्इ ॥ १ ॥

कर्म बुद्धेनी जेन नी सद् वरसन मे ही परचल ।
 पावन जन मुण्डिमे मे वल मन्त्रदीप पित संजली ॥
 बडा बिल गुन हीई निबल कर्म बुद्धेनी जेन नी ॥ २ ॥
 हूडा बरी बारन माई कुनी पावन पासी हूड ॥
 कुमति नैस न छरडे महा मुनति बरी पाविनाइ ॥
 त्रिलोचनी राखी बरीत तिहि परत जन हीइ उल्लाह ॥
 कर्म बुद्धेनी जेन नी ॥ ४ ॥

सन्निव—

ऊनी बीनल जेनी सही पावन बाड त्रिलोचन नही ।
 वर पावा पावन नी मे पट्टाईत मुनकुण बाणि ॥
 नम कटी मे पलही ते मनुजन पणि निरवधि ॥
 कर्म बुद्धेनी जेन नी ॥ १२२ ॥

बुद्ध देव मुनपावन बलमिह नू पद मनमोल बाणि ।
 बाळ बीन मन्त्रा बादि नी बाळ व नी पने पलोच ॥
 ते निबनी सम्पत्त कर्म देवी विवि नानी ववरीच ।

कर्म बुद्धेनी जेन नी ॥ १२३ ॥

६५ नी कर्मराजी ठगाला ॥ १ ॥ ६ ॥ १०६ ॥ ५०० हूनी २ संवादावर नथी ।
 ४४५२ गुरुच सं १ । वन न २ । या ६४२ ह व । बादा संवत् । निव नूना ।

विनीय—विजुना है ।

४४५३ गुरुच सं १ १ । वन न २ । या ६४३ ह व । बादा—हिन्दी । निव—नूना ।
 विनीय—बायेंपिछार नूना है ।

४४५४ गुरुच सं १ १ । वन न २ २ । या ६४४ ह व । बादा बावत् हिन्दी ।

वन न १ २ । बावत् नूनी १ ।

विनीय—नूना वन एवं विनतिनी का नकह है ।

४४५५ गुरुच सं १ १ । वन न २ २ । या ६४५ ह व । बादा—नूना ।

विनीय—बावत् नूनी वन सम्पत्ति बावती है । बाई उल्लेखनीय वचना नही है ।

५५५६ गुटका स० १७१। पत्र स० ४-६३। मा० ६×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार

रस। ले० काल स० १७४७ जेठ बुदी १।

विशेष—इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है।

५५५७ गुटका स० १८५। पत्र स० २४। मा० ६×४ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।

विशेष—पूजा संग्रह है।

५५५८ गुटका स० १७६। पत्र स० ८। मा० ५×३ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले०

काल स० १८०२। पूर्ण।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालामालिनी) है।

५५५९ गुटका स० १७५। पत्र स० २१। मा० ५'×३ इ च। भाषा-हिन्दी। मूर्ख।

विशेष—पद एवं विनती संग्रह है।

५५६० गुटका स० १७८। पत्र स० १७। मा० ६×४ इ च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—प्रारम्भ में बादशाह जहांगीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है। स० १६८४ मगसिर सुदी १२। तारातन्त्रोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके आदेश के अनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी।

५५६१ गुटका स० १७६। पत्र स० १४। मा० ६×४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पद संग्रह। मूर्ख।

विशेष—हिंदी पद संग्रह है।

५५६२ गुटका स० १८०। पत्र स० २१। मा० ६×४ इ च। भाषा-हिन्दी।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा (ब्रह्मरायमल्ल), आदित्यवरकथा के पाठ का मुख्यतः संग्रह है।

५५६३ गुटका स० १८१। पत्र स० २१-४६।

१ चंद्रवरदाई की वार्ता	×	हिन्दी	२३-२६
		पद्य स० ११९। ले० काल स० १७१६	
२ सुगुप्तीख	×	हिन्दी	२८-३०
३ कक्कावतीसी	ब्रह्मगुलाल	"	२० काल स० १७६५ ३०-३४
४ भक्त्यपाठ	×	"	३४-४६

विशेष—प्रधिकांश पत्र खाली हैं।

५५६४ गुटका स० १८२। पत्र स० १६। मा० ६×६ इ च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। मूर्ख।

विशेष—नित्य नियम पूजा हैं।

१ पार्वनायस्तवन एव ग्रन्थ स्तवन

यतिसागर के शिष्य जगन्नाथ हिन्दी

२० स० १५००

प्रागे पत्र जुड़े हुए हैं एव विकृत लिपि में लिखे हुये हैं ।

४५७१ गुटका सं० १८६ । पत्र स० ६-७८ । भा० ५३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-

इतिहास ।

विशेष—प्रचुर वादगाह एव खोरवत प्रादि की वार्ताएँ हैं । बीच बीच के एव प्रादि अन्त भाग नहीं हैं ।

४५७२ गुटका सं० १६० । पत्र स० १७ । भा० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—रूपचन्द्र वृत्त पञ्चमगल पाठ है ।

४५७३ गुटका सं० १६१ । पत्र स० २८ । भा० ८३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—गुदरदास वृत्त सचये एव ग्रन्थ पद्य है । अपूर्ण है ।

४५७४ गुटका सं० १६२ । पत्र स० ४५ । भा० ८३×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल

१८०० ।

१ वचित	×	हिन्दी	१-४
२ भयहरस्तोत्र	×	प्राकृत	५-६
		हिन्दी गद्य टीका सहित है ।	
३ शांतिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	"	७-६
४. नमिऊणस्तोत्र	×	"	६-१२
५ अनित्यतातिस्तवन	नन्दिपेण	"	१३-२२
६ भक्तामरस्तोत्र	मानवु गाचार्य	संस्कृत	२३-३०
७ कल्याणमदिरस्तोत्र	×	संस्कृत ३१-३६ हिन्दीगद्य टीकासहित है ।	
८ शांतिपाठ	×	प्राकृत ४०-४५	"

४५७५ गुटका सं० १६३ । पत्र स० १७-३२ । भा० ८३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल

१८६७ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एव भक्तामरस्तोत्र है ।

४५७६ गुटका सं० १६४ । पत्र स० १३ । भा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र ।

अपूर्णा । दशा-नामान्य । कोकसार है ।

४५७७ गुटका सं० १६५ । पत्र स० ७ । भा० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—मट्टारक महोचन्द्रवृत्त त्रिलोकस्तोत्र है । ४६ पद्य हैं ।

४४८. गुटका सं १३६। पत्र सं १२। या ३४६ दण। बाला-हिन्दी।

विशेष - मारकप्रयवसार है।

४४९. गुटका सं १३७। पत्र सं १३। या ४६ दण। बाला-हिन्दी। के कल १६४ पादस

कुटी १४। कुचरन के पत्रो का संग्रह है।

४५०. गुटका सं १३८। पत्र सं ३३। या ४४४ दण। बाला-हिन्दी। पुना राठ संग्रह है।

४५१. गुटका सं १३९। पत्र सं १३९। या ४४९ दण। बाला-हिन्दी। पुना राठ संग्रह है।

बाला-बोली।

विशेष-पुना राठ संग्रह है।

४५२. गुटका सं १४०। पत्र सं १४। या ५४ दण। पुना-बाला-बोली।

१. विमलत बोली	उत्पत्ति	या १०६ हिन्दी
उपमा संवत् १३३४ बाला-बोली ३। के कल संवत् १३३२। बाला-बोली मङ्गल के प्रतिनिधि की बो।		
२. बाला-बोली	उत्पत्ति	या १०६ हिन्दी
		पुना

३. कल सं १३३७। उपमा संवत्-बाला-बोली ३। के कल सं १३३३। बाला-बोली मङ्गल के प्रतिनिधि की बो। १२ तक के ४३ के तक १३ तक के तक है।

४. बाला-बोली	×	उत्पत्ति-बोली की
५. बाला	पुना-बोली	हिन्दी
६. वर्ष १६४४ बाला-बोली ३। के कल सं १३३३। बाला-बोली मङ्गल के प्रतिनिधि की बो।		
७. पुना पुना पुना पुना		उत्पत्ति
८. पुना पुना पुना पुना		उत्पत्ति
९. पुना पुना पुना पुना		उत्पत्ति
१०. पुना पुना पुना पुना		उत्पत्ति
११. पुना पुना पुना पुना		उत्पत्ति

१२. कल सं १३३३। उपमा संवत्-बाला-बोली ३। के कल सं १३३३। बाला-बोली मङ्गल के प्रतिनिधि की बो। १२ तक के ४३ के तक १३ तक के तक है।

१. बाला-बोली	×	हिन्दी	पुना
२. कल सं १३३३। उपमा संवत्-बाला-बोली ३। के कल सं १३३३। बाला-बोली मङ्गल के प्रतिनिधि की बो।			
३. कल सं १३३३। उपमा संवत्-बाला-बोली ३। के कल सं १३३३। बाला-बोली मङ्गल के प्रतिनिधि की बो।			

१२. समुय विजय सुत सावरे रग भीने हो

X

"

ले० काल १७७२ मोतीहटका देहरा दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।

१३. पञ्चकन्याएकभूजा मष्टक

X

संस्कृत ले० काल स० १७५२ ज्येष्ठकृ० १० ।

१४. पट्टरस कथा

X

संस्कृत ले० काल स० १७५२ ।

५५८३ गुटका स० २०१ । पत्र स० ३६ । मा० ६X६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण ।

विशेष—प्रादित्यवारकथा (भाऊ) सुशालच द कृत शनिश्चरदेव कथा एवं लालनन्द कृत राजुन पदवीसी के पाठ प्रौर हैं ।

५५८४. गुटका स० २०२ । पत्र स० २८ । मा० ६X५ इ च । भाषा-संस्कृत । ले० काल स० १७५० ।

विशेष पूजा पाठ सग्रह के प्रतिरिक्त शिवचन्द मुनि वृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द वृत दशारास पाठ भी है ।

५५८५ गुटका स० २०३ । पत्र स० २०-२६, १८५ से २०३ । मा० ६X५ इ च । भाषा संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य । मुख्यत निम्न पाठ है ।

१ जिनसहस्रनाम प्रासापर संस्कृत २०-२६

२ ऋषिमण्डलस्तवन X " ३०-३६

३ जलयात्राविधि ब्रह्मजिनदास " १६२-१६६

४ गुरुओं की जयमाल " हिन्दी १६६-१६७

५ एभीकार छन्द ब्रह्मलाल सागर " १६७-२२०

५५८६. गुटका स० २०४ । पत्र स० १८० । मा० ६X४ इ च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७६१ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी । दृश्यत समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्वनाथस्तवन (ब्रह्मनाथ) का सग्रह है ।

५५८७ गुटका स० २०५ । नित्य नियम पूजा सग्रह । पत्र स० ६७ । मा० ८५X५ इ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा-सामान्य ।

५५८८ गुटका स० २०६ । पत्र स० ४७ । मा० ८५X७ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा सामान्य । पत्र स० २ नहीं है ।

१ सुंदर शृंगार

महाकविराम

हिन्दी

पत्र स० ८३१

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में आमेर निवासी मालीराम काला ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२ व्यावर्त्तनी

मन्त्रवाच

११

बीकनेर विवाही मङ्गलवा कवीरा के प्रतिनिधि की । मालीराम बालाने सं १८३९ में प्रतिनिधि कराई की ।

अन्तिम भाग—

बीर—दृष्ट्य दृष्ट्य करतु घट घनवहि सुख प्रदान ।

कृत स्वाम कमल कङ्क रत न रंज समान ॥ ३६ ॥

कृष्ण मन्त्रात्मन्—

स्त्री सनाथिक भारस्तेन कृष्ण देव यहीन तु पार न बायो ।

हो तुम आवत विरहि बकायत गिनय तु होनि मयय बरानी ॥

देव धाम बहि नाम जसोवति मन्त्रलता तुम आनि कङ्करी ।

हो कवि या कवि बहाम्न करी तु स्वाम तु स्तय वरी कुमवानी ॥३७॥

इति श्री मन्त्रवाच कृत स्वाम वतीवी कपूर्व ॥ विचरत मङ्गलवा कवीरा वाली बीकनेर का । विचरतु मालीराम काला संवत् १ ३९ विही बालवा पुरी १४ ।

१४८८ गुटका सं० २०७ । पत्र सं २ । भा ७४२६४ । वाता-हिन्दी वसन्त । मे कम सं १६८९ ।

विशेष—कामात्म पुवा बाल, पत्र एवं कवियों का संग्रह है ।

१४८९ गुटका सं २०८ । पत्र सं १७ । भा ८२ १३ ६४ । वाता-हिन्दी ।

विशेष—आत्मन नीतिधार तथा वाचुल हय बालनचार है ।

१४९१ गुटका सं० २ ६ । पत्र सं १६-१४ । भा ८४७ हय । वाता-हिन्दी ।

विशेष—दुरवाच परनात्मन अग्नि कवियों के पत्नी का संग्रह है । विषय-कृष्ण वरिह है ।

१४९२ गुटका सं २१ । पत्र सं २ । भा ८२४२६ हय । वाता-हिन्दी ।

विशेष—चतुर्वर्ष कुलमाल वर्ण है ।

१४९३ गुटका सं २११ । पत्र सं ४६-४७ । भा ८४६ हय । वाता-हिन्दी । मे नाम १८१ ।

विशेष—ब्रह्मरावण कृत नीपलराम का संग्रह है ।

१४९४ गुटका सं २१२ । पत्र सं ५-१३ । भा ८४६ हय ।

विशेष—स्त्रीय पुवा एवं पत्र संग्रह है ।

गुटका-संग्रह

५५६५ गुटका सं० २१३। पत्र सं० ११७। आ० ६×५ इ. च। भाषा—हिन्दी। लि० काल १८४७।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं हैं। सम्बोधनवासिका (धानतराय) वृजलाल की वारह भावना, वैराग्य पद्मोत्ती (भगवतोदास) भानोचनापाठ, पद्मावतीमनोत्र (समयगुन्दर) राजुल पद्मोत्ती (विनोदीलाल) आदित्य-वार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है।

५५६६ गुटका सं० २१४। पत्र सं० ८४। आ० ६×६ इ. च।

विशेष—सुन्दर शृंगार का संग्रह है।

५५६७ गुटका सं० २१५। पत्र सं० १३२। आ० ६×६ इ. च। भाषा—हिन्दी।

१ कलियुग की विनती	देवाग्रह	हिन्दी	५-७
२ सीताजी की विनती	×	"	७-८
३ हंस की ढाल तथा विनती ढात	×	"	६-१२
४ जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	"	१२
५ होली कथा	छोतरठोलिया	"	२० सं० १६६० ३-१८
६ विनतिया, ज्ञानपद्मोत्ती, वारह भावना			
राजुल पद्मोत्ती आदि	×	"	१६-४०
७ पाच परवी कथा	ब्रह्मवेणु (भ जयकीर्ति के शिष्य)	"	७६ पद्य हैं ४१-४०
८ चतुर्विंशति विनती	चन्द्रकावि	"	४५-६७
९ वधावा एव विनती	×	"	६७-६६
१० नव भगल	विनोदीलाल	"	६६-७७
११ कक्का बत्तीसी	×	"	७७-८१
१२ बड़ा कक्का	गुलाबराय	"	८०-८१
१३ विनतिया	×	"	८१-१३२

५५६८ गुटका सं० २१६। पत्र सं० १६४। आ० ११×६ इ. च। भाषा—हिन्दी सस्कृत।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं।

१ जिनवरव्रत जयमाला	ब्रह्मलाल	हिन्दी	१-२
			भट्टारक पट्टावली दी गई है।
२ भाराधाना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	१३-१५

३ मुख्यमणि बीज	समनकीति	हिमो	१२
४ बीबीय मरुपरस्तम	कुलकीति	"	९
५ महाशिवजीय	म शुभमत्र	"	२६
६ मिथ्या बुद्ध	आदिगिरास	"	२२
७ देवपालपुरा	महिमत्र	संस्कृत	१७-१
विमलसम्मान	आवाधर	"	१ २-११
८ महाराज विमलकीति वाक्य	X	"	२६

३२६६ गुरुका सं २१७ । पत्र सं १७१ । वा ३४१३ हव । मत्ता-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठों का संवह है ।

३६० गुरुका सं २१८ । पत्र सं १९६ । वा ३४२३ हव । मत्ता-संस्कृत ।

विशेष—१४ पूजाओं का संवह है ।

३६०१ गुरुका सं २१९ । पत्र सं १४ । वा ३४ हव । मत्ता-हिन्दी ।

विशेष—सर्वप्रेम कृत विमोक्षार्थकथा है । के काल १७२६ स्केल बुटी ७ बुधवार ।

३६ गुरुका सं २२ । पत्र सं १ । वा ७१४२ हव । मत्ता-मन्त्र का संस्कृत ।

१ विमलविपुलमणीकी महारसिंह पत्र सं १-७

२ नाममाला कलकृत संस्कृत ७-८

विशेष—गुरुके के मणिमत्र पत्र बीबीय तथा की हूए हैं एवं गुरुका पत्र है ।

३६ ३ गुरुका सं २२१ । पत्र सं २१-२६ । वा ३४४६ हव । मत्ता-हिन्दी ।

विशेष—मोक्षराम बीबीया की कलकृत बीबीय (पत्र) की कलकृत पत्र एवं मन्त्र की विधि

मन्त्र टीका पत्र है ।

३६ गुरुका सं २२२ । पत्र सं ११६ । वा ३४५ हव । मत्ता-संस्कृत ।

विशेष—कामायनी पाठों का संवह है ।

३६ २ गुरुका सं २२३ । पत्र सं २२ । वा ३४४ हव । मत्ता-हिन्दी ।

विशेष—कल बुद्धार्थ एवं कलके कल विधि हूए हैं ।

३६०६ गुरुका सं २२४ । पत्र सं १४ । वा ३४३ हव । मत्ता-संस्कृत पाठ । रम-

बीबीय बीबीय एवं पत्र है ।

विशेष—गुरुमणी (पत्र) अकिराज लवकुलीन लवकुलीन एवं कामायनी पाठ पत्र है ।

५६०८ शुटका सं० २०५ । पृ० सं० ११-१७७ । आ० १०×८^१/_२ इंच । भाषा-हिन्दी ।

१. निहारी सतमई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास । टीकाकाल सं० १८३४ । पृ० सं० ११ मे १३१ । ले० काल सं० १८५२ माघ वृष्णा ७ रविवार ।

विशेष—पुस्तक में ७१४ पद्य हैं एवं ८ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं ।

अन्तिम भाग— पुरपोत्तमदास के दोहे हैं—

जद्यपि है सोभा सत्जन मुक्त न तऊ सुदेन ।

बोये ठीर जुठोर के लरमे होत विमेष ॥७१॥

इस पर ७१५ सख्या है । वे सातसी से अधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं । टीका सभी की दी हुई है । केवल ७१४ की जो कि पुरपोत्तमदास का है, टीका नहीं है । ७१४ दोहा के आगे निम्न प्रशस्ति दी है ।

दोहा—

भानुप्राभी सरजु जह मिली बसो आय ।

अन्तरान में देख सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥

लिये दूहा भूपन बहुत अनवर के अनुसार ।

पहुँ छोरे कहुँ भीरू हूँ निकल्यो लङ्कार ॥२॥

सोयी जुगल पत्नी के प्राननाय जी नांव ।

असतसी तिनसो पढी बसि मिंगार बट ठाँव ॥३॥

जमुना तट शृङ्गार बट तुलसी विपिन सुदेम ।

सेवत सत महत जहि देगत हरत बलेस ॥४॥

पूरीति श्रीनन्द के मुनि मटित्य महान ।

हम हैं ताने गीत में मोहन मो जगमान ॥५॥

मोहन महा उदार तजि भीर जाचिये काहि ।

सम्पत्ति सुदामा को दर्श दूद्र लही नहीं जाहि ॥६॥

गहि अक सुमनु तात तैं विधि की बस लखाय ।

राधा नाम कहैं सुनैं प्रानन कान बढ़ाय ॥७॥

सबत् अठारहसी धिते ता परि सोसर चारि ।

ज'माठे पूरो कियो पूष्ण चरन मन धारि ॥८॥

इति हरिचरणाद्यै हृता विज्ञाती रचित सप्तपदी टीका हरिनामस्मया सम्पूर्णा । संवत् १८२२ माघ शुक्ल

७ रविवाररे सुत्रमासु ।

० कविचक्रम्—प्रथमकार हरिचरणाद्यास । पत्र सं १११-१७७ । भाषा-हिन्दी पत्र

दिने—१२७ तक पत्र हैं । भाषा के पत्र नहीं हैं ।

शास्त्र—

मोहन चरण पयोध मे हैं गुलामी को बन्ध ।

तबहि सुपरि हरि बल्ल ठक करत विप्ल को बन्ध ॥१॥

कवि—

मायक को बन्ध गुणमान बाको मुकाम

मीमा हो ते मोहन के बानध को कीर है ।

हुनी ठेतो रचिबै को बहूत विरधि निरि

कर्म को बनावै मनी मय कीर मोरि है ।

केल है बल मातमान वी बहास कीर,

बानि वी बहास के की बाधि मे मोरि हैं ।

राधिक के मान के जोर न बिबोके बिधि

हक हक मोरि पुनि हक हक मोरि है ॥

माय बीन लकण बोझ—

एक मानक लकण नी हुबै ते हैं बीन ।

माझा नी जो रीकता कीर बहिछा रोम ॥२॥

मनिय मान—

बोझ—

साका लकण ही पुनी बंधव पैरीत मान ।

झकाछ सो केठ बुधि के लति रचि दिव मान ॥३॥

इति श्री हरिचरणजी विरचित कविचक्रमो नाम सम्पूर्ण । अ १ २२ माघ शुक्ल १४ रविवाररे ।

७१ ॥ शुद्धका सं २२१ । पत्र सं १ । भा २१×१४ द.प. । भाषा-हिन्दी । ले नाम १ २२

केठ बुधा १२ । पूर्ण ।

१ लच्छमीबागड़ी

नवमहीबाग

हिन्दी

१

२ लमनारबाग

मगधहीबाग

१-१

२११ शुद्धका सं २२७ । पत्र सं २१ । भा २१×२१ । भाषा-हिन्दी । विषय-मानसिक । ले

नाम सं १ ६७ लमन बुधी २ ।

विशेष—रससागर नाम का आयुर्वेदिक ग्रन्थ है। हिन्दी पद्य में है। पोथी लिखी पंडित हंगरसी की
सो देखि लिखी—द्वि० असाढ बुदी ६ वार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोधा ।

५६११ गुटका सं० २२८ । पत्र सं० ४६ से ६२ । आ० ६×७ इ० । भाषा—प्राकृत हिन्दी । ले० काल
१६४४ । द्रव्य संग्रह की भाषा टीका है ।

५६१२ गुटका सं० २२६ । पत्र सं० १८ । आ० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी ।

१ पञ्चपाल पेंतीसो	×	हिन्दी	१-६
२ अकपनाचार्यपूजा	×	"	७-१२
३ विष्णुकुमारपूजा	×	"	१३-१८

५६१३ गुटका सं० २३० । पत्र सं० ४२ । आ० ७×६ इ० । भाषा—हिन्दी सस्कृत ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

५६१४ गुटका सं० २३१ । पत्र सं० २५-४७ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

विशेष—नयनसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव है ।

५६१५ गुटका सं० २३२ । पत्र सं० १४-१५७ । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—मैया भगवतीदास कृत अनित्य पञ्चीसी, वारह भावना, शत अष्टोत्तरी, जैनशतक, (भूधरदास)
दान वावनी (दानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्मछतीसी, ज्ञानपञ्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण
मंदिर भाषा, दानवर्णन, परिपह वर्णन का संग्रह है ।

५६१६ गुटका सं० २३३ । पत्र संख्या ४२ । आ० १०×४३ भाषा—हिन्दी सस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६१७ गुटका सं० २३४ । पत्र सं० २०३ । आ० १०×७३ इ० । भाषा—हिन्दी सस्कृत । पूजा पाठ,
बनारसी विलास, चौबीस ठाणा चर्चा एवं समयसार नाटक है ।

५६१८ गुटका सं० २३५ । पत्र सं० १६८ । आ० १०×६३ इ० । भाषा—हिन्दी ।

१. तत्त्वार्थसूत्र (हिन्दी टीका सहित)	हिन्दी सस्कृत	३-६०
	६३ पत्र तक दीमक ने खा रखा है ।	
२ चौबीसठाणाचर्चा	×	हिन्दी
		६१-१६८

५६१९ गुटका सं० २३६ । पत्र सं० १४० । आ० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

२६२० गुडका सं० २६२०। पत्र सं० ९२। या २०६२६। भाषा—हिन्दी। के समय ६

१०४५५ घाटीज बुटी १३।

१ गुडका	संख्या एवं अन्य विवरण	हिन्दी	लिपिकार विवरण १-११
२ पत्र	गुडका	"	११-१४
			मे समय १००२ भाषण बुटी २
३ विनीतकर्मचारी	अनुप्रेष	हिन्दी	१४ ११

२६२१ गुडका सं० २६२१। पत्र सं० १९५। या १९३०२६६। भाषा—हिन्दी।

१ सामुदायिक बुटी	X	हिन्दी	१ १४
२ कर्मचारी	X	"	१४-२४
३ विनीत कर्मचारी	X	"	२४ ११

२६२२, गुडका सं० २६२०। पत्र सं० ४५। या १९२०४५६। भाषा—संस्कृत। विषय—संस्कृत।

विषय—यहिले जयपुर स्तोन टीका कविता वगैरे भाषा में अन्य भाषा लिखी गयी है।

२६२३, गुडका सं० २६२१। पत्र सं० २-१००३। या ४५१६६। भाषा—हिन्दी। मे समय १३

वैपरीत बुटी भाषाभाषा।

विषय—विहित गृहस्था अनुप्रेष। जयपुरीयक भाषा का रूप है।

२६२४ गुडका सं० २६२१। पत्र सं० १-२ ४ २६२५ १ २ के ७२४। या ४५१६६।

भाषा—हिन्दी भाषा।

विषय—जयपुरीयक भाषा का रूप है।

२६२५, गुडका सं० २६२३। पत्र सं० २६। या ४५२४ २ २ के ७२४। भाषा—संस्कृत।

विषय—गुडका भाषा संस्कृत है।

२६२६ गुडका सं० २६२४। पत्र सं० २२। या ४५२४ २ २ के ७२४। भाषा—संस्कृत।

१ विनीतकर्मचारी	विवरण	संख्या	मे समय १०११ ४
२ विलासपुरीय	संख्याभाषा	"	२-७
३ विलासपुरीय	X	"	"
४ विलासपुरीय	X	"	१
५ विलासपुरीय	X	"	१०-११

गुटका समग्र]

६. बृहस्पति विचार	X	सं० काल १७६२	१२-१४
७. अन्यस्तोत्र	X		१५-२२

५६२७ गुटका सं० २४४ । पत्र सं० २-४६ । मा० ७×५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र समग्र है ।

५६२८. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । मा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—नन्दराम कृत मानमञ्जरी है । प्रति नश्वर है ।

५६२९. गुटका सं० २४७ । पत्र सं० ६-७७ । मा० ७×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजापाठ समग्र है ।

५६३० गुटका सं० २४८ । पत्र सं० १२ । मा० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—तीर्थदूतों के पञ्चकन्याणां आदि का वर्णन है ।

५६३१. गुटका सं० २४९ । पत्र सं० ८ । मा० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—पद समग्र है ।

५६३२ गुटका सं० २५० । पत्र सं० १५ । मा० ८३×७ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—बृहत्सव्यभूस्तोत्र है ।

५६३३ गुटका सं० २५१ । पत्र सं० २० । मा० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—समन्तभद्र कृत रत्नधारण्ड श्रावकाचार है ।

५६३४ गुटका सं० २५२ । पत्र सं० ३ । मा० ८३×६ इ० । भाषा—संस्कृत । सं० काल १६३३ ।

विशेष—मकलङ्काष्टक स्तोत्र है ।

५६३५ गुटका सं० २५३ । पत्र सं० ८ । मा० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । सं० काल सं० १६३३ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

५६३६ गुटका सं० २५४ । पत्र सं० १० । मा० ८×५ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—विन्ध्य निर्वाण विधि है ।

५६३७ गुटका सं० २५५ । पत्र सं० १६ । मा० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—बुधजन कृत शृष्ट्यत्तीसी पंचमंगल एवं पूजा आदि हैं ।

५६३८ गुटका सं० २५६ । पत्र सं० ६ । मा० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी । मयूर ।

विशेष—वधोचन्द्र कृत रामचन्द्र चरित्र है ।

५६५१. गुटका सं० २६६। पत्र सं० २७। मा० ७३×५३ इ०। भाषा-संस्कृत। पूर्ण।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

५६५२ गुटका सं० २७०। पत्र सं० ८। मा० ६३×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं०

१६३२। पूर्ण।

विशेष—तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है।

५६५३ गुटका सं० २७१। पत्र सं० ३१। मा० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-संग्रह। पूर्ण।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, श्रद्धामूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं।

५६५४ गुटका सं० २७२। पत्र सं० ६। मा० ६×४३ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-संग्रह। पूर्ण।

विशेष—मनन्तव्रतपूजा है।

५६५५. गुटका सं० २७३। पत्र सं० ४। मा० ७×५३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।

विशेष—स्वरूपचन्द्र कृत चमत्कारजी की पूजा है। चमत्कार क्षेत्र सन् १८८६ में भादवा सुदी २ को प्रकट हुआ था। सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

५६५६ गुटका सं० २७४। पत्र सं० १६। मा० १०×६३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। पूर्ण।

विशेष—इसमें रामचन्द्र कृत शिखर विलास है। पत्र ८ से भागे खाली पड़ा है।

५६५७. गुटका सं० २७५। पत्र सं० ६३। मा० ५३×५ इ०। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है तीन चौबीसी नाम, जिनपञ्चीसी (नवल), दर्शनपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, सबोधपञ्चासिका (धानतराय)।

५६५८ गुटका सं० २७६। पत्र सं० १०। मा० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १८४३। अपूर्ण।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बहा कवका (हिन्दी) आदि पाठ हैं।

५६५९ गुटका सं० २७७। पत्र सं० २-२३। मा० ५३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। अपूर्ण।

विशेष—हरखचन्द के पदों का संग्रह है।

५६६०. गुटका सं० २७८। पत्र सं० १-८०। मा० ६×४ इ०। अपूर्ण।

विशेष—वीध के कई पत्र नहीं हैं। योगीन्द्रदेव कृत परमस्तवप्रकाश है।

५६६१ गुटका सं० २७९। पत्र सं० ६-३४। मा० ६×४ इ०। अपूर्ण।

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है।

३६६२. गुटका सं० १८०। पत्र सं २-४१। मा ३३×४४ ह। माता-हिन्दी पत्र। पुरत।

विशेष—आमों का वर्णन है।

३६६३. गुटका सं० १८१। पत्र सं १२। मा ३×६ ह। माता-४। पुरत।

विशेष—बाण्डाड़ी, गुणार्जव, बलबल कोकिलारण पञ्चमसुखा एवमसुखा, एवार्जव पत्र पत्रों का पत्र है।

३६६४. गुटका सं० १८२। पत्र सं १६-४४। मा ३३×४३ ह।

विशेष—मिल कुल पत्रों का वर्णन है—जैनपत्रीही पत्र (सुवराज) बलबलमात्र, बलबलीपत्र विवाहपत्र (बलबलीपत्र) विवाहपत्र पत्रबल बलबलीपत्र (बलबलीपत्र) बलबल कावर्णन, विवाह (सुवराज) मिलमात्र।

३६६५. गुटका सं० १८३। पत्र सं ३३। मा ३३×४४ ह। माता-हिन्दी पत्र। विश्व-मात्र।

पुरत।

विशेष—३३ के माते के पत्र काही है। बलबलीपत्र बल बलबल है।

३६६६. गुटका सं १८४। पत्र सं २३३। मा ३×३३ ह। माता-हिन्दी बलबल। पुरत।

विशेष—बलबलीपत्र (बलबलीपत्र) सुवराज (कावर्णन) के ही बलबली है।

३६६७. गुटका सं १८५। पत्र सं २-४६। मा ३×३३ ह। माता-बलबल मात्र। पुरत।

विशेष—मिलमात्र, बलबलीपत्र, बलबलीपत्र के बलबली है।

३६६८. गुटका सं १८६। पत्र सं ३३। मा ४६ ह। पुरत।

विशेष—बलबली बलबल पत्र हिन्दी टीका पत्र।

३६६९. गुटका सं १८७। पत्र सं ३२। मा ३३×३३ ह। माता-बलबल। पुरत।

विशेष—बलबलीपत्र, मिलमात्र है।

३६७०. गुटका सं १८८। पत्र सं २-४२। मा ३×४ ह। विश्व-बलबल। पुरत।

विशेष—बल बल कावर्णन पत्र है।

३६७१. गुटका सं १८९। पत्र सं २। मा ३×४ ह। माता-हिन्दी। विश्व-मात्र। पुरत।

विशेष—बलबलीपत्र बल बलबली के ही बलबली पत्र है।

बलबल—

बल बलबल की पुरत काई हरिपत्र।

विश्व बल बल की माते के ऊपर मिली गुण है।

श्रीकिरसन वचन ऐस कहे ऊधव तुम मुनि ले ।

नन्द जसोदा मादि दे व्रज जाइ सुख दे ॥ २ ॥

व्रज वासी बल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान ।

ताने नीमप न बीतरू' भीहे नन्दराय की भान ॥

अन्तिम—

यह लीला व्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।

जन मोहन जो गाव ही ते नर पाउ देह ॥ १२२ ॥

जो गाव सीप सुर गमन तुम वचन सहेत ।

रसिक राय पूरन कीया मन बाँझित फल देत ॥ १२३ ॥

नोट—प्रागे नाग लीला का पाठ भी दिया हुवा है ।

५६७२. गुटका स० २६० । पत्र स० ५२ । भा० ६५५ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ सोलहकारणकथा	रत्नपाल	संस्कृत	८-१३
२ दशलक्षणीकथा	मुनि ललितकीर्ति	"	१३-१७
३ रत्नत्रयव्रतकथा	"	"	१७-१९
४. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	"	"	१९-२३
५ भक्षयदशमीकथा	"	"	२३-२६
६ अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	"	"	२७
७ वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	हिन्दी पद्य	पूर्णा ३१-५२

विशेष—लाखेरी ग्राम में दीवान श्री वृधसिंहजी के राज्य में मुनि मेघविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

गुटका काफी जीर्ण है । पत्र चूहों के खाये हुए है । लेखनकाल स्पष्ट नहीं है ।

५६७३. गुटका स० २६१ । पत्र स० ११७ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।

विशेष—पूजा एक स्तोत्र संग्रह है । संस्कृत में समयसार कल्पाद्रु मपूजा भी है ।

५६७४. गुटका स० २६२ । पत्र स० ८८ ।

१ ज्योतिषशास्त्र	×	संस्कृत	१९-३६
२ फुटकर दोहे	×	हिन्दी	३१ दोहा है ३६-३७

५६८३ गुटका सं० ३०१ । पत्र न० १८ । मा० ४६×३३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सग्रह ।
ने० काल १९१८ । पूर्ण ।

विशेष—सावली मागीतु गी की— हर्षकीर्ति ने सं० १९०० ज्येष्ठ शुद्ध ५ को यात्रा की थी ।

५६८४ गुटका सं० ३०२ । पत्र न० ४२ । मा० ४४×३३ इ० । भाषा—गद्य । विषय—सग्रह । पूर्ण
विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

५६८५ गुटका सं० ३०३ । पत्र न० १०५ । मा० ४६×४३ इ० । पूर्ण ।

विशेष—३० ग्रन्थ दिये हुये हैं । कई हिन्दी तथा उर्दू में लिखे हैं । आगे मात्र तथा मात्रादि दी हुई
है । उनका फल दिया हुआ है । जन्मश्रो म० १८१७ की जगताराम के वीरमाणकचन्द के पुत्र की आयुर्वेद के तुमने
दिये हुये हैं ।

५६८६ गुटका सं० ३०३ क । पत्र न० १५ । मा० ८×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में विश्वामित्र विरचित रामयज्ञ है । पत्र ३ में तुलसीदास वृत्त कवित्तत्रय रामचरित
है । इसमें छप्पय छन्दों का प्रयोग हुआ है । १-२० पद्य तक सरया ठीक हैं । इनमें आगे ३५६ सख्या से प्रारम्भ कर
३८२ तक सख्या चली है । इनके आगे २ पत्र माली हैं ।

५६८७ गुटका सं० ३०४ । पत्र सं० १६ । मा० ७३×५ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—४ में ६ तक पत्र नहीं हैं । अजयराज, रामदास, बनारसीदास, जगताराम एवं विजयकान्ति के
पदों का सग्रह है ।

५६८८ गुटका सं० ३०५ । पत्र सं० १० । मा० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा है ।

५६८९ गुटका सं० ३०६ । पत्र सं० ६ । मा० ६३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा पाठ ।

पूर्ण । विशेष—शान्तिपाठ है ।

५६९० गुटका सं० ३०७ । पत्र सं० १४ । मा० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नन्ददास की माममञ्जरी है ।

५६९१ गुटका सं० ३०८ । पत्र सं० १० । मा० ५×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । पूर्ण

विशेष—भक्तामरकद्विमन्त्र सहित है ।

१ पंचकोष

कोषार्जव

सहस्र

१०-१५

के फल हैं १७६३ संत इतिप्रमाण के अनुसार में प्रतिनिधि की थी।

२६७२ गुरुका सं० २६३। संत कर्मा पाये दीव्यपत्नी। पत्र सं ७६। या १०९ दत्त। के फल सं १७६३। पुरुष। दत्ता-दीर्घ।

विशेष—आमुर्वेदिष्ट गुरुके एवं मर्मा का लक्षण है।

२६७३ गुरुका सं० २६४। पत्र सं ७७। या १०९ दत्त। के फल १७७५ दीव्य पत्नी १। पूर्ण। धामाय गुरु। दत्ता दीर्घ।

विशेष—यं कोषार्जव के प्रतिनिधि की थी। पूरा एवं स्वीय संत है।

२६७४ गुरुका सं० २६५। पत्र सं ७८-७९। या १०९ दत्त। फल संतकृत द्विती। के फल सं १७७५ धामाय पत्नी २।

विशेष—गुरुकाधामाय एवं लक्षणपत्नीय जाता है।

२६७५ गुरुका सं २६६। पत्र सं ८०-८१। या १०९ दत्त। धामाय-सहस्र। विषय-दीर्घ। पुरुष। दत्ता-धामाय।

विशेष—लक्षणपत्नीय एवं लक्षणार्थ गुरु है।

२६७६ गुरुका सं २६७। पत्र सं ८२। या १०९ दत्त। धामाय-द्विती। पुरुष।

विशेष—आमुर्वेदिष्ट के गुरु है।

२६७७ गुरुका सं २६८। पत्र सं ८३। या १०९ दत्त। धामाय-द्विती। पूर्ण।

विशेष—आपत्त के ११ पत्र जाती है। ११ के धामाय पत्र १ १ के आपत्त है। पत्र १ एक मर्मा के कर्मा है।

१. धामाय धामाय—पत्र १-२१ तक। धामाय कर्मा का है। १२ पत्र है। धामाय धामाय है। कर्मा है पत्र लक्षणक धामाय धामाय है। १७ पत्र है।

२. धामाय धामाय—दीर्घक कर्मा-पत्र २२-३१ तक।

२६७८ गुरुका सं २६९। पत्र सं ८४। या १०९ दत्त। धामाय-द्विती। विषय-गुरुधामाय।

विशेष—दीर्घधामाय है।

२६७९ गुरुका सं २७०। पत्र सं ८५। या १०९ दत्त। धामाय-द्विती। विषय-गुरुधामाय।

विशेष—गुरुधामाय आमुर्वेदिष्ट के गुरु है। पत्र ७ के धामाय जाती है।

१ पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी
२ प्रतिष्ठा पाठ	×	"
३. चौबीस तीर्थङ्कर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी ले० काल १८७५ भादवा सुदी १० ५६६६ गुटका स० ८ । पत्र स० ३१७ । भा० ६४५ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७६२ मासोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ८६४ ।

विशेष—पूजा एवं प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है । पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषतः उल्लेखनीय है ।

५७०० गुटका स० ६ । पत्र स० १८ । भा० ४४४ ६० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वे० स० ८६५ ।

विशेष—जगतगाम, गुमानिराम, हरीसिंह जोधराज, लाल, रामचन्द्र आदि कवियों के भजन एवं पदों का संग्रह है ।

ख भगडार [शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर जोधनेर जयपुर]

५७०१ गुटका स० १ । पत्र स० २१२ । भा० ६४४३ ६० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ होडाचक्र	×	संस्कृत	अपूर्ण	८
२ नाममाला	धनञ्जय	"	"	६-३२
३. धृतपूजा	×	"		३३-३६
४. पञ्चकल्याणकपूजा	×	"	ले० काल १७८३	३६-६५
५ मुक्तावलीपूजा	×	"		६५-६६
६ द्वादशशततोद्यापन	×	"		६६-८६
७ त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	"	ले० काल स० १७८३	८६-१०२
८ नवकारर्वेत्तीसी	×	"		
९ आदित्यवारकथा	×	"		
१० प्रोपधोपवास शततोद्यापन	×	"		१०३-२१२
११ नन्दीश्वरपूजा	×	"		
१२ पञ्चकल्याणकपाठ	×	"		
१३ पञ्चमेरूपूजा	×	"		

क भगडार [शास्त्रभगडार यावा दुलीचन्द जयपुर]

२१३२. गुटका स १। पन स २७१। या २२×७५ इञ। के स ५२७। पूर्ण।

१ बागदुगस भीरजतिह पलीह हिन्दी १-५

२ लोलेलप सनाह विधि X " के पन स १७११।

पीरपकेव के लपप मे स धम्ममुन्वर के बह्मपुरी में प्रतिनिधि की थी।

३ जैनपठक धूरपल हिन्दी १५

४ लभपनार नाटक बभारपीराह " १७

बभपल्ल बाह्मन्तों के पालन काल में स १७ न में लाहौर में प्रतिनिधि हुई थी।

५ बतारपी विमल X " ११६

विशेष—बाधपल्ल बाह्मन्तों के कालकाल स १७११ में विहमाला में प्रतिनिधि हुई थी।

२१३३. गुटका स ५। पन स २२२। या २०×२३ इञ। वपूर्ण। के स ५२५।

विशेष—सोप एवै पूबा पाठ लंछ है।

२१३४. गुटका स ३। पन स २४। या ३ २×२३ इ। यावा-हिन्दी। पूर्ण। के स ५३।

१ धानिपनाम X हिन्दी १

२ महर्षिपेक कामरी X " १-५

३ प्रविष्टा में नाम बादि नाम १६ बर्षों के विधि X " ६-२५

२१३५. गुटका स ४। पन स २३। या २३×२३ इ। पूर्ण। के स ५६।

विशेष—पूजापी का लपह है।

२१३६. गुटका स २। पन स २६। या १०×४ इ। यावा-बसह हिन्दी। वपूर्ण। के स

११।

विशेष—गुजपित पाठों का लंछ है।

२१३७. गुटका स ६। पन स ३३४। या ६×४ इ। यावा-बसह। पूर्ण। बीरल। के स

१२।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का लंछ है।

२१३८. गुटका स ७। पन स ४१६। या ६३×२ इ। के काल स १ २ बनाव मुष्टि २

पूर्ण। के स ५९।

५७०५ गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४८ । आ० ५×४ इ० । ले० काल म० १६०१ । पूर्ण ।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिंदी), बल्यारामन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (सन्स्कृत) एवं विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५७०६ गुटका सं० ६ । पत्र न० ८० । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

१ चौरासीवील	कौरपाल	हिन्दी	अपूर्ण	४-१६
२ मादिपुराणविनती	गङ्गादास	"		१७-८३

विशेष—सूरत में नरसीपुरा (नरसिंहपुरा) जाति वाले बरिणव पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना की थी ।

३ पद—जिए जपि जिए जपि जिवडा	हर्षकीर्ति	हिन्दी		४८-४१
४ अष्टकपूजा	विश्वभूषण	"	पूर्ण	४१
५ समकितविरणवोधर्म	श्री० जिनदास	"	"	४८

५७०७ गुटका सं० ७ । पत्र सं० ५० । आ० ५ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—४८ यन्त्रों का मन्त्र सहित संग्रह है । मन्त्र में कुछ आयुर्वेदिक नुसखे भी दिये हैं ।

५७०८ गुटका सं० ८ । पत्र सं० × । आ० ५×२ $\frac{३}{४}$ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उपवासों का ब्यौरा, शुभापित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है ।

५७०९ गुटका सं० ९ । पत्र सं० ५१ । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल सं० १७८३ । पूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे, पाशा केशली, नाम माला आदि हैं ।

५७१० गुटका सं० १० । पत्र सं० ८५ । आ० ६×३ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लिपि स्पष्ट नहीं है तथा अशुद्ध भी है ।

५७११ गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२-६२ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

शुटका-समग्र]

५७२१ शुटका स० २१ । पत्र सं० ५-६२ । पृ० ५६×५३ ६० । ले० तान × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—समयाार गाथा, सामायितपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थगूण एव भक्तामरस्तोत्र के पाठ हैं ।

५७२० शुटका स० २० । पत्र सं० २१६ । पृ० ६५×६ ६० । ले० तान सं० १८६७ चैत्र सुदी १४ ।

पूर्ण ।

विशेष—५० मंत्रो एव स्तोत्रो वा सप्रह है ।

५७२३ शुटका स० २३ । पत्र सं० ६७-२०६ । पृ० ६५×५ ६० । ले० तान × । अपूर्ण ।

१ पद- (यह पानी मुक्तान गये)	×	हिन्दी	पूर्ण	६७
२ (पद-पौन खामेरीमै न जानी तजि के चमे गिरारि)	×	"	"	"
३ पद-(प्रभू तेरे दरसन की कामिहागे)	×	"	"	"
४ आदिपचारकथा	×	"	"	६६-१२५
५ पद-(पनो मिय पूजन श्री बीर जिनद)	×	"	"	१७५-१७६
६ जोगीरासो	जिनदास	"	"	१६०-१६२
७ पञ्चैन्द्रिय त्रेनि	ऊगुरसी	"	"	१६२-१६५
८ जैनविद्विदेग की पवित्रा	मजलसराय	"	"	१६५-१६७

ग भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

५७२४ शुटका स० १ । पृ० ८५×५ ६० । ले० तान × । पूर्ण । वे० सं० १०० ।

विशेष—निम्न पाठा वा सप्रह है ।

१ पद- सांवरिया पारसनाथ माहे तो चापर रासो	गुणालचन्द्र	हिन्दी
२ ,, मुझे है चाप दरसन वा दिला दोगे तो क्या हागा	×	"
३ दर्शनपाठ	×	संस्कृत
४ तीन चौबीसीनाम	×	हिन्दी
५ पल्याणमन्दिरआपा	बनारसीदास	"
६ भक्तामरस्तोत्र	मानगुप्ताचार्य	संस्कृत
७ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

२०१२ गुरुका सं० १२। पत्र सं० २२३। भा० ३५४६। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले. पत्र सं० १२। २ वीं भाग दुपरी १४। पूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

२०१३ गुरुका सं० १३। पत्र सं० १२३। भा० ३५२३६। ले. पत्र ५। पूर्ण।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है।

२०१४ गुरुका सं० १४। पत्र सं० ४२। भा० ३६५२३६। भाषा-हिन्दी। ले. पत्र ५। अपूर्ण।

१ विनोदबर्लन	×	हिन्दी	पूर्ण	१-१२
२ खड्गवादी पत्रिका	×	"	"	१२-२१
३ वेदव्यवस्थापक पुस्तकालय	×	"	"	२१-२२

२०१५ गुरुका सं० १५। पत्र सं० ७६। भा० ३५२३६। ले. पत्र ५। पूर्ण।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

२०१६ गुरुका सं० १६। पत्र सं० १२। भा० ३५२३६। ले. पत्र सं० १७२१ वीं भाग दुपरी १। पूर्ण।

१ समन्वयसंस्थापक	समाचारिका	हिन्दी	१०-११
२ पारम्यवादीय विचारणी	×	"	११-१२
३ साहित्यसंस्थापक	संस्थापक	"	१२-१३
४ सुदृष्टीवर्धनिका	×	"	१३-१४

२०१७ गुरुका सं० १७। पत्र सं० ११२। भा० ३५२३६। ले. पत्र ५। अपूर्ण।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

२०१८ गुरुका सं० १८। पत्र सं० १२४। भा० ३६५२३६। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले. पत्र ५। अपूर्ण।

विशेष—मित्र वीरचित्त पूजा पाठों का संग्रह है।

२०१९ गुरुका सं० १९। पत्र सं० १२३। भा० ३५२३६। ले. पत्र ५। पूर्ण।

विशेष—मित्र पाठ व अन्य आदि का संग्रह है तथा सामुहिक के मुक्तों की दिशि है।

२०२० गुरुका सं० २०। पत्र सं० १३२। भा० ३५२३६। ले. पत्र सं० १२२। अपूर्ण।

विशेष—मित्रपुस्तकालय पारम्यवादीय स्तोत्र (पद्यमय) शिवलुपि (कनक, हिन्दी) व (सु

पत्र एवं वनवर्धन) कनकवादी की वार्षिक तथा सामुहिक पत्र आदि पाठों का संग्रह है।

शुटका-समग्र]

५७२१ शुटका सं० २१ । पत्र सं० ५-६० । मा० ५२×५३ इ० । ले० तान X । प्रपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—समयनार गाथा, सामायिरपाठ धृति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एव भक्तामरस्तोत्र के पाठ हैं ।

५७२२ शुटका सं० २२ । पत्र सं० २१६ । मा० ६×६ इ० । ले० तान सं० १८६७ चंद्र सुदी १५ ।

पूर्ण ।

विशेष—५० मंत्रा एव स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७२३ शुटका सं० २३ । पत्र सं० ६७-२०६ । मा० ६×५ इ० । ले० तान X । प्रपूर्ण ।

१ पद- (वह पानी मुनताम गये)	X	हिंदी	पूर्ण	६७
२ (पद-कौन स्वतामेरीधे न जानी तजि के चम गिन्नारि)	X	"	"	"
३ पद-(प्रभू तेरे दरसन की काम्हारी)	X	"	"	"
४ मादित्यनारनथा	X	"	"	६६-१२५
५ पद-(चलो विय पूजन श्री वीर जिनद)	X	"	"	१७८-१७९
६ जोमीरासो	जिनदाग	"	"	१६०-१६२
७ पञ्चेन्द्रिय वेलि	ऊरुरसी	"	"	१६२-१६५
८ जैनविद्विदेस की पदिका	मजनगराज	"	"	१६५-१६७

ग भगडार [शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

५७२४ शुटका सं० १ । मा० ८×५ इ० । ले० तान X । पूर्ण । वे० सं० १०० ।

विशेष—निम्न पाठा का संग्रह है ।

१ पद- सांवरिया पारसनाथ माहे तो चाकर रासो	गुमालचंद	हिन्दी
२ " मुझे है चाव दरसन का दिया दोगे तो क्या होगा	X	"
३ दर्शनपाठ	X	संस्कृत
४ तीन चौबीसीनाम	X	हिन्दी
५ पत्थारणमन्दिरभाषा	बनारसीदास	"
६ भक्तामरस्तोत्र	मानवुजाचार्य	संस्कृत
७ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभवेय	"

७ कैमपूजा	×	विन्ही ईला
८. अष्टविम विम वीरालय अष्टमाल	×	विन्ही
९ विद्वत्पूजा	×	होता
११ लीलाइकारपूजा	×	"
१२. वदवत्पूजा	×	"
१३. अष्टिपराज	×	"
१४ परमेश्वरपूजा	×	"
१५. पंचमेरपूजा	सुखराज	विन्ही
१६. अष्टीरपूजा	×	होता
१७. उत्तमपूजा	अष्टमाल	पदार्थ
१८. उत्तमपूजा	×	"
१९. अष्टविम वीरालय अष्टमाल	×	विन्ही
२ विमविमालय अष्टमाल	वीरा अष्टमाल	"
२१. सुखो की विमली	×	"
२२. विमली	अष्टमाल	"
२३. उत्तमपूजा	अष्टमाल	पूर्व अष्टम
२४. अष्टमाल	अष्टमाल	विन्ही
२५. पद- विम वीरा विम वीरा व अष्टम	विमाल	"
२६. " वीरा वीरा वीरा वीरा	अष्टमाल	"
२ " अष्टमाल अष्टमाल वीरा	अष्टमाल	"
२८. " अष्टमाल अष्टमाल वीरा	"	"
२९. " अष्टमाल अष्टमाल वीरा	"	"
३ " अष्टमाल अष्टमाल वीरा	"	"
३१. " अष्टमाल अष्टमाल वीरा	"	"
३२. अष्टमाल	अष्टमाल	"
३३. अष्टमाल अष्टमाल वीरा	×	"
३४. पद- वीरा अष्टमाल वीरा	×	"

५७२५ गुटका सं० २ । पत्र सं० ८३-४०३ । आ० ४३×३ इ० । अपूर्ण । वे० सं० १०१ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ कल्याणमन्दिर भाषा	वनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण ८३-६३
२ देवसिद्धपूजा	×	"	६३-११५
३ सोलहकारणपूजा	×	अपभ्रंश	११५-१२२
४. दशलक्षणपूजा	×	अपभ्रंश सस्कृत	१२३-१२६
५ रत्नत्रयपूजा	×	सस्कृत	१२८-१६७
६ नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत	१६८-१८१
७ शान्तिपाठ	×	सस्कृत	१८१-१८६
८ पञ्चमंगल	रूपचन्द्र	हिन्दी	१८७-२१२
९ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	अपूर्ण २१३-२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"	२२५-२६८
११. भक्तामरस्तोत्र मत्र एव हिन्दी			
पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	सस्कृत हिन्दी	२६९-४०३

५७२६ गुटका सं० ३ । पत्र सं० ८६ । आ० १०×६ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १८७६

श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० १०५ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ चौबीसतीर्थकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी
२. अष्टाह्निकापूजा	"	"
३ षोडशकारणपूजा	"	"
४ दशलक्षणपूजा	"	"
५ रत्नत्रयपूजा	"	"
६ पञ्चमेष्टपूजा	"	"
७ सिद्धक्षेत्रपूजा	"	"
८ दर्शनपाठ	×	"
९ पद-भरज हमारी मुन	×	"

१ कपिलमठस्थोत्तरविष्णु	×	"
११ मल्लमठस्थोत्तरविष्णु	×	वैष्णव शिखी

नवमल ठर शिखी धर्म दक्षिण ।

२०२७ गुप्तकाल ४ । नम सं २२ । या ४०२६ । चावा-शिखी । नम ४ २१२४ । पूर्वा । न सं १९ ।

विशेष—जैन शिखी के शिखी धर्म का संकेत है । इनमें श्रीशतराय शायरराज श्रीशतराय नमल गुप्तकाल में या शायरराज के नाम उल्लेखनीय हैं ।

घ भयहार [दि० जैन नया मन्दिर वैरात्रियों का जयपुर]

२०-२८ गुप्तकाल सं १ । नम सं १ । या १३०२६ । नम ४ । पूर्वा । न सं १४ ।

विशेष—विष्णु शायर का संकेत है—

१ कपिलमठस्थोत्तरविष्णु	नमलु शायर	वैष्णव	१-१
२ कपिलमठस्थोत्तरविष्णु	×	"	१
३ कपिलमठस्थोत्तरविष्णु	नमलु शायर	शिखी	४-११६
४ नमलु	"	"	११७
५ नमलु शायर	नमलु	"	११८-११९
६ नमलु शायर	नमलु शायर	"	११९-१२०
७ नमलु शायर	नमलु शायर	"	१२०-१२१
८ नमलु शायर	×	"	१२१-१२२
९ नमलु शायर	×	"	१२२-१२३
१० नमलु शायर	×	"	१२३-१२४
११ नमलु शायर	×	"	१२४-१२५
१२ नमलु शायर	×	"	१२५-१२६
१३ नमलु शायर	×	"	१२६-१२७
१४ नमलु शायर	×	"	१२७-१२८
१५ नमलु शायर	×	"	१२८-१२९
१६ नमलु शायर	×	"	१२९-१३०
१७ नमलु शायर	×	"	१३०-१३१
१८ नमलु शायर	×	"	१३१-१३२
१९ नमलु शायर	×	"	१३२-१३३
२० नमलु शायर	×	"	१३३-१३४
२१ नमलु शायर	×	"	१३४-१३५
२२ नमलु शायर	×	"	१३५-१३६
२३ नमलु शायर	×	"	१३६-१३७
२४ नमलु शायर	×	"	१३७-१३८
२५ नमलु शायर	×	"	१३८-१३९
२६ नमलु शायर	×	"	१३९-१४०
२७ नमलु शायर	×	"	१४०-१४१
२८ नमलु शायर	×	"	१४१-१४२
२९ नमलु शायर	×	"	१४२-१४३
३० नमलु शायर	×	"	१४३-१४४
३१ नमलु शायर	×	"	१४४-१४५
३२ नमलु शायर	×	"	१४५-१४६
३३ नमलु शायर	×	"	१४६-१४७
३४ नमलु शायर	×	"	१४७-१४८
३५ नमलु शायर	×	"	१४८-१४९
३६ नमलु शायर	×	"	१४९-१५०
३७ नमलु शायर	×	"	१५०-१५१
३८ नमलु शायर	×	"	१५१-१५२
३९ नमलु शायर	×	"	१५२-१५३
४० नमलु शायर	×	"	१५३-१५४
४१ नमलु शायर	×	"	१५४-१५५
४२ नमलु शायर	×	"	१५५-१५६
४३ नमलु शायर	×	"	१५६-१५७
४४ नमलु शायर	×	"	१५७-१५८
४५ नमलु शायर	×	"	१५८-१५९
४६ नमलु शायर	×	"	१५९-१६०
४७ नमलु शायर	×	"	१६०-१६१
४८ नमलु शायर	×	"	१६१-१६२
४९ नमलु शायर	×	"	१६२-१६३
५० नमलु शायर	×	"	१६३-१६४
५१ नमलु शायर	×	"	१६४-१६५
५२ नमलु शायर	×	"	१६५-१६६
५३ नमलु शायर	×	"	१६६-१६७
५४ नमलु शायर	×	"	१६७-१६८
५५ नमलु शायर	×	"	१६८-१६९
५६ नमलु शायर	×	"	१६९-१७०
५७ नमलु शायर	×	"	१७०-१७१
५८ नमलु शायर	×	"	१७१-१७२
५९ नमलु शायर	×	"	१७२-१७३
६० नमलु शायर	×	"	१७३-१७४
६१ नमलु शायर	×	"	१७४-१७५
६२ नमलु शायर	×	"	१७५-१७६
६३ नमलु शायर	×	"	१७६-१७७
६४ नमलु शायर	×	"	१७७-१७८
६५ नमलु शायर	×	"	१७८-१७९
६६ नमलु शायर	×	"	१७९-१८०
६७ नमलु शायर	×	"	१८०-१८१
६८ नमलु शायर	×	"	१८१-१८२
६९ नमलु शायर	×	"	१८२-१८३
७० नमलु शायर	×	"	१८३-१८४
७१ नमलु शायर	×	"	१८४-१८५
७२ नमलु शायर	×	"	१८५-१८६
७३ नमलु शायर	×	"	१८६-१८७
७४ नमलु शायर	×	"	१८७-१८८
७५ नमलु शायर	×	"	१८८-१८९
७६ नमलु शायर	×	"	१८९-१९०
७७ नमलु शायर	×	"	१९०-१९१
७८ नमलु शायर	×	"	१९१-१९२
७९ नमलु शायर	×	"	१९२-१९३
८० नमलु शायर	×	"	१९३-१९४
८१ नमलु शायर	×	"	१९४-१९५
८२ नमलु शायर	×	"	१९५-१९६
८३ नमलु शायर	×	"	१९६-१९७
८४ नमलु शायर	×	"	१९७-१९८
८५ नमलु शायर	×	"	१९८-१९९
८६ नमलु शायर	×	"	१९९-२००
८७ नमलु शायर	×	"	२००-२०१
८८ नमलु शायर	×	"	२०१-२०२
८९ नमलु शायर	×	"	२०२-२०३
९० नमलु शायर	×	"	२०३-२०४
९१ नमलु शायर	×	"	२०४-२०५
९२ नमलु शायर	×	"	२०५-२०६
९३ नमलु शायर	×	"	२०६-२०७
९४ नमलु शायर	×	"	२०७-२०८
९५ नमलु शायर	×	"	२०८-२०९
९६ नमलु शायर	×	"	२०९-२१०
९७ नमलु शायर	×	"	२१०-२११
९८ नमलु शायर	×	"	२११-२१२
९९ नमलु शायर	×	"	२१२-२१३
१०० नमलु शायर	×	"	२१३-२१४

विशेष—श्री कपिलमठ के शिखी धर्म की भी ।

५७२६ गुटका सं० २ । पत्र सं० २३३ । भा० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४१

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१०६
विशेष—संस्कृत गद्य में टीका दी हुई है ।			
२ धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी	११०-१७०
३ ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	प्राकृत	१७१-१६२
४ पंचलब्धिविचार	×	"	१६३-१६४
५ अठाव्रीस मूलगुणराज्ञ	श० जिनदास	हिन्दी	१६४-१६६
६ दानकथा	"	"	१६७-२१५
७ बारह अनुप्रेक्षा	×	"	२१५-२१७
८ हस्ततिलकरास	श० अजित	हिन्दी	२१७-२१३
९ चिद्रूपभास	×	"	२२०-२१७
१० आदिनायकलघुवार्ताकथा	ग्रन्थ ज्ञानसागर	"	२२८-२३३

५७३० गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६८ । भा० ५३×४ इ० । ले० काल सं० १६२१ पूर्ण । वै० सं० १४२

१ जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-३५
२ आदित्यवार कथा भाषा टीका सहित मू० क० सकलकीर्ति		हिन्दी	३६-६०
भाषाकार—सुरेन्द्रकीर्ति २० काल १७४१			
३ पञ्चपरमेष्विगुणस्तवन	×	"	६१-६८

५७३१ गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७० । भा० ७३×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७४३

१ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	५-२५
२ भक्तामरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६-३२
३ जिनस्तवन	दीनतराम	"	३२-३३
४ छहडाला	"	"	३४-५६
५ भक्तामरस्तोत्र	भातलु गान्धर्व	संस्कृत	६०-६७
६ रविवारकथा	देवेन्द्रभूषण	हिन्दी	६८-७०

४०१२. गुह्यका सं ३। पत्र सं ३९। या ३१×७६। जाला-हिन्दी। के काल ×। मूर्ति।
के सं १४४।

विशेष—पुत्रादो का संघ है।

४०१३. गुह्यका सं ३। पत्र सं ३-३६। या ३१×३६। जाला-हिन्दी। के काल ×। मूर्ति।
के सं १४५।

विशेष—पुत्रादो का संघ है।

४०१४. गुह्यका सं ७। पत्र सं २-३३। या ३२×४३। जाला-हिन्दी संस्कृत। विष्णु-पुत्रा।
के काल ×। मूर्ति। के सं १४६।

४०१५. गुह्यका सं ८। पत्र सं १७-४८। या ३२×३६। जाला-हिन्दी। के काल ×।
मूर्ति। के सं १४७।

विशेष—ब्रह्माण्डीविष्णु तथा कुछ पत्नी का संघ है।

४०१६. गुह्यका सं ६। पत्र सं ३२। या ३२×४३। के काल सं १५। मूर्ति।
के सं १४८।

विशेष—हिन्दी पत्नी का संघ है।

४०१७. गुह्यका सं १। पत्र सं ४। या ३२×४३। जाला-हिन्दी। विष्णु-पुत्रा पाठ संघ।
के काल ×। मूर्ति। के सं १४९।

४०१८. गुह्यका सं ११। पत्र सं २३। या ७×३६। जाला-हिन्दी। विष्णु-पुत्रा पाठ संघ।
के काल ×। मूर्ति। के सं १५०।

४०१९. गुह्यका सं १२। पत्र सं ३४-४६। या ७×३६। जाला-हिन्दी। विष्णु-पुत्रा
पाठ संघ। के काल ×। मूर्ति। के सं १५१।

विशेष—संस्कृत पत्नी का संघ है।

४०२०. गुह्यका सं १३। पत्र सं ४८। या ७×३६। जाला-हिन्दी। विष्णु-पुत्रा पाठ संघ।
के काल ×। मूर्ति। के सं १५२।

क भगवद्धार [शास्त्रभगवद्धार दि० जैन मन्दिर संधीजी]

४०२१. गुह्यका सं १। पत्र सं १७। या २२×३६। जाला-हिन्दी संस्कृत। के काल ×।
मूर्ति। विशेष—पुत्रा व स्त्रीयो का संघ है।

५७४२ गुटका सं० २ । पत्र सं० ८६ । मा० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८७६ वैशाख शुक्ला १० । अपूर्ण ।

विशेष—वि० राममुखजी हू गरसोजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मठा नगर में प्रतिलिपि की थी । पूजाओं का संग्रह है ।

५७४३ गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६६ । मा० ६½×६ इ० । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तिपाठ, संबोधपञ्चासिका तथा सुभाषितावली आदि उल्लेखनीय पाठ हैं ।

५७४४ गुटका सं० ४ । पत्र सं० ४-६६ । मा० ७×८ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८६८ । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७४५ गुटका सं० ५ । पत्र सं० २८ । मा० ८×६½ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०७ । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७४६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० २७६ । मा० ६×४½ इ० । ले० काल सं० १६६ माह बुदी ११ । अपूर्ण ।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य भार्गव लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । पूजा स्तोत्रों के प्रतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है —

१ भाराधनासार	देवसेन	प्राकृत
२ संबोधपञ्चासिका	×	"
३. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	संस्कृत

५७४७ गुटका सं० ७ । पत्र सं० १०४ । मा० ६½×४½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—भ्रातृत्ववार कथा के साथ अन्य कथाएँ भी हैं ।

५७४८ गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३४ । मा० ४½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७४९ गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७८ । मा० ७½×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।

२५२ गुरुका सं० १ । पत्र सं १ । या ७५२६ ह । ने कल × । मूर्त ।

विशेष—आत्मन एव गुरुकाय के पदों का संज्ञ है ।

२५३ गुरुका सं ११ । पत्र सं २ । या १२५३ ह । भाषा—हिन्दी । ने कल × ।

मूर्त ।

विशेष—गुरुकाय वाकि नवियों की लुपियों का संज्ञ है ।

२५४ गुरुका सं १२ । पत्र सं ३ । या १५४ ह । भाषा—हिन्दी । ने कल × । मूर्त

विशेष—पञ्चमज्ञ कथन कृत ब्रह्मा एव विनितियों का संज्ञ है ।

२५५ गुरुका सं १३ । पत्र सं ४ । या १८६ ह । भाषा—हिन्दी । ने कल × । मूर्त ।

१ बर्गविभाज

आत्मन

हिन्दी

२ सैन्यक

गुरुकाय

"

२५६ गुरुका सं १४ । पत्र सं ५ के १३४ । या २०३ ह । भाषा—हिन्दी । ने कल × ।

मूर्त ।

विशेष—पदों का संज्ञ है ।

२५७ गुरुका सं १५ । पत्र सं ६ । या २३६ ह । भाषा—हिन्दी । ने कल × । मूर्त

विशेष—हिन्दी पदों का संज्ञ है ।

२५८ गुरुका सं १६ । पत्र सं ११४ । या २५३ ह । भाषा—हिन्दी संक्षेप । ने कल × ।

मूर्त ।

विशेष—गुरुकाय एवं लोको का संज्ञ है ।

२५९ गुरुका सं १७ । पत्र सं २ या ३५४ ह । भाषा—हिन्दी । ने कल × । मूर्त ।

विशेष—पञ्च विद्या वाकि नवियों के पदों का संज्ञ है ।

२६० गुरुका सं १८ । पत्र सं ३१ । या ३८६ ह । भाषा—संक्षेप । ने कल × । मूर्त ।

मूर्त ।

विशेष—सर्वज्ञ एवं गुरुकाय ।

२६१ गुरुका सं १९ । पत्र सं ४०१ । या ४०३ ह । भाषा—हिन्दी । ने कल × । मूर्त

१ विष्णुवन्दन

ब्रह्मासीपात्र

हिन्दी

मूर्त

२ ब्रह्मासीपात्र

ब्रह्मासीपात्र

"

मूर्त

३ ब्रह्मासीपात्र

×

"

मूर्त

४ ब्रह्मासीपात्र

×

"

"

गुटका-संग्रह]

५७६० गुटका सं० २० । पत्र सं० ५३ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—गुमानोरामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१ वसंतराजशकुनावली	×	संस्कृत हिन्दी	२० काल सं० १८२५
			सावन सुदी ५ ।

२ नाममाला	धनञ्जय	संस्कृत	×
५७६१ गुटका सं० २१ । पत्र सं० ८-७४ । आ० ८×५३ इ० । ले० काल सं० १८२० अषाढ सुदी			

६ । अपूर्ण ।

१. डोलामारणी की वार्ता	×	हिन्दी
२. शनिश्चरकया	×	"
३ चन्दकु वर की वार्ता	×	"

५७६२ गुटका सं० २२ । पत्र सं० १२७ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५७६३ गुटका सं० २३ । पत्र सं० ३६ । आ० ६३×५३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६४ गुटका सं० २४ । पत्र सं० १२८ । आ० ७×५३ इ० । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । जीय

१ यशोधरकथा	खुशालचन्द काला	हिन्दी	२० काल १७७५
२ पद व स्तुति	×	"	"

विशेष—खुशालचन्दजी ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

५७६५ गुटका सं० २५ । पत्र सं० ७७ । आ० ६×४३ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७६६ गुटका सं० २६ । पत्र सं० ३६ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण

१ पद्मावतीसहस्रनाम	×	संस्कृत
--------------------	---	---------

२ द्रव्यसंग्रह	×	प्राकृत
----------------	---	---------

५७६७ गुटका सं० २७ । पत्र सं० ३३८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ पूजासंग्रह	×
--------------	---

संस्कृत

१. अन्तराल	अन्तराल	द्विती
२. अन्तराल	"	"
४. अन्तराल	"	"
५. अन्तराल	"	"

२०१८ गुरुप्रश्न २८ । वन २०१८ । अ. २०१८ । १ मे वन X । गुरु ।

द्विती—२०१८ मे वन २८ उल्लेखनीय है ।

१. अन्तराल	अन्तराल	द्विती
२. अन्तराल	अन्तराल	"
३. अन्तराल	अन्तराल	"
४. अन्तराल	अन्तराल	"
५. अन्तराल	अन्तराल	"
६. अन्तराल	अन्तराल	द्विती

२०१९ गुरुप्रश्न २९ । वन २९ । अ. २०१९ । १ मे वन २९ (२०१९ वन २९) ।

६ । गुरु ।

१. अन्तराल	X	द्विती
२. अन्तराल	अन्तराल	"
३. अन्तराल	अन्तराल	"
४. अन्तराल	X	" २ वन २९ । ११

२ वन २९ । ११

अन्तराल वन २९ मे अन्तराल वन २९ ।

५. अन्तराल	२	द्विती
६. अन्तराल	अन्तराल	"

२०२० गुरुप्रश्न ३० । वन ३० । अ. २०२० । १ मे वन X । गुरु ।

१. अन्तराल	X	द्विती
२. अन्तराल	अन्तराल	"
३. अन्तराल	अन्तराल	"
४. अन्तराल	"	"

५ नाममाला

धनञ्जय

संस्कृत

१५

५७७१ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६०-११० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७७२ गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६२ । आ० ५३×५३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ वक्कावत्तीसी	×	हिन्दी
२ पूजापाठ	×	संस्कृत हिन्दी
३ विक्रमादित्य राजा की कथा	×	"
४ शनिश्चरदेव की कथा	×	"

५७७३ गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ पाशाकेवली (अवनद)	×	हिन्दी
२ ज्ञानोपदेशवत्तीसी	हरिदास	"
३ स्यामवत्तीसी	×	"
४ पाशाकेवली	×	"

५७७४ गुटका सं० ३४ । आ० ५×५ इ० । पत्र सं० ८४ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७५ गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६४० ।

पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । बचूलाल छावडा ने प्रतिलिपि की थी ।

५७७६ गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १५ से ७६ । आ० ७×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं एवं पद संग्रह है ।

५७७७ गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ जैनशतक	सुधरदास	हिन्दी
२ सबोधपञ्चासिका	द्यानतराय	"
३ पद-संग्रह	"	"

२७८८ गुह्यका सं ३८ । पत्र सं २६ । पा ३२×३२ द । जाला-हिन्दी संस्कृत । के कल × । पूर्ण ।

विशेष—पुस्तकों तथा कोशों का संग्रह है ।

२७८९ गुह्यका सं ३९ । पत्र सं ११८ । पा ८२×९ द । जाला-हिन्दी । के कल ८ १८११ । पूर्ण ।

विशेष—मनु पीथा के वाली के जाला में प्रतिविधि की थी ।

१ कुशलपत्रदीप्ति	सहायकाल	हिन्दी	
२ संस्कृतभाषा	हर्षकवि	"	२ का व १७ व १८ का सं १८११
३ मोक्षविशेषमुद्र	महापरीक्षाल	"	
४ मन्त्रपत्रदीप्ति	मन्त्रपत्र	"	
५ पुस्तकसंग्रह	×	"	
६ मन्त्रपत्रदीप्ति (संस्कृत)	×	संस्कृत	के कल सं १८११
७. मन्त्रपत्रदीप्ति	×	हिन्दी	के कल सं १८११

२७९० गुह्यका सं ४० । पत्र सं २ । पा ३२×४ द । के कल × । पूर्ण ।

१ मन्त्रपत्रदीप्ति	×	हिन्दी	
२. मन्त्रपत्रदीप्ति	×	"	

२७९१ गुह्यका सं ४१ । पत्र सं २ । पा ३२×४ द । जाला-हिन्दी संस्कृत । के कल × । पूर्ण ।

विशेष—मन्त्रपत्र संस्कृत संग्रहित है ।

२७९२ गुह्यका सं ४२ । पत्र सं १३ । पा ८२×२ द । जाला-संस्कृत हिन्दी । विष्णु-पुस्तक । के कल × । अपूर्ण ।

विशेष—मन्त्रपत्र संस्कृत संग्रहित है ।

२७९३ गुह्यका सं ४३ । पत्र सं १ । पा ९०×२ द । जाला-हिन्दी । विष्णु-पुस्तक । के कल × । अपूर्ण ।

विशेष—मन्त्रपत्र एवं मन्त्रपत्र संस्कृत संग्रहित है ।

२७९४ गुह्यका सं ४४ । पत्र सं ९ । पा ९०×२ द । के कल सं १८२९ काजल पुष्प । पूर्ण ।

विशेष—संस्कृत संग्रहित है ।

५७८५ गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ६० । मा० ८५३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ नित्यपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
२ पञ्चमङ्गल	रूपचन्द्र	"
३ जिनसहस्रनाम	भाषाधर	संस्कृत

५७८६ गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २४५ । मा० ४५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—पूजाग्रो तथा स्तोत्रो का संग्रह है ।

५७८७ गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७१ । मा० ६५४ इ० । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदा

७ । पूर्ण ।

१ भर्तृहरिस्तवक	भर्तृहरि	संस्कृत
२ वैद्यजीवन	लोलिमराज	"
३ सप्तशती	गोवर्द्धनाचार्य	ले० काल सं० १७३१ "

विशेष—जयपुर में गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

५७८८ गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १७२ । मा० ६५४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१ बारहसूत्री	सूरत	हिन्दी
२ कवकावतीसी	×	"
३ बारहसूत्री	रामचन्द्र	"
४ पद व विनती	×	"

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं ।

५७८९ गुटका सं० ४९ । पत्र सं० २८ । मा० ८३५ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १९५१ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रो का संग्रह है ।

५७९० गुटका सं० ५० । पत्र सं० १५५ । मा० १०३५७ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१ सातिनायस्तोत्र	मुनिमद्र	संस्कृत
२ स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"

१ एनीमारस्तोत्रमाला	सूत्ररस	हिन्दी
४ सद्योपपन्नविद्यावापा	आमरण	"
५ विद्यालोकप्रकाश	X	प्राकृत
६ जैनपद्य	सूत्ररस	हिन्दी
७ विष्णुपूजा	प्राधान्य	संस्कृत
अनुपामादि कावा	महाकव्य	"
८ अस्मदीयपूजा	सुविचारमयि	"

२०६१ गुप्तका सं २१। पत्र सं १४। या १३X४३ द। के काज सं ११७ जैन कुटी।
मयूर।

विशेष—विमलनाथ जीवसा ने प्रतिनिधि की थी।

१ विद्यालोकप्रकाश	X	हिन्दी
२ रत्नपत्रमाला	X	"
३ विद्यालोक के मन्दिर की रत्नपत्र का वर्णन	X	"

विशेष—यह रत्नपत्र सं १६२ फलपत्र कुटी न रत्नपत्र की हुई थी।

२०६२ गुप्तका सं २२। पत्र सं १६२ या १४X४३ द। कावा—संस्कृत हिन्दी। के काज सं १२१। मयूर।

विशेष—यूवा स्तोत्र न पत्र पत्र है।

२०६३ गुप्तका सं २३। पत्र सं १७। या १४X४३ द। कावा—संस्कृत हिन्दी। के काज X।
मयूर।

विशेष—यूवा पत्र पत्र है।

२०६४ गुप्तका सं २४। पत्र सं १८। या १४X४३ द। कावा—हिन्दी। के काज सं १२२।
मयूर। मयूर। मयूर। मयूर।

विशेष—विमलनाथ राजी (अष्टावक्र) एवं अन्य काव्य पत्र है।

२०६५ गुप्तका सं २५। पत्र सं १९। या १४X४३ द। के काज X। मयूर।

विशेष—यूवा के युवा काव्यपत्र पत्र (महाप्रदीप) तथा मयूरपत्र कावा (मयूरपत्र)

है।

५७६६ गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कवर बल्लराम के पठनार्थ प० आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१ नीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत
२ नवरत्नकवित्त	×	हिन्दी
३ कवित्त	×	”

५७६७ गुटका सं० ५७ । पत्र सं० २१७ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५७६८ गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५७६९ गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ६० । आ० ५×६ इ० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाग्रो का संग्रह है ।

५८०० गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । आ० ६×६ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास एव हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी हैं ।

५८०१ गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×४ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है । पुट्टो के दोनों ओर गणेशजी एव हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२ गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०३ गुटका सं० ६३ । पत्र सं० ७-४९ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

५८०४ गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०५ गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ९० । आ० ३ $\frac{३}{४}$ ×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पदो का संग्रह है ।

५८०६ गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

च भण्डार [दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

१८०० शुद्ध सं० १। पत्र प १६९। मा १६×४२ इ। मापा-हिन्दी बंसुट। से कल सं १७२२ पीप। पूर्ण। से सं ७४७।

विशेष—शास्त्र में मन्त्रों के सुन्दर है तथा फिर साधारण पूजा पाठ संघर्ष है।

१८०१ शुद्ध सं० १। पत्र प १६९। मा १६×४२ इ। मापा-हिन्दी बंसुट। से कल सं १७२२ पीप। पूर्ण। से सं ७४७।

विशेष—शास्त्रों की के पुन संस्कारों की पाठ्यो के पठनार्थ विद्या दया वा—

१. विष्णुपुत्र के शीरे	×	हिन्दी	से कल सं १७२७
२. पुष्प व तिल पाठ संघर्ष	×	संस्कृत	से कल सं १७२९
३. बुद्धजीव	×	हिन्दी	१. विष्णुपुत्र है।
४. शास्त्रपदी	मयीहरावत	"	
५. शैलपेक्षा	×	बंसुट	
६. कलसुप के १६ स्तव	×	हिन्दी	
७. मन्त्रपुस्तक की कथा	×	"	
८. मन्त्रपुस्तक की कथा	×	"	
९. मन्त्रपुस्तक की कथा	×	"	
१०. मन्त्रपुस्तक की कथा	×	"	
११. मन्त्रपुस्तक की कथा	×	"	
१२. मन्त्रपुस्तक की कथा	×	"	से कल सं १७२९
१३. मन्त्रपुस्तक की कथा	×	"	"

१८०२ शुद्ध सं० २। पत्र प १७०। मा १६×४२ इ। मापा-हिन्दी बंसुट। से कल सं १७२२ पीप। पूर्ण। से सं ७४७।

१८०३ शुद्ध सं० ३। पत्र प १७१। मा १६×४२ इ। मापा-हिन्दी बंसुट। से कल सं १७२२ पीप। पूर्ण। से सं ७४७।

१८०४ शुद्ध सं० ४। पत्र प १७२। मा १६×४२ इ। मापा-हिन्दी बंसुट। से कल सं १७२२ पीप। पूर्ण। से सं ७४७।

विशेष- सामान्य पूजा पाठ समग्र है

५८१७ गुटका स० ६ । पत्र स० १५१ । मा० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५२ ।

विशेष-प्रारम्भ मे आयुर्वेदिक नुसखे भी हैं ।

५८१३ गुटका स० ७ । मा० ६×६३ इ० भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजापाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७५३ ।

५८१४ गुटका स० ८ । पत्र स० १३७ । मा० ७३×५३ इ० । भाषा हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५४ ।

५८१५ गुटका स० ९ । पत्र स० ७२ । मा० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० स० ७५५ ।

५८१६ गुटका स० १० । पत्र स ३५७ । मा० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५६ ।

५८१७ गुटका स० ११ । पत्र स० १२८ । मा० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण वे० स० ७५७ ।

५८१८ गुटका स० १२ । पत्र स० १४६-७१२ । मा० ६×४ इ० । भाषा सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ७५८ ।

विशेष-निम्नपाठों का समग्र है—

१. दर्शनपञ्चीसी	×	हिन्दी
२ पञ्चास्तिकायभाषा	×	"
३ मोक्षपैण्डी	बनारसीदास	"
४ पञ्चमेखजयमाल	×	"
५. साधुवदना	बनारसीदास	"
६ जख्खी	भूषरदास	"
७ गुरामखरी	×	"
८ लघुमगल	रूपचन्द	"
९ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

५८२० शुटका स० १६ । पत्र स० १२७ । सा० ६३/४ ६० । भाषा-हिन्दी मंग्रुत । विषय-पूजा पाठ । नि० बाल × । अपूर्णा । वे० स० ७६२ ।

५८२३ शुटका स० १७ । पत्र स० ७-२३० । सा० ८१/७३ ६० । भाषा-हिन्दी । नि० बाल स० १७६३ आसोज बुदी २ । अपूर्णा । वे० स० ७६३ ।

विशेष—यह शुटका बगना निवासी १० दीनतारामजी के स्वयं के पत्रों के विषय आश्विन मासमाग्य आश्विन मास लिखवाया था ।

१ नाटकमयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्णा १-८१
२ बनारसीविलास	"	"	८२-१०३
६. क्षीरभूषणों के ६२ स्थाप	×	"	१८६-२२०
४ गढ़ेलवाल की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र /	"	"	२०७-२३०

५८२४ शुटका स० १८ । पत्र स० ७-३१७ । सा० ८३/६ ६० । भाषा-हिन्दी मंग्रुत । विषय-पूजा पाठ । नि० बाल × । अपूर्णा । वे० स० ७६४ ।

५८२५ शुटका स० १९ । पत्र स० ८७ । सा० ८४/६३ ६० । भाषा-हिन्दी मंग्रुत । विषय-स्तोत्र नि० बाल × । पूर्णा । वे० स० ७६५ ।

विशेष—भाषाय स्तोत्रों का संग्रह है ।

५८२६ शुटका स० २० । पत्र स० १६५ । सा० ८५/७३ ६० । भाषा-हिन्दी मंग्रुत । विषय-पूजा स्तोत्र । नि० बाल × । अपूर्णा । वे० स० ७६६ ।

५८२७ शुटका स० २१ । पत्र स० १२८ । सा० ८६/३३ ६० । भाषा- / । विषय-पूजा पाठ । नि० बाल × । अपूर्णा । वे० स० ७६७ ।

विशेष—शुद्धा पानी में सीगा हुआ है ।

५८२८ शुटका स० २२ । पत्र स० ८६ । सा० ७५/३३ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । नि० बाल × । अपूर्णा । वे० स० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

छ भयहार [दि० जैन मन्दिर गांधी का जयपुर]

अ-२६. गुरुका सं १। पत्र सं १७। मा २५२६। यथा द्विती बंशव। ते पत्र X।

पुर्ण। सं सं १३१।

विदेव-भूमा एव स्तोत्र कीजिए। बीच के अधिपति पत्र पते एवं कीं हुए हैं। कुछ पत्रों का संख्या

निम्न प्रकार है।

१. मेवीयरपत्र	भुविपत्रपरीति	हिन्दी	१२ पत्र हैं।
२. मेवीयर की संधि	अनुरोध	"	७-२३
३. पवित्रिकोटी	"	"	११ १ १
४. श्रीवीरडीर्षकराज	X	"	१ १-१ १
५. विवेकजरी	विषय	"	११६-११९
६. मेवभुवालीव	भूमी	"	१४५-१४९
७. पत्रपुत्री	पवित्रपुत्री	"	१४१-१४९
वापुचपुत्री	पत्रपु	"	१४१-१४
ते पत्र सं ११६२ वंश पुत्री १२			
८. धर्मपत्रपत्र	भुविपत्रपरीति	हिन्दी	१६०-१६३
९. मेवीयर का द्विपत्र	भुविपत्रपरीति	हिन्दी	१६१-१६४

अ-३. गुरुका सं २। पत्र सं २९। मा २५२६। यथा-हिन्दी। विषय-द्विपत्र।

पत्र X। पुर्ण। सं सं १३२।

१. मेविपत्रपत्र	साधन	हिन्दी	१ पत्र १७४४ १-११
२. पत्रपत्रपत्री	X	"	१६-१९

अ-३१. गुरुका सं ३। पत्र सं ४-२४। मा २५२६। यथा-हिन्दी। ते पत्र X। पुर्ण।

सं सं १३३।

१. अत्र अत्र	द्विपत्र	हिन्दी	४-१३
२. धर्मपत्रपत्र	पत्रपत्री	"	११
३. श्रीमती की अत्र	द्विपत्र	"	१२-१६

४ चन्द्रगुप्त के सोहलस्वप्न

X

हिन्दी

५२-५४

इनके अतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णतः अशुद्ध है।

५८३२. गुटका स० ४। पत्र सं० ७४। भा० ६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल X।

अपूर्ण। वे० स० २३४।

विशेष—प्रायुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है।

५८३३. गुटका स० ५। पत्र सं० ३०-७५। भा० ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल स०

१७६१ माह सुदी ५। अपूर्ण। वे० स० २३४।

१. आदित्यवार कथा भाऊ हिन्दी अपूर्ण ३०-३२

२ सप्तव्यसनकवित्त X "

३ पार्श्वनाथस्तुति बनारसीदास "

४ अठारहनाते का चौडाला लोहट "

५८३४. गुटका स० ६। पत्र सं० २-४२। भा० ६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले०

काल X। अपूर्ण। वे० स० २३४।

विशेष—शनिश्चरजी की कथा है।

५८३५. गुटका स० ७। पत्र सं० १२-६५। भा० १०३×५३ इ०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २३५।

१ चाणक्यनीति चाणक्य संस्कृत अपूर्ण १३

२ साक्षी कबीर हिन्दी १३-१६

३ ऋद्धिमन्त्र X संस्कृत १६-२१

४ प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं द्रवों का चित्र सहित वर्णन हिन्दी ६५

५८३६. गुटका स० ८। पत्र सं० २-१६। भा० ६×५ इ०। ले० काल X। अपूर्ण। वे० स० २६७।

१ बलभद्रगीत X हिन्दी अपूर्ण २-६

२. जोगीरासा पाडे जिनदास " ७-११

३ कक्कानत्तीसी X " ११-१४

४ " मनराम " १४-१८

५ पद-साधो छोबो कुमति अकेली विनोदीलाल " १८

६ " रे जीव जगत सुननो जान धीहल " २०

५८३८. गुटका स० १० । पत्र स० ४ । आ० ८३×६ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल × । वे० स० २६६ ।

१ जिनपच्चीसी	नवल	हिंदी	१-२
२ सवोधपचासिका	द्यानतराय	"	२-४

५८३९. गुटका स० ११ । पत्र स० १०-६० । आ० ५३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । वे० स० ३०० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५८४० गुटका स० ११ । पत्र स० ११५ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० काल × । वे० स० ३०१ ।

५८४१. गुटका स० १२ । पत्र स० १३० । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३०२ ।

५८४२ गुटका स० १३ । पत्र स० ६-१७ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० स० × । अपूर्ण । वे० स० ३०३ ।

५८४३ गुटका स० १४ । पत्र स० २०१ । आ० ११×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०४ ।
विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५८४४ गुटका स० १५ । पत्र स० ७७ । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । ले० काल स० १६०३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३०५ ।

विशेष—इललाक मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है । मूल पुस्तक फारसी भाषा में है । छोटी २ कहानियाँ हैं ।

५८४५ गुटका स० १६ । पत्र स० १२६ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३०६ ।
विशेष—रामचन्द्र (कवि बालक) कृत सीता चरित्र है ।

५८४६ गुटका स० १७ । पत्र स० ३-२६ । आ० ४×२ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४०७ ।

१ देवपूजा	संस्कृत	अपूर्ण
२ धूलभद्रजी का रासो	हिन्दी	१०-२१
३ नेमिनाथ राबुल का बारहमासा	"	२१-६६

४८४० गुरुका सं १८। पत्र सं १६। भा ८३×९६। ले काग ×। पूर्ण। रे सं १०८
विरोध—पत्र सं १ में ३८ तक सामान्य गालों का बरत है।

१. सुन्दर शूद्रार	बहिषाजसुन्दर	हिन्दी	३०४ पत्र है ११-८
२. विद्यापीठमई टीका सहित	×	"	पूर्ण २१-८२ ७४ पत्रों की ही टीका है।
३. अक्षय विमल	×	"	१९-११
४. बृहत्संहिताधर्मवन्द	बहिषोपीमाल	"	१४ १९०

विरोध—माध्यम के पत्र नहीं हैं भाग्य के पत्र भी नहीं हैं।

इस भी बख्ताई मुलकबनकवाली राउतया बख्ताईईह माध्यम हुये बहिषोपीमाल विरोधों का
विनाश विनाश करनेको नाम तुलसी विनाश।

पत्र सं-२६ माध्यम बहिषाज बखाल।

इस भी बख्ताई मुलकबनकवाली राउतया बख्ताई विह माध्यम हुये भोपीमाल बहिषोपी
बखालविनाशमालबखालन माध्यमको विनाश।

४८४८ गुरुका सं १६। पत्र सं २४। भा ८४×९६। भाग-हिन्दी। ले काग ×। पूर्ण।
रे सं १६।

विरोध—मुलकबन हुत कम्पुवार बहिष है पत्र भी नहीं हैं विन्नु बकीव है।

४८४९ गुरुका सं २। पत्र सं २१। भा ८४×९६। भाग-हिन्दी। ले काग ×। पूर्ण।
रे सं ११।

१. अविनाशकपुरा	बखाल	हिन्दी	११
२. बखालाबखाली दुनियाँ की दुआ	×	"	१९
३. अविनाशकपुरा	×	"	११

४८५० गुरुका सं २ (४)। पत्र सं १९। भा ८४×९६। भाग-हिन्दी। ले काग ×।
पूर्ण। रे सं १११।

४८५१ गुरुका सं २१। पत्र सं २। भा ८३×९६। ले काग सं १११० भाग-हिन्दी
१। पूर्ण। रे सं १११।

विरोध—बखालाबखाली बखालेन बखालेन विनाश ठीकही पत्र हुआ है।

गुटका-समग्र

५८५२ गुटका स० २२ । पत्र स० १६ । भा० ११×३ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१५ ।

वज्रदन्तचक्रवर्ति का वारहमासा	×	हिन्दी	६
२ सीताजी का वारहमासा	×	"	६-१२
३ मुनिराज का वारहमासा	×	"	१३-१६

५८५३ गुटका स० २३ । पत्र स० २९ । भा० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१५ ।

विशेष—गुटके में अष्टाह्निकाव्रतकथा दी हुई है ।

५८५४ गुटका स० २४ । पत्र स० १५ । भा० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । ले० काल

स० १६८३ पौष बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३१६ ।

विशेष—गुटके में ऋषिमण्डलपूजा, अनन्तव्रतपूजा, चौबीसतीर्थकर पूजादि पाठों का समग्र है ।

५८५५ गुटका स० २५ । पत्र स० ३५ । भा० ८४×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । ले० काल

× । पूर्ण । वे० स० ३१७ ।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है ।

५८५६ गुटका स० २६ । पत्र स० ५६ । भा० ७४×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल

स० १६२१ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ३१८ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थकर पूजा है ।

५८५७ गुटका स० २७ । पत्र स० ५३ । भा० ६४×५ इ० । ले० काल स० १६५४ । पूर्ण । वे० स० ३१९ ।

विशेष—गुटके में निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं ।

१ धर्मचाह	×	हिन्दी	२
२ वदनाजखंडी	बिहारीदास	"	३-४
३ सम्मेशसिखरपूजा	गंगादास	संस्कृत	५-२०

५८५८ गुटका स० २८ । पत्र स० १६ । भा० ८४×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२० ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उपास्वामि कृत है ।

५८५९ गुटका स० २९ । पत्र स० १७६ । भा० ८४×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२१ ।

विशेष—बिहारीदास कृत सतसई है । दोहा स० ७०७ है । हिन्दी गद्य पद्य दोनों में ही अर्थ है टीका-

काल स० १७८५ । टीकाकार कवि कृष्णदास हैं । आदि अन्तभाग निम्न है —

प्रारम्भः—

अब बिहारी बतलाई दीवा कबित बंध भिरमो —
 मेरी बर बाबा हरी राधा नामरी होइ ।
 बालन को बॉई करे, ब्यास हरित दुति होइ ॥

दीवा—अब मयलावरन है यहाँ भी राधा कृ की लुति य व बला बनि बरगु है । कहां एका कोर है
 बंडे जा टन को बॉई परे ब्यास हरित दुति होइ का बर से भी बुरबास सुना की बरीनि हुई—

कवित—

बारीबबा अरबीबत ही तिहु लोक की भुवरना बहि बाहि ।
 ब्रह्म बड़े बरबी रहे बैबनि की नामु कहां मुब बंवन बाप ॥
 बालन की बलने बलने हरित लुति ब्यास की होत बिहारी ।
 भी बुरबास कु बाहि कहां की भुवरना हरी बर बाबा हवारी ॥ १ ॥

अन्तिम बाठ—

बाबुर बिनु कबीर पुन लहरी हवना बनि बाठ ।
 बैबनु ही लब बनिनु की बलनु कबुपरी बाठ ॥ १४ ॥
 बाबा बाल बनि ब्रह्म बर बरपी कहां के क र ।
 बानि बॉनि बिबरा हरी बीबी बरनि बरार ॥ १५ ॥
 एक बिबा बनि बी भुनि बही बही बी बाप ।
 बीबा बीबा बनि बरी बनिनु दुति बरबास ॥ १६ ॥
 बहने कू केरे बह हिव मे हू ली बिबाक ।
 बरी बाबरा बेर की व व भुनि बनुबाद ॥ १७ ॥
 के बीने भुवर बनिनु बरत क व भुबबाद ।
 बिबहि बॉहि केरे बंवन की बहि है बनुबाद ॥ १८ ॥
 बनिब है बरने दिने बिबो व बंवन बरबास ।
 भुन की बाबन बाबने हिव मे बने हवना ॥ १९ ॥
 बरे बाल बी बीहवा भु बंवन बिहारीबाल ।
 बर बॉई भिबनी वई भुनी भुने बरिबाल ॥ २० ॥
 बरी बरीबी बरनि मे बरनी बालन बाठ ।
 बानी वन बीहनु बंवन बीने बरिब बरबाद ॥ २१ ॥

उक्ति बुक्ति दोहानु की अक्षर जोरि नवीन ।

करै सातसौ कवित में सोखै सफल प्रवीन ॥ ३२ ॥

मै अत ही दोह्यौ करी कवि कुल सरल सुभाइ ।

भूल चूक कछु होइ सो लीजौ समझि बनाइ ॥ ३३ ॥

सग्रह सतसै आगरे असी वरस रविवार ।

कातिक वदि चोथि भये कवित सकल रससार ॥ ३४ ॥

इति श्री विहारोसतसई के दोहा टोका सहित संपूर्ण ।

सतसै ग्रंथ लिख्यौ श्री राधा श्री राजा साहिबजी श्रीराजामल्लजी कौं । लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी
मौजे मजनगीई के प्रगने पछोर के । मिति माह सुदी ७ बुद्धवार सवत् १७९० मुकाम प्रवेस जयपुर ।

५८६०. गुटका स० ३० । पत्र स० १६८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण वे० स० ३५२ ।

१ तत्त्वार्थसूत्रभाषा कनककीर्ति हिन्दी ग० अपूर्ण

२ शालिभद्रचोपई जिनसिंह सूरि के शिष्य मतिसागर ,, प० २० काल १६७८ ,,

ले० काल स० १७४३ भादवा सुदी ४ । अजमेर प्रतिलिपि हुई थी ।

स्फुट पाठ × ,,

५८६१ गुटका स० ३१ । पत्र स० ६० । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० स० ३२३ ।

विशेष—पूजाग्रो का संग्रह है ।

५८६२ गुटका स० ३२ । पत्र स० १७४ । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले०
काल × । पूर्ण । वे० स० ३२४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । तथा ८८ हिन्दी पद नैन (सुखनयनानन) के हैं ।

५८६३ गुटका स० ३३ । पत्र स० ७५ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० स० ३२५ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चतुर्विंशतिजिनपूजा है ।

५८६४ गुटका स० ३४ । पत्र स० ८६ । आ० ६×६ इ० । विषय—पूजा । ले० काल स० १८६१
श्रावण सुदी ११ । वे० स० ३२६ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्द्र) एव स्तोत्र संग्रह है । हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि
की थी ।



५८५३ गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २८ । भा० ८३×७ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

५८५४ गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ५८ । भा० ६×५ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ ।

विशेष—हिन्दी पर एवं पूजा समग्र है ।

५८५५ गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १०८ । भा० ८३×३३ ६० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३७ ।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्त्वार्थसूत्र, यत्पाणमन्दिरस्तोत्र, स्वयम्भूस्तोत्र, दशानशरण, सोलहवारण मादि का समग्र है ।

५८५६ गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ५५ । भा० ८×५ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय पूजा पाठ सं० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, ह्यायिधि, सिद्धपूजा, पार्व्वपूजा, सोलहवारण दशानशरण पूजाएँ हैं ।

५८५७ गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ६६ । भा० ७×५ ६० । भाषा हिन्दी । विषय-यथा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३९ ।

१. जेष्ठजिनवरयथा	गुप्तालयन्द	हिन्दी	१-६
		२० काल सं० १७८२ जेष्ठ सुदी ६	
२ भादित्यव्रतकथा	"	हिन्दी	६१-१६
३ सप्तपरमरथान	"	"	१६-२६
४ सुकुटसप्तमीव्रतकथा	"	"	२६-३०
५ दशानशरणव्रतकथा	"	"	३०-३४
६ पुण्याञ्जलिप्रतकथा	"	"	३४-४०
७ रक्षाधिधानकथा	"	संस्कृत	४१-४५
८ उमेश्वरस्तोत्र	"	"	४६-६६

५८५८ गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १२८ । भा० ६×५ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । २० काल सं० १६६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० ।

विशेष—बनारसीदास वृत्त समयसार नाटक है ।

२८५३ गुरुका सं ४३। पत्र सं ४६। या ३८५३ द। भावा-हिन्दी संसुत। नै नल X।
 पूर्ण। नै सं ३४३।

विशेष—गुरुके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१ जीवकृत	पुनरुत्था	हिन्दी	१ ११
२ अविनश्यमानसीत	वीरपत्नी	संस्कृत	१४-२
३ अमरपत्नी	अमरपत्नी	नै नल (नव १४ ४२)	

२८५४ गुरुका सं २०। पत्र सं २५४। या ३८५३ द। भावा-संस्कृत हिन्दी। विन-पुन
 पाठ नै नल X। पूर्ण। नै सं ३४२

२८५५ गुरुका सं २१। पत्र सं २५५। या ३८५३ द। भावा-संस्कृत हिन्दी। नै नल
 सं १४२। पूर्ण। नै सं ३४३।

विशेष—गुरुके के निम्न पाठ मुख्यतः अमरपत्नी हैं।

१ अमरपत्नी	X	संस्कृत	१ २
२ जीवकृत	या विनकृत	"	१-४
३ अमरपत्नी	X	"	२ १४
४ जीवकृत	X	हिन्दी	१२-१४
५ जीवकृत	X	"	१६-२३

विशेष—भावा की कपीटी गुरुविषय नै नल वाह।

गुरु की कपीटी जीवकृत जीवकृत नै नल मे ११

विन की कपीटी भावलो अमरपत्नी

गीता की कपीटी जीवकृत के नल मे ११

गुरु की कपीटी भावा अमरपत्नी वाहि।

गीता की कपीटी अमरपत्नी के नल मे ११

गुरु की कपीटी भावा अमरपत्नी वाहि।

गीता की कपीटी जीवकृत के नल मे ११

२ द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	”	११७-१४१
३ गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी	१४४-१४५
४ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	, ले० काल १८८१	१४६-१४७
५ कृष्णपञ्चोसी	विनोदीलाल	” ” ” १८८२	१४७-१४८
६ तेरापन्य बीसपन्य भेद—	×	”	१५५-१६३

५८८२ गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ३५ । आ० ७३×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८८६

कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८३ गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ८० । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५८८४ गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ४४ । आ० ६३×६ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एवं शान्तिपाठ है ।

५८८५ गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २० । आ० ६३×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

५८८६ गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ६८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४८ ।

५८८७ गुटका सं० ५७ । पत्र सं० १७ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एवं कथा दी हुई हैं ।

५८८८ गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १०४ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८८९ गुटका सं० ५९ । पत्र सं० १२९ । आ० ६३×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रायुर्वेद ।

ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—रत्नविनिश्चय नामक ग्रंथ है ।

४८३ गुरुका सं० ६०। पत्र सं ११३। या ४४३६। माता-संस्कृत हिंदी। के वल।
पूर्व। के व ३२२।

विशेष—यूवा स्तोत्र एवं ब्रह्मरबी विद्या के कुछ पद एवं पाठ हैं।

४८४ गुरुका सं० ६१। पत्र सं २२३। या ४४३६। माता-संस्कृत हिंदी। के वल।
पूर्व। के व ३२३।

विशेष—यूवा पाठ संस्कृत है।

४८५ गुरुका सं० ६२। पत्र सं २३४। या ४४३६। माता-संस्कृत हिंदी। के वल।
पूर्व। के व ३२४।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं यूवा पाठों का संग्रह है—

४८६ गुरुका सं० ६२। पत्र सं २३३। या ४४४६। माता-हिंदी के वल।
के व ३२२।

विशेष—विश्व पाठों का संग्रह है।

१. हनुमत्स्तोत्र	संस्करण	हिंदी	१४-२७
		के वल सं १५। अष्टादश पृष्ठों का।	
२. बालविष्णुस्तोत्र	×	हिंदी	२७-२८
३. ब्रह्मविष्णुस्तोत्र की वार्ता	×	"	१ (१-१४)
		के वल सं २२। अष्टादश पृष्ठों का।	

विशेष—कोरमारी अष्टाविंशति पञ्चांगों की वार्ता हनुमत्स्तोत्र के।

४. वृंक्षस्तोत्र	×	"	पत्र सं ४४। १४५-१४६
५. ब्रह्मविष्णु की वार्ता	×	"	१४६-१४७
६. ब्रह्मविष्णु की वार्ता	विमर्श	"	१४७-१४८
७. गुरुप्रश्नोत्तर की वार्ता	×	"	पत्र सं १४८-१४९

४८७ गुरुका सं ६३। पत्र सं २४४। या ४४४६। माता-हिंदी संस्कृत। पूर्व। के वल
के व सं ३२५।

विशेष—सामान्य विष्णुस्तोत्र एवं वृंक्ष स्तोत्र एवं यूवा संग्रह है।

在 1954 年 10 月 1 日以前，在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

在 1954 年 10 月 1 日以前

४६ ० गुरुदास सं० ७९। पत्र सं १२७। या ४४×३६ द। भाषा-बसुन्त हिन्दी। ले. बल ×।
पृष्ठ सं १९४।

विषय—गुरुदास व स्त्रीय भाषा का संग्रह है।

४६ १ गुरुदास सं० ७९। पत्र सं १९। या ४४×३६ द। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले. बल ×।
पृष्ठ सं १९२।

१ गुरुदास संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी	१-४४
२ बसुन्त हिन्दी	×	हिन्दी	४२-२९

४६ ०२ गुरुदास सं० ७९। पत्र सं २। या २५×२२ द। भाषा-हिन्दी। ले. बल ×। पृष्ठ
सं १९९।

विषय—भाषा में गुरुदास तथा गुनके रचित हुये हैं तथा ग्रन्थ के १० वर्षों में संग्रह १ ११ के भाग
के भाषाओं का परिचय दिया हुआ है।

४६ ०३ गुरुदास सं ७९। पत्र सं ६। या २५×२२ द। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले. बल ×।
पृष्ठ सं १९७।

विषय—भाषाओं का संग्रह है।

४६ ०४ गुरुदास सं० ७९। पत्र सं १-११०। या ७४×३६ द। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले.
बल ×। पृष्ठ सं १९।

विषय—भाषा में कुछ भाग हैं तथा फिर भाषा रिक गुनके रचित हुये हैं।

४६ ०५ गुरुदास सं ७९। पत्र सं २७। या २२×२२ द। भाषा-हिन्दी। ले. बल ×। पृष्ठ
सं १९२।

१ भाषा-विचार	बसुन्त	हिन्दी	१२९ पत्र सं १ ११
२ भाषा-विचारों की भाषा	बसुन्त	"	१२-२१
३ भाषा-विचार	×	"	पृष्ठ २२-२३

४६ ०६ गुरुदास सं० ७९। पत्र सं १९। या २४×३६ द। भाषा-संस्कृत। ले. बल ×। पृष्ठ
सं १७१।

विषय—भाषाओं का भाषा-विचार भाषा में भाषा है।

५६०६ गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८१ । पूर्ण । वे० सं० ३७१ ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत प्रद्युम्नरास है ।

५६१० गुटका सं० ८० । पत्र सं० ५४-१३६ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७२ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	प्राकृत	अपूर्ण	५४-७६
२ मूलसंघ की पट्टावलि	×	संस्कृत		८०-८३
३ गर्भपट्टारचक्र	देवनदि	"		८४-९०
४ स्तोत्रत्रय	×	संस्कृत		९०-१०५

एकीभाव, भक्तामर एवं भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र हैं ।

५ वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	"	१० पद्य हैं	१०५-१०६
६ पादर्वनावस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	"	६ "	१०६-१०७
७ परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१४ "	१०७-१०९
८ सामायिक पाठ	अमितिगति	"		११०-११३
९ तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत		११३-११६
१० आराधनासार	"	"		१२४-१३४
११ समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"		१३४-१३८

५६११ गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७३० । भादवा सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—कामशास्त्र एवं नायिका वर्णन है ।

५६१२ गुटका सं० ८२ । पत्र सं० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ ।

विशेष—पूजा तथा कथाओं का संग्रह है । अन्त में १०६ से ११३ तक १८ वीं शताब्दी का (१७०१ से १७५६ तक) वर्षा अकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है ।

५६१३ गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ ।

१ कुम्हारस्य × द्वितीया वर्ष ७२ ई १-११
महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है।

२. कर्त्तवीरस्य कथा × " १६-२१

३ कुम्हारस्य × " २६-३

२६१४ गुरुका सं० ८४। वर्ष १२२ २४१। या १ × २२ द। वाता-कंसक। ने वस ×।
मूर्त्ति ३६ ई ३७६।

विशेष—वैद्यकसार एवं वैद्यकज्ञान कर्त्तों का संस्कृत है।

२६१५ गुरुका सं० ८५। वर्ष ३ २। या ४ × २२ द। वाता-द्वितीया। ने वस ×। मूर्त्ति।
३६ ई ३७७।

विशेष—दो मुटकों का एक मुटका कर दिया है। गिनत पाठ सुकता कसीकपोय है।

१ किलामतिरयमाव	अनुपदी	द्वितीया	११ वर्ष ई	१०-११
२ वैद्य	कंसक	"		११-१२
३ कंसकलीय	वृषा	"		१२ १
४ वैद्यकीय	वृषिहिनमि			१०-१
५ विद्यवा	वृषारामयज्ञ	"		१०-११
६ वैद्यकीयवोपाया	विद्युगमि	"		११ ११
७ वैद्यकीय	वैद्युग	"		११-११
८ वैद्यकीय के १ वस	वृषारामयज्ञ	"		११-११
९. पौव	वैद्य वसु	"		११-११
१० वैद्यकीयस्य	अनुपदी			१२ २
११ वैद्यकीयस्य	वैद्य वसु	"		१२ २
१२. स्तोत्र	व. विगमन वैद्य	"		१ -२१
१३ गुरुवर कीर्ति	व. वाचस्प			१२-१२

ने वस वर्ष ११ ७ मूर्त्ति मुटो २।

१४ वैद्यकीय कीर्ति मुनी " १२-१२

१५. गुरुका के ११ वसु वृषारामयज्ञ १२-१२

१६ चलिभद्र गीत	अभयचन्द्र	"	३०-३६
१७ भविष्यदत्त गथा	प्रहारायमल्ल	"	४०-८५
१८ निर्दोषसप्तमीप्रत गथा	"	"	
			ले० काल १६४३ मासोज १३ ।
१९ हनुमत्तरास	"	"	अपूर्णा

५६१६ गुटका स० ८६ । पत्र स० १८८ । मा० ६५६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एव स्तोत्र । ले० काल स० १८४२ भाद्रपद गुदा १ । पूर्णा । वे० स० ३७८ ।

५६१७ गुटका स० ८७ । पत्र स० ३०० । पा० ५३५४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३७६ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्रो ये अतिरिक्त रत्नचन्द्र, वनारसोदाय तथा विनादीलाल आदि कविया रूत हिन्दी पाठ हैं ।

५६१८ गुटका स० ८८ । पत्र स० ५८ । मा० ६५५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३८० ।

विशेष—भातराम रूत हिन्दी पदा का संग्रह है ।

५६१९ गुटका स० ८९ । पत्र स० २-२६६ । मा० ८५५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्णा । वे० स० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	संस्कृत	१८-२०
२ वारह प्रनुप्रेक्षा	×	प्राकृत	४७ गायार्थ हैं । २१-२५
३ भावनाचतुर्विण्ति	पद्मनन्दि	संस्कृत	
४ अथ स्फुट पाठ एव पूजायें	×	संस्कृत हिन्दी	

५६२० गुटका स० ९० । पत्र स० ३-६१ । मा० ८५५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३८२ ।

विशेष—नलवराम के पदों का संग्रह है ।

५६२१ गुटका स० ९१ । पत्र स० १४-४६ । मा० ८३५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एव पाठों का संग्रह है ।

२६२० गुटका सं ६२। पक्ष सं २६। या ६०२६। भाषा-हिन्दी। विषय-न्याय। ले
काल ×। प्रपूर्व। सं सं १४।

विशेष—सम्यक् विधि पूरा है।

२६२१ गुटका सं ६३। पक्ष सं १२३। या ६०२६। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले काल ×।
पूर्व। सं सं १२२।

विशेष—गुरुका विष्णु पाठों का संग्रह है।

१. वेदमन्त्रित	श्रीमद्भगवद्गीता	हिन्दी	११
२. विषयसूत्रम्	आचार्य	संस्कृत	११-१२
३. लघुपञ्चमस्तोत्र	×	"	१३-१४
४. श्रीपद्मोपाधि श्री भगवत्	×	हिन्दी	१६-४
५. श्रीब्रह्मसंहिता	ब्रह्मसंहिता	हिन्दी	७१-७४
६. उल्लेखिका	"	"	७५-७६
७. धर्मिकशास्त्रिका	धर्मिक	"	७६-७७
८. श्रीमद्भगवद्	भगवद्	"	८४-८६
९. श्रीमद्भगवद्	ब्रह्मसंहिता	"	८७-८८
१०. श्रीमद्भगवद्	ब्रह्मसंहिता	"	११४
११. श्रीमद्भगवद्	×	"	१२-१३

२६२४ गुटका सं ६४। पक्ष सं ७-७६। या ६०२६। भाषा-हिन्दी। ले काल ×।
प्रपूर्व। सं सं १५।

विशेष—श्रीमद्भगवद् के पाठों का संग्रह है।

२६२५ गुटका सं ६५। पक्ष सं ९-८६। या ६०२६। भाषा-हिन्दी। ले काल ×। प्रपूर्व।
सं सं १२३।

१. श्रीमद्भगवद्	ब्रह्मसंहिता	हिन्दी	प्रपूर्व	१-७
		ले काल सं १७६	धर्मिक	सूरी १२
२. श्रीमद्भगवद्	"	"		७१-८६

२६२६ गुटका सं ६६। पक्ष सं ८। या ६०२६। भाषा-संस्कृत। विषय-श्रीमद्भगवद्।
ले काल सं १८६। प्रपूर्व। सं सं १।

१ नत्तामरस्तोत्र अक्षिमयत्रयसहित	मानु गाचार्य	संस्कृत	१-४३
२ पद्मावतीकवच	×	"	४३-५२
३ पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	५२-६३
४ पद्मावतीस्तोत्र बीजमय एव साधन विधि	×	"	६३-८६
५ पद्मावतीपटल	×	"	८६-८७
६. पद्मावतीदण्ड	×	"	८७-८८

५६२७ गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६-११३ भा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० ३८६ ।

१ स्फुटयात्रा	×	हिन्दी	अपूर्ण	६-२२
२. हरिचन्द्रसतक	×	"		२३-६६
३ श्रीगुणरित	×	"		६७-६३
४ मल्हारचरित	×	"	अपूर्ण	६३-११३

५६२८ गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५३ । भा० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० ३६० ।

विशेष—स्तोत्र एव तत्त्वार्थमूय आदि सामान्य पाठो का संग्रह है ।

५६२९ गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ६-१२६ । भा० ८३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ ।

५६३० गुटका सं० १०० । पत्र सं० ८८ । भा० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० ३६२ ।

१ आदित्यवारकथा	×	हिन्दी		१४-३४
२ पक्की स्थाही बनाने की विधि	×	"		३५
३ सकट चौपई कथा	×	"		३८-४३
४ कक्का वत्तीसी	×	"		४५-४७
५ निरंजन घतक	×	"		४१-८४

विशेष—लिपि विकृत है पढ़ने में नहीं आती ।

५६३१ गुटका सं० १०१ । वन सं २३ । या १५५५३६ । जाला-हिन्दी । ॥ वन × ।
 धूर्त । सं १६१ ।

विशेष—नवि सुन्दर हृद नायिका ललक विद्या कृपा है । ४२ से १३ पद्य तक है ।

५६३२ गुटका सं० १०२ । वन सं ७५-१ । या ५५५७६ । जाला-हिन्दी । विपक-संघ ।
 न वन × । धूर्त । सं १६४ ।

१ कपूरपी कवा आनुपम हिन्दी २ काल १७६३ ई. केठ गुरी ।

न वन सं १७६३ केठ गुरी १४ । धूर्त ।

विशेष—२१ पद्य से २३ पद्य तक है ।

प्रथम भाग—

माला पंछी हूँ नहि कटी धंवन विद्या बीच न निघरै ।

वागी माला काली बार घनघनम घनैसी धार ॥ १७१ ॥

दोहा—

माल देखि नर देखिने कुछ कुछ रोठ केन ।

मालन एक निचाटि, करन न हूँ न कैर ॥ १७० ॥

धंवनपार कंवर नी सीसी बिन्हा केसु कंवर नव नवी ।

सुबली मायी लीला हूँ न रोठ सीह सुनीपुर नार ॥ १७५ ॥

अन्तिम भाग—

सुनि नाव कवा नही पानबादी मुनतल ।

करप करप में देखी बँडे पने नु बाण ॥ २१ ॥

ललपली पनलन प्रथम केठ सुनि नावि ।

लीनवार लवली मली मुण्ड नवा नकावि ॥ २२६ ॥

ललितपाल लीहूँ नरोट बापलसी में बाल ।

अनु नही पति नी हूँ न लवन नी बाल ॥ २३ ॥

नहापना नीलपद्मिनी माला, पाह्या माल नी बार ।

नी मा कवा नही सुनी नी मुनि में बार ॥ २३१ ॥

नीलन की कवा धंभूर । पिरी प्रथम केठ गुरी १४ धंभू १७६३

१. लीनलीनपना

×

हिन्दी

२१-२४

२. लाललीनली कवा

×

११ के काल व १७६३ २४-२९

४ नवरत्न कवित्त	वनारसीदास	"	६७-६६
५. ज्ञानपञ्चीसी	"	"	६८-१००
६ पद	×	"	प्रपूर्णा १००-१०१

५६३३. गुटका स० १०३ । पत्र स० १०-५५ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

प्रपूर्णा । वे० स० ३६५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका स० १०४ । पत्र स० ७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वे० स० ३६७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

ज भण्डार [दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

५६३५ गुटका स० १ । पत्र स० १४० । आ० ७१×५३ इ० । लिपि काल × ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ देहली के बादशाहों की नामावलि एवं परिचय	×	हिन्दी	१-१६
		ले० काल स० १८५२ जेठ बुदी ५ ।	
२ कवित्तसंग्रह	×	"	२०-४४
३ शनिश्चर की कथा	×	" पद्य	४५-६७
४ कवित्त एवं दोहा संग्रह	×	"	६८-६४
५ द्वादशमाला	शवि राजसुन्दर	"	६५-६६

ले० काल १८५६ पौष बुदी ५ ।

विशेष—रणायम्भीर में लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६ गुटका स० २ । पत्र स० १०६ । आ० ५×४ इ० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६३७ गुटका स० ३ । पत्र स० ३-१५३ । आ० ६×५ इ० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ गीत-धर्मकीर्ति	×	हिन्दी	३-४
(जिएवर ध्याइयढावे, मनि बित्या फलु पाया)			

२ गीत—(जिएवर हो स्वामी घरण मनाय, सरसति स्वामिणि बोनऊ हो)

५६४२ गुटका सं० ८ । पत्र सं० १६६-४३० । मा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण ।

विशेष—धुलाभीदास शृत पाटवपुराण भाषा है ।

५६४३ गुटका सं० ६ । पत्र सं० १०१ । मा० ७½×६½ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६४४ गुटका सं० १० । पत्र सं० ११८ । मा० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह ।
ले० काल सं० १८६० माह बुदी ५ । पूर्ण ।

१ मुन्दरविलाल मुन्दरदास हिन्दी १ ने ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज गणेशवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२ बारहसखी दत्तलाल "

विशेष—६ पद्य हैं ।

५६४५ गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४२ । मा० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल ७०
१६०८ चैत बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—वृ दसतसई है जिसमें ७०१ दोहे हैं । दाकत भीमनलाल कालव हाला का ।

५६४६ गुटका सं० १२ । पत्र सं० २० । मा० ८×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६०
भाषोज बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—पंचमेरु तथा रत्नत्रय एवं पार्वतीनाथस्तुति है ।

५६४७ गुटका सं० १३ । पत्र सं० १५५ । मा० ८×६½ इ० । भाषा-तत्त्व हिन्दी । ले० काल सं०
१७६० ज्येष्ठ सुदी १ । अपूर्ण ।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमंदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, भठारा नाते का चौढाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ
स्तुति [पद्मप्रभदेव कृत] पंचपरमेष्टी गुणमाल, शान्तिनाथस्तोत्र आदित्यधार कथा [भाउशृत] नवकार रामो, जोगी
रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति आदि ।

बीच के १०० से १३२ पत्र नहीं हैं । पीछे काटे गये मालूम होते हैं ।

श्री भगद्वार [शास्त्र भगद्वार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाठ्या जयपुर]

२६४८. गुप्तका सं १। पत्र सं २। मा २५×४६। भाषा-हिन्दी। विषय-संस्कृत। ते राज
नं १६२८। पूर्ण। के सं २०।

विषय—आलोचनात्मक सांख्यिकपाठ ब्रह्मदाता (दीनदत्त)। कर्मकृतविधान (भगवद्गीता),
महाभारत नीतिशास्त्र का संस्कृत भाषा पाठों का संग्रह है।

२६४९. गुप्तका सं २। पत्र सं २२। मा २५×४६। भाषा-हिन्दी। ते राज। के सं २१।

विषय—गीता के कवितो का संग्रह है।

२६५०. गुप्तका सं ३। पत्र सं ९। मा २५×४६। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ते राज। के सं २२।

विषय—आत्मज्ञान पाठों का संग्रह है।

२६५१. गुप्तका सं ४। पत्र सं ११। मा २५×४६। भाषा-हिन्दी। ते राज। के सं २३।

विषय—मुक्त्य विधान पाठों का संग्रह है।

१. विषय-आत्मज्ञान	भगवद्गीता	हिन्दी	१-२१
२. भगवद्गीता	विषय-आत्मज्ञान	"	१६-२१
३. पत्र- आत्मज्ञान	आत्मज्ञान	"	२१
४. विषय	×	"	२१-२४

विषय—अपराध के भाषा में स्वयंकार्य विषय की।

५. गुप्तका	हर्षनीति	"	२४-२५
६. विषय-आत्मज्ञान	भगवद्गीता	"	२५-२६
७. विषय-आत्मज्ञान	अपराध	"	२६-२७
८. विषय-आत्मज्ञान	भगवद्गीता	"	२७-२८
९. विषय-आत्मज्ञान	"	"	२८-२९
१०. विषय-आत्मज्ञान	"	"	२९-३०

११. विनती एव पदमग्रह

×

हिन्दी

६१-१०१

५६५२. गुटका स० ५। पय स० ६-२६। मा० ४×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।
अपूर्ण। वे० स० ३२।

विशेष—नेमिराजुलपचीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भोजई का भगडा आदि पाठो का संग्रह है।

५६५३ गुटका स० ६। पय स० १६। मा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० स० ४१।

विशेष—निम्न पाठ हैं—पद, चोरासी न्यात की जयमाल, चोरानी जाति वर्णन।

५६५४ गुटका स० ७। पय स० ७। मा० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६४३
वैशाख सुदी १। अपूर्ण। वे० स० ४२।

विशेष—विषाणहारस्तोत्र भाषा एव निर्वाणनाण्ड भाषा है।

५६५५ गुटका स० ८। पय स० १८४। मा० ७×४ इ०। भाषा-हिन्दी नस्कृत। विषय-स्तोत्र।
ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४३।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१-३५
२ छहडाला (अक्षरवाक्त्री)	"	"	३५-३६
३ धर्मपञ्चीसी	"	"	३६-४२
४ तत्त्वसारभाषा	"	"	४२-४६
५ सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	संस्कृत	४६-१७५
६ जिनसहस्रनामस्तवन	जिनमेनाचार्य	"	१-१२

ले० काल स० १७६८ फागुन सुदी १०

५६५६ गुटका स० ९। पय स० १३। मा० ६ इ० ४ इ०। भाषा-प्राकृत हिन्दी। ले० काल स०
१६१८। पूर्ण। वे० स० ४४।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

५६५७ गुटका स० १०। पय स० १०५। मा० ८×७ इ०। ले० काल ×।

१ परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१६
२ तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२०-२४

१ बाह्यभारती	×	संस्कृत	१४-२०
४ समाधिराज	×	पुरानी हिन्दी	२०-२१

विशेष—४ बाबुराम ने अपने पढ़ने के लिए लिखा था ।

२. हावपापुदेवा	×	पुरानी हिन्दी	११-१३
९ मोदीराम्नी	दीपीप्रदेव	घनम न	१२-१३
७. बावरात्तार दीदा	रावसिंह	"	१३-१४
८. पदपुत्र	मुन्मुन्नाचर्म	मादुर	४ १ ४
१. बटनेस्वा नार्मन	×	संस्कृत	१ ४-१ २

१६७८. गुरुका सं ११ । पत्र सं १२ । (तुम हुये घामनाहार) का ७२×२६ । बाया-हिन्दी के नाल × । पूर्ण । के सं ४ ।

विशेष—पूरा एवं स्तोत्र सज्ज है ।

१६८६. गुरुका सं १२ । पत्र सं २ । का ६×२६ । बाया-हिन्दी । के नाल × । पूर्ण । के सं १ ।

विशेष—विश्व पुत्रा पाठ सज्ज है ।

१६९०. गुरुका सं १३ । पत्र सं ४ । का ६×६६ । बाया-हिन्दी । के नाल × । पूर्ण । के सं १ १ ।

१. कन्धवा	सम्बन्ध	हिन्दी	१-२१
-----------	---------	--------	------

विशेष—२० पत्र के २६२ पत्र तक बाबाजी की राया कन्ध की गया है ।

१. फुटकर नवित	धनराज	"	१२-४
---------------	-------	---	------

विशेष—कन्धन मल्लिभमिदि गया है ।

१६९१. गुरुका सं १४ । पत्र सं ३९२ । का ७×६६ । बाया-धनराज हिन्दी । के नाल सं १६२१ । पूर्ण । के सं १ २ ।

१. बीरसी बापि मेल	×	हिन्दी	१-१६
२. मेधिमाल कन्ध	पुष्करल	"	२०-२२

विशेष—मल्लिभ पाठ —

समुद्र विभव तम मुण्ड निवृत्त सेन करह बाबु गुरु नर कृप ।

पुष्करल मुनिवर कण्ठ बीरस पुष्करल मेमि निवृत्त ॥ १४ ॥

गुरु १४ पत्र है ।

॥ इति श्री मेधिमाल कन्ध समाप्त ॥

३ प्रद्युम्नरास	ग्र० रायमल्ल	हिन्दी	२६-५०
४ सुदर्शनरास	"	"	५१-८०
५ श्रीपालरास	"	"	११६
ले० बाल स० १६५३ जेठ वृदी २			
६ क्षीलरास	"	"	१३३
७ मेघकुमारगीत	पूनों	"	१३५
८ पद—चेतन हो परम निधान	जिनदास	"	२३६
९ " चेतन चिर भूलिउ भमिउ देखउ			
चित न विचारि ।	रूपचन्द	"	२३८
१० " चेतन तारक हो चतुर सयाने वै निर्मल			
दिष्टि अछत तुम भरम भुलाने ।	"	"	"
११ " वादि घनादि गवायो जीव विधियस			
बहु दुख पायो चेतन ।	"	"	
१२ "	दास	"	२४०
१३. " चेतन तेरो दानो वानो चेतन तेरी जाति । रूपचन्द		"	
१४ " जीव भिय्यात उदै चिर भ्रम आयो ।			
वा रस्तत्रय परम घरम न आयो ॥	"	"	
१५ " सुनि सुनि जियरा रे, तू त्रिभुवन का राउ रे दरिगह		"	
१६. " हा हा भूता मेरा पद मना जिनवर			
घरम न वेये ।	"	"	
१७ " जै जै जिन देवन के देवा, सुर नर			
सकल करे तुम सेवा ।	रूपचन्द	"	२४७
१८ अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राकृत	२५१
१९. अक्षरगुणमाला	मनराम	हिन्दी	ले० काल १७३५ २५५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	"	ले० काल १७३५ २५७
२१. जफडी	दयालदास	"	२३२

२२ पद—बामु बीजे र मय कुल बीजली

न पाले ।

हर्षनीति

॥

२११

२३ रविशत मया

बामुनीति

॥

२ कल १६५७

११६

(बाट सप्त सोमह के एक मर्त रने कु कवा विमल)

२४ पद बी बनीया का मोरा मछी भी मिल

बीन न पाले र ।

विद्युत्पुनर

॥

१४१

२५ बीनकलीची

मकुपय

॥

१४५

२६ टंकणा बीन

कुपय

॥

१६९

२७ जमर बीन

मगति

॥

१६ पद है

११९

(बावी कुली मति मली कुन जमरा र)

३६६२ गुटका सं १३। पद स २७३। या ४०४२६। के कुल सं १७२७। कुली।

के सं १३।

१ मटक सपसा

मगरीबीन

हिन्दी

१६१

२ कल स १६६३। के कुल सं १७६१

२ वैद्यकुमार मोट

पुनी

॥

१६१-१६६

३ टेरकुकिना

मगरीबीन

॥

१५

४ विवेकमवडी

मिगबात

॥

२९

५ कुठामरमला

मगबात

॥

६ कुमीरवरी बी मगबात

मिगबात

॥

७ मगनी

मगरीबीन

॥

२४१

मगर ल्वागना का मगबात

×

॥

१२४

८ मगमति बी मग

हर्षनीति

॥

२१६

३६६३ गुटका सं १६। पद स २१२। या ४०६६। मग—मिगबात हिन्दी। के कुल ×।

के सं १६।

मिग—मगबात मगरीबीन है।

३६६४ गुटका सं १७। पद सं १४३। या ४०७७। मग—हिन्दी। के कुल ×। कुली।

के सं १७।

१ भविष्यदत्त चौपई ग्र० रायमल्ल हिन्दी ११६

२ चौबोस तीर्यङ्कर पञ्चिख × ” १४२

५६६५ गुटका स० १७ । पत्र स० ८७ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल

× । पूर्ण । वे० स० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५६६६ गुटका स० १८ । पत्र स० ९८ । आ० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८७४ ।

पूर्ण । वे० स० १११ ।

१ लगनचन्द्रिका भाषा स्योजीराम सौगानी हिन्दी १-४३

प्रारम्भ—आदि मंत्र कू सुमरिइ, जगतारण जगदीश ।

जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ॥ १ ॥

दूजा पूजू सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करू बरणाय ॥ २ ॥

गुरन मोहि आग्या दर्ई, मसतक धरि के बाह ।

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा करू बरणाय ॥ ३ ॥

मेरे श्री गुरुदेव का, आवावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पढित बुध के वास ॥ ४ ॥

लालचद पढित तणे, नाती चेला नेह ।

फलेचद के सिप तिनै, मौकू हुकम करेह ॥ ५ ॥

कवि सोगाणी गोत्र है, जैन मती पहचानि ।

कवरपाल को नद ते, स्योजीराम बखाणि ॥ ६ ॥

ठारासै के साल परि, वरप सात चालोस ।

माघ सुकल की पचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

लगन चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा कही गु सार ।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

अन्तिम—

२ वृन्दसतसई

वृन्दकवि

हिन्दी ५० ले० काल वैशाख सुदी १० १८७४

विशेष—७०६ पद्य हैं ।

१ राजनीति कवित

हीवात

०

×

१२१ का १।

४६६७ गुटका सं १६। पत्र सं १। या ४६६७। भाषा-हिन्दी। विषय-कवि। के नाम ×।

पूर्व। के सं ११२।

विषय—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है। कुटका बहुत सिका गया है।

४६६८ गुटका सं २। पत्र सं २१। या ४६६८। भाषा-हिन्दी। संस्कृत। विषय-कवि।

के नाम सं १७७३। पूर्व। के सं ११४।

विषय—साहित्य की योग्यता की परीक्षा के लिए, युक्तिवाद की आवश्यकता का ज्ञान, अक्षरों के प्रयोग।

४६६९ गुटका सं ३१। पत्र सं २७६। या ४६६९। भाषा-हिन्दी। विषय-कवि। के नाम ×। पूर्व। के सं ११५। अक्षरों के लिए, युक्तिवाद के लिए, अक्षरों के लिए।

४६७० गुटका सं ३२। पत्र सं २९२३। या ४६७०। भाषा-हिन्दी। विषय-कवि। के नाम ×। पूर्व। के सं ११६।

४६७१ गुटका सं ३३। पत्र सं १। या ४६७१। भाषा-हिन्दी। विषय-कवि। के नाम ×। पूर्व। के सं ११७।

विषय—कविता संग्रह है।

४६७२ गुटका सं ३४। पत्र सं २१। या ४६७२। भाषा-हिन्दी। संस्कृत। विषय-कवि। के नाम ×। पूर्व। के सं ११८।

विषय—विभिन्न कवियों (साहित्य) के पदों का संग्रह है।

४६७३ गुटका सं ३५। पत्र सं २७। या ४६७३। भाषा-हिन्दी। संस्कृत। विषय-कवि। के नाम ×। पूर्व। के सं ११९।

४६७४ गुटका सं ३६। पत्र सं ३३। या ४६७४। भाषा-हिन्दी। विषय-कवि। के नाम ×। पूर्व। के सं १२०।

४६७५ गुटका सं ३७। पत्र सं ११। या ४६७५। भाषा-हिन्दी। के नाम ×। पूर्व। के सं १२१।

विषय—अक्षरों के लिए, अक्षरों की जरूरत का ज्ञान, अक्षरों के लिए।

४६७६ गुटका सं ३८। पत्र सं १२३। या ४६७६। भाषा-हिन्दी। के नाम सं १२२। पूर्व। के सं १२३।

विशेष—समयसार नाटक, भक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें हैं।

५६७७ गुटका स० २६। पत्र स० ११६। मा० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी सम्मिश्र। विषय-संग्रह।
ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५४।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का संग्रह है।

५६७८ गुटका स० ३०। पत्र स० २०। मा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र।
ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १५५।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं निर्वाणगण्ड गाथा हैं।

५६७९ गुटका स० ३१। पत्र स० ४०। मा० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले०
काल ×। पूर्ण। वे० स० १६२।

विशेष—रविप्रत कथा है।

५६८० गुटका स० ३२। पत्र स० ४४। मा० ४३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले०
काल ×। पूर्ण। वे० स० १७७६।

विशेष—गीत २ में से पत्र खाली हैं १ बुलासीदास खत्री की वरात जो स० १६८८ मित्त मगसिर मुदी ३
की भांगरे से महमदाबाद गई, का विवरण दिया हुआ है। इसके अतिरिक्त पद, गणेशपूजा, लहरियाजी की पूजा आदि हैं।

५६८१ गुटका स० ३३। पत्र स० ३२। मा० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० स० १६३।

१ राजलपच्चीसी

विनीदीलाल लालचंद

हिन्दी

२ नेमिनाथ का वारहमासा

”

”

३ राजलमंगल

×

×

प्रारम्भ—

तुम नीकम भवन सुढाढे, जूव कमरी भई वरागी।

प्रभुजी हमने भी ले चालो साथ, तुम बिन नहीं रहे दिन रात।

अन्तिम—

भाषा दोनु ही मुकती मिलाना, तहा फेर न होय भावागवना।

राजल अटल सुपढी नीहाइ, तिहा राणी नहीं छै कोई,

सोये राजल मंगल गायत, मन बद्धि फल पावत ॥१८॥

इति श्री राजल मंगल संपूर्ण।

४६८२ गुटका सं ३४। पत्र स १९। मा ९४४ ह। बाया-हिन्दी संस्कृत। ॥ कल X।
पूर्व। ॥ सं २१६।

विशेष—गुवा, स्टीम एवं टीक्य की अनुर्वची बना है।

४६८३ गुटका सं ३६। पत्र स ४। मा ९४४ ह। बाया-हिन्दी संस्कृत। ॥ कल X।
पूर्व। ॥ सं २१४।

विशेष—सामान्य गुवा पाठ है।

४६८४ गुटका सं ३६। पत्र स २४। मा ९४४ ह। बाया-हिन्दी संस्कृत। ॥ कल X।
२००२ फलसु सुदी ६। पुणः ॥ सं २१३।

विशेष—मध्यम स्टीम एवं कल्याण धीर संस्कृत धीर बाया है।

४६८५ गुटका सं ३७। पत्र स २१३। मा ९४७ ह। बाया हिन्दी संस्कृत। ॥ कल X।
पूर्व।

विशेष—गुवा स्टीम बेल लटक तथा पर्वों का संस्कृत है।

४६८६ गुटका सं ३८। पत्र स २६। मा ९४४ ह। बाया-हिन्दी। विश्व-गुवा स्टीम।
॥ कल X। पूर्व। ॥ सं २४२।

विशेष—सामान्य गुवा पाठ संस्कृत है।

४६८७ गुटका सं ३९। पत्र स २। मा ९४४ ह। ॥ कल X। पूर्व। ॥ सं २४१।

१. पालकपट्टिमण	X	माकल	१ १४
२. बभ्रुवृक्षस्तोत्र	माकलवृक्ष	=	१२ १६
३. बभ्रुवृक्षस्तोत्र	X	=	१०-१६
४. बभ्रुवृक्षस्तोत्र	X	=	१६ १९

अथ स्टीम एवं धीरवृक्षों का धीर पाठ है।

४६८८ गुटका सं ४०। पत्र स २३। मा ९४४ ह। बाया-हिन्दी। ॥ कल X। पूर्व।
॥ सं २४४।

विशेष—सामान्य पाठ है।

४६८९ गुटका सं ४१। पत्र स २। मा ९४४ ह। बाया-हिन्दी। ॥ कल X। पूर्व।
॥ सं २४५।

विशेष—हिन्दी पाठ संस्कृत है।

५६६० गुटका सं० ४२। पत्र सं० २०। मा० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष-सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एवं जिनपञ्चीसी हैं।

५६६१ गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। मा० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४८।

५६६२ गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। मा० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष-ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३ गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। मा० ८×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-नुभाषित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५६६४ गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। मा० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं० २५१।

१ भक्तामरस्तोत्र भाषा	मखयराज	हिन्दी गद्य	१-३४
२ इष्टोपदेश भाषा	×	"	३४-५२
३. सम्बोधपचारिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३-७१
४. सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	हिन्दी	७२-९२
५ चरचा	×	"	९२-१०३
६ योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४-१११
७ द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२-१३३
८ अनित्यपचारिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४-१४७
९ जकडी	रूपचन्द	"	१४८-१५४
१० "	यरिगह	"	१५५-१६६
११ "	रूपचन्द	"	१५७-१६३
१२ पद	"	"	१६४-१६९
१३ भात्मसंबोध जयमाल आदि	×	"	१७०-१७७

५६६५ गुटका सं० ४७। पत्र सं० १६। मा० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

वे० सं० २५४।

२३६६ गुटका स ४८ । पद्य सं १ । पा ३०४ द । भाषा—हिन्दी । से वल सं १०२
पुर्त । से सं २३२ ।

विशेष—आदिपदावली (भाऊ) विरहमयी (मन्त्रावली) एवं आमुर्ध्विक गुणवत् है ।

२३६७ गुटका स ४९ । पद्य सं ४-११९ । पा ३०४ द । भाषा—संस्कृत । से वल × । पुर्त
से सं २३७ ।

विशेष—आमन्त्र्य पाठों का संज्ञक है ।

२३६८ गुटका स ५० । पद्य सं १ । पा ३०४ द । भाषा—संस्कृत । से वल × । पुर्त
से सं २३८ ।

विशेष—पद्यों एवं आमन्त्र्य पाठों का संज्ञक है ।

२३६९ गुटका सं ५१ । पद्य सं ४७ । पा ३०४ द । भाषा—संस्कृत । से वल × । पुर्त
से सं २३९ ।

विशेष—विहाता पाठ के पाठों का संज्ञक है ।

५ गुटका सं ५२ । पद्य सं ६ । पा ३०४ द । भाषा—हिन्दी । से सं १०२२ वल
पुर्त २ । पुर्त । से सं २४० ।

विशेष—अमन्त्र्य पाठक तथा अमन्त्र्यपाठ के पाठ हैं ।

६ गुटका सं ५३ । पद्य सं २२ । पा ३०४ द । भाषा—हिन्दी । से वल सं १०२३
पुर्त से सं २४१ ।

१ अमन्त्र्य पाठक	अमन्त्र्यपाठ	हिन्दी	१-२३
------------------	--------------	--------	------

विशेष—विहातापाठ के पुनः मन्त्रों के पदार्थ अन्वय से विधाता ।

१ अन्वयार्थ	अन्वयार्थ (वलक)	हिन्दी	१-२४
२ पद्य	अन्वयार्थ	॥	
४ अन्वयार्थ	अन्वयार्थ	॥	
५ अन्वयार्थ	×	॥	

६ २ गुटका सं ५४ । पद्य सं ३ । पा ३०४ द । भाषा—हिन्दी । से वल सं १०२४

वल पुर्त ११ । पुर्त । से सं २४२ ।

१ अन्वयार्थ	हिन्दी	१-२५
-------------	--------	------

विशेष—अन्वयार्थ अन्वय से है ।

२. पंचाध्यायी

"

२८-७८

विशेष—मोटपुतली वाग्ताय भीयतलान पणीरुपद ते पठनार्थ लिखी गई थी ।

६००३. गुटका सं० ५५ । पय सं० ७-१०६ । प्रा० ११५३३ ३० । भाषा-हिंदी संप्रदाय । ले० वाल

× । पूर्ण । वे० सं० २७२ ।

१ अनन्त के दृश्य	भ० परमचंद	हिंदी	१६-२०
२ पद	विजोदीलान	"	
३ पद	जगताराम	"	

(नेमि रगोनी छत्रीनी हट्टीनी चटर्वाले मुगति यधु म० निलो)

४ सरस्वती चर्चा का मुसगा	×	"	
--------------------------	---	---	--

५ पद— प्रात उठी ले गीतम नाम जिम मन

वाचित सीके नाम ।	मुमुदाय	हिंदी	
------------------	---------	-------	--

५ जीव वेनजी	देवीरात	"	
-------------	---------	---	--

(सतपुर परत चुनो रे नार्द या सत्तार मगारा)

" २१ पद्य १ ।

७ नारीरागो	×	"	३१ पद्य २ ।
------------	---	---	-------------

८. चैतायनी गीत	नामू	"	
----------------	------	---	--

९ जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिगचद्र	मस्युत	
-------------------------	------------	--------	--

१० महावीरस्तोत्र	१० प्रमरर्वाति	"	
------------------	----------------	---	--

११. नेमिनस्य स्तोत्र	५० दालि	"	
----------------------	---------	---	--

१२ पद्मावतीस्तोत्र	×	"	
--------------------	---	---	--

१३ पद्मसुत चरचा	×	"	
-----------------	---	---	--

१४. धाराधनात्तार	जिनदास	हिंदी	५२ पद्य हैं ।
------------------	--------	-------	---------------

१५. विनती	"	"	२० पद्य हैं ।
-----------	---	---	---------------

१६. राजुल की सज्जाय	"	"	३७ पद्य हैं ।
---------------------	---	---	---------------

१७ भूलना	गंगादास	"	१२ पद्य हैं ।
----------	---------	---	---------------

१८. ज्ञानपेठी	मनोहरदास	"	
---------------	----------	---	--

१९. श्यायकाश्रिया	×	"	
-------------------	---	---	--

विशेष—विभिन्न कविता एवं बीतपत्र लीक आदि हैं ।

६ ८४ गुटका सं ३६ । पत्र सं १२ । भा ४२×४४ । भाषा—हिन्दी बसुव । ने बल X
पूरा । ने स २३१ ।

विशेष—आत्मक पाटी का संघर्ष है ।

६ २ गुटका सं ३७ । पत्र सं ३-४८ । भा ६२×४४ । भाषा—हिन्दी संघर्ष । ने बल
सं १७४३ बीत कुटी १४ । अनुसंधान । ने सं २७४ ।

विशेष—मत्तारमोक्ष स्तुति, स्वामिजीवर भाषा, धर्मिण, लीक बीबीसी के नाम एवं देशाद्वय मदी है ।

६ ६ गुटका सं ३८ । पत्र सं ३९ । भा ९×४४ । भाषा—हिन्दी । ने बल X । पूर्ण ।
ने स २१ ।

१ लीकबीबीसी

X

हिन्दी

२ लीकबीबीसी बीबी

स्वाम

३

२ बल १७४३ बीत कुटी १४

ने बल सं १७४३ बर्तक कुटी १४

अन्तिम—आम बीबीसी का वल, जीति करी बलि स्वाम ।

बीकपत्र गुट डोलिया, बीकपत्र वल आम ॥२१॥

उत्तरी उमचाम ने पूरा वल गुटका ।

बीक उमचामी पत्रों विभिन्न वल गुटका ॥२१॥

एक बार के बरत, वपरा बर्तक वल ।

बरत बीक वलि के विभिन्न पाठि बने वरा ॥२१॥

॥ इति बी बीक बीबीसी बी बी बीबी ॥

६ ७ गुटका सं ३९ । पत्र सं २१ । भा ९×४४ । भाषा—संस्कृत बसुव । ने बल X ।
पूर्ण । ने स २३१ ।

विशेष—लीकबीबीसी के नाम मत्तारमोक्ष लीक बीकपत्र वलि का भाषा बर्तक वल बी बीक
वलि है ।

६ ८ गुटका सं ४० । पत्र सं ३४ । भा ९×४४ । भाषा—हिन्दी । ने बल सं १८१
पूर्ण । ने स २३१ ।

१ उमचामी

बीकपत्र

हिन्दी २ बल १७४३ बीक कुटी १४

गुटका-समग्र

२ श्रावको को उत्पत्ति तथा ८४ गीत	×	हिन्दी
३ सामुद्रिक पाठ	×	"

अन्तिम—सगुन छानन गुप्त सुभ सब जनक सुप्त देत ।

भापा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनो के हेत ॥

६००६ गुटका स० ६१ । पत्र स० ११-५८ । भा० ८३×६ इ० । भापा-हिन्दी संस्कृत । ले०

काल स० १६१६ । मपूर्णा । वे० स० २६६ ।

विशेष—विरहमान तोयद्वार जकाठी (हिन्दी) दयनक्षरण, रत्नप्रय पूजा (संस्कृत) पंचमेरु पूजा (भूधरदास)

नन्दीश्वर पूजा जयमाल (संस्कृत) अनन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१६१६), पंचकुमार पूजा आदि हैं ।

६०१० गुटका स० ६२ । पत्र स० १६ । भा० ८३×६ इ० । ले० काल × । पूर्णा । वे० स० २६७ ।

विशेष—हिन्दी पदा का संग्रह है ।

६०११ गुटका स० ६३ । पत्र स० १६ । भा० ६३×४ इ० । भापा-संस्कृत हिन्दी । विषय-मग्नह ।

ले० काल × । पूर्णा । वे० स० ३०८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह एवं ज्ञानस्वरोदय है ।

६०१२ गुटका स० ६४ । पत्र स० ३६ । भा० ६×७ इ० । भापा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वे० स० ३२५ ।

विशेष—(१) कवित्त पद्याकर तथा अन्य कवियों के (२) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) आमेर के राजाओं का वंशावली, (४) मनाहरपुरा की पीढिया का वर्णन, (५) खंडेला की वंशावली, (६) खंडेलवाली के गोत्र, (७) कारखानों के नाम, (८) आमेर राजाओं का राज्यकाल का विवरण, (९) दिल्ली के बादशाहों पर कवित्त आदि हैं ।

६०१३ गुटका स० ६५ । पत्र स० ४२ । भा० ६×४ इ० । भापा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्णा । वे० स० ३२६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०१४ गुटका स० ६६ । पत्र स० १३-३२ । भा० ७×४ इ० । भापा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल

× । मपूर्णा । वे० स० ३२७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०१३ गुटका स ६०। पत्र स २९। या ६५४ द । भाग-हिन्दी। विषय-संग्रह। मे वल X। पूर्ण। मे स १२५।

विषय—विभिन्न एक भाषाओं के गुटकों का संग्रह है।

६१६ गुटका स ६८। पत्र स १९। या ६२५४२ । भाग-हिन्दी। विषय-संग्रह। मे वल X। पूर्ण। मे स १२६।

विषय—एक एक भाषाओं का संग्रह है।

६१७ गुटका स ६९। पत्र स २०। या ६२५४३ । भाग-हिन्दी। मे वल X। पूर्ण। मे स १२७।

विषय—विभिन्न भाषाओं के पत्रों का संग्रह है।

६१८ गुटका स ७०। पत्र स २१। या ६२५४४ । भाग-हिन्दी। मे वल X। पूर्ण। मे स १२८।

विषय—एक एक भाषाओं का संग्रह है।

६०१८ गुटका स ७१। पत्र स २२। या ७६५४५४ । भाग-हिन्दी। विषय-संग्रह। मे वल X। पूर्ण। मे स १२९।

६१९ गुटका स ७२। पत्र स २३। या ७६५४५५ । भाग-हिन्दी। मे वल X। पूर्ण। मे स १३०।

विषय—विभिन्न भाषाओं के पत्रों का संग्रह है।

६२० गुटका स ७३। पत्र स २४। या ७६५४५६ । भाग-हिन्दी। मे वल X। पूर्ण। मे स १३१।

विषय—विभिन्न भाषाओं के पत्रों का संग्रह है।

६२१ गुटका स ७४। पत्र स २५। या ७६५४५७ । भाग-हिन्दी। मे वल X। पूर्ण। मे स १३२।

विषय—विभिन्न भाषाओं के पत्रों का संग्रह है।

६२२ गुटका स ७५। पत्र स २६। या ७६५४५८ । भाग-हिन्दी। मे वल X। पूर्ण। मे स १३३।

विषय—विभिन्न भाषाओं के पत्रों का संग्रह है।

६०२४. गुटका स० ७६ । पत्र सं० २५ । आ० ८३×६ इ० । भाषा—संस्कृत । । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० स० ३४२ ।

विशेष—प्रायुर्वेदिक एव यूनानी नुसखों का संग्रह है ।

६०२५ गुटका स० ७७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले०
काल × । वे० स० ३४१ ।

विशेष—जोगीरासा, पद एव विनितियों का संग्रह है ।

६०२६. गुटका स० ७८ । पत्र सं० १६० । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० स० ३५१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है । पृष्ठ ६४-१४६ तक वशीधर कृत द्रव्यसंग्रह की बालावबोध टीका
है । टीका हिन्दी गद्य में है ।

६०२७. गुटका स० ७९ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद-संग्रह । ले०
काल × । पूर्ण । वे० स० ३५२ ।

ज भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८ गुटका स० १ । पत्र सं० २५८ । आ० ६×५ इ० । । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र संग्रह है । लक्ष्मीसेन का चित्तमणिस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासात
चतुर्दशी पूजा है ।

६०२९ गुटका स० २ । पत्र सं० ५४ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल स०
१८४३ । पूर्ण ।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एव सामान्य पाठ संग्रह है ।

६०३०. गुटका स० ३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

जिनयज्ञ विधान, अभिषेक पाठ, गणधर बलय पूजा, ऋषि मण्डल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं ।

६०३१. गुटका स० ४ । पत्र सं० १२४ । आ० ८×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल स०
१६२६ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—

२. मृगया शरीरुद हस्तैः	X	"
३. वेत्तव्य	X	"
४. मन्त्राणां	या पुनःपुनः	मन्त्र
५. मन्त्राणां	या	मन्त्र
६. वेत्तव्य	मन्त्र	"
७. मन्त्राणां	मन्त्र	"
८. मन्त्राणां	X	"
९. मन्त्राणां	X	"
१०. मन्त्राणां	मन्त्र	"

३. ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां ।

३. ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां । ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां ।

मन्त्राणां—मन्त्राणां मन्त्राणां ।

३. ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां ।

३. ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां । ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां ।

१. मन्त्राणां मन्त्राणां	मन्त्राणां	मन्त्राणां	"
२. मन्त्राणां मन्त्राणां	मन्त्राणां	"	"
३. मन्त्राणां	X	"	"

३. ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां । ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां ।

मन्त्राणां—मन्त्राणां मन्त्राणां (मन्त्राणां) मन्त्राणां मन्त्राणां (मन्त्राणां) ।

३. ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां । ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां ।

३. ११११ में मन्त्राणां में मन्त्राणां मन्त्राणां ।

१. मन्त्राणां मन्त्राणां मन्त्राणां	मन्त्राणां	मन्त्राणां
२. मन्त्राणां मन्त्राणां	मन्त्राणां	मन्त्राणां

मन्त्राणां—मन्त्राणां मन्त्राणां मन्त्राणां ।

६०३६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह, लोक का वर्णन, अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारो गतियो की आयु आदि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पञ्चमङ्गल, आलोचना पाठ आदि हैं ।

६०३७ गुटका सं० १० । पत्र सं० ३८ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, दर्शन, कल्याणमंदिर स्तोत्र एवं सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६०३८ गुटका सं० ११ । पत्र सं० १६६ । आ० ४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१ भक्तामर स्तोत्र टब्वाटीका	×	संस्कृत हिन्दी ले० काल सं० १७२७ चैतसुदी ५
२ पद— हर्षकीर्ति	×	"
(जिए जिए जप जीवडा तीन भवन में सारोजी)		
३ पंचगुण नी जयमाल	ग्र० रायमल्ल	" ले० काल सं० १७२६
४. बवित	×	"
५ हितोपदेश टीका	×	"
६. पद—तै नर भव पाय कहा कियो	रूपचन्द	हिन्दी
७ जकड़ी	×	"
८ पद—मोहिनी बहकायो सब जग मोहनी	मनोहर	"

६०३९ गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३८ । आ० १०×८ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । निम्न पाठ है—

क्षेत्रपाल पूजा (संस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (संस्कृत हिन्दी) मिष्टपूजा (सं०) पोटसारारण, दशनक्षण रत्नप्रयपूजा, मनिगुण्टपूजा और जयमाल (प्राकृत) नंदोदयरपत्तिपूजा अनन्तचतुर्दशीपूजा, प्रदायनिधिपूजा तथा पार्वनास्तोत्र, आयुर्वेद ग्रंथ (संस्कृत ले० काल सं० १६८१) तथा कई तरह की रेगाभा के चित्र भी हैं, रागिफन आदि भी दिये हुये हैं ।

६०४० गुटका सं० १३ । पत्र सं० २८३ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके में मुद्रा निम्न पाठ है—

१. जिनमुक्ति	मुक्तिकीर्ति	हिन्दी
२ गुणम्पारागीत	८० श्री गङ्गा	"

धर्मिक-व्यक्ति की महान् ब्रह्म एवं वाणी विविधतः मुख करत

१. सम्पन्न वसनात् × व्यसन्न च

४ परमार्थकीर्ति वरपत्न्य द्विती

२. पर- पद्मो मेरे बीच तु कत नरनाथी तु

वैद्यन द्यु बह परम है यमि नहा सुनयी । नगरन ॥

६ मेघदूतारणीत पुत्री ॥

७ नमोत्तमता व्यसनीर्ति ॥

वसना सिद्धि पद्या कुल पाहसी,

८. लक्ष्मीपति भुवने द्विती

लक्ष्मी है वो लंछार व्यहार वो विर में वा उज्ज्वी की लक्ष्मी है

जो उनी लो पवार लल नम लोचन विर लक्ष्मी ।

९. वर- नीलम् द्विती

वा विर लक्ष्मी वर लोचि लोचि न लल लक्ष्मी है पति ॥

वरा वरा लो लक्ष्मी ऐसी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी ॥

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी ॥

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी ॥

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी ॥

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी ॥१॥

१. पर- लक्ष्मीर्ति द्विती

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी ॥

११. लक्ष्मीर्ति लक्ष्मी

लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी ॥

१२. वर- लक्ष्मीर्ति लक्ष्मी

१३. लक्ष्मीर्ति लक्ष्मी

१४. लक्ष्मीर्ति लक्ष्मी

१५. लक्ष्मीर्ति लक्ष्मी

१६ द्वादशानुशेखा × ”
 १७ विनती रूपचन्द ”
 जै जै जिन देवनि के देवा, सुर नर सकल करै तुम सेवा ।

१८ पचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	२० काल स० १५८५
१९. पञ्चगतिवेलि	हर्षकीर्ति	”	” ” १८६३
२० परमार्थ हिठोलना	रूपचन्द	”	
२१ पथीगीत	छीहल	”	
२२ मुक्तिपीहरगीत	×	”	
२३ पद-ग्रन्थ मोहि और कछु न सुहाय	रूपचन्द	”	
२४ पदसंग्रह	बनारसीदास	”	

६०४१ गुटका स० १४ । पत्र स० १०६-२३७ । आ० १०×७ इ० । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं उसकी विधि दी हुई है ।

६०४२ गुटका स० १५ । पत्र स० ४३ । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४३ गुटका स० १५ । पत्र स० ५२ । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सामान्य पाठ संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४४ गुटका स० १७ । पत्र स० १६६ । आ० १३×३ इ० । ले० काल स० १६१३ ज्येष्ठ बुदो । पूर्ण ।

१. छियालीस ठाणा ग्र० रायमल्ल संस्कृत १९

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करों के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पञ्चकल्याणकों की तिथि आदि विवरण है ।

२ चौबीस ठाणा चर्चा × ” २८

३ जीवसमास × प्राकृत ले० काल स० १६१३ ज्येष्ठ ५९

विशेष—द्र० रायमल्ल ने देहली में प्रतिलिपि की थी ।

४ सुप्पय बोहा × हिन्दी ८०

५. परमात्म प्रकाश भाषा प्रभुदास ” ६२

६ रत्नकरण्डश्रावकाचार समतभद्र संस्कृत ६४

६०४५ गुटका स० १८ । पत्र स० १५० । आ० ७×२३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

महारा री बिरानी बीबी भीपति रंन न छाई बी ।

धाल लरोवर मयच कुमटी धारै नवन मरु मंड मारैबी ॥

१ बरवई

विहारीबाब

हिन्दी

घण्टाई

१-६३

के काल सं १७१२ माघ सुदी २ ।

विवेक—बापक के १२ पीछे गड़ी है । कुल ७१ पीछे है ।

४ बीचबनोसप

नवबभुख

"

घण्टाई १७-११५

१ १६ गुटका सं ४ । पय सं २२ । मत्ता-संस्कृत । विद्व-भीति । के काल सं १११ पीछे

गुडी ७ । घण्टा । के सं १२ ४ ।

विवेक—मत्ताक भीति का पर्याय है । भीचबनो नवबन के पठनार्थ बभुर में प्रतिनिधि की थी ।

१ २ गुटका सं २ । पय सं ४ । मत्ता-हिन्दी । के काल सं १५११ । घण्टाई । के सं

१२ ५ ।

विवेक—विभिन्न लीपों के मञ्जूर के घण्टे कथित है ।

१७२१ गुटका सं ६ । पय सं ४२ । मा १४४६ । मत्ता-हिन्दी । के काल सं १९५५ ।

के काल सं १७२ कथित सुदी १ । घण्टाई । के सं १२ ५ ।

विवेक—मुबारक हट मुबारकदार है । येकाल बीबा मत्तपुरा बली ने प्रतिनिधि की थी ।

१ २२ गुटका सं ७ । पय सं ४२ । मा १४४६ । मत्ता-हिन्दी । के काल सं १५११

बीचबन सुदी ५ । घण्टाई । के सं १२ ७ ।

१ कथित

धनर (धनबाल)

हिन्दी

घण्टाई १-१

विवेक—कुल ११ पय है पर बापक के ७ पय गड़ी है । इनका कुल कुम्हसिना का नववा है एक कथ

विश्व प्रकार है—

बीबी बंटी बीबी बाली बहारा बाप ।

बाली बहारा बाप बहारा कुल बीबी न बाली ।

बाप बहारा बहारा बहारा न बहारा कुमारी ॥

बहारा बहारा बीबी बहारा न बहारा न बहारा ।

बीबी न बहारा बीबी बहारा बहारा की बाली ।

धनर बीबी बहारा बीबी बहारा की बहारा ।

बीबी बंटी बीबी बाली बहारा बाप ॥१२ ॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा

लोहट

हिन्दी

१७-२१

ले० काल स० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित छप्पय तथा अन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं ।

अन्तिम—

अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर भ्रजान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो अनुभै भान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मितौ वैशाख बुदी ८ सवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४ कर्मपञ्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य—

करम मा तीर पच महावरत धरू जपू चौबीस जिएदा ।

भरहत ध्यान लेव चहू साह लोयण वदा ॥

प्रकृति पचासी जाणि कै करम पचीसी जान ।

सूवर भारमल स्योपुर थान ॥ कर्म अति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पञ्चीसी संपूर्ण ॥

५ पद—(बासुरी बीजिये ब्रज नारि)

सूरदास

”

२६

६ पद—हम तो ब्रज को बसिवो ही तज्यो

”

”

२७-२८

ब्रज में बसि बैरिणि तू बसुरी

७ श्याम वत्तीसी

श्याम

”

३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमें ३४ सवैये तथा १ दोहा है —

अन्तिम—

— कृष्ण ध्यान चतु अष्ट में श्रवनन सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कहू रहत न रञ्जक नाम ॥

८ पद—बिन माली जो लगावै बाग

भनराम

हिन्दी

४०

९. दोहा—कवीर भौगुन एक ही ग्रुण है

कवीर

”

”

लाख करोरि

१० फुटकर कवित

×

”

४१

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्णन

×

”

अपूर्णा

४१-४५

ट भण्डार [आमेर शास्त्र भण्डार जयपुर]

५०४१ गुटका सं १। ११ सं १०। भाषा—हिन्दी। विषय—वज्रह। मं क्रम ×। पूर्ण। १ सं १२ १।

१ मनोहरमन्त्री मनोहर विष हिन्दी १-१६

प्रारम्भ— धन मनोहर मन्त्री धन नव जीवना लक्षण ।

बाके सोननु संतुष्टो धन धन क्षति घोर ।

कुनि सुखल नव जीवना बहल वेध ईं डोर ॥

अन्तिम— लहलहईं छति रत्नपत्नी बहु सुखानु करल (?)

गिरिईं मनोहर मन्त्री, रक्षित मुक्त मन्त्रल ॥

कुनि सुखनि अविषल छति नन विषईं दुख दीप ।

बहु विपु नित नैम छु, लड़ी हील दुख मोल ॥

धन धन ईं दीप के धन दीप धनधन ।

बरी मनोहर मन्त्री नैकर नाली बाध ॥

मातुर दा हो बहनुटी बलत महोनी बोरि ।

बरी मनोहर मन्त्री, धनुर रत्न छोरि ॥

इति धन लक्षणलोकलवलिमयीमन्त्रीमन्त्रललोचनलक्षण वक्रलक्षणविहारपरिणामलक्षणमन्त्रल

मनोहर विष विरचिता मनोहरमन्त्री लक्षणा ।

कुल ७४ पद्य है। सं ७२ तक ही लिखे हैं। अन्तिम नैर वर्णन है।

१ कुटुम्बर दोहा × हिन्दी १ १६

रिचि— ७ दीहे है।

१ आमुर्तिद्विद्वन्द्वे × " १०

१ ४०. गुटका सं २। ११ सं १२। भाषा—हिन्दी। मं नाल सं १७१४। पूर्ण। १ सं १२ १।

१ नाममन्त्री मन्त्राल हिन्दी पद्य सं २११ २-१

१ अनेकार्थमन्त्री " " २२-२

स्वामी रामदास ने प्रतिमिति की थी।

३ कवित्त

×

”

४१-४

४ भोजरासो

उदयभानु

”

४३-४

प्रारम्भ—

श्री गणेशाय नम । दोहरा ।

कु जर कर कु जर करन कुजर आनंद देव ।

सिधि समपत्त सत्त सुव सुरनर कीजिय सेव ॥ १ ॥

जगत जननि जग उखरन जगत ईस अरधग ।

भीन विचित्र विराजकर हसासन सरवग ॥ २ ॥

सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरै नहि भान ।

जहा तहा सुवन सुभ जिये तहा भूपति भोज वखान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजजी को रासो उदैमानजी को कियो । लिखत स्वामी खेमदास मितो फागुण

११ सवत् १७६५ । इसमें कुल १४ पद्य हैं जिनमें भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

५ कवित्त

टोहर

हिन्दी

कवित्त हैं

४६-५

विशेष—ये महाराज टोहरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८ गुटका स० ३ । पत्र स० ११८ । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १७२६ । अपूर्ण । वे०

१५०३ ।

१ मायान्नहा का विचार

×

हिन्दी गद्य

अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

“माया काहे तै कहिये न भस्यो सबल है तातै माया कहिये । अकास काहे तै कहिये पिंड ब्रह्मांड का आकार है तातै आकास कहिये । सुनी (शून्य) काहे तै कहिये—जब है तातै सुनी कहिये । सक्ती काहे तै कहिये ससार को जीति रही है तातै सकती कहिये ।”

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हस का ग्यान न भ जगोस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशक्राचार्य जीरम्यते । मितो असाठ सुदी १० स० १७२६ का मुकाम गुहाटी उर कोस दोइ देईदान चारण की पोथीस्ये उत पोथी सा म ठोल्या साह नेवसी का वेटा कर महाराज श्री रुचनाथस्यधजी ।

२ गोरखपदावली

गोरखनाथ

हिन्दी

अपूर्ण

विशेष—करीब ६ पद्य हैं ।

महाराट्टी बीरानी बीबी बीबियाई धन न छाई बी ।

याम करोवर कलस मुमली धाने नयन यम भंड भारीबी ॥

१ कण्ठर विहारीनाम हिन्दी ग्रन्थ १-५३
 से कलस वं १७२३ माघ सुदी २ ।

विशेष—शारदा के १२ बोझे नहीं हैं । कुल ७१ बोझे हैं ।

४ दीपमयीसय नयनमुक्त ७ ग्रन्थ १७-११

६ ४३. गुप्तका सं ४ । पत्र सं १२ । भाषा—संस्कृत । विषय—गीति । से कलस वं १ ॥ १३ वीम
 सुदी ७ । पूर्वा । से वं १३ ४ ।

विशेष—भारतम गीति का वर्णन है । जीवन्मयी संकलन के पठनार्थ बनपुर में प्रतिष्ठित की गी ।

६ ४. गुप्तका सं ५ । पत्र सं ४ । भाषा—हिन्दी । से कलस वं १७२१ । ग्रन्थ । से वं
 १३ २ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के मुक्तार के झुठे कवित है ।

६ ७२१ गुप्तका सं ६ । पत्र सं ७२ । भा ६४४ ६ । भाषा हिन्दी । २ कलस वं १९७५ ।
 से कलस वं १७२३ अश्विन सुदी ६ । पूर्वा । से वं १३ ६ ।

विशेष—मुनिराज हंस मुनिराजहंस है । लेखक बीबा बाबपुरा वाली से प्रतिष्ठित की गी ।

६ ६५. गुप्तका सं ७ । पत्र सं ४३ । भा ६४७ ६ । भाषा—हिन्दी । से कलस वं १ ११
 वीरका सुदी ५ । ग्रन्थ । से वं १३ ७ ।

१ कविताय वयर (वरवरा) हिन्दी ग्रन्थ १-१

विशेष—कुल ११ पत्र हैं पर शारदा के ७ पत्र नहीं हैं । इनका अन्त मुमलिया का वरवरा है पत्र अन्त

भिन्न प्रकार है—

आंखी बाईं बैरणी वाली बहारा बाब ।

वाली बहारा बाब वही कुल बीम न मानी ।

भान गुराज बहारा बिक्रम में वरन मुमली ॥

करी बिक्रमो रीत मुमल वन गैर न मानी ।

बीम न लवई बीम वरन विपदा की मानी ।

वयर बीम वरि ठी बहू संजोत करि वरन ।

आंखी बाईं बैरणी वाली बहारा बाब ॥१ ॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा

लोहट

हिन्दी

१७-२१

ले० काल स० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं ।

अन्तिम—

अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर भ्रजान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो अनुभै मान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मितौ वैशाख बुदी ८ सवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४ कर्मपञ्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य—

करम प्रा तोर पच महावरत धरु जपू चौवीस जिगदा ।

अरहत ध्यान लैव चहू साह लोयण बदा ॥

प्रकृति पच्यासी जाणि कै करम पचीसी जान ।

सूदर भारमल स्यौपुर धान ॥ कर्म अति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पञ्चीसी संपूर्ण ॥

५ पद—(वासुरी दीजिये ब्रज नारि)

सूरदास

”

२६

६ पद—हम तो ब्रज को बसिबो हो तज्यो

”

”

२७-२८

ब्रज में बसि बैरिणि तू बंसुरी

७ श्याम बत्तीसी

श्याम

”

३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमें ३४ सवैये तथा १ दोहा है —

अन्तिम—

- कृष्ण ध्यान चतु अष्ट में श्रवण सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कहू रहत न रञ्जक नाम ॥

८ पद—बिन माली जो लगावै बाग

मनराम

हिन्दी

४०

९ दोहा—कवीर भौगुन एक ही गुण है

कवीर

”

”

लाख करोरि

१० फुटकर कवित्त

X

”

४१

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्णन

X

”

अपूर्णा

४१-४५

१ २३ गुटका सं ८। पग सं ८६। भा ६५०६। ने बल सं १७०१ बाबरापुरे ६।

पुण। सं १२८।

१ इच्छामणि केनि	कुम्भीराज राठीर	राजस्थानी किम	१ २
६ बल सं १११०।			

विशेष—इ व हिन्दी बज टीका सहित है। पहिले हिन्दी पग हैं फिर बज टीका की गई है।

१ विष्णु पंजर रखा	×	संरक्षित	५१
१ बजब (बज बंरा बंये लीये रे भाई)	×	हिन्दी	५७-८५
४ पद—(बंठे नम मित्रु व कुटीर)	बगुर्जुन	"	५६
२. " (बुकिभुनि कुली वग बाजी)	हरीचन्द्र	"	"
१ " (मुन्दर लांचरी धामे बायो सली)	नंदबाल	"	"
७ " (बालपोपल धीवन मेरे)	परबालन्द	"	"
७ " (बन ठे बाबल नाबल कीरी)	×	"	"

१ २४ गुटका सं ९। पग सं ९६। भा ६५०७। नारा-हिन्दी। ने बल ×। पुर्ण।

सं १२९।

विशेष—बैबल इच्छामणि केनि कुम्भीराज राठीर हय है। अति हिन्दी टीका सहित है। टीकाकार मरणा है। कुटका व के भाई हुई टीका के मित्र है। टीका बाल बाही प्रिया है।

१ २५ गुटका सं १। पग सं १००-११। भा ६५०८। नारा-हिन्दी। ने बल ×।

पुर्ण। सं १२११।

१ वरित	राजस्थानी किम	१०१-१०२
--------	---------------	---------

विशेष—गुटकार एक के मुन्दर वरित है। विरहिनी ना बरान है। इसमें एक वरित छीहन का भी है।

२ श्रीसमन्तिदुष्णवी की रानी	तिरारदास	राजस्थानी वय	१०३-१०४
-----------------------------	----------	--------------	---------

विशेष—दंड भी दमली दुष्णवी की रानी तिरारदास हय सगुर्ण ॥ सपन् १०१६ यवें बजब येन बने पुन पुन वने दिदी वयम्यं बुबबाभरे भी बुबबाभुर मय्ये बिबायिनं तह्यं सवन कीछ बाह्यं सुगामी वगुन वजन बाह्ये येठ दाबुरी बजबाल। निरनं ब्याल बगवा नाम्ना।

१ वरित	× <th>हिन्दी</th> <th>१०५-१०६</th>	हिन्दी	१०५-१०६
--------	------------------------------------	--------	---------

विशेष—बुबबाभल मुन्दरान विहायी वरा केयरदास के वरितों का संकट है। ४७ वरित है।

गुटका-संग्रह]

६०५६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० १०×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५१४ ।

१ रसिकप्रिया केशवदेव हिन्दी अपूर्ण १-४८
ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४

२ कवित्त × " ४६

६०५७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१ स्नेहलीला जनमोहन हिन्दी ६-१५

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावे नर देह ॥११६॥

जो गावे सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन वाञ्छित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ में कृष्ण ऊषव एव ऊषव गोपी सवाद है ।

६०५८ गुटका सं० १३ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० ×

पूर्ण । वे० सं० १५२२ ।

१ रागमाला श्याम मिश्र हिन्दी १-१२

२० काल सं० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल सं० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि में कासिमखा का वर्णन है । ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है

अन्तिम—सवत् सौरह से बरण ऊपर बीते दोय ।

फागुन वदी सनो दसी सुनो शुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर स्याम आगरे नगर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ श्याम मिश्र कृत संपूर्ण । सवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोबवार पोथी सेरग
प्रगनें हिछोंए का में साह गोरधनदास भगवाल की पोथी ये लिखी लिखत मजीराम ।

२. दाबशमासा (बारहमासा) महाकविराष्टुन्दर हिन्दी

६०६३ गुटका स० १८ । पत्र स० ७० । मा० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १८६४

ज्येष्ठ बुदी ५५ । पूर्ण । वे० स० १५२७ ।

१ चतुर्दशीकथा टीकम हिन्दी २० काल स० १७१२
विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२ कलियुग की कथा द्वारकादास ”
विशेष—पंचेवर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३ फुटकर कवित्त, रागो के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४ कपडा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानी
विशेष—इसमें ३१ पद्यों में कवि ने नायिका को अलग २ कपड़े पहिना कर विरह जाग्रत किया तथा फिर पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४ गुटका स० १९ । पत्र स० ५७-३०५ । मा० ९३×६३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल स० १६९० द्वि० वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे० स० १५३० ।

१ भविष्यदत्तचौपई ब्र० रायभल्ल हिन्दी अपूर्ण ५७-१०६

२ श्रीपालचरित्र परिमल्ल ” १०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति में है । अकबर के शासन काल में रचना की गई थी ।

३ धर्मरास (श्रावकाचाररास) × ” २८३-२९८

६०६५ गुटका स० २० । पत्र स० ७३ । मा० ९×६३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १८३९ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण निम्न है —

कपडा की रीस जायै हैवर की हीस जायै ।

न्याय भी नवेरि जायै राज रीस माणिवो ॥

राग तो छत्तीस जायै सपिण बत्तीस जायै ।

चू प चतुराई जायै महल में माणिवो ॥

वात जायै सवाद जायै खूवी खसवोई जायै ।

सगपग सावि जायै अर्थ को जाणिवो ।

कहत बनारसीदास एक जिन नांव विना ।

बूढो सब जाणिवो ॥

१०११ गुडका स २१। पृष्ठ ११४। मा १८४६। भाषा—हिन्दी संस्कृत। विषय—संस्कृत।

ਜਿ ਕਾਲ ਸੰ ੧੮੬੭ । ਅਪ੍ਰੈਲੀ । ਮੇ ਸੰ ੧੮੬੨ ।

निर्देश—सामान्य स्तरीय पाठ संभव है ।

६ ६० गुटका सं० ३२ । पृष्ठ ३ ४५ आ १ × ७५ द । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-सूच्य ।

मे नाल X । यपूर्व । मे स इति ।

विशेष—स्टोन एवं पथों का संघट्ट है ।

६६८ गुणका स २३। ५५८ २३५३। या २०४४। आपा-हिमरी। के गाल ८
१। ५५८। के २३५३।

विशेष—विभिन्न भाषों का उदाहरण है—अठारह भाषा, वसन्तोष्णि भाषा, अग्निनाम की भाषा इत्यादि।
 अठारह एवं वसन्तोष्णि के वर, अग्निनाम भाषा, अठारह की वीथी तथा वेदनाभाषाई।

६६. शुद्धता स० ३४। वन स २। या ६४४ ६। ज्ञाना हिन्दी। ते वन १५५।
 पत्र १। ६ स १२३३।

विद्येय—जीन नगर में प्रतिष्ठिति ॥१॥

६७ शुद्धका स १५। पम सं १४। का ३०४४। मया-हिन्दी। मे मल x। मूल।
६ सं १९३५।

विशेष—दिनांक पार्श्व में संख्या है—विषयानुसार भाषा (अवलोकन) द्वारा भाषा (अवलोकन) भाषा (अवलोकन)

६ ॥ १ मुद्रका ६० २१। पत्र १६। मा १५५२६। भाग-द्वितीय। ११ पत्र १६। भाग-१। ११ १११११।

विशेष—काननायक बाळी का अंतर्गत है ।

६०७२. शुद्धस्य स २७। पत्रं ११-१२। भाषा-संस्कृत। अ. काल १। २४। मूल्यं। १।
म. १११५।

विशेष—स्तीव लोचनम् ।

१७३ गुरुदास ६८। वर्ष १३। जाया-बंशुदहिरी। नि. वर्ष १०२३। पुर।
६ म १२१२।

विशेष—बादाम काटो का खंडहू है । वी १८३६ अणु। सुती ३ सु ती कल्लुर दंभायी का छ ।
दुनीराम बादराम की पुस्तक से कलकत्ता के प्रतिविधि की थी ।

६०७४. गुटका स० २६ । पत्र स० १६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजापात्र ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५४० ,

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६०७५ गुटका स० ३० । पत्र स० १५५ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० स० १५४१ ।

१ मविष्यदत्त चौपाई ग्रं० रायमल हिन्दी १-७६

२० स० १६३३ कार्तिक सुदी १४ ।

विशेष—फतेराम बज ने जयपुर मे स० १८१२ अषाढ बुदी १० को प्रतिलिपि की थी ।

२ वीरजिण्ण की संघावली पूनो हिन्दी ७७-७६

विशेष—मेघकुमार गीत है ।

३ अठारह नाते की कथा लोहट " ८०-८३

४ रविदार कथा खुगालचन्द " २० काल स० १७७५

विशेष—लिखतं फतेराम ईनरदास बज बासी सागानेर का ।

५ ज्ञानपञ्चोनी बनारसीदास " "

६ चौबीसतीर्थकारों की वदना नैमीचन्द " ६७

७ फुटकर सैवया × " ११३

८ पट्टनेस्या बैलि हर्षकीर्ति " २० काल स० १६८३ ११६

९ जिन स्तुति जोषराज गोदीका " ११८

१० प्रीत्यकर चौपाई मु० नैमीचन्द " ११६-१३४

२० काल स० १७७१ वैशाख सुदी ११

६०७६ गुटका स० ३१ । पत्र स० ४-२६५ । आ० ८१×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १५४२ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६०७७ गुटका स० ३२ । पत्र स० ११६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण वे० स० १५४४ ।

विशेष—नित्य एवं भाद्रपद पूजा संग्रह है ।

६०७८. गुरुका सं० ३३। पत्र सं ३२४। या ३०४४ द। भाषा—हिन्दी। के काल सं १७११
 विषय—मुरी। मुरी सं १३४२।

विशेष—मानस्य पात्रों का संख्या है।

६०७९. गुरुका सं ३३। पत्र सं १३५। या ३०४५ द। भाषा—हिन्दी। के काल ×। मुरी सं १३४३।

विशेष—मुक्तता मातृक समयवार की प्रति है।

६०८०. गुरुका सं० ३६। पत्र सं २४। या ३०४६ द। भाषा—हिन्दी। विषय—दर संख्या। के काल ×। मुरी सं १३४४।

६०८१. गुरुका सं ३७। पत्र सं १७। या ३०४७ द। भाषा—हिन्दी संख्या। के काल ×। मुरी सं १३४५।

विशेष—विषयका पाठ संख्या है।

६०८२. गुरुका सं० ३८। पत्र सं ३४। या ३०४८ द। भाषा—हिन्दी संख्या। के काल १७१२ मुरी सं १३४६।

विशेष—मुक्तता विषय पात्रों का संख्या है।

१. वरसंख्या	मनसाय एवं सुवरसाय	हिन्दी
२. मुरी	हरीसिंह	"
३. ब्रह्मर्षिजी की कुलमाता	गोहर	"
४. दर (बर्षन बीम्बोबी मैमकुमार	मिर्चाराय	"
५. धारती	मुमन्य	"

विशेष—अभिज्ञ-धारती कला धारित पात्रों सुवरसाय का काल सं १७१३।

६. दर— (के दो धारती धारत महिला वाली)	मैसा	"
७. धारतारक	मनसाय	" के काल ११

विशेष—मनसाय के मन्त्रों के मन्त्रों में बालाराम के प्रतिनिधि की थी।

८. दर— गोहर मीर में कंक पड़े हो गला	हरीसिंह	हिन्दी
९. " कंक ठेरी कुक वैष्णु भागि पू के मंडा	टोहर	"
१०. ब्रह्मर्षिजीमुरी	मिर्चाराय	"
११. धारती	मनसाय	"

६०८३ गुटका सं० ३६ । पय सं० २-१५६ । आ० ५×५ इ० । भाषा-हिंदी । ले० काग X । पूर्ण ।

वे० सं० १५५० । मुख्यत निम्न पाठों का संग्रह है —

१ आरती संग्रह	द्यानतराय	हिन्दी	(५ आरतिया है)
२ आरती-किह विधि आरती करी प्रभु तेरी	मानसिंह	"	
३ आरती-इहविधि आरती करी प्रभु तेरी	दीपचन्द	"	
४ आरती-करी आरती आत्म देवा	विहारीदास	"	३
५ पद संग्रह	द्यानतराय	"	१७
६ पद-ससार अघिर भाई	मानसिंह	"	४०
७ पूजाष्टक	विनोदीलाल	"	५३
८ पद-संग्रह	भूधरदास	"	६७
९ पद-जाग पियारी अब क्या सोवै	कवीर	"	७७
१० पद-क्या सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयसुंदर	"	७७
११ सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	"	८०
१२ आरती सिद्धों की	खुशालचन्द	"	८१
१३ गुरुमष्टक	द्यानतराय	"	८३
१४ साधु की आरती	हेमराज	"	८५
१५ वाणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	"	"
१६ पार्वनाथाष्टक	मुनि सकलकीर्ति	"	"

अन्तिम—अष्ट विधि पूजा अर्घ उतारो सकलकीर्तिमुनि काज मुदा ॥

१७ नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	हिन्दी	११७
१८ पूजासंग्रह	लालचन्द	"	१३८
१९ पद-उठ तेरो मुख देखू नामिजी के नदा	टोडर	"	१४५
२० पद-देखो भाई आज रिपम घरि आवै	साहकीरत	"	"
२१ पद-संग्रह	शोभाचन्द शुभचन्द आनन्द	"	१४६
२२ नवरा मंगल	वसी	"	१४७
२३ क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	"	१४८

३१ मार्च १९६४	विभाग	दिनांक	॥
---------------	-------	--------	---

ଶ୍ରୀ ୧୩— ସେ ଯେନେକେ ଗର୍ବିତୁ ସେବ, ହିମାଳୟ ଗର୍ବିତୁ ସମସ୍ତ ସେବ ॥

১৬. প্রশ্নের ধরণ	১. মিলান	২.	৩.
------------------	----------	----	----

[illegible]

८५॥१॥

निर्देश—अन्वयार्थ का हिंसा का व्यवहार है।

१८८२ सुदशम ४४ : १९४६ का. ४ : १६ : १ कला-संज्ञा (१६) : ३ १९४६
१९४६ : १९४६ : १९४६

ਸੁਭਾ ਨਦੀ ਸੰਘੇਰ ਭੰਗੂ ਹੈ । ਸੁਭਾ ਅਭਵਯਾਦ ਭਾਗ ਭੰਗੂ ਹੈ ।

१८६१ मुद्रण सं० ४२। अ म १११। डा २४८, ४। के अग १०११ बी० १०११।
अग १०११।

निर्देश—कृपया १ वा २ दिनांक में —

[illegible][illegible][illegible]

ਵਿਸ਼ੇਸ਼—ਜਦਕਿ ਕੋਈ ਭਾਗੀਨੀ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀ ਭਾਗੀਨੀ ਹੈ :

[illegible]

આને વિચારી સમગ્ર વિસ્તાર બાંધે હશે. આ દોષી સમગ્ર

४१. कदाचित् एवम् अस्ति किं नित्यं भवति तद्वत्

☐ ☐ ☒ ☒ ☒

କଟକ ଶାସନ କମିଟି ବର୍ଷ ୨୦୧୩ ପ୍ରକାଶନ ଶୀର୍ଷକ ଉପରେ ।

18. एक सत्य वा असत्य कथित करें।

६१ को कोल विभाग कोर्सा मन्त्रालय । निर्वाचन विभाग निर्वाचन मन्त्रालय कोर्सा मन्त्रालय ।

10304 4511 1977

1978 1979 1980

ה'תרס"ח

गुटका-रूप १

५ नेमीदवर रातुल की सहूरि (बाहमागा) चेतसिह साह	हिन्दी
६ ज्ञानपंचमीवृद्ध स्तवन	समयगुदर
७ मादीदवरगीत	रगविषय
८ बुलातपुरस्तवन	जिनरगमूरि
९ " "	समयगुदर
१० बीबीसीस्तवन	जयसागर
११ जिनस्तवन	वनवकीर्ति
१२ भोगीदाम की जन्म कुण्डली	×
	" जन्म स० १६६७

६०८७. गुटका स० ४३ । पत्र स० २१ । भा० ५१×५१ इ० । भाषा-मसूत । ले० पान स० १७३०

मपूर्ण । वे० स० १५५४ ।

विशेष—सत्त्वार्थगूत्र तथा पपावतीस्तोत्र है । मलारना में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०८८ गुटका स० ४४ । पत्र स० ४-७६ । भा० ७×४१ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल ५ । मपूर्ण

वे० स० १५५५ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१ श्वेताम्बर मत के ८४ दोन जगरूप हिन्दी २० पान स० १८११ ने० पान
स० १८१६ भागोज मुदी ३ ।

२ प्रतविधानरासो दीलतराम पाटनी हिन्दी २० पान स० १७६७ भागोज मुदी १०

६०८९ गुटका स० ४५ । पत्र स० ५-१०३ । भा० ६१×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० कान स०

१८६६ । मपूर्ण । वे० स० १५५६ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१ मुदामा की वारहगरी × हिन्दी ३२-३४

विशेष—कुल २८ पद्य हैं ।

२. जन्मकुण्डली महाराजा सयाई जगतसिंहजी की × मसूत १०३

विशेष—जन्म स० १८४२ चैत बुदी ११ रवी ७।३० घनेष्टा ५।२४ सिध योग जन्म नाम सदाशुख ।

६०९० गुटका स० ४६ । पत्र स० ३० । भा० ६१×५१ इ० । भाषा-मसूत हिन्दी । ले० काल ×

पूर्ण । वे० स० १५५७ ।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है ।

६०६१ गुटका र्श ४७। पत्र स ११। या ६५२२ द । बापा-हिन्दी। के बाल X। पूर्ण। के स १२२।

विशेष—सामान्य पुमा पाठ संभव है।

६ २२ गुटका र्श ४८। पत्र स २। या० ६५२३ द । बापा-संस्कृत। विश्व-मार्गण। ॥ बाल X। पूर्ण। के स १२२२।

विशेष—समुद्रातिथ्यकाव्यं वृत्त बाणवत् प्रथिमा है।

६ २३ गुटका स ४९। पत्र र्श १२। या ६५२४ द । बापा-हिन्दी। के बाल र्श १२१० बाण कुरी १२। पूर्ण। के स १२१२।

विशेष—ईशान्य वृत्त विपरीत घट्ट वृत्त संस्कृत वृत्त मठावत् बालों का जीवितिका है।

६०२४ गुटका र्श ५०। पत्र र्श ७८। या ६५२५ द । बापा-हिन्दी संस्कृत। के बाल X। पूर्ण। के स १२१४।

विशेष—सामान्य पाठों का संभव है।

६ २५ गुटका स ५१। पत्र र्श १७। या ६५२६ द । बापा-हिन्दी। ॥ बाल X। के बाल X। पूर्ण। के स १२१३।

विशेष—मिन्न पुमा पाठ है।

१ बरित	कट्टीमाला	हिन्दी	१२-१०
--------	-----------	--------	-------

विशेष—१ बरित है।

२. रामनन्दा के बोहे	वीरवी	=	१११-११५
---------------------	-------	---	---------

३ बाणमाला	बघाव	=	१२ बोहे है ११५-१२१
-----------	------	---	--------------------

६ २६ गुटका र्श ५२। पत्र र्श १७५। या ६५२७ द । बापा-हिन्दी। के बाल X। पूर्ण। के स १२१६।

विशेष—सामान्य पाठों का संभव है।

६०२७ गुटका र्श ५३। पत्र र्श १५। या ६५२८ द । बापा-संस्कृत हिन्दी। के बाल स १७ १ माह कुरी ४। पूर्ण। के स १२१७।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ मिन्न प्रकार है।

१ मठाभिप्रायलो	विपरीत	हिन्दी	१२५
----------------	--------	--------	-----

० रोहिणी विहितता

संजीवनी

हिंदी

१४६-६०

१० वान म० १६६५ उदेतु मुं० २ ।

विशेष—

गान्धे जी का साऊ दर्द, उन्हे गुला गुलिया भई

पतिहास नगर गुलाग, समान गिा गान्धिया ॥

कुरमि कीरि विगा, विगा कीरि गाथा समान ॥

सा गिा कीरि गुलाग, गाी गिार की गाथा ॥८६॥

समान वन गुलाग की गुलाग, वनो वनाद गाथा वरणी ॥

समी गान्धे कीरिगाड वना गुलाग वनो वनी गुलाग ॥८७॥

इति गान्धेकीरि गाथा समाप्त ॥

१, गान्धेकीरिगाथा

गान्धेकीरि

हिंदी

१७०

२, गान्धेकीरिगाथा व गान्धेकीरि

गान्धेकीरि

संस्कृत

१७४-१८६, १७

३, गान्धेकीरिगाथा की

गाथा

हिंदी

२८१-२८८

४, गान्धेकीरिगाथा

गाथा

॥

२४१

६०६८ गुटका सं० ७४ । वन म० २२-३० । गा० ६१४८ ६० । भाषा-हिंदी । म० वन २४७

सूची । म० म० १४६८ ।

विशेष—हिंदी गाथा का मसूदा है ।

६०६९ गुटका सं० ७४ । वन म० १०४ । गा० ६१४८ ६० । भाषा-गान्धेकीरि । म० वन म०

१८८४ । सूची । म० सं० १४६९ ।

विशेष—गुटका के गुलाग पाठ निम्न प्रकार है—

१, गान्धेकीरि

म० गुलाग

संस्कृत

सूची

१०-२६

विशेष—गान्धेकीरि की गाथा हिंदी म० म० १ । गान्धेकीरि के म० म० १२ पर—

हिं० श्री गान्धेकीरि गुलाग पाठ निम्न प्रकार है—

२, गुटका सं०

गान्धेकीरि

हिंदी

६१०० गुटका सं० ७६ । वन सं० १४ । गा० ७१४८ ६० । भाषा-हिंदी । म० वन २४७ ।

म० म० १४७० ।

विशेष—गान्धेकीरि उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

११०१ गुटका सं २७। पत्र सं ७२। या १७८१ ई। भाषा-बंस्तुत। ने पत्र सं १८४
पेठ नुही २। नुही। सं १२७१।

विशेष—विष्णु पाठ है—

१. गुटकासंग्रह	पुस्तक	हिन्दी	७१२ पृष्ठ है।
२. अम्बारवि कवित	वीथ संस्करण	"	
३. कवित पुष्पकोर पर	विषयान	"	

११०२ गुटका सं २८। पत्र सं ७२। या १७८२ ई। भाषा-बंस्तुत हिन्दी। ने पत्र X।
नुही। सं १२७२।

विशेष—बाल्याय पाठों का संग्रह है।

११०३ गुटका सं २९। पत्र सं १६२। या ७४४ ई। भाषा-हिन्दी बंस्तुत। ने पत्र X।
नुही। सं १२७३।

विशेष—बाल्याय पाठों का संग्रह है।

११०४ गुटका सं ३०। पत्र सं १६२। या ७४५ ई। भाषा-बंस्तुत हिन्दी। ने पत्र X।
नुही। सं १२७४।

विशेष—गुफा पाठ विष्णु प्रकार है।

१. लघुपञ्चमस्तुत	X	बंस्तुत	
२. बाटावना अतिवीथगत	X	हिन्दी	१२ पृष्ठ है

११०५ गुटका सं ३१। पत्र सं १७। या ७४६ ई। भाषा-बंस्तुत हिन्दी। ने पत्र सं
१४ भाषा नुही १। नुही। सं १२७५।

विशेष—गुफा पाठ विष्णु प्रकार है।

१. बाटावनी	X	हिन्दी	११
२. विपरी-पत्र सं विनीषार संविधि २	गुफाविषय	"	४०
बाटावनी गुफा सं विनीषार २			

३. पत्र-विषय बाटावनी के वि विष्णु बाल्याय पत्र बाटावनी
भाषा है

४. पत्र-हिन्दी देहली वि विष्णु बाटावनी वि विष्णु बाटावनी
भाषा है

शुटका-समूह]

५ पद-नेमकवार रो वाटडी हो राणी	बुधालचंद	हिंदी	४१
राजुल जोवै खडी हो खडी			
६ पद-पल नही लगदी माय में पल नहि लगदी	बखतराम	"	४३
पीया मो मन भावै नेम पिया			
७ पद-जिनजी को दरसण नित करा हो	रूपचन्द	"	"
सुमति सहेल्यो			
८ पद-तुम नेम का भजन कर जिनसे तेरा भला हो	बखतराम	"	४४
९ बिनती	मजैराज	"	४८
१० हमीररासो	X	हिन्दी	मपूर्णा ४६
११ पद-भोग दुखदार्द तनमवि	जगतराम	"	५०
१२ पद	मवलराम	हिन्दी	५१
१३ " (मङ्गल प्रभाती)	विनोदीलाल	"	५२
१४ रेखाचित्र	आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, वर्द्धमान एव पार्श्वनाथ	"	५७-५८
१५ वसंतपूजा	मजैराज	"	५६-६१

विशेष—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार हैं —

भावेरि सहर सुहावणू रति बसत कू पाय ।

मजैराज करि जोरि की गावै हो मन बध काय ॥

६१०६ शुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२० । मा० ६×५ ३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६३८ पूर्ण । वे० सं० १५७६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का समूह है ।

६१०७ शुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७ । मा० ६×५ ३/४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । मपूर्णा । वे० सं० १५८१ ।

विशेष—देवाग्रह कृत पद एव भूधरदास कृत गुह्यो की स्तुति है ।

६१०८ शुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । मा० ८ १/२×५ ३/४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६७ । मपूर्णा । वे० सं० १५८० ।

६१४ गुटका सं० ६२। पत्र सं० १७३। मा १२×४२ ह। जापा-हिन्दी। ने बल X। गुंठ
के सं० १२८१।

विशेष—गुना पाठ स्तोत्र संज्ञा है।

६११ गुटका सं० ६६। पत्र सं० १२। मा १२×४२ ह। जापा-संस्कृत हिन्दी। ने बल X।
पत्र सं० १२८२।

विशेष—संस्कृत गुना, पाठानुसार गुना तथा सोमहकारण एवं वचनमय गुना है।

६१११ गुटका सं० ६७। पत्र सं० १८२। मा ८×७२ ह। जापा-संस्कृत हिन्दी। ने बल
सं० १७४३। गुंठ। के सं० १२७३।

विशेष—सामान्य गुना पाठ संज्ञा है।

६११२ गुटका सं० ६८। पत्र सं० ११३। मा १०×२ ह। जापा-हिन्दी। ने बल X। गुंठ।
के सं० १२८४।

विशेष—गुना पाठों का संज्ञा है।

६११३ गुटका सं० ६९। पत्र सं० १२१। मा ४२×४ ह। जापा-संस्कृत। ने बल X। गुंठ
के सं० १२८५।

विशेष—स्तोत्रों का संज्ञा है।

६११४ गुटका सं० ७०। पत्र सं० १७-२। मा ७२×२ ह। जापा-संस्कृत। ने बल X।
गुंठ। के सं० १२८६।

विशेष—नित्य गुना पाठों का संज्ञा है।

६११५ गुटका सं० ७१। पत्र सं० १। मा २०×२ ह। जापा-संस्कृत हिन्दी। ने बल X।
गुंठ। के सं० १२८७।

विशेष—वीथीय ठाण्डा वर्ण है।

६११६ गुटका सं० ७२। पत्र सं० ३। मा ४२×२ ह। जापा-हिन्दी संस्कृत। ने बल X।
गुंठ। के सं० १२८८।

विशेष—गुना पाठ संज्ञा एवं भीतल स्तुति पाठ है।

६११७ गुटका सं० ७३। पत्र सं० ३-२। मा १२×२ ह। जापा-संस्कृत हिन्दी। ने बल
। पत्र सं० १२८९।

६११८ गुटका स० ७७ । पत्र स० ६ । पा० ६१७ ५३ ६० । भाषा—हिन्दी । ले० पात्र / । प्रपूर्णा ।

वे० स० १७६६ ।

विशेष—समोहर एव फूला परि के पत्र है ।

६११९ गुटका स० ७७ । पत्र स० १० । पा० ६७५३ १० भाषा—हिन्दी । ले० पात्र X । प्रपूर्णा ।

वे० स० १७६८ ।

विशेष—तामनेयनी भाषा एवं मार्ग परीक्षा दर्शात है ।

६१२० गुटका स० ७६ । पत्र स० ६६ । पा० ६०४६० । भाषा—मगधुत । विषय विज्ञान ।

ले० पात्र X । प्रपूर्णा । वे० स० १७६९ ।

विशेष—उपस्थानि वृत्त तन्मार्गगुप्त है ।

६१२१ गुटका स० ७७ । पत्र स० ६-६० । पा० ६४६३ ६० । भाषा—हिन्दी । ले० पात्र X । प्रपूर्णा ।

वे० स० १६०० ।

विशेष—तन्मार्ग दृष्टि की भाषना का दर्शन है ।

६१२२ गुटका स० ७८ । पत्र स० ७-२६ । पा० ६४६३ ६० । भाषा—मगधुत । ले० पात्र X ।

प्रपूर्णा । वे० स० १६०१ ।

विशेष—उपस्थानि वृत्त तन्मार्गगुप्त है ।

६१२३ गुटका स० ७६ । पत्र स० १० । पा० ७४७ ६० । भाषा—मगधुत हिन्दी । ले० पात्र X ।

प्रपूर्णा । वे० स० १६०२ । तामाच पुत्रा पाठ है ।

६१२४ गुटका स० ८० । पत्र स० ३४ । पा० ४३३ ६० । भाषा—हिन्दी । ले० पात्र X ।

प्रपूर्णा । वे० स० १६०५ ।

विशेष—स्वाध्याय, उपरदाय, जगराम एव बुधजा के पदों का संग्रह है ।

६१२५ गुटका स० ८१ । पत्र स० २-२० । पा० ४४३ ६० । भाषा—हिन्दी । विषय—विज्ञान गद्य ।

ले० पात्र X । प्रपूर्णा । वे० स० १६०६ ।

६१२६ गुटका स० ८२ । पत्र स० २८ । पा० ४४३ ६० । भाषा—मगधुत । विषय—पूजा स्तोत्र । ले०

पात्र X । प्रपूर्णा । वे० स० १६०७ ।

६१२७ गुटका स० ८३ । पत्र स० २-२० । पा० ६३४५३ ६० । भाषा—मगधुत हिन्दी । ले० पात्र /

प्रपूर्णा । वे० स० १६०८ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एव पदों का संग्रह है ।

६१२८ गुटका स ८२। पग स १२। या ८२×१६। माया-हिन्दी। के मल×। मुर्त।

के स १९११।

विशेष—देवताइय इत पलों का संग्रह है।

६१२९ गुटका स ८३। पग स ४। या ९२×४३। माया-हिन्दी। के मल १७२१।

मुर्त। के स १९२६।

विशेष—उद्योग्य एवं बकराय के नव तथा मेजीराय कुल कन्यासुधमिरासोबधारा है।

६१३० गुटका स ८४। पग स ७-१२८। या ९२×४३। माया-हिन्दी। के मल १८१४

मुर्त। के स १९२७।

विशेष—पुत्राओं का संग्रह है।

६१३१ गुटका स ८५। पग स २५। या ९३×४३। माया-संस्कृत। के मल×। मुर्त।

के स १९२८।

विशेष—विश्व वैमिदिक पुत्रा पलों का संग्रह है।

६१३२ गुटका स ८६। पग स १९। या ७०×४६। माया-हिन्दी। के मल×। मुर्त।

के स १९२९।

विशेष—अनन्यपन्न कुल मायार्थ मायित्तानर की पुत्रा है।

६१३३ गुटका स ८७। पग स २६। या ८३×४७। माया-हिन्दी। के मल १८१५।

मुर्त। के स १९३०।

विशेष—स्वल्पपन्न कुल विद्वत् केवी की पुत्राओं का संग्रह है।

६१३४ गुटका स ८८। पग स ७९। या ८३×४६। माया-हिन्दी। के मल स १८१४

मुर्त। के स १९३१।

विशेष—माय्य के १९ पलों पर १ से २ तक पङ्क्ति हैं जिनके ऊपर वीरि तथा मृत्कार एव के ४७ वीरि हैं। विरार के कविता तथा लघुपत्र केव भी तथा प्राप्ति है।

६१३५ गुटका स ८९। पग स ९। या १०×४६। माया-हिन्दी। के मल×। मुर्त।

के स १९३२।

विशेष—दीपक एवमद्वया (यैव लंघ) तथा ज्योतिष सम्बन्धी संग्रह है।

६१३६ गुटका स ९०। पग स १०। या १०×४६। माया-संस्कृत। के मल×। मुर्त।

के स १९३३।

विशेष—सधीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था। स्तोत्रो का संग्रह है।

६१३७ गुटका सं० ६४। पत्र सं० ८-११। मा० ६×५ इ०। भाषा गुजराती। ले० काल ×।

पूर्ण। वे० सं० १६६४।

विशेष—वल्लभकृत स्वमणि विवाह वर्णन है।

६१३८ गुटका सं० ६५। पत्र सं० ४२। मा० ४×३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।

पूर्ण। वे० सं० १६६७।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एव पद (चार रथ की वजत बधाई जी सब जनमन आनन्द दाई) है। चारो

थो का मेला सं० १६१७ फागुण बुदी १२ को जयपुर हुआ था।

६१३९ गुटका सं० ६६। पत्र सं० ७६। मा० ८×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।

पूर्ण। वे० सं० १६६८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६१४० गुटका सं० ६७। पत्र सं० ६०। मा० ६३×४३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।

पूर्ण। वे० सं० १६६९।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र संग्रह है।

६१४१ गुटका सं० ६८। पत्र सं० ५८। मा० ७×७ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।

वे० सं० १६७०।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सवैये, लक्षण तथा नीतिग्रन्थ एव शनिश्चरदेव की कथा है।

६१४२ गुटका सं० ६९। पत्र सं० २-१२। मा० ६×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० १६७१।

विशेष—मन्त्र यन्त्रविधि, आयुर्वेदिक नुसखे, खण्डेलवालो के ८४ गोत्र, तथा दि० जैनो की ७२ जातिया

जिसमें से ३२ के नाम दिये हैं तथा चाणक्य नीति आदि है। शुभानोराम की पुस्तक से चाकसू मे सं० १७२७ मे लिखा गया।

६१४३ गुटका सं० १००। पत्र सं० ५४। मा० ६×४३ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० १६७२।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है। ५४ मे आगे पत्र खाली हैं।

६१४४ गुटका सं० १०१। पत्र सं० ८-२५। मा० ६×४३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले०

काल सं० १८५२। अपूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एव हिन्दी पाठ हैं।

११४४ गुटका स० १०२। पत्र सं १११। या ७२७७ ह। माता-हिन्दी संस्कृत। नै नाल।
पपूर्व। नै सं ११७४।

विशेष—बाणबंदी (सूत) भरक बीड़ा (सुगर) ललार्थयुक्त (उमरवादि) तथा फुरकर बरंदा है।
११४५ गुटका स० १३। पत्र सं ११। या ४२४ ह। माता-संस्कृत। नै नाल X। पूर्व।
नै सं ११७२।

विशेष—विपादाहार, निर्वाणभाष्य तथा मछमरस्तोत्र एवं परीपद् वर्जित है।
११४७ गुटका स० १४। पत्र सं १। या ४२४ ह। माता-हिन्दी। नै नाल X। पूर्व।
नै सं ११७१।

विशेष—ब्रह्मवर्णेन्द्रिय बाणुमानस, बार्हस्पत्य, सोमहकारण काव्या यापि है।
११४८ गुटका स० १५। पत्र सं ११४७। या ४२४ ह। माता-हिन्दी। नै नाल X।
पपूर्व। नै सं ११७७।

विशेष—स्मृतोक्त के पाठ है।
११४९ गुटका सं १६। पत्र सं ११। या ७२४ ह। माता-संस्कृत। नै नाल X। पूर्व।
नै सं ११७८।

विशेष—बाणु मानस पत्रमवल तथा ब्रह्मवर्ण पुत्रा है।
११५ गुटका स० १७७। पत्र सं १। या ७२४। माता-हिन्दी। नै नाल X। पूर्व। नै
सं ११७९।

विशेष—धर्मोपनिषद्भाष्य निर्वाणभाष्य (संज्ञा) फुरकर पत्र एवं मेधिमाल के वक्ष नाल है।
११५१ गुटका सं १७८। पत्र सं २४। या ७२४ ह। माता-हिन्दी। नै नाल X।
पपूर्व। नै सं ११८०।

विशेष—देवाय्या कृत कविपुत्र की विलगी है।
११५२ गुटका सं १८। पत्र सं ११। या ४२४ ह। माता-हिन्दी। निबन्ध-वर्ण। नै
नाल X। पपूर्व। नै सं ११८१।

विशेष—१ से ४ तथा ३४ से ३९ पत्र नहीं हैं। निम्न पाठ है—
१ हरजी के बीड़ा X हिन्दी।

विशेष—७१ से ११४ ४४ से ३२९ बीड़े तक हैं यापि नहीं हैं।

हरजी रचना की नहीं, ऐसा पक्ष न होर।

विशेषा दु पीवत नहीं फिर बीड़े निर्दिष्ट हैं ॥ १११ ॥

हजी हरजी ओ तहै रसना बारवार ।

विष तजि मन न ज्यो न लूँ जमन नाहि तिनि बार ॥ १६४ ॥

२ पुनन-स्त्री मराठ	रामचंद	हिंदी	१२ पद्य है ।
३ कुटकर कवित्त (शृ गार रस)	×	”	४ कवित्त है ।
४ दिल्ली राज्य का व्योरा	×	”	

विशेष—घोहान राज्य तक वर्णन दिया है ।

५ माधवासीसी के मंत्र प यत्र है ।

६१५३ गुटका सं० ११० । पत्र सं० ६७ । प्रा० ७५४ २० । भाषा-हिंदी समुत्त । विषय-संग्रह ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष—निर्वाणगण्ड, भातामरस्तोत्र, सत्त्वार्थसूत्र, एहीभावस्तोत्र आदि पाठ हैं ।

६१५४ गुटका सं० १११ । पत्र सं० ३८ । प्रा० ६५४ । भाषा-हिंदी । विषय-संग्रह । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० १६८३ ।

विशेष—निर्वाणगण्ड-नेत्रग पद संग्रह-भूषणदत्त, जाधवा, मनोहर, नेत्रग, पद-गणेशजीनि (नेमा देव जिनद है नेमो नमि प्राप्ती) तथा चौरासी गोत्रोन्नति वर्णन आदि पाठ हैं ।

६१५५ गुटका सं० ११२ । पत्र सं० ६१ । प्रा० ७५६ २० । भाषा-समुत्त । विषय प । ले०

काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८४ ।

विशेष—जैनैतर स्तोत्रो वा संग्रह है । गुटका पेनसिंह भाटी का लिखा हुआ है ।

६१५६ गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १३६ । प्रा० ६५४ २० । भाषा-हिंदी । विषय-संग्रह । ले०

काल × । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष—२० वा १०००० वा, ११ वा २० वा यत्र, दोहे, पासा देखली, भक्तामरस्तोत्र, पद संग्रह तथा राजस्थानी में शृ गार के दोहे हैं ।

६१५७ गुटका सं० ११४ । पत्र सं० १२३ । प्रा० ७५६ २० । भाषा-समुत्त । विषय-भद्र परोक्षा ।

ले० काल × । १८०४ अष्टादश पुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १६८६ ।

विशेष—पुस्तक ठाकुर हमीरसिंह गिजवाडी वालो की है खुशालचन्द ने पाठ्या में प्रतिलिपि की थी । गुटका सजिल्द है ।

६१२८. गुहका सं ११२। पत्र व ३२। पृ ६ X १६। चापा-द्विती। हे वल X।

मृणः ॥ ५ ॥ ११३ ॥

विशेष—आधुनिक कृतके हैं ।

११२६. गुठल्ल सं ११६। पत्र सं ७७ आ ×१६। जाया छिन्नी। से काब ×। पुर्त।

॥ २ ॥

विषय—हुटरा सचिव है। सचिवद्वारा के २४ योग विभिन्न दफ्तरो के एवं तथा दोस्त सम्बन्धी के पुन प्रालम्बीकरण की व १९१९ की अन्य सभी तथा प्राथमिक मुद्दे हैं।

६१६ गुरुका स ११७। पत्र ६१। धावा-हिन्दी। नै काल X। पूर्ण वि ८ १७।

विशेष—नित्य विद्यमान भूषा संपन्न है ।

११११ गुडक्य सं ११८। पत्र सं ७६। धा X६ ह। भाषा-संस्कृत हिन्दी। के गत्य X।

अपूर्व । ५ ६ १७ ३ ।

निर्देश—पूरा पाठ एवं स्तोत्र लक्ष्य है।

११६२ गुडका स ११६ । पृष्ठ २४ । भा १५४ ह । बाया-हिन्दी । के कल ४ । १५१

पञ्चमस्य । ति ० १७२२ ।

निवेद—आजपल पीता किसी पक्ष डीका दबा बाधिकेयोपल्लान किसी पक्ष म ह दोनो ही पयूर ह ।

६१६३. शटका सं १२ । पृष्ठ ४ १२-१३ । पा ४०४ ह । बाया किरी । डे बाय X ।

अवर्ष १ के सं १७१२।

विशेष—इसके के पृष्ठ पाठ निम्न प्रकार है —

१. मदनमोहन	वैष्णव	हिन्दी	समस्त	११ ४१
२. पद्मनाभ	"	"	"	४४ ३

विशेष—पूजा का अर्थ रक्षितकर वात्स्यायनानुसार भिन्न प्रकार है—जस प्रकार पुन पुन दीप, अक्षय, विस कन इतरी अथैक वी घणन घणन पूजा है ।

१. कलकत्ता पत्रा : २२/११/५५

५. पारंपरिक	X	३०
-------------	---	----

११६४ गुणका सं १२१। ५५ सं ५ १२२। भा ५०२ ह । भाषा-हिन्दी बरहठ । ले पाप

[illegible]

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१	गुरुजयमाला	ग्रहा जिनदास	हिन्दी	१३
२	नन्दीश्वरपूजा	मुनि सफलकीर्ति	संस्कृत	३८
३	सरस्वतीस्तुति	भाशाधर	"	५२
४	देवशास्त्रगुरुपूजा	"	"	६८
५	गणधरवल्लय पूजा	"	"	१०७-११२
६	भारती पञ्चपरमेष्ठी	प० चिमना	हिन्दी	११४

ग्रन्थ में लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारको का विवरण है। सरस्वती गच्छ बलात्कार गण मूल सघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट मे भट्टारक शातिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

६१६५ गुटका स० १२२। पत्र स० २८-१२६। मा० ५३×५३ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी।

ले० काल ×। मपूर्णा। वे० स० १७१४।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६ गुटका स० १२३। पत्र स० ६-४६। मा० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

मपूर्णा। वे० स० १७१५।

विशेष—विभिन्न कवियों ने हिन्दी पदों का संग्रह है।

६१६७ गुटका स० १२४। पत्र स० २५-७०। मा० ४×५३ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

मपूर्णा। वे० स० १७१६।

विशेष—विनती रुद्रह है।

६१६८ गुटका स० १२५। पत्र स० २-४५। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। मपूर्णा। वे० स० १७१७।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६१६९ गुटका स० १२६। पत्र स० ३६-१८२। मा० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

मपूर्णा। वे० स० १७१८।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७० गुटका स० १२७। पत्र स० ३६-२४६। मा० ८×४३ इ०। भाषा—गुजराती। लिपि—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल स० १७८३। ले० काल स० १६०५। मपूर्णा। वे० स० १७१९।

विशेष—मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र हैं।

६१७१ गुप्तका सं १२८। पत्र सं ११-६२। मा ४०४६। माया-हिन्दी। के नम
X। मयूर। के सं १७२।

विशेष—पुनः पाठ संभव है।

६१७२ गुप्तका सं १२९। पत्र सं १२। मा ४०४६। माया-हिन्दी। के नम X। मयूर
के सं १७२१।

विशेष—महापत्र माया एवं बीबीसी स्वयं धारि है।

६१७३ गुप्तका सं १३०। पत्र सं १-१६। मा ४०४६। माया-हिन्दी पत्र। के नम X।
मयूर। के सं १७२२।

रघुवीरगुप्तकासमभारत ६२ छे १ एक पत्र है।

अभिज्ञ— कथा मेम सपुत्र है पाहक नपुर पुमान।

उमरका रंजन नष्ट, यम द्विष्ट प्रीति निषाल ॥१॥

रति रंजनगुप्तकासमभारत समस्त ३३३३ ३३३३ ३३३३ ३३३३।

६१७४ गुप्तका सं १३१। पत्र सं १-४१। मा ४०४६। माया-हिन्दी। के नम सं १५१
मयूर। के सं १७२३।

विशेष—महाली सङ्गमाय एवं नम है।

६१७५ गुप्तका सं १३२। पत्र सं १-१६। मा ४०४६। माया-हिन्दी। के नम सं
१७२४। मयूर। के सं १७२४।

विशेष—हनुमत् कथा (३ राजपत्र) नंदकपूर यम विद्यती महात्मनि (नमः नमः नमः नमः) के नम
॥ १५२१ मुरेनमिनि महापत्र एक) धारि पाठ है।

६१७६ गुप्तका सं १३३। पत्र सं २२। मा ४०४६। माया-हिन्दी। के नम X। मयूर
के सं १७२५।

विशेष—समभारत नमः एवं शिखर मकर संतो के ही मयूर पाठ है।

६१७७ गुप्तका सं १३४। पत्र सं ११। मा ४०४६। माया-हिन्दी। के नम X। मयूर
के सं १७२६।

विशेष—सामान्य पाठ संभव है।

६१७८ गुप्तका सं १३५। पत्र सं ४१। मा ४०४६। माया-हिन्दी हिन्दी। के नम सं
१५१। मयूर। के सं १७२७।

१ पद— राखो हो वृजराज लाज मेरी	सूरदास	हिन्दी
२ „ माहिडो विसरि गई लोह कोउ काहून	मल्लूदास	„
३ पद—राजा एक पडित पोली सुहारो	सूरदास	हिन्दी
४ पद—मेरो मुखनीको अक तेरो मुख थारो ०	चद	„
५ पद—भव मैं हरिरस चाखा लागी भक्ति खुमारी०	कबीर	„
६ पद—भादि गये दिन साहिब बिना सतगुरु चरण सनेह बिना	„	„
७ पद—जा दिन मन पछी उडि जाँ है	„	„

फुटकर मन्त्र, औपधियों के पुसखे आदि हैं ।

६१७६. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ५-१६ । मा० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । ले० काल १७८४ । अपूर्ण । वै० सं० १७५५ ।

विशेष—वल्लभराम, देवाग्रह, चैनसुख आदि के पदों का संग्रह है । १० पत्र से भागे खाली हैं ।

६१८०. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० ८८ । मा० ६१×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । ले० काल X । अपूर्ण । वै० सं० १७५६ ।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ एवं दिलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरपचन्द, लालचन्द, गरीबदास, भूधर एवं किसानगुलाब के पदों का संग्रह है ।

६१८१ गुटका सं० १३८ । पत्र सं० १२१ । मा० ६३×५ इ० । वै० सं० २०४३ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१ बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी संस्कृत
२ नैमिताय पूजा	कुवलयचन्द	संस्कृत
३ क्षीरोदानी पूजा	अमयचन्द	„
४ हेमकारी	विश्वभूषण	हिन्दी
५ क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्ति	„
६ शिखर विलास भाषा	धनराज	„

६१८२ गुटका सं० १३९ । पत्र सं० ३-४६ । मा० १०३×७ इ० । भाषा—हिन्दी प० । ले० काल सं० १८५५ । अपूर्ण वै० सं० २०४० ।

विशेष—जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालकार भी है । भैरुलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

६ निशल्याष्टमीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी
१० सुगन्धीदशमीकथा	हेमराज	"
११ अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	"
१२ वारहसी चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	"

६१८८ गुटका सं० १४५। पत्र सं० २१६। भा० ६×६ $\frac{१}{२}$ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५०।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१ विरुदावली (पट्टावलि)	×	संस्कृत	७
२. सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	"	६१
३ दशलक्षण जयमाला	सुमतिसागर [अभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	८०
४ दशलक्षण जयमाला	सोमसेन	संस्कृत	६०
५ मेरुपूजा	"	"	
६ चौरासी न्यातिमाला	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१४७

विशेष—इन्हीं की एक चौरासी जातिमाला भी है।

७ आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	"	१५०
८ अनन्तनाथपूजा	"	"	१६६
९ सप्तश्रृंगपूजा	भ० देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१७६
१० ज्येष्ठजिनवरमोटा	श्रुतसागर	"	१७८
११ ज्येष्ठजिनवर लाहान	ब्र० जिनदास	संस्कृत	१७८
१२ पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	१६१
१३ शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	"	२१०
१४ व्रतजयमाला	सुमतिसागर	हिन्दी	२१३
१५ आदित्यनारायण	प० गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य]	"	२१६

६१८९ गुटका सं० १४६। पत्र सं० ११-८८। भा० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७०१। अपूर्ण। वे० सं० २०५१।

विशेष—बनारसीविलास एवं नाममाला आदि के पाठों का संग्रह है।

६१६० गुरुका सं १५७। पत्र सं १-६१ या ४४५५ ह। माया-संस्कृत। से कल X।
पुर्ण। से सं २१५१।

विशेष—सोनी का संग्रह है।

६१६१ गुरुका सं १५८। पत्र सं १२। या X१ ह। से कल सं १५५१। पुर्ण। से
सं २१५७।

१ पञ्चरत्नसूक्त	हरिचन्द्र	हिन्दी	१-२
			२ कल सं १५११ लैट्ट कुटी ७

१ वैराग्यसूक्तोच्चारण	देवप्रदीप	संस्कृत	
-----------------------	-----------	---------	--

विशेष—बीमडा में अन्तर्गत बीमडा के प्रतिनिधि हुई थी।

१ पट्टासि	X	हिन्दी	१२
-----------	---	--------	----

६१६२ गुरुका सं १५९। पत्र सं ११। या १४५६ ह। माया-हिन्दी। विषय-इतिहास। से
कल सं १२२ लैट्ट कुटी १२। पुर्ण। से सं २१६१।

विशेष—मिहिरा माया का वर्णन है। बोधकाय के महावीर का भी उल्लेख है।

६१६३ गुरुका सं १६०। पत्र सं १४६। या ४४५६ ह। माया-हिन्दी संस्कृत। से कल
१७१७। पुर्ण। से सं २१६२।

विशेष—गुरुका पत्र एक दिल्ली की वास्तव्यता का लोका है।

६१६४ गुरुका सं १६१। पत्र सं ६२। या ६४५६ ह। माया-वास्तव्य-हिन्दी। से कल X।
पुर्ण। से सं २१६३।

विशेष—मार्गका बीमडा कल्ला कर्मा तथा मन्त्रमन्त्रोक्त आदि है।

६१६५ गुरुका सं १६२। पत्र सं ४। या ७४५६ ह। माया-संस्कृत हिन्दी। से कल X
पुर्ण। से सं २१६४।

विशेष—वास्तव्य गुरुका पत्र संग्रह है।

६१६६ गुरुका सं १६३। पत्र सं २७-१३१। या १३५६ ह। माया-संस्कृत हिन्दी। से
कल X। पुर्ण। से सं २१६५।

विशेष—वास्तव्य गुरुका पत्र संग्रह है।

६१६७ गुरुका सं १६४। पत्र सं १७-१४७। या ४४७७ ह। माया-हिन्दी। से कल X।
पुर्ण। से सं २१६६।

विशेष—वास्तव्य गुरुका पत्र संग्रह है।

६१६८ गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० ३२। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। ले० काल ×। अपूर्ण।

वे० सं० २१६६।

विशेष—समवधारण पूजा है।

६१६९ गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७-१५२। भा० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख सवाद हिन्दी पद्य में है।

६२०० गुटका सं० १५६। पत्र सं० १८-३६। भा० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१ गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। भा० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—प्रायुर्वेद। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—प्रायुर्वेदिक मुसल्ले हैं।

६२०२ गुटका सं० १५८। पत्र सं० २-३०। भा० ७×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०३ गुटका सं० १५९। पत्र सं० ६३। भा० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०४।

विशेष—कछुवाहा वंश के राजाओं की वंशावली, १०० राजाओं के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक वंशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १८२४ में बैठना लिखा है।

२ दिल्ली नगर की बसापत तथा बादशाहत का व्यौरा है किस बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा बड़ी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३ बारहमासा, प्राणीदा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सबैया आदि हैं।

६२०४ गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। भा० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध मे जीत का यन्त्र, सीधा जाने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा हालस्मीसप्रभाविकस्तोत्र हैं ।

६२१२ गुटका स० १६८ । पत्र स० १२-३६ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२१३ ।

विशेष—वृन्द सतसई है ।

६२१३ गुटका स० १६६ । पत्र स० ४० । आ० ८३×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१४ ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्रों का सग्रह है ।

६२१४ गुटका स० १७० । पत्र स० ६६ । आ० ८५×५३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१५ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एव रत्नकोश हैं ।

६२१५ गुटका स० १७१ । पत्र स० ३-८१ । आ० ५३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१६ ।

विशेष—ब्रजतराम के पदों का सग्रह है । एक पद हरीसिंह का भी है ।

६२१६ गुटका स० १७२ । पत्र स० ५१ । आ० ५५×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१७ ।

विशेष—प्रायुर्वेदिक नुसले एव रति रहस्य है ।

अवशिष्ट-साहित्य

६२१७ अष्टोत्तरीस्नानविधि । पत्र स० १ । आ० १०×५३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । र० काल × । ले० का० × । पूर्ण । वे० स० २६१ । अ भण्डार ।

६२१८ जन्माष्टमीपूजन । पत्र स० ७ । आ० ११३×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । वे० स० ११५७ । अ भण्डार ।

६२१९ तुलसीविवाह । पत्र स० ५ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—विधिविधान । र० काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० स० २२२२ । अ भण्डार ।

६२२० परमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण) । पत्र स० २ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—नापने तथा तोलने की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०३७ । अ भण्डार ।

६२२१ प्रतिष्ठापाठविधि—। पत्र सं २ । मा ५६१ ह । माता-स्त्री । विषय-पुत्र
विधि । १। कल ५। नै कल ५। पूर्ण । नै स ७७२। अ मन्थार ।

६२२२. प्रायश्चित्तचूषिकाटीका—नमिगुरु । पत्र सं २२ । मा ५८२ ह । माता-ईश्वरी ।
विषय—माता-ईश्वरी । १। कल ५। नै कल ५। पूर्ण । नै स २३ । अ मन्थार ।

विषय—माता-ईश्वरी के प्रतिविधि की थी । इसी मन्थार में एक प्रति (नै स २२६) भी है ।

६२२३ प्रति सं २ । पत्र सं १३ । नै कल ५। नै सं ६३ । अ मन्थार ।

विषय—टीका का नाम प्रायश्चित्त विविधयुक्ति विद्या है ।

६२२४ अक्षिरत्नाकर—बनमाझी भट्ट । पत्र सं १६ । मा ११३×२२ ह । माता-ईश्वरी । विष-
य-स्तोत्र । १। कल ५। नै कल ५। पूर्ण । भीर्ण । नै स २२६१ । अ मन्थार ।

६२२५ अक्षराहुतद्विद्या—अक्षराहुत । पत्र सं १७ । मा ११३×४ ह । माता-ईश्वरी । विष-
य-स्तोत्र । १। कल ५। नै कल ५। पूर्ण । नै सं २१ । अ मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति (नै स १२६) भी है ।

६२२६ विधि विद्या—। पत्र सं ७२-१२३ । मा १२×२२ ह । माता-ईश्वरी । विष-
य-विद्या । १। कल ५। नै कल ५। पूर्ण । नै स १३ । अ मन्थार ।

६२२७. प्रति सं २ । पत्र सं २२ । नै कल ५। नै स १६१ । अ मन्थार ।

६२२८. समवशाखपूजा—पलाकाळ बूनीबाजे । पत्र सं २ । मा १२३×४ ह । माता-
स्त्री । विषय-पूजा । १। कल सं १६२१ । नै कल ५। पूर्ण । नै सं ७७२ । अ मन्थार ।

६२२९. प्रति सं २ । पत्र सं ४३ । नै कल सं १५२६ माता-पुत्री । १। नै सं ७७७ । अ
मन्थार ।

विषय—इसी मन्थार में एक प्रति (नै सं ७७६) भी है ।

६२३० प्रति सं ३ । पत्र सं ७२ । नै कल सं १६२ माता-पुत्री । नै स १ । अ
मन्थार ।

६२३१ प्रति सं ४ । पत्र सं ११६ । नै कल ५। नै सं १७ । अ मन्थार ।

६२३२. अनुबन्धनोपवीसवीर्णपूजा—। पत्र सं २ । मा ११३×२३ ह । माता-स्त्री ।
विषय-पूजा । १। कल ५। नै कल ५। पूर्ण । नै स २३ । अ मन्थार ।



ग्रन्थानुक्रमिका

अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	वृष्ट सं०
अक्षर योस्वन घाता	—	(हि०)	६८१	अक्षयदशमीकथा	ललितकीर्ति	(म०)	६६५
अक्षरचरित्र	—	(हि० ग०)	१६०	अक्षयदशमाविधान	—	(म०)	५३८
अक्षरचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६०	अक्षयनिधिपूजा	—	(स०)	४५४
अक्षरद्वेय तथा	—	(म०)	२१३			५०६, ५३६, ७६३	
अक्षरकुनाटा	मकननलाल	(हि०)	३१६	अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	(हि०)	४५४
अक्षरकृष्ण	भट्टाक्षर	(स०)	५७५	अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानप्रतकथा	—	(स०)	२१३
		६३७, ६४६, ७१२		अक्षयनिधिमण्डल [मण्डलचित्र]	—		५२५
अक्षरकृष्ण	—	(स०)	३७६	अक्षयनिधिविधान	—	(स०)	४५४
अक्षरकृष्णभाषा	सदासुख कामलीवाल	(हि०)	३७६	अक्षयनिधिविधानकथा	—	(म०)	२४४
अक्षरकृष्ण	—	(हि०)	७६०	अक्षयनिधिप्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
अक्षरपनाचार्यपूजा	—	(हि०)	६८६	अक्षयविधानकथा	—	(म०)	२४६
अक्षरमदवार्ता	—	(हि०)	३२४	अक्षरवावनी	द्यानतराय	(हि०)	६७६
अक्षरमजिनचैत्यालयजयमान	—	(प्रा०)	४५३	अक्षरपुराण	पंडिताचार्य अरुणमणि	(म०)	१४२
अक्षरमजिनचैत्यालय जयमाल भगवतीदास	(हि०)	६६४		अक्षरनाथपुराण	विजयसिंह	(मप०)	१४२
		७२०		अक्षरशान्तिजिनस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
अक्षरमजिनचैत्यालय जयमाल	—	(हि०)	७०४, ७४६	अक्षरशान्तिस्तवन	नन्दिपेण	(प्रा०)	३७६
अक्षरमजिनचैत्यालयपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४५४			६८१	
अक्षरमजिनचैत्यालयपूजा	—	(स०)	५१५	अक्षरशास्तिस्तवन	—	(प्रा० स०)	३८१
अक्षरमजिनचैत्यालय वर्णन	—	(हि०)	७६३	अक्षरशास्तिस्तवन	—	(स०)	३७६
अक्षरमजिनचैत्यालयपूजा	जिनदास	(स०)	४५३	अक्षरशास्तिस्तवन	मेरुनन्दन	(हि०)	६१६
अक्षरमजिनचैत्यालयपूजा	चैनसुख	(हि०)	४५३	अक्षरशास्तिस्तवन	—	(हि०)	६१६
अक्षरमजिनचैत्यालयपूजा	लालजीत	(हि०)	४५३	अक्षरशास्तिस्तवन	—	(स०)	४२३
अक्षरमजिनचैत्यालयपूजा	पाडे जिनदास	(स०)	४५३	अक्षरश्रीमङ्गरी	काशीराज	(स०)	२६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ग्रन्तव्रतपूजा	श्री भूपण	(स०)	५१५	ग्रनेकार्थमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७१ ७६६
ग्रन्तव्रतपूजा	—	(स०)	४५७	ग्रनेकार्थशत	भ० हर्षकीर्त्ति	(स०)	२७१
			५३६, ६६३, ७२८	ग्रनेकार्थसंग्रह	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	२७१
ग्रन्तव्रतपूजा	भ० विजयकीर्त्ति	(हि०)	४५७	ग्रनेकार्थसंग्रह [महीपकोष]	—	(स०)	२७१
ग्रन्तव्रतपूजा	साह सेवगराम	(हि०)	४५७	ग्रन्तरायवर्णन	—	(हि०)	५६०
ग्रन्तव्रतपूजा	—	(हि०)	५१८	ग्रन्तरिक्षपाशर्वनायाष्टक	—	(स०)	५६०
			५१६, ५८६, ७२८	ग्रन्थयोगव्यवच्छेदकद्वयशिक्षा	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	५७३
ग्रन्तव्रतपूजाविधि	—	(स०)	४५७	ग्रन्थस्कूट पाठ सत्र	—	(हि०)	६२७
ग्रन्तव्रतविधान	मदनकीर्त्ति	(स०)	२१४	ग्रन्तराधसूदनस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(स०)	६६२
ग्रन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	५६०	ग्रन्थदत्तेवली	—	(स०)	२७६
ग्रन्तव्रतोद्यापनपूजा	श्री० गुणचन्द्र	(स०)	४५७	ग्रन्थिज्ञान शाकुन्तल	कालिदास	(स०)	३१६
			५१३, ५३६, ५४०	ग्रन्थिधानकोश	पुरुषोत्तमदेव	(स०)	२७१
ग्रन्थागारभक्ति	—	(स०)	६२७	ग्रन्थिधानचिन्तामणिनाममाला	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	२७१
ग्रन्थायी श्रृष्टि स्वाग्राम	—	(हि० गु०)	३७६	ग्रन्थिधानरत्नाकर	धर्मचन्द्रगणि	(स०)	२७२
ग्रन्थायानोचोढाल्या	खेम	(हि०)	४३५	ग्रन्थिधानसार	प० शिवजीलाल	(स०)	२७२
ग्रन्थायोसाध चौढालिया	विमलविनयगणि	(हि०)	६८०	ग्रन्थिपेक पाठ	—	(स०)	४५८
ग्रन्थायोमुनि सज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८				४ / ७६१
ग्रन्थायोमुनि सज्जाय	—	(हि०)	४३५	ग्रन्थिपेकविधि	लक्ष्मीसेन	(स०)	४५८
ग्रन्थादिनिधनस्तोत्र	—	(स०)	३७६, ६०४	ग्रन्थिपेकविधि	—	(स०)	३६८
ग्रन्थिटीकारिका	—	(स०)	२५७				४५८, ५७०
ग्रन्थिटीकारिकावचुरि	—	(स०)	२५७	ग्रन्थिपेकविधि	—	(हि०)	४५८
ग्रन्थित्यपञ्चोसी	भगवतीदास	(हि०)	६८६	ग्रन्थरकोश	अमरसिंह	(स०)	२७२
ग्रन्थित्यपञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	७५५	ग्रन्थरकोशटीका	भानुजी दीक्षित	(स०)	२७२
ग्रन्थभवनप्रकाश	दीपचन्द्र कासलीवाल	(हि०)	४८	ग्रन्थरचन्द्रिका	—	(हि०)	३०८
ग्रन्थभवनविलास	—	(हि०)	५११	ग्रन्थरुशतक	—	(स०)	१६०
ग्रन्थभवनानन्द	—	(हि० ग०)	४८	ग्रन्थतर्कमरसकाव्य	गुणचन्द्रदेव	(स०)	४८
ग्रनेकार्थध्वनिमञ्जरी	महीरूपणकवि	(स०)	२७१	ग्रन्थतसागर	म० नवाई प्रतापसिंह	(हि०)	२६६
ग्रनेकार्थध्वनिमञ्जरी	—	(स०)	२७१	ग्रन्थरहना सज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
ग्रनेकार्थनाममाला	नन्दिकवि	(हि०)	७०६	ग्रन्थरहन्तस्तवन	—	(स०)	३७६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा वृत्त सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा वृत्त सं०
धर्मविपश्यनसूत्रा	—	(धं) ४११	धार्मीधर ना तन्त्रवन्दन	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	—	(धं) १४	धार्मीधरस्तवय	वित्तवन्त्र	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	सुतासप्तम्य	(धि) ७११	धार्मीधरविमर्शित	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	केशवसेन	(धं) ४११	धार्मीधरवर्णना	रामकसोम	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	—	(धं) १४	धार्मीधरवर्णना	म० केशवीचम्	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	म० ज्ञानसागर	(धि) ७०७	धार्मीधरवर्णना	राहुचार्प	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	सुनि हेमचन्द्र	(धि) ४११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	मनहारदेव	(धि) १११	धार्मीधरवर्णना	विद्यानन्दि	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	रामचन्द्र	(धि) ४११ ११	धार्मीधरवर्णना	समस्तभद्राचार्य	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	म० शक्तिशक्ति	(धि) ७११	धार्मीधरवर्णना	वपचम् शक्ति	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	सेवकपाम	(धि) १०४	धार्मीधरवर्णना	विद्यानन्दि	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	—	(धि) ४११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	—	(धि) ७०४ ७११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	कलकलीति	(धि) ७११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	—	(धि) ४११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	कवि पद्म	(धि) ७१	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	समस्तभद्र	(धि) १११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	—	(धि) ११४	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	विमलनाथ	(धं) १११ १११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	गुणदेव	(धं) १११ १११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	वीरवर्ण	(धि) ११४	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	प्रभाकर	(धं) १११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धर्मविपश्यनसूत्रा	गङ्गादास	(धि) ७१	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धार्मीधर धारणी	—	(धि) ११४	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धार्मीधरवर्णना	रङ्गविजय	(धि) ७०१	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धार्मीधरवर्णना	गुणदेव	(धि) ७११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धार्मीधरवर्णना	—	(धि) ४११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धार्मीधरवर्णना	शक्तिमूर्ध	(धि) ११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११
धार्मीधरवर्णना	महाकाशीति	(धि) १११	धार्मीधरवर्णना	—	(धि) १११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
भारती पञ्चपरमेष्ठी	प० चिमना	(हि०) ७६१	आश्रव वर्णन	—	(हि०) २
भारती सरस्वती	ब्र० जिनदास	(हि०) ३८६	भाषादभूति चौडालिया	कनकसोम	(हि०) ६१७
भारती सग्रह	ब्र० जिनदास	(हि०) ३८६	भाहार के ४६ दोपनर्णन	भैया भगवतीदास	(हि०) ५०
भारती सग्रह	द्यानतराय	(हि०) ७७७	इ		
भारती सिद्धो की	खुशालचन्द	(हि०) ७७७	इक्कीसठाणाचर्चा	सिद्धसेन सूरि	(प्रा०) २
भाराधना	—	(प्रा०) ४३२	इन्द्रजाल	—	(हि०) ३४७
भाराधना	—	(हि०) ३८०	इन्द्रवज्रपूजा	विश्वभूषण	(स०) ४६२
भाराधना क्या कोदा	—	(स०) २१६	इन्द्रवज्रमण्डलपूजा	—	(स०) ४६२
भाराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	(हि०) ६५८	इष्टछत्तीसी	बुधजन	(हि०) ६६१
भाराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	(हि०) ६८५	इष्टछत्तीसी	—	(हि०) ७६० ७६३
भाराधना प्रतिबोधसार	—	(हि०) ७८२	इष्टोपदेश	पूज्यपाद	(न०) ३८०
भाराधना विधान	—	(स०) ४६२	इष्टोपदेशटीका	प० आशाधर	(स०) ३८०
भाराधनासार	देवसेन	(प्रा०) ४६	इष्टोपदेशभाषा	—	(हि०) ७५५
५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४			इष्टोपदेशभाषा	—	(हि० गद्य) ३८०
भाराधनासार	जिनदास	(हि०) ७५७	ईश्वरवाद	—	(न०) १३१
भाराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचन्द	(स०) २१६	उ		
भाराधनासारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०) ४६	उच्चग्रहफल	वलदत्त	(न०) २७६
भाराधनासारभाषा	—	(हि०) ५०	उणादिसूत्रसग्रह	उज्ज्वलदत्त	(न०) २५७
भाराधनासार वचनिका	वा० दुलीचन्द	(हि० ग०) ५०	उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	(स०) १६५ ४१५
भाराधनासारवृत्ति	प० आशाधर	(न०) ५०	उत्तरपुराणटिप्पण	प्रभाचन्द	(स०) १४५
भारामशोभाकथा	—	(स०) २१७	उत्तरपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि० पद्य) १४५
भालापपद्धति	देवसेन	(स०) १३०	उत्तरपुराणभाषा	सची पन्नालाल	(हि० गद्य) १४६
भालोचना	—	(प्रा०) ५७२	उत्तराध्ययन	—	(प्रा०) २
भालोचनापाठ	जौहरीलाल	(हि०) ५६१	उत्तराध्ययनभाषाटीका	—	(हि०) ३
भालोचनापाठ	—	(हि०) ४२६	उदयसत्तावाधप्रकृतिवर्णन	—	(स०) ३
		६८५, ७६३, ७४६	उद्वगोपीसवाद	रसिकरास	(हि०) ६६४
आश्रवत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०) २	उद्वगोपीसवाद	—	(स०) १६०
आश्रवत्रिभङ्गी	—	(प्रा०) ७००	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	(हि०) ३२४
आश्रवत्रिभङ्गी	—	(हि०) २	उपदेशपञ्चीसी	—	(हि०) ६५६

मन्थनाम	लोकक	भाषा पृष्ठ सं	मन्थनाम	लोकक	भाषा पृष्ठ सं
अनुरोधपल्लवा	सप्तमसूत्रम्	(ब) १	अविद्ययक	स्वरूपमन्थ विज्ञाता	(हि) ११११
अनुरोधपल्लवा	परमेश्वरसिद्धि	(ग) ७१८	अपमन्यवसुति	विज्ञासेन	(ब) ११
अनुरोधपल्लवाभावा	—	(ग) १२	अपमन्यवसुति	पद्मनन्दि	(ग) १११११
अनुरोधपल्लवाभावा	देवीसिद्धि आनन्दा	(हि) ५७	अपमन्यवसुति	म० सप्तमीसिद्धि	(ब) १५
अनुरोधपल्लवाभावा	वा बुद्धीचन्द्र	(हि) ११	अपमन्युति	—	(ब) ११
अनुरोधपल्लवा	दानतण्डुल	(हि) १११ ७७०	अपमन्युति [विद्य]	—	११
अनुरोधपल्लवा	देवसिद्धि	(हि) १११	अपमन्युति	आ गुणनन्दि	(ब) ११
अनुरोधपल्लवा	रगसिद्धि	(हि) १११	अपमन्युति	मुनि ज्ञानमूष	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	अपि रामचन्द्र	(हि) ११	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	मंजारी नेमिचन्द्र	(ग) ११	अपमन्युति	शैलज आसेरी	(हि) ११
अनुरोधपल्लवा	आगच्छ	(हि) ११	अपमन्युति	—	(हि) ७१
अनुरोधपल्लवा	—	(ग) ५११	अपमन्युति	सद्गुरु कालीदास	(हि) ७१
अनुरोधपल्लवा	—	(ब) १७१	अपमन्युति	—	(ब) ११
अनुरोधपल्लवा	—	(हि) १७१	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	—	(हि) ७१	अपमन्युति	गीतमन्थमी	(ब) ११
अनुरोधपल्लवा	पूर्वमन्थान्वय	(ब) ११	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	—	(ग) ५१५	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	बुधचार्म	(ब) ११	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	—	(ब) ११७	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	—	(ब) ११७	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	—	(ब) १११	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	आ अक्षमीचन्द्र	(ग) ११	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	—	(ब) ११	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	—	(ब) ७११	अपमन्युति	—	(ब) १११११
श्रु			अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	अमन्युति	(ग) १११	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	अमन्युति	(ग) १११	अपमन्युति	—	(ब) १११११
अनुरोधपल्लवा	—	(ब) ७११	अपमन्युति	—	(ब) १११११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
एकीभावस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(स०)	४०१	कथासंग्रह	—	(स० हि०)	२२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदाम	(हि०)	३८३	कथासंग्रह	—	(प्रा० हि०)	२२०
	४२६, ४४८, ६५२, ६६२, ७१६, ७२०			कथासंग्रह	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८३	कथासंग्रह	—	(हि०)	७३७
एकीभावस्तोत्रभाषा	जगजीवन	(हि०)	६०५	बपडामाना का दूहा	सुन्दर	(राज०)	७७३
एकीभावस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३८३	कमलाष्टक	—	(स०)	६०७
एकश्लोकरामायण	—	(स०)	६४६	कथयन्नाचोपई	जिनचन्द्रमूरि	(हि० रा०)	२२१
एकीश्लोकभागवत	—	(स०)	६४६	करकण्डुचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(स०)	१६१
औ				करकुण्डचरित्र	मुनि कनकामर	(अप०)	१६१
				करणाकौतूहल	—	(स०)	२७६
प्रौपयियों के नुमखे	—	(हि०)	५७५	करलक्षणा	—	(प्रा०)	२७६
क				करणाष्टक	पद्मनन्दि	(स०)	६३३
						६३७, ६६८	
कक्का	गुलावचन्द्र	(हि०)	६४३	करणाष्टक	—	(हि०)	६४२
कक्कावत्तीसी	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७६	कर्णपिशाचिनीयन्त्र	—	(स०)	६१२
कक्कावत्तीसी	नन्दराम	(हि०)	७३२	कर्पूरचक्र	—	(स०)	२७६
कक्कावत्तीसी	मनराम	(हि०)	७२३	कर्पूरप्रकरणा	—	(म०)	३२५
कक्कावत्तीसी	—	(हि०)	६५१	कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर	(म०)	३१६
	६७५, ६८५, ७१३, ७१५, ७२३, ७४१			कर्मग्रन्थसत्तरी	—	(प्रा०)	३
कक्का विनती [वारहखंडी]	धनराज	(हि०)	६२३	कर्मचूर [मण्डलचित्र]	—		५२५
कच्छावतार [चित्र]	—		६०३	कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्ति	(हि०)	५६२
कछ्वाहा वशके राजाओंके नाम	—	(हि०)	६८०	कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	लक्ष्मीसेन	(स०)	४६४, ५१६
कछ्वाहा वश के राजाओंकी वशावलि	—	(हि०)	७६७	कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	(म०)	५०६, ४६४, ५४०
कठियार कानढरीचोपई	मानसागर	(हि०)	२१८	कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
कथाकोश	हरिपेणाचार्य	(स०)	२१६	कर्मछत्तीसी	—	(हि०)	६८६
कथाकोश [भारधनाकथाकोश]	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	२१६	कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	(स०)	५६०
कथाकोश	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	२१६	कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	४६५
कथाकोश	—	(स०)	२१६			५३७, ६४५	
कथाकोश	—	(हि०)	२१६	कर्मदहनपूजा	—	(स०)	४६५
कथारत्नसागर	नारचन्द्र	(स०)	२२०			५१७, ५४०, ७६१	
कथासंग्रह	—	(स०)	३२०				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(म०)	३८४	कवित्त	वनारसीदास	(हि०)	७०६, ७७३
४०२, ४२५, ४३०, ४३१, ४३३, ५६५, ५७२, ५७५				कवित्त	मोहन	(हि०)	७७२
५६५, ६०५, ६१५, ६१६, ६३३, ६३७, ६५१, ६८०				कवित्त	धुन्दावनदास	(हि०)	६८२
६८१, ६८३, ७०१, ७३१, ७६३				गयित्त	सन्तराम	(हि०)	६६२
कल्याणमन्दिरस्तोत्रदीका	—	(म०)	३८५	कवित्त	सुगलाल	(हि०)	६५६
कल्याणमन्दिरस्तोत्रवृत्ति	देवतिलक	(स०)	३८५	कवित्त	सुन्दरदाम	(हि०)	६४३
कल्याणमन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीका	—	(म० हि०)	६८१	कवित्त	संवग	(हि०)	७७२
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	पन्नलाल	(हि०)	३८५	कवित्त	—	(राज० ढिगल)	७७०
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	(हि०)	३८५	कवित्त	—	(हि०)	६८१
४०६, ५६६, ५६६, ६०३, ६०४, ६२२, ६४३, ६४८, ६६२, ६६५, ६७७, ७०३, ७०५					७१७, ७५८, ७६०, ७६३, ७६७, ७७१		
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	मेलीराम	(हि०)	७८६	कवित्त	सुगलाल	(हि०)	७८२
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	३८५	कवित्तमग्न	—	(हि०)	६५६, ७४३
कल्याणमन्दिरभाषा	—	(हि०)	६८६	कविप्रिया	केशवदेव	(हि०)	१६१
७४५, ७४५, ७५५, ७५८, ७६८				कविवल्लभ	हरिचरणदाम	(हि०)	६८८
कल्याणमाना	प० आशाधर	(स०)	५७५, ३८५	कदापुट	मिद्वनागार्जुन	(म०)	२६७
कल्याणविधि	मुनि विनयचन्द्र	(म०)	६४१	कातन्त्रदीका	—	(म०)	२५७
कल्याणाष्टकस्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०)	५७८	कातन्त्ररूपमालाटीका	दौर्गसिंह	(म०)	२५८
कलचन्द्रापरपत्रकल्या	—	(स०)	२०१, २४६	कातन्त्ररूपमालावृत्ति	—	()	२५८
कविकर्पटी	—	(प०)	३०६	कातन्त्रविभ्रमसूभावचूरि चारित्र्यमिह	—	()	२५७
कवित्त	अमदास	(हि०)	७६८	कातन्त्रव्याकरण	शिवधर्मा	(म०)	२५६
कवित्त	कन्हैयालाल	(हि०)	७८०	कादम्बरीटीका	—	(स०)	१६१
कवित्त	केसवदास	(हि०)	६४३	कामन्दकीयनीतिसारभाषा	—	(हि०)	३२६
कवित्त	गिरधर	(हि०)	७७२ ७८६	कामशान्त्र	—	(हि०)	७३७
कवित्त	म० गुलाल	(हि०)	६७०, ६८२	कामसूत्र	कविहाल	(प्रा०)	३५३
कवित्त	झीहल	(हि०)	७७०	कारकप्रक्रिया	—	(स०)	२५६
कवित्त	जयकिशन	(हि०)	६४३	कारकविवेचन	—	(स०)	२५६
कवित्त	देवीदास	(हि०)	६७५	कारकसमासप्रकरण	—	(स०)	२५६
कवित्त	पद्माकर	(हि०)	७५६	कारखानो के नाम	—	(हि०)	७५६
				कार्तिकेयानुप्रेक्षा	स्वामी कार्तिकेय	(प्रा०)	१०३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं
क्षणासारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविधदेव	(सं०)	७	खण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	३७०
क्षणासारभाषा	५० टोडरमल	(हि०)	७	खण्डेलवालो की उत्पत्ति	—	(हि०)	७०२
क्षमाद्वत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७	खण्डेलवालो की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	—	(हि०)	७२१
क्षमावत्तीसी	जितचन्द्रसूरि	(हि०)	५८	खण्डेला की चरचा	—	(हि०)	७०२
क्षमावर्णोपूजा	ब्रह्मसेन	(सं०)	५६४	खण्डेला की वग्नावलि	—	(हि०)	७५६
क्षीर नीर	—	(हि०)	७६२	ख्याल गागाचन्दका	—	(हि०)	२२२
क्षीरव्रतनिधिपूजा	—	(सं०)	५१५	ग			
क्षीरोदानीपूजा	अभयचन्द्र	(सं०)	७६३				
क्षेत्रपाल की भारती	—	(हि०)	६०७	गजपथामण्डलपूजा	भ० क्षेमेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४६८
क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	(हि०)	६२३	गजमोक्षकथा	—	(हि०)	६००
क्षेत्रपाल जयमाल	—	(हि०)	७६३	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूर	(सं०)	१६३
क्षेत्रपाल नामावली	—	(सं०)	३८६	गढाराशांतिकविधि	—	(सं०)	६१२
क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	(सं०)	६८६	गणधरचरणारविदपूजा	—	(सं०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(सं०)	४६७	गणधरजयमाल	—	(प्रा०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	—	(सं०)	४६८	गणधरवल्यपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	६६०
	५१५, ५१७, ५६७, ६४०, ६५५, ७६३			गणधरवल्यपूजा	आशाधर	(सं०)	७६१
क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्ति	(हि०)	७१३	गणधरवल्यपूजा	—	(सं०)	४६६
क्षेत्रपाल भैरवी गीत	शोभाचन्द्र	(हि०)	७७७		५१५, ६३६, ६८५, ७६१		
क्षेत्रपालस्तोत्र	—	(सं०)	३४७	गणधरवल्य [मङ्गलचित्र]	—		१२५
	५६१, ५७५, ६४४, ६४६, ६४७			गणधरवल्यमन्त्र	—	(सं०)	६०७
क्षेत्रपालाष्टक	—	(सं०)	६५५	गणधरवल्यमन्त्रमङ्गल [कोठे]	—	(हि०)	६३८
क्षेत्रपालव्यवहार	—	(सं०)	२८०	गणपाठ	वादिपराज जगन्नाथ	(सं०)	२५६
क्षेत्रसमासटीका	हरिभद्रसूरि	(सं०)	५४	गणपार	—	(सं०)	५४
क्षेत्रसमासप्रकरण	—	(प्रा०)	५४	गणितनामामाला	—	(सं०)	३६८
ख				गणितशास्त्र	—	(सं०)	३६८
				गणितसार	हेमराज	(हि०)	३६८
खण्डप्रशस्तिकाव्य	—	(सं०)	१६३	गणेशछन्द	—	(हि०)	७५३
खण्डेलवालगीत	—	(हि०)	७५६	गणेशद्वन्द्वनाम	—	(सं०)	६४६
खण्डेलवालो के ८४ गोत्र	—	(हि०)	७६०	गर्गमनोरमा	—	(सं०)	२८०
				गर्गसहिता	गर्गकृपि	(सं०)	२८०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
गोम्मटसार [कर्मकाण्ड] भाषा प० टोडरमल (हि०)			१३	ग्यारह अंग एव चौदह पूर्व का वर्णन —		(हि०)	६२
गोम्मटसार [कर्मकाण्ड] भाषा हेमराज (हि०)			१३	ग्रहप्रवेश विचार	—	(स०)	५७
गोम्मटसार [जीवकाण्ड] नेमिचन्द्राचार्य (प्रा०)			६	ग्रहविवलक्षण	—	(स०)	५७
गोम्मटसार [जीवकाण्ड] (तत्त्वप्रदीपिका)		(स०)	१२	ग्रहदशावर्णन	—	(स०)	२८
गोम्मटसार [जीवकाण्ड] भाषा टोडरमल (हि०)			१०	ग्रहफल	—	(हि०)	६६
गोम्मटसारटीका धर्मचन्द्र (स०)			६	ग्रहफल	—	(स०)	२८
गोम्मटसारटीका सकलभूषण (स०)			१०	ग्रहो की ऊर्चाई एव आयुवर्णन	—	(हि०)	३१६
गोम्मटसारभाषा टोडरमल (हि०)			१०	घ			
गोम्मटसारपीठिकाभाषा टोडरमल (हि०)			११				
गोम्मटसारवृत्ति केशववर्णी (स०)			१०				
गोम्मटसारवृत्ति — (स०)			१०				
गोम्मटसार संहति प० टोडरमल (हि०)			१२				
गोम्मटसारस्तोत्र — (स०)			३८७	घटकर्पूरकाव्य	घटकर्पूर	(स०)	१६५
गोरखपदावली गोरखनाथ (हि०)			७६७	घग्घरनिसाणी	जिनहर्ष	(स०)	३८७, ७३५
गोरखसवाद — (हि०)			७६४	घण्टाकर्णकल्प — (स०)			३४७
गोविंदाष्टक शङ्कराचार्य (स०)			७३३	घण्टाकर्णमन्त्र — (स०)			३४७
गौडीपार्श्वनायस्तवन जोधराज (राज०)			६१७	घण्टाकर्णमन्त्र — (हि०)			६५०, ७६२
गौडीपार्श्वनायस्तवन समयसुन्दरगणि (राज०)			६१७ ६१६	घण्टाकर्णवृद्धिकल्प — (हि०)			३४८
गौतमकुलक गौतमस्वामी (प्रा०)			१४	च			
गौतमकुलक — (प्रा०)			१४				
गौतमपृच्छा — (प्रा०)			६४३				
गौतमपृच्छा समयसुन्दर (हि०)			६१६				
गौतमरासा — (हि०)			७५४				
गौतमस्वामीचरित्र धर्मचन्द्र (स०)			१६३	चउबीसीठाणाचर्चा — (हि०)			७००
गौतमस्वामीचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (स०)			१६३	चवसरप्रकरण — (प्रा०)			५४
गौतमस्वामीरास — (हि०)			६१७	चक्रवर्ति की बारहभावना — (हि०)			१०५
गौतमस्वामीसञ्ज्ञाय समयसुन्दर (हि०)			६१८	चक्रे श्वरीस्तोत्र — (स०)			३४८
गौतमस्वामी सञ्ज्ञाय — (हि०)			६१८				३८७, ४३२, ४२८, ६४७
गधकुटीपूजा — (स०)			५१७	चतुर्गति की पद्धती — (अप०)			६४२
				चतुर्दशगुणसंगानचर्चा — (हि०)			६८४
				चतुर्दशतीर्थस्नानपूजा — (स०)			६७२
				चतुर्दशमार्गाणावर्चा — (हि०)			६७१
				चतुर्दशसूत्र विनयचन्द्र (सं०)			१४
				चतुर्दशसूत्र — (प्रा०)			१४
				चतुर्दशागवाह्यविवरण — (स०)			१४
				चतुर्दशीकथा टीकम (हि०)			७५४, ७७३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
दनपष्ठीव्रतपूजा	चोखचन्द	(स०)	४७३		चन्द्रहसकथा	हर्षकवि	(हि०)	७१४	
दनपष्ठीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	४७३		चन्द्रावलोक	—	(स०)	३०६	
न्दनपष्ठीव्रतपूजा	विजयकीर्ति	(स०)	५०६		चन्द्रोन्मीलन	—	(स०)	२५६	
न्दनपष्ठीव्रतपूजा	शुभचन्द्र	(स०)	४७३		चमत्कारप्रतिशयक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४७४	
न्दनपष्ठीव्रतपूजा	—	(स०)	४७४		चमत्कारपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११	
न्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	(स०)	१६४					६६३, ७५६	
न्दनाचरित्र	मोहनविजय	(गु०)	७६१		चम्पाशतक	चम्पाबाई	(हि०)	४३७	
न्द्रकीर्तिछन्द	—	(हि०)	३८६		चरचा	—	(प्रा०, हि०)	६६५	
न्द्रकु वर की वार्ता	प्रतापसिंह	(हि०)	२२३		चरचा	—	(हि०)	६५२, ७५५	
न्द्रकु वरकी वार्ता	—	(हि०)	७११		चरचावर्णन	—	(हि०)	१५	
न्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	(हि०)	७१८		चरचाशतक	द्यानतराय	(हि०)	१४	
			७२३, ७३८					६६४, ७६४	
चन्द्रगुप्तके सोलह स्वप्नोंका फल	—	(हि०)	६२१		चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि०)	१५	
चन्द्रप्रज्ञप्ति	—	(प्रा०)	३१६					६०६, ६४६, ७३३	
चन्द्रप्रभचरित्र	वीरनन्दि	(स०)	१६४		चर्चासागर	चम्पालाल	(हि०)	१६	
चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका	गुणनन्दि	(स०)	१६५		चर्चासागर	—	(हि०)	१६	
चन्द्रप्रभचरित्र	शुभचन्द्र	(स०)	१६४		चर्चासार	शिवजीलाल	(हि०)	१६	
चन्द्रप्रभचरित्र	दामोदर	(भ्रप०)	१६५		चर्चासार	—	(हि०)	१६	
चन्द्रप्रभचरित्र	यश कीर्ति	(भ्रप०)	१६५		चर्चासंग्रह	—	(स० हि०)	१५	
चन्द्रप्रभचरित्र	जयचन्द छावडा	(हि०)	१६६		चर्चासंग्रह	—	(हि०)	१५, ७१०	
चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका	—	(स०)	१६५		चटुगति चौपई	—	(हि०)	७६२	
चन्द्रप्रभजिनपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	४७४		चाणक्यनीति	चाणक्य	(स०)	३२६	
चन्द्रप्रभजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७४					७२३, ७६८	
चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	(हि०)	१४६		चाणक्यनीतिभाषा	—	(हि०)	३२७	
चन्द्रप्रभपूजा	—	(स०)	५०६		चाणक्यनीतिसारसंग्रह	मथुरेश भट्टाचार्य	(स०)	३२७	
चन्द्रलेहारास	मतिकुशल	(हि०)	३६१		चादनपुरके महावीरकीपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(स०)	५४८	
चन्द्रवरदाई की वार्ता	—	(हि०)	६७६		चामुण्डस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	(स०)	३८८	
चन्द्रसागरपूजा	—	(हि०)	७३३		चामुण्डोपनिषद्	—	(स०)	६०८	
चन्द्रहसकथा	टीकमचन्द	(हि०)	२२४, ६३६		चारभावना	—	(स०)	५५	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं
चतुर्विधवा	डाक्षराम	(हि) ७४२	चतुर्विधविधीर्बहुपुत्रक	चतुर्विधिति	(व) ११४
चतुर्विधविधानकथा	—	(व) ११२	चतुर्विधतिपुत्रा	—	(हि) ४३१
चतुर्विधवृत्तपुत्रा	—	(ल) ४१६	चतुर्विधतिप्रधान	—	(हि) १४४
चतुर्विधव्यस	—	(व) १३	चतुर्विधतिविनयी	चतुर्विधिति	(हि) ११२
चतुर्विधति	शुद्धकीर्ति	(हि) १११	चतुर्विधतिप्रतोषादय	—	(व) ११६
चतुर्विधतिपुत्रस्तानीतिहा	—	(व) १३	चतुर्विधतिप्रधानक	नमिचन्द्राचार्य	(म) १
चतुर्विधतिप्रधानम	यति माधवनि	(न) ४१६	चतुर्विधतिप्रधानपुत्रा	—	(व) ११६
चतुर्विधतिविनयी	रामचन्द्र	(हि) ७१६	चतुर्विधतिप्रधान	—	(न) १३७ ४११
चतुर्विधतिविधानप्रमुखि	विद्वत्सिंहसूरि	(हि) ७०	चतुर्विधतिपुत्रि	—	(म) ७४
चतुर्विधतिविधानप्रधान	अयसागर	(हि) १११	चतुर्विधतिपुत्रि	विनायीसम्भ	(हि) ७३१
चतुर्विधतिविधानपुत्रि	विद्वत्सामसूरि	(व) १७	चतुर्विधतिप्रतोष	भूवरदास	(हि) ४१६
चतुर्विधतिविधानपुत्र	शुद्धचन्द्र	(न) १७	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १३१
चतुर्विधतिविधानपुत्र	अयसागर	(म) १३७	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(न) १६१
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	—	(न) ४७ १४२	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	न दीक्षित पाठनी	(हि) ४७२	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	वक्ताचरणा	(हि) ४७१	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	मनोहरा	(हि) ४७१	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	रामचन्द्र	(हि) ४७२	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	बुद्धावन	(हि) ४७१	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	सुगनचन्द्र	(हि) ४७१	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	सुवारास साह	(हि) ४७	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	—	(हि) ४७१	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	हेमचन्द्रसूरि	(हि) ४७१	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	कमलविद्याधर	(न) १३७	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	चन्द्र	(हि) ७१	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	समन्तधर	(न) १४७	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	—	(न) १३७	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	माधवनि	(व) १३७ १३७	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४
चतुर्विधतिविधानपुत्रा	—	(न) १	चतुर्विधतिप्रतोष	—	(व) १०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रमसं०
शैत्यवदना	सकलचन्द्र	(म०)	६६८	चौबीसतीर्थद्वरराम	—	(हि०)	७०
शैत्यवदना	—	(म०)	३८६	चौबीसतीर्थद्वरवर्णन	—	(हि०)	४३०
			३६२, ६५०, ७१८	चौबीसतीर्थद्वरस्तवन	देवनन्दि	(स०)	६०६
शैत्यवदना	—	(हि०)	४२६, ४३७	चौबीसतीर्थद्वरस्तवन लृणकरणाकामलीवाल	(हि०)	४३०	
चौभाराधनाज्योतककथा	जोधराज	(हि०)	२२५	चौबीसतीर्थद्वरस्तवन	—	(हि०)	६५०
चौतोस प्रतिगयभक्ति	—	(स०)	६२७	चौबीसतीर्थद्वरस्तुति	—	(प्रप०)	६२५
चौदश की जयमाल	—	(हि०)	७४२	चौबीसतीर्थद्वरस्तुति	ब्रह्मदेव	(हि०)	४३८
चौदहप्रणम्यान्वर्चा	अखयराज	(हि०)	१६	चौबीसतीर्थद्वरस्तुति	—	(हि०)	६०१, ६६६
चौदहपूजा	—	(स०)	४७६	चौबीसतीर्थद्वर के चिह्न	—	(म०)	६२३
चौदहमार्गणा	—	(हि०)	१६	चौबीसतीर्थद्वरों के पञ्चकल्याणक की तिथिया—	(हि०)	५३८	
चौदहविद्या तथा कारखानेजाते के नाम	—	(हि०)	७५६	चौबीसतीर्थद्वरों की वदना	—	(हि०)	७७५
चौबीसगणधरस्तवन	गुणकीर्ति	(हि०)	६८६	चौबीसदण्डक	दौलतराम	(हि०)	५६
चौबीसजिनमातपितास्तवन	आनन्सूरि	(हि०)	६१६		४२६, ४४८, ५११ ६७२, ७६०		
चौबीसजिनदजयमाल	—	(प्रप०)	६३७	चौबीसदण्डकविचार	—	(हि०)	७३२
चौबीसजिनस्तुति	सोमचन्द्र	(हि०)	४३७	चौबीसस्तवन	—	(हि०)	३८६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(स०)	१८, ७६५	चौबीसोमहाराज [मङ्गलचित्र]	—		५२४
चौबीसठाणाचर्चा	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१६	चौबीसो यिनती	भ० रत्नचन्द्र	(हि०)	६४६
			७२०, ६६६	चौबीसोस्तवन	जयसागर	(हि०)	७७६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(हि०)	१८	चौबीसोस्तुति	—	(हि०)	६३७, ७७३
			६२७, ६७०, ६८०, ६८६, ६८८, ७८८	चौबीसोभ्रसादना	—	(हि०)	५७
चौबीसठाणाचर्चावृत्ति	—	(स०)	१८	चौबीसोगीत	—	(हि०)	६८०
चौबीसतीर्थद्वरतीर्थपरिचय	—	(हि०)	४३७	चौबीसो गोश्रावतिवर्णन	—	(हि०)	७८६
चौबीसतीर्थद्वरपरिचय	—	(हि०)	५६४	चौबीसो जातिकी जयमाल	विनोदीलाल	(हि०)	३७०
			६२१, ७००, ७५१	चौबीसो जातिछन्द	—	(हि०)	३७०
चौबीसतीर्थद्वरपूजा [समुच्चय]	द्यानतराय	(हि०)	७०५	चौबीसो जातिकी जयमाल	—	(हि०)	७४०
चौबीसतीर्थद्वरपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	६६६	चौबीसो जाति भेद	—	(हि०)	७४८
			७१२, ७२७, ७७२	चौबीसो जातिवर्णन	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थद्वरपूजा	—	(हि०)	५६२, ७२७	चौबीसो न्यात की जयमाल	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थद्वरभक्ति	—	(स०)	६०४	चौबीसो न्यातमाला	ब्र० जिनदाम	(हि०)	७६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६६
जम्बूस्वामीचरित्र	—	(हि०)	६३६
जम्बूस्वामीचौपई	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१०
जम्बूस्वामीपूजा	—	(हि०)	४७७
जयकुमार सुलोचना कथा	—	(हि०)	२२५
जयतिहवणस्तोत्र	अभयदेवसूरि	(प्रा०)	७५४
जयपुरका प्राचीन ऐतिहासिकवर्णन	—	(हि०)	३७०
जयपुरके मदिराकी वदना स्वरूपचन्द्र	हि०) ४३८, ५३८		
जयमाल [मालारोहण]	—	(अप०)	५७३
जयमाल	रायचन्द्र	(हि०)	४७७
जलशालएरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६२
जलयात्रा [तीर्थोदकदानविधान]	—	(स०)	४७७
जलयात्रा	ब्र० जितदास	(स०)	६२३
जलयात्रापूजाविधान	—	(हि०)	४७७
जलयात्राविधान	प० आशावर	(स०)	४७७
जलहस्तेलाविधान	—	(हि०)	४७७
जलालगाहाणी की वार्ता	—	(हि०)	४७७
जातकसार	नाथूराम	(हि०)	६८४
जातकाभरण [जातकालङ्कार]	—	(हि०)	७६३
जातकवर्णन	—	(स०)	५७४
जाप्य इष्ट मनिष्ट [माला केरनेकी विधि]	—	(स०)	५५५
जिनकुशलकी स्तुति	साधुकीर्ति	(हि०)	७७८
जिनकुशलसूरिस्तवन	—	(हि०)	६१८
जिनगुणउपायन	—	(हि०)	६३८
जिनगुणपञ्चीसी	सेवगराम	(हि०)	४४७
जिनगुणमाला	—	(हि०)	३६०
जिनगुणसपत्ति [मङ्गलचित्र]	—		५२४
जिनगुणसपत्तिकथा	—	(स०)	२२५, २४६
जिनगुणसपत्तिकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
जिनगुणसपत्तिपूजा	केशवसेन	(स०)	५३७
जिनगुणसपत्तिपूजा	रत्नचन्द्र	(स०)	४७७, ५११
जिनगुणसपत्तिपूजा	—	(स०)	५३६
जिनगुणस्तवन	—	(स०)	५७५
जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिणचन्द्र	(स०)	५५७
जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(स०)	८३३
जिनचरित्र	ललितकीर्ति	(स०)	६४५
जिनचरित्रकथा	—	(स०)	१६६
जिनचैत्यवदना	—	(स०)	३६०
जिनचैत्यालयजयमाल	रत्नभूषण	(हि०)	५६४
जिनचौबोसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्ति	(हि०)	५७८
जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(स०)	१६६
जिनदत्तचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७०
जिनदत्त चौपई	रत्न कवि	(हि०)	६८२
जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणि	(हि०)	६१८
जिनदत्तसूरि चौपई	जयसागर उपाध्याय	(हि०)	६१८
जिनदर्शन	भूधरदास	(हि०)	६०५
जिनदर्शनस्तुति	—	(स०)	४२४
जिनदर्शनाष्टक	—	(स०)	३६०
जिनपञ्चीसी	नवलराम	(हि०)	६५१
	६६३, ७०४, ७२५, ७५५		
जिनपञ्चीसी व अन्य संग्रह	—	(हि०)	४३८
जिनपिगलछदकोश	—	(हि०)	७०६
जिनपुरन्दरप्रतपूजा	—	(स०)	४७८
जिनपूजापुरन्दरकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
जिनपूजापुरन्दरविधानकथा	अमरकीर्ति	(अप०)	२४६
जिनपूजाफलप्राप्तिकथा	—	(स०)	४७८
जिनपूजाविधान	—	(हि०)	६५२
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभाचार्य	(स०)	३६०, ४३२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
जिनेद्रस्तोत्र	—	(स०)	६०६		४२६, ६५२, ६७०, ६८६, ६९८, ७०६, ७१०, ७१३				
जिनोपदेशोपकारम्भस्तोत्र	—	(स०)	४१३		७१६, ७३२, ७५४				
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	—	(ग०)	४२६		जैनमहाचार मातृशब्दनामक पत्रका प्रत्युत्तर	वा० दुलीचन्द्र	(हि०)	२०	
जिनोपकारस्मरणस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३६३		जैनागारप्रक्रिया	पा० दुलीचन्द्र	(हि०)	५७	
जीवकायासम्भाष	भुवनकीर्त्ति	(हि०)	६१६		जैनेद्रमहावृत्ति	अभयनन्दि	(स०)	२६०	
जीवकायासम्भाष	राजममुद्र	(हि०)	६१६		जैनेद्रव्याकरण	देधनन्दि	(स०)	२५६	
जीवजीतसहार	जैतराम	(हि०)	२२५		जोगीरागो	पाण्डे जिननास	(हि०)	१०५	
जीवधरचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(ग०)	१७०		६०१, ६२२, ६३६, ६५२, ७०२, ७२३, ७४५, ७६१				
जीवधरचरित्र	नथमल घिलाला	(हि०)	१७०		जोधराजपद्मी	—	(हि०)	७६०	
जीवधरचरित्र	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	१७१		ज्येष्ठजिनवर [मञ्जुषि]	—		५२५	
जीवधरचरित्र	—	(हि०)	१७१		ज्येष्ठजिनवरउद्यापनपूजा	—	(स०)	५०६	
जीवविचार	मानदेवमूरि	(प्रा०)	६१६		ज्येष्ठजिनवरवधा	—	(स०)	२२५	
जीवविचार	—	(प्रा०)	७३२		ज्येष्ठजिनवरवधा	जसकीर्त्ति	(हि०)	२२५	
जीव वेतदी	देवीशम	(हि०)	७५७		ज्येष्ठजिनवरपूजा	श्रुतमागर	(स०)	७६५	
जीवसमास	—	(प्रा०)	७६५		ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	५१६	
जीवसमासटिप्पण	—	(प्रा०)	१६		ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(स०)	४८१	
जीवसमासभाषा	—	(प्रा० हि०)	१६		ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(हि०)	६०७	
जीवस्वरूपवर्णन	—	(ग०)	१६		ज्येष्ठजिनवरवर्णन	म० जिनदास	(ग०)	७६५	
जीवाजीवविचार	—	(ग०)	१६		ज्येष्ठजिनवरप्रताया	सुशालचन्द्र (हि०)	७३१		
जीवाजीवविचार	—	(प्रा०)	१६		ज्येष्ठजिनवरप्रतपूजा	—	(स०)	४८१	
जैनगायत्रीमन्त्रविधान	—	(स०)	३४८		ज्येष्ठपूर्णमासवधा	—	(हि०)	६८२	
जैनपद्मोत्तरी	नवलराम	(हि०)	६७०		ज्योतिषचर्चा	—	(स०)	५६७	
			६७५, ६६४		ज्योतिष	—	(स०)	७१४	
जैनवद्री मूढवद्रीकी यात्रा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	३७०		ज्योतिषपटलमाला	श्रीपति	(स०)	६७२	
जैनवद्री देशकी पत्रिका	मजलमराय	(हि०)	७०३, ७१८		ज्योतिषशास्त्र	—	(स०)	६६५	
जैनमतका सङ्कल्प	—	(हि०)	५६२		ज्योतिषसार	कृपाराम	(हि०)	५६८	
जैनरक्षास्तोत्र	—	(स०)	६४७		ज्वरचिकित्सा	—	(स०)	२६८	
जैनविवाहपद्धति	—	(स०)	४८१		ज्वरतिमिरभाम्कर	चामुण्डराय	(स०)	२६८	
जैनशतक	भूधरदास	(हि०)	३२७		ज्वरलक्षण	—	(हि०)	२६८	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं
त्रिपुराहस्तोत्र	—	(स)	१६	१२ १७३ १८१ १८२ ७१२, ७१६, ७१ ७२६	—		
			४२४ ४३१ ४३३,				
			१४० १८७ १८३				
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	स्वच्छन्दचन्द्र	(हि)	२११				
त्रिपुराहस्तोत्र	हर्षकीर्ति	(हि)	४३७ १२१	त्रिपुराहस्तोत्र भाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	—	(स)	१२१				
त्रिपुराहस्तोत्र [त्रिपुराहस्त] वं	आचार्य	(स)	४०				
			१ १११ ११३ ७११				
त्रिपुराहस्तोत्र	—	(स)	४०१ ११२	त्रिपुराहस्तोत्र भाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	सुभाषित	(हि)	४८७	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	—	(हि)	४८९	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	—	(स)	२४२	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	अरुण	(स)	१२	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	—	(स)	१२१ १११	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	अ	(हि)	२२	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	अ	(हि)	७३	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	हर्षकीर्ति	(हि)	१ २	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	कल्याण	(स)	११	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	अ	(हि)	११	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	—	(हि)	७१७	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	—	(स)	११ १७७	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	अरुण	(हि)	११	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	मार्ग	(स)	१११	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	राजगुरु	(स)	११	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	समस्तम	(स)	१११	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	—	(स)	११	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	—	(हि)	७०१	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	वं	(स)	१११	त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	
१२ १११ १ २ १ ७ १११ १११, ११७ १११,				त्रिपुराहस्तोत्रभाषा	(स)	११	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	प्रष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	प्रष्ठ	सं०
रामोकारच्छद	ब्र० लालमागर	(हि०)	६८३		तत्त्वार्थबोध	—	(हि०)	२१	
रामोकारपञ्चोत्ती	ऋषि ठाकुरसी	(हि०)	४३६		तत्त्वार्थबोध	बुधजन	(हि०)	२१	
रामोकारपायडीजयमाल	—	(प्र०)	६३७		तत्त्वार्थबोधिनीटीका	—	(ग०)	२१	
रामोकारपैतीसी	कनककीर्ति	(ग०)	५१७,		तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	(ग०)	२१	
			४८२, ६७६		तत्त्वार्थराजवातिव	भट्टाकलकदेव	(ग०)	२२	
रामोकारपैतीसी	—	(प्र०)	३४८		तत्त्वार्थराजवातिमापा	—	(हि०)	२२	
रामोकारपैतीसीपूजा	अक्षयराम	(स०)	४८२,		तत्त्वार्थवृत्ति	प० योगदेव	(स०)	२२	
			५१७, ५३६		तत्त्वार्थसार	अमृतचन्द्राचार्य	(ग०)	२२	
रामोकारपञ्चासिकापूजा	—	(ग०)	५४०		तत्त्वार्थमारदीपक	भ० मकलकीर्ति	(ग०)	२३	
रामोकारमय कथा	—	(हि०)	२२६		तत्त्वार्थमारदीपकभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३	
रामोकारस्तवन	—	(हि०)	३६४		तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	(ग०)		
रामोकारादि पाठ	—	(प्र०)	३६४		४२५, ४७७, ५३७, ५६१, ५६६ ५७३, ५६४, ५६५,				
शाण्डिल्य	—	(प्र०)	६४२		५६६, ६०३ ६०५, ६३३, ६३७, ६४०, ६४४, ६४६,				
शेमिशान्तरिड	लक्ष्मणदेव	(प्र०)	१७१		६४७ ६४८, ६४० ६४२, ६४६, ६७३, ६७५, ६८१,				
शेमिशान्तरिड	दामोदर	(प्र०)	१७१		६८६, ६८४, ६८६, ७००, ७०३, ७०४, ७०५, ७०७,				
					७१०, ७२७, ७३१, ७४१, ७७६, ७८७, ७८८, ७८९,				
त					तत्त्वार्थसूत्रटीका	श्रुतागर	(ग०)	२८	
तत्त्वार्थसूत्रटीका	—	(ग०)	३६४		तत्त्वार्थसूत्रटीका	आ० कनककीर्ति	(हि०)	३७६	
तत्त्वकौस्तुभ	पन्नालाल सघी	(हि०)	१०		तत्त्वार्थसूत्रटीका	छोटीलाल जेसवाल	(हि०)	३०	
तत्त्वज्ञानतरंगिणी	भ० ज्ञानभूषण	(स०)	५८		तत्त्वार्थसूत्रटीका	प० राजमल्ल	(हि०)	३०	
तत्त्वदीपिका	—	(हि०)	२०		तत्त्वार्थसूत्रटीका	जयचंद छावडा	(हि०)	२६	
तत्त्वधर्ममृत	—	(ग०)	३२८		तत्त्वार्थसूत्रटीका	पाडे जयवत	(हि०)	२६	
तत्त्वबोध	—	(ग०)	१०८		तत्त्वार्थसूत्रटीका	—	(हि०)	६८६	
तत्त्ववर्णन	शुभचन्द्र	(ग०)	२०२		तत्त्वार्थदशाध्यायपूजा	दयाचंद	(ग०)	४८२	
तत्त्वसार	देवसेन	(प्र०)	२०, ५७५		तत्त्वार्थसूत्र भाषा	शिखरचन्द्र	(हि०)	३०	
			६३७, ७३७, ७४४, ७४७		तत्त्वार्थसूत्र भाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	२८	
तत्त्वसारभाषा	द्यानतराय	(हि०)	७४७		तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०)	३०	
तत्त्वसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२१		तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि० प०)	३१	
तत्त्वार्थदर्पण	—	(स०)	२१		तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	सिद्धसेन गण्	(स०)	२८	
तत्त्वार्थबोध	—	(स०)	२१		तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	—	(स०)	२८	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रिशास्त्रोपगृही [समस्तसंग] अमरसिंह	(मं०)	२७४	त्रितीयांश	—	(हिं०)	६६०	
त्रिशास्त्रोपाधिपाठ	सुम्पापात्रदेव	(मं०)	२७४			७००	७००
त्रिशास्त्रोपाधिपाठ	—	(मं०)	६६६	त्रिशास्त्रोपाधि	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३००
त्रिशास्त्रोपाधि	—	(हिं०)	६४१	त्रिशास्त्रोपाधि	—	(हिं०)	२०३
त्रिशास्त्रोपाधिपाठ [समस्तसंग] अमरसिंह	(मं०)	२०६, २०७	त्रिशास्त्रोपाधि	सुम्पापात्रदेव	(हिं०)	४११	
त्रिशास्त्रोपाधिपाठ [समस्तसंग] सुम्पापात्रदेव	(मं०)	२०६	त्रिशास्त्रोपाधि	अमरसिंह	(मं०)	४६४	
त्रिशास्त्रोपाधिपाठ	—	(मं०)	४०६	त्रिशास्त्रोपाधि	—	(मं०)	४६४, ४१३
त्रिशास्त्रोपाधिपाठ	त्रिभुवनचन्द्र	(मं०)	४८६	त्रिशास्त्रोपाधि	दोहरमल	(हिं०)	३००
त्रिशास्त्रोपाधिपाठ	—	(मं०)	४८६, ११७	त्रिशास्त्रोपाधि	—	(हिं०)	३२१
त्रिशास्त्रोपाधिपाठ	—	(प्रा०)	४०६	त्रिशास्त्रोपाधि	—	(हिं०)	३०१
त्रिशास्त्रोपाधिपाठ	—	(हिं०)	६२७	त्रिशास्त्रोपाधि	माधवचन्द्र त्रैविशदेव	(मं०)	३२०
त्रिशास्त्रोपाधि	—	(मं०)	६८५	त्रिशास्त्रोपाधि	—	(मं०)	३००
त्रिशास्त्रोपाधि	—	(मं०)	२०६	त्रिशास्त्रोपाधि	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३०२
त्रिशास्त्रोपाधि	—	(हिं०)	४१७	त्रिशास्त्रोपाधि	भट्ट महीचन्द्र	(हिं०)	६८१
त्रिशास्त्रोपाधि	—	(मं०)	४१३	त्रिशास्त्रोपाधि	—	(हिं०)	४८५
त्रिभुवन की विजयी	गंगादास	(हिं०)	७७०	त्रिशास्त्रोपाधि	ध्यासा उदयलाल गंगवाल	(हिं०)	३००
त्रिभुवन की विजयी	—	(हिं०)	७७६	त्रिशास्त्रोपाधि	भट्ट मोमसेन	(मं०)	५८
त्रिभुवनसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१	त्रिशास्त्रोपाधि	मार्गधर	(मं०)	२६८
त्रिभुवनसारटीका	विश्वनाथ	(मं०)	३०	त्रिशास्त्रोपाधि	श्रीपाल		६७०
त्रिभाषासंग्रह	—	(हिं०)	४८४	त्रिशास्त्रोपाधि	—		१६६
त्रिभाषासंग्रह	—	(हिं०)	३२०	त्रिशास्त्रोपाधि	आशाधर	(मं०)	१६६
त्रिभाषासंग्रह	भट्ट महीचन्द्र	(मं०)	७१०	त्रिशास्त्रोपाधि	महम्मद	(मं०)	६८६
त्रिभाषासंग्रह	सामदेव	(मं०)	३२०	त्रिभाषासंग्रह	—	(मं०)	५६, ७६२
त्रिभाषासंग्रह	सुम्पापात्रदेव	(हिं०)	६८६, ६८०, ३०१	त्रिभाषासंग्रह	म० सुलाल	(हिं०)	७४०
त्रिभाषासंग्रह	—	(मं०)	३२२	त्रिभाषासंग्रह	मौलनासम	(हिं०)	५६
त्रिभाषासंग्रह	—	(प्रा०)	३२२	त्रिभाषासंग्रह	—	(मं०)	४८५
त्रिभाषासंग्रह [पित्र]	—		३२३	त्रिभाषासंग्रह	[मण्डल मंत्र]	—	४२४
त्रिभाषासंग्रह	—	(मं०)	३२३	त्रिभाषासंग्रह	—	(मं०)	४८५
त्रिभाषासंग्रह	—	(मं०)	३२३	त्रिभाषासंग्रह	देवेन्द्रकीर्ति	(मं०)	६३८, ७६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दशलक्षणजयमाल	सुमतिसागर	(हि०)	७६५	दशलक्षणीक्या	ललितकीर्ति	(सं०)	६६५
दशलक्षणजयमाल	—	(हि०)	४८८	दशलक्षणीरास	—	(प्रप०)	६४२
दशलक्षणधर्मवर्णन प० सदासुखकासलीवाल	(हि०)	५६		दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	(हि०)	७००
दशलक्षणधर्मवर्णन	—	(हि०)	६०	दशवैकालिकसूत्र	—	(प्रा०)	३२
दशलक्षणपूजा	अभयनन्दि	(स०)	४८८	दशवैकालिकसूत्रटीका	—	(स०)	३२
दशलक्षणपूजा	—	(स०)	४८८	दशश्लोकीयाम्भूस्तोत्र	—	(स०)	६६०
५१७, ५३६, ५७४, ५६४, ५६६, ६०६, ६०७, ६४०,				दशसूत्राष्टक	—	(म०)	६७०
६४४, ६४६, ६५२, ६५८, ६६४, ७०४, ७३१, ७५६,				दशारास	ब्र० चन्द्र	(स०)	६८३
			७६३, ७८४	दादूपद्यावली	—	(हि०)	३७१
दशलक्षणपूजा	—	(प्रप० सं०)	७०५	दानकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७
दशलक्षणपूजा	अभ्रदेव	(स०)	४८८	दानकथा	भारामल्ल	(हि०)	२२८
दशलक्षणपूजा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६	दानकुल	—	(प्रा०)	६०
दशलक्षणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८	दानतपशीलमवाद	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
			५१६, ७०५	दानपञ्चाषात	पद्मनन्दि	(स०)	६०
दशलक्षणपूजा	भूधरदास	(हि०)	५६१	दानवावनी	द्यानतराय	(हि०)	६०५, ६८६
दशलक्षणपूजा	—	(हि०)	४८६	दानलीला	—	(हि०)	६००
			७२०, ७८८	दानवर्णन	—	(हि०)	६८६
दशलक्षणपूजाजयमाल	—	(स०)	५६६	दानविनती	जतीदास	(हि०)	६४३
दशलक्षण [मङ्गलचित्र]	—		५२५	दानशीलतपभावना	—	(म०)	६०
दशलक्षणमण्डलपूजा	—	(हि०)	४८६	दानशीलतपभावना	धर्मसी	(प्र०)	६०
दशलक्षणविधानकथा	लोकसेन	(स०)	२४२, २४६	दानशीलतपभावना	—	(हि०)	६०, ६०१
दशलक्षणविधानपूजा	—	(हि०)	४६०	दानशीलतपभावना का बीदात्या	समयसुन्दरगणित		
दशलक्षणव्रतकथा	श्रुतसागर	(स०)	२२७			(हि०)	२२८
दशलक्षणव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	७३१	दिल्ली की बादशाहतका व्योरा	—	(हि०)	७६६
दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ध्यानसागर	(हि०)	७६४	दिल्लीके बादशाहों पर कवित्त	—	(हि०)	७५६
दशलक्षणव्रतकथा	—	(हि०)	२४७	दिल्ली नगरकी वसापत तथा बादशाहत का व्योरा	—		
दशलक्षणव्रतोद्यापन	जिनचन्द्रसूरि	(स०)	४८६			(हि०)	७८४
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिभागर	(स०)	४८६	दिल्ली राजका व्योरा	—	(हि०)	७८६
			५४०, ६३८	दीक्षापटल	—	(स०)	५७५
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५१३	दीपमालिका निर्णय	—	(हि०)	६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रम सं०
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	महादेव	(स०)	३४	द्वादशानुप्रेक्षा	—	(हि०)	१०६
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	प्रभाचन्द्र	(स०)	३४			६५२, ७४८, ७६५	
द्रव्यस्वरूपवर्णन	—	(स०)	३७	द्वादशागपूजा	—	(ग०)	४६१
दृष्टान्तशतक	—	(स०)	३२८	द्वादशागपूजा	ढालूराम	(हि०)	४६१
द्वादशभावनादीका	—	(हि०)	१०६	द्वाप्रयकाव्य	हेमचन्द्राचार्य	(स०)	१७१
द्वादशभावनादृष्टांत	—	(गुज०)	१०६	द्विजयचनचपेटा	—	(स०)	१३३
द्वादशमाला	कथि राजसुन्दर	(हि०)	७८३	द्वितीयसमोसरण	म० गुलाल	(हि०)	५६६
द्वादशमासा [वाल्हमासा]	कवि राहसुन्दर	(हि०)	७७१	द्विपंचकत्पाणवपूजा	—	(स०)	५१७
द्वादशमासातचतुर्दशीप्रतोद्यापन	—	(स०)	५३६	द्विसंधानकाव्य	धनञ्जय	(स०)	१७१
द्वादशराशिफल	—	(स०)	६६०	द्विसंधानकाव्यटीका [पदकीमुदी]	नेमिचन्द्र	(स०)	१७२
द्वादशप्रतकथा	प० अभ्रदेव	(स०)	२२८	द्विसंधानकाव्यटीका	विनयचन्द्र	(स०)	१७२
			२४६, ४६०	द्विसंधानकाव्यटीका	—	(स०)	१७२
द्वादशप्रतकथा	चन्द्रमागर	(हि०)	२२८	द्वीपसमुद्रो के नाम	—	(हि०)	६७१
द्वादशप्रतकथा	—	(ग०)	२२८	द्वीपायनढाल	गुणसागरसूरि	(हि०)	४४०
द्वादशप्रतपूजाजयमाल	—	(स०)	६७६	ध			
द्वादशप्रतपण्डलोद्यापन	—	(स०)	५४०				
द्वादशप्रतोद्यापन	—	(स०)	४६१, ६६६	धनदत्त मेठ की कथा	—	(हि०)	२२६
द्वादशप्रतोद्यापन	जगतकीर्त्ति	(स०)	४६१	धन्नाकथानक	—	(ग०)	२२६
द्वादशप्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	४६१	धन्नाचीपई	—	(ग०)	७७२
द्वादशप्रतोद्यापनपूजा	पद्मानिधि	(स०)	४६१	धन्नाशलिभद्रचीपई	—	(ग०)	२२६
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(स०)	१०६, ६७२	धन्नाशलिभद्ररास	जिनराजसूरि	(हि०)	३६२
द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	(स०)	७४४	धन्यकुमारचरित्र	म० गुणभद्र	(स०)	१७२
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(ग०)	१०६	धन्यकुमारचरित्र	म० नेमिदत्त	(स०)	१७३
द्वादशानुप्रेक्षा	जलदहण	(ग०)	६२८	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	(स०)	१७२
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(ग०)	६२८	धन्यकुमारचरित्र	—	(स०)	१७८
द्वादशानुप्रेक्षा	साह आलु	(हि०)	१०६	धन्यकुमारचरित्र	खुशालचन्द्र	(हि०)	१७३, ७२६
द्वादशानुप्रेक्षा	कावि छत्त	(हि० पद्य)	१०६	धर्मचक्र [मण्डल चित्र]	—		५२५
द्वादशानुप्रेक्षा	लोहट	(हि०)	७६६	धर्मचक्रपूजा	यशोतन्दि	(स०)	४६१, ५६५
द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	(हि०)	७६४	धर्मचक्रपूजा	साधु राममल्ल	(स०)	४६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ध्वजारोपणविधि	आशाधर	(स०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(प्रा०)	६६३, ७०५
ध्वजारोपणविधि	—	(स०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(स० प्रा०)	६६३
ध्वजारोहणविधि	—	(स०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(अ०)	४६३
न				नन्दाश्वरपूजा	—	(हि०)	४६३
				नन्दाश्वरपूजा जयमाल	—	(स०)	७५६
नग्यशिववर्णन	केशवदास	(हि०)	७७२	नन्दाश्वरपूजाविधान	टेकचन्द	(हि०)	४६५
नखशिववर्णन	—	(हि०)	७१६	नन्दीश्वरपूजाविधान	पद्मनन्द	(स०)	६३९
नगर स्थापना का मन्त्र	—	(हि०)	७५०	नन्दीश्वरपूजाविधान	—	(स०)	६६३
नगरो की वसापत का मन्त्रवार विवरण	मुनि कनककीर्ति	(हि०)	५६१	नन्दीश्वरपूजाविधान	—	(हि०)	४६३
ननद भोजी का भगडा	—	(हि०)	७४७	नन्दीश्वरभक्ति	—	(स०)	६३
नन्दिताव्ययद	—	(प्रा०)	३१०	नन्दीश्वरभक्ति	पद्मलाल	(हि०)	४६४, ४५५
नन्दिपेण महामुनि सज्जाय	—	(हि०)	६१६	नन्दीश्वरविधान	जिनेश्वरदास	(हि०)	४६५
नन्दीश्वरदद्यापन	—	(स०)	४३७	नन्दीश्वरविधानकथा	हरिपेण	(स०)	२२६, ५११
नन्दीश्वरकथा	भ० शुभचन्द्र	(स०)	२२६	नन्दीश्वरविधानकथा	—	(स०)	२२६, २४५
नन्दीश्वरजयमाल	—	(स०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतविधान	टेकचन्द	(हि०)	५११
नन्दीश्वरजयमाल	—	(प्रा०)	६३६	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	अनन्तकीर्ति	(स०)	६६३
नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	(अ०)	५१६	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	नन्दिपेण	(स०)	४६५
नन्दीश्वरजयमाल	—	(अ०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	६६३
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	रत्ननन्द	(स०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	६६३
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	—	(स०)	४६३	नन्दीश्वरादिभक्ति	—	(प्रा०)	६२१
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	—	(प्रा०)	६५५	नन्दीश्वर	—	(प्रा०)	३११
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६, ५६२	नन्दसप्तमीव्रतोद्यापन	—	(स०)	४६५
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	मङ्गल	(हि०)	४६३	नमस्कारमन्त्रपत्रविधिसहित	सिंहनन्द	(स०)	३४
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	—	(स०)	५७६	नमस्कारमन्त्रसटीक	—	(स० हि०)	६०
नन्दीश्वरपूजा	सकलकीर्ति	(स०)	७६१	नमस्कारस्तोत्र	—	(स०)	४२
नन्दीश्वरपूजा	—	(स०)	४६३	नमिऊएस्तोत्र	—	(प्रा०)	६६
नन्दीश्वरपूजा	—	(स०)	४६३	नयचक्र	देवसेन	(प्रा०)	१३
५१५, ६०७, ६४४, ६५८, ६६६, ७०४				नयचक्रटीका	—	(हि०)	६८

ग्रन्थानुक्रमिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नागश्रीसज्जाय	विनयचन्द्र	(हि०)	४४१	नित्यनियमपूजा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	४६६
नाटकसमयसार	वनारसीदास	(हि०)	६४०	नित्यनियमपूजासंग्रह	—	(हि०)	७१०
	६५७, ६८२, ७२१, ७५०, ५६१, ७७६			नित्यनेमित्तिकपूजापाठ संग्रह	—	(सं०)	५६६
नाहीपरीक्षा	—	(सं०)	२६८	नित्यपाठसंग्रह	—	(सं० हि०)	३६८
			६०२, ६६७	नित्यपूजा	—	(सं०)	५६०
नादीमङ्गलपूजा	—	(सं०)	५१८				६६४, ६६४, ६६७
नाममाला	धनञ्जय	(सं०)	२७५	नित्यपूजा	—	(हि०)	४६८
	२७६, ५७४, ६८६, ६६६, ७०१, ७११, ७१२, ७३६			नित्यपूजाजयमाल	—	(हि०)	४६८
नाममाला	वनारसीदास	(हि०)	२७६	नित्यपूजापाठ	—	(सं० हि०)	६६३
			६०६, ७६५				७०२, ७१५
नाममञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	६६७ ७६६	नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(प्रा० सं०)	६६४
नायिकालक्षण	कवि सुन्दर	(हि०)	७४२	नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	६६३
नायिकावर्णन	—	(हि०)	७३७	नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	७००
नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	नारचन्द्र	(सं०)	२८५				७७५, ७७६
नारायणकवच एव मष्टक	—	(सं०)	६०८	नित्यपूजासंग्रह	—	(प्रा० मप०)	४६७
नारीरासो	—	(हि०)	७५७	नित्यपूजासंग्रह	—	(सं०)	४६७, ७६३
नासिकेतपुराण	—	(हि०)	७६७	नित्यवदनासामायिक	—	(सं० प्रा०)	६३३
नासिकेतोपाख्यान	—	(हि०)	७६०	निमित्तज्ञान [भद्रवाहु महिमा] भद्रवाहु	(सं०)		२८५
निघट्ट	—	(सं०)	२६६	नियमसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	३८
निजस्मृति	जयतिलक	(सं०)	३८	नियमसारटीका	पद्मप्रभसलधारिदेव	(सं०)	३८
निजामणि	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५	निरयावलीसूत्र	—	(प्रा०)	३८
नित्य एव भाद्रपदपूजा	—	(सं०)	६४४	निरञ्जनशतक	—	(हि०)	७४१
नित्यकृत्यवर्णन	—	(हि०)	६५ ४६५	निरञ्जनस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
नित्यक्रिया	—	(सं०)	४६५	निर्भरपञ्चमोवधानवथा विनयचन्द्र	(मप०)		२४५, ६२८
नित्यनियम के दोहे	—	(हि०)	७१८	निर्दोषसप्तमीकथा	—	(मप०)	२४५
नित्यनियमपूजा	—	(सं०)	४६१	निर्दोषसप्तमीकथा पाडे हरिकृष्ण	(हि०)		७६४
			५१८, ६७६	निर्दोषसप्तमीव्रतकथा	ब्र० रायमल्ल	(सं०)	६७६, ७३६
नित्यनियमपूजा	—	(सं० हि०)	४२६	निर्माल्यदापवर्णन	वा० दुलीचन्द	(हि०)	६५
			५६७, ६८६	निर्वाणकल्याणकपूजा	—	(सं०)	४६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नेमिनाथपुराण	ब्र० जिनदास	(स०)	१४७	नेमिराजुलगीत	जिनहर्षसूरि	(हि०)	६१८
नेमिनाथपुराण	भागचन्द	(हि०)	१४६	नेमिराजुलगीत	भुवनक्रीति	(हि०)	६१८
नेमिनाथपूजा	कुवलयचन्द	(स०)	७६३	नेमिराजुलपञ्चीसी	विनोदीलाल	(हि०)	४४१, ७४७
नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रक्रीति	(स०)	४६६	नेमिराजुलसज्जाय	—	(हि०)	४४३
नेमिनाथपूजा	—	(हि०)	४६६	नेमिरासो	—	(हि०)	७४५
नेमिनाथपूजाष्टक	शभूराम	(स०)	४६६	नेमिस्तवम	जितसागरगणी	(हि०)	१००
नेमिनाथपूजाष्टक	—	(हि०)	४६६	नेमिस्तवन	ऋषि शिव	(हि०)	४००
नेमिनाथफागु	पुण्यरत्न	(हि०)	७४८	नेमिस्तोत्र	—	(स०)	४३२
नेमिनाथमङ्गल	लालचन्द	(हि०)	६०५	नेमिमुक्कवित्त [नेमिमुक्क राजमतिवैलि]	कवि ठक्कुरसी	(हि०)	६३८
नेमिनाथराजुल का बारहमासा	—	(हि०)	७०५	नेमीश्वरका गीत	नेमीचन्द	(हि०)	६२१
नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३६२	नेमीश्वरका बारहमासा	खेतसिंह	(हि०)	७६२
नेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(स०)	७५७	नेमीश्वरकी वैलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१६, ७५२	नेमीश्वरकी स्तुति	भूधरदास	(हि०)	६५०
नेमिनाथरास	रत्नक्रीति	(हि०)	६३८	नेमीश्वरका हिंडोलना	मुनि रतनक्रीति	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६२	नेमीश्वरके दशभव	ब्र० धर्मरुचि	(हि०)	७३८
नेमिनाथस्तोत्र	प० शालि	(स०)	३६६	नेमीश्वरको रास	भाऊकावि	(हि०)	६३८
नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	(हि०)	७७७	नेमीश्वरचौमासा	सिंहनन्दि	(हि०)	७३८
नेमिपुराण [हरिवंशपुराण]	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	१४७	नेमीश्वरका फाग	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(स०)	१७७	नेमीश्वरराजुलकी लहुरी	खेतसिंह सा०	(हि०)	७७६
नेमिनिर्वाणपञ्चिका	—	(स०)	१७७	नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	६१३
नेमिव्याहली	—	(हि०)	२३१	नेमीश्वररास	मुनि रतनक्रीति	(हि०)	७२२
नेमिराजमतीका चौमासिया	—	(हि०)	६१६	नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६०१
नेमिराजमती की घोड़ी	—	(हि०)	४४१				६२१, ६३८
नेमिराजमतीका गीत	हीरानन्द	(हि०)	४४१	नेमित्तिक प्रयोग	—	(स०)	६३३
नेमिराजमति बारहमासा	—	(हि०)	६५७	नेपथ्यचरित्र	हर्षक्रीति	(स०)	१७७
नेमिराजमतिरास	रत्नमुक्ति	(हि०)	६१७	नौशेरवा बादशाहकी दस ताज	—	(हि०)	३३०
नेमिराजलव्याहली	गोपीकृष्ण	(हि०)	२३२	न्यायकुमुदचन्द्रिका	प्रभाचन्द्रदेव	(स०)	१३४
नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	(हि०)	६१८	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	भट्टाकलङ्कदेव	(स०)	१३४
नेमिराजपिसज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
न्यासवीरिका	यति धर्ममूपपा	(व)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	जाटिकाङ्ग मिश्र	(वि)	१
न्यासवीरिकाभाषा	सधी पञ्चाङ्ग	(हि)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	टेकचम्	(हि)	१
न्यासवीरिकाभाषा	सहामुख कासर्वाचार्य	(हि)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	पञ्चाङ्ग	(हि)	१
न्यासमन्त्रा	परमहंस परिब्राह्मणचार्य	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	मैत्रेय	(हि)	१
न्यासमन्त्र	—	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	रूपचम्	(हि)	१
न्यासमन्त्र	माधवदेव	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	शिवजीकाङ्ग	(हि)	१११
न्यासमन्त्र	—	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(हि)	१११
न्यासविज्ञानमञ्जरी	म नृधामयि	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वं)	१
न्यासविज्ञानमञ्जरी	जामकेदास	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	[पञ्चतपि]	—	१११
न्यासपुत्र	—	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वा)	११
नृसिंहपुत्रा	—	(हि)	१	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	ज्ञानमूपपा	(वं)	११
नृसिंहपुत्रापीप	—	१	१	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(हि)	११, ११, ११
नृसिंहपुत्रापीप	यिकुपञ्ज	(हि)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	गङ्गादास	(वं)	१
नृसिंहपुत्रापीप	वसी	(हि)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	धामसेन	(वं)	११
नृसिंहपुत्रापीप	—	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वा)	११
पु	—	—	—	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वं)	१
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	सुरेश्वराचार्य	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	म रामचन्द्र	(हि)	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	हरिचम्	(हि)	१	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	म रामचन्द्र	(हि)	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	हरिचम्	(हि)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वं)	१
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	१० विष्णुदास	(वं)	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	अरुणमयि	(वं)	१	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(हि)	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	शुभजीति	(वं)	१	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वं)	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	बाहीमसिंह	(वं)	११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	[११] कनकी विधि	—	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	सुधासागर	(वं)	१	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	वयास्वामी	(वं)	११, ११, ११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	१११, १११	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	विष्णुमयि	(वं)	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	सुप्रदीति	(वं)	१	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वं)	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	सुरेश्वरीति	(वं)	१११	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(हि)	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वं)	१	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(हि)	११
पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(वं)	१	पञ्चस्वस्त्यस्तुतुवा	—	(हि)	११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	सं० पृष्ठ
पञ्चपरमेष्ठीगुणस्तवन	—	(हि०)	७०७	पञ्चमीश्रतोद्यापन	हर्षकल्याण	(स०)	५०४, ५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	(स०)	५०२, ५१८	पञ्चमीश्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	(स०)	६३८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	भ० शुभचन्द्र	(स०)	५०२	पञ्चमीश्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५०८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(स०)	५०३	पञ्चमीस्तुति	—	(स०)	६१८
			५१४, ५६६	पञ्चमेरुत्यापन	भ० रत्नचन्द्र	(स०)	५०५
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	डालूगाम	(हि०)	५०३	पञ्चमेरुजयमाल	भूधरदास	(हि०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५०३, ५१८	पञ्चमेरुजयमाल	—	(हि०)	७१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(हि०)	५०३	पञ्चमेरूपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	५१६
			५१८, ५१९, ६५२, ७१२	पञ्चमेरूपूजा	भ० महीचन्द्र	(स०)	६०७
पञ्चपरमेष्ठी [मण्डलचित्र]	—		५२५	पञ्चमेरूपूजा	—	(स०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(स०)	४२२		५५७, ४६४, ६६४, ६६६, ७८४		
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(प्रा०)	६६१	पञ्चमेरूपूजा	—	(प्रा०)	६३५
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	जिनवल्लभसूरि	(हि०)	४४३	पञ्चमेरूपूजा	—	(प्रप०)	६३६
पञ्चपरमेष्ठीसनुचयपूजा	—	(स०)	५०२	पञ्चमेरूपूजा	डालूगाम	(हि०)	५०५
पञ्चपरावर्तन	—	(स०)	३८	पञ्चमेरूपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५०५
पञ्चपालपैतृसी	—	(हि०)	६८६	पञ्चमेरूपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५०५
पञ्चप्ररूपणा	—	(स०)	२६६		५१६, ५६२, ५६६, ७०४, ७५६		
पञ्चवधावा	—	(हि०)	६४३, ६६१	पञ्चमेरूपूजा	सुवानन	(हि०)	५०५
पञ्चवधावा	—	(राज०)	६८२	पञ्चमेरूपूजा	—	(हि०)	५०५
पञ्चवालयतिपूजा	—	(हि०)	५०४				५१६, ७४५
पञ्चमगतित्रैल	हर्षकीर्ति	(हि०)	६२१	पञ्चमङ्गलपाठ, पञ्चमकल्याणकमङ्गल, पञ्चमङ्गल	—		
			६६१, ६६८, ७५०, ७६५		रूपचन्द्र	(हि०)	३६८
पञ्चमासचतुर्दशीपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(स०)	५४०		४२८, ४०१ ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४,		
पञ्चमासचतुर्दशीश्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	(स०)	५०४		६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३,		
पञ्चमासचतुर्दशीश्रतोद्यापन	—	(स०)	५३६		६७५, ६७६, ६८१, ६८१, ६८३, ७०४, ७०५, ७१०,		
पञ्चमीश्रत्यापन	—	(स० हि०)	५१७		७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८		
पञ्चमीश्रतपूजा	केशवसेन	(स०)	५१५	पञ्चयतिस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
पञ्चमीश्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	५०४	पञ्चरत्नपरीक्षा की गाथा	—	(प्रा०)	७५८
पञ्चमीश्रतपूजा	—	(स० हि०)	५१७	पञ्चलन्धिविचार	—	(प्रा०)	७०७

ग्रन्थनाम	संस्कृत	भाषा वृत्त सं०	ग्रन्थनाम	संस्कृत	भाषा वृत्त सं०
व्यासटीका	यति धर्मभूषण	(सं) ११२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	वाटेलाङ्ग मिश्र	(हि) १
व्यासटीकाभाषा	मंथी पञ्चाङ्गाज	(हि) ११२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	टेकचन्द्र	(हि) २१
व्यासटीकाभाषा महाभूमि कामलीबाब	(हि) ११२		वज्रसूत्रप्रवृत्त	पञ्चाङ्गाज	(हि) २१
व्यासभाषा परमहंस परिब्राह्मणबाब	(सं) ११२		वज्रसूत्रप्रवृत्त	मोचदास	(हि) २१
व्यासभाषा	—	(सं) ११२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	रूपचन्द्र	(हि) २
व्यासभाषा	मोचदास	(सं) ११२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	शिवाजीबाब	(हि) ११२
व्यासभाषा	—	(सं) ११२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(हि) ११२
व्यासटीकाभाषा	मंथी पञ्चाङ्गाज	(सं) ११२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(सं) ११
व्यासटीकाभाषा	जानकीबाब	(सं) ११२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(सं) ११
व्यासभूष	—	(सं) ११२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(सं) ११
व्यासभूषा	—	(हि) १२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(सं) ११
व्यासभूषाभाषा	—	(हि) १२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(सं) ११
व्यासभूषाभाषा	विक्रान्त	(हि) ७००	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(हि) २१ ७००
व्यासभूषाभाषा	वसो	(हि) ७००	वज्रसूत्रप्रवृत्त	पञ्चाङ्गाज	(सं) २१
व्यासभूषाभाषा	—	(सं) २१४ १४	वज्रसूत्रप्रवृत्त	सामान्य	(सं) ७००
प			वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(सं) ११
व्यासभूषाभाषा	मुद्राभाषा	(सं) २१२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	मुद्राभाषा	(सं) २१
व्यासभूषाभाषा	हरिचन्द्र	(हि) ४	वज्रसूत्रप्रवृत्त	मंथी पञ्चाङ्गाज	(हि) ७००
व्यासभूषाभाषा	हरिचन्द्र	(हि) ७००	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(सं) ११
व्यासभूषाभाषा	—	(सं) ११२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	व० विष्णुदास	(सं) ११
व्यासभूषाभाषा	मंथी पञ्चाङ्गाज	(सं) २	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(हि) ११
व्यासभूषाभाषा	मुद्राभाषा	(सं) २	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(सं) ११
व्यासभूषाभाषा	वसो	(सं) २०	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(सं) ११
व्यासभूषाभाषा	मुद्राभाषा	(सं) २	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(हि) ११
व्यासभूषाभाषा	—	(सं) २१२ २१०	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(हि) ११
व्यासभूषाभाषा	मुद्राभाषा	(सं) २	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(हि) ११
व्यासभूषाभाषा	मुद्राभाषा	(सं) २१२	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(हि) ११
व्यासभूषाभाषा	—	(सं) २	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(हि) ११
व्यासभूषाभाषा	—	(सं) २	वज्रसूत्रप्रवृत्त	—	(हि) ११

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	खेमचन्द्र	(हि०)	५८०	पद	जीवराम	(हि०)	५६०, ७६१
		५८३, ५६१, ६४६		पद	जोधराज	(हि०)	४६८
पद	गरीबदास	(हि०)	७६३			६६६, ७०६, ७८६, ७६८	
पद	गुणचन्द्र	(हि०)	५८१	पद	टोडर	(हि०)	५८२
		५८५, ५८७, ५८८				६१४, ६२३, ७७६, ७७७	
पद	गुणपूरण	(हि०)	७६८	पद	त्रिलोककीर्त्ति	(हि०)	५८०, ५८१
पद	गुमानोराम	(हि०)	६६६	पद	ब्र० दयाल	(हि०)	५८७
पद	गुलावकृष्ण	(हि०)	५८४, ६१४	पद	दयालदास	(हि०)	७४६
पद	घनश्याम	(हि०)	६२३	पद	दरिगह	(हि०)	७४६
पद	चतुर्भुज	(हि०)	७७०	पद	दलजी	(हि०)	७४६
पद	चन्द्र	(हि०)	५८७, ७६३	पद	दास	(हि०)	७४६
पद	चन्द्रभान	(हि०)	५६१	पद	दिलाराम	(हि०)	७६३
पद	चैनविजय	(हि०)	५८८, ७६८	पद	दीपचन्द्र	(हि०)	५८३
पद	चैनसुख	(हि०)	७६३	पद	दुलीचन्द्र	(हि०)	६६३
पद	छीहल	(हि०)	७२३	पद	देवसेन	(हि०)	५८६
पद	जगताराम	(हि०)	५८१	पद	देवान्नदा	(हि०)	७८५
		५८२, ५८४, ५८५, ५८८, ५८९, ६१५, ६६७, ६६६, ७२४, ७५७, ७६८, ७६९				७८६, ७९३	
पद	जगराम	(हि०)	४४५, ७८५	पद	देवीदास	(हि०)	६४६
पद	जनमल	(हि०)	५८५	पद	देवीसिंह	(हि०)	६६४
पद	जयकीर्त्ति	(हि०)	५८५, ५८८	पद	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	५८७
पद	जयचन्द्र छावड़ा	(हि०)	४४६	पद	दौलतराम	(हि०)	६५४
पद	जादूराम	(हि०)	४४५			७०६, ७८२, ७६३	
पद	जानिमोहम्मद	(हि०)	५८६	पद	द्यानतराय	(हि०)	५८३
पद	जिनदास	(हि०)	५८१			५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ६२२, ६२४, ६४३, ६४६, ६५४, ७०४, ७०६, ७१३, ७४६	
		५८८, ६१५, ६६८, ७४६, ७६४, ७७४, ७६३,		पद	धर्मपाल	(हि०)	५८८, ७६८
पद	जिनहर्ष	(हि०)	५६०	पद	धनराज	(हि०)	७६८
पद	जीवणदास	(हि०)	४४५	पद	नथ विमल	(हि०)	५८१
पद	जीवणाराम	(हि०)	५८०	पद	नन्ददास	(हि०)	५८७
						७७०, ७०४	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स
पञ्चतन्त्र	आ नेमिकम्	(रा)	१८	पञ्चतन्त्र	—	(रं)	१७४
पञ्चतन्त्रटीका	अमितगति	(रं)	१२	पट्टीपञ्चमैत्री पुस्तक	—	(रि)	११
पञ्चतन्त्रटीका	—	(रं)	४	पट्टीपि	विष्णुमह	(रं)	१११
पञ्चतन्त्रपुति	अथर्वचम्	(र)	१२	पट्टपि	—	(रि)	१७१ ७२९
पञ्चतन्त्र	—	(र)	२६१	पञ्चतन्त्रसूत्र	—	(रा)	१११
पञ्चतन्त्र	—	(र)	२७५	पञ्चतन्त्रसूत्र	—	(रा)	१११
पञ्चतन्त्रटीका	—	(रं)	४ १	पञ्चतन्त्रटीका	वाङ्मयारी	(र)	१११
पञ्चतन्त्रपञ्च	—	(रं)	४ १	पञ्चतन्त्रटीका	विद्यानन्दि	(रं)	१११
पञ्चतन्त्र	विष्णुसर्मा	(र)	११२	पञ्चतन्त्रविचार	—	(रं)	१११
पञ्चतन्त्र	कवच		१ ३	पञ्च	कवचराम	(रि)	१ ३
पञ्चतन्त्रप्रबोध	—	(रं)	१ ३	पञ्च	कवचराम	(रि)	१ ३
पञ्चतन्त्राचन गणेश [विमलपुत्र]	—	(रं)	२ ३	पञ्च	कवचराम	(रि)	१ ३
पञ्चतन्त्रप्रवर	—	(रं)	१७३ २१६				१२७ ७२४ १
पञ्चतन्त्रादी	—	(रि)	७४६	पञ्च	अनन्तकीर्ति	(रि)	१ ३
पञ्चतन्त्र	त्रिभुवनचम्	(रि)	१७३	पञ्च	अनन्तचम्	(रि)	१ ३
पञ्चतन्त्रकाल	कुन्दकुम्हारबाबू	(रा)	४	पञ्च	अनन्तचम्	(रि)	७७६, ७८
पञ्चतन्त्रकालटीका	अनन्तचम्पुति	(र)	४१	पञ्च	अनन्तकीर्ति	(रि)	१११
पञ्चतन्त्रकालनामा	कुचराम	(रि)	४१				११४ ७ १ ७२४ ७७४
पञ्चतन्त्रकालनामा	प हीरामन्	(रि)	४१	पञ्च	अनन्तचम्	(रि)	११
पञ्चतन्त्रकालनामा	पांडे हेमराज	(रि)	४१				११३, ११४
पञ्चतन्त्रकालनामा	—	(रि)	७१८, ७२	पञ्च	कवीर (रि)	७७७ ७८१	
पञ्चतन्त्रकालि	बीरह	(रि)	७१८	पञ्च	कर्मचम्	(रि)	१ ७
पञ्चतन्त्रकालि	ठकपुरसी	(रि)	७ १	पञ्च	किराण्युद्धाव (रि)	११४ ७८१	
			७२२, ७६३	पञ्च	किराण्युद्धाव (रि)	११२	
पञ्चतन्त्रराज	—	(रि)	१११	पञ्च	किराण्युद्धाव (रि)	११ ७०४	
पञ्चतन्त्रराज	—	(रं)	१ ४	पञ्च	कुमुदचम्	(रि)	१७, १७
पञ्चतन्त्रराज	बीरह (रि)	१	७१२	पञ्च	किराण्युद्धाव (रि)	११२	
पञ्चतन्त्रराज	—	(रि)	११	पञ्च	कुमुदचम्	(रि)	१ १
पञ्चतन्त्रराज	—	(रि)	७४१				११४ ११४ ११४ ७०१ ७०१ ७०१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	खेमचन्द्र	(हि०)	५८०	पद	जीवराम	(हि०)	५६०, ७६१
			५८३ ५६१, ६४६	पद	जोधराज	(हि०)	४६४
पद	गरीबदास	(हि०)	७६३				६६६, ७०६, ७८६, ७६८
पद	गुणचन्द्र	(हि०)	५८१	पद	टोडर	(हि०)	५८२
			५८५, ५८७, ५८८				६१४, ६२३, ७७६, ७७७
पद	गुणपूरण	(हि०)	७६८	पद	त्रिलोककीर्त्ति	(हि०)	५८०, ५८१
पद	गुमानोराम	(हि०)	६६६	पद	ब्र० दयाल	(हि०)	५८७
पद	गुलाबकृष्ण	(हि०)	५८४, ६१४	पद	दयालदास	(हि०)	७४६
पद	घनश्याम	(हि०)	६२३	पद	दरिगाह	(हि०)	७४६
पद	चतुर्भुज	(हि०)	७७०	पद	दलजी	(हि०)	७४६
पद	चन्द	(हि०)	५८७, ७६३	पद	दास	(हि०)	७४६
पद	चन्द्रभान	(हि०)	५६१	पद	दिलाराम	(हि०)	७६३
पद	चैनविजय	(हि०)	५८८, ७६८	पद	दीपचन्द	(हि०)	५८३
पद	चैनमुख	(हि०)	७६३	पद	दुलीचन्द	(हि०)	६६३
पद	छीहल	(हि०)	७२३	पद	देवसेन	(हि०)	५८६
पद	जगताराम	(हि०)	५८१	पद	देवान्नक्ष	(हि०)	७८५
			५८२, ५८४, ५८५, ५८८, ५८९, ६१५, ६६७, ६६६,				७८६, ७६३
			७२४, ७५७, ७६८, ७६६	पद	देवीदास	(हि०)	६४६
पद	जगराम	(हि०)	४४५, ७८५	पद	देवीसिंह	(हि०)	६६४
पद	जनमल	(हि०)	५८५	पद	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	५८७
पद	जयकीर्त्ति	(हि०)	५८५, ५८८	पद	दौलतराम	(हि०)	६५४
पद	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि०)	४४६				७०६, ७८२, ७६३
पद	जादूराम	(हि०)	४४५	पद	द्यानतराय	(हि०)	५८३
पद	जानिमोहम्मद	(हि०)	५८६				५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ६२२,
पद	जिनदास	(हि०)	५८१				६२४, ६४३, ६४६, ६५४, ७०४, ७०६, ७१३, ७४६
			५८८, ६१५, ६६८, ७४६, ७६४, ७७४, ७६३,	पद	धर्मपाल	(हि०)	५८८, ७६८
पद	जिनहर्ष	(हि०)	५६०	पद	धनराज	(हि०)	७६८
पद	जीवणदास	(हि०)	४४५	पद	नथ विमल	(हि०)	५८१
पद	जीवणाराम	(हि०)	५८०	पद	नन्ददास	(हि०)	५८७
							७७०, ७०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	रामचन्द्र	(हि०)	५८१	पद	सकलकीर्ति	(हि०)	५८८
			६६८, ६६९	पद	सन्तदास	(हि०)	६५४, ७५९
पद	रामदाम	(हि०)	५८३	पद	सबलसिंह	(हि०)	६२४
			५८८, ६६७	पद	समयसुन्दर	(हि०)	५७६
पद	रामभगत	(हि०)	५८२				५८८, ५८९, ७७७
पद	रूपचन्द्र	(हि०)	५८५	पद	श्यामदास	(हि०)	७६४
			५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ६२४, ६६१, ७२४, ७४६	पद	सवाईराम	(हि०)	५६०
			७५५, ७६३, ७६५, ७८३	पद	साईदास	(हि०)	६२०
पद	रेतुराज	(हि०)	७६८	पद	साहकीर्ति	(हि०)	७७७
पद	लक्ष्मीसागर	(हि०)	६८२	पद	साहिबराम	(हि०)	७६८
पद	ऋषि लहरी	(हि०)	५८५	पद	सुखदेव	(हि०)	५८०
पद	लालचन्द्र	(हि०)	५८२	पद	सुन्दर	(हि०)	७२४
			५८३, ५८७, ६६६, ७६३	पद	सुन्दरभूषण	(हि०)	५८७
पद	विजयकीर्ति	(हि०)	५८०	पद	सूरजमल	(हि०)	५८१
			५८२, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ६६७	पद	सूरदास	(हि०)	७६६, ७६३
पद	बिनोदीलाल	(हि०)	५६०	पद	सुरेन्द्रकीर्ति	(हि०)	६२२
			७२३, ७५७, ७८३, ७६८	पद	सेवग	(हि०)	७६३, ७६८
पद	विश्वभूषण	(हि०)	५६१, ६२१	पद	इठमलदास	(हि०)	६२४
पद	विसनवास	(हि०)	५८७	पद	हरखचन्द्र	(हि०)	५८३
पद	विहारीदास	(हि०)	५८७				५८६, ५८५, ७६३
पद	धृन्दावन	(हि०)	६४३	पद	हर्षकीर्ति	(हि०)	५८६
पद	ऋषि शिवलाल	(हि०)	४४३				५८५, ५८८, ५६०, ६२०, ६२४, ६६३, ७०१, ७५०
पद	शिवसुन्दर	(हि०)	७५०				७६३, ७६४
पद	शुभचन्द्र	(हि०), ७०२, ७२४		पद	हरिश्चन्द्र	(हि०)	६४६
पद	शोभाचन्द्र	(हि०)	५८३	पद	हरिसिंह	(हि०)	५८२
पद	श्रीपाल	(हि०)	६७०				५८५, ६२०, ६४३, ६४४, ६६३, ६६६, ७७२, ७७६
पद	श्रीभूषण	(हि०)	५८३				७६३, ७६६
पद	श्रीराम	(हि०)	५६०	पद	हरीदास	(हि०)	७७०
				पद	मुनि हीराचन्द्र	(हि०)	५८१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पदसंग्रह	दौलतराम	(हि०)	४४५, ४४६	पदस्तुति	—	(हि०)	७११
पदसंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	४४५, ७७७	परमज्योति	बनारसीदास	(हि०)	४०२
पदसंग्रह	नयनमुख	(हि०)	४४५, ७२६			५६०, ६६४, ७७४	
पदसंग्रह	नवल	(हि०)	४४५, ७२६	परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	(स०)	५१६
पदसंग्रह	परमानन्द	(हि०)	६८४	परमात्मपुराण	दीपचन्द	(हि०)	१०६
पदसंग्रह	वखतराम	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११०
पदसंग्रह	बनारसीदास	(हि०)	६२२, ७६५			५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७	
पदसंग्रह	बुधजन	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशटीका	आ० अमृतचन्द	(स०)	११०
			४४६, ६८२	परमात्मप्रकाशटीका	ब्रह्मदेव	(स०)	१११
पदसंग्रह	भगतराम	(हि०)	७३६	परमात्मप्रकाशटीका	—	(स०)	१११
पदसंग्रह	भागचन्द	(हि०)	४४५, ४४६	परमात्मप्रकाशवालावबोधनीटीका	खानचद	(हि०)	१११
पदसंग्रह	भूधरदास	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	दौलतराम	(हि०)	१०८
			६२०, ७७६, ७७७, ७८६	परमात्मप्रकाशभाषा	नथमल	(हि०)	१११
पदसंग्रह	मंगलचन्द	(हि०)	४४७	परमात्मप्रकाशभाषा	प्रभुदास	(हि०)	७६५
पदसंग्रह	मनोहर	(हि०)	४४५, ७८६	परमात्मप्रकाशभाषा	सूरजभान मोसवाल	(हि०)	११६
पदसंग्रह	लाल	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	—	(हि०)	११६
पदसंग्रह	विश्वभूषण	(हि०)	४४५	परमानन्दपंचविंशति	—	(स०)	४०४
पदसंग्रह	शोभाचन्द	(हि०)	७७७	परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनदि	(स०)	४०२, ४३७
पदसंग्रह	शुभचद	(हि०)	७७७	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्त्ति	(स०)	४०३
पदसंग्रह	साहिवराम	(हि०)	४४५	परमानन्दस्तवन	—	(स०)	८०४, ४२५
पदसंग्रह	सुन्दरदास	(हि०)	७१०	परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(स०)	७२४
पदसंग्रह	सूरदास	(हि०)	६८४	परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	(स०)	५७४
पदसंग्रह	सेवक	(हि०)	४४७	परमानन्दस्तोत्र	—	(स०)	४०४
पदसंग्रह	हरखचद	(हि०)	६६३			४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७	
पदसंग्रह	हरीसिंह	(हि०)	७७२	परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	(हि०)	५६२
पदसंग्रह	हीराचन्द	(हि०)	४४५, ४४७	परमानन्दस्तोत्र	—	(हि०)	४२६
पदसंग्रह	—	(हि०)	४४४	परमार्थगीत व दोहा	रूपचद	(हि०)	७०६, ७६४
			४४५, ६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०६, ७१०	परमार्थपुहरी	—	(हि०)	७२४
			७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६०	परमार्थस्तोत्र	—	(स०)	४०४
			७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७८०				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पदसंग्रह	दौलतराम	(हि०)	४४५, ४४६	पदस्तुति	—	(हि०)	७११
पदसंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	४४५, ७७७	परमज्योति	वनारसीदास	(हि०)	४०२
पदसंग्रह	नयनसुख	(हि०)	४४५, ७२६			५६०, ६६४, ७७८	
पदसंग्रह	नरक	(हि०)	४४५, ७२६	परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	(स०)	५१६
पदसंग्रह	परमानन्द	(हि०)	६८४	परमात्मपुराण	दीपचन्द्र	(हि०)	१०६
पदसंग्रह	वखतराम	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११०
पदसंग्रह	वनारसीदास	(हि०)	६२२, ७६५			५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७	
पदसंग्रह	बुधजन	(हि०)	४४५ ४४६, ६८२	परमात्मप्रकाशटीका	श्री० अमृतचन्द्र	(स०)	११०
पदसंग्रह	भगताराम	(हि०)	७३६	परमात्मप्रकाशटीका	ब्रह्मदेव	(स०)	१११
पदसंग्रह	भागचन्द्र	(हि०)	४४५, ४४६	परमात्मप्रकाशटीका	—	(स०)	१११
पदसंग्रह	भूधरदास	(हि०)	४४५ ६२०, ७७६, ७७७, ७८६	परमात्मप्रकाशवालावबोधनीटीका	रामचन्द्र	(हि०)	१११
पदसंग्रह	मंगलचन्द्र	(हि०)	४४७	परमात्मप्रकाशभाषा	दौलतराम	(हि०)	१०८
पदसंग्रह	मनोहर	(हि०)	४४५, ७८६	परमात्मप्रकाशभाषा	नथमल	(हि०)	१११
पदसंग्रह	लाल	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	प्रभुदास	(हि०)	७६५
पदसंग्रह	विश्वभूषण	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	सूरजभान भोसवाल	(हि०)	११६
पदसंग्रह	शोभाचन्द्र	(हि०)	७७७	परमात्मप्रकाशभाषा	—	(हि०)	११६
पदसंग्रह	शुभचन्द्र	(हि०)	७७७	परमानन्दपंचविंशति	—	(स०)	४०४
पदसंग्रह	साहिबराम	(हि०)	४४५	परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनदि	(स०)	४०२, ४३७
पदसंग्रह	सुन्दरदास	(हि०)	७१०	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्ति	(स०)	४०३
पदसंग्रह	सूरदास	(हि०)	६८४	परमानन्दस्तवन	—	(स०)	८४४, ४२५
पदसंग्रह	सेषक	(हि०)	४४७	परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(स०)	७२४
पदसंग्रह	हरखचन्द्र	(हि०)	६६३	परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	(स०)	५७४
पदसंग्रह	हरीसिंह	(हि०)	७७२	परमानन्दस्तोत्र	—	(स०)	४०४
पदसंग्रह	हीराचन्द्र	(हि०)	४४५, ४४७			४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७	
पदसंग्रह	—	(हि०)	४४४	परमानन्दस्तोत्र	वनारसीदास	(हि०)	५६२
४४५, ६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०९, ७१०				परमानन्दस्तोत्र	—	(हि०)	४२६
७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६०				परमार्थगीत व दोहा	रूपचन्द्र	(हि०)	७०६, ७६४
७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७८०				परमार्थसुहरी	—	(हि०)	७२४
				परमार्थस्तोत्र	—	(स०)	४०४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पार्वनाथकीपुण्यमाल	लोहट	(हि०)	७७६
पारसनाथकीनिसाणी	—	(हि०)	६५०
पार्वनाथकीनिसानी	जिनहर्ष	(हि०)	४४८, ५७६
पार्वनाथकीनिसानी	—	(हि०)	७००
पार्वनाथवेदर्शन	चुन्दाधन	(हि०)	६२५
पार्वनाथचरित्र	रडधू	(ग्रन्०)	१७६
पार्वनाथचरित्र	बाटिराजसूरि	(स०)	१७६
पार्वनाथचरित्र	भ० मकलकीर्ति	(स०)	१७६
पार्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	(हि०)	४६८
पार्वजिनचैत्यालयचित्र	—	—	६०३
पार्वनाथजयमाल	लोहट	(हि०)	६४२
पार्वनाथजयमाल	—	(हि०)	६५५, ६७६
पार्वनाथपञ्चावतीस्तोत्र	—	(स०)	४०५
पार्वनाथपुराण [पार्वपुराण]	भूधरदास	—	(हि०) १७६, ७४८, ७६१
पार्वनाथपूजा	—	(सं०)	४२३
पार्वनाथपूजा (विधानसहित)	—	(स०)	५६०, ६०६, ६४०, ६४५, ७०४, ७३१
पार्वनाथपूजा	हर्षकीर्ति	(हि०)	६६३
पार्वनाथपूजा	—	(हि०)	५०७
पार्वनाथपूजामंत्रमहित	—	(स०)	५६६, ६००, ६२३, ६४५, ६४८
पार्वमहिम्नस्तोत्र	महामुनि राममिह	(स०)	५७५
पार्वनाथनंदमीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(स०)	४०६
पार्वनाथस्तोत्र	देवचंद्रसूरि	(स०)	६३३
पार्वनाथस्तवन	राजसेन	(हि०)	७३७
पार्वनाथस्तवन	जगरूप	(हि०)	६८१
पार्वनाथस्तवन [पार्वचिन्ता]	ब्र० नाथ	—	(हि०) ६७०, ६८३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पार्वनाथस्तवन	समयराज	(हि०)	—
पार्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	—
पार्वनाथस्तवन	—	(हि०)	४६६, ७०२, ७०३
पार्वनाथस्तुति	—	(हि०)	—
पार्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(स०)	—
पार्वनाथस्तोत्र	पद्मनदि	(स०)	५६६, ७०२, ७०३
पार्वनाथस्तोत्र	रघुनाथदास	(स०)	४०६, ४२४, ४२५, ४२६, ४३२, ५६६, ५७८, ६४५
पार्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(स०)	६४७, ६४८, ६४९, ६७०, ७६३
पार्वनाथस्तोत्र	—	(स०)	४०६, ४२४, ४२५, ४२६, ४३२, ५६६, ५७८, ६४५
पार्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	४०६, ५६६, ६११
पार्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	४०६, ५६६, ७३१
पार्वनाथस्तोत्रटीका	—	(स०)	४०६, ५६६, ७३१
पार्वनाथाष्टक	—	(स०)	४०६, ५६६, ७३१
पार्वनाथाष्टक	सकलकीर्ति	(हि०)	७३१
पाराविधि	—	—	२६६
पारावरी	—	(स०)	२८६
परागरीसज्जनरजनीटीका	—	(स०)	२८६
पावागिरीपूजा	—	(हि०)	७३०
पाशाकेवली	गर्गमुनि	(स०)	२८६, ६४७
पाशाकेवली	ज्ञानभास्कार	(स०)	२८६
पाशाकेवली	—	(स०)	२८६, ७०१
पाशाकेवली	श्रवजद	(हि०)	७१३
पाशाकेवली	—	(हि०)	२८७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
पूजापाठसंग्रह	—	(हि०)	५१०		प्रक्रियाकौमुदी	—	(स०)	२६१	
		५११, ७४३, ७४४			पृच्छावली	—	(हि०)	६५७	
पूजापाठस्तोत्र	—	(स० हि०)	७१०		प्रत्याख्यान	—	(प्रा०)	७०	
			७८४		प्रतिक्रमण	—	(स०)	६६	
पूजाप्रकरण	उमाश्वामी	(स०)	५१२				४२६, ५७१		
पूजाप्रतिष्ठापाठसंग्रह	—	(स०)	६६६		प्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	६६	
पूजामहात्म्यविधि	—	(स०)	५१२		प्रतिक्रमण	—	(प्रा० स०)	४२५	
पूजावर्णविधि	—	(सं०)	५१२				५७३		
पूजाविधि	—	(प्रा०)	५१२		प्रतिक्रमणपाठ	—	(प्रा०)	६६	
पूर्वाष्टक	विश्वभूषण	(सं०)	५१३		प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	६६	
पूजाष्टक	अभयचन्द्र	(हि०)	५१२		प्रतिक्रमणसूत्र [वृत्तिसहित]	—	(प्रा०)	६६	
पूजाष्टक	आशानन्द	(हि०)	५१२		प्रतिमाउत्थापककू उपदेश	जगरूप	(हि०)	७०	
पूजाष्टक	लोहट	(हि०)	५१२		प्रतिमासातचतुर्दशी [प्रतिमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा]				
पूजाष्टक	विनोदीलाल	(हि०)	७७७			अक्षयराम	(स०)	५१६	
पूजाष्टक	—	(हि०)	५१२, ७४५		प्रतिमासातचतुर्दशीपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(स०)	७६१	
पूजासंग्रह	—	(स०)	६०३		प्रतिमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(स०)	५१४,	
		६६४, ६६८, ७११, ७१२, ७२५					५२०, ५४०		
पूजासंग्रह	रामचन्द्र	(हि०)	५२०		प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा	रामचन्द्र	(स०)	५२०	
पूजासंग्रह	लालचन्द	(हि०)	७७७		प्रतिष्ठाकु कु मपत्रिका	—	(स०)	३७३	
पूजासंग्रह	—	(हि०)	५६५		प्रतिष्ठादर्श	श्रीराजकीर्त्ति	(स०)	५२०	
		६०४, ६६२, ६६५, ७०७, ७०८, ७११, ७१४, ७२६,			प्रतिष्ठादीपक	प० नरेन्द्रसेन	(स०)	५२१	
		७३०, ७३१, ७३३, ७३४, ७३६, ७४८ ।			प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(स०)	५२१	
पूजासार	—	(स०)	५२०		प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार]	वसुनदि	(स०)	५२१, ५२२	
पूजास्तोत्रसंग्रह	—	(स० हि०)	६६६		प्रतिष्ठापाठ	—	(स०)	५२२	
		७०२, ७०८, ७०९, ७११, ७१३, ७१४, ७१६, ७२५,					६६६, ७५६		
		७३४, ७५२, ७५३, ७५४, ७७८ ।			प्रतिष्ठापाठभाषा	बा० दुर्गाचन्द	(हि०)	५२२	
पूर्वमीमांसार्थप्रकरणसंग्रह	लोणाक्षिभास्कर	(स०)	१३७		प्रतिष्ठानामावलि	—	(हि०)	३७४, ७२६	
पैसठबोल	—	(हि०)	३३१		प्रतिष्ठानिधानकी सामग्रीवर्णन	—	(हि०)	७२३	
पोसहरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	७६२		प्रतिष्ठाविधि	—	(स०)	५२२	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ग्रन्तोत्तरस्तोत्र	—	(स०)	४०६	श्रीत्यङ्कुरचौपई	नेमिचन्द्र	(हि०)	७७५
ग्रन्तोत्तरोगातकाचार भ० सकलकीर्ति	—	(स०)	७१	श्रीत्यङ्कुरचरित्र	—	(हि०)	६८६
ग्रन्तोत्तरोद्धार	—	(हि०)	७३	श्रीगणेशपदवर्णन	—	(हि०)	७५
ग्रन्थिस्त	म० दामोदर	(स०)	६०८	श्रीगणेशवामग्रतोत्थावन	—	(स०)	६६६
ग्रन्थिस्त	—	(स०)	१७७	फ			
ग्रन्थिस्तकारिता	चालुक्य	(स०)	७३				
ग्रन्थाद चरित्र	—	(हि०)	६००	फलपांडित [पञ्चमेर]	मण्डनविद्य	—	५२५
ग्रन्थतन्त्रद्वयो	—	(प्रा०)	३११	फलपदीपादवनायस्तवन	समयमुन्दरगणि	(स०)	६१६
ग्रन्थतन्त्रद्वयो	रत्नमेखर	(प्रा०)	३११	फुटकरव्यक्ति	—	(हि०)	७४८
ग्रन्थतन्त्रद्वयो	अनङ्क	(प्रा०)	३११				७६६, ७७३
ग्रन्थतन्त्रद्वयो	—	(स०)	३१२	फुटकरज्योतिषपद्य	—	(स०)	५७३
ग्रन्थतन्त्रद्वयो	चण्डिका	(स०)	२६२	फुटकर दोहे	—	(हि०)	६६५
ग्रन्थतन्त्रद्वयो	श्रीरामभट्ट	(प्रा०)	२६२				६६६, ७८१
ग्रन्थतन्त्रद्वयो	सौभाग्यगणि	(स०)	२६२	फुटकरपद्य	—	(हि०)	
ग्रन्थप्रतिष्ठा	—	(स०)	५२३	फुटकरपद्य एव व्यक्ति	—	(हि०)	६४३
ग्रन्थप्रायश्चित्त	—	(स०)	११४	फुटकरपाठ	—	(स०)	५७३
ग्रन्थप्रायश्चित्त	—	(हि०)	७६७	फुटकरपर्याय	—	(स०)	१७४
ग्रन्थ क्रिया	—	(स०)	७४	फुटकरसर्वेसा	—	(हि०)	७७५
ग्रन्थ स्मरणमन्त्र	—	(स०)	४०६	फुटकरतन्त्रा वा दूहा	—	(हि०)	६७५
ग्रन्थसार	आ० कु टकुन्द	(प्रा०)	१३०	व			
ग्रन्थश्रितप्रत्य	—	(स०)	७४				
ग्रन्थश्रितविधि	अकलङ्कचरित्र	(स०)	७४	वक्त्रचूलाय	जयकीर्ति	(हि०)	३६३
ग्रन्थश्रितविधि	म० एकलक्ष	(स०)	७४	वक्त्रचूलायटीस्तवन	कमलफलश	(हि०)	६१६
ग्रन्थश्रितविधि	—	(स०)	७४	वक्त्रचूलाय	—	(हि०)	७२६
ग्रन्थश्रितविधि	—	(स०)	७४	वक्त्रचूलाय	गुलाधराय	(हि०)	६८५
ग्रन्थश्रितविधि	इन्द्रनन्दि	(प्रा०)	७४	वक्त्रचूलाय	—	(हि०)	६६३, ७५२
ग्रन्थश्रितविधि	—	(गुज०)	७४	वक्त्रचूलाय	—	(स०)	३६८, ४३२
ग्रन्थश्रितविधि	नदिगुरु	(स०)	७५	वक्त्रचूलाय [कर्मदहनपूजा]	मोमदत्त	(स०)	६३६
ग्रन्थश्रितविधि	म० नेमिदत्त	(स०)	१८२	वक्त्रचूलाय के छन्द	—	(हि०)	६००
ग्रन्थश्रितविधि	जोधराज	(हि०)	१८३	वक्त्रचूलाय	—	(हि०)	७१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वालाविबोध [शुभाकार पाठका धर्म]	—	(प्रा० हि०)	७५
वावनी	वनारसीदाम	(हि०)	७५०
वावनी	हेमराज	(हि०)	६५७
वासठकुमार	[मण्डलचित्र]		५२५
वाहुवलीसज्जाय	विमलकीर्ति	(हि०)	४४६
वाहुवलीसज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
विम्बनिर्माणविधि	—	(स०)	३५४
विम्बनिर्माणविधि	—	(हि०)	३५४, ६६१
विहारीसतसई	विहारीलाल	(हि०)	६७५
विहारीसतसईटीका	कृष्णदास	(हि०)	७२७
विहारीसतसईटीका	हरिचरनदास	(हि०)	६८७
विहारीसतसईटीका	—	(हि०)	७०६
वीजक [कोश]	—	(हि०)	२७६
वीजकोश [मातृका निर्घट]	—	(स०)	३४६
वीसतीर्थङ्करजयमाल	—	(हि०)	५११
वीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	जितसिंह	(हि०)	७००
वीसतीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	५१४
			५१६, ७३०
वीसतीर्थङ्करपूजा	थानजी अजमेरा	(हि०)	५२३
वीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५२३, ५३७
वीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	४००
वीसतीर्थङ्करोकी जयमाल [वीस विरह पूजा]			
	हर्षकीर्ति		४६५, ७२२
वीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	—	(स०)	५६५
वीसविरहमानजकटी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
वीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि	—	(हि०)	५०५
वीसविरहमाणपूजा	—	(स०)	६३६
वीसविरहमानपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	(स० हि०)	७६३
बुधजनविलास	बुधजन	(हि०)	३३०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बुधजनसतमई	बुधजन	(हि०)	३३२, ३३३
बुद्धावतारचित्र	—		६०३
बुद्धिविलास	वन्तरामसाह	(हि०)	७५
बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा सकलित	(हि०)	६१७
बुलाखीदास खत्रीकी वरात	—	(हि०)	७५३
वेलि	छोहल	(हि०)	७३८
वैतालपच्चीसी	—	(म०)	२३४
वोधप्राभृत	कुङ्कुदाचार्य	(प्रा०)	११५
वोधसार	—	(हि०)	७५
ग्रन्थचर्याष्टक	—	(स०)	३३३
ग्रन्थचर्यवर्णन	—	(हि०)	७५
ग्रन्थविलास	भैया भगवतीदास	(हि०)	३३३, ७६०

भ

भक्तामरपञ्जिका	—	(स०)	४०६
भक्तामरस्तोत्र	मानतुगाचार्य	(स०)	४०२
			४०७, ४२४, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३३, ४६६, ५७२, ५७३, ५६६, ५६७, ६०३, ६०४, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६४४, ६४८, ६५२, ६६४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६८, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६७७, ६८०, ६८१, ६८५, ६८६, ६८१, ६८३, ६८६, ७०३, ७०६, ७०७, ७३५, ७३७, ७४५, ७५२, ७५४, ७५८, ७६१, ७८८, ७८९, ७९६, ७९७
भक्तामरस्तोत्र [मन्त्रसहित]	—	(स०)	६१२
			६३६, ६७०, ६६७, ७०५, ७१४, ७४१
भक्तामरस्तोत्र	श्रद्धिमन्त्रसहित	(स०)	४०६
भक्तामरस्तोत्रकथा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भयहरस्तोत्र	—	(हि०)	६१६	भावनाचीतीसी	म० पद्मनन्दि	(स०)	६३४
भरतेशवैभव	—	(हि०)	१८३	भावनाद्वात्रिशिका	आ० अमृतगति	(स०)	४७३
भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	(स०)	३३३, ७१५	भावनाद्वात्रिशिकाटीका	—	(स०)	११५
भववैराग्यशतक	—	(प्रा०)	११७	भावनाद्वात्रिशिका	—	(स०)	११५, ६३७
भवानीवाक्य	—	(हि०)	२८८	भावपाहुड	कुदकुदाचार्य	(प्रा०)	११५
भवानीसहस्रनाम एव कवच	—	(स०)	७६२	भावनापञ्चीसोन्नतोद्यापन	—	(स०)	५२४
भविष्यदत्तकथा ^१	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६४	भावनापद्धति	पद्मनन्दि	(स०)	५७५
५६४, ६४८, ७४०, ७५१, ७५२, ७७३, ७७५				भावनावतीसी	—	(स०)	६२८, ६३३
भविष्यदत्तचरित्र	प० श्रीधर	(स०)	१८४	भावनसारसंग्रह	चामुण्डराय	(स०)	७७, ६१५
भविष्यदत्तचरित्रभाषा	पद्माज्ञात चौधरी	(हि०)	१८४	भावनास्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	६१४
भविष्यदत्ततिलकानुन्दरीनाटक	न्यामतमिह	(हि०)	३१७	भावप्रकाश	मानमिश्र	(स०)	२६६
भव्यकुमुदचन्द्रिका	[सागारधर्ममृतस्वोपज्ञटीका]			भावप्रकाश	—	(स०)	२६६
प० आशाधर	स०	६३		भावशतक	श्री नागराज	(स०)	३३४
भागवत	—	(स०)	६७५	भावसंग्रह	देवसेन	(प्रा०)	७७
भागवतद्वादशमूकघटीका	—	(स०)	१५१	भावसंग्रह	श्रुतमुनि	(प्रा०)	७८
भागवतपुराण	—	(स०)	१५१	भावसंग्रह	वामदेव	(स०)	७८
भागवतमहिमा	—	(हि०)	६७६	भावसंग्रह	—	(स०)	७८, २६६
भागवतमहापुराण [सप्तमस्कध]	—	(स०)	१५१	भाषा भूषण	जसवतसिंह	(हि०)	१०
भाद्रपदपूजा	—	(हि०)	७७५	भाषाभूषण	धीरजसिंह		
भाद्रपदपूजासंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	५२४	भाष्यप्रदीप	कैटघट	(स०)	२०
भावत्रिमञ्जी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४२, ७००	भाष्यती	पद्मानाभ	(स०)	२८६
भावदीपक	जोधराज गोटीका	(हि०)	७७	भुवनकीर्ति	चूचराज	(हि०)	२८६
भावदीपक	—	(हि०)	६६०	भुवनदीपक	पद्मभस्मूरि	(स०)	२८६
भावदीपिका	कृष्णशर्मा	(स०)	१३८	भुवनदीपिका	—	(स०)	२८६
भावदीपिकाभाषा	—	(हि०)	४२	भुवनेश्वरीस्तोत्र	[सिद्धमहामत्र]		
भावनादण्णीतीसी	—	(प्रप०)	६४२	पृथ्वीधराचार्य	(स०)	३४	
भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	(स०)	७३६	भूगोलनिर्माण	—	(हि०)	३२३
नोट—रचना के यह नाम और हैं—				भूतकालचौबीसी	बुधजन	(हि०)	३६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
मरुदेवकी सज्जाय ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	४५०	महावीरस्तोत्र	स्वरूपचन्द्र	(हि०) ५११
मल्लिनाथपुराण सकलकीर्त्ति	(स०)	१५२	महावीराष्टक	भागचन्द्र	(स०) ४१३
मल्लिनाथपुराणभाषा सेवाराम पाटनी	(हि०)	१५२	महाशान्तिकविधान	प० धर्मदेव	(स०) ६२५
मल्हारचरित्र	—	(हि०) ७४१	महिम्नस्तवत	जयकीर्त्ति	(स०) ४२५
महर्षिस्तवन	—	(स०) ६५८	महिम्नस्तोत्र	—	(स०) ४१३
		४१३, ४२६	महीपालचरित्र	चारित्रभूषण	(स०) १८६
महर्षिस्तवन	—	(हि०) ४१२	महीपालचरित्र	भ० रत्ननन्दि	(स०) १८६
महागणपतिकवच	—	(स०) ६६२	महीपालचरित्रभाषा	नयमल	(हि०) १८६
महादण्डक	—	(हि०) ७३५	मागीतु गीगिरिमडलपूजा विश्वभूषण	(स०)	५२६
महापुराण जिनसेनाचार्य	(स०)	१५३	माणिक्यमालाग्रन्थप्रश्नोत्तरी	सग्रहकर्ता—	
महापुराण [संक्षिप्त]	—	(स०) १५२	ब्र० ज्ञानसागर	(स० प्रा० हि०)	६०४
महापुराण महाकवि पुष्पदन्त	(अप०)	१५३	माताके सोलह स्वप्न	—	(हि०) ४२४
महाभारतविष्णुसहस्रनाम	—	(स०) ६७६	माता पद्मावतीछन्द	भ० महीचन्द्र	(स० हि०) ५६०
महाभिमपेकपाठ	—	(स०) ६०७	माधवनिदान	माधव	(स०) ३००
महाभिमपेकसामग्री	—	(हि०) ६६८	माधवानलकथा	आनन्द	(स०) २३५
महामहर्षिस्तवनटीका	—	(स०) ४१३	मानतु गमानवति चौपई	मोहनविजय	(स०) २३५
महामहिम्नस्तोत्र	—	(स०) ४१३	मानकी बढी दावनी	मनासाह	(हि०) ६३८
महालक्ष्मीस्तोत्र	—	(स०) ४१३	मानदावनी	मानकवि	(हि०) ३३४, ६०१
महाविद्या [मन्त्रोका सग्रह]	—	(स०) ३५१	मानमञ्जरी	नन्दराम	(हि०) ६११
महाविद्याविडम्बन	—	(स०) १३८	मानमञ्जरी	नन्ददास	(हि०) २७६
महावीरजीका चौढाल्या ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	४५०	मानलघुदावनी	मनासाह	(हि०) ६३८
महावीरछन्द	शुभचन्द्र	(हि०) ३८९	मानविनोद	मानसिंह	(स०) ३००
महावीरनिर्वाणपूजा	—	(स०) ५२६	मानुपित्तगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(स०) ४६७
महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा	—	(स०) ५२६	मायाब्रह्माका विचार	—	(हि०) ७६७
महावीरनिर्वाणकल्याणकपूजा	—	(हि०) ३६८	मार्कण्डेयपुराण	—	(स०) १५३, ६०७
महावीरपूजा	वृन्दाधन	(हि०) ५२६	मार्गणा व गुणस्थान वर्णन	—	(प्रा०) ४३
महावीरस्तवन	जितचन्द्र	(हि०) ७००	मार्गणावर्णन	—	(प्रा०) ७६६
महावीरस्तवनपूजा	समयसुन्दर	(हि०) ७३५	मार्गणाविधान	—	(हि०) ७६०
महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(स०) ७५७	मार्गणासमाप्त	—	(प्रा०) ४३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मेघकुमारगीत	पूतो	(हि०)	७३८	मोहनिवेकयुद्ध	वनारसीदास	(हि०)	७१५, ७६४
			७४६, ७५०, ७६४	मीनएषादशीकथा	श्रुतसागर	(स०)	२२८
मेघकुमारचौदालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७	मीनएषादशीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६२०
मेघकुमारचौपई	—	(हि०)	७७४	मीनप्रतकथा	गुणभट्ट	(स०)	२३६
मेघकुमारवार्ता	—	(हि०)	६६४	मीनप्रतकथा	—	(स०)	२३७
मेघकुमारसङ्काय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८	मीनप्रतविधान	रत्नकीर्ति	(स० ग०)	२४६
मेघदूत	कालिदास	(स०)	१८७	मीनप्रतोद्यापन	—	(स०)	५१७
मेघदूतटीका	परमहंसपरिव्राजकाचार्य—						
मेघमाना	—	(स०)	२६०	य			
मेघमालाविधि	—	(स०)	५२७	यन्त्र [भगे हुए व्यक्तिके वापस आनेका]			६०३
मेघमालाप्रतकथा	श्रुतसागर	(स०)	११४	यन्त्रमन्त्रविधिफल	—	(हि०)	३५१
मेघमालाप्रतकथा	—	(स०)	२८६, २४७	यन्त्रमन्त्रसंग्रह	—	(स०)	७०१, ७६६
मेघमालाप्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२३६, २४४	यन्त्रसंग्रह	—	(स०)	३५२
मेघमालाप्रत [मण्डविधि]—			५२५				६६७, ७६८
मेघमालाप्रतोद्यापनकथा	—	(स०)	५२७	यक्षिणीवर्ण	—	(स०)	३५१
मेघमालाप्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५२७	यज्ञकीसामग्रीका ध्यौरा	—	(हि०)	५६५
मेघमालाप्रतोद्यापन	—	(स० हि०)	५१७	यामहिमा	—	(हि०)	५६५
			५३६	यतिदिनचर्या	देवसूरि	(प्रा०)	८०
मेदिनीकोश	—	(स०)	२७६	यतिभायनाष्टक	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	५०३
मेरूपूजा	सोमसेन	(स०)	७६५	यतिभावनाष्टक	—	(स०)	६३५
मेरुपक्ति तपकी कथा	खुशालचन्द	(हि०)	५१६	यतिभ्राह्मण के ४६ दोष	—	(हि०)	६२७
मोक्षपर्वटी	वनारसीदाम	(हि०)	८०	यव्याचार	आ० वसुनन्दि	(स०)	८०
			६४३, ७४६	यमक	—	(स०)	४२६
माक्षमार्गप्रकाशक	प० टोडरमल	(गज०)	८०	(यमकाष्टक)			
मोक्षशास्त्र	उमास्वामी	(स०)	६६४	यमकाष्टकस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	(स०)	४१३, ४२६
मोरपिच्छवारी [कृष्ण] के कवित कपोत	(हि०)		६७३	यमपालमातङ्गी कथा	—	(स०)	२३७
मोरपिच्छवारी [कृष्ण] के कवित वर्मदास	(हि०)		६७३	यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि	(स०)	१८७
मोरपिच्छवारी [कृष्ण] के कवित त्रिचित्रदेव	(हि०)		६७३	यशस्तिलकचम्पूटीका	श्रुतसागर	(स०)	१८७
मोहम्मदराजाकी कथा	—	(हि०)	६००	यशस्तिलकचम्पूटीका	—	(स०)	१८८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ स०
रघुवशटीका	समयसुन्दर	(स०)	१६४	रत्नत्रयपूजा	प० नरेन्द्रसेन	(स०)	५६४
रघुवशटीका	सुमतिविजयगणि	(स०)	१६४	रत्नत्रयपूजा	—	(स०)	५१६
रघुवशमहाकाव्य	कालिदास	(स०)	१६३	५२६, ५३७, ५५५, ५७४, ६०६, ६४०, ६४६,			
रतिरहस्य	—	(हि०)	७६६	६५२, ६६४, ७०४, ७०५, ७५६, ७६३			
रत्नकरडश्रावकाचार	समन्तभद्र	(स०)	८१	रत्नत्रयपूजा	—	(स० हि०)	५१८
			६६१, ७६५	रत्नत्रयपूजा	—	(प्रा०)	६३५, ६५५
रत्नकरडश्रावकाचार	प० सदासुख कासलीवाल			रत्नत्रयपूजा	ऋपभदास	(हि०)	५३०
	(हि० गद्य)		८२	रत्नत्रयपूजाजयमाल	ऋपभदास	(अप०)	५३७
रत्नकरडश्रावकाचार	नथमल	(हि०)	८३	रत्नत्रयपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८
रत्नकरडश्रावकाचार	सघी पन्नालाल	(हि०)	८३				५०३, ५२६
रत्नकरडश्रावकाचारटीका	प्रभाचन्द्र	(स०)	८२	रत्नत्रयपूजा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
रत्नकोप	—	(स०)	३३४, ७६६	रत्नत्रयपूजा	—	(हि०)	५१६
रत्नकोप	—	(हि०)	३३५				५३०, ६४५, ७४५
रत्नत्रयउद्यापनपूजा	—	(स०)	५२७	रत्नत्रयपूजाविधान	—	(स०)	६०७
रत्नत्रयकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०	रत्नत्रयमण्डल [चित्र]			५२५
रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी ब्रह्मसेन		(स०)	७८१	रत्नत्रयमण्डलविधान	—	(हि०)	५३०
रत्नत्रयगुणकथा	प० शिवजीलाल	(स०)	२३७	रत्नत्रयविधान	—	(स०)	५३०
रत्नत्रयजयमाल	—	(प्रा०)	५२७	रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्त्ति	(स०)	२२०, २४२
रत्नत्रयजयमाल	—	(स०)	५२८	रत्नत्रयविधानकथा	श्रुतसागर	(स०)	२३७
रत्नत्रयजयमाल	ऋपभदास बुधदास	(हि०)	५१६	रत्नत्रयविधानपूजा	रत्नकीर्त्ति	(स०)	५३०
रत्नत्रयजयमाल	—	(अप०)	५२८	रत्नत्रयविधान	टैकचन्द्र	(हि०)	५३१
रत्नत्रयजयमाल	—	(हि०)	५२६	रत्नत्रयविधि	आशाधर	(स०)	२४२
रत्नत्रयजयमालभाषा	नथमल	(हि०)	५२८	रत्नत्रयव्रतकथा [रत्नत्रयकथा]			
रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	—	(प्रा०)	६५८	ललितकीर्त्ति (स०)			६४५, ६६५
रत्नत्रयपाठविधि	—	(स०)	५६०	रत्नत्रयव्रत विधि एव कथा	—	(हि०)	७३३
रत्नत्रयपूजा	प० आशाधर	(स०)	५२६	रत्नत्रयव्रतोद्यापन	केशवसेन	(स०)	५३६
रत्नत्रयपूजा	केशवसेन	(स०)	५२६	रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	(स०)	५१३
रत्नत्रयपूजा	पद्मनन्दि	(स०)	५२६				५३१, ५३६, ५४०
			५७५, ६३६	रत्नदीपक	गणपति	(स०)	२६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
राजुलपञ्चोसी	लालचन्द धिनोदीलाल	(हि०) ६००	रामायणमहाभारतकथाप्रश्नोत्तर	—	(हि०ग०) ५६२
६१३, ६२२, ६४३, ६५१, ६८३, ६८५, ७२२, ७५३			रामावतार	[चित्र]	— ६०३
राजुलमङ्गल	—	(हि०) ७५३	रायपनेरणीसूत्र	—	(प्रा०) ४३
राजुलकी सज्जाय	जिनदास	(हि०) ७५७	राक्षिफल	—	(स०) ७६३
राठीढरतन महेया दशोत्तरी	—	(हि०) २३८	रासायनिकशास्त्र	—	(हि०) ३३०
राठपुरान्तवन	—	(हि०) ४५०	राहुफल	—	(हि०) २६१
राठपुरका स्तवन	समयसुन्दर	(हि०) ६१६	रक्तविभागप्रकरण	—	(स०) ८४
रात्रिभोजनकथा	—	(स०) २३८	रिटुऐमिचरिख	स्वयम्भू	(प्रप०) ६४२
रात्रिभोजनकथा	किशनसिंह	(हि०) २३८	रुक्मणिकथा	मदनकीर्ति	(स०) २४७
रात्रिभोजनकथा	भारामल	(हि०) २३८	रुक्मणिब्रह्मण्यो को रासो	तिपरदास	(हि०) ७७०
रात्रिभोजनकथा	—	(हि०) २२८	रुक्मणिविधानकथा	छत्रसेन	(स०) २४४, २४६
रात्रिभोजनचोपई	—	(हि०) २३६	रुक्मणिविवाह	वल्लभ	(हि०) ७८७
रात्रिभोजनस्यागवर्णन	—	(हि०) ८४	रुक्मणितिवाहवैलि	पृथ्वीराज राठौड	(हि०) ३६४
राधाजन्मोत्सव	—	(हि०) ८४	रुक्मिनिश्रय	—	(स०) ७३३
राधिकानाममाला	—	(हि०) ४१४	रुक्मिणीरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(स०) ७३३
रामकवच	विश्वामित्र	(हि०) ६८७	रत्नान	—	(स०) २६१
रामकृष्णकाव्य	दैवज्ञ प० सूर्य	(स०) १६४	रूपमञ्जरीनाममाला	गोपालदास	(स०) २७६
रामचन्द्रचरित्र	बधीचन्द	(हि०) ६६१	रूपमाला	—	(स०) २६०
रामचन्द्रस्तवन	—	(स०) ४१४	रूपमेनचरित्र	—	(स०) २३८
रामचन्द्रिका	केशवदास	(हि०) १६४	रुक्मिण्यानवर्णन	—	(स०) ११७
रामचरित्र [कवित्तबध]	तुलसीदास	(हि०) ६६७	रेखाचित्र [भादिनाथ चन्द्रप्रभ वर्द्धमान एव पार्श्वनाथ]	—	७८३
रामवत्तीसी	जगनकवि	(हि०) ४१४	रेखाचित्र	—	७६३
रामविनोद	रामचन्द्र	(हि०) ३०२	रेवानदीपूजा [महाहृकोटिपूजा]	विश्वभूषण	(स०) ५३२
रामविनाद	रामविनोद	(हि०) ६४०	रैदग्रत	गगाराम	(स०) ५३२
रामविनोद	—	(हि०) ६०३	रैदग्रतकथा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०) २३६
रामस्तवन	—	(स०) ४१४	रैदग्रतकथा	—	(स०) २३६
रामस्तोत्र	—	(स०) ४१४	रैदग्रतकथा	भ० जिनदास	(हि०) २४६
रामस्तोत्रकवच	—	(स०) ६०१			

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
लघुसामायिक	—	(हि०)	७१८	
लघुसामायिकभाषा	महाचन्द्र	(हि०)	७१६	
लघुसारम्बत अनुभूति स्वरूपाचार्य	(स०)	२६३		
लघुसिद्धान्तकोमुदी	वरदराज	(स०)	२६३	
लघुसिद्धान्तकोमुत्तुभ	—	(स०)	२६३	
लघुस्तोत्र	—	(स०)	४१५	
लघुस्नपन	—	(स०)	५३३	
लघुस्नपनटीका	भायशर्मा	(स०)	५३३	
लघुस्नपनविधि	—	(स०)	६५८	
लघुस्वयम्भूस्तोत्र	समन्तभद्र	(स०)	५१५	
लघुस्वयम्भूस्तोत्र	—	(स०)	५३७, ५६४	
लघुशब्देन्दुशेखर	—	(स०)	२६३	
लघ्विविधानकथा	प० श्रुभ्रदेव	(स०)	२३६	
लघ्विविधानकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२४४	
लघ्विविधानचौपई	भीषमकवि	(हि०)	७७८	
लघ्विविधानपूजा	श्रुभ्रदेव	(स०)	५१७	
लघ्विविधानपूजा	हर्षकीर्ति	(स०)	३३३	
लघ्विविधानपूजा	—	(स०)	५१३	
			५३४, ५४०	
लघ्विविधानपूजा	ज्ञानचन्द्र	(हि०)	५३४	
लघ्विविधानपूजा	—	(हि०)	५३४	
लघ्विविधानमण्डल [चित्र]	—		५२५	
लघ्विविधानउद्यापनपूजा	—	(स०)	५३५	
लघ्विविधानोद्यापन	—	(स०)	५४०	
लघ्विविधानव्रतोद्यापनपूजा	—	(स०)	५३४	
लघ्विसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४३, ७३६	
लघ्विसारटीका	—	(स०)	४३	
लघ्विसारभाषा	प० टोडरमल	(हि०)	४३	
लघ्विसारक्षणसारभाषा	प० टोडरमल	(हि० गद्य)	४३	
लघ्विसारक्षणसारसदृष्टि	प० टोडरमल	(हि०)	४३	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
लहरियाजी की पूजा	—	(हि०)	७५२	
लहुरी	नाथू	(हि०)	६६३	
लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	(हि०)	७२४	
लाटीसहिता	राजमल	(स०)	८४	
लावणी मागीतु गीवी	हर्षकीर्ति	(हि०)	६६७	
लिंगपाहुड	आ० कुदकुद	(प्रा०)	११७	
लिंगपुराण	—	(स०)	१५३	
लिंगानुशासन	हेमचन्द्र	(स०)	२७७	
लिंगानुशासन	—	(स०)	२७६	
लीलावती	भास्कराचार्य	(स०)	३६६	
लीलावतीभाषा	व्यास मथुरादास	(हि०)	३६६	
लुहरी	नेमिचन्द्र	(हि०)	६२२	
लुहरी	सभाचन्द्र	(हि०)	७२४	
लोकप्रत्याख्यानधर्मिलकथा	—	(स०)	२४०	
लीखवर्णन	—	(हि०)	६२७, ७६३	
व				
वक्ता श्रोता लक्षण	—	(सं०)	३५६	
वक्ता श्रोता लक्षण	—	(हि०)	३५६	
वज्रदन्तचक्रवर्ति का बारहमासा	—	(हि०)	७२७	
वज्रनाभिकचक्रवर्ति की भावना	भूधरदास	(हि०)	८५	
			४४६, ६०४, ७३६	
वज्रपञ्चस्तोत्र	—	(स०)	४१५, ४३२	
वनस्पतिसत्तरी	मुनिचन्द्रसूरि	(प्रा०)	८५	
वन्देतानकीजयमाल	—	(स०)	५७२	
			६६५, ६५५	
वरागचरित्र	भर्तृहरि	(सं०)	१६५	
वरागचरित्र	प० वर्द्धमानदेव	(स०)	१६५	
वर्द्धमानकथा	जयमित्रहल	(सप०)	१६६	
वर्द्धमानकाव्य	श्रीमुनि पद्मानन्दि	(स०)	१६५	

ग्रन्थानुक्रमणिका]

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ स०
विपाकसूत्र	—	(प्रा०) ४३	विष्णुकुमारमुनिकथा	श्रुतसागर	(स०) २४०
विमलनाथपुराण	ब्र० कृष्णदास	(स०) १५५	विष्णुकुमारमुनिकथा	—	(स०) २४०
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्ति	(स०) ५३५	विष्णुकुमारमुनिपूजा	बाबूनाल	(हि०) ५३६
विमानशुद्धिपूजा	—	(स०) ५३६	विष्णुपञ्जररक्षा	—	(स०) ७७०
विमानशुद्धिशास्त्रिक [मण्डलचित्र]	—	५२५	विष्णुसहस्रनाम	—	(स०) ६७४
विरदावली	—	(स०) ६५८	विशेषसत्तात्रिभङ्गी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०) ४३
		७७२, ७९५	विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(स०) ४३
विरहमानतीर्थङ्करजकठी	—	(हि०) ७५९	विश्वलोचन	धरसेन	(स०) २७७
विरहमानपूजा	—	(स) ६०५	विश्वलोचनकोशकी शब्दानुक्रमणिका	—	(स०) २७७
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(स०) ६५७	विहारकाव्य	कालिदास	(स०) १९७
विरहमञ्जरी	—	(हि०) ५०१	वीतरागगाथा	—	(प्रा०) ६३३
विरहिनी का वर्णन	—	(हि०) ७७०	वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०) ४२४
विवाहप्रकरण	—	(स०) ५३६		४३१, ५७४, ६३४, ७३७	
विवाहपद्धति	—	(स०) ५३६	वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(स०) १३९, ४१६
विवाहविधि	—	(स०) ५३६	वीतरागस्तोत्र	—	(स०) ७५८
विवाहशोधन	—	(स०) २९१	वीरचरित्र [अनुप्रेक्षा भाग]	रङ्गधू	(अप०) ६४२
विवेकजकठी	—	(स०) २९१	वीरछत्तीसी	—	(स०) ४१६
विवेकजकठी	जिनदास	(हि०) ७२२, ७५०	वीरजिणदगीत	भगौतीदास	(हि०) ५६९
विवेकविलास	—	(हि०) ८६	वीरजिणदकी सधावलि		
विपहरनविधि	सतोपकवि	(हि०) ३०३	मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०) ७७५
विपापहारस्तोत्र	धनञ्जय	(स०) ४०२	वीरद्वयशक्तिका	हेमचन्द्रसूरि	(स०) १३९
		४१५, ४२३, ४२५, ४२८, ४३२, ५६५, ५७२, ५९५, ६०५, ६३७, ६४९, ७८८	वीरनाथस्तवन	—	(स०) ४२६
विपापहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(स०) ४१६	वीरभक्ति	पद्मलाल चौधरी	(हि०) ४५०
विपापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	(हि०) ४१६	वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति	—	(हि०) ४५१
		६०४, ६५०, ६७० ५९४, ७७४	वीररस के कवित्त	—	(हि०) ७४६
विपापहारभाषा	पद्मलाल	(हि०) ४१६	वीरस्तवन	—	(प्रा०) ४१६
विपापहारस्तोत्रभाषा	—	(हि०) ४३०	वृजलालकी वारहमावना	—	(हि०) ६८५
		७१६, ७४७	वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(स०) ३१४
विष्णुकुमारपूजा	—	(हि०) ६८९	वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(स०) ३१४
			वृत्तरत्नाकर	—	(स०) ३१४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
विषाखनूय	—	(प्रा०)	४३		विष्णुकुमारमुनिश्या	श्रुतसागर	(न०)	२४०	
विमलनाथपुराण	ब्र० कृष्णदाम	(स०)	१५५		विष्णुकुमारमुनिश्या	—	(स०)	२४०	
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्ति	(स०)	५३५		विष्णुकुमारमुनिश्या	वाचूनाल	(हि०)	५३६	
विमानशुद्धिपूजा	—	(म०)	५३६		विष्णुपञ्जररक्षा	—	(स०)	७७०	
विमानशुद्धिमातृ [मण्डलचित्र]	—		५२५		विष्णुमहसनाम	—	(स०)	६७४	
विरदावनी	—	(स०)	६५८		विशेषसत्तात्रिभङ्गी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	४३	
			७७२, ७८५		विश्वप्रकाश	वैद्यराज मधेश्वर	(स०)	४३	
विरहमानतीर्थदूरजयटी	—	(हि०)	७७६		विश्वलोचन	धरसेन	(स०)	२७७	
विहमानपूजा	—	(म०)	६०५		विश्वलोचनकोशकी	शब्दानुक्रमणिका	—	(स०)	२७७
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(म०)	६५७		विहारकाव्य	कालिदास	(म०)	१६७	
विरहमञ्जरी	—	(हि०)	५०१		वीतरागगाथा	—	(प्रा०)	६३३	
विरहिनी का वर्णन	—	(हि०)	७७०		वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	(स०)	४२४	
विवाहप्रकरण	—	(म०)	५३६					४३१, ५७४, ६३६, ७३७	
विवाहवृद्धि	—	(स०)	५३६		वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(स०)	१३६, ४१६	
विवाहविधि	—	(म०)	५३६		वीतरागस्तोत्र	—	(स०)	७५८	
विवाहोपन	—	(स०)	२६१		वीरचरित्र [प्रनुप्रेक्षा भाग]	रङ्गधू	(मप०)	६४२	
विवेकजयटी	—	(स०)	२६१		वीरचरितो	—	(स०)	६१६	
विवेकजयटी	जिनदास	(हि०)	७२२, ७५०		वीरजिणदगीत	भगौतीदास	(हि०)	५६६	
विषयमिलास	—	(हि०)	८६		वारजिणदगीत	मघावल			
विषयमिलास	सतोपकवि	(हि०)	३०३		मेघमुमारगीत	पूनी	(हि०)	७०	
विषाहारस्ताव	धनञ्जय	(स०)	४०२		वीरदात्रिगतिका	हेमचन्द्रसूरि	(म०)	१००	
			६१५, ४२३, ४२५, ६२८, ४३२, ५६५, ५७२, ५८५, ६०५, ६३७, ६४६, ७८८		वीरनायकनयन	—	(स०)	४२६	
विषाहारस्तोत्रटीका	नामचन्द्रसूरि	(म०)	४१६		वीरभक्ति	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	४५०	
विषाहारस्तोत्रभाषा	प्रचलकीर्ति	(हि०)	६१६		वीरभक्ति तथा निर्गुणभक्ति	—	(हि०)	४५१	
			६०४, ६५०, ६७० ५८५, ७७६		वीररत्न के चरित	—	(हि०)	७८६	
विषाहारभाषा	पद्मलाल	(हि०)	४१६		वीररत्न	—	(प्रा०)	६१६	
विषाहारभाषा	—	(हि०)	४३०		वृत्तलालकी चारहमायना	—	(हि०)	६८५	
			७१६, ७४७		वृत्तस्तार	कालिदास	(म०)	३१४	
विष्णुकुमारपूजा	—	(हि०)	६८६		वृत्तस्तार	भट्ट वेदार्	(स०)	३१६	
					वृत्तस्तार	—	(म०)	३१४	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
ग्रन्थनिर्णय	मोहन	(म०)	५३६		पद्माहुड [प्रासृत]	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	११७, ७४८	
ग्रन्थज्ञानग्रह	—	(म०)	५३७		पद्माहुडटीका	श्रुतसागर	(न०)	११६	
ग्रन्थविधान	—	(हि०)	५३८		पद्माहुडटीका	—	(स०)	११८	
ग्रन्थविधानरातो	दौलतराम रुघी	(हि०)	६३८ ७७६		पद्मनवरचा	—	(स०)	७५७	
ग्रन्थविवरण	—	(स०)	५३८		पद्मनवरचा	—	(स०)	६८३	
ग्रन्थविवरण	—	(हि०)	५३८		पद्मनवरचा	—	(स०)	७४८	
ग्रन्थसार	आ० शिरकोटि	(न०)	५३८		पद्मनवरचा	—	(हि०)	६४	
ग्रन्थसारा	—	(स०)	८७		पद्मनवरचा	हर्षकीर्ति	(हि०)	७७५	
ग्रन्थसारा	—	(हि०)	८७		पद्मनवरचा	माह लोहट	(हि०)	३६६	
ग्रन्थोद्योगनारायणकाचार	—	(स०)	८७		पद्मनवरचा	मन्त्र	(हि०)	८८	
ग्रन्थोद्योगनमन्त्र	—	(न०)	५३८		पद्मदर्शनवार्ता	—	(स०)	१३६	
ग्रन्थोद्योगनवरण	—	(स०)	८७		पद्मदर्शनविचार	—	(न०)	१३६	
ग्रन्थोद्योगनवरण	—	(हि०)	८७		पद्मदर्शननमुच्चय	हरिभद्रसूरि	(स०)	१३६	
ग्रन्थो के चित्र	—		७२३		पद्मदर्शननमुच्चयटीका	—	(न०)	१४०	
ग्रन्थोकी तिथियांका व्यौरा	—	(हि०)	६५५		पद्मदर्शननमुच्चयवृत्ति	गणरतनसूरि	(स०)	१२६	
ग्रन्थो के नाम	—	(हि०)	८७		पद्मभक्तिपाठ	—	(न०)	७५०	
ग्रन्थाका व्यौरा	—	(हि०)	६०३		पद्मभक्तिवर्णन	—	(स०)	८८	
प					पद्मवतिनेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(स०)	५१६, ५४१	
पद्मभावश्यक [लघु सामायिक]	महाचन्द्र	(हि०)	८७		पद्मिगतकटिप्पण	भक्तिलाल	(न०)	३	
पद्मभावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७		पद्ममाधिकगतकटीका	राजहसोपाध्याय	(स०)		
पद्मस्तुवर्णनवारहमासा	जनराज	(हि०)	६५६		पौडशकारणउद्यापन	—	(स०)		
पद्मकर्मकथन	—	(न०)	३५२		पौडशकारणकथा	ललितकीर्ति	(स०)	६६४	
पद्मकर्मोपदेशरत्नमाला [द्युक्तामोवत्समाला]					पौडशकारणजयमाल	—	(प्रा०)	५४१	
महाकवि अमरकीर्ति	(अ०)	८८			पौडशकारणजयमाल	—	(प्रा० न०)	५४२	
पद्मकर्मोपदेशरत्नमालाभाषा	पांडे लालचन्द्र	(हि०)	८८		पौडशकारणजयमाल	रङ्गू	(अ०)	५१७, ५४२	
पद्मपञ्चासिका	वराहमिह	(स०)	२६२		पौडशकारणजयमाल	—	(अ०)	५४२	
पद्मपञ्चासिका	—	(हि०)	६५६		पौडशकारणजयमाल	—	(हि०)	५४२	
पद्मपञ्चासिकावृत्ति	भट्टोत्पल	(न०)	२६२		पौडशकारणपूजा [पौडशकारणग्रन्थोद्योगन]				
पद्मपाठ	—	(स०)	४१७		पौडशकारणपूजा	केशवसेन	(स०)	५३६, ५४२, ६७६	
पद्मपाठ	द्युजजन	(हि०)	४१६		पौडशकारणपूजा	श्रुतसागर	(स०)	५१६	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ स०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ स०
भावकाचारदीहा	रामसिंह (अप०)	६४२, ७४८	श्रुतजयस्तोत्र	—	(प्रा०) ७५४
श्रावकाचारभाषा	प० भागचन्द्र	(हि०) ६१	श्रीस्तोत्र	—	(स०) ४१८
श्रावकाचार	—	(हि०) ६१	श्रुतज्ञानपूजा	—	(स०) ७२७, ५४६
श्रावको की उत्पत्ति तथा ८४ गोय	—	(हि०) ७५६	श्रुतज्ञानभक्ति	—	(स०) ६२७
श्रावका की चौरासी जातिया	—	(हि०) ३७५	श्रुतज्ञानमण्डलचित्र	—	(स०) ५२५
श्रावको की बहूतर जातिया	—	(स० हि०) ३७५	श्रुतज्ञानवर्णन	—	(हि०) ६२
गावशीद्वादशीउपाख्यान	—	(स०) २४७	श्रुतव्रतोद्योतनपूजा	—	(हि०) ५१३
श्रावशीद्वादशीकथा	प० अश्रुदेव	(स०) २४२, २४५	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(स०) ५१३
श्रावशीद्वादशीकथा	—	(स०) २४८	श्रुतभक्ति	—	(स०) ६३३
श्रीपतिस्तोत्र	चैनसुखजी	(स०) ४१८	श्रुतभक्ति	—	(स०) ४२५
श्रीपालकथा	—	(हि०) २४८	श्रुतभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०) ४५०
श्रीपालचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(स०) २००	श्रुतज्ञानव्रतपूजा	—	(स०) ५४६
श्रीपालचरित्र	भ० सकलकीर्ति	(स०) २०१	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(स०) ५४६
श्रीपालचरित्र	—	(स०) २००	श्रुतपञ्चमीकथा	स्वयम्भू	(अप०) ६४२
श्रीपालचरित्र	—	(अप०) २०१	श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	(स०) ५३७
श्रीपालचरित्र	परिभल्ल	(हि०) २२, ७७३	श्रुतपूजा	—	(स०) ५४६
श्रीपालचरित्र	—	(हि०) २०२			५६५, ६६६
श्रीपालचरित्र	—	(हि०) २०३	श्रुतबोध	कालिदास	(स०) ३१५, ६६४
श्रीपालदर्शन	—	(हि०) ६१५	श्रुतबोधटीका	मनोहरश्याम	(स०) ३१५
श्रीपालरास	जिनहर्ष गणि	(हि०) ३६५	श्रुतबोध	वररुचि	(स०) ३१५
श्रीपालरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०) ६३८	श्रुतबोधटीका	—	(स०) ३१५
	६८४, ७१२, ७१७, ७४६		श्रुतबोधवृत्ति	हर्षकीर्ति	(स०) ३१५
श्रीपालविनती	—	(हि०) ६५१	श्रुतस्कष	ब्र० हेमचन्द्र	(प्रा०) ३७६
श्रीपालस्तवन	—	(हि०) ६२३			५७२, ७०६, ७३७
श्रीपालस्तुति	—	(स०) ४२३	श्रुतस्कषपूजा	श्रुतसागर	(स०) ५४७
	७४५, ७५२, ७८४,		श्रुतस्कषपूजा	—	(स०) ५४७
श्रीपालजीकीस्तुति	टीकमसिंह	(हि०) ६३६	श्रुतस्कषपूजा [ज्ञानपञ्चविंशतिपूजा]		
श्रीपालजीकीस्तुति	भगवतीदास	(हि०) ६४३			
श्रीपालस्तुति	—	(हि०) ६०५	श्रुतस्कषपूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	(स०) ५४७
		६४४, ६५०	श्रुतस्कषमण्डल [चित्र]	—	(हि०) ५४७
					५२४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ	सं०
उज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिपेण	(स०)	३३७,	५७३	सप्तपदार्थी	शिवादित्य	(स०)	१४०	
उज्जनचित्तवल्लभ	शुभचन्द्र	(स०)	३३७		सप्तपदार्थी	—	(स०)	१४०	
उज्जनचित्तवल्लभ	—	(स०)	३३७		सप्तपदी	—	(स०)	५४८	
उज्जनचित्तवल्लभ	मिहरचन्द्र	(हि०)	३३७		सप्तपरमस्थान	खुशालचन्द्र	(हि०)	७३१	
उज्जनचित्तवल्लभ	द्वर्गूला	(हि०)	३३७		सप्तपरमस्थानकथा	आ० चन्द्रकीर्ति	(स०)	२४६	
सज्जाय [चौदह बोल]	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	४५१		सप्तपरमस्थानकपूजा	—	(स०)	५१७, ५४८	
सज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८		सप्तपरमस्थानव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४	
सतसई	विहारीलाल	(हि०)	५७६, ७६८		सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	(स०)	५३६	
सतियो की सज्जाय	ऋषिछजमलजी	(हि०)	४५१		सप्तभगीवाणी	भगवतीदास	(हि०)	६८८	
सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति	(हि०)	७३५, ७६०		सप्तविधि	—	(हि०)	३०७	
सत्तात्रिभगी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४५		सप्तव्यसनसनकथा	आ० सोमकीर्ति	(स०)	२५०	
सत्ताद्वार	—	(स०)	४५		सप्तव्यसनकथा	भारामल	(हि०)	२५०	
सद्भाषितावली	सकलकीर्ति	(स०)	३३८		सप्तव्यसनकथा भाषा	—	(हि०)	२५०	
सद्भाषितावलीभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३३८		सप्तव्यसनकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७२३	
सद्भाषितावली	—	(हि०)	३३८		सप्तशती	गोवर्धनाचार्य	(स०)	७१५	
सन्निपातकलिका	—	(स०)	३०७		सप्तश्लोकीगीता	—	(स०)	६२	
सन्निपातनिदान	—	(स०)	३०६					३६८, ६६२	
सन्निपातनिदानविकित्सा	धाहडदास	(स०)	३०६		सप्तसूत्रभेद	—	(स०)	७६१	
सन्देहसमुच्चय	धर्मकलशसूरि	(स०)	३३८		सभातरंग	—	(स०)	३३८	
सन्मतिर्क	सिद्धसेनदिवाकर	(स०)	१४०		सभाश्रु गार	—	(स०)	३३६	
सप्तपिजिनस्तवन	—	(प्रा०)	६१६		सभाश्रु गार	—	(स० हि०)	३३८	
सप्तपिपूजा	जिणदास	(स०)	५४८		सभासारनाटक	रघुराम	(हि०)	३२८	
सप्तपिपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(स०)	७६६		समकित्काल	आसकरण	(हि०)	६२	
सप्तपिपूजा	लक्ष्मीसेन	(स०)	५४८		समकितविणवोधर्म	जिनदास	(हि०)	७०१	
सप्तपिपूजा	विश्वभूषण	(स०)	५४८		समतमद्रकथा	जोधराज	(हि०)	७५८	
सप्तपिपूजा	—	(स०)	५४६		समतमद्रस्तुति	समतभद्र	(स०)	७७८	
सप्तपिपूजा	—	(स०)	५०४		समयसार (गाथा)	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	११६	
सप्तपिपूजा [चित्र]	—	(स०)	५०४					५७४, ७०३, ७६२	
सप्तपविचारस्तवन	—	(स०)	४१८		समयसारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	(स०)	१२०	
सप्तनयवबोध	मुनिनेत्रसिंह	(स०)	१४०		समयसारकलशाटीका	—	(हि०)	१२५	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सगन्धदशमीप्रतीक्षापत्र	—	(स०)	५५५	सुभाषितपद्य	—	(हि०)	६२३
सुगुरुशतक	जिनदासगोधा (हि०प०)	३४०, ४४७		सुभाषितपाठसंग्रह	—	(स०हि०)	६६८
सुगुरुस्तोत्र	—	(स०)	४२२	सुभाषितमुक्तावली	—	(स०)	३४१
सदयवच्छसावलिगाकी चौपई	मुनिकेशव	(हि०)	२५४	सुभाषितरत्नसदोह	अमितिगति	(स०)	३४१
दयवच्छसावलिगाकीवार्ता	—	(हि०)	७३४	सुभाषितरत्नसदोहभाषा	पन्नालालचौधरी (हि०)	३४१	
सुदर्शनचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(स०)	२०८	सुभाषितसंग्रह	—	(स०)	३४१, ५७५
सुदर्शनचरित्र	मुमुक्षुविद्यानदि	(स०)	२०६	सुभाषितसंग्रह	—	(स०प्रा०)	३४२
सुदर्शनचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(स०)	२०८	सुभाषितसंग्रह	—	(स०हि०)	३४२
सुदर्शनचरित्र	—	(स०)	२०६	सुभाषितार्णव	शुभचन्द्र	(स०)	३४१
सुदर्शनचरित्र	—	(हि०)	२०६	सुभाषितावली	सकलकीर्त्ति	(स०)	३४३
सुदर्शनरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६६	सुभाषितावली	—	(स०)	३४३, ७०६
			६३६, ७१२, ७४६	सुभाषितावलीभाषा	वा० दुलीचन्द्र	(हि०)	३४४
सुदर्शनसेठकीढाल [कथा]	—	(हि०)	२५४	सुभाषितावलीभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४४
सुदामाकीवारहखडी	—	(हि०)	७७६	सुभाषितावलीभाषा	—	(हि०प०)	३४४
सुहृष्टिरगिणीभाषा	टेकचन्द्र	(हि०)	६७	सुभीमचरित्र	भ० रतनचन्द्र	(स०)	२०६
सुहृष्टिरगिणीभाषा	—	(हि०)	६७	सुभीमचक्रवर्तिरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३६७
सुन्दरविलास	सुन्दरदास	(हि०)	७४४	सूक्तावली	—	(स०)	३४५, ६७२
सुन्दरशृङ्गार	महाकविराय	(हि०)	६८३	सूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	(स०)	३४४, ६३५
सुन्दरशृङ्गार	सुन्दरदास	(हि०)	७२३, ७६८	सूक्तिमुक्तावलीस्तोत्र	—	(स०)	६०३
सुन्दरशृङ्गार	—	(हि०)	६८५	सूतकनिर्याय	—	(स०)	५११
सुपार्श्वनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५५५	सूतकवर्णन [यशस्तिलक से]	सोमदेव	(स०)	५७७
सुप्पय दोहा	—	(प्रप०)	६२८	सूतकवर्णन	—	(स०)	५५५
सुप्पय दोहा	—	(प्रप०)	६३७	सूतकविधि	—	(स०)	५७६
सुप्पय दोहा	—	(हि०)	७६५	सूत्रकृतांग	—	(प्रा०)	४७
सुप्रभातस्तवन	—	(स०)	५७४	सूर्यकवच	—	(स०)	६४०
सुप्रभाताष्टक	यति नेमिचन्द्र	(स०)	६३३	सूर्यकेदशनाम	—	(स०)	६०८
सुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	(स०)	६३३	सूर्यगमनविधि	—	(स०)	२६५
सुभाषित	—	(स०)	५७५	सूर्यप्रतीक्षापत्रपूजा	ब्र० जयसागर	(स०)	५५७
सुभाषित	—	(हि०)	७०१				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
स्त्रीमुक्तिखडत	—	(हि०)	६४०	स्वयंभूस्तोत्र टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(स०)	४३४
स्त्रीलक्षण	—	(स०)	३५६	स्वयंभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	(स०)	७१५
स्त्रीशृ गारवर्णन	—	(स०)	५७६	स्वरविचार	—	(स०)	५७२
स्थापनानिर्याय	—	(स०)	६८	स्वरोदय	—	(स०)	१२८
स्थूलभद्रकाचोभासावर्णन	—	(हि०)	३७७	स्वरोदय रनजीतदास (चरनदास)	—	(हि०)	३४५
स्थूलभद्रगीत	—	(हि०)	६१८	स्वरोदय	—	(हि०)	६४०, ७५६
स्थूलभद्रशीलरासो	—	(हि०)	५६६	स्वरोदयविचार	—	(हि०)	५६६
स्थूलभद्रसज्जमाय	—	(हि०)	४५२, ६१६	स्वर्गनरकवर्णन	—	(हि०)	६२७
स्नपनविधान	—	(हि०)	५५६, ६५५,				७०१, ७६३
स्नपनविधि [वृहद्]	—	(स०)	५५६	स्वर्गमुखवर्णन	—	(हि०)	७२०
स्नेहलीला	जनमोहन	(हि०)	७७३	स्वर्गाकर्षणविधान	महीधर	(स०)	४२८
स्नेहलीला	—	(हि०)	३६८	स्वस्त्ययनविधान	—	(स०)	५७४
स्फुटकवित्त	—	(हि०)	७०१				६५८, ६४६
स्फुटकवित्तएवपद्यसग्रह	—	(स० हि०)	६७२	स्वाध्याय	—	(स०)	५७१
स्फुट दोहे	—	(हि०)	६२३, ६७३	स्वाध्यायपाठ	—	(स० प्रा०)	५६४
स्फुटपद्यएव मन्त्रमादि	—	(हि०)	६७०	स्वाध्यायपाठ	—	(प्रा० स०)	६८ ६३३
स्फुटपाठ	—	(हि०)	६६४, ७२६	स्वाध्यायपाठ	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
स्फुटवार्ता	—	(हि०)	७४१	स्वाध्यायपाठभाषा	—	(हि०)	६८
स्फुटयलोकसग्रह	—	(स०)	३४५	स्वानुभवदर्पण	नाथूराम	(हि० प०)	१२८
स्फुटहिन्दीपद्य	—	(हि०)	५६५	स्वार्थवीसी	मुनि श्रीधर	(हि०)	६१६
स्वप्नविचार	—	(हि०)	२६५				
स्वप्नाध्याय	—	(स०)	२६५				
स्वप्नावली	देवधनन्दि	(स०)	२६५, ६३३	हसकीढालतथाविनतीढाल	—	(हि०)	६८५
स्वप्नावली	—	(स०)	२६५	हसतिलकरास	ब्र० अजित	(हि०)	७०७
स्याद्वादचूलिका	—	(हि० ग०)	१४१	हठयोगदोषिका	—	(स०)	१२८
स्याद्वादमजरी	मल्लिपेणसूरि	(स०)	१४१	हरणवतकुमारजयमाल	—	(प्रप०)	६३८
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(स०)	४२३	हनुमन्चरित्र	ब्र० अजित	(स०)	२१०
			४२५, ४२७, ५७४, ५६५,	हनुमन्चरित्र	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	२११
			६३३ ६६५, ६८६,				
			७२०, ७३१				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं
(हनुवतपत्र)	—	७४ ७४४	हरिवंशपुराणवारा	—	(हि) ११५, ११६
(हनुवंत जीवई)	—	७१२, ७१३	हरिवंशचरित	—	(हि) ११३
हनुमान स्तोत्र	—	(हि) ४३२	हरिवंशनामनिबन्धन	—	(सं) ३३
हनुवतमुखा महाकवि स्वयंम्	—	(सं) ११२	हनुमतिवि	—	(सं) ३११
हनीरजीवई	—	(हि) १७५	हारावलि	महामहोपाध्याय पुरुषोत्तम द्वैध	(सं) २११
हनीररत्नो	महाराष्ट्रकवि	(हि) ११, ७३			
हनीरवाक्पाठविषय	—	१३	हिरणीमया	शिवचरित	(सं) १५६
हनीरौषधवाम	—	(सं) १५	हिरौषध	देवीचरित	(सं) ७७
हनीरके वीह	हरजी	(हि) ७५	हिरौषध	विष्णुसुर्मा	(सं) ११२
हनुवत	—	(हि) १७	हिरौषधवामा	—	(हि) १४६, ७११
हरिवंशपत्र	—	(हि) ७६२	हृषीकेशरिणीकान्तोप	महाकवि	(हि) १७७
हरिनामवला	शंकराचार्य	(सं) ११५	हृषीकेश	विष्णुसुर्मा	(हि) ७११
हरिवंशविचारवली	—	(हि) ११	हृषीकेशरुद्र	—	(सं) १५०
हरिपत्र	—	(हि) ११	हृषीकेशरुद्र [हृषीकेशरुद्रवि]		
हरिवंशपुराण	श्री विमलदास	(सं) ११६	हृषीकेशरुद्र	हृषीकेशरुद्र	(सं) १५०
हरिवंशपुराण	विमलसेनाचार्य	(सं) ११३	हृषीकेश	—	(सं) १५६
हरिवंशपुराण	श्री भूषण	(सं) ११७	हृषीकेश	—	(सं) १११
हरिवंश	सकलकीर्ति	(सं) ११७	हृषीकेश	विमलसुर्मा	(सं) १११
हरिवंश	शकल	(सं) ११७	हृषीकेश	—	(सं) ११३
हरिवंश	परा कीर्ति	(सं) ११७	हृषीकेशजीवई	श्री गुरु कवि	(हि) ११३
हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंम्	(सं) ११७	हृषीकेश	श्री गुरु ठाकुर	(हि) ११६
हरिवंशपुराणवामा	सुराक्षित	(हि) ११			११६, ११६
हरिवंशपुराणवामा	श्री गुरु राम	(हि) ११७	हृषीकेशरुद्रवि	श्री विमलदास	(सं) १११



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	—	(स०)	२५१	सरस्वतीस्तोत्रमत्तना [आन्दास्तवन]	—	(स०)	४२०
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जगतराम	(हि०)	२५२	सरस्वतीस्तोत्रभाषा	दनारमीदास	(हि०)	५४७
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जोधराजगोदीका	(हि०)	२५२, ६८६	सर्वतोभद्रपूजा	—	(स०)	५५१
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	विनोदीलाल	(हि० ग०)	२५२	सर्वतोभद्रमंत्र	—	(स०)	४१६
सम्यक्त्वकौमुदी भाषा	—	(हि०)	२५३	सर्वज्वर समुच्चयदर्पण	—	(स०)	३०७
सम्यक्त्वजयमाल	—	(प्रप०)	७६४	सर्वार्थसाधनी	भट्टवररुचि	(पं०)	२७८
सम्यक्त्वपञ्चवीसी	—	(हि०)	७६०	सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाद	(स०)	४५
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका	प० टोडरमल	(हि०)	७	सर्वार्थसिद्धिभाषा	चन्द्रदत्ताब्रह्मा	(हि०)	४६
सम्यग्ज्ञानीधमाल	भगौतीदास	(हि०)	५६६	सर्वार्थसिद्धिसंज्ञाय	—	(हि०)	४५२
सम्यग्दर्शनपूजा	—	(स०)	६५८	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	(हि०)	६१६
सम्यग्दृष्टिकोभावनावर्णन	—	(हि०)	७८५	सवैयाएवपद	सुन्दरदाम	(हि०)	६८१
सरस्वतीमृष्टक	—	(हि०)	४५२	सहस्रकूटजिनानयपूजा	—	(स०)	५५१
सरस्वतीकल्प	—	(स०)	३५२	सहस्रगुणितपूजा	धर्मकीर्ति	(स०)	५५२
सरस्वतीचूर्णकानुसूत्रा	—	(हि०)	७५७	सहस्रगुणितपूजा	—	(स०)	५५२
सरस्वती जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५८	सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(स०)	५५२, ७४७
सरस्वतीपूजा	आशाधर	(स०)	६५८	सहस्रनामपूजा	—	(स०)	५५०
सरस्वतीपूजा [जयमाल]	ज्ञानभूषण	(स०)	५१५, ५६५	सहस्रनामपूजा	चैनमुख	(हि०)	५५०
सरस्वतीपूजा	पद्मनदि	(स०)	५५१, ७१६	सहस्रनामपूजा	—	(हि०)	५५०
सरस्वतीपूजा	—	(स०)	५५१	सहस्रनामस्तोत्र	प० आशाधर	(स०)	५१६, ५७८
सरस्वतीपूजा	नेमीचन्द्रवर्क्षी	(हि०)	५५१	सहस्रनामस्तोत्र	—	(स०)	६५०
सरस्वतीपूजा	सधी पन्नालाल	(हि०)	५५१	सहस्रनामस्तोत्र	—	(स०)	७५३, ७६३
सरस्वतीपूजा	प० बुधजन	(हि०)	५५१	सहस्रनाम [वडा]	—	(स०)	४३१
सरस्वतीपूजा	—	(हि०)	५५१, ६५२	सहस्रनाम [लघु]	आ० समतभट्ट	(स०)	४२०
सरस्वतीस्तवन	लघुकवि	(स०)	४१६	सहस्रनाम [लघु]	—	(स०)	४३१
सरस्वतीस्तुति	ज्ञानभूषण	(स०)	६५७	सहेलीगीत	सुन्दर	(हि०)	७६४
सरस्वतीस्तोत्र	आशाधर	(स०)	६४७, ७६१	साक्षी	कवीर	(हि०)	७२३
सरस्वतीस्तोत्र	घृहस्पति	(स०)	४२०	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	(हि०)	२०४
सरस्वतीस्तोत्र	श्रुतसागर	(स०)	४२०				
सरस्वतीस्तोत्र	—	(स०)	४२०, ५७५				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सासूवहूकाभगवा	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१, ६४८	सिद्धवदना	—	(स०)	१२०
सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	(स०)	५१६	सिद्धभक्ति	—	(स०)	६२७
सिद्धकूटमण्डल [चित्र)	—		५२४	सिद्धभक्ति	—	(प्रा०)	५७८
सिद्धक्षेत्र पूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	४६७ ५५३	सिद्धभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	
सिद्धक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५५३	सिद्धस्तवन	—	(स०)	४२०
सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७०५	सिद्धस्तुति	—	(स०)	५७१
सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा	—	(स०)	५५३	सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति	जिनप्रभमूरि	(स०)	२६७
सिद्धचक्रकथा	—	(हि०)	२५३	सिद्धान्त अर्थसार	प० रङ्गधू	(अप०)	४६
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द	(स०)	५१० ५१४, ५५३	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	(स०)	२६७
सिद्धचक्रपूजा	श्रुतसागर	(स०)	५५३	सिद्धान्तकौमुदी	—	(स०)	२६७
सिद्धचक्रपूजा [बृहद्]	भानुकीर्ति	(स०)	५५३	सिद्धान्तकौमुदी टीका	—	(स०)	२६८
सिद्धचक्रपूजा [बृहद्]	शुभचन्द्र	(स०)	५५३	सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	(स०)	२६८
सिद्धचक्रपूजा [बृहद्]	—	(स०)	५१६	सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	लोनेशकर	(स०)	२६९
सिद्धचक्रपूजा	—	(स०)	५१४	सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	—	(स०)	२६९
			५५४, ६३८, ६५८, ७३५	सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	सदानन्दगणि	(स०)	२६९
सिद्धचक्रपूजा [बृहद्]	सतलाल	(हि०)	५५३	सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	वामदेव	(स०)	३०३
सिद्धचक्रपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५५३	सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला	—	(प्रा०)	६८
सिद्धपूजा	आशाधर	(स०)	५५४ ७१६	सिद्धान्तविन्दु	श्रीमधुमूदन सरस्वती	(स०)	२७०
सिद्धपूजा	पद्मनवि	(स०)	५३७	सिद्धान्तमजरी	—	(स०)	१३-
सिद्धपूजा	रत्नभूषण	(स०)	५५४	सिद्धान्तमज्जूषिका	नागेशभट्ट	(स०)	८-
सिद्धपूजा	—	(स०)	४१५	सिद्धान्तमुक्तावली	पञ्चानन भट्टाचार्य	(स०)	-
			५५४, ५७४, ५९४, ६०५	सिद्धान्तमुक्तावली	—	(स०)	
			६०७, ६४६, ६५१, ६७०	सिद्धान्तमुक्तावलीटीका	महादेवभट्ट	(स०)	१४८
			६७६, ६७८, ७०४, ७३१	सिद्धान्तलेख सग्रह	—	(हि०)	४६
			७४५, ७६३	सिद्धान्तसारदीपक	मकलकीर्ति	(स०)	४६
सिद्धपूजा	—	(स० हि०)	५६९	सिद्धान्तसारदीपक	—	(स०)	४७
सिद्धपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१९	सिद्धान्तसारभाषा	नथमलधिलाला	(हि०)	४७
सिद्धपूजा	—	(हि०)	५१५	सिद्धान्तसारभाषा	—	(हि०)	४९
सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	(हि०)	७७७	सिद्धान्तसार सग्रह	आ० नरेन्द्रदेव	(स०)	४७

ग्रन्थनाम	हलन्त	मा । पृ । अ	ग्रन्थनाम	हलन्त	मापा पृष्ठ सं०
विश्वविमलदीप	हृत्नां हृ	() ४ १	१. नन्दरत्नाभीपूजा	—	(ह) १११
	४११ ४२२ ४ ४ ४ ४११		२. नन्दरत्नाभीरत्नम	—	(हि) १११
	४१२ ४०२ ४०४ ४० ४१२		मालराज	गुणकीर्ति	(हि) ११
	४१० ४ ४ ४४ ४११		गुणमालपरिच	अ० सत्तकीर्ति	(ह) ११
	४१० ००१		गुणमालपरिच	क्षीपर	(पय) ११
विश्वविमलदीपदीपा	—	(हि) ४११	गुणमालपरिचकाया र्वं	माध्वात्मकासी	(हि व) १०
विश्वविमलदीपकाया	सदमल	(हि) ४११	गुणमालपरिच	हरचंद गंगावाह	(हि-व) २००
विश्वविमलदीपकाया पञ्चाङ्गाक्षमौषधी	—	(हि) ४११	गुणमालपरिच	—	(हि) १०
विश्वमोक्ष	—	(ह) १०	गुणमालगुणिराया	—	(हि व) १११
विश्वोपाम्भक्षण	—	(हि) १०	गुणमालकाशीरा	अ० विनयाम	(विन्-य) १११
विश्वरूपप्रकरण	संमत्तमाचार्य	(ह) १४	गुणकीर्ती	वनराज	(हि) १११
विश्वरूपप्रकरणकाया	बनारसीवाह	(हि) १२४	गुणकीर्ती	हृत्कीर्ति	(हि) ०११
	१४ १११, ११२ ०१ ०११		गुणविषय	अवि जगत्माह	(ह) १०
	०४१ ०११ ०११		गुणवर्णनपुत्रा	—	(ह) ११०
विश्वरूपप्रकरणकाया	हृत्प्रकाश	(हि) १४	गुणवर्णनविषयप्रका	—	(ह) १११
विश्वरूपपरिच	र्वं प्ररयेन	(पय) ११	गुणवर्णनविषयप्रकाया	विमलकीर्ति	(पय) १११
विश्वरूपप्रकाशिकाया	शेखरमुनि	(ह) १११	गुणवर्णनपुत्रा	अप्यवराज	(ह) १११
विश्वरूपप्रकाशिकाया	—	(ह) १११	गुणवर्णनपुत्राकायापुत्रा	—	(ह) ११४
ना नन्दनीनी	—	(ह) १११	गुणवर्णनपुत्राकाया	अक्षितीर्ति	(ह) १११
।	—	(हि) १	गुणवर्णनपुत्राकाया	अवसागर	(ह) ११४
नीलमाला	अविरामचन्द्र (बाह्यक)	(हि व) ११	गुणवर्णनपुत्राकाया	—	(ह) ११४
	०११ ११		गुणवर्णनपुत्राकाया	—	(पय) १११
नीलमाला	—	(हि) १११	गुणवर्णनपुत्राकाया [गुणवर्णनपुत्राकाया]	—	—
नीलमाला	—	(हि) ४११	हृत्पुत्रा	(हि) १११, ०११	
नीलमाला बारहमासा	—	(हि) ०१०	गुणवर्णनपुत्राकाया	स्वरूपचन्द्र	(हि) १११
नीलमालाप्रतिष्ठा	—	(हि) १४४ ११	गुणवर्णनपुत्राकाया	[विन]	१११
नीलमालाप्रतिष्ठा	—	(हि) ११	गुणवर्णनपुत्राकाया	—	(ह) १११
नीलमालाप्रतिष्ठा	—	(हि) १४४	गुणवर्णनपुत्राकाया	—	(पय) ४
नीलमालाप्रतिष्ठा	—	(हि) १	गुणवर्णनपुत्राकाया	गुणवर्णन	(हि) १११

← गंथ एवं ग्रंथकार →

प्राकृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयचन्द्रगणि—	अणुसवधकथा	२१८	देवसेन—	भाराधनामा	४६
अभयदेवसूरि—	जयतिह्वणस्तोत्र	७५८		५७०, ५७३, ६२८, ६३५,	
अल्लू—	प्राकृतछन्दकोष	३११		७०६, ७३७, ७४४	
इन्द्रनदि—	छेदविण्ड	५७	तत्त्वसार	२०, ५७५	
	प्रायश्चित्तविधि	७८		६३७, ७३७, ७४४, ७४७	
कात्तिकेय—	कात्तिकेयानुप्रेक्षा	१०३	दर्शनसार	१३३	
कु दकुमाचार्य—	अष्टपाहुट	६६	नयचक्र	१३४	
	पचास्तिथ्याय	४०	भावसग्रह	७७	
	प्रयचनसार	११२	कर्मस्तवसूत्र	५	
	नियमसार	३८	धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	३६६
	बोधप्राप्त	११५	धर्मदामगणि—	उपदेशरत्नमाला	५०
	यतिभावनाष्टक	५७३	नन्दिपेण—	अजितघातिस्तवन	३७६
	रणसार	८४	भडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त	
	लिङ्गपाहुट	११७		रत्नमाला	५१
	पट्टपाहुट	११७, ७८८	नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवप्रसङ्गा	
	समयसार	११६,		कर्मप्रकृति	
		५७४, ७३७, ७६२		गोम्मटसारकर्मकाण्ड	१
गौतमस्वामी—	गौतमवृत्तक	१४		गोम्मटसारजीवकाण्ड	६,
	सवोधपचासिका	११६, १२८			१६, ७२०
जिनभद्रगणि	अर्थद्विपिका	१	चतुरविंशतिन्यायक		१८
ढाढसीमुनि—	ढाढसीगाथा	७०७	जीवविचार		७३२
देवसूरि—	यतिदिनचर्या	८१	प्रिभगीसार		३१
	जीवविचार	६१६	द्रव्यसंग्रह		३२, ५७५,
					६२८, ७४४

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
	पार्ष्वनायचरित्र	१७६
	वीरचरित्र	६४२
	पोडकाकरण जयमाल	५१७, ५४०
	सद्योषपचासिका	१२८
	सिद्धातार्यसार	४६
राममिह—	सावयवम् दोहा (श्राववाचार)	६७, ६८१, ७४८
	दोहापाहुड	६०
रूपचन्द्र—	रागभ्रासावरी	६४१
लक्ष्मण—	रोमिणाहचरित्र	१७१
लक्ष्मीचन्द्र—	आध्यात्मिकाया	१०३
	उपासकाचार दोहा	५०
	चूतडी	६२८, ६४१
	पत्याणवविधि	६८१
विनयचन्द्र—	दुधारसविधानकथा	२८५, ६२८
	निर्गिर चमीविधानकथा	२४५, ६२८
विजयसिंह—	अजितनायपुराण	१४२
धिमलकीर्ति—	सुगन्धदशमीकथा	६३२
सहणपाल—	पद्मडी (कौमुदीमध्यात्)	६४१
	सम्यक्त्वकौमुदी	६४२
सिंहकवि—	प्रद्युम्नचरित्र	१८२
महाकविस्वयम्भू—	रिट्टुलोमिचरित्र	१५७, ६४२
	श्रुतपचमीकथा	६४२
	हनुमतानुप्रेक्षा	६३५
श्रीवर—	सुकुमालचरित्र	२०६
हरिश्चन्द्र—	अणस्तमितिसाधि	२४३, ६२८, ६४३

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
संस्कृत भाषा		
अरुलकदेव—	श्रवणकाष्टक	५७५
		६३७, ७१०
	तत्त्वार्थराजवार्तिक	३२
	न्यायमुमुक्षुद्रोदय	१३८
	प्रायश्चित्तग्रह	७८
अक्षयराम—	शमोदारपैतृसी पूजा	८८२, ११७
	प्रतिभामात चतुर्दशी	
	अतोद्यापन पूजा	५१६, ५२०
	सुगन्धपतिग्रत पूजा	५५५
	मौन्यकाव्य अतोद्यापन	५१६, ५५६
ब्रह्म अजित—	हनुमच्चरित्र	२१०
अजितप्रभसूरि—	घान्तिनायचरित्र	१६८
अनन्तसीति—	नन्दीश्वरअतोद्यापन पूजा	४६४
	पत्रविधान पूजा	५०७
अनन्तवीर्य—	प्रमेयरत्नमाला	१
अन्नभट्ट—	तर्कराग्रह	
अनुभूतिस्वरूपाचार्य—	सारस्वतप्रक्रिया	२६६, ७८
	लघुसारस्वत	२६३
अपराजितसूरि	भगवतीभाराधनाटिका	७६
अप्ययदीक्षित—	कुचलयानन्द	३०८
अभयचन्द्रगणि—	पञ्चसग्रहवृत्ति	३६
अभयचन्द्र—	क्षीरोदानीपूजा	७६३
अभयनटि—	जैनेन्द्रमहावृत्ति	२६०
अभयनटि—	त्रिलोकसार पूजा	४८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६१,
	५४०, ५६६, ५६६, ६०५,	
	६०७, ६३६, ६४६, ६५५,	
	६८३, ६८६, ६६२, ७१२,	
	७१५, ७२०, ७४०, ७५२	
	धर्माभूतसूक्तिग्रह	६३
	घृज्जारोपणविधि	४६२
	त्रिपट्टिस्मृति	१४६
	देवशास्त्रप्रवृत्त	७६१
	भूशालचतुर्विंशतिका	
	टीका	४११
	रत्नत्रयपूजा	५२६
	श्रावकाचार	
	(सागारधर्माभूत)	६३५
	शास्त्रिहोमविधान	५४५
	सरस्वतीस्तुति	६४७,
		६५८, ७६१
	सिद्धपूजा	५५४, ७१६
	स्तवन	६६१
इन्द्रनदि—	अकुरारोपणविधि	४५३
	देवपूजा	४६०
	नीतसार	३२६
उज्जवलदत्त (समहर्ता)—	उणादिसूत्रग्रह	२५७
उमास्वामि—	तत्त्वार्थसूत्र	२३, ४२५
	४२७, ४३७, ५३७, ५६२, ५६६,	
	५७१, ५७३, ५६५, ५६६, ६०१,	
	६०३, ६०५, ६३३, ६३७, ६३६	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	६४४, ६४५, ६४७, ६४८, ६४९,	
	६५२, ६५६, ६६४, ७००, ७०५,	
	७०५, ७०७, ७२७, ७८५, ७८८	
	पंचनमस्कारस्तोत्र	५७६
	पूजाप्रकरण	५१२
	श्रावकाचार	६०
	प्रायश्चित्तविधि	७४
	रामोकारपैतृसीधत	
	विधान	४८२, ५१७
	देवागमस्तोत्रवृत्ति	३६६
	गोम्मटसार कर्मकाण्डटीका	१२
	कुमारसम्भवटीका	१६२
	जिनपञ्चस्तोत्र	३६०,
		४३०, ६४६
	चतुर्विंशति तीर्थकर	
	स्तोत्र	३८८
	कुमारसम्भव	१६२
	श्रुतसंहार	१६१
	मेघदूत	१८७
	रघुवश	१६३
	वृत्तरत्नाकर	३१४
	श्रुतबोध	६४४
	शाकुन्तल	३७०
कालिदास—	नलोदयकाव्य	१७५
	शृ गारतिलक	३५६
काशीनाथ—	ज्योतिषसारलग्नचन्द्रिका	२८३
	शोघबोध	२६२, ६०३
काशीराज—	अजीर्णमजरी	२६६
कुमुदचन्द्र—	कल्याणमदिरस्तोत्र	३८४
	४२५, ४२७, ४३०, ४३१,	

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
गुणरत्नसूरि—	तर्करहस्यदीपिका	१३२	चिंतामणि—	रमलशास्त्र	२६०
गुणविनयगणि—	रघुवशाटीका	१६४	चूडामणि—	न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	१३६
गुणाकरसूरि—	सम्पत्त्वकौमुदीकथा		चोखचन्द—	चन्दनपट्टीव्रतपूजा	४७३
गोपालदास—	रूपमञ्जरीनाममाला	२७६	छत्रसेन—	चन्दनपट्टीव्रतकथा	६३१
गोपालभट्ट—	रसमञ्जरीटीका	३५६	जगतकीर्त्ति—	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४६१
गोवर्द्धनाचार्य—	सप्तशती	७१५	जगद्भूषण—	सौन्दर्यलहरीस्तोत्र	४२२
गोविन्दभट्ट—	पुरुषार्थानुशासन	६६	जगन्नाथ—	गरामाठ	२५६
गौतमस्वामी—	ऋषिमण्डलपूजा	६०७		नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	३६६
	ऋषिमण्डलस्तोत्र	३८२		सुखनिधान	२०७
	४२४, ६४६, ७३२		जतीदास—	दानकीवीनती	६४३
घटकपर्पर—	घटकपर्परकाव्य	१६४	जयतिलक—	निजस्मृत	३८
चढ कवि—	प्राकृतव्याकरण	२६२	जयदेव—	गीतगोविन्द	१६३
चन्द्राकीर्त्ति—	चतुर्विंशतितोर्थाकराष्टक	५६४	ब्र० जयसागर—	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	५५७
	विमानशुद्धि	५३५	जानकीनाथ—	न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	१३५
	सप्तपरमस्थानकथा	२४६	भ० जिणचन्द्र—	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	७५७
चन्द्रोक्तिसूरि—	सारस्वतदीपिका	२६६	जिनचन्द्रसूरि—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	४८६
चाणक्य—	चाणक्यराजनीति	३२६,	ब्र० जिनदास—	जम्बूद्वीपपूजा	४७७
	६४०, ६४६, ६८३, ७१२,			५०३, ५३७	
	७१७, ७२३, ७८७			जम्बूस्वामीचरित्र	१६८
	लघुचाणक्यराजनीति	३३६		ज्येष्ठजिनवरलाहान	७६१
	७१२, ७२०			नेमिनाथपुराण	१८५
चाणुण्डराय—		५५		पुण्याजलीव्रतकथा	१२४
	ज्वरतिमिरभास्कर	२६८		सप्तपिपूजा	५४८
	भावनासारसंग्रह	५५, ७७, ६१५		हरिवंशपुराण	१५६
चास्कीर्त्ति—	गीतगीतराग	३८६		सोलहकारणपूजा	७६५
चारित्रभूषण—	महीपालचरित्र	१८६		जलयात्राविधि	६८३
चारित्रसिंह—	कात्तन्त्रविभ्रमसूत्राव-		य० जिनदास—	होलीरेणुकाचरित्र	२११
	चूरि	२५७		भक्तभिमजिनचैत्यालय	
				पूजा	४५३

प्रथम प्रत्यकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०	प्रथम प्रत्यकार का नाम	प्रथम नाम	प्रथम सूची की पत्र सं०
	६८६, ६९६, ७११, ७१२, ७१३		नरहरिभट्ट—	ध्वरणभूपर	१६६
	विपापहारस्तोत्र ४०५, ४२५ ४२७, ५६५, ५७२, ५६५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४६		नरेन्द्रकीर्ति—	विद्यमानवीसनीर्थकर	पूजा ५३५ ६५५, ७६३
धर्मकलशसूरि—	सन्देशसमुच्चय	३३८	नरेन्द्रसेन—	पद्मावती पूजा	६५५
धर्मकीर्ति—	कीमुदीकथा	२०२		प्रमाणप्रमेयकलिका	१३७ ५७५
	पद्मपुराण	१४६		प्रतिष्ठादीपक	५२१
	सहस्रगुणितपूजा	५५२		रत्नत्रय पूजा	५६४
म० धर्मचन्द्र—	कथाकोश	२१६		सिद्धान्तसारसंग्रह	४७
	गीतमत्स्यमीचरित्र	१६३	नागचन्द्रसूरि—	विपापहारस्तोत्रटीका	४१६
	गोमटसारटीका	१०	नागराज—	पिंगलशास्त्र	३११
	सयोगपत्रमीकथा	२५३	नागेशभट्ट—	सिद्धान्तमञ्जूषिका	२७०
	सहस्रनामपूजा	७४७	न गोजामट्ट—	परिभाषेन्दुशेखर	२६१
धर्मचन्द्रगणि—	अभिधानरत्नाकर	२७२	नादमल्ल—	षाङ्गधरसहिताटीका	३०६
धर्मवास—	विदग्धमुखमडन	१६६	नारचन्द्र—	कथारत्नसागर	२२०
धर्मधर—	नागकुमारचरित्र	१७६		ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण	२८३
धर्मभूषण—	जिनसहस्रनामपूजा ४८०, ५५२			नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	२८५
	न्यायदीपिका	१३५	कविनीलकण्ठ—	नीलकण्ठताजिक	७८१
	शीतलनाथपूजा	५४६	मुनिनेत्रमिह—	शब्दशोभा	१८८
नदिगुरु—	प्रायश्चित्त समुच्चय		नेमिचन्द्र—	सप्तनयाषड्वोध	१८८
	चूलिका टीका ७५, ७८०			द्विषधानकाव्यटीका	१८८
नन्दिदेण—	नन्दीकथारत्नोद्यापन	४६४	ब्र० नेमिदत्त—	सुप्रभाताष्टक	६३३
प० नकुल—	अश्वलक्षणा	७८१		श्रीपद्मदानकथा	२१८
	शालिहोत्र	३०६		अष्टकपूजा	५६०
प० नयविलास—	ज्ञानार्णवटीका	१०८		कथाकोश (आराधना-	
नरपति—	नरपतिजयचर्या	२८५		कथा कोश)	२१६
नरसिंहभट्ट—	जिनशतटीका	३६१		नाग श्री कथा	२३१

ग्रंथ का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं.
कण्डवृत्तार चरित	१७३		विष्णुव्यास	१७७	
मधोपदेशमहाकाव्य	१४		रघोव	१७१	
मि लोकोत्पन्नका	१३१	पद्यमात्र—	मालवी	१६	
वासवानका	१३१	पद्यमात्रकाव्य—	कवीचरचरित	१६	
श्रीविक्रमचरित	१२	पद्यप्रमद्वैत—	पार्श्वनाथस्तोत्र	४३	
वीरपलचरित	९			११४ ७ २ ७४२	
सुदर्शनचरित	१०		लक्ष्मीस्तोत्र	४१४ ४२३	
पंचावनमहाकाव्य—				४२६ ४३२ ४३६ ४७२	
पद्मनदि I—				४७४ ४८१, ४४४ ५४	
				५५३ ५५६ ७ ३ १६	
पद्मनदि II—			पद्मप्रमसूरि—	पुष्पचरीपत्र	९६
प्रमत्तकलका	२१४		परमहंसपरिभाषाकाव्यार्थ—	मुकुटकुस्तारनी	९६
नन्दकाव्य	२७४			मैकुटदीप	१७७
	१३३ १३७ १५		पाणिनी—	पाणिनीभाष्य	२९१
इन्द्रावतस्तोत्रमनुवा	४८१		पात्रकेररी—	पद्मचरीका	१३६
हलपञ्चम	९		पारवदेव—	पद्मलक्ष्मणनीति	४२
मयराजम	३१		पुरुषात्मदेव—	प्रतिबलकीर्त	११
पार्श्वनाथस्तोत्र	२६६			विद्याप्रदेवाधिमान	१७६
	७४४			हारात्मि	२११
पुत्रा	२६		पूज्यपाद—	हारावेष्ट (स्वमकुटोप)	
महाभारतमिथुना	१३६			५१३, ५१७	
भा गीताभा				परमलक्ष्मी	२७४
(भाष्यभाष्य) x १ १३				पद्मकाव्य	६
पल्लवकुमा	४६			नवव्रजपत्र	१९२
	२७५, १३९			लक्ष्मीपत्र	१९
कनकीपत्री	१३			लक्ष्मीव्रिद्धि	४३
वीरपलस्तोत्र	४६४		पूज्यदेव—	नवीन चरित	१६
	४३१ ४७४ ५३४ ७३१		पूज्यपाद—	नारदहस्तोत्र	१६
नारदहस्तोत्र	२२१ ७३१				

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
पृथ्वीधराचार्य—	चामुण्डस्तोत्र	३८८	भक्तिलाभ—	पश्चिमतकटिप्पण	३३६
	भुवनेश्वरीस्तोत्र		भट्टशकर—	वैद्यविनोद	३०५
	(सिद्धमहामय)	३४६	भट्टोजीदीक्षित—	सिद्धान्तकौमुदी	२६७
प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासनटीका	१०१	भट्टोत्पल—	लघुजातक	२६१
	आराधनासारप्रबंध	२१६		बृहज्जातक	२६१
	आदिपुराणटिप्पण	१४३		पटपचामिकावृत्ति	२६२
	उत्तरपुराणटिप्पण	१४५	भद्रबाहु—	नवग्रहपूजाविधान	४६४
	क्रियाकलापटीका	५३		भद्रबाहुसहिता	२८५
	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	२१		(निमित्तज्ञान)	४८०, ८००
	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भर्तृहरि—	नीतिशतक	३२५
	नागकुमारचरित्रटीका	१७६		वरागचरित्र	१६५
	न्यायकुमुदचन्द्रिका	१३५		वैराग्यशतक	११७
	प्रमेयफलमार्तण्ड	१३८		भर्तृहरिशतक	३३३, ७१५
	रत्नकरण्डधावकाचार- टीका	८२	भाराचद—	महावीराष्टक	४१३, ४२६
	यशोधरचरित्रटिप्पण	१६२	भानुकीर्त्ति—	रोहिणीव्रतकथा	२३६
	समाधिगतकटीका	१२७		सिद्धचक्रपूजा	५५३
	स्वयंभूतस्तोत्रटीका	४३४	भानुजीदीक्षित—	अमरकोपटीका	२७४
भ० प्रभाचन्द्र—	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	४६७	भानुदत्तमिश्र—	रसमञ्जरी	३५९
	मुनिसुव्रतछंद	५५७	तीर्थमुनि—	न्यायमाला	१३५
	सिद्धचक्रपूजा	५५३	परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारती—		
बहुमुनि—	सामायिकपाठ	६४	तीर्थमुनी—	न्यायमाला	१३५
बालचन्द्र—	तर्कभाषाप्रकाशिका	१३२	भारधी—	किराताखुनीय	१६१
भक्षदेव—	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भावशर्मा—	लघुस्नपनटीका	५३३
	परमात्मप्रकाशटीका	१११	भास्कराचार्य—	लीलावती	३६८
भद्रसेन—	क्षमावलीपूजा	५६४	भूपालकवि—	भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र	४११
	रत्नत्रयकामहार्घ्य व क्षमावली	७८१			४२५, ५७२, ५६५

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
यशोविजय—	मलिकुण्डपाश्वर्चनापूजा	६५८	राजमल्ल—	मध्यात्मकमलमार्तण्ड	१०६
योगदेव—	तत्त्वार्थवृत्ति	२२		जम्बूद्वीपमीचरित्र	१६६
रघुनाथ—	ताम्रिनिशरोमणि	१३३		लाटीसहिता	८४
साधुरामल्ल—	रघुनाथविलाम	३१२	राजशेखर—	तूर्णमजरी	३१६
रत्नगेवरसूरि—	धर्मचक्रपूजा	४६२	राजमिह—	पार्वर्महिम्नस्तोत्र	४०६
रत्नकीर्ति—	छन्दोश	३०८	राजसेन—	पार्वनाथस्तोत्र	५६६, ७३७
	रत्नत्रयविधानाया	२४२	राजहमापाध्याय—	पट्टयाधिकशतकटीका	८४
	रत्नत्रयविधानपूजा	५३०	मुमुक्षुरामचन्द्र—	पुण्याश्रयकयागोप	२३३
रत्नचन्द्र—	जिनगुणगणतिपूजा	४७७, ४१०	रामचन्द्राश्रम—	शिद्धान्तचन्द्रिका	२६८
	पञ्चमेष्टपूजा	५०५	रामराजपेय—	समरसार	२६४
	पुष्पाजलिप्रतपूजा	५०८	रायमल्ल—	भैरवीयमोहनवक्त्र	६६०
	मुनीमचरित्र	(नीमचरित्र) १८५, २०६	रुद्रभट्ट—	वैद्यजीवनटीका	३०४
रत्ननदि—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६२	रोमकाचार्य—	शृङ्गारतिलक	३५६
	पत्यविधानपूजा	५०६, ५०६, ५१०	लकानाथ—	जन्मप्रदीप	२८१
	—द्रवाहुचरित्र	१८३	लक्ष्मण (अमरमहिम्नात्मज)—	अर्थप्रकाश	२६६
	महीपालचरित्र	१८६		लक्ष्मणोत्सव	३०३
रत्नपाल—	सालहकारणवधा	६६५	लक्ष्मीनाथ—	पिंगलप्रदीप	३११
रत्नभूषण—	सिद्धपूजा	५५४	लक्ष्मीसेन—	अभिषेकविधि	४५८
रत्नशेखर—	गुणस्थान भमारोहसूत्र	८		यमचूर्णप्रतोद्यापनपूजा	४६४
	समवसरणपूजा	५३७		चिन्तामणि पार्श्वनाथ	
रत्नप्रभसूरि—	प्रमाणनयतस्वावलोकना—			पूजा एवं स्तोत्र	४२३
	लकार टीका	१३७		चिन्तामणिस्तवन	७६१
रत्नाकर—	आत्मनिर्दास्तवन	३८०		सप्तपिपूजा	५४८
रविपेणाचार्य—	पद्मपुराण	१४८	लघुशुक्ति—	सरस्वतास्तवन	४१६
राजकीर्ति—	प्रतिष्ठादर्श	५२०	ललितकीर्ति—	अक्षयदशमीकथा	६६५
	पोद्दमाकारणप्रतोद्यापन			अनन्तप्रतकथा	६४५, ६६५
	पूजा	५४३			

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
विजयकीर्त्ति—	चन्दनपङ्क्तिग्रन्थपूजा	५०६		तेरहद्वीपपूजा	४८४
आ० विद्वानन्दि—	अष्टसहस्री	१२६, १३०		पद	५६१
	भ्रातृपरीक्षा	१२६		पूजाएक	५१३
	पत्रपरीक्षा	१३६		मागीतु गीगिरिमण्डल	
	पञ्चनमस्कारस्तोत्र	४०१		पूजा	५२६
	प्रमाणपरीक्षा	१३७		रेवानदीपूजा	५३२
	प्रमाणमीमांसा	१३८		शत्रुघ्नयगिरिपूजा	५१३
	युक्त्यनुशासनटीका	१३६		सर्त्तपिपूजा	५४८
	श्लोकवात्तिक	४४		सिद्धकूटपूजा	५१६
मुमुक्षुविद्वानन्दि—	सुदर्शनचरित्र	२०६	विश्वसेन—	क्षेत्रपालपूजा	४६७
उपाध्यायविद्यापति—	चिन्विस्तारजनम्	२६८		पर्यावृत्तिक्षेत्रपालपूजा	५१६
विद्याभूषणसूरि—	चिन्तामणिपूजा (वृहद्)	४७५		पर्यावृत्तिक्षेत्रपूजा	५४१
विनयचन्द्रसूरी—	गजसिंहकुमारचरित्र	१६३		समवसरणस्तोत्र	४१६
विनयचन्द्रमुनि—	चतुर्दशसूत्र	१४	विष्णुभट्ट—	पट्टरीति	१३६
विनयचन्द्र—	द्विसिद्धान्तकाव्यटीका	१७२	विष्णुशर्मा—	पञ्चतन्त्र	३३०
	भूपालचतुर्विंशतिका			पञ्चाख्यान	२३२
	स्तोत्रटीका	४१२		हितोपदेश	३४५
विनयरत्न—	चिदम्बमुखसमन्वयटीका	१६७	विष्णुसेनमुनि—	समवसरणस्तोत्र	४१६, ४२५
विमलकीर्त्ति—	धर्मप्रश्नोत्तर	६१	वीरनन्दि—	आचारसार	४८
	मुखसप्तविधानकथा	२४५		चन्द्रप्रभाचरित्र	१८४
विवेकनदि—	त्रिभुगीसारटीका	३२	वीरसेन—	श्रावकप्रायश्चित्त	८६
विश्वकीर्त्ति—	भक्तामरप्रतोद्यापनपूजा	५२३	तुपाचार्य—	उत्सवार्थविवरण	५८
विश्वभूषण—	महाईद्वीपपूजा	४४५	वेदव्यास—	नवग्रहस्तोत्र	६४६
	भ्रातृकोष्ठमुनिपूजा	४६१	वैजलभूपति—	प्रबोधचन्द्रिका	३१७
	इन्द्रध्वजपूजा	४६२	वृहस्पति—	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	कलशविधि	४६६	शकरभगति—	बालबोधिनी	१३८
	कुण्डलगिरिपूजा	४६७	शकरभट्ट—	शिवरात्रिउद्यापन	
	गिरिनारक्षेत्रपूजा	४६६		विधिकथा	२४७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नागराज—	भावशतक	३३४		व्रतकथाकोष	२४१
श्रीनिधिसमुद्र—				पट्पाहुडटीका	११६
श्रीपति—	जातककर्मपद्धति	२८१		श्रुतस्कधपूजा	५४७
	ज्योतिषयटलमाला	६७२		षोडशकारणपूजा	५१०
श्रीभूषण—	अनन्तव्रतपूजा	४५६, ५१५		सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	चारित्र्यशुद्धिविधान	४७४		सिद्धचक्रपूजा	५५३
	पाण्डवपुराण	१५०		सुगन्धदशमीकथा	५१४
	भक्तामरउद्यापनपूजा		सकलकीर्ति—	अष्टागसम्यग्दर्शन	२१५
		५२३, ५४०		श्रृपभनायचरित्र	१६०
	हरीवशपुराण	१५७		कर्मविपाकटीका	५
श्रुतकीर्ति—	पुष्पाजलीव्रतकथा	२३४		तत्त्वार्थसारदीपक	२३
श्रुतसागर—	अनन्तव्रतकथा	२१४		द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
	अशोकरोहिणीकथा	२१६		धन्यकुमारचरित्र	१७२
	आकाशपत्रमीव्रतकथा	२१६		परमात्मराजस्तोत्र	४०३
	चन्दनपट्टिव्रतकथा	२२४		पुराणसारसंग्रह	१५१
		५१४, ५१७		प्रश्नोत्तरोपासकाचार	७१
	जिनसहस्रनामटीका	३६३			६१
	ज्ञानार्णवगद्यटीका	१०७		पार्श्वनाथचरित्र	१७६
	तत्त्वार्थसूत्रटीका	२८		मल्लिनाथपुराण	१५२
	दशलक्षणव्रतकथा	२२७		मूलाचारप्रदीप	७६
	पत्यविधानव्रतोपाख्यान			यशोधरचरित्र	८८
	कथा	२३३		वर्द्धमानपुराण	११३
	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६		व्रतकथाकोश	२४२
	मेघमालाव्रतकथा	५१४		शातिनाथचरित्र	१६८
	यशस्तिलकचम्पूटीका	१८७		श्रीपालचरित्र	२०१
	यशोधरचरित्र	१६२		सद्भाषितावलि	३३८, ३४२
	रत्नत्रयविधानकथा	२३७		सिद्धान्तसारदीपक	४६
	रविव्रतकथा	२३७		सुदर्शनचरित्र	२०८
	विष्णुकुमारमुनिकथा	२४०			

मंत्राक्षर का नाम	मंत्र भाग	मंत्र सूची की पत्र सं.	मंत्राक्षर का नाम	मंत्र नाम	मंत्र सूची की पत्र सं.
मुनिसंज्ञकीर्ति—	नवीनवरपूजा	७६१		नमस्तत्त्वार्थमन्त्राक्षरिणि	
सकलचन्द्र—	वीरवीरना	६९५		छात्रि १५२	
	वर्धनस्तोत्र	२७४	सिद्धनागाशुभ—	नक्षत्रपुट	१६७
सकलमूपय—	उपदेशरत्नमाता	२		विगतहृत्पद्मास्तोत्र	१६१
	वीर्यवहाटीका	१	सिद्धचन्द्रिकाक्षर—	नक्षत्राक्षरिणि	५१६
सप्तानन्दगति—	विजयलक्ष्मीपूजा	२९६		लक्ष्मीस्तोत्र	१५
आचार्यसमस्तमन्त्र—	प्राप्तवीरना	६५७	सुखदेव—	आचार्यसमस्तमन्त्र	१६७
	विजयलक्ष्मीपूजा	१६१	वर्षासुखसागर—	सुखदासजीपूजा	१२७
	वेदमन्त्रस्तोत्र	१६४	सुखसागर—	वचनमन्त्रस्तोत्र	१
	५२३, ५७२, ७१			२११ २१७	
	मुक्तपुष्पाक्षर ११	१६६	सुन्दरपिङ्गवसाधि—	परमवत्तस्मान्नपूजा	१६१
	राजकर्मभक्त्यापना	६५७		वीरानन्दवनीपूजा	१६६
	१, १६१ १६		सुमाधिर्षि—	वर्षासुखस्तोत्र	१
	वृत्तान्तमन्त्रस्तोत्र १७१	१२७	सुमाधि—	वर्षासुखस्तोत्र	५७२
	समस्तमन्त्रस्तोत्र	२७५	सुमाधिबिन्दवसाधि—	रघुवन्दना	१६४
	वृत्तान्तमन्त्र ५२		सुमाधिसागर—	वीरानन्दवनीपूजा	५७२
	समस्तमन्त्र ५२३, ५७१			वचनमन्त्रस्तोत्र	५७६, २४
	२७४ २६३, ६९१			वीरानन्दवनीपूजा	२१७ २६७
	७१		सुरेन्द्रकीर्ति—	वचनमन्त्रस्तोत्र	५७६
समस्तमन्त्राक्षरिणि—	रघुवन्दना	१६४		वृत्तान्तमन्त्रस्तोत्र	५७६
	वृत्तान्तमन्त्रस्तोत्र	१६४		वचनमन्त्रस्तोत्र	१६६
	संस्तुत मन्त्राक्षर	१६७		वचनमन्त्रस्तोत्र	१६६
समस्तमन्त्रोपाख्यान—	नक्षत्रपूजा	७		वचनमन्त्रस्तोत्र	५७६
सप्तमन्त्रिणि—	वीरानन्दवनीपूजा	१२१		(धुल्लक्ष्मीपूजा)	२५७
अभिस्तारस्तोत्र—	विजयलक्ष्मीपूजा	१		वचनमन्त्रस्तोत्र	२११
अभिस्तार—	वर्षासुखस्तोत्र	१६१		वचनमन्त्रस्तोत्र	५७६
अभिस्तारि—	वर्षासुखस्तोत्र	१६१		वचनमन्त्रस्तोत्र	१५
	वचनमन्त्रस्तोत्र	१६६		२४	

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
	नेमिनाथपूजा	४६६		छंदोशतक	३०६
सुरेश्वराचार्य—	सुखसंपत्तिप्रतोद्यापन	५५५		पञ्चमीप्रतोद्यापन	५०४
सुयशकीर्ति—	पञ्चिकरणवास्तिक	२६१		भक्तामरस्तोत्रटीका	४०६
सुल्लण कवि—	पञ्चकल्याणकपूजा	५००		योगचिन्तामणि	३०१
दैवज्ञ प० सूर्य—	वृत्तरत्नाकरटीका	३१४		लघुनाममाला	२७६
श्री० सोमकीर्ति—	रामकृष्णकाव्य	१६४		लब्धिबिधानपूजा	५३३
	प्रद्युम्नचरित्र	१८१		श्रुतबोधवृत्ति	३१५
	रुक्मयसनकथा	२५०	मङ्गाकविहरिचन्द्र—	धर्मशर्माभ्युदय	१७४
	समवशरणपूजा	५४६	हरिभद्रसूरि—	क्षेत्रसमासटीका	५४
सोमदत्त—	बडीसिद्धपूजा			योगविबुधप्रकरण	११६
	(कर्मदहनपूजा)	६३६		पट्टदर्शनसमुच्चय	१३६
सोमदेव—	अध्यात्मतरंगिणी	६६	हरिरामदास—	पिंगलछन्दशास्त्र	३११
	नीतिवाक्यामृत	३३०	हरिपेण—	नन्दीश्वरविधानकथा	२२६
	यशस्तिशकचम्पू	१८७		कथाकोश	२१६
सोमदेव—	सूतक वर्णन		हेमचन्द्राचार्य—	अभिधानचिन्तामणि	
सोमप्रभाचार्य—	मुक्तावलिनिर्गतकथा	२३६		नाममाला	२७१
	सिन्दूरप्रकरण	३८०		अनेकार्थसंग्रह	२७१
	सूक्तिमुक्तावलि	३४२, ६३५		अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वित्रि-	
सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	५८		शिका	५७३
	दशलक्षणजयमाला	७६५		छदानुशासनवृत्ति	३०६
	पद्मपुराण	१४८		द्व्याश्रयकाव्य	१७१
	मेरूपूजा	७६५		घातुपाठ	१०
	विद्याहपद्धति	५३६		नेमिनाथचरित्र	१७७
सौभाग्यगणि—	प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	२६२		योगशास्त्र	११६
हयग्रीव—	प्रद्वनसार	२८८		लिङ्गानुशासन	२७७
हर्ष—	नैपथ्यचरित्र	१७७		चीतरागस्तोत्र	१३६, ४१६
हर्षकल्याण—	पञ्चमीप्रतोद्यापन	५३६		चीरद्वानिशतिका	१३८
हर्षकीर्ति—	अनेकार्थशतक	२७१		शब्दानुशासन	२६४

अथकार का नाम	अथ नाम	अथ सूची की पत्र सं०	अथकार का नाम	अथ नाम	अथ सूची की पत्र सं०
	भक्तिपाठ	६५१		रात्रिभोजनकथा	२३८
	पद	६६४, ७०२	कुशलचन्द—	नेमिनाथपूजा	७६३
		७२४, ७७४	कुशललाभगणि—	ढोलामारुवणीचौपई	२२५
	विनती	६२१	कुशल विजय—	विनती	७८२
	स्तुति	६०१, ६५०	केशरगुलाव—	पद	४४४
कनकमोम—	आद्रकुमारधमाल	६१७	केशरीसिंह—	सम्भेदशिलगविलास	६२
	आपाढमूतिचौढालिया	६१७		वर्द्धमानपुराण	१५४
	मेघकुमारचौढालिया	६१७			१६६
कन्हैयालाल—	कवित्त	७८०	केशव—	कलियुगकीकथा	६२२
कपात—	मोरपिच्छधारीकृष्ण			सदयवन्द्यसारविलास	
	के कवित्त	६७३		की चौपई	२५४
क कपूरचन्द—	पद	४४५	केशवदास—I	वैद्यमनात्सव	६४६
		५७०, ६२४	केशवदास—II	कवित्त	६४३, ७७०
कवीर—	दोहा	७६०, ७८१		कविप्रिया	१६१
	पद	७७७, ७८३		नखसिखवर्णन	७७२
	साखी	७२३		रसिकप्रिया	७७१, ७८६
कमलकलश—	वभणवाडीस्तवन	६१६	केशवसेन—	रामचन्द्रिका	१६४
कमलकीर्ति—	आदिजिनवरस्तुति		कौरपाल—	पंचमीव्रतोद्यापन	६३८
	(गुजराती)	४३६	कूपाराम—	चौरासीबोल	७०१
कर्मचन्द—	पद	५८७		ज्योतिपसारभाषा	२८५
कल्याणकीर्ति—	चारुदत्तचरित्र	१६७	कृष्णदास—		१६८
किशन—	छहढाला	६७४,	कृष्णदास—	रत्नावलीव्रतविवरण	१२१
किशनगुलाव—	पद	५८४, ६१४, ६६६	कृष्णराय—	सतसईटीका	७२७
किशनदास—	पद	६४६	खजमल—	प्रद्युम्नरास	७२२
किशनलाल—	कृष्णवालविलास	४३७	खजसेन—	सतियों की सज्जाप	४५१
किशनसिंह—	क्रियाकोशमापा	५३	खानचन्द—	त्रिलोकसारदर्पणकथा	३२१
	पद	५६०, ७०४			६८६, ६८०,
				परमात्मप्रकाशवालाव	
				बोधटीका	१११

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
गुणपूरण—	पद	७६८	चम्पालाल—	चर्चासागर	१६
गुणप्रभसूरि—	नवकारसज्जमाय	६१८	चतर—	चन्दनमलयागिरिकथा	२२३
गुणसागर—	द्वीपायनढाल	४४०	चतुर्भुजदास—	पद	७७८
	शातिनाथस्तवन	७०२		मधुमालतीकथा	२३५
शुमानिराम—	पद	६६६	चरणदास—	ज्ञानस्वरोदय	७५६
शुलाचचन्द—	कक्का	६४३	चिमना—	भारतीपचपरमेष्ठी	७६१
शुलाबराय—	बडाकक्का	६८५	चैनविजय—	पद	५८८, ७६८
ब्रह्म गुलाल—	कक्कावत्तीसी	६७६	चैनमुखलुहाडिया—	मकुत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	४५२
	कवित्त	६७०, ६८२		जिनसहस्रनामपूजा	४८०
	गुलालपच्चीसी	७१४			५५२
	त्रैपनक्रिया	७४०		पद	४४६, ७६८
	द्वितीयसमोसरण	५६६		श्रीपतिस्तोत्र	४१८
गोपीकृष्ण—	नेमिराजुलव्याहलो	२३२	छत्रपतिजैसवाल—	द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
गोरखनाथ—	गोरखपदावली	७६७		मनमोदनपचशतीभाषा	३३४
गोविन्द—	बारहमासा	६६६	छाजू—	पार्श्वजिनगीत	४ ८
घनश्याम—	पद	६२३	छीतरठोलिया—	होलीकीकथा	२५५,
घासी—	मित्रविलास	३३४			६८५
चन्द—	चतुर्विंशतितीर्थकरस्तुति	६८५	छीहल—	पचैन्द्रियवेलि	६३८
		७२०		पथीगीत	७६५
	पद	५८७, ७६३		पद	७२३
	गुणस्थानचर्चा	८		वैराग्यगीत (उदरगर्गन)	६३७
चद्रकीर्ति—	समस्तव्रतकीजयमाल	५६४	छोटोलालजैसवाल—	तत्त्वार्थसारभाषा	०
चन्द्रमान—	पद	५६१	छोटोलालभित्तल—	पचकल्याणकपूजा	०
चन्द्रसागर—	द्वादशव्रतकथासंग्रह	२२८	जगजीवन—	एकीभावस्तोत्रभाषा	८६
चम्पावार्ड—	चम्पाशतक	४३७	जगतरामगोदीका—	पद	४४५, ५८१, ५८२
चम्पाराम—	धर्मप्रदनोत्तरश्रावका				५८४, ६१५, ६६७,
	चार	६१			६६६, ७२४, ७५७,
	भद्रवाहुचरित्र	१८३			७८३, ७६८, ७६६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
जिनचन्द्रसूरि—	वीसतीर्थकरस्तुति	७००	जिनरगसूरि—	धर्मपर्वविशतिका	६१
	शालिभद्रचौपई	७००		निजामणि	६५
	कयवन्नाचौपई	२२१		मिच्छादुक्कड	६८६
	क्षमावतीसी	५४		रैदन्नतकथा	२४६
जिनदत्तसूरि—	गुरुपारतत्रएवसप्तस्मरण	६१६	जिनरानसूरि—	समकितविरणवोधर्म	७०१
	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	६१६		सुकुमानस्वाभीरास	३६६
प० जिनदास—	चेतनगीत	७६२	जिनवल्लभसूरि—	सुभौमचक्रवर्तिरास	३६७
	धर्मतरुगीत	७६२		कुशलगुरुस्तवन	७७६
	पद ५८१, ५८८, ६६८		जिनसिंहसूरि—	धन्नाशालिभद्ररास	३६२
	७६४, ७७२, ७७४			नवकारमहिमास्तवन	६१८
	आराधनासार	७५७	जिनहर्ष—	शालिभद्रधन्नाचौपई	२५३
	मुनीश्वरोंकीजयमाल	५७१		धग्धरनिसाणी	३८७, ७३४
	५७६, ६२२, ६५८		जिनहर्षगणि—	उपदेशछत्तीसी	३२४
	६८३, ७५०, ७६१			पद	५६०
	राजुलसज्जाम	७५०	जिनेन्द्रभूषण—	नेमिराजुलगीत	६१८
	विनती	७७५		पार्श्वनाथकीनिशानी	४४८
पाण्डेजिनदास—	विवेकजकढी	७२२, ७५०	जीवणदास—	श्रीपालरास	३६५
	सरस्वतीजयमाल	६५८		बारहसीचौतीसन्नतकथा	७६५
		७७८,	जीवणराम—	नन्दीश्वरविधान	४६४
	योगीरासा	१०५, ६०१		पद	४४५
		६०३, ६२२, ६३६	जीवराम—	पद	५८०
		६५२, ७०३, ७१२		पद	५६० ७९१
		७२३	जैतराम—	जीवजीतसहार	७७१
	मालीरासी	५७६		राममालाके दोहे	७८०
	सुगुरुशतक	३४० ४४७	जैतसिंह—	दशवैकालिकगीत	७००
	मठावीसमूलगुणरास	७०७		चौआराधनाउद्योतकथा	२२५
ग्र० जिनदास—	अनन्तव्रतरास—	५६०	जोधराजगोदीका—	गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	चौरासीन्यातिमाला	७६५		जिनस्तुति	७७५
				धर्मसरोवर	६३

ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची की पत्र सं०
	पुरुषार्थसिद्धधुपायभाषा	६६	थानजीअजमेरा—	वीसतीर्थकरपूजा	५२३
	मोक्षमार्गप्रकाशक	८०	थिरूमल—	हृवणभारती	७७८
	लब्धिसारभाषा	४३	दत्तलाल—	वारहखडी	७४५
	लब्धिसारक्षणसागर	४३	ब्रह्मदयाल—	पद	५८७
	लब्धिसारसहस्रि	४३	दयालराम—	जकडी	७४६
ठक्कुसी—	कृपणछन्द	६३८	वरिगह—	जकडी	६६१, ७५५
	नेमीश्वरकीबेलि			पद	७४६
	(नेमीश्वरकवित्त)	७२२	दत्तजी—	वारहभावना	५७१
	पचन्द्रियबेलि	७०३	दत्ताराम—	पद	६२०
		७२२, ७६५	दशरथनिगोस्था—	धर्मपरीक्षाभाषा	३५५
कविठाकुर—	रामोकारपञ्चवीसी	४३६	दास—	पद	७४६
	सज्जनप्रकाश दोहा	२८४	मुनिदीप—	विद्यमानवीसतीर्थकर	
डालराम—	अढाईद्वीपपूजा	४५५		पूजा	४१५
	चतुर्दशीकथा	७४२	दीपचन्द—	अभुभवप्रकाश	४८
	द्वन्द्वशागपूजा	४६१		आत्मावलोकन	१००
	पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन	६६		चिद्धिलास	१०५
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३		भारती	७७७
	पचमेरुपूजा	५०५		ज्ञानदर्पण	१०५
इ. गरकवि—	होलिकाचौपई	२५५		परमात्मपुराण	११०
इ. गात्रैद—	श्रेणिकचौपई	२४८		पद	५८३
तिपरदास—	श्री रुक्मिणीकृष्णजी		दुलीचन्द—	भाराधनासारवचनिका	१०
	को रासो	७७०		उपदेशरत्नमाला	११
तिलोकचन्द—	सामायिकपाठभाषा	६६		जैनसदाचारमातृण्ड	
तुलसीदास—	कवित्तवधरामचरित्र	६६७		नामकपत्रकाप्रत्युत्तर	२०
तुलसीदास—	प्रश्नोत्तररत्नमाला	३३२		जैनागारप्रक्रियाभाषा	५७
तैजरास—	तीर्थभालास्तवन	६१७		द्रव्यसंग्रहभाषा	३७
		६७३		निर्माल्यदोषवर्णन	६५
त्रिभुवनचन्द—	अनित्यपचासिका	७५५		पद	६६३
	पद	७१५			

प्रमाणर का नाम	प्रमाण मान	प्रमाण सूची की पत्र म	प्रमाणर का नाम	प्रमाण मान	प्रमाण सूची की पत्र म	
		अंगुलगात्रका	३२२		अंगुलीवर्णका	३२४
		बागिचमरद्वारा	७२	श्रीरामराम—	द्वारा	१० ७१६
		मुवादिगाभी	३४४			७ ३
देवचन्द्र—		मुद्रिका	३		दिनाचल	७ ३
देवचन्द्र—		चट्टिकापीपुत्रा	७६		४४	४४६ ११४
		महापुत्रा	७६		वापुत्रा	११६ ११६
देवमिह—		४४	११४	श्रीरामरामपटनी—	वर्णिका	७१६
देवमान—		४४	३ ६	श्रीरामराम—	वर्णिका	११४
वृषादिन—		उरीचमरद्वारा	३ ६		श्रीरामरामका	३६
देवचन्द्र—		दिनाचलश्रीवर्णिका	३ ६			४१६ ४४४
देवचन्द्र—		वर्णिका	११६, १४६			११६ १०६
		श्रीरामरामचन्द्रिका	४६		वर्णिका	३६
		४४ ४४६ ७२६ ७४६			वर्णिका	११६
		दिनाचल ४४६ ११६ ३			वर्णिका	११६
		वर्णिका	११६		वर्णिका	७१६
		मुद्रिका	४६		वर्णिका	११६
		मर्णिका	३६	श्रीरामराम—	वर्णिका	११६
		मर्णिका	१४६	वर्णिका—	वर्णिका	७ ३ ४६
देवचन्द्र—		दिनाचल	७ ४		वर्णिका	११६
देवचन्द्र—		वर्णिका	११६		वर्णिका	३६
		वर्णिका	७२६		वर्णिका	११६ ११६
		४४	१४६			७२
		वर्णिका	३१६ ३१६		वर्णिका	११६ ७४६
देवचन्द्रका—		वर्णिका	३१६		वर्णिका	१४ ११४
देवचन्द्र—		वर्णिका	११६			७४४
देवचन्द्र—		४४	३ ७		वर्णिका	७ ४
		वर्णिका	७ ७		वर्णिका	११६ ११६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६७४, ७४७		सबोधप्रसरवावनी	११६
गुरुप्रष्टक		७७७		समाधिमरणभाषा	१२६
जगदी		६४३		सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	७०५
तत्त्वसारभाषा		७४७		स्वयभूस्तोत्रभाषा	४२६
दशबोलपञ्चीसी		४४८		भाद्रपदपूजा	५२४
दशलक्षणपूजा	५१६, ७०५		द्वारिकादास—	कलियुगकीकथा	७७३
दानवावनी	६०५, ६८६		धनराज—	तीनर्मियाकीजगदी	६२३
द्यानतविलास	३२८			पद	७६८
द्रव्यसंग्रहभाषा	७१२			दिश्वरविलासभाषा	७६३
धर्मविलास	३२८		धर्मचन्द्र—	धनन्तकेछप्पय	७५७
धर्मपञ्चीमी	७१०, ७४७		धर्मदास—	मोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
पञ्चमेरुपूजा	५०५, ७०५			पद	५८८, ७६८
पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा	५६६		धर्मपाल—	प्रजनाकोरास	५६३
	६१५, ४०६		धर्मभूषण—	दानशीलतपभावना	६०
पदसंग्रह	४४५, ५८३		धर्मसी—	भाषामुपण	६६८
	५८४, ५८५, ५८६		धीरजसिंहराठौड—	प्रनेकार्यनाममाला	७०६
	५८८, ५८९, ५९०		नन्ददास—	प्रनेकार्यमजरी	२७१, ७६६
	६२२, ६२४, ६४३			पद	५८७, ७०४
	६४६, ६५४, ७०४				७७०
	७४६, ७८७			नाममजरी	६६७, ७२२
भावनास्तोत्र	६१४			मानमजरी	२७१, ७२२
रत्नत्रयपूजा	५२६, ७०५			विरहमजरी	६५७, ७२६
वाणीप्रष्टभवजयमाल	७७७			श्यामवत्तीसी	६८३
पोढाकारणपूजा	५११			योगसारभाषा	११६
	५१६, ५५६, ७०५			वक्त्रकावत्तीसी	७३२
संघपञ्चीसी	३७५		नन्दराम—	प्रश्नावलिकवित्त	७८२
सबोधपञ्चासिका	१२८		वैद्यनन्दलाल—	रसालकु वरकीचोपई	५७७
	६०५, ६४८, ६८५, ६६३		नखरूकवि—		
	७१३, ७१६, ७२५				

[illegible]

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमीश्वरगीत	६२१		जीवधरचरित्र	१७१
	लुहरि	६२२		तन्वकोस्तुभ	२०
	विनती	६६३		तत्त्वार्थसारभाषा	२३
नेमीचंद्रपाटनी—	चतुर्विंशतितोथंकर			तत्त्वसारभाषा	२१
	पूजा	४७२		द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	तीनचौबीसीपूजा	४८२		धर्मप्रदीपभाषा	६१
नेमीचंद्रवर्ष्णी—	सरस्वतीपूजा	५५१		न दीश्वरभक्तिभाषा	४६४
नेमीदास—	निर्वाणमोदकनिर्याय	६५		नवतत्त्ववचनिका	३८
न्यामतसिंह—	पद	७६५		न्यायदीपिकाभाषा	१३५
	भविष्यदत्तदत्ततिलका—			पाठवपुराण	१५०
	सुन्दरीनाटक	३१७		प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	
	पद	७६५		भाषा	७०
पद्मभगत— [कृष्णरुक्मिणीमंगल	२२१		भक्तामरस्तोत्रकथा	२३५
पद्मकुमार—	भ्रातृमहाशक्तिसङ्काय	६१६		भक्तिपाठ	४४६
पद्मतिलक—	पद	५८३		भविष्यदत्तचरित्र	१८४
पद्मनदि—	देवतास्तुति	३६४		भूपालचौबीसीभाषा	४१२
	पद	६४३		सरकतविलास	७८
	परमात्मराजस्तवन	४०२		योगसारभाषा	११६
पद्मराजगणि—	नवकारसङ्काय	६१८		यशोधरचरित्र	१६२
पद्माकर—	कवित्त	७५६		रत्नकरण्डश्रावकाचार	८३
चौधरीपद्मालालसघी—	भाषासारभाषा	४६		वसुन्धरियावकाचारभाषा	८५
	भाराधनासारभाषा	४६		विद्यापहारस्तोत्रभाषा	
	उत्तरपुराणभाषा	१४६		पट्टश्राव्यकविधान	-
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३		श्राव्यप्रतिक्रमणभाषा	८६
	कल्पाणमदिरस्तोत्रभाषा	३८५		सङ्कापितवलीभाषा	३३८
	गीतमस्वामीचरित्र	१६३		समाधिभरणभाषा	१२७
	जम्बूत्वाभीचरित्र	१६६		सरस्वतीपूजा	५५१
	जिनदत्तचरित्र	१७०		सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
	ज्ञानवावनी	१०५, ७५०	वलदेव—	पद	७६८
	तेरहकाठिया	४२६, ७५०	वावूलाल—	विष्णुकुमारमुनिपूज	५३६
	नवरत्नकवित्त	७४३,	बालचंद—	पद	६२५
	नाममाला	२७६, ७०६	बिहारीदास—	भारती	७७७
	पद	५८२, ५८३		कवित्त	७७०
	५८५, ५८६, ५८६,			पद	५८७
	५६०, ६१५, ६२१			पद्यसंग्रह	७१०
	६२२, ६२३ ६६७			वदनाजकडी	४४६, ७२७
	पार्श्वनाथस्तुति	७२३	बिहारीलाल—	सतसई	५७६, ६७५
	परमज्योतिस्तोत्रभाषा	४०२		६८८, ७२७, ७६८	
		५६०	बुधजन—	इष्टछत्तीसी	६६१
	परमानन्दस्तोत्रभाषा	५६२		छहठाला	५७
	बनारसीविलास	६४०		तत्त्वार्थबोध	२१
	६८६, ७०६			दर्शनपाठ	४३६
	मोहविषैकयुद्ध	७१४, ७६४		पञ्चास्तिकायभाषा	४१
	मीक्षवैजी	८०, ७१६		पद	४४५, ४४६, ५७१
		७४६		६४८, ६५३, ६५४	
	शारदाष्टक	७७६		७८५, ७८८	
	समयसारनाटक	१२३, ६०४		वदनाजकडी	४४६
	६३६, ६४०, ६५७			बुधजनविलास	३३०
	६०, ६८३, ६८८			बुधजनसतसई	३३२, १२३
	६८६, ६६४ ६६८			योगसारभाषा	१३
	७०२, ७१६, ७२०			पटपाठ	
	७२१, ७३१, ७५६			सबोधपचसिमाना	
	७७८, ७८७			सरस्वतीपूजा	१
	साधुवदना	६८०, ६५२	बुधमहाचंद—	स्तुति	७०४
	७१६		बुलाकीदास—	सामायिकपाठभाषा	६५
	सिन्धुप्रकरण	३४०, ७१०		षष्ठवपुराण	१५०, ७८५
	७१२ ७४६		बूचराज—	प्रदोत्तरभ्रातृकाचार	७०
				टटाणागीत	७२२, ७५०

[illegible]

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
भूधरदास—	कवित्त	७७०		वारहभावना	११४
	गुरुगोकीवीनता	४४७		वज्रनाभिचक्रवर्त्तिकी	
	५११, ६१४, ६४२, ६६३			भावना	८५
	चर्चसमाधान	१५, ६०६			४४८, ७३६
		६४६		विनती	६४२, ६६३
	चतुर्विंशतिस्तोत्र	४२६			६६४
	जकडी	६५०, ७१६		स्तुति	७१०
	जिनदर्शन	६०५	भूधरमिश्र—	पुरुषार्थसिद्धयुपाय	
	जैनशतक	३२७, ४२६		वचनिका	६६
		६५२, ६७०, ६८६		पद	७७६
		६६८, ७०६, ७१०	भेलीराम—	पञ्चकल्याणकपूजा	५०१
		७१३, ७१६, ७३२	भैरवदास—	बृहद्वेदाङ्गणकल्प	७२६
	दशलक्षणपूजा	५६२	भोगीलाल—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६३
	नरकदुःखवर्णन	६५, ७८८	मगलचन्द—	पदसंग्रह	४४७
	नेमीश्वरकीस्तुति	६५०			
		७७७	मकरदण्डावतिपुरवाल—	पदसङ्ग्रह	८८
	पञ्चमैरूपूजा	५०५, ५६६	मखनलाल—	अकलकनाटक	३१६
		७०४, ७५६	मजलसराय—	जैनब्रह्मदेशकीपञ्ची	५८१
	पार्श्वपुराण	१७६, ७४४	मतिकुसल—	चन्द्रलेहारास	३६१
		७६१	मतिशेखर—	ज्ञानवावनी	७७२
	पुरुषार्थसिद्धयुपाय		मतिसागर—	शालिभद्रचौपई	१६८, ७२६
	भाषा	६६	मथुरादासव्यास—	लीलावतीभाषा	=
	पद	४४५, ५८०, ५८६	मनरगलाल—	अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	
		५६०, ६१५, ६२०		चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	८
		६८८, ६६४, ६५४		निर्वाणपूजापाठ	४६६
		६६४, ७७६, ७७७	मनरथ—	चितामणिकीजयमाल	
		७८५, ७८६, ७८८			६४४
	वर्णसपरीपहवर्णन	७५, ६०५	मनराम—	अक्षरगुणमाला	७४६
				गुणशरमाला	७५०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
रङ्गधू—	वारहभावना	११४		चतुर्विंशतितीर्थवरपूजा	
रघुराम—	सभासारनाटक	३३८			४७२, ६६६, ७२७,
रणजीतदास—	स्वरोदय	३४५			७२६, ७७२
रत्नक्रीत्ति—	नेमीश्वरकाहिण्डोलना	७२२		पद	५८१, ६६८, ६८६
	नेमीश्वररास	६३८		पूजासग्रह	५२०
		७२२		प्रतिमासातचतुर्दशी	
रतनचंद—	चीवीसीविनती	६४६		व्रतोद्यापन	५२०
	देवकीकीडाल	४४०		पुरुषस्त्रीसवाद	७८६
रत्नमुक्ति—	नेमीराजमतीराम	६१७		वारहखंडी	७१५
रत्नभूषण—	जिनचैत्यालयजयमाल	५६४		शातिनाथपूजा	५४५
रत्नकवि—	जिनदत्तचौई	६८२		गिग्वरविलास	६६३
रसिकराय—	नेहलीला	६६४		सम्मदशिखरपूजा	५५०
राजमल—	तत्त्वार्थसूत्रटीका	३०		सीताचरित्र	२०६, ७२५
राजसमुद्र—	कर्मवृत्तीसी	६१७			७५६
	जीवकायासञ्ज्ञाय	६१६	ऋषिरामचन्द्र—	सुपाशर्वनाथपूजा	५५५
	शत्रुञ्जयभास	६१६		उपदेशसञ्ज्ञाय	३८०
	शत्रुञ्जयस्तवन	६१६		कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा	
	सोलहसतियोकैनाम	६१६			३८५
राजसिंह—	पद	५८७	रामचन्द्र—	नेमिनाथरास	३६२
राजसुन्दर—	द्वादशमाला	७४३, ७७१		रामविनोद	३०२
	सुन्दरश्रृ गार	६८३, ७२६	रामदास—	पद	५८३, ५८८
राजाराम—	पद	५६०			६६३, ६६७, ७७७
राम—	पद	६५३	रामभगत—	पद	—
	रत्नपरीक्षा	३५८	मिश्ररामराय—	बृहद्धारिणव्यनीति	
रामकृष्ण—	जकडी	४३८		शास्त्रभाषा	५५५
	पद	६६८	रामविनोद—	रामविनोदभाषा	६४०
रामचन्द्र—	आदिनाथपूजा	६५१	ब्र० रायमल्ल—	आदित्यवारकथा	७१२
	चंद्रप्रमजिनपूजा	४७४		चिंतामणिजयमाल	६५५
				द्वियालीसठाणा	७६५

संस्कार का नाम	प्र. सं. नाम	प्र. सं. सूची की पं. सं.	संस्कार का नाम	प्र. सं. नाम	प्र. सं. सूची की पं. सं.
अमृतवापीकरण		७१	वैष्णववापीकरण		७१
निर्दोषपुण्यवा		१७२	निर्दोषपुण्यवा		१७२
वैष्णववापीकरण		१७३	वैष्णववापीकरण		१७३
१२१ १२२ ७२२			१२१ १२२ ७२२		
पंचगुणवाप्यमाल		७२३	पंचगुणवाप्यमाल		७२३
प्र. सं. १२३, १२४			प्र. सं. १२३, १२४		
७२५, ७२६ ७२७			७२५, ७२६ ७२७		
अमृतवापीकरण		४	अमृतवापीकरण		४
अमृतवापीकरण		१४ ७४ ७२९	अमृतवापीकरण		१४ ७४ ७२९
७२९ ७३० ७३१			७२९ ७३० ७३१		
राजापुत्रपुण्यवापी		१२	राजापुत्रपुण्यवापी		१२
दीपवा		७४२	दीपवा		७४२
अमृतवापीकरण		१३	अमृतवापीकरण		१३
१४ ७४ ७२९			१४ ७४ ७२९		
७२९ ७३० ७३१			७२९ ७३० ७३१		
अमृतवापीकरण		१२१ १२२	अमृतवापीकरण		१२१ १२२
७२९ ७३० ७३१			७२९ ७३० ७३१		
अमृतवापीकरण		१२१ १२२	अमृतवापीकरण		१२१ १२२
७२९ ७३० ७३१			७२९ ७३० ७३१		
अमृतवापीकरण		२११ २१२	अमृतवापीकरण		२११ २१२
२१३ ७३० ७३४			२१३ ७३० ७३४		
७४ ७३२			७४ ७३२		
७४४ ७३२			७४४ ७३२		
सावनीमाईरासमर—	आमृतवापीकरण	२	सावनीमाईरासमर—	आमृतवापीकरण	२
अमृतवापीकरण		७४५	अमृतवापीकरण		७४५
अमृतवापीकरण		१२ ७२९	अमृतवापीकरण		१२ ७२९
१२१ ७२२			१२१ ७२२		
अमृतवापीकरण		७	अमृतवापीकरण		७

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
	चिन्तामणिपार्श्वनाथ			पार्श्वजिनपूजा	५०७
	स्तवन	६१७		पूजाष्टक	५१२
	धर्मबुद्धिचौपई	२२६		पट्लेश्यावेलि	३६६
	नेमिनाथमगल	६०५, ७२२	वल्लभ—	रुक्मिणीविवाह	७८७
	नेमीश्वरका व्याहला	६५१	वाजिद—	वाजिदकेप्रदिल्ल	६७३
	पद	५८२, ५८३, ५८७	वादिचन्द्र—	आदित्यवारकथा	६०७
	पूजासग्रह	७७७	विचित्रदेव—	मोरपिच्छधारीके	
पाडे लालचंद—	पट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८		कवित्त	६७३
	सम्मेदशिखरमहात्म्य	६२	विजयकीर्त्ति—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
श्रीपि लालचंद—	अठारहनातेवीवथा	२१३		जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
	मरुदेवीसज्जाप	४४०		पद	५८०, ५८२
	महावीरजीचौडाल्या	४५०			५८३, ५८४, ५८५
	विजयकुमारसज्जाप	४५०			५८६, ५८७, ५८८
	शान्तिनाथस्तवन	४१७		श्रेणिकचरित्र	२०४
	श्रीतलनाथस्तवन	४५१	विजयदेवसूरि—	नेमिनाथरास	३६२
लालजीत—	तेरहद्वीगूजा	४८४		शीलरास	३६५, ६१७
ब्रह्मलाल—	जिनवरव्रतजयमाला	६८५	विजयमानसूरि—	श्रीयासस्तवन	४५१
लालबख्श—	पाण्डवचरित्र	१७८	विद्याभूषण—	गीत	६०७
ब्रह्मलालसागर—	रामोकारछंद	६८३	विनयकीर्त्ति—	अष्टाह्निकाव्रतकथा	६१४
लालकरणकासलीवाल—	चौबीसतीर्थकरस्तवन	४३८			७८०, ७८४
	देवकीकीढाल	४३६	विनयचंद—	केवलज्ञानसज्जाप	३८५
साहलोहट—	अठारहनातेकीकथा		विनोदीलाललालचंद—	कृष्णपञ्चमीसी	३
	(चौडाल्या)	६२३		चौबीसीस्तुति	७७३, ७७४
		७२३, ७७५, ७८०, ७८८		चौरासीजातिका	
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६६		जयमाल	३६६
	पार्श्वनाथकीगुणमाला	७७६		नेमिनाथकेनवमगल	४४०
	पार्श्वनाथजयमाल	६४२			६८५, ७२०, ७३४
		७८१		नेमिनाथकाबारहमासा	७५३

प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
शोभाचन्द्र—	शिवदेवीमाताकोआठवो	७२४		भक्तलंकाएकभाषा	३७६
	क्षेत्रपालभैरवगीत	७७७		ऋषिमंडलपूजा	७२६
	पद	५८३, ७७७		तत्त्वार्थसूत्रभाषा	२६
श्यामदास—	तोसचौबीसी	७५८		दशलक्षणधर्मवर्णन	५६
	पद	७६४		नित्यनियमपूजा	४६६
	श्यामवत्सी	७६६		न्यायदीपिकाभाषा	१३५
श्याममिश्र—	रागमाला	७७१		भगवतीभारावनाभाषा	७६
श्रीपाल—	त्रिपट्टिशलाकाष्टद	६७०		मृत्युमहोत्सवभाषा	११५
	पद	६७०		रत्नकरण्डश्रावकाचार	८२
श्रीभूषण—	अनन्तचतुर्दशीपूजा	४५६		पोडशकारणभावना	८८, ६८
	पद	५८३	सवलसिंह—	पद	६०४
श्रीराम—	पद	५६०	सभाचन्द्र—	लुहरि	७०४
श्रीवर्द्धन—	गुणस्थानगीत	७६३	सवाईराम—	पद	५६०
मुनिश्रीसार—	स्वार्थबीसी	६१६	समथराज—	पार्श्वनाथस्तवन	६६७
सतदास—	पद	६५४	समथसुन्दर—	अनाथीमुनिसंभाषा	६१८
सतराम—	कवित्त	६६२		अरहनासंभाषा	६१८
सतलाल—	सिद्धचक्रपूजा	५५४		आदिनाथस्तवन	६१६
सतीदास—	पद	७५६		कर्मछत्तीसी	६१६
सवोयकवि—	विपहरणविधि	३०३		कुशलगुस्तवन	७७६
मुनिसकलकीर्ति—	भाराधनाप्रतिबोधसार	६८५		क्षमाछत्तीसी	६१७
	कर्मचूरप्रतवेलि	५६२		गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	पद	५८८			
	पार्श्वनाथाष्टक	७७७		गीतमपृच्छा	
	मुक्तावलिगीत	६८६		गीतमत्त्वामीनज्जाय	
	सोलहकारणरास	५६४		ज्ञानपञ्चमीवृहत्स्तवन	७७८
		६३६, ७८१		तीर्थमालास्तवन	६१७
सदासागर—	पद	५८०		दानपञ्चशीलमंचाद	६१७
सदासुखकासलीवाल—	अर्थप्रकाशिका	१		नमिराजपिसंभाषा	६१८
				पञ्चयत्तिस्तवन	६१६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
कविसूरत—	द्वादशानुप्रेक्षा	७६४		निर्वाणक्षेत्रमडलपूजा	४६८
	वारह्वहो ६६, ३३२, ७१५	७८८		पचकुमारपूजा	७५६
सेवगराम—	अनन्तनाथपूजा	४५६		पूजापाठसंग्रह	५११
	आदिनाथपूजा	६७४		मदनपराजय	३१८
	कवित्त	७७२		महावीरस्तोत्र	५११
	जिनगुणपञ्चमी	४४७		वृहद्गुरावलीशातिमडल	
	जिनयशमंगल	४४७	(चौसठऋद्धिपूजा)	४७६, ५११	
	पद ४४७, ७८६, ७६८			सिद्धक्षेत्रोंकीपूजा	५५३, ७८६
	निर्वाणकाण्ड	७८८	हसराम—	सुगन्धदशमीपूजा	५११
	नेमिनाथकीभावना	६७४	हठमलदास—	विज्ञप्तिपत्र	३७४
सेवारामपाटनी—	मल्लिनाथपुराण	१५२	हरखचंद—	पद	६२४
सेवारामसाहू—	अनन्तव्रतपूजा	४५७		पद ५८३, ५८४	५८५
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७०	हरचंदअग्रवाल—	सुकुमालचरित्र	२०७
	धर्मोपदेशसंग्रह	६४		पचकल्याणकापाठ	४००
सोम—	चिंतामणिपार्वनाथ				७६६
	जयमाल	७६२	हर्गूनाल—	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
सोमदेवसूरि—	देवराजवच्छराजचौपई	२२८	हर्षकवि—	चंद्रहसकथा	७१४
सोमसेन—	पचक्षेत्रपालपूजा	७६५		पद	५७६
स्यौजीरामसौगाणी—	लग्नचंद्रिका	७५१	हर्षकीर्त्ति—	जिणभक्ति	४३८
म्यरूपचंद—	ऋद्धिसिद्धिशातक	५२, ५११		तीर्थंकरजकडी	६२२
	अमृतकारजिनेश्वरपूजा	५११		पद ५८६, ५८७	५८८, ५८९, ६२१
		६६३			६२४, ६६३, ७०१
	जयपुरनगरसर्वंधी				७५०, ७६३, ७६४
	चैत्यालयोकीवदना	४३८		पचमगतिवेलि	६२१
		५११			६६१, ६६८, ७५०
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०			७६५
	त्रिलोकसारचौपई	५११			

प्रकाशक का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	प्रकाशक का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्ष्णनाथपुत्रा	११६		विपरीती	१११
	वीरगोपीनाथ की बकरी			स्तुति	७७१
	(बमपाल) १४४	७२२	हीरकवि—	सावरनाथपरिच	१४
	वीर विरहपालपुत्रा	२१६	हीराचर—	पद	४४७, २१
	धनकर्मकरजी	२६७		पुनर्लब्ध	२१६
	पद्मेश्वरी	७७२	हीरामय—	वैष्णविकामना	४१
	दुर्गाजी	७४६	हीराबाब—	कल्याणपुस्तक	१४६
इपंचम्—	पद	२४३, ११	हेमराज—	वसिष्ठसार	११७
इपचुरि—	शक्तिपञ्चमविश्वस्तवन	१७६		वैष्णवसारकर्मकाम	११
पवित्रिकम्—	प्रणवचतुर्विधोप			इन्द्राक्षरनामा	७११
	कथा	७६१		पंचमैत्रिकाव्यय	४१
	प्रणवचतुर्विधोप	७६४		पद	२६
	विपरीतचतुर्विधोप	७६४		प्रणवचतुर्विधोप	१११
	विष्णुसहस्रनामा	७६३		वैष्णवनामा	११४
हरिचरित्रास—	कविचक्र	१४४		वैष्णवी	१२७
	विष्णुसहस्रनामा	१४७		नक्षत्रनक्षत्रीयनामा	४१
हरीदास—	प्रणवचतुर्विधोप	७६३			१११ १४४ १११
	पद	७७७			७ ७ ७७४
हरिचम्—	पद	१४६		कल्याणपुस्तक	७७७
हरिचिन्त—	पद	२४१, २४३, ११		पुनर्लब्ध	११४
		१४३, १४४ १२६			७६६
		७७२, ७७३, ७७६	मुनिवैमर्षि—	पञ्चमैत्रिकाव्यय	४११



➡ ➡ ➡ शासकों की नामावलि ➡ ➡ ➡

भक्रवर	६, १२२, १६७, ५६१, ५६२	चन्द्रगुप्त	६२०
(इक्ष्वाकुर)	६८१, ७६७, ७७३	विश्वनादमोदीये	५६२
भजपालपवार	५६२	छत्रसाल	४०६
भणहलगुवाल	५६२	जगतसिंह	१७०, १८१, ३६६, ७७६
भनगपालतुवर	५६१	जगपाल	६६
भरविंद	५६८	जयसिंह (सवाई)	५३, ७१, ६३, ६६, १२०
भलाउद्दीन	३५६, २५६		१२८, २०४, ३०५, ४८२
(भलावदीन)			५१५, ५२०, ५६१
भलावलखा	१५७	जयसिंहदेव	१४५, १७६
भलावद्दीनलोदी	५६	जहागीर	४१, १४४
भहमदशाह	२१६, ५६१	जैतसी	५६२
भालुभ	२५१	जैसिंह (सिधराव)	५६२
भौरगजेव	६७, ४७८, ५५४, ६६८	जोधावत	५६१
भौरगसाहि पातसाहि	३१, ३६, ५६२	जोधे	५६१
इन्द्रजीत	७४३	टोडरमल	७६७
इब्राहीमलोदी	१४२	हू गरेन्द्र	१७२
इब्राहीम (सुलतान)	१४५	तैतवो	५६२
ईसरीसिंह	२२६	देवडो	५६२
ईश्वरसिंह	२३१	नाहरराव (पवार)	५६१
उदयसिंह	२०६, २५१, ५६१, ५६२	नौरगजीव	३०५
उसैसिंह	२१६	नौरग	४४८
किशनसिंह	५६२	पूरणमल्ल	१६४
कीर्तिसिंह	२६५	पेरोजासाह	७८
कुसालसिंह	४८	पृथ्वीराज	१०३
केशरीसिंह	३४७	पृथ्वीसिंह	७३, १४४, ६८३, ७६७
क्षेत्सी	१६०	प्रतापसिंह	२७, १४६, १८६, ४५७, ४६१
गयासुद्दीन	५३	फतेसिंह	४८०
गजुद्दीनबहादुर	१२५	वस्तुवावरसिंह	७२६
घटसीराय	१७२	बहलोलशाह	६२

★ ग्राम एवं नगरों की नामावलि ★

भजनगीई	७२६	भागरा	१२३, २०१, २५५, ५६१
भवावतीगढ (भामेर)	४, ३४, ४०, ७१, १२०		७४६, ७५३, ७७१
	१६३, १८७, १६६, ४५६	भामानेरी	७४८
भकवरानगर	४७६	भामेर	३१, ७१, ६३, ११६, १२०
भकवराबाद	६, ३६१		१३२, १३३, १७२, १८४,
भकवरपुर	२५०		१८८, १६०, २३३, २६४
भकीर	३६७		३३७, ३६४, ३६५, ४२२
भजमेर	२१६, ३२१, ३४७, ३७३		४६२, ६८३, ७५६
	४६६, ५०५, ५६२, ७२६	भाम्रगढ	१५१
भटोरिनगर	१२	भालमगज	२०१
भराहिलपत्तन (भराहिलपाट)	१७५, ३५१	भावर (भामेर)	१८१
भमरसर	६१७	भाश्रम नगर	३५
भमरावती	४८७	इन्दौर (तुकीगंज)	५४७
भवती	६६, २७६, ३६७	इन्द्रपुरी	३५८, ३६३
भभ्रलपुरदुर्ग (भागरा)	२०६, ३४६	इ वावतिपुर (मालवदेश मे)	३४०
भराहिलपुर	१७	इदोखली	३७१
भलकापुरी	४३५	ईडर	३७७
भलवर	२४, ५६७	ईसरदा	२७, ३०, ५०३
भलाठपुर (भलवर)	१४४	उग्रियावास्त	३१६
भलीगढ (उ प्र)	३०, ४३७	उज्जैन	१२१, ६८३
भवन्तिकापुरी	६६८	उज्जैणी (उज्जैन)	५६१
भहमदाबाद	२३३, ३०५, ५६१	उदयपुर	३६, १७६, १६८, ४८०
	५६२, ७५३		२६३, ४८७
भहियुर (नागीर)	८६, २५१	एकोहमा नगर	४५४
भांधी	३७२	एलिचपुर	१८१
भवावती	३७२	भौरंगानाद	७०, ५६२, ६१७
भावां महानगर	१६४	ककरणलाट	३६७
भावेर (भामेर)	१०७	कछोविदा	५६२

बटक	१३४	केरुग	११७
बुझीगुर	१६१	केरवाचाल	१२
कम्पुल	१६७	कैलाश	१५१
करीबाम	१६९	कोटगुलसी	७१७
कलारा (बिना)	२२	कीटा	१४ २२७ ४२
कलाटिक	१५६	कीटाटा	१२१
कलाम	१६७	कीचवी	१९१
कटीसी	१ ४	कुम्भपड	१ १ २२१ २६ १११
कलाकला	१५१	कुम्भपड (कलाविहारा)	२१
कलामाचौपुर	१६६	खपार	४५
कलिय	१६७	खाली	११
कलीकाल	२४६	खिल्लवैध	७१
कलौला	१७२	खैटक	१३१
कलानुरकैड	१३४	खैरार	१३३
कलामपुर	१२	खडक	१६
कलौला	२ ४	खडकोडा	११
कलाम	७२	खालीकाला	१४
कलामेरा (कलाविहारा)	४५, २१	खिलार	१७
	१ ६ १ १	खिलीर	१६१
किलार	१६७	खिलारपुर	४
किलारकड	१४ १३१ २६२	कुमारल	२१४
किलीर	२१	कुम्भर (कुम्भार)	१६७
कु कुम्भार	१२२	कुम्भार (कुम्भार)	१६१
कुम्भार	४४१	कुम्भारपुर	४११
कु कलार	२२	कुलार	१७१
कु कलामेकुर्ग	१३१	कुलामलनगर (कलामलनगर)	१३३, १७२, २६३, ४२३
कु कलाम	१६७	कुलामलिन	१ १
कुम्भार	१६७	कुलामलिनपुरी	१५१
कुम्भारपुर	१४५	कुलामलिनपुर	४१
कुम्भारी	१	कुलामलिन (कुलामलिन)	१ १

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

भालियर	१७२, ४५३	५३, ६१, ६६, ७१, ७२
घढतोला	४७५	७४, ७७, ७६, ८५, ८६, ८२
घाटडे	३७१	६३, ६६, ६८, १०२, १०४
घाटमपुर	४१२	११०, १२१, १२८, १३०
घाटसल	२३४	१३४, १४०, १४२, १४५
चऊढ	३६७	१५२, १५३, १५४, १५५
चन्द्रपुरी	४१, १८८, ५३१	१५८, १६२, १६६, १७२
चन्द्रापुरी	१७, ३०३	१७३, १८०, १८२, १८३
चदेरीदेश	५३, १७१	१८६, १८५, १८६, १८७
चपनेरी	५६३	१८८, २००, २०१, २०२
चम्पावती (चाकसू)	३०२, ३२८	२०५, २०७, २२०, २२५
चम्पापुर	१६४	२३०, २३१, २३४, २३५
चमत्कार क्षेत्र	६६३	२३६, २३६, २५०, २५३
चाकसू	२२५, २८७, ४३४, ४६७ ४६८, ५६३, ७८०	२५५, २६२, २७४, २७५
चान्दनपुर	५४८	२८०, ३०२, ३०४, ३०८
चावढल्य	३७२	३०६, ३४१, ३५०, ३५७
चावली (भागरा)	५४७	३६२, ३६४, ३७५, ३८६
चितीढ	२१३, ५६२	३८४, ४१०, ४११, ४२१
चित्रकूट	३६, १३६, २०६	४४५, ४५०, ४५६, ४६०
चीतीढा	१८५, १८६	४६१, ४६६, ४७२, ४८१
चूरु	५०२	४८७, ४८४, ४८६, ५०४
घोमू	४४०	५०५, ५११, ५२०, ५२१
जम्बूद्वीप	२१८	५२७, ५३३, ५४६, ५७७
जयदुर्ग	२७३	५६१, ६००, ६१५, ६६६
जयनगर (जयपुर)	१६, ११२, १२४ १६८, ३०१, ३१६	६८३, ७१५, ७२६, ७२८
(सवाई) जयनगर (जयपुर)	१६६, १७०, २६८ ३१८, ३३०	७६८, ७७१, ७७६
जयपुर (सवाई) जयपुर	७, १६, २५, २७, ३१ ३४, ३६, ४२, ४४, ५२	७० ४१, ७०, ६१, १४२ ५५२, ६६८ ३८०
जलपथ (पानीपत)		
जहानाबाद		
जागरू		

बालपुर	१ ८, १ ३, ५६९	गिलास	११७
बीरमपुर	१३२	गुल्ल	११७
बीरमपुर	५६१ १२	गुल्ल	११७
बीरमपुर	५३, ५१ ६१ ५५६	ढोडा (टीडा)	१ १
	५ २, ५ १	बनारस	६, १७
बीरपुर	५ ३ ३ १ ५६१	बनारस	११७
बीरपुर	५१ ५५ ५५ २११	बाक	१११
	५६१ ५ २ १११	बिहारी-बिहारी	१७ नव ११५ १५
	५६३, ५६१ ५६५		१११ १७२, ११७ ५५५
	५७७ ५६१ ५७५		५७५ ५६१ ५७५, ५७५
आनराजपुर	१११	बिहारी-बिहारी (बीडा)	१११
आनराज	१७२	हुल्ल	१७२
गिलासी	११५	हुली	१
गिलास	१७ ११६, ५७७	बेहरी-बेहरी	१११
गिलास	१७१	बेहरी-बेहरी (बीडा)	१७१ ११६, ११५
गिलास	१ २	बेहरी-बेहरी	१११
गिलास	११ ११६ १ १	बेहरी-बेहरी	११
गिलास	१५५ १११	बेहरी	१७१
गिलास	१११	बीडा-बीडा	१७१ ११ १७२, १७१
गिलास	५१	गुल्ल (गिलास)	११६, ५ १
गिलास	१११ १७१	गुल्ल	११७
गिलास	११६, ११	गुल्ल	११
गिलास (गिलास)	११७	गुल्ल	१
गिलास (गिलास)	७७	गुल्ल	११, १११ १५२, १७१
	११ १७१ १ १ १	गुल्ल	११
	१ ३, ११६ १११, ५६५	गुल्ल	७७५
गिलास	११७	गुल्ल	११७ १११
गिलास	१ १	गुल्ल	५११
गिलास	१५५ ११७	गुल्ल	११५
गिलास	११७	गुल्ल	११

नरवल	२२७	पाली	३६३
नरायणा	११७, ३५३, ३६२, ४१४	पावटा	६४६, ७८६
नरायणा (बडा)	२८४	पावागिरि	७३०
नलकच्छपुरा	१४५	पिपलाइ	३६३
नलवर दुर्ग	५२४	पिपलीन	३७३
नवलक्षपुर	२१२	पुन्या	४४१
नांगल	३७२	पूरुणासानगर	२००
नागरचालदेश	४४८	पूरवदेश	३६७
नागपुरनगर	३३, ३४, ८८, २८०, २८२	पेरोजकोट	२७८
	३८४, ४७३, ५४३	पेरोजापत्तन	६२
नागपुर (नागीर)	७३५, ७६१	पोदनानगर	५६८
नागीर	३७३, ४६६, ४८८	फत्तेहपुर	३७१
	५६०, ७१८, ७६२	फलीवी	५६२
नामादेश	३७	फागपुर	३४
निमखपुर	४०७	फागी	३१, ६८, १७०
निराही (नरायणा)	३७०	फौफली	३७१
निवासपुरी (सांगानेर)	२८६	वग	३६७
नौमैडा	७६६	वंगाल	४७६
नेवटा	१६८, २५०, ४८४, ४८७	वधगोपालपुर	३६३
नैरावा	१७, ३४१	वगरू	६६
पड्डतपुर	४३६	वगरू-नगर	७४, २७०
पचेवरनगर	४२, ४८०	वराहटा	३४२, ४४८
पहन	३८७	वटेरपुर	१५३
पनवाहनगर	७१	वनारस	४८३
पलाडा	५६२	वरव्वर	३६३
पांचोलास	७३	वराह	३
पाटण	२३०, ३०४, ३६६, ५६२	वसई (वस्सी)	१८६, २६६, ४१५
पाटनपुर	४४६	वसवानगर	१६५, १७०, ३२०, ४४६
पानीपत	७०		४८४, ७२१
पालव	६८२	वहादुरपुर	१६७, १६८

बागबंदी	१७ १२४, २३४	नगुरा	४५
बागपुर	११२	नगुरी	११६
बागमर	२७२	नगीरपुरा	७२१
बागदरौ	१७२	नगाला	७१
बागदेवी	२७५	नगरन	१६७
बागो	२ ६	नगुतिगपुर	४
बागलौर	२२१ २२२, ६७४	ननली	२ ४
बागो	४ ४ ६	नहाल	२२१
बाग	६७ २१४	नहरा	१२, ११४ ४२२, ४७१
बाग (बाग)	२ ४	नहेरी	२२१
बागीनगर	४७ १२६, १७३	बागीपुर	२१५
बागपुर	६६	बागीपनपुर	१११ ४२६
बागी	१७१	बागवा	४४
बागबंदी	१२४ १४	बागो	१२१ ११२ १७१
बागबाग	१४३		१७४ २२२, २२१
बागपुर	१ ६	बागली	२२१
बागद	१७२	बागपुर	४ २ १४ २६, १२२, ११
बागमलीनगर	१ २		२१२, २४५ २४२, ११२, १ १
बागमर	११७		१४२ १४३ १४४ ४१ २२१
बाग	२२४		१२६, ७१७
बाग	२६७	बागबंदी	१२, १ १४ १६७
बागो	१६५	बागपुर	१४
बागला	१ १	बागिलपुरी	२४१
बागल	१७१	बागपुर	७७
बागपुरी	२१	बागल	१११ २२२
बागीनगर	२२१	बागला (बागल)	१७७
बागल	७ ६	बागला	१७४ १७२ २२१
बागीरी	१७१	बागल	१
बागीन	२१	बागल	१ २, १७१
बागली	७	बागल	१७१
बागलपुर	२२१	बागला	१७१

ग्राम एवं नगरों की नामावलि)

५ ६३७

मोहनवाडी	४६०	रैणवान	४-०
मोहा	११२, ४५७, ५२०	रैनवाल	३४५, ६६५
मोहाणा	१२८	रैवासा	२००
मैनपुरी	४६	सखनऊ	१२३
मोजमावाद	५६, ७१, १०५, १७४	ललितपुर	१७८
	१६२, २०८, २५५, ४११	लक्ष्कर	२३६, ३८६, ७००
	४१२, ४१६, ४१७, ५४३	लाखेरी	६६५
यवनपुर	३४३	लाहणा	१८६
योगिनीपुर (दिल्ली)	२६४	लावा	४२
यीवनपुर	३०७	लालसोट	३०
रणतसवर (रणथम्भौर)	३७१	लाहौर	६६८, ७७१
रणथम्भौरगढ	७१२, ७४३	लूणाकर्णसर	७
रणस्तम्भुर्ग (रणथम्भौर)	२१२	वनपुर	२११
रतीय	३७१	वाम	२०१
रुहिवगपुर (रोहतक)	१०१	विक्रमपुर	१६४, २२३
राजपुर नगर		विदाघ	३७१
राजगढ	१७६	विमल	५६२
राजग्रह	२१७, २५४, ३६३	वीरमपुर	१७८
राठपुरा	४५०	वृन्दावती नगरी	५, ३६, १०१, १७८, २००
राणपुर	६१६		४२२
रामगढ नगर	१४६, ३७०	वृन्दावन	४, ११०, २७६
रामपुर	१३, ३५६, ३७१	वैसरै ग्राम	५३
रामपुरा	५६, ४५१	वैरागर ग्राम	४६, २१०
रामसर (नगर)	१८१	वैराठ (वैराठ)	१०६
रामसरि	६६	वोराव (वोराज) नगर	
रायदेश	१६७	पेमलासा नगर	
रावतफलोधी	५६१	घाकमडगपुर	८८८
राहिरी	३७२	शाकवाटपुर	१५०
रेवाडी	६२, २५१	घाहजहानाबाद	४७, १०८, ५०२
रेणुरा	५६२		६८१

मिथपुरी	७३३	सावरसाव नगर (सावसावा)	१२४
भुवनेश्वरपुर	५	सावसावपुर	१ ५
पौराण	१ २ ७०१	सावसावा	१७, १४१
मेरपुर	३ २१५ ३२६	सावसी	१११
मेरपुरा	१३३	सावसी	५१
मीरसाव	१३५	सावसाव	७
मीरसाव	३, ३६३	सावसावपुर	५२, १११
मीरसाव	५१४	सावसाव	१११
मीरसाव	३४१ ३३४	सावसाव	४१
मीरसाव	१६	सावसावपुर	४४
मीरसाव (सावसाव)	१५५	सावसावपुर	७७ १४१ १२१ ११७
मीरसाव	३४ १३ ७३ ६३ १३६	सावसाव	११३
	१४४ १४५ १४६ १४७	सावसाव	१२३
	१२६, १२४ १२५ १ २	सावसाव	४१६
	१ ७ २२६ १ १ ३७१	सावसाव	४ ११३
	३५४ ३६३ ४ ४५	सावसाव	२२६
	४५ ४७३ ४८ ७७३	सावसाव	३४ ११६
मीरसाव (सावसाव)	१६३	सावसाव	११७
मीरसाव	१७१	सावसाव	११७
मीरसाव	१६	सावसाव	११७
मीरसाव	७४३	सावसाव	१७२
मीरसाव	४५७	सावसाव	१७१
मीरसाव	१५७	सावसाव	१७१
मीरसाव	१ १ १७	सावसाव	१७७
मीरसाव	१४१	सावसाव	१२६
मीरसाव	११ १३२ १३४	सावसाव	१२६
	१७ १६३	सावसाव	१२६ १७२ ७१
मीरसाव	१३७	सावसाव (सावसाव)	११३
मीरसाव	२७६	सावसाव	११७
मीरसाव	१	सावसाव	१ १

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

हिण्डीन	२५०, २६६, ७०१, ७२६	हाथरस	६३६
हथिकतपुर	५६७	हिण्डी	१४३
हरसौर	१८४	हिमाचल	२०२
(गढ) हरसौर	६३६	हिरणोदा	३६७
हरिदुर्य	२००, २६६	हिसार	६४४
हरिपुर	१६७	हीरापुर	६२, २७८
हलसूरि	७३४	हुडवतीदेवा	२३०
हाडौती	६०४	होलीपुर	१७
			१८८

★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र एवं संकि

शुद्ध पाठ

शुद्ध पाठ

१५४

अथ प्रश्नविष्णु

अथ प्रश्नविष्णु

१५५

विष्णु

विष्णु

१५६

गोमहस्य

गोमहस्य

१५७

१०४

११४

१५८

१५१४

१५१४

१५९

तत्त्वार्थ सूत्र भाष्य

तत्त्वार्थ सूत्र भाष्य-अनन्त

१६०

वे सं २३१

वे सं १५५२

१६१

१५५

१५५

१६२

अथ

अथ

१६३

—

१५५

१६४

मन्त्रचन्द्र

मन्त्रचन्द्र

१६५

अथ

अथ

१६६

सह

सह

१६७

१ अथ

१० अथ

१६८

मोपादि

म्यायापादि

१६९

मूयद्वय

मूयद्वय

१७०

१५०१

१५०१

१७१

माताप्रियेय

माताप्रियेय

१७२

आचार

आचार

१७३

मीनविग्रह

—

१७४

सोमगिर पञ्चीती

सोमगिरपञ्चीती

१७५

१४ बी रत्नाष्टी

१ बी रत्नाष्टी

१७६

१४४१

१७७

अथ एवं आचारप्रारम्भ

अथ २ १ योग प्रारम्भ



पत्र एव पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१३१×१	त्र	व
१४०×२८	१७२८	१८२८
१४६×७		१० कालम० १६६६
१४६×७	१० काल	ले० काल
१६४×१०	१०४०	२०४०
१६५×१	स० १७८५	स० १५८५
१७१से१७६	क्र० स० ३००० से ३०५८	क्र० स० २१०० से २१५८
१७६×२८	रङ्गू	रवि तेजपाल
१८१×१७	ढमल्ल	नाढमल्ल
१६२×६	३०१८	२३१८
१६२×१४	भट्टार	भट्टारक
२०८×६	१७७५	१७१५
२१६×११	आकाशपचमीऋथा	आकाशपचमीऋथा
२१६×६	धर्मचन्द्र	देवेन्द्रकीर्ति
२४२×२५	चर्द्धमानमानस्य	चर्द्धमानमानस्य
२६४×१६	२१२०	३१२०
३११ १२	३२८	३२८०
३१६×१०	नेमिचन्द्राचार्य	पद्मनन्दि
३२०×१५	३६३	३३६३
३३६×१३	भक्तिलाल	भक्तिलाभ
३६६×-	३६८-३७५	३६६-३७६
३८५×१	कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका	कल्याणमाला
३८६×५	—	और
३६६×४	अणुभा	कनककुशल
४०१×२१	भूपालचतुर्विंशति	भूपालचतुर्विंशतिटीका
४५६×२५	सस्कृत	हिन्दी
४६४×१२	भाटवापुरी	भाटवासुदी
५०२×८	पञ्चगुरुकल्याण पूजा	पञ्चगुरुकल्याण पूजा
५५७×२	पाटोकी	पाटोदी

पत्र पत्र पत्र

४०३×१३

४०४×१२

४०४×१३

४०४×१०

४०५ ०

४००×१०

४११×१

४१४×१८

४ ००००

४१६×२

४१४×१०

४०४×०३

४२३×२४

४२००×१४

४२००×२१

४३४×१

, ४१६

४३६×१४

४३०×१

४३६×१

४२६

४४०×६

४४४×४

४४०×६

४४४×१०

४४१×२

४००×१३

४०१×१०

४८ ४०४

४६१×६

अशुद्ध पात्र

संस्कृत

संस्कृत

—

संस्कृत

रमकौमुद्व्यापसमा रमजन

रामनराज

"

मोक्षमरणात्म

पद्यवर्गीयम्

पद्यवर्गीयम्

४४३१

मोक्षमरणात्म

जग

मोक्ष

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्ष

मोक्ष

मोक्ष

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

शुद्ध पात्र

मोक्ष

मोक्ष

संस्कृत

मोक्षवर्गी

रमकौमुद्व्यापसमा रमजन

रामनराज

—

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

४४३१

मोक्षवर्गी

जग

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्ष

मोक्ष

मोक्ष

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्ष

मोक्ष

मोक्ष

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

मोक्षवर्गी

पत्र एव पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
७१६×६	नन्दराम	हिन्दी
७३१×२१	”	—
७३२×६	”	हिन्दी
७३३×३,४	हिन्दी	संस्कृत
७३३×५	”	हिन्दी
७३८×२६	ब्रह्मरायवल्ल	ब्रह्म रायमल्ल
७५०×६	मनसिंघ	मानसिंह
७५४×१८	अभयदेवसूरि	अभयदेवसूरि
७५५×१७	”	अपभ्रंश
७६५×५	१८६३	१६६३



